श्रीवेदव्यास-प्रणीत

महाभारत।

द्वितीय खण्ड।

बिहार निवासी श्रीमदनमोहन भट्ट के लिये,

काशी निवासी श्रीलक्षणचन्द्र

धर्माधिकारी के द्वारा

अनुवादित होकर

कलकत्ता

हिन्दी संस्कृत, पुराणप्रकाश और बिहारबन्धु प्रेस में

श्रीगोपालचन्द्र दे के द्वारा मुद्रित

और प्रकाशित हुआ।

संवत् १९३१। 1874.

मूल्य सम्पूर्ण का १८) कपड़े की जिल्द का २०)

स० । सुमेरुके उत्तर औ नीलपर्वतके दक्षिण अति पवित्र उत्तरकुरु है, वहांके वृक्ष सब निरन्तर स्वादु फल सुगन्ध कुसुम शोभित हैं, कल्पवृक्षभी वहां हैं, वहां कितने वृक्षसे दुग्धधारा औ कितने वृक्षसे वस्त्र औ आभरण उत्पन्न होते हैं, वहांका भूभाग विविध रत्न मय औ मृत्तिका सुवर्ण मय है, सर्वदा सर्वऋतुकी शोभा बनीहै, मनुष्य सब देवलोकसे च्यूत होके अति रमणीय रूपसे वहां जन्म लेते हैं, सब वृक्षोंका अमृत तुल्य दुग्ध पान करके रहते हैं, औ सर्वदा संतुष्ट रहते हैं, जब वह देहत्याग कर्ते हैं, तब तीक्ष्ण तुण्ड भयंकर भारुण्ड नामक पक्षी उनको लेके गिरिदरीमे निक्षेप करते हैं, यह उत्तरकुरुका विषय कहा, अब सुमेरु पार्श्वका विषय कहते हैं, वहां भद्राश्व नामक एक प्रधान प्रदेश है, उसमे एक भद्रशालवन औ एक योजन उच्च कालाम्र वृक्ष है, कालाम्र वृक्ष निरन्तर फल पुष्प प्रसव करता है औ सिद्ध चारणोंसे सेवित है, वहांके पुरुष तेजस्वी बलवान् औ श्वेतवर्ण हैं, स्त्री सब कुमुद वर्ण औ सुन्दरी है, वह सब नृत्य गीतमे सदानुरक्त रहते हैं, वह सब सर्वदा स्थिर यौवन औ दश सहस्र आयुष्मान् होते हैं, वह सब कालाम्रका रसपान कर्के रहते है, नील पर्वतके दक्षिण औ निषधके उत्तर सुदर्शन नामक एक सनातन जम्बू वृक्ष है, इसीसे यह जंबूद्वीप कहावता है, वह जम्बू सबको अभिलषित फल दान करता है, वह वृक्ष शत सहस्र योजन उन्नत है, उसके फलकी विशालता पांचशत अरत्नि है वह फल रसभारसे विदीर्ण हो गिरता है, तब महान् शब्द होता है, उसका रस नदी रूपसे प्रवाहित होय सुमेरुको प्रदक्षिण कर्के उत्तरकुरुमे प्रवाहित होता है, उस रसके पानसे शांतिलाभ, पिपासा, जराजनित क्लेश नष्ट होता है, वहां अति भास्वर जाम्बूनद नामक सुवर्ण उत्पन्नहोता है

वहांके जन सर्वदा तरुणही रहते हैं। माल्यवान् पर्वतके शिखर पर संवर्तक नामक कालाग्नि निरन्तर दृश्यमान होता है, वह पर्वत पंचाशत् सहस्र योजन विस्तीर्ण हैं वहांके मनुष्य सुवर्ण वर्ण तपस्वी ऊर्द्धरेता औ ब्रह्मवादी हैं, वह लोक प्राणियोंके रक्षाके लिये सूर्य्यमण्डलमे प्रवेश करते हैं, वे साठ हजार लोग दिवाकरको परिवृत करके अरुणके आगे आगे गमन कर्ते हैं, औ साठ सहस्र वर्ष सूर्य्यतापसे तप्त होके चन्द्रमण्डलमे प्रवेश करते हैं।

इति ७ अध्याय

धृ०। तुम वर्ष, पर्वत औ पर्वतवासियोंके नाम कहो।

सं०। श्वेतपर्वतके दक्षिण औ निषध गिरिके उत्तर रमणक नामक वर्ष है, वहांके मनुष्य सब शुक्ल वंश समुत्पन्न सुन्दर औ विपक्षहीन हे। नील गिरिके दक्षिण औ निषधके उत्तर हिरण्मय नामक वर्ष है, वहां हैरण्वती नदी प्रवाहित होती हैं, वहां पन्नगराज गरुड़ वास करते हैं, वहांके मनुष्य यक्षके अनुगत, महाबली, प्रियदर्शन, सदा संतुष्ट औ धनवान् हैं, उनका आयु अढ़ाई हजार वर्ष हैं, शृङ्गवान्के तीन शृङ्ग हैं, उनमे एक मणिमय, एक रजतमय औ एक सर्वरत्नमय हैं, वहां एक शाण्डीली नदी है, शृङ्गवान्के उत्तर सागरके पार ऐरावत वर्ष है, वहां सूर्यका ताप नही है, मनुष्य जराग्रस्त नही होते, चन्द्रमा नक्षत्रोंके सहित प्रकाश कर्ते हैं पद्मवर्ण, पद्मनेत्र औ पद्मगन्धयुक्त मनुष्य होते हैं, वह सब देवलोकच्युत, खेदरहित निराहार औ जितेंद्रिय हैं, त्रयोदश सहस्रवर्ष जीवित रहते हैं। भगवान् नारायण क्षीरसागरके उत्तर कनकमय मनके तुल्य वेगवान् भूतयोजित अष्टचक्र शकटके ऊपर उपविष्ट हैं, वह यज्ञस्वरूप जगत्कर्ता है, अग्नि

उनका मुख है, धृतराष्ट्र यह सुनके पुत्रोंकी चिन्ता करने लगे, अनन्तर संजयसे बोले, हे संजय! कालही विश्वका नाश औ उत्पत्ति कर्ता है, पृथिवीमे कोई पदार्थ नित्य नही है, भगवान् नारायण औ नर सर्वज्ञ औ सर्वभूतके संहारक हैं, देवगण उनको वैकुण्ठ औ मनुष्यगण उनको विष्णु कहते हैं।

इति ८ अध्याय।

धृ०। जिस भारतवर्षमे यह समस्त सैन्य एकत्र हुआ है, हमारा पुत्र दुर्य्योधन औ पाण्डव जिसके ग्रहणमे नितान्त लोलुप हुए हैं, औ जिसमे हम अति अनुरक्त हैं, तुम उस भारत-वर्षका वृत्तान्त कथन करो।

सं०। पाण्डवगण भारतवर्ष ग्रहणमे अत्यन्त अभिलाषी नही हैं, दुर्य्योधन औ शकुनिही अत्यंत लोलुप हैं अन्य अन्य देशाधिप इसके ग्रहण करनेके इच्छासे कोई किसीको क्षमा नही करेगा, यह भारतवर्ष इन्द्र, मनु, पृथु, इक्ष्वाकु, ययाति, अंबरीष, शिबि, ऋषभ, एल, नृग, कुशिक, गाधि, सोमक औ दीलिप प्रभृति बलवान् क्षत्रियगणको अतिप्रिय है, जो होय, अब आपके पूछनेसे भारतवर्षका विषय कहते हैं, महेन्द्र मलय, सह्य, शक्तिमान्, गन्धमादन, विन्ध्य, औ पारिपात्र यह सात पर्वत हैं, उनके समीप सारवान् विचित्र सानुयुक्त सहस्र सहस्र पर्वत हैं, एतद्भिन्न बहुसंख्य अपरिज्ञात क्षुद्र क्षुद्र पर्वत हैं, क्षुद्रलोग इन्ही पर्वतोमे बास करते हैं।

हे राजन्! इस भारतवर्षमे जो नदी है उनका नाम कहते हैं, गङ्गा, सिंधु, सरस्वती, गोदावरी, नर्मदा, बाहुदा, महा-नदी, शतद्रु, चन्द्रभागा, यमुना, दृषद्वती, विपाशा, वेत्रवती, कावेरी, ऐरावती, वितस्ता, पयोष्णी, देवीका वेदस्मृता, वेद-वती, चित्रिवा, इक्षुमाली, करिषिणी, चित्रसेना चित्रवहा,

गोमती, गंडकी, कौशिकी, निश्चिता, कृत्या, निचिता, लोह-तारिणी, रहस्या शतकुंभा, शरयु, चर्मण्वती, हस्तिसोमा, दिक, शरावती, परा, भीमरथी, कावेरी, चुलुका, वीणा, शतबला, नीवारा, महिता, सुप्रयोगा, पविचा, कुण्डला, राजनी, पुरमालिनी, पूर्वाभिरामा, वीरा, भीमा, ओघवती, पलाशिनी, महेन्द्रा, पाटलावती, असिक्नी, कुशचीरा, मकरी, प्रवरा, मेना, हेमा, घृतवती, पुरावती, अनुष्णा, शैव्या, कापी, सदानीरा, अधृष्या, कुशधारा, सदाकांता, शिवा, वीरवती, वास्तु, सुवास्तु, गौरी, कम्पना, हिरण्वती, वरा, वीरंकरा, पंचमी, रथचिचा, ज्योतीरथा, विश्वामिचा, कपिंजला, उपेन्द्रा, बहुला, कुचीरा, मधुवाहिनी, विन्नदी, पिंजला, वेणा, तुंग-वेणा, विदिशा, कृष्णवेणा, ताम्रा, कपिला, शलु, सुवामा, वेदाश्वा, हरिप्रिया, महोपमा, शीघ्रा, पिच्छला, भारद्वाजी, शोणा, चन्द्रमा, दुर्गमंत्रशिला, ब्रह्मवोध्या, बृहद्वती, यवचा, रोही, जाम्बुनदी, सुनसा, तमसा, दासी, वसा, वरुणा, असी, वाला, धृतिमती, पूर्णाशा, तापसी, वृषभा, ब्रह्ममेध्य, वृहद्वती, कृष्णा मन्दवाहिनी, ब्रह्माणी, महागौरी, दुर्गा, चिचोपला, चिवरथा मंजुला, वाहिनी, मन्दाकिनी, वैतरणी, कोशा, मुक्तिमती मनिङ्गा, पुष्पवेणी, उत्पलावती, लोहित्या, करतोया, वृषका कुमारी, ऋषिकुल्या, मारिषा औ सर्वसंगा यह सब नदी महाफल प्रदा औ सब लोककी मातृस्वरूप हैं, आर्यम्लेच्छ औ संकरजाति इन सब नदियोंका पान करके रहते हैं, एतद्भिन्न सहस्र सहस्र अप्रकाशित नदी हैं।

हे महाराज! अब जनपद सब कहते हैं, कुरुपांचाल, शाल्व, माद्रेय जांगल, शूरसेन, कलिंग, बोध, माल, मत्स्य मुकुट्ट, सौबल्य, कुन्तल, काशी, कोशल, चेदि, करूष, भोज सिंधपुलिन्द, उत्तम, दशार्ण, मेकल, उत्कल, पांचाल, कौशिक

नैकपृष्ठ, धुरंधर, सोध, मद्रभुजिंग, अपरकाशि, जरठ कुकुर, दशार्णकुकुर, कुन्ति, अवन्ती, अपरकुन्ती, गोमत, मंदक, षण्ड, विदर्भ, रूपवाहिक, अश्मक, पांशुराष्ट्र, गोपराष्ट्र, करीति, अधिराज्य, कुशाद्य, मल्लराष्ट्र, केवल, वारपास्य, अपवाह, चक्र, चक्रातप, शक, विदेह, मागध, स्वच्छ, मलय, विजय, अंग, वंग, कलिङ्ग, यकृल्लोम, मल्ल, सुदेष्ण, प्रह्लाद, माहिक, शशिव, बाह्लीक, वाटधान, आभीर, कालजोषक, अपरांत, परांत, पन्हव, चर्ममण्डल, अटवीशिखर, मेरुभूत, उपावृत, अनुपावृत, स्वराष्ट्र, केकय, कुन्दापरांत, माहेय, कक्ष, सामुद्रनिष्कुट, अन्ध्र, अंतर्गिरि, वहिर्गिरि, अङ्गमलज, मागध, मानवर्जक, मुह्यमत्तर, प्रावृषेय, भार्गव, पुंड्र, भार्ग, किरात, सुदेष्ट, यामुन, शक, निषाद, निषध, आनर्तनैर्ऋत, दुर्गल, प्रतिमास्या, कुशल, तीरग्रह, सूरसेन, ईजक, कन्यकागुण, तिलभार, समीर, मधुमत्त, सुकंदक, काश्मीर, सिंधुसौवीर, गान्धार, दर्शक, अभीसार, उतल, शैवाल, दर्वी, वाननादर्व, वातज, आमरथ, उरग, बाहुवाध, कौरव्य, सुदामा, सुमल्लिक, बध्र, करीषक, कुलिंदोपत्यका, वातायन, रोमा, कुशविन्दु, गोपालकच्छ, लांगल, कुरुवर्णक, किरात, वर्बर, सिद्ध, ताम्रलिप्त, ओड्र, पौंड्र, सैसिकत, पार्वतीय, द्राविड, प्राच्य, मूषिक, वनवासक, कर्णाटक, माहिषक, विकल्प, जिल्लिक, कुंतल, सौहृद, नलकानन, कोकुटक, चोल, कोंकण, मालवानक, समङ्ग, कर, कुकुर, अंगार, मारिष, ध्वजिनी, उत्सवसंकेत, त्रिगर्त, शाल्वसेनि, बक, कोरवक, प्रोष्ठ, समवेगवश, पुलिन्द, वल्कल, मालव, मल्लव, अपरवल्लभ, कुलिंग, कालव, कुण्डक, करट, तनवाल, सनीप, आघट, सृञ्जय, अलिंद, पाशिवाट, तनय, सुनय, दर्शीविदर्भ, कान्तीय, तंगण, परतंगण, उत्तरम्लेच्छ, अपरम्लेच्छ, क्रूर, यवन, चीन, काम्बोज, सकृद्ग्राह, कुलत्य, हूण, पारसिक, रमण,

दशमालिक, योनिवेश, दरद, पत्ति, खशर, अन्तचार, पल्हभ, गिरिगह्वर आत्रेय भरद्वाज स्तनपोषिक प्रोषक कलिंग तोमर हंसमार्ग और करभंजक इन सभ देशोंके नाम कहे इनमें क्षत्रिय वैश्य शूद्र औ आभीर औ म्लेच्छ प्रभृति नानाविध जाति वास कर्ते हैं। एतद्भिन्न और औरभी जनपद और देश हैं।

हे राजन्! भूमि सम्यक् पालित होनेसे कामधेनुके तुल्य अर्थदान कर्ती है इसी लिये तत्ववित् क्षत्रियगण भूमिलाभार्थ संग्राममे देहत्याग पर्य्यन्त करते हैं। भूमि देव औ मनुष्योंकी एकमात्र शरण है। अद्यापि कामोपभोगसे किसीकि तृप्ति नहीं हुई है तन्निमित्त कौरव औ पाण्डव साम दान भेद औ दण्डसे भूमिग्रहणमे यत्नवान् होता हैं। सम्यक् अधिकृत भूमि पिता माता औ भ्राता औ स्वर्गस्वरूप है।

इति ८ अध्याय।

धृ०। भारत वर्ष हैमवत वर्ष औ हरि वर्ष इनमे स्थित लोगोंका आयु वल औ त्रिकालका शुभाशुभ वर्तमान कहो।

सं०। इस भारतवर्षमे पहिले सत्य तदुत्तर त्रेता तदनन्तर द्वापर औ अन्तमे कलि, यह चार युग क्रमसे होते है, सत्य युगमे आयु चार सहस्र वर्ष, त्रेतामे तीन सहस्र, द्वापरमे दो हजार औ कलिमे आयुके संख्याका नियम नहीं है कोई गर्भावस्थामे कोई जातमात्र विनष्ट होते है, सत्य युगमे असंख्य महाबल पराक्रान्त प्रज्ञावान् धनवान् रूपवान् तपस्वी होते थे। त्रेतामे महोत्साह संपन्न धार्मिक सत्यवादी, रूपवान् वीर्य्यवान् धनुर्धर क्षत्रियगण उत्पन्न होते है। द्वापरमे समस्त वर्ण होते है वह सवही वीर्यवान् औ परस्पर जयाभिलाषी होते है। क्रमी समयसे मनुष्योंके गुणका ह्रास होने लगता है।

प्रियदर्शन हैं, एकादश सहस्र वर्ष उनका आयु है, हिमालयके दक्षिण भारतवर्ष औ उत्तरमे हैमवतवर्ष है, हेमकूटके उत्तर हरिवर्ष, निषधके उत्तर इलावृतवर्ष, नीलपर्वतके उत्तर श्वेतवर्ष, श्वेतपर्वतके उत्तर हैरण्यवर्ष औ उसके उत्तर ऐरावत वर्ष है, यह सातवर्ष धनुषके आकारसे हैं, इन वर्षोंके गुण, प्राणियोंका आयु, स्वास्थ्य, धर्म, अर्थ औ काम उत्तरोत्तर उत्कृष्ट है।

हे महाराज! यह पृथ्वी इस प्रकार बहुविध पर्वतोंसे व्याप्त है, हेमकूट कैलास नामक एक रमणीय पर्वत है वहां कुवेर विहार करते है, उसके उत्तर मैनाक पर्वतके पास हिरण्यशृङ्ग पर्वत है उसके पास सुवर्णमय वालुकायुक्त विन्दुसरोवर है, वहां भगीरथने भागीरथीका दर्शन पाय बहुवत्सर वास कियाथा, इन्द्रने वहां यज्ञानुष्ठान करके सिद्धिलाभ किया है भगवान रुद्रभी वहां वास करते हैं, उसीस्थानमे नर, नारायण, ब्रह्मा, मनु औ स्थाणु विहार करते हैं, त्रिपथगा गंगाने पहिले वहां ही वास किया था, तदुत्तर वस्वोकसारा, नलिनी, सरस्वती, जम्बु, शती, गंगा औ सिंधु यह सात धारासे विभक्त होके प्रवाहित हुए हैं, यह सात दिव्यगङ्गा हैं।

हिमाचलमे राक्षस, हेमकूटमे गुह्यक, निषधमे सर्प औ नाग, गोकर्णमे तपस्वी, श्वेतपर्वतमे देवासुर, नीलपर्वतमे ब्रह्मर्षि वास करते हैं, अब आपको शशस्थानका विषय कहते हैं शशस्थानके दक्षिण उत्तर दो वर्ष हैं, नागद्वीप औ काश्यपद्वीप शशस्थानमे ताम्रपर्णी शिला औ मलयं पर्वत है, शशस्थान ज द्वीपका द्वितीय दीप कहावता है।

इति ६ अध्याय।

४०। तुम सुमेरु पर्वतके अन्य पार्श्वका औ माल्यवा पर्वतका विषय कहो।

भय पक्षी सब देखके चिन्ता करने लगे, सुमेरुसे उनसे कुछभी भेद नही है, उत्तम, मध्यम औ अधम सबही एक प्रकार है, इस लिये उसका त्याग करना चाहिये, यह विवेचना करके उत्तरकुरुमे गए, सूर्य्य, चन्द्र, नक्षत्रगण औ दक्षिणवायु निरन्तर प्रदक्षिण करते हैं, वहां वृक्ष सब फल पुष्प शोभित, प्रासाद सुवर्णालंकृत हैं, देव गन्धर्व, असुर, अप्सरा, औ राक्षस सर्वदा वास कर्ते हैं, ब्रह्मा, रुद्र औ सुरराज इन्द्र यह लोग समवेत होके बहुविध यज्ञ करते हैं, उसके शृङ्ग पर दैत्यगुरु शुक्राचार्य सर्वदा विहार करते हैं, रत्नके पर्वत सब उन्हीके अधिकारमे हैं कुवेर उन शुक्रसे रत्नोका चतुर्थांश लेते हैं, औ उसका षोड़शांश मनुष्योंको देते हैं।

सुमेरुके उत्तर शिलाजालसमुत्थित, कुसुमगुच्छ शोभित परम रमणीय कर्णिकार वन है, उस वनमे भगवान् शंकर पार्वतीके सहित चरणावलंबिनी कर्णिकार माला धारण कर्के विहार करते हैं, सत्यवादी तपःपरायण सिद्धगण उनका दर्शन कर सकते हैं, उसी सुमेरुके शिखरसे साधुजनसेविता विश्वरूपा अति पवित्रा शुभ्रजला भगवती भागीरथी अनवरत अति गभीर शब्द औ वेगसे प्रवाहित होय चन्द्रमाह्रदमे निपतित होतीं हैं, जिस्के वेगको पर्वतभी धारण नही कर सकते उसी गङ्गाको भगवान् शूलपाणिने शत सहस्र वर्ष मस्तकमे धारण किया था।

सुमेरुके पश्चिम केतुमाल नामक एक महान् जनपद है, वहांके पुरुष सब सुवर्ण वर्ण औ रमणीगण अप्सरा सदृश हैं, उनको शोक वा रोगका नामभी नही है, वह लोग दश सहस्र वर्ष जीवित रहते हैं, उनके समीप गन्धमादन पर्वत पर कुवेर वास करते हैं, गन्धमादनके उत्तर अनेक गंड पर्वत हैं, वांके पुरुष कृष्णवर्ण औ महाबली औ नारीगण उत्पलवर्णा औ

कलियुगमे पुरुष अल्पतेज क्रोधी लुब्ध मिथ्यावादी इर्षी अभिमान कापट्य असूया राग औ द्वेषसे पूर्ण औ निकृष्ट प्रवृत्तिमे तत्पर होते हैं । हैमवतवर्ष औ हरिवर्षमेभी इसी प्रकार लोग होते हैं ।

इति १० अध्याय ।

इति जम्बूखण्ड निर्माणपर्वाध्याय ।

अथ भूमि पर्वाध्याय ।

धृ० । जंबूद्वीपका परिमाण, समुद्रका परिमाण, अन्यान्य द्वीपोंका विषय, चन्द्र, सूर्य्य औ राहुका विषय कथन करो, अनेक द्वीप इस पृथ्वीको व्याप्त करके रहे हैं, जंबू द्वीप अष्टदश सहस्र छः शत योजन विस्तीर्ण औ लवणसमुद्रसे वेष्टित हैं, यह समुद्र नाना जन पद युक्त, अनेक रत्नसमन्वित औ विविध पर्वत युक्त है, शाक द्वीप जंबूद्वीपसे द्विगुण है, वह लवण समुद्रसे द्विगुण क्षीरद समुद्रसे वेष्टित है, वहांके लोग तेजस्वी और क्षमावान् हैं ।

धृ० । इसका सविस्तर वर्णन करो ।

सं० । शाकद्वीपमे मणिमय सात पर्वत हैं, नानारत्नकी आकर नदी सब बहती है, उसके विभाग सब अपूर्व औ सब विषयगुण संपन्न है, जलधर सर्वत्र यथास्थित वर्षण करते हैं, इन्द्र उसी स्थानसे जल ग्रहण करके वर्षाकालमे सर्वत्र वर्षण करते हैं, ब्रह्माके आज्ञासे रेवती वहां वास करती है, वहां उन्नत श्यामगिरी है, इससे मनुष्यभी वहां श्याम होते हैं ।

धृ० । क्यों ! मनुष्य श्याम होते हैं ?

सं० । सबही दीपमे ब्राह्मण गौर, क्षत्रिय श्याम औ वैश्य लोहित होते हैं, एक वर्ण होते नही, परंतु श्याम गिरीमे श्यामही होते हैं, श्याम गिरीके पर दुर्गशैल है, वहां सिंह औ

समीपस्थ उद्भूत होते हैं, तचत्य पर्वतों पर विविध वर्ष है, उसके बीचमे शाक नामक एक महान् वृक्ष है, प्रजा सब उस वृक्षकी उपासना करते हैं, औ शंकरकी आराधना करते हैं, सिद्ध चारणादि सतत वहां वास करते हैं, प्रजा सब चारो वर्णसे विभक्त औ स्वधर्मानुरक्त है, मृग, मशक, मानस औ मन्दक यह चार देश है, चारोदेशमे चारवर्ण रहते हैं, वहा राजा नही है प्रजाही स्वधर्मम सदा रहती है, अन्यायका नामही नही है।

इति ११ अध्याय।

अब इनके उत्तरोत्तरस्थ द्वीपोंको कथन करते हैं, वह सब द्वीप घृत, दधि, सुरा औ जलसमुद्रसे वेष्टित हैं, मध्यम द्वीपमे मनःशिलामय गौर पर्वत है, पश्चिम द्वीपमे नारायण सखा कृष्ण पर्वत है, केशवने वहां दिव्यरत्न रखे हैं, कुशद्वीपमे कुशस्तंबकी औ शाल्मली द्वीपमे शाल्मली वृक्षकी उपासना करते हैं, क्रौंच द्वीपमे क्रौंच गिरीकी उपासना करते हैं, कुशद्वीपमे गोमन्त पर्वत पर मुक्तोंके साथ नारायण वास करते हैं, वहां हेमगिरी, कुमद औ कुशेशय यह तीन पर्वतभी है, उद्भिद वेणुमण्डल, सुरथाकार, कम्बल, धृतिमत् औ प्रभाकर औ कापिल यह सात प्रधान वर्ष हैं, उन वर्षोंमे गन्धर्व औ मानुष वास करते हैं, मृत्यु वहां नही है, दस्यु वा म्लेछ वहां नही है।

क्रौञ्चद्वीपमे क्रौञ्च पर्वत, तदुत्तर वामन, तदुत्तर अन्धकार, तदुत्तर मैनाक, तदुत्तर गोविन्द, तदुत्तर निविड़ पर्वत है, उत्तरोत्तर द्विगुण दूर हैं, क्रौञ्च पर्वत पर कुशल देश, वामन पर्वत पर मनोनुग देश, उसके पर उष्ण देश, तदुत्तर प्रावरक देश, तदुत्तर अन्धकार देश हैं, वहां सकल लोक शुक्ल वर्ण हैं, पुष्कर द्वीपमे मणिमय पुष्कर पर्वत है, भगवान् प्रजापति वहां

वास करते हैं, महर्षि स्तुतिवादसे उनकी उपासना करते हैं। श्वेत द्वीपके पर सम नामक चतुरस्र त्रयस्त्रिंशत् मण्डल हैं, उसी स्थानमें दिग्गज निवास करते हैं, वहां दक्षादिकसे वायु प्रवाहित होता है, चारो दिग्गज उस वायुको शुण्डसे ग्रहण करके निरन्तर निक्षेप करते हैं।

धृ०। अब चन्द्र, सूर्य्य औ राहुका विषय कहो।

सं०। राहुग्रह मण्डलाकार है, उसका विस्तार छत्तीस सहस्र योजन है, अन्य पौराणिक कहते हैं कि, राहुका विस्तार छ सहस्र योजन है, चन्द्रमाका विस्तार एकादश सहस्र योजन औ मतान्तरसे एकोन षष्ठि सहस्र योजन है, सूर्य्यका दश सहस्र योजन विस्तार औ परिधि त्रिंशत् सहस्र योजन हैं मतान्तरसे अष्टपंचाशत् योजन है, राहु चन्द्र औ सूर्य्यको यथाकालमें आच्छादित करता है।

हे महाराज! आप शास्त्र चक्षु हैं, आपने जो जो पूछा सो सो कहा, अब आप शान्तिपक्ष अवलंबन करके स्वपुत्र दुर्य्योधनको आश्वासित कीजिये, जो इसभूमि पर्वाध्यायको श्रवण करेगा उसका धन, श्री, तेज आयु औ पितरोकी तृप्ति लाभ होती है।

इति १२ अध्याय।

इति भूमिपर्वाध्याय समाप्त।

अथ भगवद्गीता पर्वाध्याय।

वै०। त्रिकालज्ञ औ सकल विषयके प्रत्यक्षदर्शी संजय रणक्षेत्रसे प्रत्यागत होके चिन्ता परायण धृतराष्ट्रके निकट आयके दीन वचनसे बोले, हे महाराज! हम संजय हैं, आपको नमस्कार करते हैं, भरतोंके पितामह शान्तनुनन्दन

भीष्म निहत हुए, आपके पुत्रोने जिनके वीर्य्यके आश्रयसे द्यूत क्रीड़ा कियी थी, वही भीष्म शिखण्डीके हस्तसे निहत हुए, जिन्होने काशी नगरमे एक रथसे समस्त भूपालोंका पराजित किया था, परशुराम जिनको पराजित कर सके नही, जो शौर्य्यमे महेन्द्र तुल्य, स्थैर्य्यमे गिरीन्द्र तुल्य, सहिष्णुतामे पृथ्वीके तुल्य औ गांभीर्यमे समुद्रके तुल्य थे, आज वह महावीर भीष्म पांचाल पुत्रसे निहत हुए, वह वीरघाती भीष्म दशदिन आपके सेनाका रक्षण और दश कोटि वीर नष्ट करके समरमे शयान हुए।

इति १३ अध्याय।

धृ०। वासव सदृश कुरुचूड़ामणि भीष्म किस प्रकार नष्ट हुए? तब हमारे पुत्रोंका मन कैसा हुआ? उनके पार्श्ववर्त्ती औ चक्ररक्षक कौन कौन थे? उनका मृत्यु श्रवण करके हमारा हृदय विदीर्ण होता है, हमारे पुत्र जिस द्वीप रूप उनका आश्रय करके पाण्डवोंको तृण तुल्य ज्ञान करते थे, किस प्रकार वह नष्ट हुए? पाण्डवोंके साथ उनका कैसा युद्ध हुआ, सविस्तर कहो।

इति १४ अध्याय।

सं०। आप जो प्रश्न करते हैं सो उपयुक्त है दुर्य्योधनके ऊपर दोषारोप करना उचित नही है, कारणकी जो अपने दुश्चरित्रसे अशुभ फल भोगता है उसको दुसरेके ऊपर दोषारोप कर्ना युक्त नही हैं, जो सर्व प्रकार निन्दनीय कर्म करे वह बध्य होता है, पाण्डवगण अमात्य सहित उनका व्यवहार जानते थे, परन्तु केवल आपका मुख देखके वनवास उन्होने सहन किया, हमने प्रत्यक्ष जो देखा है औ ज्ञानसे जाना है,

सो कहते हैं आप शोकाकुल मत होइये, जब समस्त सैन्य व्यूहित हुआ, तब दुर्य्योधनने दुःशासनसे कहा, हे दुःशासन! तुम शीघ्र भीष्मके रक्षाकारी रथ सब योजना करनेकी आज्ञा करो, उनकी रक्षा भिन्न और कुछकार्य्य नही है, आज चिरा-कांक्षित कौरव पाण्डवोंका समागम हुआ हैं, पितामहने कहा है कि हम शिखंडीका बध करेंगे नहीं शिखंडी पहिले स्त्री था, संग्राममे उसके ऊपर अस्त्रत्याग करेंगे नही, इस लिये सब वीरोंको भीष्मकी रक्षा करनी चाहिये, औ शिखंडीका नाश करना अत्यावश्यक है, नही तो सिंहरूप भीष्म शृगाल-रूप शिखण्डीसे नष्ट होंगे, हे दुःशासन्! युधामन्यु औ उत्त-मौजा अर्जुनके चक्ररक्षक हैं, औ अर्जुन शिखण्डीके रक्षक हैं, इस लिये शिखण्डीका नाश औ भीष्मकी रक्षा यही मुख्यकार्य है, सो तुम करो।

इति १५ अध्याय।

स०। प्रातःकाल होतेही भूपालोंका सज्ज हो इस शब्द से, शंख भेरी प्रभृति वाद्योंसे, सेनाके कोलाहलसे आकाश मंडल व्याप्त हो गया, सुवर्णमण्डित हस्ती चपला सनाथ जलध-रके तुल्य, सैन्यगण परिवारित रथ सब नगराकार औ पिता-मह भीष्म पूर्णचन्द्रके तुल्य शोभित होने लगे, अनन्तर शरा-सन, खड्ग, गदा, शक्ति, तोमर औ अन्यान्य शुभ्रवर्ण आयुध समूह शोभित योद्धा समस्त शत सहस्र गज, रथि, पदाति, तुरंग वागुराकार अवस्थान करने लगे, उभय पक्षके नानाविध दीप्तिमान् ध्वज समुत्थित हुए,प्रधान प्रधान योद्धा सब विचित्र कवच, आयुध, तल, तूणीर धारण करके सेना मुखमे शोभित होने लगे, शकुनि, शल्य, विन्द, अनुविन्द, कैकयगण, काम्बोज-राज, सुदक्षिण, श्रुतायुध, जयत्सेन, वृहद्बल प्रभृति सकल राज-

हुये। स्वस्व सैन्यमे अवस्थान करने लगे, इन सभोंने अक्षौहिणी पति दुर्य्योधनके निमित्त ब्रह्मलोक गमनमें दीक्षित होय हुए अक्षौहिणी सेना संग्रह किया, सेनापति भीष्म एक अक्षौहिणी महासेनाके साथ सबके आगे अवस्थान करने लगे, श्वेत उष्णीष, श्वेत छत्र औ श्वेत कवच धारण करके समुदित चन्द्रके तुल्य भूषित होने लगे, आपकी एकादश अक्षौहिणी सेना औ पाण्डवोंकी सात अक्षौहिणी सागरद्वयके तुल्य भासित होने लगी, ऐसी सेना कदापि नयनगोचर नहीं हुई थी।

इति १६ अध्याय।

हे महाराज! भगवान् वेदव्यासने जैसा कहा था वैसही सकल एकत्र हुए थे, उस दिन चन्द्रमा मघा नक्षत्रमे स्थित थे, दीप्यमान सप्तग्रह आकाशसे निपतित हुए, प्रज्वलित शिखा युक्त दिवाकर द्विधाभूतके समान उदित दृष्टि होने लगे, गोमायु औ वायसगण शब्द करने लगे, भीष्म औ द्रोण प्रतिदिन प्रातःकाल पाण्डवोंका जय होय ऐसा आशीर्वाद करते थे, आप जैसे प्रतिज्ञा बद्ध हुए थे, वैसही युद्ध करते थे।

भीष्मने सब महीपालोंसे कहा, हे क्षत्रियगण! संग्रामही स्वर्ग गमनका अनावृत द्वार है, इस द्वारका आश्रय करनेसे इन्द्रलोक औ ब्रह्मलोकमे गमन करते हैं, प्राचीन नृपतिगण इसी द्वारसे परमपदमे समागत हुए हैं, व्याधिसे गृहमे प्राण त्याग करना क्षत्रियको अधर्म है, शस्त्रसे मृत्यु उनका सनातन धर्म है।

महीपालगण भीष्मका वाक्य सुनके रथारोहण पूर्वक स्वसैन्यके साथ गमन करने लगे, परंतु भीष्मने कर्ण औ उनके बंधु औ अमात्योंका परित्याग कराया, कर्णभिन्न सब क्षत्रिय औ आपके पुत्रगण सिंहनादसे दशदिशा मुखरित करने लगे,

विविध वाद्य वादन होने लगे, महाधनुर्धर सब भीष्मके चतुर्दिक् अवस्थान करने लगे, अश्वत्थामा प्रभृति असंख्य वीर सब भीष्मका अनुसरण करने लगे, द्रोणाचार्य्य सुवर्णमय वेदी औ कमण्डलु भूषित ध्वजशोभित रथ पर आरूढ़ होय गमन करने लगे, नागचिन्ह ध्वजशोभित रथारूढ़ होय शोभित होने लगे, कलिङ्ग, पौरव, काम्बोज, सुदक्षिण औ क्षेमधन्वा औ शाल्व दुर्य्योधनके आगे गमन करने लगे, मागधराज वृषभध्वजभूषित रथसे सेनाके आगे गमन करने लगे, अंगपति वृषकेतु औ कृपाचार्य्य सेनाके रक्षामे प्रवृत्त हुए, जयद्रथ वराहध्वजसे भूषित होने लगे, उनके साथ एकलक्ष रथ, अष्ट सहस्र हस्ती औ साठ हाजार अश्वारोही थे, कलिंगराज षष्टिसहस्र रथ, यंत्र, तोमर तुणीर औ पताकाशोभित अयुत गजसे गमन करने लगे, महावीर केतुमान् उन्नत गजारोहण कर्के गमन कर्ने लगे, महावीर भगदत्तभी गजारूढ़ होय गमन कर्ने लगे, इस प्रकार असंख्य महावीर स्वसैन्य औ स्ववाहनयुक्त हो गमन करने लगे ।

इति १७ अध्याय ।

हे महाराज ! मुहूर्तकालमे महान् कोलाहल उपस्थित हुआ, युद्धार्थी वीरोंके शंखध्वनि, गर्जन, हस्ती चीत्कार, अश्वहेषा और रथघर्घर शब्दसे नभोमण्डल पूर्ण हो गया, परस्पर सैन्य समागमसे कंपित होने लगा, परस्परोंके सुवर्णरत्नमय आभूषणोंसे दशदिक भासित हो गए, हे महाराज ! इस प्रकार आपके पुत्रका एकादश अक्षौहिणी सेना यमुनासंगत जान्हवीके तुल्य नयनगोचर होने लगी ।

इति १८ अध्याय ।

धृ०। यह एकादश अक्षौहिणीसेनाको व्यूहित देखके देव, मानुष, गन्धर्व औ असुरव्यूहवेत्ता युधिष्ठिरने किस प्रकार अल्पसैन्य लेकेभी भीष्मके सम्मुख व्यूहरचना किया।

सं०। धर्मात्मा युधिष्ठिर दुर्य्योधनका सैन्य व्यूहित देखके धनञ्जयसे बोले, हे धनञ्जय! वृहस्पतिने कहा है बहु सैन्यसे अपना सैन्य अल्प होय तो उनको विस्तारित औ अधिक होय तो उनको संहत करके युद्ध करना चहिये, अधिक सैन्यसे संग्राम करनेमे सेनाको सूचीमुखाकारसे सन्निवेशित करना चहिये, इस लिये वृहस्पतिके वाक्य अनुसार व्यूह रचना करो।

धनञ्जय बोले आपके लिये वज्रपाणिशिक्षित वज्राख्य अचल दुर्जय व्यूहरचना करते है, जो समरमे समीरणके तुल्य,योद्धाओंके अग्रगण्य है, वह भीमसेन हम लोगोंके अग्र योद्धा होंगे रिपु सैन्यका तेजोराशि विनाशित करेंगे, सिंहके दर्शनसे मृग जैसे पलायमान होते हैं, तद्रूप दुर्य्योधन प्रभृति युद्धसे निवृत्त होंगे, इस भूमण्डलमे ऐसा कोई नही है, जो भीमसेन क्रुद्ध होने पर दृष्टिपात करे, धनञ्जय यह कहके यथोक्त सेनाको सन्निविष्ट करके गमन करने लगे, जिनके वज्रसारमयी गदा ग्रहण करनेसे समुद्रभी शुष्क हो जाय, वह भीमसेन सेनाके अग्रनेता हुए, महावीर धृष्टद्युम्न, नकुल, सहदेव औ धृष्टकेतु यहभी अग्रनेता होके गमन करने लगे, विराट औ अक्षौहिणी परिवृत राजा युधिष्ठिर भ्रातृ औ पुत्रोंके सहित पृष्ठ रक्षक हुए, नकुल औ सहदेव भीमसेनके चक्ररक्षक हुए, अर्जुन रक्षित शिखण्डी भीष्म बधमे यत्नवान् होके उनके पीछे गमन करने लगे, युयुधान अर्जुनकी पृष्ठ रक्षा करने लगे, युधामन्यु औ उत्तमौजा, केकय, धृष्टकेतु औ सात्यकी चक्र रक्षा करने लगे, अनन्तर सब हृष्ट होय अपना सैन्य अवलोकन करने लगे, इस प्रकार वज्राख्य व्यूह निर्म्माण करके रक्षा करने लगे।

अनन्तर सूर्य्योदय हुआ, तब सभोने सन्ध्या वन्दनादि कर्के प्रवृत्त हुए, तब आकाश मेघरहित रहतेभी गर्जनशील समीरण जलबिन्दु सहित प्रवाहित होने लगा, कर्कर वर्षण पूर्वक धूलि-पटल उत्क्षिप्त करने लगा, सर्वत्र अन्धकार हो गया, उल्का सब पुर्वाभिमुख गिरने लगी, सेना सज्ज होने पर सूर्य्यकी प्रभा शून्य होगई, पृथ्वी कंपित होने लगी, इस प्रकार अनेक दुर्निमित्त होने लगे, हे राजन्! पुरुषश्रेष्ठ पाण्डवगण समर-प्रिय गदापाणि भीमसेनको अग्रस्थित देखके आपके सैन्यके प्रतिपक्षमें व्यूहरचना पूर्वक उनकी मज्जा ग्रास कर्ते मानो अवस्थान करते हैं।

१९ इतिअध्याय॥

धृ०। सूर्य्योदय होने पर भीष्मपालित कौरव सैन्यमें औ भीमसेन पालित पाण्डवसैन्यमें पहिले प्रफुल्लचित्तसे कौन युद्धार्थी हुए? चन्द्र, सूर्य औ वायु किस्के पश्चाद्वर्ती थे?

सं०। दोनो पक्षके तुल्यरूप परस्पर समीपवर्ती थे, दोनो पक्षीय हृष्टचित्तसे व्यूहित होके पूर्ण थे, दोनो पक्षभी मल्य औ दुर्विषह थे, दोनोपक्ष स्वर्गलाभमें उत्सुक थे, कौरव पश्चि-माभिमुख औ पाण्डव पूर्वाभिमुख थे, कौरवसेना असुर सेना-के तुल्य औ पाण्डवसेना देवसेनाके तुल्य शोभित होती थी, समीरण पाण्डवोंके पृष्ठभागसे वहन करता था, श्वापद धार्त-राष्ट्रोंके प्रति गर्जन करते थे, धार्तराष्ट्रके हस्तिसमूह शत्रु-पक्षीय गजेन्द्रोंके तीव्र मदगंध सहन नहीं कर सकते थे, दुर्य्यो-धन पद्मवर्ण, सुवर्णकक्ष, जालमण्डित मदस्रावी मातंगपर आरो-हण कर्के सेनाके मध्यमे अवस्थान करते थे, शकुनि पार्वतीय गांधारोंके सहित उनको वेष्टन करके स्थित रहे, द्रोणाचार्य रक्तवर्ण तुरगयोजित स्वर्ण रथारूढ़ होय समस्त भूपालोंके पी-

गमन करते थे, धार्तराष्ट्र, वाल्हीक, अम्बष्ठ, सैन्धव, सौवीर, पांचनद, शल, बाह्लीक, भूरिश्रवा, पुरुमित्र औ जय प्रभृति वीरगण उनके साथ गमन करते थे, कृपाचार्य शक, किरात औ यवनोंके साथ सेनाके उत्तर भागसे गमन करते थे, संसप्तकगण त्रिगर्त्त औ अयुत रथियोंके साथ गमन करते थे ।

हे महाराज ! अत्युत्कृष्ट एकलक्ष हस्ती, एक एक हस्तीके ऊपर शत शत रथ, एक एक रथके प्रति शत शत अश्व, एक एक अश्वके प्रति दश दश धनुर्द्धर दश दश धनुर्द्धरके ऊपर दश दश चर्मी रक्षक इसप्रकार व्यूहित सेनाको लेके सेनापति भीष्म किसी दिन मानुष, किसी दिन देव, किसी दिन गांधर्व औ जैसी किसी दिन आसुर व्यूह रचना करते थे, आपकी सेना असंख्य औ भयानक थी वैसी पाण्डवोंकी न थी, परंतु केशव औ धनंजय जिसके नेता है हमारे मतसे वही वृहत् औ दुर्जय है ।

इति २० अध्याय ।

हे महाराज ! दुर्योधनकी महती सेना औ भीष्मकी व्यूह रचना देखके युधिष्ठिर विषण्ण औ विवर्ण होके अर्जुनसे बोले, हे धनञ्जय ! पितामह भीष्म जब धार्तराष्ट्रोंके योद्धा हैं तब हमलोग किसप्रकार युद्ध करेंगे ? महातेजा भीष्मका अक्षोभ्य व्यूह देखके हमको संशय होता है, इस व्यूहसे किसप्रकार परित्राण औ जय लाभ करेंगे ।

धनञ्जय युधिष्ठिरको दुर्मना देखके बोले, हे महाराज ! जिस कारणसे अल्प सैन्यभी प्रज्ञा, शौर्य औ गुणशाली अधिक सैन्यकाभी पराभव कर सकते हैं, वह सुनिये, देवासुर संग्राममे ब्रह्माने देवगणसे कहा है, जो जयाभिलाषी सत्य, दया औ एकमात्र धर्मसे जयलाभ होता है वैसा बलवीर्य द्वारा नही

होता है, महर्षि नारद, भीष्म औ द्रोण यह जानते हैं इस लिये धर्माधर्म औ लोभका विषय जानके निरहंकार होके युद्ध कीजिये, जहां धर्म वहांजय, नारदने कहा है जहां कृष्ण वहां जय, इस से जयही होगा।

हे राजन्! जैसे अन्यगुण वासुदेवमे हैं वैसही जयश्री है, जहां यह गमन करते हैं वहां जयश्री गमन करता है, इस लिये अनंततेजा सनातन पुरुष कृष्ण हैं तब जयमे संदेह क्या है? यह अप्रतिहत सायक जनार्दन पूर्वमे हरिरूप धारण करके देवासुर संग्राममे आविर्भूत होय पूछने लगे कि कौन जय लाभ करेगा? तब जिन्होने कहा हम लोगका जो कृष्णके अनुगत हैं हम लोगही जयी होगें उन्हीका जय हुआ, उन्हीके प्रसादसे इन्द्रादिने त्रैलोक्य लाभ किया है, जब कृष्णही कहते हैं जय लाभ होगा तबतो दुःखका कारण कुछभी नही है।

इति २१ अध्याय।

अनंतर युधिष्ठिर प्रभृति पाण्डवगण अपनी सेनाको भीष्मके सेनाके प्रतिपक्षमे व्यूहित करके धर्मयुद्धसे स्वर्ग कामना करने लगे, धनञ्जय सकलके मध्यस्थित शिखण्डीके सेनाका, भीमसेन अग्रचारी धृष्टद्युम्नका औ युयुधान दक्षिण सेनाका रक्षण करने लगे, राजा युधिष्ठिर गजसमूहके बीचमे इन्द्र सदृश, युद्धोपकरण संपन्न, हेमरत्न चित्रित सुवर्णमय भांडयुक्त रथ पर आरूढ़ हुए, उनके मस्तक पर उन्नत, दन्तनिर्मित शलाका संपन्न श्वेतवर्ण छत्र शोभित होने लगा, महर्षिगण स्तुतिपाठ पूर्वक उनको प्रदक्षिण, पुरोहित सकल शत्रुवध घोषण औ ब्रह्मर्षि सिद्धगण जप, मंत्र औ औषधिसे स्वस्त्ययन औ स्तव करने लगे, महात्मा युधिष्ठिरने सहस्र गौ, पुष्प, फल निष्क समेत ब्राह्मणोंको देके इन्द्रके तुल्य समर क्षेत्रमे प्रस्थित हुए, अर्जुन

गाण्डीव औ बाण हस्तमे लेके सूर्यसमान उज्वल, किंकिणी शोभित सुवर्ण खचित श्वेत तुरंग युक्त सुचक्र कपिध्वज केशवाधिष्ठित दिव्यरथ पर आरूढ़ हुए, जिनके समान धनुर्द्धर इस पृथ्वीमे नही, वह अर्जुन आपके पुत्रोंकी सेना उच्छिन्न करनेके लिये रौद्ररूप हुए, जो क्रीड़ामे मृगराजसमान, विक्रममे देवराज समान औ दर्पमे हनमान् समान हैं वह दुर्जय भीमसेन नकुल औ सहदेवकेसहित वीरोंके रथके परिरक्षक हुए, आपके योद्धालोग उनको सेनाके आगे आवते देखके भयसे भग्नोत्साह होके पङ्कनिमग्न हस्तीके ऐसे व्यथित होने लगे,।

अनन्तर भगवान् जनार्दन सेनामे अवस्थित धनंजयसे बोले, हे धनंजय! जो सेनामे अवस्थान करके रोषसे सबको उत्तापित करते हैं औ जिन्होने तीनशत अश्वमेध आहरण किया, जिनको यह सेना सब रक्षण करती है उन्ही भीष्मसे उनकी सेना नाश पूर्वक युद्ध करो।

इति २२ अध्याय।

स०। अनंतर वासुदेवने अर्जुनके हितार्थ पुनः उनको कहा, हे अर्जुन! शत्रुओंके पराजयके अर्थ पवित्र औ संग्रामाभिमुख होके दुर्गाका स्तव करो, तब अर्जुन विविध वाक्योंसे दुर्गाकी स्तुति करने लगे, भक्तवत्सला दुर्गा स्तुतिसे प्रसन्न होय वासुदेवके सम्मुख आकाशमे आयके बोलीं, हे वीर! तुम अल्प कालहीमे रिपुओंका पराजय करोगे, तुम नर हो, नारायण तुम्हारे सहाय हैं, अन्य शत्रुकी कथा क्या है वज्रधर इन्द्रभी तुम्हारा पराभव कर सकेगा नही, यह कहके अंतर्धान हुई, धनंजय वर लाभ करके जय लाभमे कृतनिश्चय होय रथारोहण करके वासुदेवके शंखध्वनिके साथ शंखध्वनि करने लगे, हे महाराज! हमने वेदव्यासके प्रसादसे यह सब घटना देखा,

आपके पुत्र दुरात्मा काल पाशसे बद्धहोके मोहसे नर औ नारायणको नहीं जानते हैं, वेदव्यास, नारद, कण्व, परशुराम औ महर्षि नर इन्होने दुर्य्योधनको निवारणभी किया परंतु उन्होने उनका वाक्य नहीं माना, जो होय, जहां धर्म वहां द्युति औ कांति, जहां ह्री वहां श्री औ बुद्धि जहां धर्म वहां कृष्ण जहां कृष्ण वहां जय है।

इति २३ अध्याय।

धृ०। हमारे पुत्र औ पाण्डवगणमे कौन पहिले हृष्टचित्त होके युद्ध करने लगे औ कौन दुर्मना हुए? किसने पहिले प्रहार किया औ किसका माल्य अविकृत रहा?

सं०। दोनो पक्षके योद्धा हृष्टचित्त थे, दोनो पक्षके माल्य समान थे, दोनो पक्षके व्यूहित सैन्यका परस्पर संसर्गसे अतिशय विमर्द उपस्थित हुआ, दोनो पक्षके समकालमे परस्पर गर्जन, गजघोष औ वादित्र शब्दसे कोलाहल होने लगा।

इति २४ अध्याय।

अथ गीतारंभ।

धृ०। कौरव औ पाण्डव संग्रामाभिलाषसे धर्मभूमि कुरुक्षेत्रमे समवेत होके क्या करने लगे?

सं०। राजा दुर्य्योधन पाण्डवसैन्य व्यूहित देखके द्रोणाचार्यके समीप जायके कहने लगे, हे आचार्य! यह देखिये आपको शिष्य धीमान् धृष्टद्युम्नने महती पांडवसेना व्यूहित कियी है, युयुधान, विराट, महारथ द्रुपद, धृष्टकेतु, चेकितान, वीर्यवान काशिराज, पुरुजित, कुंतिभोज, नरोत्तम शैब्य, विक्रमशाली युधामन्यु, वीर उत्तमौजा, अभिमन्यु औ महारथ द्रौपदीके पांचपुत्र यह सब शौर्यशाली महारथ भीमार्जुनके

समकक्ष महाधनुर्द्धर वीरपुरुष इस व्यूहित सैन्यमे सन्निविष्ट हैं, हम लोगोंके जो प्रधान सेनानायक है, आपको अवगत करनेके लिये उनकाभी नाम कहते हैं सुनिये, आप, भीष्म, कर्ण, कृप, अश्वत्थामा, विकर्ण, सोमदत्त पुत्र भूरिश्रवा औ जयद्रथ और अन्यान्य नानाविध अस्त्र शस्त्र संपन्न युद्धविशारद वीरपुरुष हमारे निमित्त प्राण दानमे अध्यवसायारूढ़ हुए हैं, हम लोगोंका यह भीष्मपालित सैन्य अपरिमित, है औ भीम रक्षित पाण्डवसैन्य परिमित है, इस समय आपलोग स्व स्व विभागानुसार समस्त व्यूहद्वारमे अवस्थान करके पितामह भीष्मकी रक्षा कीजिये ।

तब प्रतापवान् भीष्म राजा दुर्य्योधनके हर्षवर्द्धनार्थ उच्च-स्वरसे शंखध्वनि करने लगे, तदुत्तर शंख, भेरी, पणव, आनक औ गोमुख यह सब आहत औ उनसे तुमुल शब्द होने लगा, इधर कृष्ण औ अर्जुन श्वेताश्वयुक्त रथपर आरूढ़ हुए, वासु-देव पांचजन्य शंख अर्जुन देवदत्त शंख भीमसेन पौंड्र नामक, राजा युधिष्ठिर अनंत विजया नामक, नकुल सुघोष शंख, सह-देव मणिपुष्प शंख, औ अभिमन्यु यह सब पृथक् २ शंखध्वनि करने लगे, वह तुमुलशब्द भूमंडल औ नभोमण्डल प्रतिध्वनि करके धृतराष्ट्रोंका हृदय विदारित करने लगा ।

हे राजन्! अनन्तर धनञ्जय उस समारब्ध युद्धमे धार्तराष्ट्रों को यथायोग्य अवस्थित देखके निजशरासन उत्तोलन पूर्वक वासुदेवसे बोले, हे अच्युत! दोनो सेनाके बीचमे हमारा रथ स्थापन करो, दुर्बुद्धि दुर्य्योधनके प्रियाचरणके वासनासे जो सब आए हैं, उनमे अवस्थान करता है, सो देखेंगे, तब हृषीकेशने उभय सेनाके मध्यस्थलमे रथ स्थापन करके कहा, हे पार्थ! यह भीष्म द्रोण प्रभृति योद्धा औ समस्त कौरव एकत्र हुए हैं, देखो, धनञ्जय उभय सेनामे अपने पितृव्य, पितामह आचार्य्य,

मातुल, भ्राता, पुत्र, पौत्र, श्वशुर, औ मित्र अवस्थान करते हैं, देखतेही कारुण्यरससे विषस्त्र होय वासुदेवसे बोले, यह समस्त आत्मीय लोग युद्धार्थी होके आगत हुए हैं, इनको देखके हमारा शरीर अवसन्न कम्पित औ रोमांचित होता है, मुख शुष्क होता है, गाण्डीव हस्तसे स्खस्त होता है, समस्त त्वचा-दग्ध होती है, हम इहां रह सकते नही, चित्त उद्भ्रान्त हो रहा है, हम केवल दुर्निमित्तही देखते हैं, इन आत्मीयोंका वध करना श्रेयस्कर बोध होता नही, हे कृष्ण! हम अब जय, राज्य औ सुखको इच्छा करते नही, जिनके लिये राज्य, भोग औ सुखकी कामना, वही आचार्य्य, पिता, पुत्र प्रभृति सबही इस युद्धमे जीवन औ धन परित्यागमे कृतसंकल्प हुए हैं, तब हम लोगोंको राज्य, धन औ जीवनसे प्रयोजन क्या है, यह लोग हमारा बध करेंगे, तोभी हम इनके बधकी इच्छा नही करते, पृथ्वीकी कथा दूर है, त्रैलोक्य लाभ होय तोभी हम इनके बधकी इच्छा नही करते, धार्त्तराष्ट्रोंको निहत करके क्या हमको प्रीति लाभ होगा, इन आततायीयोंके बधसे पाप भागी होंगे, औ हम लोगोंको बांधव धार्त्तराष्ट्रोंका बध करना किसी प्रकार कर्त्तव्य नही है, हे माधव! आत्मीयोंका नाश करनेसे हम लोगोंको क्या सुख होगा, इन लोगो का चित्त लोभसे अभिभूत हुआ है, इसी यह लोग कुल चय जनित दोष औ मित्रद्रोह जनित पातक देखते नही हैं, परंतु हम लोग कुलक्षय दोष देखकेभी क्यों नही इस पाप बुद्धिसे निवृत्त होते, कुलक्षय होनेसे सनातन कुलधर्म नष्ट होता है, कुलधर्म नष्ट होनेसे समस्त कुल अधर्मसे पूर्ण होता है, कुल अधर्म पूर्ण होनेसे कुलस्त्री व्यभिचारसे दूषित होती हैं, कुल नाशकोंको नरकगामी करना है, कुलनाशकोंके पितृगणका पिण्ड औ उदकक्रिया

लुप्त हो जाती हैं, इस्से वह पतित होते हैं, कुलनाशकोंके वर्णसंकरके हेतुभूत यह सब दोषसे जातिधर्म औ सनातन धर्म उत्पन्न हो जाते है, सुना है कुलधर्म नष्ट होतेही चिरकाल नरकवास होता है, हा! क्या कष्ट है, हमलोग इस महापापमे आरूढ़ हुए हैं, हम प्रतीकार पराङ्मुख औ शस्त्रहीन होय तो यदि राज्य सुख लोभसे स्वजन विनाशमे समुद्यत शस्त्रपाणि धार्तराष्ट्रगण हमको निहत करे उस्सेभी हमारा कल्याण होगा।

हे पृथ्वीनाथ! धनञ्जय यह कहके शर औ शरासन रखके शोकाकुल चित्तसे रथ पर उपवेशन करने लगे।

इति २५ अध्याय।

— — —

गीता प्रथमाध्याय।

तब भगवान् वासुदेव कृपावशम्वद अश्रुपूर्णलोचन विषण्ण वदन धनञ्जयसे बोले,, हे अर्जुन! ऐसे विषम समयमे क्यों तुमको यह अनार्य जनोचित स्वर्ग प्रतिरोधक अकीर्तिकर मोह उपस्थित हुआ, तुम क्लीवता मत करो, यह तुम्हारे उपयुक्त नही है, हे परंतप! अति तुच्छ हृदयदौर्बल्य दूर करो उत्थान करो।

अर्जुन बोले, भगवन्! हम कैसे पूजनीय भीष्म औ द्रोणके साथ शरजालसे प्रति युद्ध करें, महानुभाव गुरुजनका वध किये विना भिक्षान्न भोजन करना होय तो वहभी श्रेय है, परन्तु उनका वध करनेसे इस लोकमे रुधिरलिप्त अर्थ औ काम उपभोग करना पड़ेगा, इस युद्धमे जय औ पराजय इन्मे किसका गौरव अधिक है, सोभी जान सकते नही, जिनका वध करके हम लोगोंकी जीवनेच्छा नही है, वही धार्तराष्ट्र

सम्मुख उपस्थित हैं, कातरता और अवश्यम्भावी कुलक्षय जनित दोषसे हमारा स्वाभाविक शौर्य्यादि अभिभूत और हमारा चित्त धर्मान्ध हुआ है, इस लिये हम तुमको पूछते हैं, जो हमारे पक्षमें श्रेयस्कर होय सो कहो, हम तुम्हारे शिष्य औ तुम्हारे शरणागत है, हमको उपदेश करो, भूमण्डल अकंटक राज्य औ सुरगणका आधिपत्य प्राप्त होने परभी हमारे इन्द्रिय इसी शोकसे शुष्क होंगे, हम ऐसा कुछभी नही देखते हैं, जिस्से हमारा शोक दूर होय इस लिये हम युद्ध करेंगे नही, शत्रुतापन अर्जुन यह कहके तुष्णीभूत हुए।

तब हृषीकेश हास्य वदनसे उभय सेनामध्यस्थ विषण्णवदन अर्जुनसे बोले, हे अर्जुन! तुम्हारे मुखसे पण्डितके तुल्य वाक्य निकलते हैं, परंतु अशोच्य बन्धुगणके निमित्त शोक करके मूर्खता प्रदर्शन करते हो, पण्डितगण मृत वा जीवित् किसीके लिये शोक करते नही, पहिले हम तुम औ यह भूपाल सब विद्यमान थे, औ आगेभी विद्यमान रहेंगे, यह देह जैसा कौमार, यौवन औ जराको प्राप्त होता है, जीवात्मा वैसही देहांतरको प्राप्त होता है, धीर लोग उससे मुग्ध नही होते हैं, विषयके साथ इन्द्रियका जो संबंध है, वही शीत, उष्ण और सुख दुःखका कारण हैं, यह संबंध कभी उत्पन्न होता हैं, कभी नष्ट होता हैं, इस लिये तुम इस अनित्य संबन्धको सहन करो, यह संबन्ध जिनको व्यथित नही करता है, वही समसुख दुःख धीरपुरुष मोक्ष लाभके योग्य होते हैं, जो कभी न थी सो कभी न होगा, जो है, उस्का अभाव नही, तत्त्वदर्शी पण्डित लोग भाव औ अभावका इस प्रकार निर्णय करते हैं, जो इस देहमें व्याप्त हैं, उस्का नाश नही, कोईभी अव्यय पुरुषका नाश कर सकता है? तत्त्वदर्शी कहते हैं, यह सब शरीर अनित्य हैं, शरीरी जीवा-

त्मा नित्य, अविनाशी औ प्रमेय है, इस लिये तुम युद्ध करो, जो ऐसा मनसे करते हो, कि जीवात्मा अन्यका नाश कर्ता है, औ जो ऐसा मनमे करते है, कि अन्य जीवात्माका नाश करता है, वह दोनो अनभिज्ञ हैं, कारण कि जीवात्मा किसीका नाश नही करता और कोई जीवात्माका नाश नही करता, उसको जन्म, मृत्यु अथवा पुनःपुनः उत्पत्ति वा वृद्धि कुछभी नही है, वह अज, नित्य, शाश्वत औ पुराण है, शरीर नष्ट नही होते, जो पुरुष इनको अविनाशी, नित्य, अज औ अव्यय जानते हैं, वह किसीका बध नही करत, वा किसीको बध करनेका आदेश न करते, मनुष्य जैसा जीर्ण वस्त्र त्याग करके नूतन वस्त्र-धारण करता हैं, तद्रूप देही जीर्णदेह त्याग करके नूतन देह-धारण करता है, वह शस्त्रसे छेदित, अग्निसे दग्ध, जलसे, क्लेदित वा वायुसे शोषित नही हैं, वह नित्य, सर्वगत, स्थिर, अचल औ अनादि है, इस लिये अछेद्य, अदाह्य अक्लेद्य औ अशोष्य है, वह चक्षुरादिके अगोचर, मनके अविषय औ कर्मेन्द्रियसे अग्राह्य है, इस लिये तुम जीवात्माको इस प्रकार जानके शोक त्याग करो।

यदि जीवात्मा सर्वदा जन्मग्रहण औ मृत्युमुखमे प्रवेश करते हैं इसे जात औ मृत बोध करते हो तो उनके लिये शोक करना युक्त नही है, कारण की जातका मृत्यु औ मृतका जन्म अवश्यम्भावी औ अपरिहार्य है, इस लिये ऐसे विषयमे शोकाकुल होना उचित नही है, भूत सब उत्पत्तिके पहिले अव्यक्त थे, औ ध्वंसके समयभी अव्यक्त होते हैं, केवल जन्म मरण अंतरालमे प्रकाशित होता है, इस लिये उस विषयमे शोक क्या ? कोई इस जीवात्माको विस्मयके साथ देखते हैं, कोई विस्मयसे सुनते हैं, कोई विस्मयसे वर्णन करते हैं, कोई श्रवण करकेभी जान सकते नहीं, जीवात्मा सबके देहमे

अवश्य रूपसे अवस्थान करते हैं, इस लिये किसी प्राणीके लिये शोक करना उचित नहीं।

तुम स्वधर्म पर दृष्टिपात करोगे तो इस प्रकार विकम्पित न होगे, धर्मयुद्ध बिना क्षत्रियको दूसरा श्रेयस्कर कर्म नहीं है, जो क्षत्रिय यदृच्छासे उपस्थित अनावृत स्वर्गद्वाररूप ईदृश युद्ध लाभ करते हैं वही सुखी है, यदि तुम यह धर्मयुद्ध न करोगे तो स्वधर्म औ कीर्तिसे भ्रष्ट औ पापभागी होगे, लोकमें चिरकाल तुम्हारी अकीर्त्ति कीर्तन करेंगे, सम्भावित को अकीर्त्तिमरणसे अधिक दुःखद है, जो सब महारथ तुम्हारा बहुमान करते थे, उनके पास तुम्हारा गौरव रहेगा नही, वह जानेंगे कि तुम भयसे संग्राम नही करते, वह सब तुमको अवाच्य वाक्य कहेंगे औ सामर्थ्यकि निन्दा करेंगे, इससे अधिक दुःख और क्या है, समरमें विनष्ट होनसे स्वर्ग-लाभ होगा, जय लाभसे पृथ्वी भोग होगी, इस लिये युद्धके निमित्त कृतनिश्चय होयके उत्थान करो, सुखदुःख, लाभालाभ औ जय पराजय तुल्य जानके युद्धमें प्रवृत्त हो, उससे पापभागी न होगे।

हे पार्थ! जो ज्ञानसे आत्मतत्त्व प्रकाशित होता है सो तुम्हारे आगे कहा, अब कर्मयोग विषयिणी बुद्धि अवगत हो, वह बुद्धि प्राप्त होनेसे तुम कर्मबन्धसे मुक्त होगे, कर्मयोगका अनुष्ठान विफल होता नही, उसमें प्रत्यवाय होता नही, धर्मका अल्प अंशभी महत् भयसे त्राण करता है, कर्मयोगमें संशय रहित बुद्धि एकमात्र होती है, परन्तु प्रमाणजनित विवेक-रहित व्यक्तियोंकी बुद्धि अनंत औ बहुशाखा विशिष्ट है, जो लोग मनोहर श्रवण रमणीय वाक्यमें अनुरक्त हैं उनको बहुविध फल प्रदायक वेदवाक्य प्रीतिकर होते हैं, जे स्वर्गादि साधन कर्म भिन्न अन्य कुछ स्वीकार करते नही

कामना परायण हैं, स्वर्गही जीवको परम पुरुषार्थ हैं जन्म, कर्म औ फल फलप्रद, भोग औ ऐश्वर्य लाभका साधनभूत नानाविध क्रिया प्रकाशक वाक्यसे जिनका चित्त अपहृत है औ जो भोग औ ऐश्वर्यमे एकांत संसक्त हैं वह विवेक हीन मूढ़ लोग बुद्धि समाधिमे संशय शून्य होते नही, वेद सब सकाम लोगोको कर्मफल प्रतिपादक है, इस लिये तुम शीतोष्ण, सुखदु:खादि द्वन्द्व सहिष्णु धैर्यशालि योगक्षेम रहित अप्रमादी होके निष्काम हो, जैसा कूप, वापी, तडाग प्रभृति जलाशयसे जो सब प्रयोजन सिद्ध होता है, एकमात्र महाह्रदसे वह सब प्रयोजन सपन्न होता है, वैसही वेदमे जो सब कर्मफल कहे हैं, संशय रहित बुद्धि विशिष्ट ब्रह्मनिष्ठ ब्राह्मण एकमात्र ब्रह्ममे वह सब लाभ कर्ते हैं, कर्महीमे तुम्हारा अधिकार होय, परंतु कर्मफलमे कामना न होय, कर्मफल तुम्हारे प्रवृत्तिका हेतु न होय औ कर्मत्यागमेभी तुम्हारी आसक्ति न होय, तुम आसक्ति परित्याग पूर्वक एकांत ईश्वर परायण होके सिद्धि औ असिद्धि दोनो तुल्य जानके कर्मका अनुष्ठान करो, पण्डित-लोग सिद्धि औ असिद्धि दोनोके तुल्य ज्ञानहीको योग कहते हैं, संशय रहित बुद्धिसे अनुष्ठित कर्मयोगही श्रेष्ठ है, काम्य कर्म सब अति अपकृष्ट हैं, इस लिये तुम कर्मयोगका अनुष्ठान करो, सकाम लोग अति दीन हैं, जिनकी कर्मयोग विषयिणी बुद्धि उपस्थित है वह इस जन्महीमे परमेश्वरके प्रसादसे सुकृत दुष्कृत दोनो त्याग कर्ते हैं, इस लिये कर्मयोगमे यत्न करो, ईश्वराराधनसे बंधन हेतु सब कर्मको मोक्ष साधनता संपादक चातुर्यही योग है, कर्मयोग विशिष्ठ मनीषीगण कर्म जनित फल परित्याग करते हैं, इस लिये जन्म निधनसे मुक्त होके अनामय पदको प्राप्त होते हैं, जब तुम्हारी बुद्धि अति दुर्गमसे उत्तीर्ण होगी तब तुम श्रोतव्य औ श्रुत विषयमे वैराग्य लाभ

करोगे, तब कुछ पूछोगे नहीं, तुम्हारी बुद्धि नानाविध वैदिक औ लौकिक विषय श्रवणसे उद्भ्रान्त हुई है, जब वह विषयांतरसे आकृष्ट न होके स्थिरभावसे परमेश्वरमें अवस्थान करेगी तब तुम तत्त्वज्ञान लाभ करोगे।

अर्जुन बोले, हे केशव! समाधिस्थ स्थितप्रज्ञका लक्षण क्या है उनका वाक्य, अवस्थान औ गति किस प्रकार है?

कृष्ण बोले, पार्थ! जो सर्वप्रकारसे मनोगत कामना परित्याग करते हैं, जिनका आत्मा आत्माहीमें संतुष्ट है वही स्थितप्रज्ञ हैं, जो दुःखमें क्षुब्धचित्त, सुखमें स्पृहाशून्य औ अनुराग, भय, औ क्रोध रहित है, वही मुनि स्थितप्रज्ञ हैं, जो पुत्र मित्र प्रभृतिमें स्नेह शून्य हैं, जो अनुकूल विषयसे प्रसन्न औ प्रतिकूल विषयसे द्वेष करते नहीं, उन्हीकी प्रज्ञा निश्चल औ वही स्थितप्रज्ञ हैं, कूर्म जैसा अपने अंग सब संकुचित करता है, तद्रूप जो विषयसे इन्द्रिय गणका प्रत्याहरण करते हैं, उन्हीकी प्रज्ञा निश्चल औ वही स्थितप्रज्ञ हैं, जो इन्द्रियसे विषयग्रहण नहीं करते हैं, विषय सब उनसे निवृत्त होते हैं, विषयाभिलाष निवृत्त नहीं होताहै, परन्तु स्थितप्रज्ञ परमेश्वरका दर्शन करके विषय वासनसे विमुक्त होते हैं, क्षोभ जनक इन्द्रियगण यत्नशील विवेकी पुरुषके चित्तकोभी बलपूर्वक हरण करता है, इसी लिये योगशील लोग उनका संयम करके सत्यपरायण होते हैं, इस प्रकार इन्द्रियगण जिनके वशीभूत हैं, उन्हीकी प्रज्ञा निश्चला औ वही स्थितप्रज्ञ हैं, पहिले विषय चिंता, चिंतासे आसक्ति, आसक्तिसे अभिलाष, अभिलाषसे क्रोध, क्रोधसे मोह, मोहसे स्मृतिभ्रंश, स्मृतिभ्रंशसे बुद्धिनाश, बुद्धिनाशसे विनाश होता है, जिन्होंने आत्माको वशीभूत किया है, वह रागद्वेषवर्जित आत्मवशीभूत इन्द्रियगण द्वारा विषय भोग करकेभी आत्म प्रसाद लाभ करते हैं,

आत्म प्रसाद होनेसे सकल दुःख नष्ट होते हैं, प्रसन्नात्माकी बुद्धि शीघ्र निश्चल होती है, अजितेंद्रियकी बुद्धि नही इससे वह चिन्ताभी नही कर सकता, चिंता न कर सकनेसे शांति लाभ नही होता है, शांतिहीनको सुख कहां? जो चित्त स्वेच्छाचारि इन्द्रियगणके वशीभुत है वह चित्त वायुसे विघूर्णित समुद्र नौकाके तुल्य जीवात्माके बुद्धिको विषयमे विक्षिप्त करता है, हे महाबाहो! इस लिये जिनके इन्द्रियगण विषयसे निग्रहीत हुए हैं उन्हीकी प्रज्ञा निश्चला औ वही स्थितप्रज्ञ हैं, अज्ञानांधकारसे आहतमतिके निशास्वरूप ब्रह्मनिष्ठामे जितेन्द्रिय योगीगण जागरित रहते हैं, प्राणिगण जिस विषय निष्ठ स्वरूप दिनमे जागरित रहते हैं आत्मतत्त्वदर्शीयोंकी वह रात्रि है, जैसे नदी सब सर्वदा परिपूर्ण स्थिरप्रतिष्ठ समु-द्रमे प्रवेश करती है तद्रूप जिनको भोग सब आश्रय करते हैं वही मोक्षलाभ करते हैं, भोगार्थी वह प्राप्त हो सकते नही, जो कामना त्याग पूर्वक निस्पृह, निरहंकार औ ममताहीन होकेभी व्यवस्तुका उपभोग करते हैं, वही मुक्तिलाभ करते हैं, हे पार्थ! इस प्रकार ब्रह्मज्ञान निष्ठा है, यह प्राप्त होनेसे संसारमे मुग्ध होते नही, जो अंतसमयमेभी इस ब्रह्मज्ञान निष्ठामे अवस्थान करते हैं, वहभी परब्रह्मामे लीन होता है।

इति २६ अध्याय।

अर्जुन बोले हे केशव! यदि तुम्हारे मतमे कर्मसे ज्ञानही श्रेष्ठ है, तब इस मारात्मक कर्ममे क्यों नियोजित करते हो? तुम कभी ज्ञानकी औ कभी कर्मकी प्रशंसा करके हमारे बुद्धिको मुग्ध करते हो, अब जिससे हमारा श्रेय ऐसा एकपक्ष निश्चय करके कहो

कृष्ण बोले, हे पार्थ! हमने पहिलेही कहा कि इस लोकमे निष्ठा दो प्रकार एक शुद्धचित्तोंका ज्ञानयोग औ दूसरा कर्मयोगियोंका कर्मयोग, पुरुष कर्म न करनेसे ज्ञान लाभ करता नही, ज्ञान लाभ होने बिना केवल संन्यासमे सिद्धिलाभ हो सकती नही, कोईभी कर्मत्याग करके क्षणमात्र अवस्थान कर सकता नही, पुरुष इच्छा न करे तोभी प्राकृतिक गुण सब उसको कर्ममे प्रवृत्त करते हैं, जो कर्मेन्द्रियोंका संयम करके मनमे इन्द्रियके विषयोंका स्मरण करता हैं, वही मूढ़ात्मा कपटाचारी कहावता है, जो मनसे ज्ञानेन्द्रियको वशीभूत करके आसक्ति त्याग पूर्वक कर्मेन्द्रियसे अनुष्ठान करता है, वही श्रेष्ठ है, इस लिये तुम नियत कर्म करे, कर्मत्यागसे कर्मही श्रेष्ठ है, कर्मत्याग करनेसे तुम्हारी शरीरयात्रा निर्वाह न होगी, जो कर्म विष्णुके उद्देशसे नही होता है, लोकमे उसीसे बद्ध होता है, इस लिये तुम आसक्तित्याग करके विष्णु उद्देशसे कर्म करो, पहिले प्रजापतिने प्रजाको यज्ञके सहित उत्पन्न करके कहा, हे प्रजागण! तुम लोग यज्ञ द्वारा उत्तरोत्तर वर्द्धित हो, यज्ञ तुम लोगोंकी कामना पूर्ण करे, तुम लोग यज्ञसे देवगणको वर्द्धित करो, देवगण तुम लोगोंको वर्द्धित करे, इस प्रकार परस्पर संवर्द्धन करनेसे तुम दोनोका कल्याण होगा, देवगण यज्ञसे वर्द्धित होके तुम्हारे अभिलषित भोग प्रदान करेंगे, जो देवगणप्रदत्त भोग्य वस्तु उनको दिये विना उपभोग करते हैं, वह चोर हैं, साधुगण यज्ञावशिष्ट भोजन करके सर्व पापसे मुक्त होते है, जो अपने निमित्तही पाक करते हैं, वह पापात्मा पापाही भोजन करते हैं, प्राणिगण अन्नसे अन्न पर्जन्यसे, पर्जन्य यज्ञसे, यज्ञ कर्मसे कर्म वेद औ वेद ब्रह्मसे उत्पन्न होता है, इस लिये सर्वव्यापी ब्रह्म नियतही यज्ञमे प्रतिष्ठित है, जो इस लोकमे विषयासक्त होके

पूर्वोक्त प्रकारसे प्रवर्त्तित कर्मादि चक्रके अनुवर्त्ती नही होते हैं उनका आयु पापमय औ जीवन वृथा है।

आत्माहीमे जिनकी प्रीति, आत्माहीमे जिनका आनन्द आत्माहीमे जिनका संतोष है, उनको कुछभी कर्मानुष्ठान कर्ना न चहिये, कर्म करनेसेभी उनको पुण्य नही औ कर्म न करनेसेभी पाप नही, और उनको मोक्षके लिये ब्रह्मासे स्थावर पर्य्यन्त किसोका आश्रय करना नही पड़ता है, पुरुष आसक्ति त्याग कर्के कर्मानुष्ठान कर्नेसे मोक्षलाभ कर्ता है, इस लिये तुम आसक्ति त्याग करके कर्मानुष्ठान करो, जनक प्रभृति महात्मा लोग कर्महीसे सिद्धि लाभ किये हैं श्रेष्ठ व्यक्ति जो आचरण करते हैं, इतर व्यक्तिभी उसीका आचरण करते हैं, वह जो मान्य करते हैं, वह लोग उसीके अनुवर्त्ती होते है, इस लिये तुम लोगोंका धर्म रक्षणार्थ कर्मानुष्ठान करो, देखो त्रिभुवनमे हमको कुछ अप्राप्य नही है, इससे हमको कुछभी कर्तव्य नही है, तथापि हम कर्मानुष्ठान कर्ते हैं, हम कर्म न करेंगे तो लोग हमारे अनुवर्त्ती न होंगे, इस लिये हमारे कर्म न करनेसे सर्व लोक उत्सन्न हो जांयगे, औ हमही वर्णसंकर औ प्रजाके मलिनताके हेतु होंगे, इस लिये मूर्ख लोग जैसा फलाकांक्षी होके कर्म करते हैं, तद्रूप विद्वान् लोग आसक्ति त्याग करके लोगोंके धर्मरक्षार्थ कर्म करते हैं, विद्वान लोग कर्मासक्त अज्ञानियोंके बुद्धिभेद उत्पन्न न कर्के आप सर्व प्रकारसे कर्मानुष्ठानमे प्रवृत्त करते है, सर्व प्रकारके कर्महो प्रकृतिके गुण रूप इन्द्रियगणसे निष्पन्न होते है, परंतु अहङ्कार विमूढ़ मति लोग अपनेको उन सब कर्मोंके कर्ता ऐसा मनमे करते हैं, इन्द्रियगणही विषयमे प्रवृत्त होते हैं, जानके गुण कर्म विभागके तत्त्वज्ञ विषयमे आसक्त नही होते है, जो प्रकृतिके सत्व प्रभृति गुण करके अतिशय मुग्ध होके इन्द्रिय

कार्य्यमे आसक्त होते हैं, सर्वज्ञ लोग तादृश अल्पदर्शी मन्द-मतियोंको विचालित करते नही।

तुम हमारे सब कर्म समर्पण करके हम अन्तर्य्यामी पुरुषके आधीन होके कर्म करते हैं, इस प्रकार भावना करके कामना ममता औ शोकत्याग करके युद्धमे प्रवृत्त हो, जो श्रद्धावान् औ असूया शून्य होके निरन्तर हमारे मतका अनुसरण करते हैं, वह सर्व कर्मसे मुक्त होते हैं, जो असूया परवश होके इसका अनुष्ठान नही करते हैं, वह सकल विवेक शून्य लोग सर्व कर्म औ ब्रह्ममे विमुग्ध होके नाशको प्राप्त होते हैं, ज्ञानवान्भी स्वीय स्वभावके अनुरूप कर्म करते हैं इससे जब सकल प्राणिही स्वभावके अनुवर्ती है, तब इन्द्रिय निग्रह करनेसे क्या हो सकता है? प्रत्येक इन्द्रियहीका स्वस्व अनुकूल विषयमे अनुराग होता है, औ प्रतिकूल विषयमे द्वेश होता है, वह दोनो मुमुक्षु प्रतिबन्धक है, इस लिये उनके वशवर्ती नही होना चाहिये, सम्यक् अनुष्ठितपर धर्मस किञ्चित् अङ्गहीन स्वधर्मभी श्रेष्ठ है, परधर्म अतिभयानक है, इस लिये स्वधर्ममे मरणभी श्रेय-स्कर है।

अर्जुन बोले, हे वासुदेव! पुरुष इच्छा नही करता तोभी उसको पापाचरणमे कौन बलपूर्वक नियोजित करता?

वासुदेव बोले, हे पार्थ! यह कामही क्रोध रूपसे परिणत रजोगुणसे उत्पन्न, दुष्पूरणीय औ अतिशय उग्र है, इसीको मुक्तिपथका वैरी जानना, जैसा धूमसे अग्नि, मलसे दर्पण औ जरायुसे गर्भ आवृत्त रहता है, वैसही ज्ञानियोंका चिरवैरी दुष्पूरणीय अनल स्वरूप काम ज्ञानको आच्छन्न करता है, इन्द्रिय, मन औ वुद्धि उसके आविर्भावका स्थान है, वह काम आश्रयभूत इन्द्रियादिसे ज्ञानको आच्छन्न करता है, औ देहीको विमोहित करता है, इस लिये तुम पहिले इन्द्रियोंको

दमन औ ज्ञान विज्ञान बिनाशी पापरूप कामका नाश करो देहादि विषयोंसे इन्द्रिय श्रेष्ठ, इन्द्रियोंसे मन श्रेष्ठ, मनसे संशय रहित बुद्धि श्रेष्ठ, जो उस बुद्धिसे श्रेष्ठ है, वही आत्मा, हे महाबाहो! तुम आत्माको इस प्रकार जानके औ मनको संशय रहित बुद्धिसे निश्चल करके कामरूप दुरासद शत्रुका नाश करो ।

इति २८ अध्याय ।

गीता ३ अध्याय ।

हमने पहिले आदित्यको यह अव्यय योग कहा था, आदित्यने मनुको औ मनुने इच्छाकुको कहा था, निमि प्रभृति राजर्षिगणभी परंपरासे इस योग वृत्तान्तको जानते थे, अनन्तर कालक्रमसे विलुप्त होगया था, आज हमने तुम्हारे निकट वही पुरातन योगवृत्तान्त कहा, तुम हमारे भक्त औ सखा हो, इस लिये हमने तुमको रहस्य कहा ।

अर्जुन० । आदित्यके जन्म होने पर तुम्हारा जन्म हुआ है, तब हम कैसे जानेंगे, कि तुमने पहिले आदित्यसे कहा था ।

कृष्ण० । हमने अनेकवार जन्मग्रहण किया है, तुम्हारेभी बहुत जन्म अतीत हुए है, तुम जानते नही हो, हम सब जानते हैं, हम जन्म रहित अनश्वर औ ईश्वर होकेभी स्वीय प्रकृतिका आश्रय करके आत्ममायामे जन्मग्रहण करते हैं, जिस२ समय धर्मका विप्लव होता है, औ अधर्मका प्रादुर्भाव होता है, उसी २ समय हम अपनी सृष्टि करते हैं, हम साधुके रक्षार्थ औ असाधुके नाशार्थ औ धर्म स्थापनके निमित्त युग युगमे जन्मग्रहण करते हैं, जो हमारा यह अलौकिक जन्म औ अलौकिक कर्म यथार्थ जानते हैं, वह शरीरत्याग करके हमको

प्राप्त होते हैं, उनका पुनः जन्म नहीं होता है, अनेक लोग आसक्ति, भय औ क्रोध त्याग करके एकाग्रचित्तसे एकान्त आश्रित औ ज्ञान तपस्यासे पवित्र होते हैं, वह हमारा सायुज्य लाभ करते हैं, जो जैसा हमको भजते हैं, हम उनको वैसही अनुग्रह करते हैं, जो जो करे सब हमरेही सेवा पथमें आवते हैं, मनुष्य लोकमें शीघ्रही कर्म्म सब सफल होते हैं, इस लिये, कर्म्मफलाकांक्षी लोग प्रायः इस लोकमें देवतार्चन करते हैं, हम गुण औ कर्म्मके विभागानुसार ब्राह्मणादि चारो वर्णकी सृष्टि करते हैं, तथापि हम संसार हीन है, औ कर्त्ता ऐसा हमको जानो, कर्म हमको स्पर्श नही कर सकता है, कर्म फलमेंभी हमारी स्पृहा नही है, जो हमको ऐसा जानते हैं, कर्मबन्धनसे वह बद्ध होते नहीं, प्राचीन मुमुक्षु लोग हमको इस प्रकार जानके कर्मानुष्ठान करते थे, इस लिये तुम प्राचीनोका किया कर्म करो।

इस लोकमें विवेकीभी कर्म औ कर्ममें विमोहित हुए हैं, इस लिये तुम जिसके जाननेसे संसारसे मुक्त होगे, वही हम कर्म विषय कहते हैं, कर्मकी गति अति दुरवगाह है, इस लिये विहित कर्म औ अविहित कर्म औ कर्मत्याग इन तीनोंहीका तत्त्व जानना चहिये, जो कर्म्म रहतेभी अपनेको कर्म शून्य औ कर्म्मत्याग होने परभी कर्म्मयुक्त बोध करते हैं, वही मनुष्योंमें बुद्धिमान्, योगी औ कर्म कर्त्ता हैं, जिनका सब कर्म निष्काम है, वही पण्डित कहावते हैं, उनका सब कर्म ज्ञानाग्निसे दग्ध हो जाता है, जो कर्म फलकी आसक्ति त्याग करके चिरतृप्त हैं, औ कीसीका आश्रय लेते नही, वह कर्ममें प्रवृत्त होकेभी कर्म कर्त्ता नही हैं, जो कामना औ सर्व परिग्रह त्याग करते हैं, जिन कामना औ आत्मा विशुद्ध है, वह सब शरीरसे कर्म करकेभी पापभागी नही होते हैं, जो यदृच्छा

लाभसे संतुष्ट, शीतोष्ण सुख दुःखादि सहिष्णु औ वैरहीन हैं, औ जो सिद्धि औ असिद्धि तुल्य जानते हैं, वह कर्म करकेभी कर्मवन्धनसे बद्ध नही होते हैं, जो कामना त्याग किये हैं, जो रागादिसे मुक्त है औ जिनका चित्त ज्ञानमे अवस्थान करता है, वह यज्ञार्थ कर्मानुष्ठान करनेसे कर्म लुप्त हो जाता है, ब्रह्माके लिये हवनीय घृतादि ब्रह्म, अग्नि ब्रह्म, औ जो होय कर्ता वहभी ब्रह्म, इस प्रकार कर्म्म स्वरूप ब्रह्ममे जिनकी समाधि है, वह ब्रह्मको प्राप्त होते हैं, कितने लोग देवतादि यज्ञहीका अनुष्ठान करते हैं, कोईर योगी पूर्वोक्त प्रकारसे ब्रह्मरूप अग्निमे यज्ञरूप उपायसे यज्ञादि कर्म सब आहुति रूपसे अर्पण करते हैं, कोई कोई समय रूप अग्निमे श्रोत्रादि इन्द्रियगणको, कोई कोई इन्द्रियरूप अग्निमे शब्दादि विषय रूप आहुति देते हैं, कोई कोई ध्येय विषयद्वारा उद्दीपित अध्यात्मरूप विषयाग्निमे ज्ञानेन्द्रियके औ कर्मेन्द्रियके कर्म औ प्राणवायुके कर्म हुत करते हैं, दृढ़ व्रत यतिगण द्रव्यदान, तप, समाधि, वेद पाठ औ ज्ञान इन यज्ञोका अनुष्ठान करते हैं, कोईर प्राणवृत्तिमे अपान वृत्तिको हुत करके पूरक, अपान वृत्तिमे प्राण वृत्तिको हुत करके रेचक औ प्राण औ अपानकी गति रोध करके कुम्भकरूप प्राणायाम करते हैं, कोई कोई नियताहार होके प्राणमे इन्द्रियका होम करते हैं, यह सब यज्ञवेत्ता यज्ञद्वारा निष्पाप होके यज्ञ शेषरूप अमृत भोजन करते हुए सनातन ब्रह्मका लाभ करते हैं, यज्ञ हीनको पर लोक क्या यह लोकभी नही, इस प्रकार अनेक यज्ञ वेदसे विस्तारित हुए है, वह सब कर्महीमे उत्पन्न हैं, तुम यह ज्ञान करके मुक्तिलाभ करो, फलके सहित समस्त कर्म ज्ञानके अन्तर्भूत है, इस लिये द्रव्य यज्ञसे ज्ञान यज्ञही श्रेष्ठ है।

हे धनञ्जय! तुम प्रणिपात, प्रश्न औ सेवासे ज्ञान शिक्षा

लेओ, तत्त्वदर्शी ज्ञानी लोग तुमको उसका उपदेश करेंगे, ज्ञान लाभ होने पर तुम इस प्रकार बन्धु,बान्धवके मोहसे अभिभूत होगे नही, तुम अपनेसे समस्तभूतको अभिन्न जानो, इसके अन्तमे परमात्मामे आत्माको अभिन्न देखोगे, यद्यपि तुम सब पापियोंसे अधिक पापी हो तथापि उस ज्ञान रूप नौका द्वारा उस पापसे उत्तीर्ण होगे, जैसा प्रज्वलित अग्नि काष्ठको भस्मावशेष करता है, तद्रूप ज्ञानाग्नि सब कर्मको दग्ध करता है, इस लोकमे ज्ञानके तुल्य शुद्धिकारक और कुछ नही है, मुमुक्षु लोग कर्मयोगसे सिद्धि लाभ करके आपने ज्ञान लाभ करते हैं, जो लोग गुरूपदेशसे श्रद्धावान् गुरु शुश्रूषा परायण औ जितेन्द्रिय है, वही ज्ञान लाभ करके शीघ्र मोक्ष लाभ करते हैं, ज्ञान औ श्रद्धाहीन संशयात्मा विनष्ट होता है, संशयात्माको इस लोकमे औ परलोकमे कुछभी नही है, औ सुखभी नही, जो योगसे सब कर्म ईश्वरमे समर्पण औ ज्ञान द्वारा संशय छेद करते हैं, कर्म उस अप्रमत्तको बद्ध कर सकते नही, अतएव आत्मज्ञान रूप खड्गसे हृदयनिहित अज्ञान रूप संशय छेद करके कर्म योगानुष्ठान करो औ उत्थित हो।

इति २९ अध्याय।

गीता ४ अध्याय।

अर्जुन बोले, हे कृष्ण! तुम कर्मसंन्यास औ कर्मयोग दोनो कहते हो, अब इन दोनोमे जो श्रेयस्कर होय सो निर्द्धारित करके कहो।

कृष्ण बोले, हे पार्थ! कर्मत्याग औ कर्मयोग दोनो मुक्तिके कारण हैं, उनमे कर्मयोगही श्रेष्ठ है, जिनको द्वेष औ आ-कांक्षा नही है, वही नित्यसंन्यासी हैं, कारण कि तादृश

निर्द्वंद्व पुरुषही अनायास संसारबन्धसे मुक्त होते हैं, मूर्खही संन्यास औ योग इन दोनोंका फल भिन्न२ कहते हैं, पण्डित ऐसा नही कहते हैं वास्तविक जो संन्यास औ योग इन दोनो मे एकभी सम्यक् अनुष्ठान करते हैं, वह दोनोका फल लाभ करते हैं, संन्यासी जिस स्थानका लाभ करते हैं, कर्म-योगीभी उसी स्थानका लाभ करते हैं, जो संन्यास औ योग दोनोको तुल्य रूप देखते हैं वही यथार्थ दर्शी हैं, परंतु कर्म-योग विना संन्यास दुःखका कारण है, कर्मयोगयुक्त संन्यासी होके शीघ्र ब्रह्म लाभ करते हैं, जो योगयुक्त होके विशुद्धचित्त होते हैं, जिनका देह औ इन्द्रिय वशीभूत है, जिनका आत्मा सबके आत्मस्वरूप है, वह कर्म करनेसेभी लिप्त नही होते हैं, परमार्थदर्शी कर्मयोगी दर्शन, श्रवण, स्पर्श, घ्राण, अशन, गमन, शयन, आलाप, त्याग, ग्रहण, उन्मेष औ निमेष करकेभी मनमे करते हैं, हम कुछ नही करते इन्द्रियही स्व स्व विषयमे प्रवृत्त होते हैं ऐसा जानते हैं आसक्ति त्याग करके ब्रह्ममे कर्मफलको समर्पण करते हैं वह पत्रमे जलबिंदुके तुल्य पाप लिप्त नही होते हैं, कर्मयोगी चित्तशुद्धिके लिये कर्मफलमे आसक्ति छोड़ के शरीर, मन, बुद्धि औ ममता वर्जित इन्द्रियसे कर्मानुष्ठान करते हैं, परमेश्वर-परायण लोग कर्मफल त्याग करके कैवल्य लाभ करते हैं, ईश्वरनिष्ठा विमुख लोग कामनावशसे फला-कांक्षी होके बद्ध होते हैं, जितेन्द्रिय देही मनसे सर्वकर्म त्याग करके नवद्वारविशिष्ट देहपुरमे सुखसे वास करते हैं, वह आप कर्ममे प्रवृत्त होते नही औ अन्यकोभी प्रवृत्त करते नही, विश्व-कर्ता ईश्वर जीवका कर्तृत्व औ कर्मसृष्ट करते नही औ किसी को कर्मफल त्यागीभी करते नही स्वभावही उसका प्रवर्त्तक है, ईश्वर किसीका पाप वा पुण्य ग्रहण करते नही, अज्ञानसे ज्ञान आवृत है इसे जन्तु मोहित होते हैं, जो ज्ञानसे अज्ञानका

नाश करते हैं उनका ब्रह्मज्ञान आदित्यके समान प्रकाशित होता है, ईश्वरहीमे जिनकी संशय रहित बुद्धि, ईश्वरहीमे जिनका आत्मा, ईश्वरहीमे जिनकी निष्ठा औ ईश्वरही जिनके परम आश्रय है वह ज्ञानसे निष्पाप होके मोक्ष लाभ करते हैं, पण्डित लोग विद्या औ विनयसंपन्न ब्राह्मण, गो, हस्ती, कुक्कुर, औ चाण्डाल इनको समदृष्टिसे देखते हैं, इस प्रकार जिनका मन सर्वत्र समभावसे हैं उन्होने इसी लोकमे स्वर्गका जय किया है, निर्दोष ब्रह्म सर्वत्र समभावसे है इसमे वह समदर्शी, ब्रह्म-भाव प्राप्त हो रहते हैं, जो ब्रह्मवित् ब्रह्ममे अवस्थान करते हैं, वह प्रियवस्तु लाभसे हृष्ट औ अप्रिय वस्तु लाभसे उद्विग्न नही होते हैं, कारण कि वह मोहसे मुक्त होके स्थिरबुद्धि हुए हैं, जिनका चित्त बाह्यसुखमे आसक्त नही है वह अन्तः-करणमे शान्तिसुख अनुभव करते हैं, अन्तमे ब्रह्मसमाधि करके अक्षय सुख लाभ करते हैं, जो सुख विषयसे उत्पन्न होता है, वह दुःखका कारण औ विनश्वर है, पण्डित लोग उसमे आसक्त होते नही, जो इस लोकमे शरीर त्यागके पूर्व काम औ क्रोध के वेगको सहन करते हैं वही योगी औ सुखी हैं, जो आत्मा हीमे जिनका सुख, आराम औ दृष्टि है वही ब्रह्मनिष्ठ योगी ब्रह्ममे लीन होते हैं, जो पापका नाश औ संशयका छेदन औ चित्तको वशीभूत औ सकलके हितका अनुष्ठान करते हैं, वही तत्त्वदर्शी मोक्ष लाभ करते हैं, जो संन्यासी चित्तको आयत्त करके काम औ क्रोधसे मुक्त औ आत्मतत्त्व अवगत होते हैं, वह मोक्ष लाभ करते हैं, मोक्षपरायण मुनि मनसे बाह्यविषय बहि-ष्कृत, नयनद्वयको भ्रूयुग्मके मध्यमे स्थापित औ नासान्तरचारी प्राण औ अपानके वृत्तिको समभावापन्न करके इन्द्रिय, मन औ बुद्धिको वशीभूत एवं इच्छा, भय औ क्रोध दूर करते हैं, वही जीवन्मुक्त हैं, मानवगण हमको यज्ञ औ तपस्याके भोक्ता

औ सब लोगोंके महेश्वर औ सुहृद जानके शांति लाभ करते हैं।

इति ३० अध्याय ।

गीता ५ अध्याय ।

हे अर्जुन! जो फलमें वितृष्ण होके कर्त्तव्य कर्मका अनुष्ठान करते हैं, वही संन्यासी औ वही योगी, जो अग्निहोत्र औ पूर्त प्रभृति कर्म्म त्याग करते हैं, वह संन्यासीभी नही औ योगीभी नही है, पण्डित जिसको संन्यास कहते हैं वही योग है, इस लिये कर्म्म फल परित्याग किये विना कोई योगी हो सकता नही, जो मुनि ज्ञानयोगमें आरोहण करनेकी इच्छा करते हैं, कर्म ही उनको सहाय है, औ जो उस्में आरूढ़ हुए हैं, कर्म त्यागही उनको सहाय है, जो सर्वसंकल्प त्याग कर्के इन्द्रियके भोग्य औ भोग साधन कर्नेमें आसक्त होते नही, वही योगारूढ़ कहावते हैं, आत्मासे आत्माका संसारसे उद्धार करना चहिये, उस्को अवसन्न नही करना चहिये, कारणकि आत्माही आत्माका बन्धु औ आत्माही आत्माका रिपु है, जिस आत्माने आत्माका जय किया है, वही आत्मा आत्माका बंधु है आत्मा आत्माके जयमें असमर्थ है, वही आत्मा शत्रुके तुल्य आत्माको अपकारमें प्रवृत्त होता है, शीत उष्ण, सुख दुःख, औ मान अपमान उपस्थित होय तो केवल जितात्मा प्रशांत जनका आत्माही साक्षात् आत्म भावका अवलंबन करता है, जिनका आत्मा ज्ञान औ विज्ञानसे तृप्त हुआ है, जो निर्विकार औ जितेन्द्रिय है जो लोष्ट, प्रस्तर औ कांचनको समान ज्ञान करते हैं, वही योगारूढ़ कहावते हैं, जो सुहृद, मित्र, अरि, उदासीन, मध्यस्थ, द्वेष्य, बंधु साधु असाधु सबहीको समज्ञान करते हैं, वह सबसे श्रेष्ठ है।

योगीको एकाकी निर्जनमें निरंतर अवस्थान, आशा औ तृष्णा परित्याग पूर्वक अंतःकरण औ देह वशीभूत करके चित्तका समाधान करना चाहिये, जित चित्त औ जितेन्द्रिय योगीको आत्मशुद्धिके लिये एकाग्र मनसे पवित्र स्थानमें क्रमसे कुश, अजिन औ वस्त्रसे निर्मित अनति उच्च अनतिनीच स्थिरतर आसन स्थापन करके उसपर उपवेशन, शरीर, मस्तक, औ ग्रीवा सम औ सरल भावसे रखके दृष्टिको अन्यत्रसे आकर्षण पूर्वक नासिकाके अग्रमें सन्निवेशित करके योगाभ्यास करना, योगीव्यक्ति प्रशांतात्मा, निर्भय, ब्रह्मचारी, संयतचित्त औ मत्परायण होके हमारेमें चित्तको अर्पण करके अवस्थान करना, संयतचित्त योगीके इसप्रकार अंतकरणको समाहित करनेसे हमारा सारूप्यरूप मोक्षप्रधान शांति लाभ होता है, अति भोजनशील वा एकान्त अनाहारी, अति निद्रालु वा एकान्त निद्राहीनको समाधि होता नही, जिनका आहार, विहार, चेष्टा, निद्रा औ जागरण नियमित है, वही दुःख विनाशक समाधि लाभ करते हैं, जब वशीभूतचित्त सर्वकाम्यविषयोंमें निस्पृह होके आत्मामें अवस्थान करता है, तब वह समाहित कहावता है, जितचित्त योगीका चित्त आत्मयोगके समय निर्वातस्थित दीपके समान निश्चल होता है, जिस अवस्थामें चित्त योगानुष्ठानसे निरुद्ध होके उपरत होता है, उसी अवस्थामें विशुद्ध अंतःकरणसे आत्माहीको अवलोकन करके आत्माहीमें तृप्त होता है, जिस अवस्थामें बुद्धिमात्र लभ्य, अतीन्द्रिय आत्यन्तिक सुख लभ्य होता है, जिस अवस्थामें रहनेसे आत्मतत्त्वसे च्युति होती नही, जिस अवस्थाके लाभ होनेसे अन्य लाभका अधिक बोध होता नही, जिस अवस्थाके उपस्थित होनेसे गुरुतर दुःखभी विचलित कर सकता नही, उसी अवस्थाका नाम योग है, उसमें दुःखका संपर्क नही है,

वही विशेष रूपसे जानना चहिये, अध्यवसायसे औ निर्वेद-शून्य चित्तसे अभ्यास करना, संकल्प समुत्पन्न कामना सब निःशेषित औ अंतःकरणद्वारा इन्द्रियोंको सब विषयोंसे निगृहीत करके योगाभ्यास करना, मनको आत्मामे निहित करके स्थिरबुद्धिसे थोड़ा थोड़ा विरतिका अभ्यास करना, अन्य कुछभी चिंतन नही करना, चंचल मन जिस जिस विषयमे विचरण करेगा उसी उसी विषयसे उसको प्रत्याहृत करके आत्माके वशीभूत करना, प्रशांतचित्त, रजो हीन, निष्पाप, जीवन्मुक्त योगी निरतिशय सुख लाभ करते हैं, निष्पाप योगी इस प्रकार मनको सर्वदा वशीभूत करके अनायास ब्रह्मसाक्षात्कारजनित सुख लाभ करते हैं, सर्वत्र ब्रह्मदर्शी समाहित चित्त सकल भूतमे आत्माको औ आत्मामे सकल भूतको अवलोकन करते हैं, जो हममे सब वस्तु औ सब वस्तुमे हमको देखते हैं, हम उसको अदृश्य नही हैं औ वहभी हमको अदृश्य नही है, वह हमसे एकीभूत होके हमको सर्वभूतस्थ जानके हमारा भजन करते हैं, वह कोई वृत्ति अवलंबन करे हमारेहीमे रहता है, जो अपने सुखदुःखके तुल्य अन्यका सुखदुःख जानते हैं, वही श्रेष्ठ योगी है।

अर्जु०। तुमने आत्माका समतारूप योग कहा सो मनके चंचलतासे हम उसको चिरस्थायित्व नही देखते हैं, मन स्वभावसे चंचल, इन्द्रियोंका क्षोभकारी, अजेय औ दुर्भेद्य है, जैसा वायुका रुद्ध करना कठिन है, मनका निग्रह करनाभी वैसही कठिन है।

कृष्ण०। चंचल मन दुर्निग्रह है इसमे संदेह नही, परंतु अभ्यास औ वैराग्यसे उसका निग्रह करना चहिये, जिनका चित्त वशीभूत नही है योगलाभ होना उनको कठिन है, जिन्होने यत्नसे अंतःकरणको वशीभूत किया है वही यथोक्त

उपायसे योगलाभ कर सकते हैं ।

अर्जु॰ । जो श्रद्धावान् है परंतु यत्नहीन औ योगभ्रष्ट चित्त है, वह योगसिद्धि न पायके किस अवस्थाको प्राप्त होते हैं ? वह क्या योग औ कर्म दोनोसे भ्रष्ट, निराश्रय औ ब्रह्मलाभके उपायमे अनभिज्ञ होके छिन्नमेघके तुल्य विनाशको प्राप्त होता है ? हे कृष्ण ! यह संदेह दूर करो ।

कृष्ण॰ । योगभ्रष्ट लोग इस लोकमे वा परलोकमे कहीं नष्ट नही होता है, कोई शुभकारी दुर्गतिको नही प्राप्त होता है, योगभ्रष्ट लोग पुण्यकारीयों को प्राप्य लोकमे बहुतकाल वास करके सदाचार औ धनसंपन्नके इहां अथवा बुद्धिवान् औ योगीके वंशमे जन्मग्रहण करते हैं, योगियोंके कुलमे जन्म अति दुर्लभ है, योगभ्रष्ट लोग उसी जन्ममे पूर्वदेहको बुद्धिलाभ करते हैं, औ मुक्तिलाभके लिये पहिले जन्मसे अधिक यत्नवान् होते हैं, योगभ्रष्ट व्यक्ति किसी विघ्नसे इच्छा न करे तोभी पूर्व जन्मके अभ्याससे वह ब्रह्मनिष्ठ होते हैं, तब वह योगजिज्ञासु होके वेदोक्त कर्मफलसे अधिक फललाभ करते हैं, निष्पापयोगी अधिकतर यत्नसे अनेक जन्मसे सिद्ध होके अंतमे परमगति लाभ करते हैं, हे अर्जुन ! योगी तपस्वीसे श्रेष्ठ हैं औ कर्मीसेभी श्रेष्ठ हैं, अतएव तुम योगी हो, हे पार्थ ! जो हमारेमे अंतःकरणको अर्पण करके श्रद्धापूर्वक हमारा भजन करते हैं, वह हमारे मतसे सब योगियोंसे श्रेष्ठ है ।

इति २० अध्याय ।

गीता ६ अध्याय ।

तुम हमसे अनुरक्त औ हमारे आश्रित होके योगाभ्यास पूर्वक जिसप्रकार हमको संपूर्ण रूपसे जान सकोगे, सो सुनो, हम जो अनुभव सहित ज्ञान कहते हैं, वह जाननेसे श्रेय

विषयमें जानना अवशिष्ट नहीं रहेगा, सहस्र सहस्र मनुष्योंमें कोई एक आत्मज्ञानमें यत्नवान् होते हैं, यत्नशील सिद्धोंमेंभी कोई एक हमको प्रकृत रूपसे जान सकते हैं, हमारी मायारूप प्रकृति भूमि, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि, अहंकार इन आठ प्रकारोंसे विभक्त है, यह एक अपरा प्रकृति औ इससे भिन्न हमारी एक जीव परा प्रकृति है, वह इस जगत्को धारण कर रहती है, हे पार्थ! स्थावर जंगमात्मक भूत सब यह क्षेत्र औ क्षेत्रज्ञरूप प्रकृतिद्वयसे उत्पन्न है, अतएव हमही इस जगत्के परम कारण औ हमही इसके प्रलय कर्ता हैं, हमसे भिन्न इस सृष्टि संहारमें अन्य श्रेष्ठ स्वतंत्र कारण नही है, जैसे सूत्रमें मणिग्रथित रहते हैं, तद्रूप विश्व हमारेमें ग्रथित है, हम जलमें रसरूप चन्द्र औ सूर्यमें प्रभारूप, समस्त वेदमें प्रणवरूप, आकाशमें शब्दरूप, मनुष्यमें पौरुषरूप, पृथ्विमें पवित्र गन्धरूप, अग्निमें तेजरूप, सर्वभूतमें जीवनरूप, औ तपस्वियोंमें तपस्या रूपसे अवस्थान करते हैं, हे पार्थ! तुम हमको भूतके सनातन जीव ऐसा जानो, हम बुद्धिमानोंके बुद्धि, तेजस्वियोंके तेजरूप, बलवानके दुराकांक्षा शून्य बलरूप औ सर्वभूतके धर्मानुगत कामरूप हैं, जो सब सात्विक, राजस औ तामस भाव हैं, वह हमसे उत्पन्न हैं औ हमारेही आधीन हैं, परंतु हम उन सभोंके अधीन नहीं हैं, इस जगतीस्थ समस्त लोकही त्रिगुणात्मक भावसे विमोहित होके हमको जान सकते नहीं।

अलौकिक गुणमयी नितांत दुस्तर हमारी एक माया है, जो हमको आश्रय करते हैं वही इस मायाका अतिक्रम कर सकते हैं, इस मायासे जिनका ज्ञान अपहृत हुआ है, औ जो असुरभाव अवलम्बन करते हैं, वह समस्त दुष्कर्मकारी नराधम मूर्ख कदापि हमको पाय सकते नहीं, आर्त, आत-

ज्ञानाभिलाषी, अर्थाभिलाषी औ ज्ञानी यह चार प्रकारके पुण्यवान् लोग हमारी आराधना करते हैं, उनमे अत्यंत भक्त औ योगयुक्त ज्ञानीही श्रेष्ठ हैं, हम ज्ञानवान्के औ ज्ञानवान् हमारे प्रिय हैं, पूर्वोक्त चार प्रकारके उपासक मोक्षलाभ कर सकते हैं, परंतु हमारे मतसे ज्ञानीही आत्मा स्वरूप हैं, वह यदेकचित्त होके हमको एकमात्र उत्तम ज्ञान करते हुए आश्रय करते हैं, बहुजन्म अतिक्रांत होनेपर ज्ञानवान् लोग वासुदेवही यह चराचर विश्व है ऐसी विवेचना करके हमको प्राप्त होते हैं, परंतु वैसे महात्मा परम दुर्लभ हैं, अन्य उपासक लोग स्वीय प्रकृतिके वशीभूत औ कामना शतसे हतज्ञान होके प्रसिद्ध नियम अवलंबन पूर्वक भूत, प्रेत प्रभृति क्षुद्र देवताका आराधन करते हैं, जो जो भक्त श्रद्धासे जिस किसी देवताका अर्चन करनेका अभिलाष करते हैं, हमही उनको अचलश्रद्धा प्रदान करते हैं, वह लोग उसी श्रद्धासे उन सब देवताओंका आराधन करते हैं, तदुत्तर हमहीसे हितकर अभिलषित सब प्राप्त होते हैं, परंतु वह सब अल्प बुद्धिओंका देवतालब्ध फल सब क्षय होजाता है, देवयाजी लोग देवताको प्राप्त होते हैं, हमारे भक्त हमको प्राप्त होते हैं, हम अव्यक्त हैं परंतु निर्बोध मनुष्य हमारा अव्यय औ अति उत्कृष्टरूप न जानके हमको मनुष्य, मीन औ कूर्मादि भावापन्न जानते हैं, हम योगमायासे प्रच्छन्न हुए हैं, सबके समक्ष हम कदापि प्रकाशमान होते नही, इसीसे मूढ़ लोग महको जन्महीन औ अव्यय जान सकते नही, हे अर्जुन! हम भूत, भविष्य औ वर्तमान यह तीनो विषय जानते हैं, परंतु हमको कोई जान सकता नही, जन्मग्रहण करने पर भूत सब इच्छा द्वेष समुत्थित शीतोष्णादि द्वन्द्व निमित्त मोहसे विमोहित होते हैं, परंतु जिन पुण्यात्माओंका पाप विनष्ट औ

शीतोष्णादि द्वन्द्व निमित्त मोह अपगत होता है, यही सब कठोरव्रत परायण महात्मा महारी आराधना करते हैं, जो हमारा आश्रय करके जरा मृत्युसे विमुक्त होनेके लिये यत्न करते हैं, वही सब अध्यात्म विषय, निखिल कर्म औ सनातन ज्ञान सकते हैं, जो अधिभूत, अधिदैव औ अधियज्ञके सहित हम को सम्यक् जानते हैं, वही सब समाहित चित्त मृत्युकालमें हमको भूलते नही।

इति २१ अध्याय।

गीता ७ अध्याय।

अर्जु०। ब्रह्म, अध्यात्म औ कर्म किसको कहते हैं? अधिभूत औ अधिदैव क्या है? यनुष्यदेहमे अधियज्ञ क्या? वह अधियज्ञ किस रूपसे अवस्थान करता है? संयतचित्त किस प्रकार मृत्युकालमें ब्रह्मको जानते हैं?

वासु०। जो परम, अक्षय औ जगत्के मूल कारण है वही ब्रह्म हैं, उसी ब्रह्मका अंश स्वरूप जीव देहका अधिकार कर के अवस्थान करता है, वही अध्यात्म कहावता है, जिसमें भूतगणकी उत्पत्ति औ वृद्धि होती है वही यज्ञकर्म है, विनश्वर देहादिपदार्थ भूतोका कधिकार करके रहता है, इसीसे उसको अधिभूत कहते हैं, सूर्यमण्डलवर्ती वैश्वराज पुरुष देवताओंके अधिपति है इससे उनको अधिदैवत कहते हैं, और हमही उसी देहमें यज्ञके अधिष्ठाची देवता रूपसे अवस्थान करते हैं, इसे अधियज्ञ कहावते हैं, जो अन्तकालमें हमारा स्मरण करके कलेवर त्याग करके प्रयाण करते हैं, वह निःसन्देह हमारे स्वरूपको प्राप्त होते हैं, जो अन्तकालमे एकान्त मनसे जिसका स्मरण करते हैं, वह उसी उसीका रूप लाभ करते हैं, अतएव तुम सर्वदा हमारा स्मरण करो, औ समरमे

प्रवृत्त हो, हमारेमे मन, औ बुद्धि समर्पण करके हमको प्राप्त होगे, इसमे संदेह नही, हे अर्जुन! अभ्यासरूप उपाय अवलम्बन करके अनन्य मनसे उस दिव्यपुरुषका चिन्तन करनेसे उसीमे लीन होते हैं, जो कोई मृत्यु कालमे अविचलितचित्तसे भक्ति औ योगसे भ्रूयुगके मध्यमे प्राणवायुको समावेशित करके पुरातन विश्वनियन्ता सूक्ष्मसे सूक्ष्म सकलके विधाता अचिंत्य रूप आदित्यके तुल्य स्वप्रकाश अज्ञानान्धकारके ऊपर वर्त्तमान दिव्य परम पुरुषका चिन्तन करते हैं वह उन्हीको प्राप्त होते हैं, हे अर्जुन! वेदवेत्ता जिसको अक्षय कहते हैं औ विषयासक्तिशून्य यतिगण जिसमे प्रवेश करते हैं औ जिनके जाननेको लिये ब्रह्मचर्यानुष्ठानमे प्रवृत्त होते हैं हम वही अप्राप्य वस्तु लाभ होनेका उपाय संक्षेपसे कहते हैं सुनो।

जो जितेन्द्रियद्वार सब संयत हृदयकमलमे मनको निरुद्ध औ भ्रूमध्यमे प्राण वायुको संनिवेशित करके योग जनित धैर्य्य अवलम्बन करके ब्रह्मका नाम रूप एकाक्षर प्रणव उच्चारण पूर्वक हमारा स्मरण कर्ते हुए कलेवर छोड़के प्रयाण करते हैं, वह परम गति लाभ करते हैं, जो अनन्य मनसे सतत हमारा स्मरण करते हैं, वह समाहित योगी हमको अनायास लाभ करते हैं, महात्मा लोग हमको प्राप्त होके औ मोक्ष रूप परम सिद्धि लाभ कर्के दुःखका आलय अनित्य पुनर्जन्म लाभ नही करते हैं, प्राणिगण ब्रह्मलोक पर्य्यन्त सब लोकोंसे पुन प्रति निवृत्त होते हैं, परन्तु हमको प्राप्त होनेसे पुनः जन्म ग्रहण करना नही पड़ता है, सहस्र दैव युगोंसे एक ब्रह्माका दिन ऐसही सहस्र दैवयुगसे रात्रि होती है, तो यह जानते हैं, वही सर्वज्ञ अहोरात्रिवेत्ता है, ब्रह्माका दिन आगत होने पर अव्यक्त कारणसे व्यक्त चराचर भूत सब उत्पन्न होते हैं, औ रात्रि उपस्थित होने पर उस अव्यक्त कारणमे लीन होता है,

वही भूत समूह ब्रह्माके दिवारात्रिमे वारंवार उत्पन्न औ लीन होते हैं, इस चराचरका कारण स्वरूप अव्यक्तसेभी परतर अतिशय अव्यक्त सनातन और एक भाव है, वह समस्त भूत नष्ट होनेसे कदापि नष्ट नही होता है, अतीन्द्रिय औ अक्षय भावहीको परम पुरुषार्थ कहते हैं, वही हमारा स्वरूप है, वह प्राप्त होनेसे पुनः निवर्तित होता नही, हे अर्जुन! उसी परम पुरुषको एकान्त भक्तिसे प्राप्त हो सकते हैं, भूत सब उनके अभ्यन्तरमे अवस्थान करते हैं, वही इस विश्वमे व्याप्त हैं, योगी लोगोंका जिस कालमे गमन करनेसे आवृत्ति औ जिसकालमे गमन करनेसे अनावृत्ति होती है, हम उस कालका विषय कहते हैं, सुनो, जिस स्थानमे दिवस शुक्लवर्ण औ अग्निके तुल्य प्रभायुक्त औ छ मास उत्तरायण हैं, ब्रह्मवेत्ता वहां गमन करके ब्रह्मको प्राप्त होते हैं, और जिस स्थानमे रात्रि धूम्र औ कृष्णवर्ण औ छ मास दक्षिणायण है, कर्मयोगी वहां चन्द्रप्रभाशाली स्वर्ग लाभ कर्के निवृत्त होते हैं, जगत्‌की शुक्ल औ कृष्ण दो शाश्वतगति हैं, उनसे एकसे अनावृत्ति औ एकसे आवृत्ति होती है, हे पार्थ! योगी दोनो गति जानके मोहित होते नही, इस लिये तुम सर्वदा योगानुष्ठान परायण हो, शास्त्रमे वेद, यज्ञ, तपस्या औ दानमे जो फल कहा है, ज्ञानी लोग निर्णीत तत्त्व जानके उसमे श्रेष्ठ फल लाभ करते हैं, और जगतका मूल कारण रूप विष्णु पद लाभ करते हैं।

इति ३२ अध्याय।

गीता ८ अध्याय।

हे अर्जुन! तुम असूयाशून्य हो, इस लिये जिसके जाननेसे संसार बन्धन मुक्त हो जाता है, हम वह गोपनीय उपासना सहकृत ईश्वर ज्ञान कीर्तन करते हैं, सुनो यह उत्कृष्ट

ज्ञान विद्या श्रेष्ठ राजगणकोभी गोपनीय अति पवित्र प्रत्यक्ष फल धर्मानुगत औ अव्यय है, उसका अनायास अनुष्ठान हो सकता है, जो इस धर्ममें विश्वास नहीं करते वह हमको प्राप्त न होके मृत्यु परिकीर्ण संसारपथमें निरन्तर भ्रमण करते हैं, हे अर्जुन! हम अव्यक्त रूपसे समस्त विश्वमें व्याप्त है, हमारे में भूत सब रहते हैं, परंतु हम किसीमें अवस्थित नहीं हैं, और हमारे मेंभी कोई भूत नहीं है, हमारा यह ऐशिकी अघटितघटनाचातुरी देखो, हमारा आत्मा सकल भूतका धारण औ पालन करता है, परंतु किसी भूतमें अवस्थान करता नहीं, जैसा वायु सर्व्वत्रगामी औ महत् होकेभी निरं-तर आकाशमें अवस्थान करता है, तद्रूप सकलभूत हमारेमें वास करते हैं, कल्पक्षय कालमें भूतगण हमारे त्रिगुणात्मक मायामें लीन होते हैं, कल्प आरंभमें हम पुनः उनकी सृष्टि करते हैं, हम स्वीय मायामें अधिष्ठित होके जन्मांतरीय कर्मा-नुसार प्रलयकालविलीन कर्म्मादिपरवश भूत सब वारंवार सृष्ट करते हैं,परंतु हम वह सब सृष्टि प्रभृति कर्म्मके आयत्त नहीं है, हम सब कर्ममें अनासक्त होके उदासीनके ऐसे निरंतर रहते हैं, माया हमारी अधिष्ठानमात्र लाभ करके इस चराचर विश्व की सृष्टि करती है, और हमारे अधिष्ठानहीसे यह जगत् पुनः पुनः उत्पन्न होता है, हम सकल भूतके ईश्वर हैं, हमने मनुष्यदेह धारण किया है इससे विफलआशासम्पन्न, विफल कर्मपरायण,विफल ज्ञानयुक्त विचेतन मूढ़ लोग हमारा परमतत्त्व जानके हमारी अवज्ञा करते हैं, कारणकी उन्होने राक्षसी आसुरी औ मोहनी प्रकृतिका आश्रय किया है, महात्मा लोग दैवी प्रकृति आश्रय करके हमको सब भूतके कारण औ अव्ययरूप जानके अनन्यमनसे आराधन करते हैं, सतत भक्तियुक्त औ अवहित होके हमारा नाम कीर्त्तन औ यत्नवान् औ दृढ़-

व्रत होके हमको नमस्कार करते हैं, प्रतिनियत सावधान होके भक्तिसे हमारी उपासना करते हैं, कोई तत्त्वज्ञान रूप यज्ञ, कोई अभेद भावना, कोई पृथक् भावनासे कोई सर्वात्मक करके ब्रह्म रुद्रादि रूपसे हमारी आराधना करते हैं, देखो हम यज्ञ, स्वधा, औषध, मंत्र, आज्य, अग्नि, औ होम हैं, हम इस जगत्को पिता, पितामह, माता औ विधाता हैं, हम ज्ञेय, पवित्र, प्रणव, ऋक्, साम औ यजु हैं, हम कर्मफल, भर्त्ता, प्रभु, साक्षी, निवास, शरण, सुहृद, प्रभव, प्रलय, आधार, लयस्थान औ अव्ययबीज हैं, हम ताप दान, वारि वर्षण औ वारि आकर्षण करते हैं, हमही मृत्यु, अमृत, सत् औ असत् हैं ।

त्रिवेदविहित कर्मानुष्ठानपरतंत्र सोमपायी विगतपाप महात्मालोग यज्ञद्वारा हमारा सत्कार करके सुरलोक लाभका अभिलाष करते हैं, अंतमे अति पवित्र सुरलोक प्राप्त होके उत्कृष्ट देवभोग उपभोग करते हैं, अनन्तर पुण्यक्षय होने पर पुनः मर्त्यलोकमे प्रवेश करते हैं, इस प्रकार वह लोग वेदत्रय विहित कर्मानुष्ठानपर औ भोगाभिलाषी होके गमनागमन करते हैं, जो अनन्यमनसे हमारी चिंता औ आराधना करते हैं, हम उन सब मदेकनिष्ठोका योगक्षेम करते हैं, जो श्रद्धा औ भक्तिसे अन्य देवताकी आराधना करते हैं, वह हमारीही पूजा करते हैं, हम सकल यज्ञके भोक्ता औ प्रभु हैं, परंतु वह हमको यथार्थ जान सकते नही, इसीसे स्वर्गभ्रष्ट होते हैं, देवव्रत परायण लोग देवगण, पितृव्रत परायण पितृगण औ भूतसेवक भूतोको औ हमारे उपासक हमको प्राप्त होते हैं, जो भक्तिसे हमको फल,पुष्प, पत्र औ जल देते हैं, हम उन यतात्म लोगोके वह सब द्रव्य भक्षण औ पान करते हैं ।

हे अर्जुन! तुम जो कर्म, जो भक्षण, जो होम, जो दान औ जो तपस्या करते हो, वह सब हमको समर्पण करो, उस्से

कर्मजानत शुभाशुभ फलसे मुक्त होगे, कर्मार्पण रूप योगयुक्त होके, हमारा लाभ करोगे, हम सकल भूतमे ऐसे हैं, कोई हमारा शत्रु वा मित्र नही है, जो भक्तिपूर्वक हमारा आराधन करते हैं, वह हमारेहीमे रहते हैं, हमभी उन भक्तोमे रहते है, यदि दुराचारी लोगभी अनन्यमनसे हमारी आराधना करते हैं वह साधु हैं, उनका अध्यवसाय अति सुन्दर है, वह शीघ्र धर्मपरायण होके निरंतर शांतिलाभ करते हैं, औ उनका विनाश नही है, अति पवित्र ब्राह्मण औ भक्तिपरायण राजर्षियोंकी कथा दूर रहे जो नितांत पापात्मा हैं, जो कृष्यादि निरत वैश्य औ जो अध्ययन रहित शूद्र है वह, औ स्त्रीलोगभी हमारा आश्रय करनेसे उत्कृष्टगति लाभ कर सकती हैं,हे अर्जुन ! तुम यह अनित्य सुखकर लोक प्राप्त होके हमारी आराधना औ नमस्कार करो, हमारेमें मन समर्पण करके भक्ति परायण हो, औ सर्वदा हमारी पूजा करो, तुम इस प्रकार हमारेमे आत्मा समाहित करनेसे हमारा लाभ करोगे ।

इति २२ अध्याय ।

गीता ९ अध्याय ।

हे अर्जुन ! तुम हमारे वाक्यसे प्रसन्न होते हो, सो अब हम तुम्हारे हितके वासनासे पुनः उत्कृष्ट वाक्य कहते हैं सुनो महर्षि औ सुरगणभी हमारा प्रभाव जानते नही, हम सब विषयमे उनके आदि हैं, जो हमको अनादि, जन्महीन औ सबके ईश्वर जानते हैं, वह जीवलोकमे मोहरहित औ पापसे मुक्त होते हैं, हम बुद्धि, ज्ञान, व्याकुलता, क्षमा, सत्य, दम, शम, सुख, दुःख, जन्म, मृत्यु, भय, अभय, अहिंसा, समता, तुष्टि, दता, तप, यश औ अयश हमहीसे पृथक् पृथक् भाव होते हैं, हमहीसे प्राणियोंके भिन्न भिन्न भाव उत्पन्न होते हैं,

पूर्वतन सनकादि चार औ भृगु प्रभृति सात औ सब मनु यह सब हमारेही प्रभावसे संपन्न औ हमारेही मनसे उत्पन्न हैं, वह इस लोकमे प्रजा सृष्टि करते हैं, जो हमारी यह विभूति औ ऐश्वर्य सम्यक जानते हैं वह संशयरहित योग लाभ करते हैं, पंडितलोग हमको सबके कारण औ हमसे सम प्रवर्तित होता है जानके प्रीत मनसे हमारा अर्चन करते हैं, वह हमारेमे मन और प्राण अर्पण करके हमको जानते हैं औ हमारा नाम कीर्तन करते हैं, वह एकान्त संतोष औ परम शांति लाभ करते हैं, हम इन प्रीतचित्त उपासकोंको बुद्धि प्रदान करते हैं, वह उससे हमको प्राप्त होते हैं, हम दया देखावने के लिये उनके बुद्धि वृत्तिमे अवस्थान करते हैं, प्रदीप्त ज्ञानदीपसे अज्ञानांधकार नष्ट करते है ।

अर्जु०। ऋषिगण, नारद, असित, देवल, औ वेदव्यास तुमको परब्रह्म, परधाम, परम पवित्र, शाश्वत पुरुष, दिव्य, आदिदेव, औ जन्मविहीन कहते हैं, और तुमनेभी अपनेको ऐसही कहा, इस समय तुम जैसा कहते हो, उससे हमको अणुमात्र संदेह नहीं है, देव औ दानव तुमको जानते नहीं, तुम आपही अपनेको जानते हो, हे देव देव ! हे भूत भावन ! तुम जो समस्त भूतिके द्वारासे इस जगतको व्याप्त कर रहे हो, इस समय वह दिव्य बिभूति सब कीर्त्तन करो हम किस-प्रकार तुमको सतत चिन्तन करके अवगत होगे और किस किस पदार्थसे तुम्हारा चिन्तन करें सो सब पुनः स्वीय बिभूति कहिये तुम्हारे वाक्यामृतसे हमारी तृप्ति नही होती हैं।

वासुदेव बोले, हे पार्थ ! हमारे विभूतिकी इयत्ता नही है, इस लिये अब प्रधान प्रधान विभूति कथन करते हैं, सुनो, हम आत्मा औ प्राणियोंके अन्तःकरणमे अवस्थान करते हैं, हम सबके आदि, मध्य औ अन्त हैं, हम आदित्योंके विष्णु,

ज्योतिर्मण्डलमें समुज्वल सूर्य्य, मरुद्गणोंमें मरीचि औ नक्षत्रोंमें चन्द्रमा हैं, हम वेदोंमें साम, देवगणमें इन्द्र, इन्द्रियोंमें मन औ भूतगणमें चेतन हैं, हम रुद्रोंमें शंकर, यक्षराक्षसोंमें कुवेर, वसुगणमें पावक, पर्वतोंमें सुमेरु, पुरोहितोंमें सर्व प्रधान वृहस्पति, सेनामें कार्त्तिकेय औ जलाशयोंमें सागर हैं, हम महर्षियोंमें भृगु, वाक्योंमें प्रणव, यज्ञोंमें जपयज्ञ, स्थावरोंमें हिमालय, वृक्षोंमें अश्वत्थ, देवर्षियोंमें नारद, गन्धर्वोंमें चित्ररथ, औ सिद्धोंमें महामुनि कपिल हैं, हम अश्वगणोंमें अमृत मथनोद्भूत उच्चैःश्रवा, मातङ्गोंमें ऐरावत, मनुष्योंमें राजा, आयुधोंमें वज्र औ धेनुओंमें कामधेन हैं, हम उत्पत्ति हेतु कंदर्प, सविषभुजङ्गोंमें वासुकि, निर्विषभुजङ्गोंमें अनन्त, जलचरोंमें वरुण पितृगणोंमें अर्य्यमा, नियमी लोगोंमें यम औ दैत्यगणोंमें प्रह्लाद हैं, हम गणनाकारियोंके काल, मृगोंमें सिंह, पक्षियोंमें गरुड़ वेगवानोंमें पवन, अस्त्रधारियोंमें दाशरथी राम, मत्स्योंमें मकर औ नदीयोंमें गङ्गा हैं, हम सृष्ट पदार्थोंके आदि, मध्य औ अन्त, विद्याओंमें अध्यात्मविद्या, वादियोंके वाद, अक्षरोंमें अकार औ समासोंमें द्वन्द्व, हम अनन्त, काल, सर्वतोमुख, विधाता, सर्व संहारक मृत्यु औ अभ्युदययोग्य प्राणियोंके अभ्युदय हैं, हम नारीगणमें कीर्ति, श्री, वाक्य, स्मृति, मेधा, धृति औ क्षमा हैं, हम सामवेदमें वृहत्साम, छन्दोंमें गायत्री, मासोंमें मार्गशीर्ष, ऋतुओंमें वसन्त, प्रतारकोंके द्यूत औ तेजस्वियोंके तेज हैं, हम जय, व्यवसाय, सत्ववानोंके सत्व, वृष्णियोंमें वासुदेव, पाण्डवोंमें धनञ्जय, मुनियोंमें व्यास औ कवियोंमें शुक्र हैं, हम शासनकर्त्ताओंके दण्ड, जयाभिलाषियोंकी नीति गोपनीय विषयमें मौनभाव, ज्ञानियोंके ज्ञान औ सकल भूतोंके वीज हैं, हे अर्जुन ! यह चराचर जगत् हमसे स्वतन्त्र नहीं है, इस लिये हमारे दिव्य विभूतिकी इयत्ता नहीं है, हे पार्थ !

हमने संक्षेपसे यह दिव्य विभूतिका विस्तार कहा, वस्तुतः जो जो वस्तु ऐश्वर्य युक्त औ प्रभाव बलयुक्त हैं, वह सब हमारे प्रभावके अंशसे संभूत है, हम एकांशसे इस संसारमे व्याप्त होके रहते हैं, इस लिये हमारे विभूतिके पृथक् रूपसे जाननेका कुछ प्रयोजन नही।

इति ३४ अध्याय।

गीता १० अध्याय।

अर्जुन०। तुम हमारे ऊपर अनुग्रह करके जो परम गुह्य आत्मा औ देह प्रभृतिका विषय कहा, उस्से हमारी भ्रान्ति दूर हुई, हमने तुम्हारे मुखसे भूतगणकी उत्पत्ति, प्रलय, औ तुम्हारा अक्षय माहात्म्य सविस्तर सुना, हे पुरुषोत्तम! तुमने अपना ऐश्विक रूपका जिस प्रकार विषय कहा, हम उस्के दर्शनकी इच्छा करते हैं, अब तुम हमको दर्शन करनेमे सम्यक् उपयुक्त जानो तो उस अव्यय रूपका दर्शन कराओ।

वासु०। तुम हमारा नानावर्ण औ नानाप्रकार आकार विशिष्ट शत शत सहस्र सहस्ररूप प्रत्यक्ष करो, आज हमारे कलेवरमे आदित्य, वसु, रुद्र औ मरुद्गण, अश्विनीकुमार, अदृष्टपूर्व, आश्चर्य बहुतर वस्तु सब चराचर जगत्, औ अन्य जो कुछ देखनेका अभिलाष होय वहभी देखो, परन्तु तुम इस नेत्रसे हमारा रूप देख न सकोगे इस लिये तुमको अभी दिव्यचक्षु देते हैं, उस्से तुम हमारा असाधारण योगबल देखो।

अनन्तर महायोगेश्वर हरि पार्थको बहुमुख औ बहु नयन, दिव्यालङ्कार भूषित, दिव्यायुधधारी, दिव्यमाल्य औ वस्त्रसे भूषित, दिव्यगन्ध-चर्चित, सर्वतोमुख अद्भुत दर्शन, परम ऐश्विकरूप दर्शन कराया, यदि नभोमण्डलमे एककालमे

सूर्य सहस्र उदित होय तो उस काल उस तेजपुञ्जकी उपमा होय, धनञ्जय उनके देहमे बहु प्रकारके एक स्थानस्थित समग्र विश्व देखके विस्मित औ पुलकित हुए, तदुत्तर कृतांजलिपुटसे उनको नमस्कार कर्के बोले, हे देव ! हमने तुम्हारे देहमे समस्त देवता, जरायुज अण्डज प्रभृति भूतगण, पद्मासन् स्थित भगवान् ब्रह्मा, दिव्य महर्षि, औ उरगगण देखते है, हे विश्वेश्वर ! हम तुम्हारे बहुत बाहु उदर, वक्त्र औ नेत्रसंपन्न अनन्त रूप देखते हैं, परन्तु इनका आदि, अन्त औ मध्य कुछ नही देखते हैं, हम तुमको किरीटधारी, गदाचक्रलांछित प्रदीप्त हुताशन तुल्य नितान्त दुर्निरीक्ष्य औ अप्रमेय देखते हैं, तुम अक्षय, परब्रह्म, ज्ञातव्य, विश्वके एकमात्र आश्रय, नित्य, सनातन धर्म-प्रतिपालक औ अनन्त वीर्य हो, हुताशन तुम्हारे मुखमे सतत प्रदीप्त होते हैं, चन्द्र सूर्य तुम्हारे नेत्र हैं, तुम स्वीय तेज प्रभावसे इस जगत्को संतप्त करते हो, एकाकी होकेभी अन्तरीक्ष औ समस्त दिशामण्डल व्याप्त कर रहे हो, तुम्हारा यह भीषण अद्भुत रूप देखके त्रैलोक्य व्यथित होता है, यह सुरगण शङ्कित मनसे तुम्हारे शरणापन्न होते हैं, कोई२ हमारा रक्षा करो कहके कृताञ्जलिपुटसे प्रार्थना करते हैं, सिद्ध औ महर्षिगण स्वस्ति औ स्तुतिवादमे प्रवृत्त होते हैं, रुद्र, आदित्य, वसु, साध्य, मरुत्, पितृ, गन्धर्व, यक्ष, असुर, विश्वेदेव औ सिद्धगण औ अश्विनीकुमारद्वय विस्मित होके तुम्हारा दर्शन करते हैं, हम इन सब लोकोके सहित तुम्हारा बहुनयन औ अनेक मुख, बहुबाहु, बहु ऊरु, बहु चरणयुक्त अनेक उदरसंयुक्त औ बहु दंष्ट्रा कराल आकार देखके व्यथित होते हैं, हम तुम्हारी नभोमण्डलस्पर्शी बहुवर्णसंपन्न, विवृतानन, विशाललोचन अति प्रदीप्तमूर्त्ति देखके किसी प्रकार धैर्य औ शान्ति अवलंबन कर

सकते नहीं, हमारा अन्तःकरण विचलित होता है, हे जगन्नाथ! तुम प्रसन्न हो तुम्हारा कालाभ्रसन्निभ दंष्ट्रा करालमुखमण्डल देख हमको दिग्भ्रम होता है, हम किसी प्रकार सुख लाभ कर सकते नहीं, महावीर भीष्म, कर्ण द्रोण औ धार्तराष्ट्र, अन्यान्य महीपाल औ हम लोगोंके योद्धागणके सहित सत्वर तुम्हारे भयंकर मुखमण्डलमे प्रवेश करते हैं, उनमे ,किसीका मस्तक चूर्ण औ कोई कोई तुम्हारे दंतके सन्धिमे संलग्न हुए हैं, जैसी नदी समुद्रमे प्रवाहित होती है, तद्रूप यह सब वीरपुरुष तुम्हारे प्रदीप्त मुखमे प्रवेश करते हैं, जैसे वेगशाली पतंग सब विनाशके निमित्त अति प्रदीप्त हुताशनमे प्रविष्ट होते हैं, तद्रूप यह समस्त लोक विनष्ट होनेके लिये तुम्हारे मुखमे प्रविष्ट होते हैं, तुम प्रज्वलित मुखविस्तार करके इस समस्त लोगको ग्रास करते हो, तुम्हारा प्रखरतेज समस्त विश्वको व्याप्त करके संतप्त करता है, हे त्रिलोकीनाथ! हम तुमको नमस्कार करते हैं, तुम प्रसन्न हो, हम तुम्हारा कोई वृत्तांत जानते नहीं, सो अब तुम कौन हो सो कहो, हम तुमको जाननेके लिये अति अभिलाषी हैं।

वासुदेव बोले, हे अर्जुन! हम लोगक्षयकारी भयंकर साक्षात् कालरूपी होके सर्वलोकका नाश करनेमे प्रवृत्त हुए हैं, इस समय तुम्हारे विना प्रतिपक्षीय समस्त वीर नष्ट होंगे, अतएव तुम युद्धार्थ उद्युक्त होके शत्रुगणका पराजय करके यशोलाभ अति समृद्ध राज्य उपभोग करो, हमने पहिलेही इनका नाश कर रखा है, इस समय तुम केवल विनाशके निमित्त मात्र हो, हे अर्जुन! हमने द्रोण, भीष्म, जयद्रथ औ कर्णको नष्ट कर रखा है, तुम इनका संहार करो, व्यथित मत हो, शीघ्र संग्राममे प्रवृत्त हो, तुम अवश्य शत्रुओंका पराजय करोगे, तब अर्जुन कम्पितदेह औ कृताञ्जलिपुट होके कृष्ण

को नमस्कार करके भीतमन औ गद्गद वचनसे बोले, हे वासुदेव ! तुम्हारा नाम लेनेसे जो नितांत हृष्ट होके अनुरक्त होते हैं, सिद्धगण नमस्कार करते हैं औ राक्षस भीत होके पलायन करते हैं, सो युक्तही है, तुम ब्रह्मासेभी गुरुतर औ उनके आदिकर्ता एवं व्यक्त औ अव्यक्तके मूल कारण हो, तुम अविनाशी ब्रह्म हो इस लिये सबही तुमको नमस्कार करते हैं, तुम आदिदेव, पुराण पुरुष औ विश्वके एकमात्र निधान, वेत्ता, वेद्य, औ परमबीज औ तुम इस विश्वके सर्वत्र विराजमान हो, तुम वायु, अग्नि, यम, वरुण, शशांक, प्रजापति औ प्रपितामह हो, हे सर्वेश्वर ! हम तुमको सहस्र बार नमस्कार करते हैं, हम तुम्हारे आगे नमस्कार, पीछे नमस्कार औ चतुर्दिक नमस्कार करते हैं, तुम अनन्तवीर्य औ अमित पराक्रम हो, तुम समस्त विश्वको व्याप्त हो रहे हो, इसीसे तुमको सर्वस्वरूप कहते हैं, हम तुमको मित्र जानके, हे कृष्ण ! हे सखे ! कहके संबोधन करते हैं, तुम एकाकी रहो वा बंधुजनमें विद्यमान रहो, विहार, शयन, उपवेशन औ भोजनविषयमें जो तुम्हारा उपहासके लिये जो तिरस्कार किया है, सो अब तुम क्षमा करो,हमने तुम्हारी महिमा न जानके प्रमाद वा प्रणयसे ऐसा व्यवहार किया, तुम स्थावर जंगमात्मक जगत्के पिता, पूज्य औ गुरु हो, त्रिलोकमें तुमसे अधिक तुम्हारे तुल्य कोई नही है, अतएव दंडवत् निपतित होके प्रणाम करके प्रसन्न करते हैं, जैसे पिता पुत्रका, मित्र मित्रका औ स्वामी प्रियतमाका अपराध सहन करते हैं वैसही तुमभी हमारा अपराध सहन करोगे उसमें संदेह नही, हम तुम्हारे अदृष्टपूर्व रूप देखके संतुष्ट हुए, परंतु हमारे हृदयमें भयका सञ्चार होता है, हे कृष्ण ! तुम प्रसन्न होके पुनः पूर्वरूप धारण करके दर्शन देओ, हम तुम्हारा किरीट समलंकृत गदा

चक्र भूषित वह चतुर्भुजमूर्त्ति देखने चाहते हैं ।

वासुदेव बोले, हे अर्जुन ! हमने प्रसन्नमनसे योगमायाके प्रभावसे तुमको तेजोमय अनंत विश्वरूप परमरूप दर्शन कराया, तुम भिन्न किसीने पहिले नहीं देखा था, तुमसे भिन्न मनुष्य-लोकमे कोई वेदाध्ययन, यज्ञानुष्ठान, दान, क्रिया कलाप औ कठोर तपस्यासे हमारा ईदृशरूप नहीं देख सकता है, तुम इसको देखके व्यथित औ विमोहित मत हो, अब भय-त्याग करके प्रीत मनसे पुन: हमारा पूर्वरूप देखो, यह कहके वासुदेव नितांत भीत अर्जुनको पुन: स्वीय सौम्यमूर्त्ति देखायके आश्वासन देने लगे ।

तब अर्जुन बोले, हे जनार्दन ! हम इस समय तुम्हारी प्रशांत मानुषमूर्ति देखके प्रकृतिस्थ हुए ।

वासुदेव बोले, हे अर्जुन ! तुमने हमारी जो दुर्न्निरीक्ष्य मूर्ति देखा, देवगण उसके दर्शनका अत्यन्त अभिलाष करते हैं, परंतु कोई वेदाध्ययन, दान, तपस्या औ यज्ञानुष्ठानसे वह मूर्ति देख सकते नहीं, केवल असाधारण भक्तिहीसे इस प्रकार हमको जान सकता है, हे अर्जुन ! जो हमारा कार्य्यानुष्ठान करते हैं, वह हमारे भक्त औ एकांत अनुरक्त हैं, जो पुत्र कलत्रादि आसक्तिरहित हैं, जिनका किसीके साथ विरोध नहीं है, औ हमही जिनके पुरुषार्थ हैं, वही हमको प्राप्त होते हैं ।

इति ३५ अध्याय ।

गीता ११ अध्याय ।

अर्जुन बोले, हे वासुदेव ! जो त्वद्गतचित्त होके तुम्हारी उपासना करते हैं, जो केवल अक्षय औ अव्यक्त ब्रह्मकी आराधना करते हैं, इन दोनोमे कौन श्रेष्ठयोगी कहावता है ?

वासु०। जो हमारेमे नितांत अनुरक्त औ विनष्टमना होके परमभक्तिसे हमारी उपासना करते हैं, वही प्रधानयोगी, और जो सर्वत्र समदृष्टि, सर्वभूतके हितमे तत्पर औ जितेन्द्रिय होके अक्षय, अनिर्देश्य, अव्यक्त, अचिंतनीय, सर्वव्यापी, ह्रासवृद्धिहीन, कूटस्थ औ नित्य परब्रह्मकी उपासना करते हैं, वह हमहीको प्राप्त होते हैं, देहाभिमानी लोग अति कष्टसे अव्यक्तगति लाभ करते हैं, इस लिये जो अव्यक्त ब्रह्ममे आसक्त है वह अधिकतर दुःख भोग करते हैं, जो मत्परायण होके हमारेमे समस्त कार्य्य समर्पण पूर्वक एकान्त भक्तिसे हमारा ध्यान औ उपासना करते हैं, हम उनको अचिरकाल मे इस मृत्युका आकर संसारसागरसे उद्धार करते हैं।

हे अर्जुन! तुम हमारेमे स्थिरतर चित्त स्थापन औ बुद्धि संनिवेशित करो, इससे परकालमे हमारेहीमे वास कर सकोगे यदि हमारेमे स्थिरचित्त न रख सको तो हमारा स्मरणरूप योगाभ्याससे हमको प्राप्त होनेका अभिलाष करो, यदि उस्से भी असमर्थ हो तो हमारे प्रीत्यर्थ व्रत, पूजा प्रभृति कर्म सब करनेसेभी मोक्ष लाभ कर सकोगे, यदि उस्मेभी अशक्त हो तो एक मात्र हमारे शरणापन्न होके संयतचित्तसे सकल कर्मफल त्याग करो, कारण कि विवेकशून्य अभ्याससे ज्ञान श्रेयस्कर है ज्ञानसे ध्यान श्रेयस्कर, ध्यानसे कर्मफलत्याग श्रेस्कर है, कर्मफल त्यागसे शांतिलाभ होता है, जो भक्तिपरायण द्वेषशून्य, कृपालु ममताहीन, निरहंकार, समदुःख, क्षमावान्, सतत प्रसन्नचित्त, अप्रमत्त, जितेन्द्रिय औ दृढ़ निश्चय है, जिन्होंने हमारेमे मन औ बुद्धिको समर्पण किया है, सुखदुःखको समान जानते हैं, वही हमारे प्रिय हैं, लोग सब जिस्से उद्विग्न नही होते हैं, जो लोगोंको उद्विग्न करते नही औ जो अनुचित हर्ष, क्रोध, भय औ उद्वेगशून्य हैं, वही हमारे प्रिय हैं,

जो निस्पृह, शुचि, दक्ष, पक्षपातरहित औ आधिशून्य है, औ जो सकाम कर्मफल त्याग करते हैं, वही हमारे प्रिय हैं, जो शोक, हर्ष, द्वेष, आकांक्षा औ पुण्यपाप त्याग करके भक्तिमान् होते हैं, वही हमारे प्रिय हैं, जो सर्वसंग परित्याग पूर्वक शत्रु औ मित्र, मान औ अपमान शीत औ उष्ण, सुख औ दुःख, स्तुति औ निंदा तुल्य जानते हैं, यत्किंचित् लाभसे संतुष्ट होते हैं, औ किसीस्थानमें नियत वास नहीं करते हैं, औ स्थिरमति औ स्थिरभक्ति हैं वही हमारे प्रिय हैं, जो मत्परायण होके परमश्रद्धासे उक्त प्रकार धर्मरूप अमृत पान करते हैं वही हमारे प्रिय हैं।

इति २६ अध्याय।

गीता १२ अध्याय।

अर्जुन बो०। हमको प्रकृति, पुरुष, क्षेत्र, क्षेत्रज्ञ, ज्ञान औ ज्ञेय यह सब सुननेकी इच्छा है, सो कहो।

कृष्ण०। इस शरीरको क्षेत्र कहते हैं, जो इसको जानते हैं, वह क्षेत्रज्ञ है हम सब क्षेत्रोंके क्षेत्रज्ञ हैं, क्षेत्र औ क्षेत्रज्ञका जो वैलक्षण्य ज्ञान है वही हमारा अभिप्रेत यथार्थ ज्ञान है, इस समय क्षेत्र जिस प्रकार धर्मविशिष्ट है, जो सब इन्द्रियविकार युक्त हैं, जिसप्रकार प्रकृति पुरुषका संयोग उद्भूत होता है, जिसप्रकार स्थावर जंगमात्मक भेद है, औ जिसप्रकार प्रभावयुक्त है सो संक्षेपसे कहते हैं सुनो, वसिष्ठ प्रभृति ऋषिगणने हेतुविशिष्ट निर्णीत बहुविध वेद, तटस्थ लक्षण औ स्वरूप लक्षणसे उसको निरूपित किया है, पंचमहाभूत, अहंकार, बुद्धि, मूलप्रकृति, एकादश इन्द्रिय, पांच इन्द्रिय विषय, इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख, शरीर, ज्ञानात्मिका मनोवृत्ति, औ धैर्य यह के एक क्षेत्रके धर्म हैं, हे अर्जुन! उक्त धर्मविशिष्ट

इन्द्रियादि विकारशाली क्षेत्र संक्षेपसे कहा, अमानिता, अदांभिकता, अहिंसा, क्षमा, आर्जव, आर्योपासना, शौच, स्थैर्य, आत्मसंयम, विषयवैराग्य, निरहंकारिता एवं जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि, दुःख औ दोषको वारंवार समालोचना, प्रीतित्याग, पुत्र कलत्र औ गृहादिमे अनासक्ति इष्ट औ अनिष्टमे समदृष्टि, हमारेमे अव्यभिचारिणी भक्ति, निर्जनमे अवस्थान, जनसमाजमे विराग, आत्मज्ञान परायणता, तत्त्वज्ञानार्थ दर्शन यही ज्ञान और इसका विपरीत अज्ञान है, अब ज्ञेय विषय कहते हैं सुनो, इसके जाननेसेभी मोक्षलाभ होता है, अनादि निर्विशेषरूप ब्रह्मही ज्ञेय है,वह सत्भी नही औ असत्भी नही सर्वथही उनके कर, चरण, कर्ण, चक्षु, मस्तक औ मुख विराजित है, वह सबको आवृत करके अवस्थान करते हैं, वह इन्द्रियहीन हैं, परंतु समस्त इन्द्रिय औ रूपरसादि इन्द्रियके गुण सब प्रकाश करते हैं, वह आसक्तिशून्य औ सकल वस्तुके आधार हैं, वह निर्मूल हैं, परंतु सर्वगुणपालक हैं, वह चराचर औ सकलभूतके अंतर औ वहिर्भागमे अवस्थान करते हैं, वह अति सूक्ष्मतासे अविज्ञेय हैं, वह अति संनिकृष्ट औ दूरवर्ती हैं, वह भूतोंमे अविभक्त रहकेभी विभक्तके समान अवस्थान करते हैं, वह भूतोंके भर्ता हैं औ प्रलयकालमे समस्त ग्रास करते हैं, औ सृष्टिकालमे नानारूप होके उत्पन्न होते हैं, वह ज्योतिर्मण्डलोंके ज्योति औ अन्धकारके अतीत हैं, वह ज्ञान वह ज्ञेय औ वही ज्ञान प्राप्य हैं, वह सबके हृदयमे अवस्थान करते हैं, हे अर्जुन! हमने क्षेत्र, ज्ञान औ ज्ञेय यह तीन संक्षेपसे कहा, हमारे भक्तगण यह जानके हमारा भाव हृदयमे बद्धमूल कर सकते हैं।

प्रकृति औ पुरुष दोनो अनादि हैं, देह औ इन्द्रियादि विकार, सुखदुःखादि गुण, सब प्रकृतिसे उत्पन्न हैं, शरीर औ

इन्द्रियके कार्य्यत्वमें विषयमें प्रकृति औ सुख दुःखके भोग विषयमें पुरुषही कारण है, पुरुष देहमें अधिष्ठान करके तज्जनित सुखदुःख भोग करता है, इन्द्रियोंसे उसका संपर्कही सत् असत् योनिमें जन्मका एकही कारण है, वह इस देहमें रहकेभी इस देहसे भिन्न हैं, क्योंकि वह साक्षीस्वरूप, अनुग्राहक, विधानकर्त्ता, प्रतिपालक, महेश्वर औ अंतर्यामी है, जो इसप्रकार पुरुष औ समग्र गुणसहित प्रकृतिको जानते हैं, वह शास्त्रसंमत पथ अतिक्रम करतेभी मुक्तिलाभ करते हैं, कोईर ध्यान औ मनसे देहमें आत्माको देखते हैं, कोई कोई प्रकृति पुरुषके वैलक्षण्य योगसे, कोई कोई कर्मयोगसे उनको देखते हैं, कोई कोई आत्माको न जानके अन्यसे उपदेशवाक्य श्रवण पूर्वक उनके उपासनामें प्रवृत्त होते हैं, वह सब श्रुतिपरायण लोग मृत्युको अतिक्रम करते हैं, क्षेत्र औ क्षेत्रज्ञके संयोगसे स्थावर जंगमात्मक समस्थ पदार्थही उत्पन्न होता है, स्थावर जंगमात्मक पदार्थ सब नष्ट होने पर ईश्वर कदापि नष्ट नही होते हैं, वह सब भूतोमें निर्विशेष रूपसे अवस्थान करते हैं, जो उन परमेश्वरको देखते हैं वही यथार्थ देखते हैं, सकल भूतमें समभावसे अवस्थित ईश्वरको देखनेसे अविद्यासे आत्मा विनष्ट होते नही, इसीसे मोक्षप्रद पद प्राप्त होता है, प्रकृति सर्वप्रकारके कर्म संपादन करती है, आत्मा आप कुछ कर्म नही करते, जिन्होंने यह देखा है वह सम्यक्‌दर्शी हैं, जब लोकमें एकमात्र प्रकृतिमें अवस्थित भूतोंको भिन्न भावसे देखते हैं, तब उसी प्रकृतिसे पूर्णब्रह्म लाभ होता है, वही अव्यय परमात्मा देहमें अवस्थान करकेभी अनादित्व औ निर्गुणत्वसे कुछ कर्म करते नही, और कर्मफल द्वारा कदापि लिप्त होते नही, जैसा आकाश सकल पदार्थमें रहकेभी किसी पदार्थसे लिप्त नही है, तद्रूप आत्मा देहमें रहकेभी दैहिक गुणदोषसे लिप्त नही हैं, जैसा

सूर्य्य एकमात्र होके समस्त जगत्को प्रकाशित करता है, वैसही एकाकी आत्मा समस्त देहको प्रकाशित करते हैं, जो ज्ञानचक्षुसे क्षेत्र औ क्षेत्रज्ञका अंतर औ भौतिक प्रकृतिसे मोक्षोपाय जानते हैं, वह परमपद लाभ करते हैं।

इति ३७ अध्याय।

गीता १३ अध्याय।

हे अर्जुन! हम पुनः उत्कृष्ट ज्ञान कहते हैं सुनो, महर्षिगण इसको जानके देहांतमे मोक्षलाभ करते हैं, इसका आश्रय करनेसे हमारा सारूप्य प्राप्त होके सृष्टिकालमेभी जन्मग्रहण करते नही औ प्रलय कालमेभी व्यथित होते नही, महत् प्रकृति गर्भाधान स्थान है, हम उससे समस्त जगत् बीज निक्षेप करते हैं, उससे भूत सब उत्पन्न होते हैं, समस्त योनिमे जो सब स्थावर जंगमात्मक मूर्त्ति उत्पन्न होती है, महत्प्रकृति उन मूर्तियोंकी योनि है, हम बीजप्रद पिता हैं, प्रकृतिसे उत्पन्न सत्व, रज औ तम यह तीन गुण देहके भीतर अव्यय देहीका आश्रय करते हैं, उन्मे सत्वगुण निर्मलतासे नितांत भास्वर औ निरुपद्रव है इसीसे देहिको सुखी औ ज्ञानवान् करता है, रजोगुण अनुरागात्मक है, अभिलाष औ आसक्तिसे उत्पन्न है, वह देहीको कर्मबद्ध करता है, तमोगुण अज्ञानसंभूत है, सर्वदेहीका मोहजनक है, वह प्राणिगणको प्रमाद, आलस्य औ निद्रासे अभिभूत करता है, सत्वगुण प्राणिगणको सुखमे मग्न, रजोगुण कर्मसंसक्त औ तमोगुण ज्ञानको तिरोहित करके प्रमादके वशीभूत करता है, सत्वगुण रज औ तमको अभिभूत करके उद्भूत होता है, जब सत्वगुण वर्द्धित होता है, तब देहमे समस्त इन्द्रियोंसे ज्ञानरूप प्रकाश करता है, रजोगुण प्रवृद्ध होने पर लोभ, प्रवृत्ति, कर्मारंभ स्पृहा औ अशांति उत्पन्न

होता है, तमोगुण वृद्धि होनेसे विवेकभ्रंश, अप्रवृत्ति, प्रमाद औ मोह उत्पन्न होता है,सत्वगुण वृद्धि होनेपर यदि देहत्याग होय तो वह हिरण्यगर्भके उपासकोंके प्रकाशमय लोक लाभ करता है, रजोगुण प्रवृद्ध होने पर यदि मृत्युहोय तो कर्मासक्त मनुष्ययोनिमे जन्म होता है, यदि तमोगुण वृद्धि होने पर देह त्याग होय तो पश्वादि योनिमे जन्म होता है, सात्विक कर्मका फल सुख, राजस कर्मका फल दुःख, तामस कर्मका फल अज्ञान है, सत्वसे ज्ञान, रजसे लोभ औ तमसे प्रमाद, मोह औ अज्ञान उत्थित होता है, सात्विक लोकमे ऊर्द्धभागमे राजस लोकमे मध्यभागमे औ तामस प्रमाद औ मोहादिके वशीभूत लोकमे अधोगति लाभ कर्ते हैं, मानव विवेक होके सब गुणोंको कार्यके कर्ता करके देखते हैं, और गुणसे अतिरिक्त आत्माको जानने से ब्रह्म लाभ होता है, देही देहसंभूत इन तीनो गुणोको अतिक्रम कर्के जन्म मृत्यु जराजनित दुःख परंपरासे रक्षा प्राप्त होते हैं, औ मोक्ष लाभ करते हैं।

अर्जुन बोले, हे वासुदेव! कौन सब चिह्न औ कैसा आचार करनेसे तीनो गुणका अतिक्रम हो सके ?

वासुदेव बोले, हे पार्थ! जो प्रकाश औ प्रवृत्ति औ मोह स्वतः प्रवृत्त होय तो द्वेष करते नहीं वह सब निवृत्त होने पर अभिलाष करते नहीं, जो उदासीनके तुल्य होके सुख-दुःखादि गुण कार्यद्वारा विचलित होते नही, प्रत्युत गुण सब स्वकार्यहीमे व्यापृत रहते हैं, उन सभोंके साथ हमारा कुछ संबन्ध नही है, ऐसी विवेचना कर्के धैर्यावलंबन करते हैं, जो सुखदुःख समान, आत्मनिष्ठ औ धीमान है, जो लोष्ट, प्रस्तर औ काञ्चनको समदृष्टिसे देखते हैं, जिनको प्रिय औ अप्रिय दोनो एक रूप है, जो स्तुति औ निन्दा, मान औ अपमान, शत्रु औ मित्र तुल्यरूपही जानते हैं, जो सर्व कर्मत्यागी है,

वही गुणातीत है, जो असाधारण भक्तियोगसे हमारी सेवा कर्ते हैं, वह सब गुणोंको अतिक्रम कर्के मोक्ष लाभ कर सकते हैं, हे अर्जुन ! हम ब्रह्म, नित्यमोक्ष, शाश्वत धर्म औ अखण्ड सुखसंपत हैं ।

इति १३ अध्याय ।

गीता १४ अध्याय ।

हे अर्जुन ! संसाररूप एक अव्यय अश्वत्थ वृक्ष है, ऊर्द्ध उसका मूल औ अधो उसकी शाखा हैं, वेद उसके पत्र हैं, जो इस अश्वत्थ वृक्षको जानते हैं, वह वेदवेत्ता हैं, उस वृक्षकी शाखा अधो औ ऊर्द्ध विस्तीर्ण है, वह सत्वादि गुणसे वर्द्धित होती हैं, औ रूप रसादि विषय सब उसके पत्र कहावते हैं, उस वृक्षके धर्माधर्मरूप कर्म प्रसूति मूल सब अधोभागमे जीवलोकमे प्रवृत होते हैं, उस वृक्षका रूप दृष्ट होता नही उसका आदि औ अंत नही, वह किस प्रकार अवस्थान कर्ता है, सोभी जाना जाता नही, यह बद्ध मूल अश्वत्थ वृक्ष दृढ़ निर्म्ममतारूप खड्गसे छेदन कर्के उसका मूलभूत वस्तुका अनुसंधान कर्ना, जिसके प्राप्त होनेसे पुनः निवृत्ति होती नही, जिससे यह पुरानी संसार प्रवृत्ति विस्तृत होती है, हम उस आदिपुरुषके शरणापन्न होते हैं, ऐसा अनुसंधान कर्ना, जो अभिमान मोह औ पुत्रकलत्रादिकी आसक्ति त्याग कर्ते हैं, औ सुख औ दुःखसे मुक्त होते हैं, वह सब आत्मज्ञानपरायण निष्काम अविद्याशून्य महात्मा उस अव्यय पदका लाभ कर्ते हैं, चंद्र सूर्य औ अग्नि जिसको प्रकाशित कर सकते नही औ जिसकी प्राप्तिसे पुनः निवृत्ति नही, वही हमारा परमधाम है, इस जीवलोकमे सनातन जीव हमाराही अंश हैं, यह प्रकृतिमे लीन पांच इन्द्रिय औ मनको आकर्षण करता है, जैसा वायु कुसु-

आदिकी गंध ग्रहण पूर्वक गमन करता है, तद्रूप जब शरीर लाभ औ शरीर त्याग करता है, तब पूर्वदेहसे इन्द्रिय समुदाय ग्रहण पूर्वक गमन करता है, यह जीव श्रोत्र, चक्षु, त्वक्, रसना, घ्राण औ मनमे प्रतिष्ठित होके विषयोंका उपभोग करता है, विमूढ़ लोग देहांतरगामी, देहावस्थित, वा विषयभोगलिप्त इन्द्रिय युक्त जीवको कदापि देख सकते नही, ज्ञानचक्षुयुक्त लोगही देख सकते हैं, योगी लोग यत्नवान् होके देहावस्थित जीवको देखते हैं, अविसुद्धचित्त मूढ़ लोग यत्न करकेभी उनको देख सकते नही, चन्द्र, अग्नि औ सकल भुवन विकाशी सूर्य हमारेही तेजसे तेजस्वी हैं, हम तेजःप्रभावसे पृथिवीमे प्रवेश करके सकल भूतोंका धारण और सात्मक चन्द्र होके औषधीकी पुष्टि करते हैं, हम जठराग्नि होके प्राण औ अपानके सहित देहाश्रित होके चतुर्विध अन्नका पाक करते हैं, हम सबके हृदयमे प्रवेश करके रहते हैं, हमसे स्मृति, ज्ञान औ दोनोका अभाव होता है, हम चारो वेदोंसे होते हैं, हम वेदांतकर्ता हैं, औ वेदवेत्ता हैं, क्षर औ अक्षर यह दोपुरुष लोकमे प्रसिद्ध हैं, उनमे सकल भूत क्षर है औ कूटस्थपुरुष अक्षर है, इनसे भिन्न एक उत्तम पुरुष है, उनका नाम परमात्मा है, वह अव्यय परमात्मा इस त्रैलोक्यमे प्रवेश करके समस्त प्रतिपालन करते हैं, हम क्षर औ अक्षर इन दोनो प्रकार पुरुषोंसे हम उत्तम हैं, इससे वेद औ लोकमे पुरुषोत्तम कहावते हैं, जो मोहशून्य होके हम "पुरुषोत्तम" जानते हैं, वह सर्ववेत्ता औ सर्वप्रकारसे हमारी आराधना करते हैं, हे अर्जुन! हमने यह परम गुह्य शास्त्र कहा, यह जाननेसे लोकमे बुद्धिमान औ कृतकृत्य होते हैं।

इति ३९ अध्याय।

गीता १५ अध्याय।

हे अर्जुन! जो दैवसंपत् लक्ष्य करके जन्मग्रहण करते हैं, वह अभय, चित्तशुद्धि, आत्मज्ञानोपायमे परिनिष्ठा, दान, दम, यज्ञ, स्वाध्याय, तप, ऋजुता, अहिंसा, सत्य, अक्रोध, त्याग, शांति, अखलता, प्राणियोंकी दया, अलोलुपता, मृदुता, ह्री, अचपलता, तेज, क्षमा, धृति, शौच, अद्रोह औ अनभिमानिता, यह छब्बीस गुण प्राप्त होते हैं, जो आसुरसंपत् लक्ष्य करके उत्पन्न होते हैं, वह दंभ, दर्प, अभिमान, क्रोध, निष्ठुरता, औ अज्ञानसे अभिभूत होते हैं, दैवसंपत् मोक्षकी हेतु औ आसुरसंपत् बंधनकी हेतु है, तुमने दैवसंपत् लक्ष्य करके जन्म लिया है, इस लिये शोक मत करो, इस लोकमे दैव औ आसुर इस दोप्रकार भूत सृष्ट हैं, दैवलोकोंका विषय विस्तारसे कहा, अब आसुरोंका विषय कहते हैं, सुनो, आसुरस्वभाव लोग धर्मसे प्रवृत्ति औ अधर्मसे निवृत्ति जानते नहीं, उनको शौच नहीं, आचार नहीं, सत्य नहीं, वह जगत्को असत्यमान, स्वाभाविक, ईश्वरशून्य, स्त्रीपुरुषसंभूत औ कामजनित कहते हैं वह सब अल्पबुद्धि लोग इस प्रकार ज्ञान अवलंबन करके मलिनचित्त, उग्रकर्मा औ अहितकारी होके जगत्के क्षयके निमित्त उद्धत होते हैं, दंभ, अभिमान, मद, अशुचिजनित, औ दुष्पूरणीयका मन अवलंबन औ मोहसे असत् परिग्रह करके क्षुद्र देवताके आराधनमे प्रवृत्त होते हैं, मरणपर्यंत अपरिमेय चिंताका आश्रय करके रहते हैं, कामोपभोगही परम पुरुषार्थ निश्चय करते हैं, शत शत आशापाशमे बद्ध औ काम क्रोधके वशीभूत होके कामभोगार्थ अन्यायसे अर्थसंचयका चेष्टा करते हैं, आज हमारा यह मनोरथ पूर्ण हुआ, यह मनोरथ पूर्ण होगा हमारा यह धन है, पुनः यह अर्थ होगा, हमने इस शत्रुका नाश किया, अन्य शत्रुकाभी नाश करेंगे, हम ईश्वर, हम योगी, हम सिद्ध, हम बलवान्, हम सुखी, हम धनवान्, हम कुलीन,

हमारे समान कोई है? हम याग करेंगे, दान करेंगे औ आमोद करेंगे, इस प्रकार अज्ञानसे विमोहित, अनेकविध चित्तविभ्रम औ मोहजालसे आच्छन्न औ कामभोगमे आसक्त होके अति कुत्सित नरकमे निपतित होते हैं, अहङ्कार, बल, दर्प, काम, क्रोध औ असूया आश्रय करके अपने औ पराए देहमे हमारा द्वेष करते हैं आपहीसे आप सम्मानित, अहंकृत औ मान धन मदसे प्रमत्त होके दम्भसे अविधि पूर्वक नाम मात्र यज्ञका अनुष्ठान करते हैं, हम इन सब द्वेषपरवश क्रूरस्वभाव अशुभकारी नराधमोंको निरन्तर संसारमे आसुरयोनिमे निक्षेप करते हैं, वह आसुरयोनि प्राप्त होके हमारा लाभ कर सकते नहीं, इस लिये अधमगति लाभ करते हैं, काम, क्रोध औ लोभ यह तीन नरकके द्वार हैं, इस लिये इन तीनोका त्याग करना, जो इन तीनो नरकके द्वारसे मुक्त हुए हैं वह अपना कल्याण आचरण करते हैं, तदुत्तर उत्तमगति लाभ करते हैं, जो शास्त्रविधि त्याग करके स्वेच्छाचार करते हैं, वह सिद्धि लाभ नही करते हैं औ परमगतिभी लाभ नही करते, अतएव कार्याकार्य व्यवस्थामे शास्त्रही तुमको प्रमाण है, तुम शास्त्रोक्त कर्म जानके उसका अनुष्ठान करो।

इति ४० अध्याय।

गीता १६ अध्याय।

अर्जुन बोले, हे कृष्ण! जो शास्त्रविधि परित्याग करके श्रद्धा से यज्ञानुष्ठान करते हैं, उनकी श्रद्धा सात्विक वा राजसिक अथवा तामसिक है?

कृष्ण बोले, हे पार्थ! देहियोंकि स्वाभाविक श्रद्धा तीन प्रकार, सात्विक, राजस औ तामस, सबहीकी श्रद्धा सत्त्वगुण की अनुयायिनी होती है, पुरुषभी सत्वमय है, पहिले जो जिस

प्रकार श्रद्धावान् थे, परकालमेभी वह वैसही श्रद्धावान् होंगे, सात्विक लोग देवगणके, राजसिक लोग यक्ष औ राक्षसके औ तामस लोग भूत औ प्रेतका याग करते हैं, जो हीनचेता है, वह दंभ, अहङ्कार, काम, राग औ बलसम्पन्न होके शरीरस्थ भूतगणको क्लेशित करके अशास्त्रविहित घोर तपस्या करते हैं, वह हमको क्लेशित करते हैं, उनको क्रूरस्वभाव जानना, सबके प्रीतिकर आहार तीन प्रकार, यज्ञ तीन प्रकार, तप तीन प्रकार औ दानभी तीन प्रकार है, जीवन, उत्साह, बल, आरोग्य, सुख औ रुचिवर्द्धन, रस औ स्नेहयुक्त दीर्घकालस्थायी मनोहर आहार सात्विकोंका है, अति कटु, अति अम्ल, अति लवण, अत्युष्ण, अति तीक्ष्ण, अति रूक्ष, अति दाही औ दुःख शोक औ रोगप्रद आहार राजसोंका है, बहुकालका पक्क, गतरस, दुर्गन्ध, पर्युषित, उच्छिष्ट, अपवित्र भोज्य तामसोंका प्रिय है, फलाकांक्षा शून्य लोग एकाग्रमनसे केवल कर्तव्य औ ज्ञानसे अवश्य कर्तव्य जो यज्ञानुष्ठान करते हैं वह सात्विक हैं, फल लाभ वा महत्व प्रकाशके लिये जो यज्ञ अनुष्ठित होता है, वह राजस है, विधि, अन्न दान, मन्त्र, दक्षिणा औ श्रद्धासे हीन यज्ञको तामसिक कहते हैं ।

देव, द्विज, गुरु औ प्राज्ञकी पूजा, शुचिता, ऋजुता, ब्रह्मचर्य्य औ अहिंसा यह शारीरिक तप है, अभय, सत्य, प्रिय औ हितकर वाक्य औ वेदभ्यास यह वाङ्मय तप है, चित्तशुद्धि, अक्रूरता, मौन, आत्मनिग्रह औ भावशुद्धि यह मानसिक तप है, फलकामना त्याग करके परम श्रद्धासे जो तपस्या होती है वह सात्विक है, सत्कार, मान, पूजा लाभ औ दम्भ प्रकाशके लिये जो तप होता है वह राजस है, यह तपस्या अनियत औ क्षणिक है, जो तपस्या दुराग्रह औ आत्म पीड़ा द्वारा अथवा अन्यके उत्सादन दानार्थ अनुष्ठित होती है

वह तामस है, केवल दातव्य ज्ञानसे देश, काल औ पात्र विवेचना करके अनुपकारीको जो दान दिया जाता है वह सात्विक दान है, प्रत्युपकार वा स्वर्गादिके उद्देशसे क्लेशसे दान होता है, वह राजसिक है, अनुपयुक्त स्थानमें अनुपयुक्त कालमें औ अनुपयुक्त पात्रमें सत्कारवर्जित तिरस्कारसे जो दान है वह तामसिक है।

ब्रह्मका नाम तीन प्रकार, ओं, तत् औ सत् पहिले इस त्रिविध नामसे ब्राह्मण, वेद औ यज्ञ उत्पन्न हुए हैं, इसीसे ब्रह्मवादियोंके विधानोक्त यज्ञ, दान औ तप ओंकार उच्चारण पूर्वक अनुष्ठित होते हैं, मुमुक्षु लोग फलाभिसन्धि परित्याग करके नानाविध तप, यज्ञ, दान करते हैं, अस्तित्व, साधुत्व, मङ्गल कर्म, यज्ञ, तप औ दान और ईश्वरोद्देशसे अनुष्ठित कर्ममें सत् शब्द प्रयुक्त होता है, अश्रद्धासे होम, दान, तपस्या औ अन्यान्य कर्म असत् कहावते हैं, वह सब इस लोकमें वा परलोकमें सफल नहीं होता है।

इति ४१ अध्याय।

गीता १७ अध्याय।

अर्जुन बोले, हे वासुदेव! हम संन्यास औ त्यागका तत्त्व पृथक् सुनने चाहते हैं, तुम कहो।

वासुदेव बोले, हे अर्जुन! पण्डित लोग काम्यकर्म त्यागहीको संन्यास कहते हैं, औ कर्मफल त्यागहीको त्याग कहते हैं, कोई२ कहते हैं, क्रिया कलापको दोषके ऐसा त्याग करना चहिये, अन्य कहते हैं कि यज्ञ, दान औ तपस्या इन कर्मोंका किसी प्रकार त्याग करना नहीं चहिये, सो अब प्रकृत त्याग किस प्रकार है सो सुनो, तामसादि भेद करके त्याग तीन प्रकार, यज्ञ दान औ तपस्याका कदापि त्याग नहीं करना

चाहिये, इनका अनुष्ठानही श्रेयस्कर है, यह केवल कार्य विवे-
कियोंके चित्तशुद्धिके कारण हैं, हे पार्थ! हमारा निश्चय मत
यही है कि, आसक्ति औ कर्मफल त्याग करके इन सकल कर्मों
का अनुष्ठान करना चाहिये, नित्यकर्म त्याग करना न चाहिये,
मोहसे नित्यकर्म त्याग करना तामस कहावता है, नितान्त
क्लेशकर है ऐसे विवेचनासे कायक्लेश औ भयसे जो कर्म त्याग
करना सो राजस कहावता है, राजसत्यागी पुरुष त्यागफल
लाभ कर सकते नहीं, आसक्ति औ कर्मफल त्याग करके कर्तव्य
बोधसे जो कर्म करना वह सात्विक कहावता है, सत्वगुणसंपन्न
मेधावी संशयरहित त्यागी लोग दुःखावह विषयमे द्वेष औ
सुखावह विषयमे अनुराग करते नही, देही निःशेष कर्म त्याग
कर सकता नही, जो कर्मफल त्यागी वही त्यागी कहावते
हैं, कर्मका इष्ट, अनिष्ट औ इष्टानिष्ट यह त्रिविध फल कहा
है, जो त्यागी नही हैं, वह परलोकमे उन सभोंका फल लाभ
करते हैं, संन्यासी कदापि लाभ नही कर सकते हैं, हे अर्जुन!
सकल कर्मोंके सिद्धिके विषयमे कर्मोवशून्य वेदान्त सिद्धान्तमे
शरीर, कर्त्ता, पृथक्विध करण, पृथक्२ चेष्टा औ दैव यह
पांच कारण हैं, न्याय वा अन्याय होय, मनुष्य काय, मन औ
वाक्यसे जो कार्य्य करता है, पांचही उसके कारण हैं, इस
प्रकार कारण अवधारित होने पर जो असंस्कृत बुद्धिसे निरु-
पाधि आत्माको कर्तृत्व जानते हैं, वह दुर्मति साधुदर्शी नही
हैं; जो अपनेको कर्ता ऐसा मनमे करते नही, जिनकी बुद्धि
कार्यमे आसक्त नही है, वह लोगोंको नष्ट करकेभी विनाश
नही करते हैं, विनाशजनित फल भोगभी उनको नही होता
है, ज्ञान, ज्ञेय औ ज्ञाता यह कर्ममे प्रवृत्ति होनेके हेतु हैं,
और करण, कर्म औ कर्ता यह क्रियाका आश्रय करते हैं,
सांख्यशास्त्रमे ज्ञान, कर्म औ कर्ता यह प्रत्येक सत्वादि गुणभेदसे

तीन प्रकारके कहे हैं, हे अर्जुन! हम वह कहते हैं, सुनो; लोकमें जिस ज्ञानसे भिन्न२ भूतोंसे अभिन्न रूप औ अव्यय परमात्मतत्त्व देखते हैं वह ज्ञान सात्विक है, जिस ज्ञानसे पृथक्२ पदार्थ पृथक् रूपसे ज्ञात होना वह राजसिक ज्ञान है, एकमात्र प्रतिमादिमें ईश्वर पूर्ण रूपसे विराजमान हैं, ऐसा अवास्तविक अयौक्तिक तुच्छ ज्ञान तामसिक कहावता है, कर्तृ-त्वाभिमान रहित निष्कामसे राग द्वेषत्याग पूर्वक किया हुआ, नित्यकर्म सात्विक है, सकाम औ अहंकारसे किया हुआ, बहुत आयासकर कर्म राजसिक है, औ भावी शुभाशुभ, वित्त-क्षय, हिंसा औ पौरुष न देखके मोहसे जो अनुष्ठित हुआ, वह तामसिक कहा जाता है, अनासक्त निरहंकार धैर्य औ उत्साहयुक्त सिद्धि औ असिद्धिमें विकाररहित जो कर्त्ता वह सात्विक कर्त्ता है, अनुराग परायण कर्मफलप्रार्थी लुब्धप्रकृति हिंसक अशुचि औ हर्षशोक समन्वित कर्ता राजसिक कहा-वता है, असावधान, विवेकहीन, उद्धत, शठ, परामानी, अलस, विषादयुक्त औ दीर्घसूची कर्त्ता तामसिक है।

हे अर्जुन! गुणके अनुसार बुद्धि औ धैर्यभी त्रिविध है, सो पृथक्२ कहते हैं सुनो, जिस बुद्धिसे प्रवृत्ति, निवृत्ति, कार्य, अकार्य, भय, अभय, बंध, मोक्ष जाना जाता है वह सा-त्विकी बुद्धि है, जिस बुद्धिसे धर्म, अधर्म, कार्य, अकार्य जाना जाता नहीं वह राजसी बुद्धि है, और जिस बुद्धिसे अज्ञाना-न्धकाराच्छन्न होके अधर्मको धर्म औ सकल पदार्थको विपरीत जाना जाता है वह तामसी बुद्धि है, जिस धैर्यसे चित्तकी एकाग्रता होय अन्य विषय धारण न करके मन, प्राण औ इन्द्रिय कार्य सब धारण करे वह सात्विक धैर्य है, जिससे प्रसङ्गसे फल लाभकी इच्छा करके धर्म अर्थ काम धारण करता है वह राजस धैर्य है, अविवेकी पुरुष जिसके प्रभावसे स्वप्न, भय,

शोक,विषाद औ गर्व परित्याग कर सकता नही वह तामसिक धैर्य है।

हे अर्जुन! जिस सुखसे अभ्यासमे आसक्त होना पड़ता है, औ जिसके मिलनसे दुःखका विराम हो जाता है, अब उस त्रिविध सुखका विषय कहते हैं सुनो, जो पहिले विषके तुल्य औ परिणाममे अमृत तुल्य है और जिससे आत्मविषयकी बुद्धि की प्रसन्नता होती है वह सात्विक सुख है, विषय औ इन्द्रियसंयोगसे जो पहिले अमृत तुल्य औ पीछे विष तुल्य होता है, वह राजसुख है, और जो सुख आगे औ पीछेभी आत्माको मोह संपादन करता है, जा निद्रा, आलस्य औ प्रमादसे उत्पन्न वह तामसिक है, पृथिवी वा स्वर्गमे इन स्वाभाविक गुणत्रयसे विरहित कोई प्राणी दृष्ट नही होता है, यह स्वाभाविक गुणत्रयसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, औ शूद्र इन के कर्म विभक्त हुए हैं, शम, दम, शौच, क्षमा, आर्जव, ज्ञान, विज्ञान, औ आस्तिक्य यह ब्राह्मणोंके स्वाभाविक काम हैं, शौर्य, तेज, धृति, दक्षता, समरमे अपराङ्मुखता, दान औ ईश्वरभाव यह क्षत्रियके स्वाभाविक कर्म हैं, कृषि, गोरक्ष, वाणिज्य, यह वैश्यके स्वाभाविक कर्म है, एकमात्र सेवा शूद्रका स्वाभाविक कार्य है, स्व स्व कर्मनिरत मनुष्योंको सिद्धि लाभ होता है, अब स्वकर्मनिरतोंको जिस प्रकार सिद्धि लाभ होता है सो कहते हैं, सुनो, जिससे सबकी प्रवृत्ति उत्पन्न होती है, जो इस संसारमे व्याप्त हो रहे हैं, मनुष्य स्वकर्मसे उनका अर्चन करके सिद्धि लाभ करते हैं, सम्यक् अनुष्ठितपर धर्म अंगहीन स्वधर्मही श्रेष्ठ है, क्यों कि स्वभावविहित कार्य करनेसे दुःख भोग होता नही जैसा धूमराशिसे अग्नि आच्छन्न होता है, तद्रूप समस्त कार्यही दोषसे संस्पृष्ट है, अतएव स्वाभाविक कार्य दोषयुक्त होनेसेभी उसका त्याग नही करना,

आसक्तिवर्जित, जितेन्द्रिय, स्पृहाशून्य मनुष्य सन्न्यास द्वारा सर्व कर्म निवृत्ति रूप सत्वशुद्धि प्राप्त होता है, हे पार्थ! सिद्ध पुरुष जिस्से ब्रह्मको प्राप्त होते हैं, उस ज्ञाननिष्ठाका विषय कहते हैं, सुनो, मनुष्यको उचित है कि विशुद्ध बुद्धि होके धैर्य द्वारा बुद्धिको संयत करना, शब्दादि विषय भोग त्याग करके राग औ द्वेष विरहित होना, काय, वाक्य औ मनको संयत करके वैराग्यावलंबन, ध्यान औ योगानुष्ठान पूर्वक लघु आहार औ निर्जनमे वास करना, अहंकार, बल, दर्प, काम, क्रोध, औ परिग्रह त्याग पूर्वक ममता शून्य होके शांतस्वभाव धारण करना, इस प्रकार अनुष्ठान करनेसे ब्रह्ममे अवस्थान करनेमे समर्थ होते हैं, वह ब्रह्ममे अवस्थित औ प्रसन्नचित्त होके शोक औ लोभके वशीभूत होते नही, सकल प्राणियोंमे समदृष्टि होते हैं, हमारेमेभी उनकी दृढ़ भक्ति होती है, वह भक्तसे हमारा स्वरूप औ हमारा सर्वव्यापित्व जानके अंतमे हमारेहीमे प्रवेश करते हैं, हमारा आश्रय करके कर्मानुष्ठान करते हुए हमारेही दयासे अव्यय शाश्वत पद लाभ करते हैं, हे अर्जुन! तुम मनोवृत्तिसे समस्त कर्म हमको समर्पण करके मत्परायण हो, बुद्धियोग अवलंबन करके सतत हमारेमे चित्तको अर्पण करो, उस्से तुम हमारे अनुग्रहसे दुस्तर दुःखसे उत्तीर्ण होगे, यदि अहंकारसे हमारा वाक्य श्रवण न करोगे तो निःसंदेह विनाशको प्राप्त होगे, यदि तुम अहंकारसे युद्ध न करोगे ऐसा अध्यवसाय करोगे तो वह अत्यंत निष्फल है, कारण कि प्रकृतिही तुमको युद्धमे प्रवृत्त करेगी, तुम मोहसे इस समय जिस कार्यमे प्रवृत्त नही होते हो, सो तुम्हारे क्षत्रिय सुलभ सुरताके वशीभूत होके वह अवश्य करना पड़ेगा, जैसा सूत्रधार दारुयंत्रमे आरूढ़ कृत्रिम भूतोंको भ्रमण करावता है, तद्रूप ईश्वर सब भूतोंके हृदयमे अवस्थान करके उनको भ्रमण

करावता है, इस समय तुम सर्व विषयमे उनहीके शरणापन्न हो, उनकी अनुग्रहसे परम शांति औ शाश्वत पद लाभ करोगे।

हे अर्जुन! हमने यह परम गुह्य ज्ञानका विषय कहा, अब इसकी आलोचना करके जो अभिलाष होय सो करो, तुम हमारे अति प्रिय हो, इसलिये तुमको पुनः गुह्य हितकर वाक्य कहते हैं, सुनो, तुम हमारेमे चित्त समर्पण औ हमारे भक्ति परायण होके यज्ञानुष्ठान औ हमको नमस्कार करो,तुम हमारे अतिशय प्रिय हो इसलिये अंगीकार करते हैं, तुम हमको अवश्य प्राप्त होगे, तुम समस्त धर्मानुष्ठान त्याग करके एकमात्र हमारे शरणापन्न हो, हम तुमको सर्वपापसे मुक्त करेंगे, शोकाकुल मत हो, हमने जो तुमको उपदेश दिया, वह तुम धर्मानुष्ठान शून्य, भक्तिहीन, औ शुश्रूषारहित पुरुषको, विशेष करके जो हमसे असूया रखते हैं, उनको कदापि मत सुनाओ, जो भक्तिपरायण होके हमारे भक्तोंके आगे यह परम गुह्य विषय कथन करेंगे, वह अवश्य हमको प्राप्त होंगे, इस नरलोकमे उससे अधिक हमारा प्रियकारी औ प्रियतम कोई नही है, जो यह हमलोगोंका धर्मानुगत संवाद पठन करेंगे उनको ज्ञानयज्ञसे हमाराही अर्चन होगा, जो असूया छोड़के श्रद्धासे यह संवाद श्रवण करेंगे, वह सर्वपाप विमुक्त होके पुण्यात्माओंके लोकको प्राप्त होंगे, हे धनंजय! तुमने यह एकांत मनसे यह श्रवण किया? तुम्हारा अज्ञानजनित मोह दूर हुआ?

अर्जुन बोले, हे कृष्ण! तुम्हारे अनुग्रहसे हमारा मोहान्धकार दूर हुआ, औ स्मृति लाभ हुआ, हमारे सब सन्देह दूर हो गए, अब जो तुमने कहा वह अवश्य हम करेंगे।

सञ्जय बोले, हे महाराज! हमने वासुदेव औ अर्जुनका इस प्रकार अद्भुत संवाद श्रवण किया, वेदव्यासकी अनुग्रहसे योगेश्वर कृष्णकी मुखसे यह परम गुह्य योग श्रवण किया

इस परम पवित्र अद्भुत संवादको स्मरण करके वारंवार हृष्ट होते हैं, हम वासुदेवका अलौकिक रूप स्मरण करके वारंवार विस्मयापन्न औ हर्षसागरमें निमज्जमान होते हैं, अब हम को बोध होता है जिस पक्षमें वासुदेव औ अर्जुन हैं, उन्ही को राज्यलक्ष्मी, विजय, ऐश्वर्य औ नीति अवश्य प्राप्त होंगे।

इति ४२ अध्याय।

गीता १८ अध्याय।

गीता संपूर्ण।

भीष्मवध पर्वाध्याय।

सं०। महारथगण अर्जुनको गाण्डीवधारी देखके पुनः घोर गर्जन करने लगे, पाण्डव औ सृंजय औ उनके अनुयायी वीर सब शंखवादन करने लगे, उस समय भेरी, पेशी, क्रकच, शृङ्ग प्रभृति विविध वाद्यध्वनि होनेसे तुमुल शब्द उत्थित हुआ, देव, गंधर्व, पितर, सिद्ध, चारण औ महर्षिगण इन्द्रको अग्र-सर करके उस घोर संग्रामको देखनेके लिये आगत हुए।

तब धर्मराज युधिष्ठिर वह सागरोपम उभय पक्षीय सैन्यको संग्रामोद्यत देखके कवच औ आयुध रखके रथसे उतरके कृतां-जलिपुट औ पूर्वाभिमुख होके रिपुसैन्य मध्यस्थ पितामह भीष्मके निकट पादचारसे गमन करने लगे, महावीर धनंजय युधिष्ठिरको गमन करते देखके रथसे उतरके भ्रातृगण सहित उनके पीछे पीछे गमन करने लगे, महात्मा वासुदेवभी उनके पीछे गमन करने लगे, तब अर्जुन कहने लगे, हे धर्मराज! आप क्यों हम लोगोंका त्याग करके रिपुसैन्यमें पादसे गमन करते हैं? इस प्रकार भीमसेन, नकुल औ सहदेवभी कहने लगे, तब धर्मराजने सुनके कुछभी उत्तर न दिया, केवल

उनके ऊपर दृष्टिपात करने लगे, तब जनार्द्दन हंसते हंसते बोले, हे पाण्डवगण! हमने युधिष्ठिरका अभिप्राय जाना, वह भीष्म, द्रोण, कृप औ शल्य प्रभृति गुरुजनको सम्मानित करके शत्रुओंसे संग्राम करेंगे, हम सुनते आए हैं कि, वृद्ध, गुरु औ बांधवोंका सम्मान करनेसे शास्त्रानुसार बलवान् शत्रुसे भी संग्राम करके जय लाभ होता है।

कृष्णके इसप्रकार कहनेसे हाहाकार शब्द उत्थित हुआ, औ अनेक लोग स्तब्ध होरहे, दुर्य्योधन सैन्यमध्यस्थ वीर लोग युधिष्ठिरको देखके परस्पर कहने लगे, यह क्षत्रियकुलकलंक कापुरुष युधिष्ठिर निश्चय भीत होके भ्रातृगण सहित शरणागत होनेके लिये भीष्मके निकट जाते हैं, आहा! अर्जुन भीमके ऐसे सहाय रहके निर्लज्ज युधिष्ठिर क्यों भीत हुए? यह कापुरुष हैं, क्षत्रिय होके क्यों भीत होते?

वीरोंका यह वाक्य सुनके कौरव पक्षीय समस्त सैन्य कौरवोंकी प्रशंसा करने लगे, पाण्डव औ कृष्णकी निन्दा करने लगे, औ स्वीय स्वीय पताका कंपित करने लगे, तदुत्तर पाण्डव औ कृष्ण क्या उत्तर देंगे ऐसी आशंका करने लगे।

तब युधिष्ठिर भ्रातृगणके सहित विविधास्त्र शस्त्र संकुल शत्रु सैन्यमें प्रवेश करके युद्धोद्युक्त पितामहके समीप उपस्थित हुए, उनके चरण ग्रहण पूर्व्वक कहने लगे, हे दुर्धर्ष! हम आपको आमंत्रण देने आए हैं, आपके साथ संग्राम करेंगे, आप अनुग्रह करके आज्ञा औ आशीर्वाद दीजिये।

भीष्म बोले, हे राजन्! यदि तुम हमारे पास अनुज्ञा लेने न आवते तो हम अवश्य "पराभव होय,, ऐसा शाप देते, अब तुम्हारे आवनेसे अति प्रसन्न हुए, आशीर्वाद देते हैं, युद्ध करके जय लाभ करोगे, संग्राममें जो तुम्हारे अभिलाष हैं वह सब सिद्ध होंगे, तुम्हारा कदापि पराभव न होगा, अब

तुम हमसे अभिलषित वर दान मांगो, हे राजन्! पुरुष अर्थ का दास है, अर्थ किसीका दास नही है, यह कथा सत्य है, कौरवोंने अर्थसे हमको बद्ध किया है, इस लिये इस समय तुमको कापुरुषके तुल्य कहते हैं, कौरवोंने अर्थसे हमको वशीभूत किया है इससे उन्हीके पक्षसे युद्ध करना पड़ता है, तुम्हारे पक्षसे युद्ध कर सकते नही, इस लिये इससे भिन्न का प्रार्थना है सो करो।

यु०। आप हमारे हितार्थी होके मंत्रणा औ कौरवपक्ष होके युद्ध कीजिये, यही वर प्रार्थना है।

भी०। तुम्हारे शत्रुके पक्षसे युद्ध करना हमको अवश्य है, जो होय, इस विषयमे तुम्हारा क्या अभिलाष है, सो कहो, हम संपादन करेंगे।

यु०। हम आपको प्रणिपात करके पूछते हैं, आप अपराजय हैं, तब हम लोग किस प्रकार आपका संग्राममे पराजय करेंगे, हे महात्मन्! यदि आप हमारे मंगलाकांक्षी हैं तो यह बता दीजिये।

भी०। हमको संग्राममे पराजय करे ऐसा कोई दृष्टिगोचर होता नही, अन्यकी कथा दूर रहे, साक्षात् पुरंदरभी संग्राममे हमको पराजय कर सकता नही।

युधि०। हम आपको प्रणाम पूर्वक कहते हैं, आप संग्राममे अपना वधोपाय कहिये।

भीष्म०। हमको पराजय कोई कर सकता नही औ हमारा अभी मृत्युकालभी नही है, इस लिये पुनः तुम हमारे पास आओ, तब युधिष्ठिर पितामहका वाक्य मस्तक पर धारण करके अभिवादन पूर्वक सर्व सैन्यके समक्ष भ्रातृगण सहित द्रोणाचार्यके निकट गए, उनको प्रणाम औ प्रदक्षिणा करके पूर्ववत् युद्धका आमंत्रण किया, द्रोणाचार्य्यनेभी भीष्मके ऐसा

कौरव पक्षसे युद्ध करनेका हेतु कहके युधिष्ठिरको आशीर्वाद पूर्वक वर प्रार्थना करने कहा, युधिष्ठिरने भीष्मसे वार्ताके समान कहके उनकाभी अपराजित्व सूचन किया, तब द्रोणने कहा जहां धर्म वहां कृष्ण जहां कृष्ण वहां जय है, तुम स्वछंद शत्रु पराजय करोगे अंतमे युधिष्ठिरने उनकाभी वधोपाय पूछा तब उन्होंने कहा कि हम अप्रिय संवाद सुननेसे त्यक्तशस्त्र होंगे उस अवसरसे हमारा वध हो सकेगा।

तदुत्तर उनको प्रणाम करके कृपाचार्यके पास जा प्रणाम औ प्रदक्षिणा पूर्वक आमंत्रण किया, कृपाचार्यनेभी भीष्म द्रोणके समान हेतु कहके वरदान मागने कहा, युधिष्ठिर उनको अवध्य जानके केवल उनका आशीर्वाद लेके प्रणाम पूर्वक मद्रराज शल्यके पास जाय प्रणाम पूर्वक आमंत्रण किया, शल्यनेभी उन्हीके ऐसा भाषण करके वरदान प्रार्थना को कहा, तब युधिष्ठिरने कहा, महाराज! हमारी वर प्रार्थना यही है कि आप संग्राममे सूतपुत्र कर्णका तेजोह्रास कीजिये, शल्यने वह स्वीकार कर आशीर्वाद दिया।

युधिष्ठिर इस प्रकार गुरुजनको सम्मानित करके भ्रातृगण सहित उस महासैन्यसे वहिर्गत हुए, उस समय कृष्ण कर्णके समीप जायके कहने लगे, हे कर्ण! हमने सुना है कि तुम भीष्म द्वेषी हो, संग्राममे भीष्म रहते युद्ध करोगे नही, इस लिये यावत् भीष्मका वध नही हुआ है तावत् हम लोगोंके पक्षसे युद्ध करो, भीष्म निहत होने पर पुनः कौरव पक्षसे युद्ध करो।

कर्ण बोले, हे केशव! हम दुर्य्योधनका अप्रिय आचरण कदापि नही करेंगे, दुर्य्योधनके हितार्थ प्राणपर्यंत त्याग करेंगे, कृष्ण यह कर्णका वाक्य सुनके वहांसे निवृत्त होय पांडवोंसे मिलित हुए।

अनंतर धर्मराज सैन्यके मध्यमे उच्चस्वरसे कहने लगे, कि

जो हमारे हितसाधनकी वासना करता होय सो आगमन करे, हम उसको वरण करेंगे, तब धृतराष्ट्रतनय युयुत्सु सबके ऊपर दृष्टिपात करके युधिष्ठिरसे बोले, हे महाराज ! हम तुम्हारे पक्षमे होके कौरवोंसे युद्ध करेंगे, तब युधिष्ठिर बोले, हे भ्रातः ! आओ तुम्हारे मूढ़ भ्राताओंसे संग्राम करें, हम, वासुदेव औ भ्रातृगण तुमको अनुरोध करते हैं, तुम हमारे अर्थ युद्ध करो, क्रोधपरायण दुर्बुद्धि दुर्य्योधन शीघ्र नष्ट होगा, हमने जाना कि धृतराष्ट्रके वंश औ पिंडके तुमही एकाकी रक्षा करोगे।

हे महाराज ! अनंतर युयुत्सु सहोदरोंका त्याग करके पाण्डवसेनामे दुंदुभि घोषण पूर्वक पाण्डव पक्षमे समागत हुए, तदुत्तर युधिष्ठिरने कांचन कवच धारण किया, वीरगण स्व स्व रथ पर आरूढ़ होय व्यूह रचना करने लगे, शत शत दुन्दुभि बजने लगी, वीरगण गर्जन करने लगे, धृष्टद्युम्न प्रभृति वीर-गण युधिष्ठिरको पुनः रथ पर आरूढ़ देखके आनंदित हुए, पाण्डवगण मान्योंकी मान रक्षा करने लगे इससे सकल लोग आनन्दित होय युधिष्ठिरकी पूजा औ साधुवाद करने लगे, औ विविध वाद्य वादन करने लगे।

इति ४३ अध्याय।

धृ०। दोनोपक्षीय सैन्य व्यूहित होने पर किसने पहिले प्रहार किया ?

सं०। दोनोसैन्य व्यूहित होने पर आपके पुत्र दुःशासन भ्राताके वाक्यानुसार भीष्मको अग्रसर करके संग्रामार्थ गमन करने लगे, पाण्डवगणभी भीमसेनको अग्रेसर करके भीष्मसे युद्ध करनेको हृष्टचित्तसे गमन करने लगे, दोनोंके शब्दसे चारो दिशा प्रतिध्वनित होने लगीं, उस समय भीमसेन विपुल

गम्भीर नाद करने लगे, उनके गर्जनसे शङ्ख भेरी प्रभृति शब्द, गजगर्जन औ वीरोंके शब्द आच्छादित हो गये, और रिपुसैन्यके वाहन सब मूत्रपुरीष त्याग करने लगे, इस प्रकार रिपुसैन्यको भीत करते हुए भीमसेन सैन्यमें गमन करने लगे, तब कौरवगण चतुर्दिकसे उनके ऊपर बाणवृष्टि करने लगे, भीमसेन मेघाच्छादित दिनकरके तुल्य आच्छादित हो गए, दुर्य्योधन, दुर्मुख, दुःसह, दुःशासन, दुर्मर्षण, विविंशति चित्रसेन, विकर्ण, पुरुमित्र, जय, भोज औ सोमदत्ति यह लोग महाचाप कम्पन औ नाराच ग्रहण करने लगे, पुरंदर जैसे पर्वत ऊपर वज्र प्रहार करते हैं तद्रुप अभिमन्यु, नकुल, सहदेव, धृष्टद्युम्न औ द्रौपदीके पांच पुत्र दुर्य्योधनादिके ऊपर शरवर्षण करने लगे, हे महाराज! उस प्रथम संग्राममें भीषण ज्या निःस्वन औ तलध्वनिसे दोनो पक्षमे कोई रणसे परांमुख न हुआ, हमने स्वनेत्रसे लक्ष्यवेधी द्रोणशिष्योंका हस्तलाघव देखा, उस काल शरासनका ज्यानिर्घोष मुहूर्त मात्रभी निवृत्त न हुआ, प्रदीप्त शरनिकर आकाशसे नक्षत्रोंके ऐसे निपतित होने लगे, अन्यान्य भूपतिगण प्रेक्षकके तुल्य वह भीषण ज्ञातियुद्ध देखने लगे, अनंतर वह महारथ सब क्रुद्ध होके परस्पर स्पर्द्धा करते युद्ध करने लगे, दिवाकर धूलिपटलसे आच्छादित हो गए, शरासनधारी भूपतिगण दुर्य्योधनके आज्ञासे शत्रुसैन्यमे निपतित होने लगे, इधर वीरगण युधिष्ठिरके आज्ञासे शत्रुसैन्यमे निपतित होने लगे, दोनो पक्षका तुमुल संग्राम होने लगा, सैन्यमे कहीं युद्धमे प्रवृत्त, कहीं भग्न औ कहीं प्रत्यावृत्त होनेसे स्वीय परका विशेष कुछ लक्षित न होने लगा, हे महाराज! उस भयानक संग्राममे महात्मा भीष्म समस्त सैन्यको अतिक्रम करके देदीप्यमान होने लगे।

इति ४४ अध्याय।

हे महाराज! उस दिन पूर्वाह्नमें घोरयुद्ध हुआ, अनेक भूपति चतविचत होगए, कौरवगण निष्ठुरचित्त होय जीविताशा त्याग करके पाण्डवोंके ऊपर धावमान हुए, भीष्म कालदंड तुल्य धनुर्द्धारण करके अर्जुनके ऊपर धावमान हुए, अर्जुनभी लोक विश्रुत गाण्डीव धारण करके भीष्मके संमुख हुए, उन दोनो वीरों से कोई किसीको प्रहारसे चलित न कर सके, सात्यकी कृतवर्मा के ऊपर औ कृतवर्मा सात्यकीके ऊपर धावमान हुए, अभिमन्यु औ बृहद्बल परस्पर धावमान हुए, तब बृहद्बलने अभिमन्युका ध्वजछेदन औ सारथिको निहत किया, तब अभिमन्युने नव बाणसे बृहद्बलका देह भेदन करके दो भल्लसे उनका ध्वज औ पृष्ठसारथि नष्ट कर दिया, महावीर भीमसेन जातवैर दुर्योधनसे तुमुलसंग्राम करने लगे, दोनो वीर परस्पर विस्मयकारक शर वर्षण करने लगे, दुःशासन औ नकुल सम्मुखीन होके घोर युद्ध करने लगे, तब नकुलने हास्य करके दुःशासनका ध्वज औ शरासन छेदन कर दिया, दुःशासनने क्रोधसे शरवर्षण करके नकुलके अश्व औ ध्वज छेदन कर दिया, दुर्मुख औ सहदेव मिलित होय युद्ध करने लगे, सहदेवने तीक्ष्णशरसे दुर्मुखका सारथि निहत किया, युधिष्ठिर शल्यसे युद्ध करने लगे, शल्यने युधिष्ठिरका धनुछेदन कर दिया, तब युधिष्ठिर अन्य धनु लेके तिष्ठ२ कहके गर्जन करने लगे, धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्यसे युद्ध करने लगे, सोमदत्ति औ शङ्ख परस्पर विद्ध करने लगे, धृष्टकेतु औ वाह्लीकका परस्पर घोर युद्ध होने लगा, भीमसेन पुत्र घटोत्कच औ राक्षस अलम्बुषसे भयंकर युद्ध आरम्भ हुआ, शिखण्डी औ अश्वत्थामाका युद्ध होने लगा, विराट औ भगदत्तका विचित्र युद्ध होने लगा, कृपाचार्य्य औ वृहत्क्षत्रसे शरवर्षण पूर्वक युद्ध होने लगा, दोनोके अश्व निहत, धनु छेदन औ रथ भग्न होनेसे असि युद्ध होने लगा, द्रुपद औ जयद्रथसे युद्ध होने लगा, विकर्ण

औ श्रुतसोमासे युद्ध होने लगा, चेकितान औ सुशर्मा पर-स्पर युद्ध करने लगे, शकुनि औ प्रतिविंध्यसे संग्राम होने लगा, श्रुतवर्मा कांबोजराज सुदक्षिणसे युद्ध करने लगे, सुदक्षिण किसी प्रकारसे श्रुतकर्माको विचलित कर सके नही, श्रुत-कर्माने उनको क्षतविक्षत कर दिया, अर्जुनतनय इरावान् श्रुतायुधसे युद्ध करने लगे, औ उनके अश्व नष्ट करके गर्जन करने लगे, उन्होनेभी अर्जुनपुत्रके अश्व गदाघातसे नष्ट कर दिये, अवन्तिदेशीय विन्द औ अनुविन्द ससैन्य सपुत्र कुन्तीभोज से युद्ध करने लगे, उन दोनोका घोर पराक्रम हमने देखा, केकयदेशीय पांच भ्राता सैन्यके सहित गान्धारराजसे युद्ध करने लगे, आपके पुत्र वीरबाहु विराटपुत्र उत्तरके साथ समर करने लगे, चेदिराज उलूकसे युद्ध करने लगे।

हे महाराज! इस प्रकार आपके औ पाण्डवोंके पचीस सहस्र २ वीरगण, महारथी, गजारोही, अश्वारोही औ पदा-तिगण घोर द्वंदयुद्ध करने लगे, वह युद्ध पहिले मृदु होयके अंतमे अति भयंकर होगया, उस काल गज गजके साथ, रथी रथिके साथ, अश्व अश्वके साथ औ पदाति पदातिके साथ तुमुल युद्ध करने लगे, देवर्षि सिद्ध चारण सब वहां आय वह भयंकर युद्ध देखने लगे, तब इतस्ततः परस्पर मुहर्मुहः संग्राम दृष्ट होने लगा।

इति ४५ अध्याय।

हे नरनाथ! उस युद्धमें पदातिगण मर्यादा अतिक्रम करके युद्ध करने लगे, पिता पुत्रको, पुत्र पिताको, भ्राता भ्राताको, मातुल भागिनेयको भागिनेय मातुलको, औ सखा सखाको जान न सके पाण्डवगण उन्मत्त होके कौरवोंसे युद्ध करने लगे, रथसे रथ भग्न होने लगे, मत्तगज दन्तसे गजोंको लिप्त

करने लगे, कितने गज पलायन, कितने गज इधर उधर भ्रमण औ कितने गज निपतित होने लगे, परस्पर शस्त्रोंके संघट्टसे शब्द होने लगा, वीरनिक्षिप्त शरनिकर सर्पोंके समान देहमें प्रवेश करने लगे, कोई अश्वके सहित कूदके रथियोंका शिर: छेद करने लगे, महागज निपतित होय देहसे असंख्य सैन्य मर्दन करने लगे, अनेक प्रासके आघातसे आर्तनाद करने लगे कोई आरोही सहित अश्वको कोई गजको व्यथित करके निपातन करने लगे।

हे महाराज! सहस्र सहस्र योद्धागण शक्तिविदारित, परशुछिन्न, हस्तिमर्दित, अश्वपदाहत औ रथनेमि सब भिन्न होके कोई पुत्र, कोई पिता, कोई भ्रात इत्यादि बांधवोंका स्मरण करके रोदन करने लगे, कोई विकीर्ण नाड़ी, कोई भग्नोरु, कोई छिन्नबाहु होके जीविताशासे आर्तस्वर करने लगे, अनेक रक्ताक्त कलेवर होके आपकी निन्दा करने लगे, कोई शुष्ककण्ठ होके जल याचना करने लगे; कोई पलायन करने लगे, कोई दन्तसे ओष्ठ दंशन औ भ्रुकुटिबन्धन पूर्वक परस्पर अवलोकन कर्ते हुए हृष्टचित्तसे गर्जन करने लगे, कोई एक तूष्णीभूत हो गए, अनेक वीर आप विरथ होय अन्यके रथ लेनेकी इच्छासे निपतित होने लगे, कितने करिदन्ताघातसे रक्तरञ्जित देह हो कुसुमित किंशुक वृक्षके समान शोभित होने लगे।

हे महाराज! वह वीरक्षयकारी संग्राम क्रम क्रमसे तुमुल हो उठा, पाण्डवसैन्य उस दिन भीष्मसे कम्पित होने लगा, महावीर भीष्म समुच्छ्रित रजतमय पञ्च तारा शोभित तालकेतु रथ पर आरूढ़ होय मेघस्थित चन्द्रमाके तुल्य शोभित होने लगे।

इति ४६ अध्याय।

हे राजन् ! उस दिन पूर्वाह्लमें बहुतर वीर निहत हुए, तब दुर्मुख, कृतवर्मा, कृप, शल्य औ विविंशति यह पांच वीर दुर्योधनकी अनुमतिसे भीष्मकी रक्षा करने लगे, अनन्तर भीष्म पाण्डवसैन्यमें प्रविष्ट होय बहुसैन्यके मस्तक, रथ, वाहन, औ ध्वज छेदन करने लगे, समरक्षेत्रमें भ्रममाण भीष्मके रथमार्गस्थित कुंजर सब मर्म्ममें ताड़ित होय आर्त चीत्कार करने लगे।

इस प्रकार भीष्म संहार करने लगे तब अभिमन्यु एकांत क्रुद्ध हो भीष्मके संमुख गमन करके उनके रक्षक पांचो वीरोंसे युद्ध करने लगे, कृतवर्माको एक बाण, शल्यको पांच बाणसे विद्ध करके प्रपितामहके ऊपर नव बाण प्रक्षेप किया, और एक तीक्ष्ण शरसे उनका ध्वजछेदन कर दिया, तदुत्तर मर्म्मभेदी भल्लसे दुर्मुखके सारथिका मस्तक, अन्य भल्लसे कृपका धनु छेदन पूर्वक शत्रुनिक्षिप्त शर निवारण करके चतुर्दिक् धावमान होने लगे, अभिमन्युका एकभी शर व्यर्थ न होते देखके औ हस्तलाघव देखके भीष्मप्रमुख वीरगण अर्जुनके तुल्य प्रतापशाली ज्ञान करने लगे, तब भीष्मने उनको आक्रमण करके नव बाणसे अभिमन्युको विद्ध किया, तदुत्तर उनका ध्वज छेदन करके उनके सारथिको विद्ध किया, उस समय कृप, शल्य औ कृतवर्मा अभिमन्युके ऊपर शरवर्षण करने लगे, परंतु अभिमन्यु कुछभी विचलित न हुए, औ मुहूर्त्त मात्रमें उनके शर निवारण कर दिये, औ भीष्मका तालध्वज निपातित कर दिया, यह देखके सबही शब्द करने लगे, वह तालध्वज भूमिमें निपतित देखके समरोत्साही भीमसेन अभिमन्युको उत्साहित करते हुए गर्जन करने लगे, तब महाबल भीष्म दिव्यास्त्र प्रयोग करने लगे, अभिमन्युके ऊपर सहस्र शर निक्षेप किया, तब पांडवपक्षीय दश जन महाधनुर्द्धर सपुत्र विराट, धृष्टद्युम्न, भीम, कैकय औ सात्यकी अभिमन्युकी रक्षा करनेके लिये

धावमान हुए, भीष्म उनको देखके सत्वर धृष्टद्युम्नके ऊपर तीन सात्यकीके ऊपर नव वाण निक्षेप करके भीमसेनका सिंह-ध्वज छेदन करके भूतलमें पातित कर दिया, भीमसेन वह देखके क्रुद्ध होय, भीष्मको तीन, कृपको एक औ कृतवर्मा को आठ वाणसे विद्ध करने लगे, तब महावीर उत्तर महा गज पर आरोहण करके शल्यके ऊपर धावमान हुए, विराट-तनयको आक्रमण करते देखके शल्य बल पूर्वक उसका वेग निवारण करने लगे, तब उस गजने पादसे शल्यके रथका युगकाष्ठ छेदन पूर्वक अश्वोंका संहार किया, महावीर शल्य ने उस वाहनहीन रथ परही आरूढ़ रहके एक भीषण शक्ति निक्षेप किया, वह शक्ति उत्तरके मर्मभेद करके शरीरमें प्रविष्ट होतेही विराटतनय चतुर्दिक् अन्धकारमय देखते गजस्कन्धसे निपतित हुए, तब शल्यने रथसे उतरके खड्गसे उस गजका शुण्ड छेदन कर दिया, तब वह गज चीत्कार करके निहत हुआ, तदुत्तर शल्य कृतवर्माके रथपर आरूढ़ हो गए।

तब विराटतनय श्वेत स्वीय भ्राता उत्तरको निहत औ समस्त वीरोंको वर्तमान देखके क्रोधसे नतपर्व वाणसे सबके धनु छेदन कर दिये, महावीरगण तत्क्षणाही अन्य धनु लेके एक कालमें सात जनोंने श्वेतके ऊपर शरनिक्षेप किये, महावीर श्वेतने सात भल्लोंसे पुनः उसके धनु छेदन कर दिये, तब महा-वीरोंने श्वेतके ऊपर शक्ति निक्षेप किया, श्वेतने अर्धमार्गहीमें वह सब शक्ति खंड खंड कर दिया, तब उन्होंने शरजाल निक्षेप किये, तब महावीर श्वेत विद्धगात्र होय रथमें मूर्च्छित हो गए, सारथिने उनको मूर्च्छित देखके उनको वहांसे दूर किया।

तदुत्तर श्वेतने क्षणमात्रमें सावधान होय अन्य रथारूढ

होय उन वीरोंके ध्वजछेदन कर दिये, अनंतर उनके अश्व औ सारथिको विद्ध करके शल्यके ऊपर धावमान हुए ।

हे महाराज! श्वेतने शल्यके ऊपर धावमान होतेही सेनामे हाहाकार होगया, तब आपके पुत्र भीष्मको आगे करके शल्यके रथके पास जायके उनको उस मृत्युग्राससे मुक्त किया, अनंतर तुमुल संग्राम उपस्थित हुआ, आपके औ शत्रुगणके रथी औ हस्ती सब परस्पर आक्रमण करने लगे, उस समय भीष्म अभिमन्यु, सात्यकी, कैकय, विराट, धृष्टद्युम्न औ चेदिसैन्यके ऊपर शरवर्षण करने लगे ।

इति ४७ अध्याय ।

धृ० । जब श्वेत शल्यके ऊपर धावमान हुए, तब भीष्म औ पाण्डव कौरवने क्या किया ?

स० । सहस्र सहस्र क्षत्रियगण सेनापति श्वेतके आगे करके कौरवोंके औ शिखण्डीको आगे करके भीष्मके ऊपर धावमान हुए, उस समय दोनो पक्षके बहुत वीर निहत हुए, महावीर भीष्म वीरोंके मस्तक छेदन औ रथ सब शून्य करने लगे, भीष्मने शरजालसे सूर्यको आच्छादित कर दिया, असंख्य वीर शिरश्छिन्न होय भूतलमे निपतित होने लगे, रथके ऊपर रथ, औ अश्वके ऊपर अश्व निपतित होने लगे, कोई२ अश्वपृष्ठ पर लम्बमान निहत आरोहीको वहन करने लगे, द्वंद्वयुद्ध-कुशल वीरगण परस्पर धावमान होके भूतलमे निपतित औ पुनः उत्थित होय युद्ध करने लगे, कोई ताड़ित, कोई विलुण्ठित, कोई निहत होने लगे, परस्पर अतीव संमर्द होगया, धूलिपटल उड़नेसे केवल धनु शब्दही श्रवण होने लगा, परस्पर स्पर्श होने परभी चिह्न नही सकते, घोरतर वाद्यध्वनिभी उपस्थित हुआ, पाण्डव औ कौरव सहस्र२ वीरोंका संहार करने

लगे, शरवर्षणसे वीरोंके शिर, बाहु, रथ, चक्र, पताका औ ध्वज छिन्न भिन्न हो गए।

हे महाराज! हम लोग सब रथ परित्याग करके पलायन करने लगे, तब एकमात्र भीष्म पर्वतके समान स्थिर रह गए, सूर्य जैसे किरणसे अन्धकार दूर करते हैं, वैसही भीष्म शत्रुगण का संहार करने लगे, शत्रुगण भीष्मके शरसे व्यथित होय श्वेतका त्याग करके पलायन करने लगे, भीष्म श्वेतको शत्रुसंहार करते देखके उनके समीप धावमान हुए, महावीर श्वेत भीष्म के ऊपर शरवर्षण करने लगे, भीष्मभी उनके ऊपर शरवर्षण करने लगे, उन दोनोका व्याघ्रके समान गर्जन पूर्वक युद्ध होने लगा।

हे महाराज! यदि श्वेत पाण्डवोकी रक्षा न करते तो भीष्म एकही दिनमे निःशेषित कर देते, इस प्रकार दोनोका युद्ध होते अंतमे श्वेतने भीष्मको समरसे पराङ्मुख कर दिया, उससे पाण्डव आह्लादित औ कौरव विषण्ण हो गए, तब दुर्योधन क्रोधान्वित होय असंख्य वीरोंके सहित पाण्डवसैन्यमे प्रविष्ट हुए, तब महावीर श्वेत भीष्मका त्याग करके दुर्यो-धनका सैन्य संहार करने लगे, क्षणमात्रमे दुर्योधनका सैन्य विद्रावित करके पुनः भीष्मके सन्मुख धावमान हुए, तब वृत्र वासवके तुल्य उन दोनोका घोर समर होने लगा, श्वेतने भीष्मके ऊपर सात बाण निक्षेप किये, तब भीष्मने बल पूर्वक श्वेतको आक्रमण करके अभिभूत करदिया, तब श्वेतने भीष्मके ऊपर पुनः प्रहार किया, भीष्मनेभी श्वेतके ऊपर दश बाण निक्षेप किया, उन बाणोको अनायास सहन करके भीष्मके ऊपर पंचविंशति शर निक्षेप किया, उससे सबही विस्मित हो गए, श्वेतने भीष्मके तालध्वजका अग्रभाग छेदन कर दिया, तब दुर्योधनादि भीष्मको श्वेतके वशीभूत बोध करने लगे,

दुर्योधनने भीष्मके रक्षार्थ सैन्य प्रेरण किया, वह सैन्य अति यत्नसे भीष्मकी रक्षा करने लगे, दुर्योधन भीष्मके प्रोत्साहनके लिये कहने लगे, हे वीरगण! श्वेत अभी नष्ट होगा, पितामह को कुछभी भय नही है, बाल्हीक, कृतवर्मा, कृपाचार्य, शल्य, जरासंध-पुत्र, विकर्ण चित्रसेन औ विविंशति यह सब श्वेतके ऊपर शरवर्षण करने लगे, श्वेत स्वीय हस्तलाघवसे सबको निवारण करने लगे, तदनन्तर भीष्मका धनुच्छेदन कर दिया, भीष्म अन्यधनु लेके शरवर्षण करने लगे, भीष्म श्वेतके शरप्रहारसे क्षत विक्षत हो गए, श्वेतने पुनः उसका धनु छेदन कर दिया, तब भीष्मने क्रोधसे अन्य धनु ग्रहण पूर्वक सात भल्लोंसे श्वेतका ध्वज, चारो अश्व, औ सारथिका मस्तक छेदन कर दिया, तब श्वेत रथसे कूदके व्याकुल हो गए, तब भीष्म श्वेतको विरथ देखके शरप्रहारसे व्यथित करने लगे, तब श्वेतने धनुर्वाण रथ पर रखके भयंकर शक्ति निक्षेप किया, भीष्मने तब बाणसे वह शक्ति खण्ड खण्ड कर दिया, तब कालोपहतचित्त श्वेत शक्ति व्यर्थ हुई देखके इतिकर्त्तव्यता मूढ़ हो गए, अनन्तर गदा लेके धावमान हुए, तब भीष्म सहसा रथसे भूतलमें उतर पड़े, श्वेतने क्रोधसे गदा घूर्णन करके रथ पर प्रक्षेप किया, उससे रथ चूर्ण चूर्ण हो गया, तब शल्य प्रभृति वीरगण श्वेतको विरथ देखके शरवर्षण करने लगे, तब भीष्म अन्य रथ पर आरोहण करके शनैः श्वेतके ऊपर आवने लगे, इतनेमें दैववाणी हुई, हे भीष्म! यत्नकरो श्वेतका निधनकाल उपस्थित हुआ है, यह सुनके श्वेतके वधमें दृढ़निश्चय करके धावमान हुए, इधर सात्यकी भीमसेन, धृष्टद्युम्न, कैकय, धृष्टकेतु औ अभिमन्यु प्रभृति वीरगण श्वेतको विरथ देखके उनके समीप उपस्थित हुए, महावीर भीष्मने द्रोण, शल्यादिकी सहायतासे उनको निवारित कर दिया, महावीर श्वेतने

पाण्डवपक्षीयोंको निरुद्ध देखके खड्गसे भीष्मका धनु छेदन कर दिया, भीष्म अन्य धनु लेके श्वेत पर धावमान हुए, भीमसेन भीष्मको आगत देखके उनके ऊपर शरवर्षण करने लगे, तब भीष्मने अभिमन्युको तीन, सात्यकीको शत, धृष्टद्युम्न को विंश, औ अन्यान्योंको पांच पांच शरोंसे निराकृत कर के कालांतक तुल्य एक शर श्वेतके ऊपर निक्षेप किया, वह शर श्वेतका कवच भेद करके प्राणके साथ वहिर्गत होय भूतलमे गिरा, भीष्मसे श्वेतको निहत देखके पाण्डवपक्षीय दुर्मना हो गए, दुःशासन हर्षसे संग्राममे नृत्य करते भ्रमण करने लगे, तब अर्जुन औ कृष्णने सेनापतिको निहत देखके सेनाको विश्राम करनेका आदेश किया, पाण्डवगण विमनायमान होके स्वीय स्वीय शिविरमे प्रविष्ट हुए ।

इति ४८ अध्याय ।

धृ० । सेनापति श्वेत निहत होने पर पांडव औ पांचालो ने क्या किया ? हमारे पक्षीय जयलाभसे हृष्ट हुए, प्रत्यवाय चिंतन करकेभी लज्जित नहीं होते है, दुर्मति दुर्योधनने सदाचार परायण युधिष्ठिरका अनिष्टाचरण करके उनके भक्त श्वेतको निहत किया, बोध होता है, हीनमती दुर्योधन शकुनि प्रभृति अधमोसे अधःपातित हुआ है, परशुराम औ भीष्म प्रभृतिने वारण किया तोभी न मानके महाव्यसनमे निमग्न हुआ है, जो होय, अर्जुन प्रभृतिने भीष्मके जय होने पर क्या किया ? अर्जुनकी बड़ी हमको शंका है, धनंजय लघुहस्त है वह अवश्य शरोसे शत्रु ध्वंस करेगा, दिवारात्रि अर्जुनसे हमको भय वर्तमान रहता है ।

सं० । स्थिरचित्त होके सुनो, यह जो विपत् उपस्थित हुई है सो आपहीका दोष है, दुर्योधनका अपराध कहना

उचित नही है, उस दिन मध्याह्नमे श्वेत निहत हुए, तब विराटतनय शंख शल्यको कृतवर्माके साथ अवस्थान करते देखके क्रुद्ध होय शरवृष्टि करते हुए शल्यके वधाभिलाषसे उनके ऊपर धावमान हुए, आपके पक्षीय सात महारथि उस मत्तवारण-विक्रम शंखको धावमान देखके शल्यको मृत्युदंष्ट्रासे विमुक्त करनेके लिये शंखको निवारण करने लगे, भीष्म मेघके समान गर्जन करके शंखके ऊपर धावमान हुए, पाण्डवपक्षीय उनको देखके कंपित होने लगे, महावीर धनंजय शंखके रक्षाके लिये उनके आगे हुए, वह देखके योधगण हाहाकार करने लगे, अनंतर शल्य औ शंखका घोरसंग्राम होने लगा, शल्यने गदालेके रथसे उतरके शंखके चारो अश्व नष्ट किये, शंख खड्ग ले रथसे उतरके अर्जुनके रथ पर आरूढ़ हुए, उस समय भीष्मके शरसे भूमि औ अंतरीक्ष पूर्ण हो गया, भीष्मने बहुसंख्यक पांचाल, मत्स्य, कैकय औ प्रभद्रकोंको निपातित कर दिया, तदुत्तर अर्जुनको त्याग करके द्रुपदके संमुख हुए, ग्रीष्मकालीन अग्निके समान द्रुपद सैन्यको दग्ध करने लगे, पाण्डवपक्षीय भीष्मको देखनेमे असमर्थ होने लगे, पाण्डवगण भयसे व्याकुल होय इधर उधर देखने लगे, सैन्य सब पलायन करने लगा औ हाहाकार होने लगा, तब भीष्म शरासन मंडलाकार भ्रमित करके तीक्ष्णशर वर्षण पूर्वक पांडवसैन्य संहार करने लगे, इतनेभी भास्कर अस्तचूड़ावलंबी हुए, अंधकार होने लगा, तब पांडवोंने भीष्मको रणमे नितांत पराक्रांत देखके युद्धका उपसंहार किया ।

इति ४८ अध्याय ।

हे महाराज! सैन्यगण विश्राम करने लगे दुर्योधन हृष्टचित्त हुए, धर्मराज युधिष्ठिर भीष्मका क्रोध औ भयंकर पराक्रम देखके

अपने पराजयकी चिंता करते हुए शोकार्त होय भ्राता औ भूप-तिगणके साथ कृष्णके पास जायके कहने लगे, हे वासुदेव! देखो, अग्नि जैसा तृणराशि दग्ध करता है, तद्रूप भीषण पराक्रम भीष्म हमारे सैन्यको दग्ध करते हैं, हम लोग किस प्रकार उनके संमुखीन होंगे सैन्य सब उनको देखके भयसे पलायन करता है, वज्रपाणी इन्द्रका युद्धमें पराजय किया जाय, परंतु भीष्मका पराजय करना कठिन है, इस लिये हम लोग हीन-बुद्धिसे इस भीष्मरूप अगाध समुद्रमें निमग्न हुए हैं, हे गोविन्द! भूपालगणको मृत्युमुखमें निक्षेप करनेसे वनमें वास करना उत्तम है, स्पष्ट बोध होता है भीष्म सब सैन्यके साथ हम लो-गोंका संहार करेंगे, जीवन सबको प्रिय है, हम अपने जीव-नार्थ तपस्या करेंगे, परंतु मित्रोंका जीवन नाश वृथा न करा-वेंगे, हे माधव! इस समय जो कर्तव्य सो स्थिर करो, महावीर अर्जुन उदासीन दृष्ट होते हैं, केवल महाबल भीमसेन क्षत्र-धर्मानुसार युद्धमें प्रवृत्त होय वीरघातिनी गदासे गज, अश्व, रथ औ पदातिओंमें दुष्करकर्म करते हैं, अर्जुन अद्वितीय योद्धा है, परंतु हम लोगोंको भीष्मानलसे दग्ध होते देखके उपेक्षा करते हैं, हे योगेश्वर! मेघ जैसा दावाग्निको प्रशम करे तद्रूप भीष्मको संहार करे ऐसे धनुर्द्धरका संधान करो नहीतो हमलोग उत्सन्न हो जायंगे, तुम्हारे प्रसादसे पाण्डव राज्य लाभ करके बांधवोंके सहित आह्लाद करें।

महात्मना युधिष्ठिर यह कहके शोकसे चिंता करने लगे, भगवान् कृष्ण युधिष्ठिरको शोकार्त्त देखके आह्लादजनक वाक्य बोले, हे भरतकुलप्रदीप! आप शोक मत कीजिये, शोक कर्ना आपके युक्त नहीं है, आपके भ्राता महाबल पराक्रांत औ धनु-र्द्धराग्रगण्य हैं, हम, सात्यकी, विराट, द्रुपद औ धृष्टद्युम्न औ आपके प्रियकारी भूपाल सब महाबली हैं, महारथ धृष्टद्युम्न

सेनापति है, महाबाहु शिखंडी निश्चयही भीष्मका संहार करेंगे ।

युधिष्ठिर कृष्णका वाक्य सुनके धृष्टद्युम्नसे बोले, हे धृष्टद्युम्न ! तुम वासुदेव सदृश पराक्रमी हो औ हमारे सेनापति हो, इस लिये विक्रम प्रकाश पूर्वक भीष्मका संहार करो, हमलोग सब तुम्हारे अनुगत होंगे ।

तब धृष्टद्युम्न सकलको हर्षित करके बोले, भगवान् शंभुने द्रोणांतक कहके हमको उत्पन्न किया है, आज हम भीष्मप्रभृति सभोंसे संग्राम करेंगे, धृष्टद्युम्नके ऐसा कहतेही सबही हर्ष-सूचक शब्द करने लगे, तब युधिष्ठिर बोले, हे पार्षत ! क्रौंचा-रुण व्यूहसे शत्रुका निवारण होता है, पहिले देवासुर संग्राममे वृहस्पतिने यही व्यूह रचना किया था, सो यही व्यूह रचना करता, कौरव औ अन्यान्य भूपति वह अदृष्टपूर्व व्यूह देखेंगे ।

अनंतर प्रातःकाल धनञ्जयको सब सैन्यके आगे संनिवेशित किया, अर्जुनका केतु विश्वकर्माका निर्मित इन्द्रायुध तुल्य पताका शोभित था, वह आकाशगामी था, द्रुपदराज बहुसैन्य लेके व्यूहके मस्तक पर, कुंतिभोज औ शैव्य नेत्र पर, दशार्ण, प्रयाग, दाशेरक, अनूपक औ किरातगण ग्रीवामे, युधिष्ठिर पटच्चर, हुंड, पौरवक, निषादगण सहित पृष्ठमे, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, द्रौपदेय, अभिमन्यु, सात्यकी, पिशाच, दरद, पौण्ड्र, वाह्लीक, तित्तिर, पाण्ड्य, उड्र, शरर, तुम्बुम, वत्स औ नाकुलगण पक्षद्वयमे, नकुल औ सहदेव वामपार्श्वमे, उस व्यूहके दोनो पक्षमे अयुत, मस्तकमे नियुत, पृष्ठमे एक अर्बुद विंशति सहस्र, ग्रीवामे नियुत सप्तति सहस्र रथ संनिवेशित हुए, इसके चतुर्दिक, पक्ष औ पक्षांतमे गजोंको स्थापन किया, विराट, कैकय औ काशिराज यह तीन अयुत रथ लेके व्यूहका

जघन पालन करने लगे, इस प्रकार व्यूह रचना करके युद्धार्थ सूर्योदयकी प्रतीक्षा करने लगे, गज औ रथोंके ऊपर छत्र शोभित होने लगे।

इति ५० अध्याय।

हे राजन्! दुर्योधन पाण्डवोंका अभेद्य व्यूह देखके द्रोणाचार्य प्रभृति सकल वीरोंके साथ उपस्थित होय कहने लगे, हे वीरगण! तुमलोग नानाशस्त्रवेत्ता हो तुमलोगका एकत्र होना क्या है, तुमलोग एक एक पाण्डवोंका नाश कर सकते हो, इस लिये तुमलोग सब भीष्महीकी रक्षा करो, ऐसा स्थिर करके युद्धार्थ व्यूह रचना करने लगे, भीष्म असंख्य सैन्य लेके इन्द्रके समान गमन करने लगे, द्रोणाचार्य सिंधु सौवीरादि सैन्य लेके उनका अनुगमन करने लगे, शकुनि सैन्य सहित द्रोणकी रक्षा करने लगे, भूरिश्रवा, शल, शल्य, भगदत्त, विन्दानुविंद सैन्यके वाम पार्श्वमें, सोमदत्त, सुशर्मा, सुदक्षिण, शतायु औ श्रुतायु दक्षिण पार्श्वमें, अवस्थान करने लगे, अश्वत्थामा, कृप, कृतवर्मा औ सात्वत सेनासहित पृष्ठभागसे, केतुमान्, वसुदान, औ काशीराजभी पृष्ठगोप्ता हुए, इस प्रकार निवेशित होके हर्षसे गर्जन औ शंखनाद करने लगे, अनंतर पाण्डवोंके शंख औ वाद्य वादन होने लगा, हे महाराज! इस प्रकार पाण्डव औ कौरव हृष्टचित्तसे पुनः संग्राममें प्रवृत्त हुए।

इति ५१ अध्याय।

धृ०। दोनो सैन्य व्यूहित होने पर वीरोंने क्या किया?

सं०। उभय पक्षोंका संग्राम आरंभ हुआ, रथियोंके शर परस्पर निपतित होने लगे, भीम पराक्रम भीष्म धनु उद्यत करके अभिमन्यु, भीमसेन, अर्जुन, कैकय, विराट, धृष्टद्युम्न औ

चेदि इनके ऊपर शरवर्षण करने लगे, भीष्मके समागमसे व्यूह कम्पित होने लगा, सैन्यको घोर विपद उपस्थित हुई,पांडवो के असंख्य वीर नष्ट होने लगे,रथिगण प्राण लेके पलायन करने लगे,तब अर्जुन भीष्मका अलौकिक पराक्रम देखके कृष्णसे बोले, हे वासुदेव! शीघ्र पितामहके समीप चलो, भीष्म दुर्योधनके हितार्थ हमारे सैन्यका नाश करते हैं, इस लिये सत्वर उनका संहार करना चाहिये।

तब वासुदेवने शीघ्र रथ चालन किया, महावीर धनञ्जय कौरव सैन्यको विद्रावित करते हुए सहसा भीष्मके संमुख उपस्थित हुए, भीष्म, द्रोण, औ कर्ण व्यतीत कोई धनंजयके संमुख होनेवाला नही है, भीष्मने अर्जुनको संमुख देखके सप्त सप्तति नाराच निक्षेप किया, उसी समय द्रोणने पंच-विंशति, कृपने पंचशत, दुर्योधनने चतुःषष्ठि, शल्यने नव, अश्वत्थामाने साठ, विकर्णने तीन औ आर्तायनिने तीन भल्लसे अर्जुनको विद्ध किया, अर्जुन उनसे विद्ध होकेभी अचलके समान स्थिर होके भीष्मके ऊपर पंचविंशति,द्रोणको षष्ठि, कृपको नव विकर्णको तीन, आर्तायनिको तीन औ दुर्योधनके ऊपर पांच बाण निक्षेप किया, तब सात्यकी, विराट, धृष्टद्युम्न, द्रौपदेय औ अभिमन्यु धनंजयके रक्षार्थ उनके निकट गए, धृष्टद्युम्न सोमक गणके साथ द्रोणके सन्मुख हुए, भीष्मने अर्जुनके ऊपर निशित अशीति बाण निक्षेप किये, तब अर्जुन सबहीके ऊपर अनवरत शरनिकर वर्षण करने लगे, तब दुर्योधन अर्जुनके शरसे सैन्यको अति जर्जरित देखके भीष्मसे बोले, हे पितामह! आप औ द्रोणके रहते धनंजय हमारे सैन्यका नाश कर रहा है, कर्ण हमारे अति हितैषु, परंतु वह आपहीके निमित्त अस्त्रत्याग करके समर पराङ्मुख हुए हैं, इस लिये आप शीघ्र अर्जुनका संहार कीजिये।

भीष्म यह सुनके क्षत्रिय धर्म धिक् यह कहके अर्जुनके संमुख धावमान हुए, पार्थिवगण दोनो वीरोको श्वेताश्वयुक्त रथारूढ़ देखके गर्जन औ शंखध्वनि करने लगे, अश्वत्थामा, दुर्योधन औ विकर्ण पाण्डवोसे युद्ध करनेके लिये भीष्मको वेष्टन कर रहे, पाण्डवभी कौरवोसे युद्धके लिये अर्जुनको वेष्टित कर रहे, तब भयानक युद्ध उपस्थित हुआ, भीष्मने अर्जुनके ऊपर नव बाण प्रक्षेप किया, अर्जुनभी मर्मभेदी दश बाण निक्षेप किया, तदुत्तर सहस्र शरसे उनको चतुर्दिक्से अवरुद्ध कर दिया, भीष्मने शरजालसे वह शर निवारण कर दिये, इस प्रकार परस्पर निराकरण पूर्वक समभावसे युद्ध करने लगे, परस्पर बाण छेदन औ विद्ध करने लगे, तब भीष्मने क्रुद्ध होके अर्जुनसारथि कृष्णके वक्षस्थलमे तीन शर निक्षेप किये, वासुदेव भीष्मके शरसे पुष्पित पलाशके तुल्य शोभित होने लगे, अर्जुननेभी भीष्मके सारथिको विद्ध किया, दोनो रथ पर शर सन्धान करने लगे, परन्तु कृतकार्य्य न हुए, दोनो वीर स्वस्व सारथिके सामर्थ्यके प्रभावसे विविध मण्डल औ गतप्रत्यागत देखावना परस्पर रन्ध्रान्वेषण औ वारंवार सेनासे प्रवेश, गर्जन औ शंखनाद करने लगे, उस शब्दसे महीमण्डल विदीर्ण होने लगा, अर्जुन औ भीष्मका कुछभी वैलक्षण्य ज्ञात न होने लगा, सबही विस्मयापन्न होगए, उन दोनोको पराजय करे ऐसा देव गन्धर्वादिभी कोई नही है, दोनोमे कोई पराभूत न हो सके, देव गन्धर्व ऋषि स्तुति करने लगे, पाण्डव औ कौरवभी घोर संग्राम करने लगे, उस समय धृष्टद्युम्न औ द्रोणकाभी भीषण संग्राम होने लगा।

इति ५२ अध्याय ।

धृ०। द्रोण औ धृष्टद्युम्नका संग्राम कैसा हुआ, हम अदृष्टको

पुरुषकारसे श्रेष्ठ जानते हैं, देखो, महावीर भीष्म अर्जुनको पराजय न कर सके, भीष्मके क्रुद्ध होनेसे जगत् नष्ट हो सकता है, आज अर्जुनसे वह पराभूत हुए, इससे अदृष्टही कारण है।

सं०। इन्द्रके सहित देवगण एकच होनेसेभी अर्जुनका पराजय कर सकते नही, जो होय, द्रोण औ धृष्टद्युम्नके युद्धका वृत्तान्त सुनो, द्रोणाचार्य्यने विविध शरोंसे क्रुद्ध धृष्टद्युम्नको औ भल्लसे उनके सारथिको रथसे पातित करके चार अश्वोंपर चार बाण निक्षेप किये, तब धृष्टद्युम्न नवति बाण निक्षेप करके तिष्ठ२ कहके दर्प करने लगे, तब द्रोणाचार्य्यने शरजालसे आच्छादित करके उनके संहारके इच्छासे द्वितीय यमदण्डके समान शर लेके संधान करने लगे, सेनागण देखके हाहाकार करने लगे, तब धृष्टद्युम्नका अद्भुत पौरुष दृष्ट हुआ, वह पर्व्वत समान अचल रहके साक्षात्मृत्युके तुल्य उस द्रोणनिर्मुक्त बाणको अर्द्धपथहीमे छेदन कर दिया, पाञ्चालगण यह अद्भुत कर्म देखके हर्षसे शंखध्वनि करने लगे, तब धृष्टद्युम्नने द्रोण-वधाभिलाषसे एक घोर शक्ति निक्षेप किया, द्रोणने हंसते२ अर्द्धपथमे खण्ड खण्ड कर दिया, धृष्टद्युम्नने शक्ति व्यर्थ देखके उनके ऊपर बाणवृष्टि कर दिया, द्रोणने बहु शर निराकरण करके धृष्टद्युम्नका धनु छेदन कर दिया, तब धृष्टद्युम्नने गदा प्रक्षेप किया, आचार्य्यने उसको निवारण कर दिया, तब द्रुप-दात्मज शतचन्द्रचर्म औ खड्ग धारण करके रथसे उतरके आचार्य्य के ऊपर धावमान हुए, द्रोणने हस्तलाघव करके शरनिकर द्वारा निवारण कर दिया, धृष्टद्युम्न बलशाली होकेभी किसी प्रकार उनके संमुख न हो सके, केवल चर्मसे उनके बाण निवारण करने लगे।

इतनेमे भीमसेनने द्रुपदतनयके सहायार्थ वहां उपस्थित होय द्रोणके ऊपर सात बाण प्रक्षेप करके सत्वर धृष्टद्युम्नको

अन्य रथपर आरूढ़ किया, तब दुर्योधनने द्रोणके रक्षार्थ प्रभूत सैन्यसहित कलिंग देशाधिपतिको प्रेषण किया, वह कलिंगसैन्य भीमसेनके ऊपर धावमान हुआ, तब द्रोणाचार्य्य धृष्टद्युम्नको छोड़के विराट औ द्रुपदसे युद्ध करने लगे, धृष्टद्युम्नभी धर्मराजसे मिलित हो गए, तब भीमसेन औ कलिंग सैन्यसे घोर संग्राम हुआ।

इति ५२ अध्याय।

धृ०। कलिंग औ भीमसेनसे किस प्रकार युद्ध हुआ?

सं०। भीमसेन कलिंग सेनाके साथ निषादतनय केतुमान्‌को आवते देखके चेदिगणके सहित उनके ऊपर धावमान् हुए, तब श्रुतायु व्यूहित सेनाके साथ केतुमान्‌के सहित भीमसेनके संमुख हुए, नरपति कलिंगभी केतुमान् औ श्रुतायुके साथ भीमसेनके सम्मुख हुए, तब चेदि, मत्स्य औ करूषोंने भीमसेनके साथ निषादोंको आक्रमण किया, इस प्रकार परस्पर आक्रमण पूर्वक घोर संग्राम करने लगे, वीरोंके परस्पर छेदन करनेसे समरभूमि मांसशोणितमय हो गई, हननेच्छा बढ़नेसे आत्मीय परकीयका बोध न रहा, अनेक आत्मीयहीका नाश करने लगे, भीमसेनका सैन्य अल्प होकेभी बहु कलिंगसैन्यसे घोर संग्राम करने लगे, अन्तमें व्यथित हो भीमसेनको छोड़के युद्धमें निवृत्त हुए, तब भीमसेन चेदिगणको निवृत्त देखके अपने बाहुबल पर निर्भर करके कलिंगोंके निकटवर्ती होके युद्ध करने लगे, किंचित्‌भी विचलित न होते कलिंगसैन्यको विद्ध करने लगे, उस समय कलिंगराज औ उनके पुत्र शक्रदेव दोनो भीमसेनके ऊपर शरवर्षण करने लगे, कलिंगपुत्र शक्रदेवने शरनिकरसे भीमसेनके अश्व औ रथ नष्ट कर दिया, औ उनको विरथ देखके औरभी शरनिकर वर्षण करने लगे, तब भीमसे-

नने उसी अश्वहीन रथपर आरूढ़ रहके शक्रदेवके ऊपर गदा प्रक्षेप किया, शक्रदेव भीमसेनके दृढ़ गदाघातसे निहत होय भूतलमे निपतित हुए, तब महारथ कलिंग स्वीय पुत्रको निहत देखके क्रोधसे अधीर होय बहुसहस्र रथ लेके भीमसेनके चतु-र्दिक् हो गए, तब भीमसेन खड्ग चर्म लेके प्रवृत्त हुए, उनको तादृश देखके कलिङ्गने अति भयङ्कर एक शर निक्षेप किया, भीमसेनने उस शरको खड्गसे छेदन कर दिया, तब कलिङ्गने चतुर्दश तोमर प्रक्षेप किया, उनकोभी भीमसेनने खड्गसे छेदन कर दिया, इस प्रकार भीमसेनने तोमर छेदन करके भानुमान् के ऊपर धावमान हुए, भानुमान् भीमसेनको शरसे आच्छादित करके गर्जन करने लगे, भीमसेननेभी सिंहनाद किया, भीमसेन के गर्जनसे कलिङ्गसैन्य वित्रस्त हो गया, तब महावीर भीमसेन खड्ग हस्तमे लेके कूदके भानुमान्के गजका दन्त धारण पूर्वक पृष्ठदेश पर आरूढ़ होय भानुमान्का शिरश्छेद करके गजस्कन्ध पर खड्गाघात किया, वह गजराज छिन्नस्कन्ध होके चीत्कार करते भूतलमे निपतित हुआ, वह गज निपतित होतेहि कूदके अन्यान्य गजोंको निपातित करते हुए रणक्षेत्रमे भ्रमण करने लगे, उनके भ्रमणसे असंख्य गज, रथ, अश्व औ पदातिका संहार होने लगा, अग्निमे पतङ्गके तुल्य कलिङ्गसैन्य भीमसेनके ऊपर निपतित हो नष्ट होने लगे, भीमसेन रथीगणके रथेषा औ युग छेदन करते हुए भ्रान्त, उद्भ्रान्त, आविद्ध, आप्लुत, प्रसृत, सम्पात औ समुदीर्ण प्रभृति गति देखावते भ्रमण करने लगे, असंख्य करि भीमसेनके खड्गाघातसे मर्मभिन्न होके चीत्कार करते भूतलमे निपतित हुए, इस प्रकार गजसैन्य नष्ट करके अश्वारोहियोंको नष्ट करने लगे, लगाम, रज्जु, योक्त्र, बन्धन, कम्बल, प्रास, ऋष्टि, कवच, चर्म औ आभरणोंसे समस्त भूतल विकीर्ण हो गया, भीमसेन कूद कूदके रथियोंको ध्वज सहित

छेदन करके पातित करने लगे, और विचित्र गति प्रदर्शनसे किसीको पदाघातसे, किसीको आकर्षण, किसीको खड्गाघात औ किसीको पातित करके नाश करने लगे, अनेक वीर भीमसेनकी भयङ्कर मूर्त्ति देखके भीष्मके पीछे पलायित हो गए, अनन्तर महती कलिङ्गसेना भीमसेनके ऊपर धावमान हुई, भीमसेनने कलिङ्गसेनाके आगे श्रुतायुको देखके उसके ऊपर धावमान हुए, श्रुतायुने भीमसेनको आगत देखके उनके वक्षस्थलमें नव नाराच निक्षेप किये, इतनेमें अशोकने भीमसेनके समीप हेमभूषित रथ आनयन किया, भीमसेन उसपर आरूढ़ होय तिष्ठर कहके धावमान हुए, श्रुतायु हस्तलाघवतासे असंख्य शर भीमसेनके ऊपर निक्षेप करने लगे, तब भीमसेनने क्रोधसे सात बाणसे कलिङ्गराजको, दो बाणसे दोनों चक्ररक्षक औ नाराच समूहसे केतुमानको निहत किया, तब कलिङ्गदेशीय क्षत्रियगण बहुसहस्र सैन्य लेके अनेक शस्त्रोंसे भीमसेनको वारण करने लगे, भीमसेन क्षणमात्रमें व शस्त्र सब निवारण करके कूदके गदासे कलिङ्गसैन्यका संहार करने लगे, पहिले सप्तशत औ पीछे द्विसहस्र कलिङ्गसैन्य नष्ट किया, इस प्रकार पुनः पुनः नष्ट करने लगे, अवशिष्ट कलिङ्गसैन्य भीमसेनके भयसे वित्रस्त होय विमुख हो गया, इस प्रकार भीमसेनके प्रभावसे कलिङ्गसैन्य पलायित होने पर धृष्टद्युम्नने स्वीय सैन्यको युद्ध करनेकी आज्ञा दिया, शिखण्डी प्रभृति वीरगण असंख्य रथिगण के सहित भीष्मके ऊपर धावमान हुए, युधिष्ठिर विपुलगजसैन्य लेके उनके पीछे अवस्थान करने लगे, इस प्रकार समस्तसैन्य प्रेरित हुआ, तब धृष्टद्युम्न भीमसेनके पास हुए, धृष्टद्युम्न भीमसेनको कलिङ्गसैन्यमें भ्रमण करते देखके सिंहनाद औ शङ्खध्वनि करने लगे, भीमसेनभी धृष्टद्युम्नका ध्वज देखके आश्वासित हुए, सात्यकी भीम औ धृष्टद्युम्नको कलिंग सैन्यसे युद्ध करते

देखके उनके समीप आगत हुए, भीमसेनने असंख्य कलिंग सैन्य संहार करके रुधिरकी नदी प्रवाहित करदिया, कलिंग औ पाण्डवसैन्य उस नदीमें संतरण करने लगे ।

हे महाराज! उस समय आपका सैन्यगण भीमसेनको देखके कहने लगे, कि यह साक्षात् कालही भीमरूपसे कलिंग सैन्यसे संग्राम करते हैं, तब भीष्म सैन्यगणका वह शब्द सुनके सेना व्यूहित करके भीमसेनके संमुख हुए, तब भीमसेन, सात्यकी औ धृष्टद्युम्न भीष्मके ऊपर तीन तीन शर प्रक्षेप करने लगे, भीष्मभी तीन तीन बाणोंसे उन तीनोंको विद्ध करके सहस्र बाणसे महारथोंको निवारण करके तीक्ष्णबाणसे भीमसेनके अश्व नष्ट किये, भीमसेनने उसी अश्वहीन रथपर आरूढ़ रहके भीष्मके ऊपर शक्ति निक्षेप किया, भीष्मने शीघ्र शक्ति छेदन कर दिया, भीमसेन गदालेके रथसे उतरे तब धृष्टद्युम्नने स्वीय रथपर उनको आरूढ़ करायके सबके संमुख वहांसे प्रस्थान किया, तब सात्यकीने भीष्मके सारथिको नष्ट कर दिया, सारथि नष्ट होने पर अश्वोंने भीष्मके रथको रणस्थलसे दूर कर दिया, भीष्मके दूर होने पर भीमसेनने समस्त कलिंग सैन्य संहार कर दिया, उस समय आपके सैन्यमें उनका प्रताप कोई नही सह सका, तब महाबली भीमसेन पांचाल औ मत्स्योंसे पूजित होय धृष्टद्युम्नको आलिंगन करके सात्यकीके समीप उपस्थित हुए, सात्यकी धृष्टद्युम्नके समक्ष भीमसेनको हृष्ट करते हुए कहने लगे, हे वृकोदर! तुम हमलोगोंके भाग्यहीसे सपुत्र ससैन्य कलिंगराजका संहार करके भुजबलहीसे व्यूह मर्दन किया, इतना कहके स्वरथसे उतरके रथपर जाय उनको आलिङ्गन करके पुनः स्वरथ पर आरूढ़ होय कौरवसैन्यका संहार करने लगे ।

इति ५४ अध्याय ।

हे महाराज ! उस दिनके पूर्वाह्ण होते होते असंख्य रथ, गज, अश्व औ पदाति विनष्ट हुए, महारथ धृष्टद्युम्न अश्वत्थामा, शल्य औ कृप इन तीनोंसे युद्ध करने लगे, तब धृष्टद्युम्नने अश्वत्थामाके अश्व नष्ट कर दिये, अश्वत्थामा शल्यके रथपर आरूढ़ हो गए, औ धृष्टद्युम्नके ऊपर शर प्रक्षेप करने लगे, अभिमन्युने धृष्टद्युम्नको अश्वत्थामासे युद्ध करते देखके सत्वर वहां आय शल्यके ऊपर पंचविंशति, कृपके ऊपर आठ औ अश्वत्थामाके ऊपर नव वाण निक्षेप किया, तब अश्वत्थामाने एक, शल्यने द्वादश, औ कृपने तीन वाण एककालमें प्रक्षेप किये, इतनेमें दुर्योधन-पुत्र लक्ष्मण अभिमन्युके संमुख होय शरवर्षण करने लगे, तब दोनोंका घोर संग्राम उपस्थित हुआ, लक्ष्मणने तीक्ष्णशरसे अभिमन्युको विद्ध किया, अभिमन्युने पंचशत वाणसे लक्ष्मणको विद्ध किया, लक्ष्मणने अभिमन्युका शरासन छेदन कर दिया, अभिमन्यु अन्य शरासन लेके लक्ष्मणको पीड़ित करने लगे, तब दुर्योधन स्वपुत्रको अभिमन्युके शरसे पीड़ित देखके सैन्यसहित अभिमन्युको वेष्टित कर दिया, अभिमन्यु उनमें वेष्टित होकेभी कुछ व्यथित न हुए, तब अर्जुनने स्वपुत्रको वीरोंसे वेष्टित देखके उनके रक्षार्थ समीप धावमान हुए, तब भीष्म द्रोण प्रभृति वीरगण असंख्य सैन्यलेके अर्जुनसे संग्राममें प्रवृत्त हुए, पदाति, अश्व औ रथके गमनसे धूलिपटल उत्थित होय सूर्यको आच्छादित कर दिया, समस्तसैन्य अर्जुनके शरसे प्राणत्याग करने लगे, सबही आर्त्तस्वर करने लगे, चतुर्दिग् अन्धकार हो गया, कौरवोंको महाविपद उपस्थित हुई, अर्जुनके शरजालसे क्या भूमी, क्या आकाश, क्या दिशा औ क्या सूर्य सबही आच्छादित हो गया, आरोही, वाहन त्याग करके पलायन करने लगे, धनंजयके शरसे आहत होके कोई अश्वसे, कोई रथसे औ कोई गजसे निपतित होने लगे, धनंजय शर

प्रहारसे गदा, खड्ग, प्रास, तूणीर, शर, शरासन, पताका, ध्वज, अंकुशयुक्त बाहु छेदन करके पातित करने लगे, राशि अस्त्र शस्त्र छिन्न होके रणस्थलमें विकीर्ण हो गए, हे महाराज! उस समय अर्जुनको संमुख होय ऐसा योद्धा कोईभी दृष्ट न हुआ, उस समय जो जो अर्जुनके संमुख हुआ वह वह यमालयमें गया, उस दारुण समरमें आपके पक्षीय योद्धागण चतुर्दिक् पलायन करने लगे, तब वासुदेव औ अर्जुन हृष्ट होके शंखध्वनि करने लगे।

उस समय शांतनुनन्दन भीष्म सैन्यको भग्न देखके विस्मित होय द्रोणसे बोले, हे आचार्य! देखो, महावीर धनंजय कौरव सैन्यसे अपने उपयुक्त कार्य्य करते हैं, इनका रूप कालांतक यमके समान दृष्ट होता है, आज किसी प्रकारसे इनका पराजय न होगा, इस विपुल सैन्यकोभी निवारण करना दुःसाध्य है, अपनी सेना नितांत दुर्बल हुई है, औरभी देखो भगवान् भानु भी नेत्र हरण कर्ते हुए अस्ताचलगामी होते हैं, इस लिये हमारे मतसे अब युद्धका अवहार करना चहिये, योद्धागणभी श्रांत औ भीत हुए हैं, अब युद्ध कर सकेंगे नही, भीष्म आचार्यसे यह कहके अवहारकी आज्ञा देने लगे, तब दोनो पक्षकी सेना अवहार करने लगी, सूर्यभी अस्ताचलगामी हुए, संध्यासमय उपस्थित हुआ।

इति ५५ अध्याय।

हे महाराज! प्रातःकाल होतेही आपके पुत्रगणके जयाकांक्षी भीष्म सैन्यको युद्धमें गमन करनेकी आज्ञा देके गारुड़ व्यूह रचना करने लगे, भीष्म उस गारुड़व्यूहके मुख पर, द्रोण औ कृतवर्मा उसके नेत्र, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, त्रिगर्त, मत्स्य, कैकय औ वारधानगण उसके मस्तक, भूरिश्रवा, शल, शल्य,

भगदत्त, जयद्रथ, मद्रक, सिंधु, सौवीर, औ पंचनद गण उसके ग्रीवामें, दुर्योधन सोदर अनुचरगण सहित उसके पृष्ठमें, विन्दानुविन्द, काम्बोज, शक औ शूरसेन उसके पुच्छमें, मागध औ कलिंगगण दानोरकोंके साथ उसके दक्षिण पक्षमें औ कारुष, विकुंज, मुंड औ कौंती दृष उसके वाम पक्षमें अवस्थान करने लगे।

इधर धनंजय धृष्टद्युम्नके साथ अर्द्धचन्द्र व्यूह करके सेना निवेश किया, उसके दक्षिण शृङ्गमें सेनासहित वृकोदर, भीमके पीछे विराट औ द्रुपद, उनके पीछे नीलायुध सहित नील, उनके पीछे चेदि, करुषक, काशि, पौरव औ धृष्टकेतु, अव-स्थान करने लगे, धृष्टद्युम्न, शिखंडी, पांचालगण, प्रभद्रक प्रभृत सैन्य लेके व्यूहके मध्यभागमें अवस्थित हुए, युधिष्ठिरभी गज-सैन्य लेके उसी स्थानमें अवस्थित हुए, उनके पीछे सात्यकी औ द्रौपदीके पांच पुत्र, तत्पर इरावान्, तत्पर भीमसेन पुत्र, उसके पर केकयगण, उसके पर वाम शृङ्गमें कृष्ण सहित धनंजय अवस्थित हुए, इस प्रकार व्यूह रचना हुई, तदुत्तर संग्राम आरंभ करके परस्पर संहार करने लगे, उभय पक्षीय रथी, हस्ती औ अश्वारोही परस्पर प्रहार करके निहत होने लगे, दोनो पक्षके रथशब्द, गर्जन औ शंखभेरी शब्दसे आकाश पूर्ण हो गया।

इति ६५ अध्याय।

हे राजन्! इस प्रकार उभय पक्षीय युद्ध आरंभ होने पर कालान्तकोपम धनंजय शरनिकरसे कौरवपक्षीयोंके रथ रक्ष-कोंके निहत करके रथियोंको पातित करने लगे, कौरवपक्षीय यशोलाभके अभिलाषसे प्राणपणसे युद्ध करने लगे, वह लोग एकाग्रचित्तसे पाण्डवसैन्य भंग करने लगे, पाण्डवगणभी बारंबार

कौरवसैन्यको छिन्न भिन्न करने लगे, कौरवोंका व्यूह द्रोणसे रक्षित औ पाण्डवोंका व्यूह अर्जुनसे रक्षित होनेसे परस्पर कोई दोनो व्यूहका भेद न कर सके, केवल व्यूहके मुखसे सेना वहिर्गत होय युद्ध करने लगी, गजारोही रथीको, रथी अश्वारोहीको, अश्वारोही गजारोहीको, रथी गजारोहीको अश्वारोही रथीको, पदाति पदातिको, निपातित करने लगे, विविध शस्त्र औ आभूषण निपतित होनेसे रणभूमि अलंकृत होने लगी, जगद्विनाश-चिन्ह स्वरूप कबंध चतुर्दिक उत्थित होने लगे, भीष्म द्रोण प्रभृति वीरगण पांडवसैन्यको भग्न करने लगे, देवगण दानवोंको जैसा विद्रावित करते थे, तद्रूप भीमसेन, घटोत्कच, धृष्टद्युम्न प्रभृति वीरगण कौरवसैन्यको विद्रावित करने लगे, उस समय दुर्योधन सहस्र रथ लेके पाण्डव औ घटोत्कचसे युद्ध करनेके लिये सहसा समागत हुए, पाण्डवभी महती सेना लेके भीष्म औ द्रोणके संमुख हुए, अर्जुन भूपालगणको, अभिमन्यु औ सात्यकी शकुनिके सैन्यको आक्रमण करने लगे, तदुत्तर भीषण संग्राम होने लगा।

इति ५७ अध्याय।

हे महाराज! भूपतिगण सहस्र रथ लेके अर्जुनके ऊपर विविध शस्त्र प्रक्षेप करने लगे, अर्जुनने क्षणमात्रमें सब शस्त्र निराकृत कर दिये, गान्धार औ सौवलोंने अभिमन्यु औ सात्यकीको अवरुद्ध करने लगे, सौवलोंने सात्यकीका रथ तिल२ खण्ड कर दिया, सात्यकी अभिमन्युके रथ पर आरूढ़ हुए, दोनो वीर एक रथारूढ़ हो सौवल सैन्यका संहार करने लगे, भीष्म औ द्रोण कङ्कपत्र वाणोंसे धर्मराजका सैन्य संहार करने लगे, युधिष्ठिर, नकुल औ सहदेव द्रोणके सैन्य पर धावमान हुए, भीमसेन औ घटोत्कच दुर्योधनके संमुख हुए, तब घटो-

कचने भीमसेनसे अधिक पराक्रम प्रकाश किया, भीमसेनने क्रोधसे दुर्योधनका हृदय सायकसे विद्ध किया, दुर्योधन भीमके शरसे मूर्छित होय रथसे निपतित हुए, सारथिने उसको संज्ञाशून्य देखके सत्वर रथ लेके पलायन किया, दुर्योधनके मूर्छित होनेसे कौरवसैन्य पलायन करने लगा, भीमसेन शरप्रहार कर्के उनके पीछे धावमान हुए, युधिष्ठिर औ धृष्टद्युम्न भीष्म औ द्रोणके संमुख उनके सैन्यका संहार करने लगे, हतावशिष्ट सैन्य प्राणभयसे पलायन करने लगा, द्रोण औ भीष्म उनको निषेध करने लगे, परंतु वह भयविह्वल हुए थे इससे उनके वाक्य पर कर्णपातभी न किया, इस प्रकार सहस्र रथी पलायन करने लगे, तब सात्यकी औ अभिमन्यु सौवलसैन्यका ध्वंस करने लगे, धनञ्जयभी उस काल मेघके समान कौरव सैन्य पर शर वर्षण करने लगे, कौरवसैन्यभी धनञ्जयके भयसे पलायन करने लगे, द्रोण औ भीष्म क्रोधसे सैन्यको निवारण करने लगे, इतनेमें दुर्योधनभी लब्धसंज्ञ होके पलायमान सैन्यको निवारण करने लगे, तब पुनः सैन्य सब युद्धमें प्रवृत्त होने लगा, तब दुर्योधन भीष्मसे कहने लगे, हे पितामह! आप,द्रोण औ कृप रहते कौरवसैन्य पलायन करता है,यह नितान्त विसदृश होता है, पाण्डवोंको सामान्य शत्रु जानके उपेक्षा करना उचित नहीं है, इससे स्पष्ट जाना जाता है कि पाण्डवोंके ऊपर आप लोग अनुग्रह करते हैं, हमको पहिलेही क्यों नहीं कहा, नहीं तो पाण्डव, सात्यकी औ धृष्टद्युम्नसे युद्धमें प्रवृत्त न होते,हम केवल आपके औ द्रोणाचार्यके वाक्यानुसार कर्णके साथ कार्यचिन्ता कर्के समरमें प्रवृत्त हुए, जो होय, अब आप पराक्रमानुसार युद्ध कीजिये।

भीष्म दुर्योधनका वाक्य सुनके हास्य कर्के बोले, राजन्! पाण्डव देवगणकोभी अजेय है, यह पहिले तुमको हमने वार-

बार कहा था, जो होय, हम दृढ़ हैं, साध्यानुसार कार्य करते हैं देखो, आज सबांधव पाण्डवोंको निवारण करेंगे, भीष्मका यह सुनके शङ्ख भेरी प्रभृति वाद्यवादन होने लगा।

इति ५८ अध्याय।

धृ०। हमारे पुत्रके वाक्य पर भीष्मने प्रतिज्ञा करके पांडव औ पांचालोंसे कैसा युद्ध किया?

सं०। उस दिन पूर्वाह्न गत हो गया, दिनकर पश्चिम दिशामें किञ्चित् अवनत हुए औ पाण्डवोंने जय लाभ किया, तब भीष्म महती सेना लेके पाण्डवसैन्यमें प्रविष्ट हुए, तब पांडवोंके साथ लोमहर्षण संग्राम हुआ, चतुर्दिक् कोलाहल होने लगा, दिव्याभरण भूषित सहस्र२ मस्तक औ बाहु निपतित होने लगे, रुधिरकी नदी प्रवाहित होने लगी, वह जैसा संग्राम हुआ वैसा पूर्वमें कहीं न देखा न सुना, गजोंके देहपतनसे रथचालन मार्ग अवरुद्ध हो गया, उस समय भीष्मने शरासन मण्डलाकार करके शरजालसे दश दिक् एकाकार कर दिया, केवल नामोच्चारणहीसे युद्ध करने लगे, चतुर्दिक् सहस्र२ भीष्म दृष्ट होने लगे, पतङ्गके तुल्य भीष्मसे वीरगण निहत होने लगे, भीष्मके एक२ बाणसे एक२ हस्ती नष्ट होने लगा, औ एक एक बाणसे तीन तीन वीर निहत होने लगे, असंख्य सैन्य क्षणमात्रमें भूतलशायी हो गया, हतावशिष्ट सैन्य कृष्ण औ अर्जुनके समक्ष पलायन करने लगा, महारथगण पलायमान सैन्यको निवारण करने लगे, परंतु किसी प्रकार कृतकार्य न हुए, तब वासुदेव अर्जुनसे बोले, हे धनञ्जय! यही वीरता काल उपस्थित हुआ है, यदि मुग्ध न हो तो भीष्मको प्रहार करो, तुमने पहिले प्रतिज्ञा किया था, कि हम भीष्म द्रोण प्रभृति सकलको उन्मूलित करेंगे, सो वाक्य अब सत्य करो, यह देखो, अपना सैन्य

[illegible] हो गया, भूपतिगण पलायन करते हैं, धनञ्जय वासुदेवका वाक्य सुनके बोले, हे वासुदेव! सत्वर सैन्यमेंसे भीष्मके संमुख रथ चालन करो, आज हम भीष्मका बध करेंगे, कृष्णने उनके वचनानुसार भीष्मके संमुख रथ चालन किया, तब भीष्म अर्जुनको संमुख देखके गर्जन करते हुए शर वर्षण करने लगे, भीष्मके शरजालसे क्षणमात्रमें अर्जुनका रथसारथि औ ध्वजके सहित अदृश्य हो गया, उस समय महात्मा वासुदेव धैर्यसे वाणनिमग्न अश्वोंका चालन करने लगे, तब क्षणमात्रमें अर्जुनने वह शर निराकृत करके भीष्मका धनु छेदन कर दिया, भीष्म अन्य धनु लेके उस पर ज्यारोपण करते हैं इतनेमें अर्जुनने उस धनुकाभी छेदन कर दिया, यह देखके भीष्म अर्जुनका यह हस्तलाघव देखके प्रशंसा करने लगे, हे पार्थ! साधु, तुमने जो कार्य किया सो तुम्हारेही उपयुक्त है, हम बहुत प्रसन्न हुए, यथेष्ट तुम हमसे युद्ध करो, भीष्म इस प्रकार अर्जुनकी प्रशंसा करके धनु लेके शर निक्षेप करने लगे, वासुदेव उस काल सत्वर मण्डल-गतिसे रथ चालन पूर्वक स्वीय असाधारण क्षमता देखावने लगे, तब भीष्मने कृष्ण औ अर्जुनको सर्वाङ्गमें विद्ध कर दिया, भीष्म दोनोको क्षत विक्षत करके अट्टहास करने लगे।

महात्मा वासुदेव अर्जुनको मृदुभावसे औ भीष्मको तीक्ष्ण भावसे युद्ध करते औ अपने पक्षके प्रधान प्रधान वीरोंको निहत्यमान देखके, पाण्डवसैन्य समूल उन्मूलित होगा ऐसा स्थिर करने लगे, भीष्म एक दिनमें पाण्डवोंकी कथा दूर रहे दैत्य दानवोंकोभी विनष्ट कर सकते हैं, पाण्डवसैन्य नष्ट होता चला इस लिये आज हमही पाण्डवोंके लिये भीष्मका संहार करके उनका भार उतार दें, अर्जुन तीक्ष्ण शरोंसे आहत होकेभी भीष्मके गौरवसे स्वीय कार्य करते नहीं। महात्मा मधुसूदन ऐसा चिंतन करते थे इतनेमें भीष्मपुनः तीक्ष्ण शर प्रहार करने

लगी, उनके शरोंसे दिक विदिक समाच्छन्न होनेसे अंतरीक्ष वा भूमि कुछभी लक्षित न होने लगा, उस काल भीष्मके आज्ञासे द्रोण, विकर्ण, जयद्रथ, भूरिश्रवा, कृतवर्मा, कृप, श्रुतायु प्रभृति वीरगण अर्जुनके ऊपर शरवर्षण करने लगे, अर्जुनको बहुसहस्र अश्व पदाति औ रथोंसे वेष्टित देखके सात्यकी उनके साहाय्यार्थ वहां उपस्थित हुए, भीष्मके शराघातसे पाण्डवपक्षीय हस्ती, अश्व, ध्वज औ रथ नष्ट होने लगे, योद्धागण वित्रस्त होय पलायन करने लगे, तब सात्यकी कहने लगे, हे क्षत्रियगण! तुमलोग कहां पलायन करते हो? यह क्या क्षत्रियका धर्म है, हे वीरगण! अपनी प्रतिज्ञा त्याग मत करो।

तब वासुदेव अर्जुनकी मृदुता औ भीष्मकी तीक्ष्णता औ कौरवोंका गर्व देखके क्रुद्ध होय सात्यकीसे कहने लगे, हे शैनेय! सेनामें जो पलायित हुए हैं, उनकी कथा दूर रहे, जो विद्यमान हैं, वहभी पलायन करें, हम एकाकी भीष्म औ द्रोणको अनुगामियोंके साथ संहार करेंगे, संग्राममें हमारे क्रुद्ध होनेसे कौरवपक्षमें किसीका निस्तार नहीं है, इस समय हम चक्र ग्रहण करके पहिले भीष्मका प्राणनाश करके पीछे ससैन्य द्रोणका नाश करके पाण्डवोंकी प्रीति वृद्धि करेंगे, आज हम समस्त धृतराष्ट्र पुत्रोंका नाश करके अजातशत्रु धर्मराजको राज्याभिषेक करेंगे।

यह कहके वासुदेव सुनाभिसम्पन्न सूर्यसमप्रभ सहस्र वज्रतुल्य क्षुरधार चक्र उद्भ्रमण करके अश्वोंका त्याग पूर्वक रथसे अवतीर्ण होय पादभारसे धरातल कम्पित करते हुए भीष्मके वधार्थ उनके संमुख धावमान हुए, उनके शरीरका पीताम्बर गगन संलग्न मेघकेतुल्य शोभित होने लगा, कृष्णके कोपरूप सूर्यसे विकासित, तीक्ष्णाग्रभागरूप पत्र संपन्न, वासुदेवकी देहरूप सरोवरसे उत्पन्न, बाहुरूप नालमें अधिष्ठित सुदर्शन रूप

कमल नारायण नाभिजात कमलके तुल्य शोभित होने लगा, तब मनुष्य सब कृष्णको क्रुद्धचित्तसे चक्रहस्त देखके कुरुकुल ध्वंस हुआ ऐसा निश्चय करके आर्त्तनाद करने लगे।

महात्मा भीष्म वासुदेवको चक्र हस्तमे लेके आवते देखके हस्तमे धनुर्बाण धारण पूर्वक असंभ्रांत चित्तसे कहने लगे, हे जगन्निवास! देवेश! आओ, हे खड्गधारिन्! हे शार्ङ्गपाणे! हे गदाधर! तुमको नमस्कार, हे भूतशरण्य! हे लोकनाथ! हमको शीघ्र रथसे पातित करो, हे कृष्ण! तुम हमको पातित करोगे हमारे दोनो लोक श्रेयोरूप होंगे, केशव भीष्मका वाक्य सुनके उनके संमुख होय बोले, हे भीष्म! तुमही इस महा-क्षयके मूलीभूत हो, तुम्हारे निमित्तहीसे दुर्योधन नष्ट होगा, हे शांतनुनन्दन! द्यूतासक्त नृपतिको निवारण करना धार्मिक मन्त्रीका कृत्य है, यदि राजा कालविपाकसे उपदेश न स्वीकार करे तो उसका त्याग कर्ना चाहिये।

भीष्म वासुदेवका वाक्य सुनके बोले, हे वासुदेव! दैवही बलवान् है, यदुगणने लोकहितार्थ कंसको त्याग किया था, यह कथा हमने धृतराष्ट्रको वारंवार कहा, परंतु उन्होने दैव-दुर्विपाकसे यह हमारा वाक्य न माना, भीष्म औ वासुदेवका यह वार्त्तालाप होता है इतनेमे अर्जुन सत्वर रथसे उतरके कृष्णके समीप आय उनका लंबमान पीनबाहु धारण किया, महावायु वृक्षको जैसा आकर्षण करे वैसा कृष्ण क्रोधसे अर्जुनको लेके भीष्मके आगे धावमान हुए, तब अर्जुन प्राणपणसे कृष्णके चरण धारण करके उनके दशमपाद निक्षेप पर्यन्त गतिरोध कर दिया, और प्रणति पूर्वक कहने लगे, हे केशव! क्रोध त्याग करो, तुम पाण्डवोंके एकमात्र गति, हम पुत्र औ भ्राता को शपथ करके कहते हैं, कि स्वीय प्रतिज्ञा मिथ्या करेंगे नही, आपके निर्देशानुसार कुरुकुल ध्वंस करेंगे।

जनार्दन अर्जुनका प्रतिज्ञा वाक्य सुनके पुनः रथपर आरूढ़ होय अश्वरश्मि ग्रहण करके पांचजन्य शंखध्वनिसे रोदसी पूर्ण करने लगे, कौरवपक्षीय सब हाहाकार करने लगे, कुरुसैन्यमे वाद्य बजने लगे, इधर अर्जुनके गाण्डीवशब्दसे औ उनके शर-जाल दिङ्मण्डल व्याप्त हो गया, तब दुर्योधन भीष्म औ भूरि-श्रवाके सहित अर्जुनके संमुख धावमान हुए, भूरिश्रवाने सातभल्ल, दुर्योधनने उग्रतोमर, शल्यने गदा, भीष्मने भीषण शक्ति अर्जुनके ऊपर निक्षेप किया, अर्जुनने सात बाणोंसे भूरि-श्रवाके सातभल्ल, क्षुरसे दुर्योधनका तोमर, दो बाणसे भीष्मकी शक्ति औ शल्यके गदाका छेदन कर दिया, इस प्रकार सब वीरोंका शस्त्र निवारण करके अंतरीक्षमे माहेन्द्र अस्त्र प्रादुर्भूत किया, उस अस्त्रसे अनेक शर उत्पन्न हो कौरवसैन्य निराकृत हो गया, वह शर रथ, ध्वज, धनु औ बाहु छेदन करके नरेन्द्र, गजेन्द्र औ तुरंगोंके शरीरमे प्रवेश करने लगे, महावीर धनं-जय इस प्रकार घोर शरनिकरसे दिक् विदिक् समाच्छन्न करके गाण्डीवशब्दसे विपक्षोंको सन्त्रस्त करने लगे, विराटप्रमुख वीर-गण गांडीवका शब्द सुनके वहां उपस्थित हुए, कौरवपक्षीय वीरगण पार्थके ऊपर धावमान होकेभी गाण्डीवशब्दसंत्रस्त होय उनको आक्रमण न कर सके, अर्जुनके तीक्ष्णशर प्रहारसे छिन्न हस्त मस्तक होय भूतलमे निपतित होने लगे, रणस्थलमे शोणितनदी प्रवाहित होने लगी, उस नदीमे सहस्र सहस्र मृतदेह तरण करने लगे, अर्जुनको शत्रु संहार कर्ते देखके चेदि, कारूष, पांचाल, मत्स्य औ पाण्डव एकत्र होके कौरवसैन्य छिन्नभिन्न करने लगे, कृष्ण औ अर्जुन सिंहनाद करने लगे, उस समय अर्जुन शस्त्रसे क्षतविक्षतांग भीष्म, द्रोण प्रमुख वीरगण संध्याकाल उपस्थित देखके युद्धसे विरत हुए, अर्जुनभी जय औ कीर्त्तिलाभ करके स्वीय वीरोंके साथ शिविरमे गमन किया,

उस समय कौरवशिविरमें घोरशब्द उत्थित हुआ, कि महावीर धनंजयने अयुत रथ, असप्त शत गज, प्राच्य, सौवीर, क्षुद्रक औ मालवकोंका संहार किया, औ भीष्म प्रभृति सकल वीरोंको पराजित किया, यह दूसरेको असाध्य है, ऐसा कहते कहते शिविरमें वास करने लगे।

इति ५९ अध्याय ।

हे राजन्! प्रभात होतेही भीष्म कौरवसैन्यके अग्रगामी होके क्रोधसे शत्रुगणके ऊपर धावमान हुए, द्रोण प्रभृति वीरगण उनके अनुगामी हुए, वह भीष्मरचित सैन्य अर्जुनके ऊपर धावमान हुआ, महावीर धनंजय प्रधान२ योद्धा औ गजाश्वादि सैन्य लेके उनके अभिमुख धावमान हुए, हे महाराज! आपके पुत्र औ अन्यान्य वीर कृष्णसारथि अर्जुनको देखके विषादसागरमें निमग्न हो गए, विविध वाद्यवादन होने लगा, धूलिपटल गगनमण्डल वितान विस्तृत होगया, रथी रथीसे आहत होय निपतित होने लगे, गजारोही गजारोहीसे, अश्वारोही अश्वारोहीसे औ पदाति पदातिसे निहत होने लगे, नानाविध अस्त्रशस्त्र भूतलमें विकीर्ण होने लगे, महावीर भीष्म अस्त्रसे सन्दीप्त होय अर्जुनके ऊपर धावमान हुए, द्रोण कृप प्रमुख वीरभी धनंजयके ऊपर धावमान हुए, अभिमन्यु स्वीय पिताके ऊपर धावमान वीरोंको देखके सहसा उनके समीप समागत हुए, विपक्ष वीरोंके अस्त्र निवारण करके अग्निके समान भासित होने लगे, भीष्म शर वर्षणसे रुधिर नदी प्रवाहित करके अभिमन्युको आक्रमण करते हुए, अर्जुनाभिमुख हुए, धनंजय गाण्डीव ध्वनि पूर्वक उनके अस्त्र निवारण करके कौरवसैन्य संहार करने लगे, भीष्मके निक्षिप्त भल्लोंको अर्जुनके निराकृत करने पर भीष्मने शरजाल विस्तार किया, तदन्तर दोनो

हे पितामह ! आप, द्रोण, शल्य, कृप, अश्वत्थामा, कृतवर्मा, हार्दिक्य, सुदक्षिण, भूरिश्रवा, विकर्ण, भगदत्त, औ अन्यान्य विख्यात नरपति त्रैलोक्य संहार करनेमे समर्थ होकेभी पाण्डवोंका बलवीर्य सहन नही कर सकते हैं, इसमे हमको बड़ा सन्देह है इसका भंजन कीजिये ।

भीष्म बोले, हे राजन् ! हमने तुमको वारंवार कहा है, तथापि तुम नही मानते, इस समय पाण्डवोंसे संधि करना ही उचित है, उससे तुम्हारा औ पृथिवीका मंगल होगा, तुम संबधियोंके सहित भोग करोगे, हमारा कहना न मानके पाण्डवोंकी अवमानना किया उसीका यह फल है, पाण्डव अवध्य है, उसकाभी कारण सुनो, वासुदेव सतत उनकी रक्षा करते हैं, उनका पराजय करे ऐसा त्रैलोक्यमे कोई नही है, न होगा न हुआ, महर्षियोंने एक पुरातन इतिहास कहा है, सो तुम सुनो ।

पूर्वकालमे महर्षि औ सुरगण एकत्र होके गंधमादन पर्वत पर ब्रह्माके निकट उपस्थित हुए, ब्रह्मा उनके मध्यमे उपविष्ट थे, इतने उन्होंनेमे आकाशमे एक भास्वर रमणीय विमान देखा, ध्यानद्वारा उसको जानके कृतांजलिपुटसे परम पुरुष परमेश्वरको नमस्कार करके उत्थित होय अद्भुत वह देखने लगे, अनंतर ब्रह्माने भगवान् विष्णुकी पूजा करके अनेक-विध स्तव करने लगे, स्तव करके प्रार्थना करने लगे, हे भगवन् ! अब तुम धर्मस्थापन, दानवदलन, औ पृथ्वी धारणके लिये यदुवंशमे अवतीर्ण हो, तुमही आत्माके साक्षी हो, तुम आत्मास्वरूप संकर्षण, आत्मजस्वरूप प्रद्युम्न औ प्रद्युम्नसे अनिरुद्धको उत्पन्न किया है, सकल उन अनिरुद्ध को अव्यय विष्णु जानते हैं, अनिरुद्धने हमको ब्रह्मारूप से उत्पन्न किया है, इस लिये हमभी तुम्हारे निर्मित वासुदेव

रूप हैं, इस समय तुम आपनेको इस प्रकार विभक्त होके मानुष कलेवर धारण करो, तुम मनुष्य लोकमें सकल सुख संपादनार्थ असुरबध, धर्मस्थापन औ यशोलाभ करके पुनः स्वस्थानमें गमन करो, हे अमितपराक्रम ! महर्षिगण पृथक् २ होके तुम्हारे सब नामोंसे तुम्हाराही परमाद्भुत गान करते हैं ब्राह्मणगण तुम्हाराही आश्रय करके तुमहीको अनादि, अमध्य, अनंत असीम औ संसारके सेतु कहते हैं ।

इति ६५ अध्याय ।

हे महाराज ! अनन्तर भगवान् विष्णु गंभीर शब्दसे बोले, हे तात ! हमने योगबलसे तुम्हारा अभिलषित जाना, तुम्हारे मनोरथ पूर्ण होंगे, यह कहके अन्तर्धान हो गए, तब महर्षि औ गन्धर्वगण अतिशय विस्मयापन्न होके पूछने लगे, ब्रह्मन् ! आपने जिनका विनीत भावसे नमस्कार करके स्तव किया वह कौन हैं ? ब्रह्मा बोले, हे देवर्षि गन्धर्व ! जो भूत भविष्य वर्त्तमान, जो सबसे पर, जो प्रभु, ब्रह्म औ परम पद है, वह प्रसन्न होके हमसे बोले, हमने जगत् हितार्थ उनकी प्रार्थना किया औ कहा, तुम वासुदेव नामसे विख्यात हो मनुष्ययोनिमें जन्म लेओ, जो दानव, दैत्य औ राक्षस युद्धमें निहत हुए हैं, वह मनुष्य योनिमें उत्पन्न हुए हैं, तुम उनके बधके लिये नर के सहित मानवदेह धारण करो, देवगणभी नरका पराजय कर सकते नहीं, वह लोगभी मनुष्ययोनिमें उत्पन्न हुए हैं, मूढ़ लोग उनको जान सकते नहीं, हम उन्हीके आत्मज औ जगतके पति हैं, वही यह वासुदेव हैं, शङ्ख चक्र गदाधर वासुदेवको मनुष्य जानके अवज्ञा मत करो, वह परब्रह्म हैं, वह अव्यक्त अक्षय औ शाश्वत हैं, ब्रह्माने देवर्षिगणसे इस प्रकार कहके स्वस्थानमें गए, देव गन्धर्व ऋषिगणभी प्रसन्नतासे स्वस्थान

मे गए, महर्षिगणोंके मुखसे वासुदेवके अनेक गुणग्राम श्रवण किया है, हे वत्स! महर्षिगणने तुमको वासुदेव औ पाण्डवोंसे युद्ध करनेमे वारंवार निवारण किया था, परंतु तुम मोहसे उसका अनुधावन करते नही हो, इससे तुम क्रूर राक्षस हो ऐसा बोध होता है, तुम अज्ञानान्धकारसे आच्छन्न होके वासुदेव पार्थका द्वेष करते हो, देखो कोई नर नारायणका द्वेष करता है? तुमने जो पूछा सो कहा।

इति ६६ अध्याय।

दुर्योधन बोले, हे पितामह! वासुदेव किस स्थानसे पृथ्वीसे प्रादुर्भूत हुए? औ कहां अवस्थान करते हैं?

भीष्म बोले, वत्स! वासुदेव महाभूत औ सब देवताके देवता है उनसे श्रेष्ठ कोई नही, वह योगबलसे जलमे शयन करके मुखसे अग्नि, प्राणसे वायु औ मनसे सरस्वती औ वेदको उत्पन्न करते हैं, वह पहिले देव ऋषि सर्वलोककी सृष्टि करके उनके सृष्टि औ प्रलयको उत्पन्न करते हैं, वह कृष्णाजिनके ऊपर प्रसन्न हैं वह सब लोक जय करते हैं, हे राजन्! केशव भीतकी रक्षा करते हैं, यह जानके युधिष्ठिर सर्व प्रकारसे उनके शरणापन्न हुए हैं।

इति ६७ अध्याय।

हे राजन्! जैसा भगवान् ब्रह्माने उनका स्तव किया है वैसे ही ब्रह्मर्षियोंनेभी स्तुति किया है, इस प्रकार वासुदेवका स्वरूप तुमसे कहा, अब तुम उनको प्रसन्न करो, राजा दुर्योधन भीष्मके मुखसे यह सुनके मनमे केशव औ पाण्डवोंका बहुमान करने लगे, भीष्म पुनः कहने लगे, हे राजन्! तुमने केशव औ पाण्डवोंका माहात्म्य सुना? इसीसे वह अवध्य हैं, वासुदेव उनसे

अति प्रसन्न है इससे उनका कोई पराभव नही कर सकता, इस लिये उनसे सन्धि करके राज्य भोग करो, तुम नर नारायणकी अवज्ञा करोगे तो निश्चय नष्ट होगे, यह कहके तृष्णींभूत होय दुर्योधनको विदा किया, दुर्योधन उनको प्रणाम करके स्वीय शिविरमे आय रात्रि व्यतीत करने लगे।

इति ६८ अध्याय।

अनन्तर प्रभात औ सूर्योदय होने पर उभयपक्षीय सैन्य युद्धार्थ समरस्थलमे उपस्थित हुआ, धार्तराष्ट्रोंने मकर व्यूह निर्माण किया, भीष्म उस व्यूहकी रक्षा करने लगे, औ समस्त सैन्यके अग्रसर होके गमन करने लगे, पाण्डवगणभी समरोद्यत होय नितांत दुर्भेद्य श्येन व्यूह रचना करके गमन करने लगे, भीमसेन उस व्यूहके मुख पर, शिखंडी औ धृष्टद्युम्न उसके नेत्र पर, सात्यकी शिरो भागमे, अर्जुन ग्रीवामे, द्रुपद आत्मज सहित अक्षौहिणी सेना लेके उसके वाम पक्षमें, कैकय दक्षिण पक्षमे औ द्रौपदेय, अभिमन्यु, युधिष्ठिर, नकुल औ सहदेव पृष्ठमे अवस्थान करने लगे, अनन्तर भीमसेन संमुखसे मकर व्यूहमे प्रवेश करके भीष्मके निकट जाय शरजाल विस्तार करने लगे, भीष्म पाण्डवोंके सेनाको मोहित करते महास्त्रजाल विस्तार करने लगे, तब अर्जुनने सेनाको विमोहित देखके सत्वर सहस्र बाणसे भीष्मको विद्ध किया, भीष्मके अस्त्रको निवारण करके सेनासहित हर्षसे युद्धमे प्रवृत्त हुए, दुर्योधन सैन्य संहार औ भ्रातृवधसे सन्तप्त होय द्रोणसे बोले, आचार्य्य! आप सर्वदा हमारा अभिलाष पूर्ण करते हैं, केवल पाण्डवोंकी कथा दूर रहे, हमलोग भीष्म औ आपके आश्रयसे अमरगणकाभी पराजय कर सकते हैं, इस लिये अब ऐसा कीजिये जिससे पाण्डव नष्ट होय आपका मङ्गल होगा, तब द्रोणाचार्य्य सात्यकीकी समक्ष पाण्डव

सैन्य संहार करने लगे, सात्यकीने द्रोणाचार्यका तत्क्षण निवारण कर दिया, द्रोणने दश बाणसे सात्यकीको विद्ध किया, भीमसेनने सात्यकीको उनसे रक्षित करके उनको शरनिकरसे विद्ध किया, तब द्रोण, भीष्म औ शल्यने शरजालसे भीमसेनको विद्ध किया, द्रौपदेय औ अभिमन्यु उन सभोंको विद्ध करने लगे, शिखण्डी भीष्म औ द्रोणके ऊपर मेघके समान शरवर्षण करने लगे, भीष्म शिखंडीको प्राप्त होके पूर्वस्त्री जानके छोड़ दिया, दुर्योधनसे प्रेरित होय द्रोणाचार्य शिखण्डीके ऊपर धावमान हुए, शिखण्डी भयसे दूर होगए, दुर्योधन सैन्य लेके भीष्मको रक्षा करने लगे,पाण्डवगण अर्जुनको आगे करके भीष्मके ऊपर धावमान हुए, तब देव दानवके ऐसा भयङ्कर संग्राम उनका होने लगा।

इति ६८ अध्याय ।

अनन्तर भीष्म दुर्योधन प्रभृति आपके पुत्रोंके भीमसेनसे रक्षाके लिये तुमुल युद्ध करने लगे, उस दिन पूर्वाह्णमे कौरव पाण्डवोंसे घोरतर संग्राम होने लगा, सिंहनाद, शंखध्वनि, ज्याघोष, अश्व औ गजोंके शब्दसे दश दिक् व्याप्त हो गए, मस्तक सब भूतलमे निपतित होने लगे, अस्त्र शस्त्र देह, बाहु औ अलङ्कार विकीर्ण होने लगे, रुधिरकी नदी बहने लगी, युद्धदुर्मद क्षत्रियगण क्रोधसे शरजाल वर्षण करने लगे, कालप्रेरित हो वीर सब नष्ट होने लगे, अनन्तर दुर्योधन कलिङ्गदेशीय वीरपुरुषोंको लेके भीष्म पुरःसर पाण्डवो पर धावमान हुए, पाण्डवभी भीमसेन पुरःसर भीष्म पर धावमान हुए ।

इति ७० अध्याय ।

अनन्तर अर्जुन भ्रातृगण औ अन्यान्य पार्थिवोंको भीष्मसे युद्ध करते देखके धावमान हुए, उनके शङ्ख औ गांडीवके शब्दसे

इस लोगोंको भयका सञ्चार हुआ, जैसा प्रचण्ड वायुप्रेरित घोर गर्जनशील सौदामिनी मण्डित मेघमाला चतुर्दिक् वारिधारा वर्षण करती है, तद्रूप महावीर अर्जुन गांडीव शब्द सहकृत शर वर्षण करते भीष्मके ऊपर धावमान हुए, दुर्योधनादि वीर सब भयसे भीष्मके शरणापन्न होने लगे, अश्वारोही अश्वसे निपतित होने लगे, रथी सब रथसे पतित होने लगे, गांडीव-शब्दसे सबही विचेतन होने लगे, कलिङ्गाधिपति शीघ्रगामी काम्बोजदेशीय अश्वोंसे रक्षाकुशल बहुसहस्र गोपसैन्यसे औ मद्र, सौवीर, गांधार औ त्रैगर्त्तसे वेष्टित होय ससैन्य जयद्रथके साथ दुःशासनको आगे करके रणस्थलमें अवस्थान करने लगे, चतुर्दश सहस्र उत्कृष्ट अश्वारोहीयोंने दुर्योधनके आज्ञासे शकुनिको वेष्टन किया, अनन्तर पाण्डवगण सम्मेत होके रथ, वाहनका विभाग करके कौरवपक्षीयोंका नाश करने लगे,भीष्म असंख्य सैन्य लेके अर्जुनके संमुख हुए, अवन्तिराज काशिराजके साथ, सिंधुराज भीमसेनके साथ, युधिष्ठिर पुत्र सहित शल्यके साथ, विकर्ण सहदेवके साथ औ चित्रसेन शिखंडीके साथ युद्ध करने लगे, दुर्योधन मत्स्योंके ऊपर धावमान हुए, द्रुपद, चेकि-तान औ सात्यकी द्रोणसे समागत हुए, धृष्टद्युम्न कृप औ कृत-वर्मासे युद्ध करने लगे, इस प्रकार चतुर्दिक् युद्ध होने लगा, तब रथ, अश्व औ हस्ती इतस्ततः भ्रमण करने लगे, धूलिजालसे दिक् सब व्याप्त हो गईं; सूर्य आच्छादित हो गए, अस्त्रप्रभा नक्षत्रके समान भासित होने लगे, खड्गोंसे छिन्न शरीर औ मस्तक चतुर्दिक् उच्छलित होने लगे, रथ सब छिन्न भिन्न होने लगे, अश्व सब निपतित होने लगे, कोई रथ सारथि विना इतस्ततः पलायन करने लगे, गज सब महामात्र सहित गिरने लगे, संग्रामभूमि सब समाच्छन्न हो गई।

इति ७१ अध्याय ।

अनन्तर शिखण्डी विराटके सहित भीष्मसे युद्धमे प्रवृत्त हुए, धनञ्जय द्रोण, कृप, विकर्ण औ अन्यान्य भूपालो पर धावित हुए, भीष्मने क्रोधाविष्ट होके सेनाके समक्ष भीमसेनको विद्ध किया, भीमसेनने भयङ्कर शक्ति भीष्मके ऊपर निक्षेप किया, भीष्मने खण्डर कर दिया, सात्यकीने भीष्मको शरजालसे आच्छन्न कर दिया, भीष्मने सात्यकीके सारथिको पातित कर दिया, तब सात्यकीने अश्व रथ लेके इतस्ततः धावमान होने लगे, अश्वोंको धरो ऐसा शब्द पाण्डवके सैन्यमे होने लगा, इतनेमे भीष्म पाण्डव सैन्य संहार करने लगे, तब पाण्डव धृष्टद्युम्न औ भूपालगण भीष्मके ऊपर धावमान हुए, अनन्तर परस्पर घोर संग्राम होने लगा।

इति ७२ अध्याय।

अनन्तर विराटने तीन बाणोंसे भीष्मको विद्ध करके तीन बाणोंसे उनके अश्वोंको विद्ध किया, भीष्मनेभी दश शरोंसे विराटको विद्ध किया, अश्वत्थामाने दश बाणोंसे अर्जुनके वक्षस्थलमे वेध किया, अर्जुनने उनका धनु छेदन करके तीक्ष्ण पांच बाणोंसे उनको आहत कर दिया, अश्वत्थामाने क्रुद्ध होके अन्य कार्मुक ग्रहण पूर्वक नवति शरोंसे अर्जुनको विद्ध करके सप्तति बाणोंसे वासुदेवको विद्ध किया, अर्जुन क्रोधरक्तान्त लोचन हो भयङ्कर शरोंसे सतत उनको विद्ध करने लगे, अर्जुनके शरोंसे अश्वत्थामाके शरीरसे रुधिर प्रवाह निर्गत होने लगा, तथापि वह कुछभी व्यथित न हुए, अर्जुन उनको गुरुपुत्र औ मान्य जानके उनको छोड़के सेना संहार करने लगे, दुर्य्योधन तीक्ष्ण बाणोंसे भीमसेनको व्यथित करने लगे, भीमसेनने क्रोधसे भयंकर बाणसे दुर्य्योधनका वक्षस्थल विद्ध किया, दुर्य्योधन असह्यमान होके क्रोधसे शरजाल द्वारा विद्ध

करने लगे, दोनो वीर चतविचत होगए, अभिमन्यु शरजालसे चित्रसेनको, सात बाणसे पुरुमित्रको औ अन्य सात बाणोंसे भीष्मको बिद्ध करके नृत्य करने लगे, उससे हम लोगोंके मनमे क्षोभ होने लगा, तब चित्रसेनने दश बाण औ पुरुमित्रने सात बाण अभिमन्युको बिद्ध किया, उस्से उनके देहसे रुधिर चरण होने लगा, तब उन्होंने चित्रसेनके मर्मभेद करके उनके वचस्थलमे आघात किया, तब राजकुमार सब एकच होके अभिमन्युको बिद्ध करने लगे, अभिमन्युभी प्रत्येकको प्रहार करने लगे, दुर्य्योधन प्रभृति अभिमन्युका अद्भुत कार्य्य देखके उनको वेष्टित करने लगे, ग्रीष्मकालमे अग्नि जैसे तृणराशिको दग्ध करता है, उस प्रकार अभिमन्यु कौरव सैन्य दग्ध करने लगे, तब आपके पौत्र लक्ष्मण औ उनके सारथिको बिद्ध करने लगे, लक्ष्मणभी उनको बिद्ध करने लगे, तब अभिमन्युने लक्ष्मणके अश्व औ सारथीका नाश किया, तब लक्ष्मणने शक्ति निक्षेप किया, अभिमन्युने उसका खण्ड २ कर दिया, तब कृपाचार्य्य लक्ष्मणको अपने रथ पर लेके वहांसे ले गए, तब भीषण संग्राम उपस्थित हो गया, दोनो पचके वीर प्राणपणे शत्रुसंहार करने लगे, सृञ्जयगण मुक्तकेश शून्यकवच छिन्न कार्मुक औ विरथ होके कौरवोंसे बाहुयुद्धमे प्रवृत्त हुए, भीष्म दिव्यास्त्रसे पाण्डवसैन्य ध्वंस करने लगे, तब निहत आरोही अश्व, गज, मनुष्य, रथी औ सारथियोंके निपतित होनेसे समरभूमि समाकीर्ण हो गई।

इति ७३ अध्याय।

-÷०÷-

हे महाराज! तब सात्यकी शर वर्षण करने लगे, दुर्य्योधन सात्यकीका शत्रुसंहार कर्त्ते देखके उनके ऊपर दश सहस्र रथी प्रेरण किये, सात्यकी दिव्यास्त्र प्रयोग करके उनका संहार

द्वैरथ युद्ध करने लगे, कुरु सृञ्जय प्रभृति वह अद्भुत युद्ध देखने लगे।

इति ६० अध्याय।

हे महाराज! अश्वत्थामा, भूरिश्रवा, शल्य, चित्रसेन औ सांयमनीय पुत्र अभिमन्युसे युद्ध करने लगे, वह पांचो वीर हस्तलाघवमें अभिमन्युके समान कोई न होसके, अर्जुन स्वीय पुत्र को अद्भुत पराक्रम करते देखके आह्लादसे गर्जन करने लगे, हे महाराज! आपके पक्षीय वीरगण अभिमन्युको संहार करते देखके उनको आक्रमण करने लगे, तब अर्जुनके संमुख होके संग्राम करने लगे, अभिमन्युने अश्वत्थामाको एक औ शल्यको पांच बाण मारके आठ बाणसे सांयमनीका ध्वज छेदन कर दिया, अनंतर भूरिश्रवाने अभिमन्युके ऊपर शक्ति निक्षेप किया, अभिमन्युने तत्क्षणही छेदन कर दिया, तब शल्य उनके ऊपर शतर शर निक्षेप करने लगे, अभिमन्युने अनायास वह शर निराकृत करके उनके चारो अश्व नष्ट कर दिये, उन पांचो वीरोंमें कोई उनके बलको अतिक्रम कर सका नहीं।

अनंतर त्रिगर्त, मद्र औ केकय देशीय पंचविंशति सहस्र सैन्य दुर्योधनके आज्ञासे अर्जुनके बधार्थ उनको वेष्टन करने लगे, धृष्टद्युम्न उनको देखके बहुसैन्य लेके उनके ऊपर धावमान हुए, धृष्टद्युम्नने कृपका जत्रुदेश विद्ध करके मद्रकका शरीर भेद औ कृतवर्माके पृष्ठ रक्षकका नाश किया, तदुत्तर पौरवके पुत्रको यमालयमें भेज दिया, सांयमनीके पुत्रने धृष्ट-द्युम्नको औ उनके सारथिको दशर बाणसे विद्ध किया, धृष्ट-द्युम्नने उनका धनु छेदन कर दिया, तदुत्तर पंचविंशति बाणसे उनको विद्ध करके उनके अश्व, पार्ष्णि औ सारथिको नष्ट किया, तब सांयमनीनन्दन खड्ग लेके पादचारसे धृष्टद्युम्नके

ऊपर धावमान हुए, धृष्टद्युम्नने उनको आगत देखके गदासे उनका मस्तक चूर्ण कर दिया, उनके निहत होतेही आपके सैन्यमे हाहाकार होने लगा, तब सांयमनी स्वीय पुत्रको निहत देखके धृष्टद्युम्नके ऊपर धावमान हुए, तब उन दोनोका महा संग्राम होने लगा।

इति ६१ अध्याय ।

धृ०। दैवही पुरुषकारसे प्रधान है, पाण्डवसेना हमारे सेनाको अनायास नाश करती है, तुम हमाराही नाश जब तब कहते हो,इस समय ऐसी उपाय नही देखते जिससे हमारा जय औ पाण्डवोंका पराजय होय।

सं०। अब अपन पक्षीय असंख्य वीरोंके संहारकी दृष्टान्त सुनिये, धृष्टद्युम्नने शल्यके नव वाणसे बिद्ध होके उनके ऊपर लौहमय शर निक्षेप किया, क्षणमात्र दोनोका घोर युद्ध होके शल्यने भल्लसे धृष्टद्युम्नका धनु छेदन किया, धृष्टद्युम्न जब शल्य के शरसे नितांत पीड़ित हुए तब अभिमन्यु शल्यके रथाभिमुख हुए, निशित शरजालसे शल्यको बिद्ध करने लगे, कौरवपक्षीय वीर अभिमन्युका पराजय करनेके लिये शल्यके चतुर्दिक् अव-स्थान करने लगे, दुर्योधन, विकर्ण, दुःशासन, विविंशति, दुर्मुख, सत्यव्रत, दुर्मर्षण, दुःसह, चित्रसेन औ पुरुमित्रभी शल्यके रक्षामे नियुक्त हुए, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, द्रौपदेय, अभिमन्यु, नकुल औ सहदेव यह दश वीर नाना अस्त्र शस्त्र निक्षेप पूर्वक उन वीरोंसे युद्ध करने लगे, परस्पर बधाभिलाषसे घोर युद्ध करने लगे, अन्यान्य वीर निस्तब्ध होके उनका युद्ध देखने लगे, कौरव-पक्षीय वीरोंने एक वार धृष्टद्युम्नको बिद्ध किया, धृष्टद्युम्नने प्रत्येकको पचीसर वाणोंसे बिद्ध किया, अभिमन्युने पुरुमित्र औ

सत्यव्रतको दश२ बाणसे विद्ध किया, माद्रीनन्दनोंने मातुल शल्य को शरनिकरसे आच्छादित कर दिया, शल्यनेभी भागिनेय माद्रीसुतद्वयको आच्छादित कर दिया, उस समय भीमसेनने दुर्योधनको देखके गदा ग्रहण किया, आपके अन्य पुत्र सब भीमसेनको गदा समुद्यत देखके प्राणभयसे पलायन करने लगे, दुर्योधन दश सहस्र गजसैन्य लेके मगधराजको आगे करके भीमसेनके अभिमुख हुए, महावीर भीमसेन उस करिसैन्यको समागत देखके वह महागदा लेकर रथसे उतरके गदाघातसे गजसैन्य संहार करते विचरण करने लगे, सैन्य भीमसेनके भीषण गर्जनसे भयविह्वल होने लगे, तब द्रौपदेयगण, अभिमन्यु, नकुल, सहदेव औ धृष्टद्युम्न भीमसेनके पीछे रक्षा करते हुए वीरोंके ऊपर शरजाल विस्तार करने लगे, उनके शरप्रहारसे गजसैन्य के मस्तक औ अंकुश सहित हस्त छेदन होने लगे, गजारोही गण छिन्न मस्तक होके पर्वतके ऊपर छिन्नाग्र वृक्षके समान शोभित होने लगे, धृष्टद्युम्न उस काल असंख्य गज संहार करके पातित कर दिये, मगधराजने ऐरावत सदृश स्वीय गजको अभिमन्युके ऊपर प्रेरण किया, अभिमन्युने मगधराजके हस्ती को आगत देखे तीक्ष्णशरोंसे उसका संहार करके एक भल्लसे मगधराजका शिरश्छेद कर दिया, भीमसेनभी करिसैन्यमें प्रविष्ट होय एक एक गदाघातसे एक एक गज पातित करने लगे, भीमके गदाघातसे महागज सब भग्नदन्त, भग्नकुंभ, भग्नोरु औ भग्नपृष्ठ होके पतित होने लगे, कितने गज रुधिर वमन करके प्राणत्याग करने लगे, भीमसेन गजरुधिर, बसा औ मज्जासे लिप्त कलेवर होके रुधिरचर्चित गदा धारण पूर्वक दण्डपाणि यम औ पिनाकपाणि रुद्रके तुल्य शोभित होने लगे, हतावशिष्ट गज सब भीमके भयसे स्वीय सैन्य संहार करते पलायन करने लगे, अभिमन्यु प्रभृति चतुर्दिक्से भीमसेनको रक्षा करने लगे,

भीमसेनसे गजशून्य संग्रामस्थल कर्के श्मशानवासी महादेवके ऐसे भूषित होने लगे।

इति ६२ अध्याय।

हे महाराज! इस प्रकार गजसैन्य नष्ट हुआ, तब दुर्योधन भीमसेनका संहार करो, ऐसा कहके स्वीय सैन्यको आज्ञा देने लगे, भीमसेन सुनके सिंहनाद करने लगे, कौरवसैन्य सब दुर्योधनके आज्ञासे भीमसेनके संमुख हुए, भीमसेन उस असंख्य गजाश्व रथ पदाति संकुल सैन्य अनायास निवारित करने लगे, इस संग्राममें भीमसेनका अति आश्चर्य पराक्रम दृष्ट हुआ, चण-मात्रमें भूपति, रथ, अश्व, गज औ पदातिका गदाघातसे संहार कर दिया, उस भयङ्कर संग्रामके समय अभिमन्यु धृष्टद्युम्नप्रमुख वीरोंनेभी भीमसेनका त्याग नही किया, उनसे रक्षित भीमसेन कालान्तक यमके समान उस सैन्यका संहार करने लगे, गजसे गजारोही, अश्वसे अश्वारोही, औ रथसे रथी निपतित होने लगे, चतुर्दिक् निहत गजाश्व मनुष्योंसे यमालयके ऐसा दृष्ट होने लगा, भीमसेनको गदाघातसे वारंवार असंख्य सैन्य संहार कर्ते देखके कौरवपक्षीय सब विमनायमान हो गए, गदाहस्त भीमसेन जिधर देखे उधरही योद्धागण प्राणभयसे पलायन करने लगे, तब भीष्म गर्जन करते हुए भीमसेनके अभिमुख धावमान हुए, भीम-सेन उनको आवते देखके उनके संमुख धावमान हुए, उस समय सात्यकी कौरवसैन्य संहार करते हुए भीष्मके संमुख हुए, आपके पक्षीय वीरोंमें कोई उनको निवारण कर सके नही, केवल अलंबुषने दश वाण निक्षेप किया, सात्यकीने उसको चार वाणसे विद्ध कर दिया, तदुत्तर आपके वीर सब उनके ऊपर शरवर्षण करने लगे, परंतु किसी प्रकार सात्यकी निवा-

रित न हुए, तब भूरिश्रवा भिन्न सबही खिन्न हो गए, भूरि-श्रवा सात्यकीसे ताड़ित होकेभी उनके संमुख हुए।

इति ६२ अध्याय।

हे महाराज! भूरिश्रवाने नव बाणसे सात्यकीको विद्ध किया, सात्यकीने नतपर्व बाणसे भूरिश्रवाको निवारित कर दिया, तब दुर्योधन भ्रातृगणके सहित भूरिश्रवाके चतुर्दिक् हो गए, पाण्डवगणभी सात्यकीके चतुर्दिक् हो गए, तब भीमसेन गदासे दुर्योधन प्रभृतिको ताड़न करने लगे, तब आपके पुत्र नन्दक क्रुद्ध होके सहस्र रथ लेके भीमसेनके ऊपर शरवर्षण करने लगे, दुर्योधननेभी भीमके वक्षस्थलमे नव बाण निक्षेप किया तब भीमसेन स्वीय रथ पर आरूढ़ होय सारथि विशोकसे बोले, हे सारथे! धृतराष्ट्रके पुत्र सब हमारा बध करनेके लिये उद्यत हुए हैं, इस लिये तुम अश्वोंको स्थगित करो, हम अभी उनका संहार करते हैं, यह कहके दश बाणसे दुर्योधनको बिद्ध करके नन्दकके वक्षस्थलमे तीन बाण निक्षेप किये, तब दुर्योधनने तीन बाणसे सारथि विशोकको बिद्ध करके रहस्यपूर्वक भीमसेनका धनु छेदन कर दिया,भीमसेन सारथिको बिद्ध देखके अन्य दिव्य धनु लेके क्षुरप्रसे दुर्योधनका धनु छेदन कर दिया,तब दुर्य्योधनने अन्य धनु लेके एक घोर शर भीमसेनके वक्षस्थलमे निक्षेप किया,भीमसेन उस शरप्रहारसे व्यथित औ मूर्छित होय रथमे निपतित हो गए, अभिमन्युने भीमसेनको तादृश देखके दुर्य्योधनके मस्तक पर बाणवृष्टि करने लगे, इतनेमे भीमसेन चैतन्य होय दुर्योधनको पहिले तीनबाण औ पीछे पांचबाणसे बिद्ध करके पंचविंशति बाणसे शल्यको बिद्ध किया,शल्य भीमसेनके बाणसे व्यथित होय रणस्थलसे पलायमान होगए, तब सेनानी, सुषेण, जलसंध, सुलोचन, उग्र, भीमरथ, भीम, वीरबाहु, अलोलुप,

दुर्मुख, दुष्प्रधर्ष, विवित्सु, विकट औ सम यह आपके चतु-र्दश पुत्र भीमसेनके संमुख होय एककालमें शरवर्षण करने लगे, तब महावीर भीमसेन उनको देखके पशुओंमें दृकके तुल्य क्रोधसे चुरप्रसे सेनानीका शिरश्छेद पूर्वक तीन बाणसे जलसंधको यमालयमें प्रेरण किया, तदुत्तर सुषेणका संहार करके उग्रका मस्तक छेदन किया, पर सप्तति बाणसे अश्व, ध्वज औ सारथि सहित वीरबाहुको परलोकमें प्रेरण करके हंसतेर भीम औ भीमरथका संहार किया, तदुत्तर सुलोचनका संहार किया, हे महाराज! आपके अवशिष्ट पुत्र भीमसेनका पराक्रम देखके रणस्थलसे पलायित हुए, तब महात्मा भीष्म कौरवपक्षीय वीरोंसे बोले, हे महारथगण! देखो, यह महाधनुर्धर भीमसेन क्रुद्ध होके महाबली धृतराष्ट्र पुत्रोंको हीनवीर्य जानके एक कालमें संहार करते हैं, तुम लोगभी उनको आक्रमण करो, कौरव सैन्य भीष्मके अनुमतिसे भीमके संमुख हुए, तब महा-वीर भगदत्त मदस्रावी कुञ्जर पर आरूढ़ होय भीमसेनके संमुख होय शरनिकर वर्षण करने लगे, तब अभिमन्युप्रमुख वीरगण भीमसेनको भगदत्तके शरोंसे आच्छादित देखके चतु-र्दिक्से भगदत्तके गजके ऊपर बाणवृष्टि करने लगे, भगदत्तका वह महागज उनको शरप्रहारसे रुधिराक्त औ चलविचल होके सूर्य किरण रंजित मेघके समान शोभित होने लगा, तब भग-दत्त उस गजको क्रोधसे संचालित करने लगे, वह गज द्विगु-णित वेगसे धरा कम्पित करते पाण्डवपक्षीयोंके ऊपर धावमान हुआ, महारथगण उस गजको असह्य जानके विमन होने लगे, भगदत्तने एक तीक्ष्ण बाण भीमसेनके वक्षस्थलमें निक्षिप्त किया, भीमसेन उस शरसे मूर्छित हो ध्वजदण्ड धरके रह गए, तब घटोत्कच पिताको मूर्छित देखके अन्तर्हित होय क्षण-मात्रमें दारुणमायासे मायामय ऐरावत पर आरूढ़ होय भग-

दत्तके संमुख हुए, उनकी मायासे अंजन, वामन औ महापद्म यह तीन दिग्गज और उत्पन्न हुए, वह तीनों गज ऐरावतके अनुगामी हुए, वह तीनों गजोंपर राक्षस उपविष्ट थे, वह चारों गज भगदत्तके गजको क्षतविक्षत करने लगे, भगदत्तका गज उन चारों दिग्गजोंसे अत्यन्त पीड़ित होय वेदना चीत्कार करने लगा, तब भीष्म उस गजचीत्कार सुनके द्रोण औ दुर्य्योधनसे कहने लगे, हे वीरगण! घटोत्कच महावीर औ भगदत्तभी कोपन, काल औ मृत्युके सदृश दोनों वीर संग्राम करते हैं, भगदत्त घटोत्कचसे विपन्न हो रहे हैं, देखो पाण्डवोंका हर्षध्वनि औ भगदत्तके गजका आर्तनाद श्रुत हो रहा है, भगदत्त अपने अतिप्रिय औ भक्त हैं, उनको रक्षा करनी अवश्य है, द्रोण प्रभृति भीष्मका यह सुनके भगदत्तके रक्षाके लिये उनके समीप धावमान हुए, पांचाल औ पाण्डवभी उधरही धावमान हुए, राक्षसेन्द्र घटोत्कच उनको देखके वज्रनिर्घोषके तुल्य शब्द करने लगे, भीष्म घटोत्कचका भयंकर शब्द औ दिग्गजोंका युद्ध देखके पुनः आचार्य्यसे बोले, हे भारद्वाज! इस समय घटोत्कचसे युद्ध करनी कर्तव्य नहीं है, वह दुरात्मा महाबल पराक्रान्त है, औ इस समय सहायसंपन्न है, इस काल इन्द्रभी उसको पराजय कर सकेंगे नहीं, हिडिंबातनय लब्ध पर शर प्रहार करता है, हम लोग श्रांतवाहन औ पाण्डव औ पांचालोंके शरोंसे क्षतविक्षत हो गए हैं इस समय जयशील पाण्डवोंसे युद्ध करना नहीं चहिये, आज अब अवहार करनाही उचित है, काल संग्राम होगा, घटोत्कचसे मर्दित वीरगण भीष्मका वाक्य सुनके युद्ध समाप्त करके प्रस्थान करने लगे, इस प्रकार कौरव पक्षीय युद्धसे निवृत्त हुए, तब जयशील पाण्डवगण शंखध्वनि औ गर्जन करने लगे, कौरवगण पाण्डवोंसे पराजित होय अतिशय लज्जित होय

स्व स्व शिविरमे प्रस्थान करने लगे,पाण्डवगण हर्षसे भीमसेन औ घटोत्कचकी प्रशंसा औ वाद्यध्वनि करते हुए, स्व स्व शिविरमें गमन करने लगे, दुर्य्योधन भ्रातृवधजनित शोकसे अश्रुपूर्ण नयन होय शिविरमे चिन्तासे कालयापन करने लगे।

इति ६४ अध्याय।

धृ०। देवताओंसे दुष्कर कार्यकर्ता पाण्डवगणका कार्य सुनके हमारे हृदयमे भय औ आश्चर्य उत्पन्न होता है, पुत्रोंके पराभवसे बलवती चिन्ता होती है, जो जो विदुरने कहा सो सो दृष्ट होता है, पाण्डवगण भीष्मादि वीरोंसे युद्ध करकेभी अक्षय बने हैं, उनका जय हम सहन नही कर सकते, जाना दोनो पक्ष तुल्य रहतेभी हमारे पुत्रोंही पर बड़ी विपद उपस्थित है, इसका कारण क्या सो कहो।

सं० पाण्डव गण धर्मसे पराक्रम प्रकाश पूर्वक युद्ध करते हैं, किसी मन्त्रकृत अनुष्ठान वा माया करते नही, जीविकाभी धर्म युक्तही करते हैं, पाण्डव श्रीसंपन्न औ महाबली हैं, वह समरसे कदापि निवृत्त होंगे नही, हे राजन्! जहां धर्म वहां जय, इस लिये उनका बध कोई कर सकता नही, प्रत्युत वही जययुक्त होंगे, आपके पुत्र सतत पापकर्मनिरत, दुरात्मा, निष्ठुर औ नीचकर्मा है इसीसे युद्ध जय लाभ कर सकते नही, आपके पुत्रोंने वारंवार उनके साथ दुराचरण किया है, उन्होने वह सहन कर लिया, हे महाराज! उसी पापानुष्ठानका यह सब फल उपस्थित हुआ है, आप अब पुत्र औ बांधवोंके साथ उसका भोग कीजिये, विदुर, भीष्म औ द्रोण प्रभृतिने वारंवार निवारण किया, परंतु आपने स्वीकार नही किया, अब पाण्डव जिस कारणसे जय लाभ करते हैं वहभी सुनिये, एक दिन दुर्योधनने भ्रातृगणको रणस्थलमे पराजित देखके भीष्मसे पूछा,

करने लगे, अनन्तर भूरिश्रवाको देखके उनको आक्रमण करने लगे, भूरिश्रवा क्रोधसे वज्रतुल्य बाणोंसे सात्यकीको बिद्ध करने लगे, सात्यकीके अनुयायी भुरिश्रवाके शरोंसे पीड़ित हो सात्यकीको छोड़के पलायन करने लगे, तब सात्यकीय दश पुत्र भूरिश्रवा पर धावमान हुए, तब उनका औ भुरिश्रवाका तुमुल संग्राम होने लगा, भूरिश्रवाने उनके शर निवारण करके उन दशोंके धनु छेदन पूर्वक उनका संहार किया, वह सब वज्रभग्न वृक्षके समान निपतित हो गए, तब सात्यकी पुत्रोंको निहत देखके क्रोधसे भूरिश्रवाके ऊपर धावमान हुए, दोनो रथसे रथ भग्न औ अश्व सब नष्ट करने लगे, तदुत्तर दोनो विरथ होके खड्ग ग्रहण पूर्वक युद्ध करने लगे, इतनेमे भीमसेनने सात्यकीके रथपर लेलिया, दुर्योधनने भूरिश्रवाकोभी अपने रथपर लेलिया अनंतर पाण्डव क्रुद्ध होके भीष्मसे युद्ध करने लगे, तब भगवान् मरीचिमालीभी अस्तोमुख हो गए, अर्जुनने पंचविंशति सहस्र महारथोंका नाश किया, तब भीष्मने सायंकाल देखके अवहार किया, योद्धागण स्व स्व स्थानमे गमन करने लगे।

इति ७४ अध्याय।

अनंतर प्रभात होतेही पुनः दोनो पक्ष युद्धार्थ निर्गत हुए, युधिष्ठिरने मकरव्यूह रचना किया उसमे वीरगण यथास्थानमे निवेशित हुए, भीष्मने क्रौञ्चव्यूह निर्माण करके वीरोंको यथा-स्थानमे निवेशित कर दिया, तब दोनो पक्षसे युद्ध आरंभ हुआ, रथि, गज, अश्व औ पदाति परस्पर प्रहार करने लगे, भीमसेन द्रोणाचार्यके ऊपर धावमान हुए, द्रोणने भीमसेनके ऊपर नव बाण निक्षेप किये, भीमसेनने उससे पीड़ित होय क्रोधसे द्रोणके सारथिका संहार किया, तब द्रोण स्वयं अश्व रश्मि धारण करके पाण्डवसैन्य नष्ट करने लगे, सृञ्जय औ कैकय

भीष्म औ द्रोणसे ताड़ित होय पलायन करने लगे, कौरवसैन्य भी भीम औ अर्जुनसे विक्षत होय विमोहित होने लगे, इस प्रकार उभय पक्षीयसैन्य छिन्न भिन्न होकेभी घोरतर संग्राम करने लगा।

इति ७५ अध्याय।

धृ०। हमारा सैन्यभी बहुत औ व्यूहभी यथाशास्त्र, योद्धागणभी प्रगल्भ औ दृढ़ विक्रम, न अतिवृद्ध, न अतिबालक, सर्वशस्त्रास्त्र विशारद, लघुहस्त, सुशिक्षित, निपुन, कुलीन, यशस्वी औ विख्यात है, तथापि पांडवोंसे निहत होते हैं, इससे केवल जन्मांतरीण अदृष्टही कारण है, हे संजय! इस काल हमारा सबही विषय विपरीत होता है, विदुरने यह विपद्‌की कथा कहा था, दुरात्मा दुर्योधनने वह ग्रहण नहीं किया, पहिले उन्होंने जो जाना सो कहा, अब वह सब घटित होता है, विधाताने जो रचना किया है वह कदापि अन्यथा न होगा।

इति ७६ अध्याय।

सं०। आप अपनेही दोषसे इस महाविपदमें निपतित हुए हैं, आप जो धर्मसङ्कर जानते थे, सो दुर्योधन जान सकता नहीं, पहिले आपके दोषसे द्यूत क्रीड़ा हुई थी उसी दोषसे संग्राम उपस्थित हुआ है, अब अपने पापका फल भोगिये, जो होय अब युद्धवृत्तांत सुनिये, महाबल भीमसेन निशित शरोंसे [illegible]रक्षित सैन्यका भेद करके प्रविष्ट होय दुःशासन, दुर्वि[illegible], दुःसह, दुर्मद, जय, जयत्सेन प्रभृति आपके पुत्रोंको देखके उनके ऊपर धावमान हुए, दुःशासनादि वीरगण भीमसेनको देखके आपुसमें कहने लगे, हे भ्रातृगण! हम लोग सबही

उनका संहार करे, ऐसा स्थिर करके चतुर्दिक्से उनको अवरुद्ध करने लगे, भीमसेन उन दुर्योधनके भ्रातृगणको लक्ष्य करके कौरवोंके प्रधान२ वीरोंका संहार करने लगे, तदुत्तर गदा लेके सकल वीरोंका संहार करने लगे, धृष्टद्युम्न द्रोणको छोड़के शकुनिके संमुख हुए औ महतीसेना संहार करके भीमसेनके शून्य रथके पास आयके दुःखित चित्तसे दीर्घनिश्वास त्याग पूर्वक सारथि विशोकसे पूछने लगे, हे सारथे! हमारे प्राणप्रिय भीमसेन कहां है? तब सारथि बोला, हे महात्मन्! महाबाहु भीमसेन हमको इहां रखके एकाकी कौरवसैन्यमें प्रविष्ट हुए हैं, जानेके समय हमसे कह गए, कि तुम अश्वोंको स्थगित करके क्षणकाल इहांही रहो औ हमारे आगमनकी प्रतीक्षा करो, कौरव हमको निहत करने चाहते हैं, हम मुहूर्त्त मात्र उनका संहार करते हैं, इतना कहके गदा लेके धावमान हुए हैं, भीमसेन औ हम एकत्र युद्ध करते थे, उनको छोड़के हम जायगे तो क्षत्रिय हमको क्या कहेंगे औ उनके विना हमको जीव रखने का क्या प्रयोजन है, इस लिये वह जहां है वही हम जाते हैं।

हे महाराज! धृष्टद्युम्न यह कहके गदासे प्रमथित गज यूथमें चरणके चिह्नसे भीमसेनके पास गमन करने लगे, जायके देखा कि भीमसेन शत्रु सैन्यका नाश करके भूपालोंको वृक्षके समान भग्न कर रहे हैं, रथी, अश्वारोही, पदाति औ हस्ती भीमसेनके गदाघातसे नितांत व्यथित होय आर्त्तनाद कर रहे हैं, तब कौरव वीर चतुर्दिक्से भीमसेनके ऊपर शर-वर्षण करते हैं, महावीर धृष्टद्युम्न स्वीय सेनाको आश्वासित करके उनके पास जाय उनको स्वीय रथपर लेके सभोंके समक्ष आलिंगन करने लगे, तब दुर्योधनने पुनः भ्रातृगणसे कहा, देखो धृष्टद्युम्न भीमसेनके निकट आए हैं चलो सब उनका संहार करें, यह कहके द्रुपदतनयके ऊपर धावमान हुए,

तब धृष्टद्युम्नने संमोहनास्त्रसे धार्तराष्ट्रोंको हतबुद्धि औ विमोहित करने लगे, अन्यान्य कौरवगण उनको हतबुद्धि देखके पलायन करने लगे, द्रोणाचार्यने शरजालसे द्रुपदको व्यथित औ पलायित करके धार्तराष्ट्रोंको संमोहित जानके उनके पास आय के प्रज्ञास्त्रसे उनका मोह दूर कर दिया, धार्तराष्ट्र संज्ञा लाभ करके पुनः भीमसेन औ धृष्टद्युम्नसे युद्ध करने लगे ।

तब युधिष्ठिरने सैन्यको आह्वान करके कहा कि तुम लोग शीघ्र भीमसेन औ धृष्टद्युम्नके पास जाओ, सौभद्रप्रमुख द्वादश वीर उनका समाचार ले आओ, भीमसेन औ धृष्टद्युम्नका समाचार जानने विना हमारा हृदय स्थिर नहीं है, ऐसी उनकी आज्ञा होतेही द्रौपदेय पांच, कैकय पांच, धृष्टकेतु औ अभिमन्यु ऐसे द्वादश वीर महती सेना लेके सूचीमुख व्यूह निर्माण पूर्वक कौरवसैन्य भेद करते हुए गमन करने लगे, तब भीमसेनके गदासे ताड़ित औ धृष्टद्युम्नके संमोनास्त्रसे जर्जरित शत्रुगण इन के शराघातसे स्त्रीके समान मूर्छित होने लगे, अभिमन्यु प्रभृति गमन करके उन दोनोंको शत्रु संहार करते देखके आह्लादित हुए, इतनेमें द्रोणाचार्यको आगमन करते देखके धृष्टद्युम्न भीमसेन को कैकयके रथ पर आरोपित करके सहसा द्रोणाभिमुख धावमान हुए, द्रोणाचार्य उनको आगत देखके भल्लसे उनका चाप छेदन कर दिया औ शतर शरसे उनको आच्छादित कर दिया, धृष्टद्युम्नने शीघ्र अन्य शरासन लेके सप्तति शरसे द्रोणको विद्ध किया, तब द्रोणाचार्यने पुनः उनका धनु छेदन करके चार बाणोंसे चार अश्व औ भल्लसे सारथिका नाश किया, धृष्टद्युम्न शीघ्र अभिमन्यु के रथ पर आरूढ़ हो गए, उस समय पांडवसैन्य द्रोणके शरसे कम्पित होने लगा, कौरवगण द्रोणकी प्रशंसा करने लगे ।

इति ७७ अध्याय ।

अनंतर दुर्योधन मोहविमुक्त होके भीमसेन पर सायक वर्षण करने लगे, धार्तराष्ट्रगण भीमसेन पर चतुर्दिक्से शर वर्षण करने लगे, भीमसेन सम्राट् दुर्योधनको नाराचोंसे बिद्ध करने लगे, दुर्योधनभी उनके मर्म पर आघात करने लगे, तब युधिष्ठिर प्रेरित द्वादश वीर धार्तराष्ट्रोंको ताड़ित करने लगे, धार्तराष्ट्रगण व्यथित होय प्राण लेके पलायन करने लगे ।

इति ७८ अध्याय ।

अभिमन्यु भीमसेन औ धृष्टद्युम्नके साथ उनके पीछे लगके ताड़न करने लगे, तब दुर्योधन उनके संमुख हुए, इतनेमें अपराह्ण काल होगया, तब अभिमन्युने विकर्णके अश्व सब नष्ट करके उनके ऊपर पंचविंशति क्षुद्रक निक्षिप्त किये, तब विकर्ण चित्रसेनके रथ पर आरूढ़ हो गए, तब अभिमन्यु ने दोनोको शरजालसे आच्छादित कर दिया, तब दुर्जय औ विकर्णने अर्जुन कुमारको पांचर बाणोंसे बिद्ध किया, इधर दुःशासन कैकयदेशीय पञ्चभ्राताओंके साथ अद्भुत युद्ध करने लगे, पांचो द्रौपदेयोंने दुर्योधनके ऊपर तीनर बाण क्षेप किये, दुर्योधननेभी प्रत्येकको शरोंसे बिद्ध किया, महावीर भीष्म पाण्डवसैन्यका ताड़ित करने लगे, उसी समय दक्षिण दिक्के सैन्यमेंसे अर्जुनके गाण्डीवका भयङ्कर शब्द होने लगा, उस संग्राममें कौरव औ पाण्डवोंके सेनामें सहस्रर कबन्ध उत्थित हुए, हस्ती, अश्व, रथी औ पदातिके देहोंसे रणभूमि विकीर्ण हो गई, दोनो पक्षके एकभी योद्धा परांमुख न हुए, जय औ यशके अभिलाषसे घोर संग्राम करने लगे ।

इति ७९ अध्याय ।

अनन्तर भास्कर लोहित वर्ण हुए, तब दुर्योधन भीमसेनके वधाभिलाषसे उनके ऊपर धावमान हुए, तब भीमसेन प्रधान शत्रु दुर्योधनको आगत देखके बोले, हे गांधारीतनय! हम बहुत दिनसे समय देखते थे, वह समय आज आया है, यदि युद्धसे पलायन न करोगे तो अवश्य तुम्हारा संहार करेंगे औ वनबास औ द्रौपदीको यन्त्रणा शांत करेंगे, जो जो तुमने अत्याचार किया है उन सभोंका प्रतीकार होगा, यह कहके आकर्ण धनुराकर्षण करके भयङ्कर षट्‌त्रिंशत् बाण निक्षेप किये, तदुत्तर दो बाणसे उनका धनु छेदन करके दोर शरोंसे सारथि, अश्व औ छत्र छेदन कर दिया, तदुत्तर हंस करके दो शर निक्षेप किये, तब जयद्रथ उनके पास आए, इतनेमे कृपाचार्यने दुर्योधनको अपने रथ पर आरोपित करके अवस्थान करने लगे, दुर्योधन भीमसेनके शरसे पीड़ित होय तूष्णींभूत हो रहे, तब जयद्रथ असंख्य सैन्य लेके भीमसेनके संहारके लिये उनको अवरोध करने लगे, तब धृष्टकेतु, अभिमन्यु, पांच कैकय औ पांच द्रौपदेय जयद्रथसे घोर युद्ध करने लगे, धृतराष्ट्र पुत्र सब अभिमन्युके ऊपर शर वर्षण करने लगे, अभिमन्यु उनको शर-जालसे कम्पित करने लगे, औ विकर्णके रथ पर पञ्चविंशति भल्ल निक्षेप किये, उससे उनके ध्वज, सारथि औ अश्व नष्ट हो गए, विकर्णके अन्य भ्राता उनको व्रत विक्षत देखके अभि-मन्युके ऊपर धावमान हो गए, तब उनका घोर संग्राम होने लगा, तब दुर्मुखने श्रुतकर्माके अश्व, सारथि औ धनु छेदन किया, तब श्रुतकर्माने उसी रथ परसे दुर्मुखके ऊपर महाशक्ति निक्षेप किया, वह शक्ति दुर्मुखका मर्मभेद औ देह विदारण करके भूतलमे प्रविष्ट हुई, तब सुतसोमने श्रुतकर्माको अपने रथ पर ले लिया, श्रुतकीर्ति जयत्सेनके ऊपर धावमान हुए, जयत्सेनने उनका धनु छेदन कर दिया, तब शतानीक जयत्सेन

पर धावित होय उनके हृदयको बिद्ध करने लगे, तब दुष्कर्ण शतानीकके संमुख हुए, औ उनका धनु छेदन करके गर्जन करने लगे, तब शतानीकने अन्य धनु लेके तिष्ठ२ कहके उनके भ्राताओंके समक्ष उनके अश्व, सारथि औ धनु छेदन करके एक तीक्ष्ण बाणसे उनका हृदय बिद्ध किया, दुष्कर्ण शतानीकके बाणसे दृढ़ बिद्ध होय प्राणत्याग पूर्वक छिन्न वृक्षके समान रथसे भूतलमे गिरे।

हे महाराज! दुर्मुख, दुर्जय, दुर्मर्षण, शत्रुञ्जय औ शत्रुसह यह आपके पांच पुत्र दुष्कर्णको मृत देखके शतानीकके ऊपर धावमान हो गए, तब कैकयदेशीय पञ्च भ्राता उन पांचोंके ऊपर धावमान हुए, तब उनका यमराष्ट्र विवर्द्धन युद्ध होने लगा, रथोंसे रथोंका औ गजोंसे गजोंका संघर्ष होने लगा, इतनेमे सूर्य अस्ताचलको गए, रथी औ अश्वारोही छिन्न भिन्न हो गए, तब भीष्मने स्वीय सैन्यका अवहार किया, इधर धर्मराज धृष्टद्युम्न औ भीमसेनको देखके मस्तकाघ्राण पूर्वक हृष्टचित्तसे शिविरमे गमन करने लगे।

इति ८० अध्याय।

हे महाराज! शोणितलिप्त कलेवर दुर्योधन पितामहसे पूछने लगे, हे पितामह! पाण्डवपक्षीय रथी सब हमारा भयङ्कर सैन्य नष्ट करके कीर्त्ति लाभ करते हैं, हम दुर्भेद्य मकर व्यूहमे प्रवेश करकेभी भीमसेनके कालदण्ड तुल्य शरोंसे व्यथित औ उनको क्रुद्ध देखके भीत होते हैं, केवल आपके कृपासे जयलाभकी इच्छा करते हैं।

भीष्म बोले, राजन्! हम परम यत्नसे तुम्हारे जयकी चेष्टा करते हैं, जो अतिशयित महाबल पराक्रांत हैं उनसे तुमने शत्रुता किया है, उनका जय करे ऐसा कोई नही हैं, तथापि

हम अपने साध्य यत्न करनेमे त्रुटि नही करेंगे, प्राणपणसे तु-म्हारा कार्य्य साधन करेंगे, दुर्योधन यह सुनके दूसरे दिन प्रातः काल युद्धार्थ सज्ज हुए, रथ, गज, अश्व औ पदाति विचित्र कवच औ अस्त्र धारण करके युद्धार्थ निर्गत हुए।

इति ८१ अध्याय।

अनन्तर भीष्म दुर्योधनको चिन्ताक्रांत देखके पुनः आह्लाद जनक वाक्य बोले, हे राजन्! हम द्रोण, कृप अश्वत्थामा औ कृतवर्मा प्रभृति सबही वीर जीविताशा त्याग करके तुम्हारे लिये युद्ध करते हैं औ करेंगे, इन्द्रादि देवगणभी वासुदेव सहाय पाण्डवोंको पराजय कर सकते नही, तथापि तुम्हारे वाक्यकी रक्षा करेंगे, पाण्डव हमारा जय करें वा हम पाण्डवका जय करेंगे, यह कहके विशल्यकरणी औषधिसे दुर्योधनका शल्य दूर करके असंख्य सैन्य परिवृत होय मण्डल व्यूह रचना करके प्रत्येक हस्तीके प्रति सात२ रथ, प्रत्येक रथके प्रति सात२ अश्व प्रत्येक अश्वके प्रति दश दश धनुर्द्धर औ प्रत्येक धनुर्द्धरके प्रति सात२ पदाति नियुक्त किये, इस प्रकार व्यूह रचना करके दश दश सहस्र अश्व, हस्ती, रथ औ चित्रसेन प्रभृति वीरोंसे रक्षित होय अवस्थान करने लगे, शङ्ख भेरी प्रभृति वाद्य वादन करते पश्चिमाभिमुख गमन करने लगे।

इधर युधिष्ठिरने वज्रव्यूह रचना करके वीरोंका यथास्थानमे निवेशन पूर्वक सिंहनाद करने लगे, परस्पर संमुख होय द्रोणा-चार्य मत्स्यके ऊपर, अश्वत्थामा शिखण्डीके, दुर्योधन द्रुपदके, नकुल औ सहदेव शल्यके ऊपर, विन्दानुविन्द इरावान्के ऊपर धावमान हुए, अन्यान्य भूपाल अर्जुनके ऊपर औ भीमसेन हार्दिक्यके ऊपर धावमान हुए, अभिमन्यु चित्रसेन, विकर्ण औ दुर्मर्षणसे युद्ध करने लगे, घटोत्कच भगदत्तसे युद्ध करने लगे,

राक्षस अलंवुष सात्यकीसे युद्ध करने लगे, इसप्रकार युद्ध आरंभ हुआ, तब अर्जुन कृष्णसे बोले, यह देख असंख्य वीर हमसे युद्ध करनेको आगत हुए हैं, आज जो जो हमसे युद्ध करेगा उस उसका संहार करेंगे, यह कहके हृष्टचित्तसे अनवरत शरनिकर वर्षा करने लगे, शत्रुगणनेभी मेघके तुल्य शरधारासे कृष्ण औ अर्जुनको आच्छादित कर दिया; तब अर्जुनने ऐन्द्रास्त्रसे वह शर सब निराकृत करके प्रत्येकको तीन शरसे विद्ध कर दिया, वह सब शरोंसे छिन्नकलेवर होके भीष्मके समीप पलायन कर गए, भीष्म उनके रक्षामें प्रवृत्त हुए, इतनेमें पाण्डवगण उनके सैन्यमें प्रविष्ट हो छिन्नभिन्न करने लगे, सब कौरवसैन्य समुद्रके समान क्षुभित हो गया ।

इति ८२ अध्याय ।

हे नरनाथ ! अनंतर भीष्म अर्जुनके संमुख हुए, तब दुर्यो-धन सुशर्मासे बोले, हे महात्मन् ! पितामह अर्जुन प्राणपणसे युद्धमें प्रवृत्त हैं, तुम लोग उनकी रक्षा करो, तब भूपालगण सब भीष्मके निकट उपस्थित हुए, अर्जुनभी भीष्मको आगत देखके उसके संमुख होने लगे, सैन्यगण उनको देखके आर्त्तनाद करने लगे ।

द्रोणाचार्य्यने एक शरसे विराटको विद्ध करके उनका धनुश्छेदन कर दिया, विराटने अन्य चाप लेके शरजालसे द्रोणके अश्व औ सारथिको विद्ध करके उनका धनु छेदन कर दिया, तब द्रोणाचार्य्यने क्रोधसे विराटके अश्व औ सारथिका नाश किया, वीराट शीघ्र शंखके रथ पर आरूढ़ होय पिता पुत्र दोनोंने द्रोणको निवृत्त कर दिया, तब द्रोणाचार्य्यने अतिशय क्रुद्ध होके शंखके हृदयमें एक तीक्ष्णशर निक्षेप किया, शंख उस शरके आघातसे अति निपीड़ित हो धनुर्बाण त्यागपूर्वक रथसे निपतित

हुए, तब विराट स्वपुत्रको निहत देखके भयसे पलायित होगए, तब द्रोणाचार्य असंख्य सैन्यको निवारण करने लगे, शिखंडीने तीनवाणसे अश्वत्थामाका ललाटदेश बिद्ध किया, अश्वत्थामाने शरजालसे उनके सारथि औ अश्व नष्ट कर दिये, तब शिखंडी रथसे उतरके खड्गचर्म धारण करके धावमान हुए, उनके भ्रमणसे अश्वत्थामा प्रहार न कर सके, अनंतर अश्वत्थामाने बहुसहस्र बाण उनके ऊपर प्रक्षिप्त किये, शिखंडीने तीक्ष्ण खड्गसे वह सब शर खण्ड खण्ड कर दिये, तब अश्वत्थामाने तीक्ष्णशरोंसे शिखंडीका खड्ग औ चर्म खंड खंड कर दिया, तब शिखण्डीने वह भग्नखड्गही अश्वत्थामाके ऊपर निक्षेप किया, अश्वत्थामाने उसकोभी खंडर कर दिया, तब शिखंडी सात्यकीके रथपर आरूढ़ हो गए, सात्यकीने शरोंसे अलंबुषको बिद्ध किया, अलंबुषने राक्षसीमाया करके सात्यकीके शरजालसे आच्छन्न कर दिया, सात्यकीने ऐन्द्रास्त्रसे राक्षसीमाया दूर करके शरजालसे अलंबुषको आच्छन्न कर दिया, अलंबुष शराघातसे अत्यंत पीड़ित हो पलायमान हो गया, सात्यकी राक्षसका पराजय करके सिंहनाद करने लगे, कौरवसैन्यभी भयसे पलायन करने लगा, उसी समय धृष्टद्युम्नने दुर्य्योधनको शरोंसे आच्छन्न कर दिया, तब दुर्योधनने नवति शरसे धृष्टद्युम्नको बिद्ध किया, धृष्टद्युम्नने क्रोधसे दुर्योधनके धनु, अश्व औ सारथिको नष्ट कर दिया, तब दुर्योधन रथसे उतरके खड्ग लेके पादचारसे धावमान हुए इतनेमें शकुनिने उनको अपने रथ पर ले लिया, धृष्टद्युम्न दुर्योधनका पराजय करके सैन्यविध्वंस करने लगे, कृतवर्माने भीमसेनको आच्छन्न कर दिया, भीमसेनने उनके अश्व, सारथि औ धनु नष्ट कर दिया, तब कृतवर्मा शीघ्र वृषभके रथपर आरूढ़ हो गए, तब भीमसेन सैना संहार करने लगे।

इति ८२ अध्याय।

धृ०। तुम जब तब पाण्डवहीका हर्ष कहते हो, इससे हमने जाना अदृष्टही बलवत्तर है।

सं०। आपके पचीय वीरगण पौरुष औ पराक्रमसे युद्ध करते हैं, परंतु पाण्डवोंके आगे वह सब व्यर्थ हो जाता है, उन वीरों पर आप दोषारोप मत कीजिये, अपने औ पुत्रोंके अपराधहीसे यह यमराज्य-विवर्द्धन औ वसुन्धराका क्षय होता है, आपके अपराधहीका फल है तब शोक करना व्यर्थ है, स्वर्गलाभके इच्छासे वह लोग युद्ध करते हैं, अब पूर्वाह्णमे जो युद्ध हुआ सो सुनो, विन्दानुविन्द इरावान्के ऊपर धावमान हुए, परस्पर विद्ध करने लगे, इरावानने अनुविन्दके चारो अश्व औ धनुश्छेदन कर दिया, अनुविन्द विन्दके रथपर आरूढ़ हो गए, तब दोनो मिलके इरावानके ऊपर शरवर्षण करने लगे, इरावानने उनकाभी सारथि नष्ट कर दिया, तब उनके अश्व सारथि विना इतस्तत भ्रमण करने लगे, इस प्रकार इरावान् उन का पराजय करके सैन्य संहार करने लगे, घटोत्कच भगदत्तके ऊपर धावमान हुए, और उनको पाण्डवसैन्य संहार करते देख जलधाराके तुल्य शरवर्षण करने लगे, भगदत्तने वह सब शर निरास कर्के घटोत्कचके मर्मे मे प्रहार करने लगे, घटोत्कच किंचित्भी व्यथित न हुए तब भगदत्तने क्रोधसे चतुर्दश तोमर प्रक्षेप किया, घटोत्कचने खण्ड २ कर दिये, औ सप्तति शरसे उनको विद्ध किया, भगदत्तने उनके चारो अश्व नष्ट कर दिये, तब घटोत्कचने भगदत्तके गजके ऊपर एक भयंकर शक्ति निक्षेप किया, भगदत्तने उसका खण्ड कर दिया, तब घटोत्कच पलायित हो गए, तब भगदत्त पाण्डवसैन्य संहार कर्ने लगे, तदुत्तर शल्य नकुल औ सहदेवके ऊपर शरजाल प्रक्षेप करने लगे, नकुल सहदेवनेभी उनको आच्छन्न कर दिया, तब शल्यने हास्य कर्के नकुलके चारो अश्व नष्ट किये, तब नकुल सहदेवके रथ

पर आरूढ़ हो गए, तब दोनो मिलके शरजाल वर्षण करने लगे, शल्यने क्षणमें सब शर खण्ड २ कर दिये, तब सहदेवने एक तीक्ष्णबाण उनके ऊपर प्रक्षेप किया, उस बाणके आघातसे मद्रराज व्यथित औ मूर्छित हो गए, सारथिने उनको विचेतन देखके रथसे दूर किया, धार्त्तराष्ट्रोंने उनके रथको दूर जाते देखके विमनायमान हो गए, नकुल औ सहदेव शङ्खध्वनि करने लगे, औ कौरवसैन्य विध्वंस करने लगे।

इति ८४ अध्याय।

अनन्तर दिवाकर गगन मध्यवर्त्ती हुए, तब धर्मराज श्रुतायुको नव बाणसे विद्ध करने लगे, श्रुतायु उनके शरोंको निवारण करके उनका मर्म भेद करने लगे, तब राजा युधिष्ठिर नितांत क्रुद्ध हो गए, जैसे युगांतकालीन हुताशन सकल भूतको भस्म करनेके लिये प्रज्वलित होता है, तद्रूप युधिष्ठिर रोषानलसे प्रज्वलित हो उठे, उनको रोषाविष्ट देखके देवगन्धर्वादि व्यथित होने लगे औ मनमें कहने लगे, कि आज धर्मराज त्रैलोक्य दग्ध करेंगे, महर्षिगण शांति लाभार्थ स्वस्त्ययन करने लगे, धर्मराज रोषसे बारंवार ओष्ठप्रान्त लेहन करने लगे, उनकी मूर्त्ति युगांतके प्रचण्ड मार्त्तण्डके समान हो गई, कौरवोंने जीविताशा त्याग कर दिया, अनन्तर राजा युधिष्ठिरने धैर्यसे क्रोध संवरण करके श्रुतायुका धनु, सारथि औ अश्व नष्ट कर दिये, श्रुतायु युधिष्ठिरका क्रोध औ पौरुष देखके भयसे रथ परित्याग करके पलायित हो गए, दुर्योधनकी सैन्यभी श्रुतायुको पराजित देखके पलायमान हो गया, तब युधिष्ठिर व्यादितास्य कृतान्तके तुल्य सैन्य संहार करने लगे, अनन्तर चेकितानने कृपाचार्य्यको शरजालसे आच्छन्न कर दिया, कृपाचार्य्यने उनके शर निवारण करके शरसमूहसे चेकितानको विद्ध कर दिया, तदनन्तर एक

भल्लसे उनका धनु छेदन करके अन्य भल्लोंसे सारथि औ अश्वो को पातित कर दिया, तब चेकितान रथसे भूतलमे उतरके गदा लेके कृपाचार्य्यके अश्व औ सारथिको गिराय दिया, तब कृपाचार्य्यने भूतलमे उतरके षोड़श बाणसे चेकितानके मर्म भेद किया, चेकितानने वह गदा उनके ऊपर चिप्त किया, कृपाचार्य ने सहस्र बाणसे बिदारण कर दिया, चेकितान शीघ्र खड्ग लेके कृपाचार्य्यके ऊपर धावमान हुए, तब कृपाचार्यनेभी धनुर्बाण रखके खड्ग लेके उनके ऊपर धावमान हुए, दोनो असि प्रहार परस्पर आघात करने लगे, दोनो परस्पर तीव्र खड्गाघातसे मूर्छित होय भूतलमे निपतित हुए, इतनेमे चेकितानके सुहृत् करकर्षने शीघ्र चेकितानको अपने रथ पर आरोपित किया, इधर शकुनिनेभी कृपाचार्यको स्व रथ पर आरोपित कर लिया, अनन्तर धृष्टकेतुने नव बाणसे भूरिश्रवाको बिद्ध किया, भूरिश्रवा ने शरजालसे धृष्टकेतुके अश्व, सारथि औ धनु छेदन कर दिया, धृष्टकेतु शतानीकके रथ पर आरूढ़ हो गए, चित्रसेन, विकर्ण औ दुर्मर्षण अभिमन्युसे युद्ध करने लगे, अभिमन्युने उनको रथच्युत कर दिया, केवल भीमसेनकी प्रतिज्ञा स्मरण करके उन का प्राण संहार नही किया, इतनेमे भीष्म दुर्योधन प्रभृति वीरोंके रक्षाके लिये एकमात्र बालक अभिमन्युके ऊपर धावमान हुए, तब अर्जुन वासुदेवसे बोले, हे वासुदेव! जहां बहुत रथी एकत्र हुए हैं वही रथ ले चलो, तब वासुदेव रथघर्घर शब्द कर्ते उधिरही धावमान हुए, अर्जुनको गमन कर्ते देखके कौरव सैन्य कोलाहल करने लगा, महावीर अर्जुन भीष्मके रक्षक क्षितिपालोंके पास जाय सुशर्मासे बोले, हे सुशर्मा! तुम हमारा पूर्ववैरी हो आज श्रेष्ठपदवीमे आरूढ़ हुए हो, आज तुम्हारे दुर्नीतिका फल तुमको दिखावते हैं, तब सुशर्मा कुछभी न बोले, औ दुर्योधनादि वीरोंसे बेष्टित होय चारो दिशासे अर्जु-

नके ऊपर शरवर्षण करने लगे, तब उनको शोणितमय घोरतर युद्ध होने लगा।

इति ८५ अध्याय।

महावीर अर्जुन शरोंसे चतविचत होके क्रोधसे एक एक बाणसे रथियोंके धनु छेदन करने लगे, औ उनको निःशेष करनेके लिये विद्ध करने लगे, वह सब सर्वांगमें चतविचत, छिन्नभिन्न वर्म औ रुधिरलिप्त होके एककालमें धराशायी हुए, त्रिगर्तराज सुशर्मा उनको निहत देखके पराङ्मुख होगए, तब उनके पृष्ठरचक द्वात्रिंशत् वीरगण अर्जुनको वेष्टन करके प्रहार करने लगे, देवगण जैसे असुरोंके अस्त्रसे विद्ध हुए थे वैसे पाण्डवगण कृप, शल्य, शल औ चित्रसेनके शरोंसे विद्ध होय अतिशय क्रुद्ध होय, राजा युधिष्ठिर भीष्मके शरसे छिन्नकार्मुक शिखंडीको देखके क्रोधसे कहने लगे, हे वीर! तुमने अपने पिताके आगे प्रतिज्ञा किया है कि हम निश्चय भीष्मका बध करेंगे, सो प्रतिज्ञा सफल क्यों नहीं करते हो, उनका बध करके स्वीय प्रतिज्ञा, धर्म, कुल औ यशकी रचा करो, हमारा सैन्य भीष्मके शरसे संतप्त हो रहा है, छिन्नधनु औ बंधुबांधवोंको त्याग करके कहां जाते हो, बोध होता है कि तुम भीत हुए हो, सो तुमको अकर्तव्य है, अर्जुनसे मिलित औ पृथिवीमें ख्यात होके भीष्मसे भीत होते हो, शिखंडी धर्मराजका कठोर वाक्य सुनके क्रोधसे भीष्मके बधमें यत्नवान् हुए, तब शल्य शिखंडीको भीष्मबधार्थ धावमान देखके महारथिसे निवारण करने लगे, तब शिखंडीने उनका अस्त्र निवारण करके वारुणास्त्र प्रयोग किया, इतनेमें भीष्म युधिष्ठिरका धनु औ ध्वजछेदन करके सिंहनाद करने लगे, भीमसेन युधिष्ठिरको भीत देखकर धनुर्बाण त्याग करके गदा लेके पादचारसे जयद्रथके

ऊपर धावमान हुए, जयद्रथ भीमसेनको गदा लेके आवते देखके शत बाणसे उनका पार्श्वभाग बिद्ध किया, भीमसेनने उन शरों-पर लक्ष न करके गदासे उनके अश्व संहार किये, इतनेमें चित्रसेन भीमसेनको निवारण करनेके लिये आगत हुए, भीम-सेन तब उनहीके ऊपर धावमान हुए, तब कौरवगण चित्रसे-नको छोड़के पलायन करने लगे, चित्रसेन गदापातके पहि-लेही असिचर्म लेके रथसे भूतल अवतीर्ण हुए, भीमसेनके गदासे चित्रसेनका रथ, सारथी औ अश्व चूर्ण होगए ।

इति ८६ अध्याय ।

इतनेमें विकर्णने चित्रसेनको अपने रथपर लेलिया, उसी तुमुल संग्राममें भीष्म जब युधिष्ठिर पर धावमान हुए तब सृञ्जय गण कम्पित होने लगे, युधिष्ठिर नकुल औ सहदेवके साथ भीष्मके अभिमुख हुए, औ भीष्मको शरोंसे आच्छादित करने लगे, भीष्म उनके वाणोंको सहके असंख्यवाण प्रक्षेप करने लगे, उनके बाणोंसे युधिष्ठिर अदृश्य होगए, तब युधिष्ठिरने भीष्मके ऊपर एक नाराच निक्षेप किया, भीष्मने अर्द्धपथहीमें छेदन कर दिया औ युधिष्ठिरके अश्व नष्ट कर दिये, तब युधिष्ठिर नकुलके रथपर आरूढ़ होगए, तब भीष्म माद्री-पुत्रोंको आच्छन्न करने लगे, तब युधिष्ठिर भ्रातृद्वयको भीष्मके शरोंसे पीड़ित देखके भीष्मके बधकी चिंता करते हुए भूपा-लोंको भीष्म विनाशकी आज्ञा करने लगे, भूपालगण युधिष्ठिरके आज्ञासे रथ समूहसे उनको बेष्टन करके शरवर्षण करने लगे, भीष्म उन वीरोंको निपातित करते हुए संचरण करने लगे, युधिष्ठिर उन वीरोंको भीष्मशरसे संत्रस्त देखके अतिशय भीत हुए, सैन्य सब छिन्न होने लगा, वीरोंके मस्तक पक्क तालफलके समान निपतित होने लगे, सेनाका परस्पर मेलन औ व्यूह

छिन्न भिन्न होगया तब एक एकको आह्वान करके संग्राम करने लगे, शिखंडी भीष्मको लक्ष्य करके तिष्ठ तिष्ठ कहके धावमान हुए,भीष्म शिखंडीका पूर्वमे स्त्रीत्व स्मरण करके उनको छोड़के सृंजयोके ऊपर धावमान हुए, सृंजय उनको आगत देखके सिंहनाद करने लगे, तब भगवान् पश्चिमदिशावलंबी हुए, उभय पक्षका घोर संग्राम होने लगा धृष्टद्युम्न औ सात्यकी शक्ति तोमरादि शस्त्रोंसे कौरवसेना नाश करने लगे, सैन्य सब आर्तनाद करने लगा, तब विन्दानुविन्द सैन्यका आर्तनाद श्रवण करके धृष्टद्युम्नके संमुख होय उनके अश्वोंका नाश करके उनको आच्छादित कर दिया, तब धृष्टद्युम्न सात्यकीके रथपर आरूढ़ हुए, तब युधिष्ठिर महतीसेना लेके विन्दानुविंदके ऊपर धावमान हुए।

इधर महावीर धनञ्जय क्रोधसे क्षत्रियोंका संहार करने लगे, द्रोणाचार्यभी पाण्डवसैन्य संहार करने लगे, दुर्य्योधन प्रभृति भीष्मके साथ पाण्डवोंसे युद्ध करने लगे, इतनेमे भास्कर अस्तावलम्बी हुए, दुर्य्योधन कौरवोंका त्वरा करने लगे, सैन्य सब असाधारण बलसे युद्धमे दुष्कर कार्य करने लगे, उससे रुधिरनदी प्रवाहित होने लगी, शिवा सब उसके तीरमे भयंकर शब्द करने लगे, समरांगण भीषण हो गया, धनञ्जय सुशर्मा प्रभृति सैन्यको औ भीमसेन दुर्योधन प्रभृति वीरोंका पराजय करके शिविरके अभिमुख गमन करने लगे, धर्मराज सब वीरोंको साथ लेके शिविरमे गमन करने लगे, दुर्योधन भीष्म प्रभृति वीरोंके साथ शिविरमे गमन करने लगे, स्व स्व शिविरमे जायके परस्पर सम्मान पूर्वक स्नानादि क्रिया करके ब्राह्मणोंसे स्वस्त्ययन करके आमोदसे दिव्यौषधिसे शल्योद्धार करके रात्रि अतिवाहित करने लगे।

इति ८७ अध्याय।

हे नरनाथ ! इस प्रकार उभयपक्षीय वीरपुरुष रात्रि व्यतीत करके प्रातःकाल पुनः युद्धार्थ निर्गत हुए, दोनोपक्षीय व्यूहरचना करके यथास्थानमे निविष्ट होय परस्पर अवलोकन पूर्वक मनमे युद्धकी कल्पना करते हुए आह्वान करके संग्राममे प्रवृत्त हुए, अनेकविध शस्त्रास्त्र प्रहार होने लगे, गदा सब चतुर्दिक् निपतित होने लगी, चर्म खड्ग मेघ औ विद्युत् के समान चमकने लगी, वाणोंकी वृष्टि होने लगी, रथ गजारोही, अश्वारोही औ पदाति परस्पर मिलित होय, घोरसंग्राम करने लगे ।

इति ८८ अध्याय ।

हे महाराज ! महारथ भीष्मको संग्राममे पाण्डव पक्षीय देखनेमे असमर्थ होने लगे, युधिष्ठिरके आज्ञासे सबकाल वीर सब भीष्मके ऊपर शरवर्षण करने लगे, परंतु भीष्मके शरोसे निपतित होने लगे, भीष्मने शत्रुओंके मस्तक औ देहोंको निपातित करके पर्वत समान राशि कर दिया, उस समय भीम-सेन भिन्न कोई पराक्रम कर सका नही, वह महावीर भीष्मको आक्रमण करके प्रहार करने लगे, इस प्रकार भीमसेन औ भीष्मका संग्राम होने लगा, तब दोनो सैन्यमे कोलाहल होने लगा, दुर्योधन प्रभृति भीष्मकी रक्षा करने लगे, तब भीमसेन ने भीष्मके सारथिका संहार किया, भीष्मके अश्व सारथि विना इतस्ततः धावमान होने लगे, इतनेमे भीमसेनने सुनाभका मस्तकच्छेदन कर दिया, तब आदित्यकेतु, बह्वाशी, कुण्डधार महोदर, अपराजित, पण्डित, औ विशालाक्ष, यह आपके सात पुत्र भ्राता सुनाभको निहत देखके क्रोधसे एककाल भीम-सेनके ऊपर वाणवृष्टि करने लगे, तब भीमसेनने वज्रतुल्य वाण से अपराजितका मस्तकच्छेदन कर दिया, तदुत्तर भल्लसे

सर्वसैन्यके समक्ष कुण्डधारको निपातित करके पण्डितका मस्तक छेदन कर दिया, अनन्तर पूर्वक्रोध स्मरण करके विशालाक्ष का मस्तकच्छेदन करके महोदरके हृदयमें नाराच निक्षेप किया, महोदर भीमके प्रहारसे भूतलशायी होगए, तदुपरान्त आदित्य-केतुका ध्वज छेदन करके भल्लसे उनकाभी मस्तकच्छेदन करके बह्वाशीको यमालयमें भेज दिया, हे राजन् ! अन्यान्य आपके पुत्र भीमसेनकी प्रतिज्ञा सत्य जानके इधर उधर पलायन करने लगे, तब दुर्योधन भ्रातृविनाशमें अति दुःखित होय सैन्यगणसे कहने लगे, हे वीरगण ! इस दुरात्मा भीमसेनका संहार करो तब आपके पुत्रगण भीमसेनकी प्रतिज्ञा स्मरण करने लगे, हे महाराज ! सत्यवादी विदुरने जो कहा था वह अब सत्य हो रहा है, आपने लोभ औ मोहके पुत्रोंके प्रीतिसे उनका वाक्य नही माना, भीमसेनने आपके पुत्रोंका नाश करनेहीके लिये जन्म लिया है, जो होय, युद्धका वृत्तांत सुनो ।

दुर्योधन भ्रातृवधसे दुःखित होय वाष्पगद्गदस्वरसे भीष्मसे बोले, हे पितामह ! भीमसेनने संग्राममें हमारे भ्राताओंका संहार किया, हम लोग बहुत यत्नसे युद्ध करते हैं, तथापि हमाराही नाश होता है, आप उदासीन होके हमारी उपेक्षा करते हैं, हमने संग्राममें प्रवृत्त होके अत्यन्त कुकर्म किया ।

महात्मा भीष्म सुनके क्रुद्ध होय बोले, हे दुर्योधन ! हम, द्रोण, विदुर औ गांधारीने पहिलेही तुमको यह कहा था, तुमने हमलोगोंके वचनमें उपेक्षा किया, जो होय, हमने प्रति-ज्ञा किया है रण परित्याग करेंगे नही, द्रोणाचार्य्यभी रणसे क्षांत होंगे नही, परंतु हम सत्य कहते हैं, महावीर भीमसेन धृतराष्ट्रके पुत्रोंमें जिस जिसको देखेंगे उस उसका संहार करेंगे, तुम स्थिर होके दृढ़बुद्धिसे पाण्डवोंके साथ युद्ध करो,

पाण्डवोंका पराजय करना इन्द्रादि देवगणको असाध्य है।

इति ८९ अध्याय।

धृ०। भीष्म, द्रोण औ कृपने एकमात्र भीमसेनसे निहत हमारे पुत्रोंको देखके क्या किया? हमारेही पुत्र प्रतिदिन नष्ट होते हैं, उनका जय लाभ कदापि न होगा, देवही बलवत्तर है, भीष्मादि महावीरोंके मध्यमें प्रतिदिन भीमसेन हमारे पुत्रोंका नाश करता है, मूढ़ दुर्योधनने कहा न माना उसीका यह फल है।

सं०। आपहीके विदुरादिका कहना न माननेसे यह दुर्घटना होती है, अब युद्धका हत्तांत सुनो, मध्याह्नकालमें लोकक्षयकार युद्ध होने लगा, सैन्यगण युधिष्ठिरके आज्ञासे भीष्मके विनाशार्थ क्रोधसे धावमान हुए, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, विराट, द्रुपद, सोमक प्रभृति वीर सब भीष्मके ऊपर धावमान हुए, अर्जुन, चेकितान औ द्रौपदेय दुर्योधनके आज्ञाकारि भूपतिगण के ऊपर धावमान हुए, अभिमन्यु, घटोत्कच औ भीमसेन कौरवों पर धावमान हुए, पाण्डव दो भाग होके कौरवोंका नाश करने लगे, कौरवभी उनका नाश करने लगे, द्रोण क्रुद्ध होके सोमक औ सृञ्जयोंका नाश करने लगे, द्रोणके शरप्रहारसे क्षत्रियगण आर्त्तनाद करने लगे, तब भीमसेन क्रुद्ध होके गजसैन्य निपातित करने लगे, हतगजोंसे रणभूमि आकीर्ण हो गई, रुधिर नदी प्रवाहित हो गई, नकुल औ सहदेवने शत सहस्र मातङ्ग निपातित कर दिये, अर्जुनसे निहत भूपालोंसे रणस्थल पूर्ण हो गया भग्न रथ, भिन्न ध्वज, छत्र औ चामर पतित अलङ्कार औ आयुधोंसे समाच्छन्न हो गया, भीष्म द्रोणादिके क्रोधसे पाण्डव पक्षमें इस प्रकार क्षय होने लगा।

इति ९० अध्याय।

इस प्रकार वीरचयकर युद्ध होने लगा तब शकुनि पाण्डवों पर धावमान हुए, हार्दिक्य बहुसंख्यक काम्बोजदेशज, नदीज, अरट्टज, महीज,सिन्धुज, वनायुज, तित्तिरिज औ गिरिज अश्वो से पांडवसैन्यको आक्रमण करने लगे, तब अर्जुन-पुत्र इरावान् प्रणालीसे अवस्थापित वायुवेगगामी अश्वोंके सहित हार्दिक्यके सेनाभिमुख हुए, यह इरावान् पार्थके वीजसे नागराजकन्याके गर्भसे उत्पन्न हुए हैं, नागराज ऐरावतके जामाता गरुड़से नि-हत हुए तब उन्होंने सन्तानहीना दीना निज कन्याको अर्जुन के हस्तमें समर्पण किया, अर्जुननेभी उस कामवशवर्त्तिनी कामि-नीका पाणिग्रहण किया, इस प्रकार यह इरावान् अर्जुनसे पर क्षेत्रमें उत्पन्न हुए, उनका दुरात्मा पितृव्य अर्जुनसे द्वेष रखता था, उससे उसने इरावान्का त्याग कर दिया था, तब वह इरावान् जननीसे नागलोकमें पालित औ वर्द्धित हुए, अनन्तर जब अर्जुन सुरलोकमें गए थे तब वह वहां जाय कृतांजलिपुटसे पिताको प्रणाम करके स्वीय औ जननीका पूर्वहत्तांत कहा, अर्जुननेभी पूर्वहत्तांत स्मरण करके पुत्रको आलिङ्गन पूर्वक प्रस-न्नतासे कहा, हे वत्स! तुम संग्राम कालमें हमारी सहायता करो, तब इरावान् पिताकी आज्ञा स्वीकार करके वहांसे बिदा हुए, वही इरावान् युद्ध उपस्थित हुआ तब यहां उपस्थित हुए वही यह इरावान् अश्वसैन्य लेके कौरवसैन्यको आक्रमण करने लगे, गरूड़के समान अश्वोके उपर पतन करके वक्षसे वक्षमें, नासिकासे नासिकामें आघात करने लगे, परस्पर अश्वारोही मिलित होके संहार करने लगे,परस्पर अश्व औ आयुध निःशेष होके विनष्ट होने लगे, अश्वसैन्य अल्पमात्र अवशिष्ट रहा तब गज, गवाक्ष, वृषभ, चर्मवान्, आर्जव औ शुक यह छः शकुनिके भाई सहसा स्वीय सैन्यसे निर्गत होय इरावान्के सैन्यका भेद करके प्रविष्ट होने लगे, शकुनि औ अन्यान्य भूपति उनको नि-

वारण करने लगे तथापि उन्होंने न माना, तब इरावान् उन को आवते देखके स्वसैन्यसे कहने लगे कि यह सब नष्ट होय ऐसा उपाय करो, तब वह सब इनके सैन्यका नाश करने लगे शकुनिके भ्रातृगण इरावान्को वेष्टन करके प्राससे प्रहार करने लगे,इरावान् प्रासप्रहारसे रुधिरधाराभिषिक्त होके धैर्यसे व्यथित न होते स्वीय शरीरसे प्रास उत्पाटन कर्के उन्ही प्रासोंसे सुबल-पुत्रोंको प्रहार करने लगे, तदुत्तर उनके विनाशार्थ असि औ चर्म लेके पादचारसे उनके ऊपर धावमान हुए, अश्वारूढ़ शकुनि-भ्राता उनके हस्तलाघवसे उनके ऊपर प्रहार करनेका अवकाश पाय न सके, इरावान्के खड्गप्रहारसे छिन्नभिन्न होने लगे, उन सभोंके हस्त छिन्न होके भूतलमे गिरने लगे, इस प्रकार सब शकुनिके भ्राता नष्ट हुए, केवल शकुनि वारंवार रक्षित होय उस भयङ्कर विनाशसे बच गए।

तब दुर्योधन बकासुरके वधसे भीमसेनसे जातवैर भयङ्कर राक्षस आर्ष्यशृङ्गसे कहने लगे, हे राक्षस! देखो यह अर्जुन पुत्र हम लोगका नाश कर रहा है तुम मायावी हो इसका नाश करो, तब आर्ष्यशृङ्ग राक्षस इरावान्के ऊपर धावमान हुआ, इरावान्भी उसके वधार्थ संमुख हुए, तब वह राक्षस मायासे दो सहस्र अश्व निर्माण कर्के अस्त्र प्रहार करने लगा, इरावान् उनको नष्ट कर दिया, तब इरावान् औ आर्ष्यशृङ्ग दोई रणमे रह गए, इरावान् उसको धावमान देखके पास आय खड्गसे उसके धनु औ बाण खण्ड कर दिये, तब राक्षस मायासे इरा-वान्को मोहित करते आकाशमे उत्थित हुआ, इरावान्भी कामरूपी आकाशमे उत्थित होय प्रहार करने लगे, राक्षसका शरीर छिन्न भिन्न हो गया, राक्षसोंकी माया स्वाभाविक इससे छिन्न होकेभी पुन तरुण रूप धारण कर्के उपस्थित हुआ, इरा-वान् क्रोधसे पुनः वारंवार उसका देह छिन्न भिन्न करने लगे,

आर्ष्यशृङ्ग घोर शब्द औ अनवरत छिन्न भिन्न होके रुधिरधारा वर्षण करने लगा, तदुत्तर भयङ्कर आकार धारण करके इरावान् को धरनेका उपक्रम करने लगा, इरावान्भी उसकी माया देख के माया उत्पन्न करने लगे, इतनेमें उनके मातृवंशीय नाग सब उनके समीप उपस्थित हुए, तब इरावान् असंख्य नागोंसे वेष्टित होय भयङ्कर हो गए, राक्षसको असंख्य नाग आच्छन्न करने लगे, तब राक्षस क्षणमात्र चिन्ता करके गरुड़ रूप होय नागो को भक्षण करने लगा, इरावान् वह देखके मोहाविष्ट हो गए, इतनेमें राक्षसने शीघ्र खड्गसे इरावान्का कुण्डल-मण्डित मस्तक छेदन कर दिया, तब धार्त्तराष्ट्र आह्लादित हो गए, अनन्तर उभयपक्षीय सैन्य मिलित हो गया, अर्जुन पुत्र का विनाश जानके भीष्मरक्षित क्षितिपालोंका संहार करने लगे, सृंजय औ कौरव परस्पर विनाशमें प्रवृत्त होय रणाग्निमें जीवनकी आहुति देने लगे, छिन्न बाहु, छिन्न कार्मुक औ मुक्तकेश रथी सब परस्पर एकत्र होय बाहुयुद्ध करने लगे, भीष्म शत्रुसैन्यको कम्पित करते हुए नाश करने लगे, पाण्डवोंके अ-संख्य हस्ती अश्व रथी औ मनुष्य नष्ट हुए, भीष्म, भीमसेन, द्रुपद औ सात्वतके पराक्रमसे सकल भीत हो गए, द्रोणका पराक्रम देखके पाण्डव भीत होने लगे, ऐसा संग्राम हुआ कि कोई किसीकी प्राण रक्षा कर न सके।

इति ८१ अध्याय।

—०—

धृ०। इरावानके निहत होने पर पाण्डवोंने क्या किया?

सं०। घटोत्कच इरावानको निहत देख घोर निनाद करने लगे, उसके नादसे सपर्वत भूमी कम्पित हो गई, सैन्यके ऊरु-स्तम्भ, स्वेद औ कंप होने लगा, घटोत्कच घोर शब्द करके त्रिशू-लधारण पूर्वक धावमान हुए, तब दुर्योधन उनके ऊपर धाव-

मान हुए, बङ्गाधिपति मदस्रावी दशसहस्र गज लेके उनके अनुगत हुए, घटोत्कच दुर्य्योधनको गजसेनाके सहित आवते देखके घोर संग्राम करने लगे, नानाविध अस्त्र शस्त्रोसे गजसैन्य संहार करने लगे, शिक्षावरी निहत, भिन्न कुम्भ, छिन्न गात्र होने लगे, इस प्रकार गजसैन्य नष्ट हुआ तब दुर्य्योधन क्रोधसे घटोत्कचके ऊपर धावमान हुए, चार बाणसे घटोत्कचके सहाय विद्युज्जिह्वका नाश किया, घटोत्कच वह देखके वज्रसदृश बाण निक्षेप करने लगे, दुर्य्योधन उससे कुछभी व्यथित न हुए; तब राक्षस दुर्य्योधनके पास जाय बोले, हे नृशंस दुर्योधन! तुमने द्यूतक्रीड़ासे हमारा पितरोंको अति क्लेश दिया है, आज तुम्हारा संहार करके उनसे अनृणी होंगे, यह कहके तीक्ष्णशर निक्षेप करने लगे।

इति ९२ अध्याय।

दुर्य्योधनने उसके बाण सह करके क्रोधसे पञ्चविंशति नाराच निक्षेप किया, घटोत्कचने उससे क्षतविक्षत होके क्रोधसे शक्ति निक्षेप किया, तब वंगाधिपतिने दुर्योधनको आड़ कर दिया, तब घटोत्कचने वह शक्ति उनके गजके ऊपर निक्षिप्त किया, तब वह गज भूतलमें गिरा, वंगाधिपति शीघ्र गजसे उतर पड़े, दुर्योधन उस गजको निपतित औ सैन्यको भग्न देखके व्यथित होने लगे, परन्तु क्षत्रियधर्म औ अभिमानसे पलायित न हुए, तब घटोत्कच उनके सैन्यका संहार करने लगे, तब भीष्म घटोत्कचका शब्द सुनके द्रोणसे बोले, हे आचार्य्य! यह घोर शब्द रहा है, बोध होता है, कि घटोत्कच दुर्योधनसे युद्ध करता है, उसका पराजय होना दुःसाध्य है दुर्योधनको रक्षा करनी हम लोगोंको अवश्य है, तब द्रोण, सोमदत्त, भूरिश्रवा, वाह्लीक प्रभृति वीर सब बहुसहस्र रथ लेके

दुर्योधनके पास गए, घटोत्कच उनको आवते देखके राक्षसोंके साथ उनके ऊपर अस्त्र शस्त्र प्रहार करने लगे, तब उनका परस्पर घोर संग्राम होने लगा, घटोत्कच द्रोणका धनु औ सोमदत्तका ध्वज छेदन करके गर्जन करने लगे, तदुत्तर बाल्हीकके वक्षस्थलमे तीनबाण, कृपको एक बाण औ चित्र-सेनको बिद्ध करके विकर्णका जत्रुदेश बिद्ध किया, विकर्ण उससे पीड़ित होय रथोपस्थमे उपविष्ट हो गए, अनन्तर घटोत्कचने भूरिश्रवाके ऊपर पंचदश नाराच निक्षेप किये, उससे भूरि-श्रवाका मर्मभेद हो गया, तब घटोत्कचने विविंशति औ अश्व-त्थामाके सारथिको बिद्ध किया, दोनो सारथि अति बिद्ध होके अश्वरज्जु त्याग करके रथोपस्थमे निपतित हुए, तदुत्तर घटोत्कच ने सिंधुराजका ध्वज औ धनु छेदन करके अवन्तिराजके अश्व नाश पूर्वक बृहद्बलको बिद्ध किया, बृहद्बलभी रथोपस्थमे निविष्ट हो गए, तदुत्तर शल्यका देह भिन्न कर दिया।

इति ८२ अध्याय।

———

हे महाराज। घटोत्कच इस प्रकार कौरव सैन्यको विमुख करके दुर्योधनके ऊपर धावमान हुए, तब आपका पचीय वीर सब उनके ऊपर शर वर्षण करने लगे, घटोत्कच उससे क्रुद्ध होय घोरनादसे दिक् विदिक् प्रतिध्वनित करने लगे, तब युधिष्ठिर भीमसेनसे बोले, हे भीम! घटोत्कचके महान शब्दसे बोध होता है, कि वह संग्राम अति भाराक्रांत हुए हैं, औ इधर भीष्म पांचाल सैन्यका नाश कर रहे हैं, यह दोनो कार्य्य उपस्थित हुए हैं, अर्जुन इधर युद्ध करेंगे तुम शीघ्र घटोत्कचकी रक्षा करो, भीमसेन भ्राताके आज्ञासे क्षत्रियोंका संहार करते हुए, धावमान हुए, सत्यधृति सौचित्ती, श्रेणिमान्, वसुदान, बिभु, द्रौपदेय, अभिमन्यु, सहदेव औ क्षत्रधर्मा षट् सहस्र मातंग

औ सैन्य लेके उनके अनुगामी हुए, शीघ्र वहां जाय उनकी रक्षा करने लगे, कौरवगण उनको देखके भयसे पलायन करने लगे, पुनः प्रत्यावृत्त होके घोर संग्राम करने लगे, ऐसा संग्राम होने लगा कि जिसमे कोई किसीको जान न सके, रणस्थल मृतदेह मस्तक, गज, अश्व, मनुष्य, आयुध औ अलंकारोसे आकीर्ण हो गया, तब कौरवसैन्यसे सबही विमुख हो गए ।

इति ८४ अध्याय ।

अनन्तर दुर्य्योधन स्वीय सैन्यको विमुख होके क्रोधसे भीमसेन पर धावमान हुए, औ उनके ऊपर शरवर्षण करने लगे, तदुत्तर भीमसेनका धनु छेदन करके तीक्ष्णशरसे उनका वक्षस्थल बिद्ध किया, तब भीमसेन अति व्यथित होय ध्वजदण्ड धरके अवस्थान करने लगे, घटोत्कच वह देखके क्रोधान्ध हो गए, अभिमन्यु प्रभृति वीर सब दुर्य्योधन पर धावमान हुए, तब द्रोणाचार्य्य वीरोंसे कहने लगे, हे वीरगण! तुम लोग शीघ्र दुर्य्योधनकी रक्षा करो, तब कृप, भूरिश्रवा, शल्य, अश्वत्थामा, विविंशति, विकर्ण, जयद्रथ, वृहद्बल औ विन्दानुविन्द दुर्य्योधनको वेष्टन करने लगे, तब परस्पर घोर युद्ध होने लगा, द्रोणाचार्य्यने दश शरसे भीमसेनको बिद्ध करके शरवृष्टिसे आच्छन्न कर दिया, तब भीमसेनने दश शरसे द्रोणका पार्श्वभेद कर दिया उससे द्रोण विचेतन हो गए, यह देखके अश्वत्थामा औ दुर्य्योधन भीमसेनके ऊपर धावमान हुए, भीमसेन उन दोनोको आवते देखके रथसे उतरके गदा लेके धावमान हुए, तब वह दोनो वाणजालसे बिद्ध करने लगे, कौरव पक्षीयभी उनको पीड़ित करने लगे, अभिमन्यु भीमसेनको पीड़ित देखके उनके निकट हुए, भीमसेनके सखा नीलभी शीघ्र उनके निकट उपस्थित हुए, औ अश्वत्थामाके ऊपर शरक्षेप करने लगे,

अश्वत्थामा नीलके शरोंसे रुधिर लिप्त हो उनके बधार्थ उद्युक्त हुए, औ भल्लास्त्रोंसे उनके अश्व औ ध्वज पातित करके भल्लहीसे उनका बक्षस्थल बिद्ध किया, नील उससे अति व्यथित होके रथोपस्थमें बैठ गए, तब घटोत्कच राक्षसोंके सहित अश्वत्थामा पर धावमान हुए, अश्वत्थामा उनको देखके राक्षसोंका संहार करने लगे, तब घटोत्कचने अश्वत्थामाको बिमोहित कर के माया प्रकाश किया, कौरवगण राक्षसके मायासे पराङ्मुख होगए, औ भूमिसे लोटके दीनभावसे परस्पर देखने लगे, अवशिष्ट सैन्य पलायन करने लगे, अश्वत्थामा द्रोण, दुर्य्योधन प्रभृति प्रधान प्रधान वीर औ सब सैन्यको निपतित औ पलायित देखके द्रोण औ भीष्म दोनो आक्षेप पूर्वक कहने लगे, हे सैन्यगण! तुम लोग युद्ध करो पलायन मत करो, परन्तु राक्षस घटोत्कचके मायासे किसीने न सुना, तब पाण्डवगण जयलाभ करके शंखबाद्य औ गर्जन करने लगे, हे महाराज! सूर्य्यास्तके समय घटोत्कचने ऐसा सैन्य छिन्न भिन्न करके पलायित कर दिया।

इति ९५ अध्याय।

अनन्तर दुर्य्योधन दीर्घनिःश्वास त्याग पूर्वक घटोत्कचका जय औ अपने पराजयका वृत्तान्त कहने लगे।

तब भीष्म बोले, हे दुर्य्योधन! हम जैसा कहते हैं वैसा करो, तुम सर्वप्रकारसे आत्मरक्षा करके पाण्डवोंसे युद्ध करो राजधर्मानुसार राजाको राजासे युद्ध करना उचित है, हम लोग तुम्हारे कार्य्यार्थ घटोत्कचसे युद्ध करेंगे, यदि राक्षस अत्यन्तही तुम्हारे हृदयको ताप करता है, तब भगदत्त उससे युद्ध करें, यह कहके भगदत्तसे बोले, हे राजन्! जैसा पुरन्दरने तारकासुरका निवारण किया था, वैसही सबके समक्ष तुम

शीघ्र दुरात्मा राक्षस घटोत्कचका निवारण करो, तुम्हारे अस्त्र दिव्य औ पराक्रम अद्भुत है, पहिले तुमने असुरोंसे युद्ध किया है, इस लिये तुमही घटोत्कचके प्रति योद्धा हो अब तुम इस बलदृप्त घटोत्कचका नाश करो ।

महाराज भगदत्त भीष्मका वाक्य सुनके सुप्रतीक नामक महान् गजके ऊपर आरोहण करके शत्रुगण पर धावमान हुए, भीम, अभिमन्यु, घटोत्कच, द्रौपदेय, सत्यधृति प्रभृति भगदत्त आगत देखके गर्जन करते हुए, धावमान हुए, उनका औ भगदत्तका घोर युद्ध आरंभ हुआ, रथियोंके बाण गज औ रथो पर गिरने लगे, सुशिक्षित गजसैन्य भिन्नगात्र होकेभी परस्पर निपतित होने लगे, औ दन्तमे परस्पर भेद करने लगे, अश्वारोही औ पदाति निर्भीकचित्तसे परस्पर प्रहार करने लगे रथसे रथ संघट्ट होय प्रहार करने लगे ।

तब भगदत्त मदस्रावी पर्वताकार गज लेके सैन्य पर धावमान करने लगे, ऊपरसे भगदत्त भीमसेन पर शरवर्षण करने लगे, तब भीमसेनने क्रोधसे उनके पादरक्षक नष्ट किया, तब भगदत्तने भीमसेनके रथके संमुख गज चालन किया, तब अभिमन्यु प्रभृतिने उस गजको वेष्टन कर लिया, तब वह हस्ती शर प्रहारसे रुधिर वर्षण करने लगा, तब दशार्णाधिपति एक गजके ऊपर आरूढ़ हो भगदत्तके ऊपर धावमान हुए, परस्पर दोनो हस्ती निवारण करने लगे, तब भगदत्तने विपक्षके गज पर चतुर्दश तोमर प्रक्षेप किये, तब दशार्णाधिपके गज अत्यन्त व्यथित होय घोर शब्द औ अपना सैन्य मर्दन करते धावमान हुआ, दशार्णाधिपतिका हस्ती पराजित हुआ तब भीमसेन प्रभृति भगदत्तके ऊपर शरवृष्टि करने लगे, भगदत्तने क्रोधसे उस गजको उनके ऊपर प्रेरण किया, तब वह गज रथ, हस्ती, अश्व औ पदातिका मर्दन करने लगा, तब पाण्डवसैन्य अति

संकुचित हो गया, तब घटोत्कच क्रोधप्रज्वलित होय भयंकर त्रिशूल धारण करके भगदत्तके ऊपर धावमान हुआ, औ हस्तीके बधार्थ वह शूल निक्षेप किया, भगदत्तने अर्द्धचन्द्र वाणसे उसका छेदन कर दिया, और घटोत्कचके ऊपर शक्ति निक्षेप किया तब घटोत्कचने कूदके वह शक्ति लेके जानुसे भग्न कर दिया, यह देखके सबही विस्मित हुए, पाण्डवगण गर्जन करने लगे, तब भगदत्त असहिष्णु होय एक वाणसे भीमको, नव वाणसे घटोत्कचको, तीन वाणसे अभिमन्युको औ पांच वानसे केकयगणको विद्ध किया, तदुत्तर क्षत्रदेवका बाहु भेद करके द्रौपदेयोंको विद्ध किया, अनन्तर क्रोधसे भीमसेनके अश्व औ ध्वजका छेदन करके सारथिको विद्ध किया विशोक सारथि गाढ़ विद्ध होके रथोपस्थमे उपविष्ट हो गया, तब भीमसेन गदा लेके रथसे उतरके धावमान हुए, तब कौरवगण भीत होगए, जहां भीमसेन औ घटोत्कच भगदत्तसे युद्ध करते थे, महावीर अर्जुन वहां शत्रुगणका नाश करते हुए उपस्थित हुए, भ्राताको युद्ध करते देखके शरप्रहार करने लगे, तब दुर्योधनने गजसैन्य प्रेरण किया, महावीर अर्जुन उस सैन्यपर वेगसे धावमान हुए, भगदत्त स्वीय हस्तीसे पाण्डवसैन्य मर्द्दन करते युधिष्ठिरके ऊपर धावमान हुए, तब पांचाल, सृंजय औ कैकय भगदत्तसे घोर युद्ध करने लगे, उसी अवसरमे भीमसेनने कृष्ण औ अर्जुनसे इरावान् बधका वृत्तान्त आद्योपान्त कथन किया।

इति ८६ अध्याय।

महावीर धनञ्जय स्वपुत्र इरावान्का बध सुनके अति दुःखित होय निःश्वास त्याग पूर्वक वासुदेवसे कहने लगे, हे वासुदेव! महामति विदुरने पहिलेही कौरव औ पाण्डवोंका यह महा भयंकर विषय जानके हम लोगोंको औ धृतराष्ट्रको निवा-

रण किया था, देख दोनो पक्षमे वीर निहत हुए हैं, अर्थके लिये लोगोंमे अति दुष्कर्म करते हैं, हम लोगभी उसी अर्थके लिये कुकर्म करते हैं, अर्थको धिक् धनहीनको ज्ञातिबध करके अर्थोपार्जनसे मृत्युही श्रेष्ठ है, हे कृष्ण! इनसे ज्ञातियोंका संहार करके हमलोगोंको क्या लाभ होगा, दुरात्मा दुर्योधन औ शकुनिके अपराध औ कर्णके कुमन्त्रणासे सब क्षत्रिय निहत होते हैं, हमने जो महाराज युधिष्ठिर दुर्योधनसे अर्द्धराज्य वा पञ्च ग्राम प्रार्थना करते थे, सो उत्तमही करते थे, परन्तु दुरात्मा दुर्योधन उसमे संमत न हुआ, यह क्षत्रियोंको निपतित देखके अपनी निन्दा करते हैं, क्षत्रियवृत्तिको धिक्, हमारी ज्ञातिवर्ग से युद्ध करनेकी इच्छा नही है, परंतु युद्ध न करेंगे तो हमको क्षत्रियगण अशक्त कहेंगे, अगत्या हमको संग्राम करना पड़ता है, इस लिये, हे कृष्ण! तुम शीघ्र धृतराष्ट्रके सैन्याभिमुख रथ चालन करो, क्लीवके समान कालक्षेप करना कर्त्तव्य नही है, मधुसूदन यह वाक्य सुनके वायुवेगसे रथ चालन करने लगे, तब पांडव औ भीष्मका तुमुल संग्राम होने लगा, धार्त्तराष्ट्र द्रोणको वेष्टन करके भीमसेन पर धावमान हुए, भीष्म, कृप, भगदत्त औ सुशर्मा अर्जुनके ऊपर, हार्दिक्य औ बाह्लीक सात्यकीके ऊपर; अम्बष्ठक अभिमन्युके ऊपर औ अन्यान्य महारथ अन्यान्य महारथियों पर धावमान हुए, अनन्तर उभय पक्षका भयङ्कर समर होने लगा, महावीर भीमसेन धृतराष्ट्र-पुत्रोंको देखके क्रोध-प्रज्वलित हो गए, तब धार्त्तराष्ट्र सब शरवर्षणसे भीमसेनको आच्छादन करने लगे, भीमसेनने क्षुरप्रसे व्यूढ़ोरस्कको निपातित करके भल्लसे कुण्डलीका संहार किया, तदुत्तर अन्यान्य आपके पुत्रों पर तीक्ष्णशर निक्षेप किये, भीमसेनके शर आपके पुत्रोंमे अनाधृष्य, कुण्डभेदी, वैराट, विशालाक्ष, दीर्घबाहु, सुबाहु औ कनकध्वज निहत हुए, तब अन्यान्य आपके पुत्र भीम-

सेनको कृतांत ज्ञान करके पलायन करने लगे, भीमसेनको आप के पुत्रोंका संहार करते देखके द्रोणाचार्य उनके ऊपर शरवर्षण करने लगे, उनसे निवारित होकेभी भीमसेन धार्त्तराष्ट्रोंका संहार करने लगे, तदनन्तर कौरव पक्षके प्रधान२ वीरोंका संहार किया, अभिमन्युने अंबष्ठका रथ भग्न कर दिया, तब अंबष्ठक रथसे उतरके अभिमन्युके ऊपर असि निक्षेप करके हार्दिक्यके रथ पर आरूढ़ होगए, अभिमन्यु अंबष्ठकका असि खण्ड खण्ड कर दिया, तब सैन्यगण अभिमन्युको साधु साधु कहने लगे।

हे महाराज! धृष्टद्युम्न प्रभृति पाण्डवगण कौरवसैन्यको औ कौरवपक्षीय वीरगण पाण्डवसैन्यको दृढ़ प्रहार करने लगे, उभयपक्षीय योद्धागण परस्पर केशाकर्षण औ नख, दन्त, मुष्टि, जानु, तल, बाहु औ निस्त्रिंश प्रहारसे परस्पर यमालयको प्रेरण करने लगे, रणमदमत्त होय अनिर्मर्याद युद्ध करने लगे, असंख्य अश्व, गज औ मनुष्य निपतित होनेसे रणस्थल पर्वताकीर्ण दृष्ट होने लगा, इस प्रकार घोर संग्राम करके दोनो पक्ष के अवशिष्ट सैन्य श्रांत हो गया, इतनेमें रात्रि उपस्थित हुई तब दोनो पक्षीय वीरगण अवहार करके स्व स्व शिविरमें गमन पूर्वक विश्राम करने लगे।

इति ८७ अध्याय।

हे राजन्! अनन्तर शिविरमें दुर्योधन, शकुनि, दुःशासन औ कर्ण एकत्र होके ससैन्य पांडवोंका पराजय करनेकी मन्त्रणा करने लगे, दुर्योधन कर्ण औ शकुनिसे कहने लगे, हे वीरत्रय! भीष्म, द्रोण, कृप, शल्य औ भूरिश्रवा यह पांडवोंका पराजय कर सकते नहीं, इसका कारण क्या हम जान सकते नहीं, पाण्डवगण जीवित रहके अनायास हमारा सैन्य संहार करते

हैं, हम बलहीन, अस्त्रहीन औ पराभूत होते हैं, बोध होता है, पाण्डवगणभी अवध्य हैं, इस लिये उनका पराभव कैसा होगा यह हमको संशय है।

तब कर्ण बोले, हे कुरुकुलतिलक! शोक मत करो, हम तुम्हारा कार्य करेंगे, भीष्म शीघ्रही अपसृत होंगे, हम शपथ करते हैं, भीष्मके अस्त्र त्याग करने पर सोमक सहित पांडवों का संहार करेंगे, भीष्म पाण्डवों पर दया करते हैं, वह उनका पराजय करनेमें समर्थ नही हैं, इस लिये तुम शीघ्र भीष्मके शिविरमें जायके उनसे अस्त्र परित्याग कराओ, उनके अस्त्रत्याग करतेही हमसे निहत पांडवोंको देखोगे, दुर्योधन यह सुनके दुःशासनसे बोले, हे दुःशासन! शीघ्र अनुगामी लोगोंको सज्ज करो, अनन्तर दुःशासनके आज्ञासे अनुगामी सज्ज हुए, तब दुर्योधन यानारूढ़ होय अनुगामी लोगोंके साथ भीष्मके शिविर मे गए, भीष्मको प्रणाम करके कृतांजलिपुटसे कहने लगे, हे पितामह! हमने आपके आश्रयसे पांडवोंकी कथा दूर रहे इन्द्रादिकाभी पराभव करनेका साहस किया था, इस लिये आप कृपा करके पांडवोंका पराभव करिये, हम पांचाल, सोमक, कैकय औ करूषकोंका संहार करेंगे, आप केवल पांडवोंका संहार कीजिये औ प्रतिज्ञा सत्य कीजिये, यदि आप पांडवोंके ऊपर दया करते होंय तो कर्णको आज्ञा दीजिये, वह सबांधव पांडवों का नाश करेंगे, दुर्योधन इतना कहके चुप रहे।

इति ९८ अध्याय।

—o—

भीष्म इस प्रकार दुर्योधनके वाक्यशल्यसे बिद्ध होय कुछभी न बोले, क्रोधसे नेत्र निमीलन करके कुछ काल चिन्ता करके नेत्र उन्मीलन करके बोले, राजन्! हम यथाशक्ति प्राणनिरपेक्ष होके युद्ध करते हैं, तथापि तुम वाक्यशल्यसे हमको बिद्ध करते

हो, जब पाण्डवोंने खाण्डव वन दाहमें शक्रका पराजय करके अग्निको तृप्त किया तब वही उनके पराक्रमका निदर्शन हुआ, गन्धर्वोंने बल पूर्वक तुमको हरण किया तब कर्ण औ तुम्हारे भ्राता पलायमान होगए, तब केवल भीमसेनने तुमको छोड़ाया, वही उनके पराक्रमका निदर्शन हुआ, विराट नगरमें एकाकी अर्जुनने हम द्रोण औ कर्ण प्रभृतिको पराजय पूर्वक गोधन औ वस्त्र अपहरण कर लिया वही उनके पराक्रमका निदर्शन है, देवराज इन्द्रसेभी अजेय निवातकवचोंको एकाकी अर्जुनने पराजित किया यहभी पराक्रमका निदर्शन है, शङ्ख चक्र गदाधारी भगवान् वासुदेव जिनके रक्षक हैं, उन अर्जुनका कौन पराजय कर सकता है, नारद प्रभृति महर्षिगण वासुदेवको अनन्त शक्ति, सृष्टि स्थिति संहारकारी, सर्वेश्वर, देवदेव औ सनातन परमात्मा कहते हैं।

हे राजन्! तुम मोहसे वाच्यावाच्य ज्ञान रहित हुए हो, सबही विपरीत देखते हो, आज देखेंगे तुम पौरुष प्रकाश करके पाण्डव औ सृंजयोंसे वैरानल प्रज्वलित करके युद्ध करोगे, हम शिखंडीको छोड़के पांचाल औ सोमकोंका नाश करेंगे वा उनसे नष्ट होंगे, शिखंडी पहिले स्त्री था पीछे पुरुष हुआ है, उसको हम स्त्रीही गिनते हैं, तुम सुखसे निद्रा करो, कल हम हमायुद्ध करेंगे, यावत् पृथ्वी रहेगी तावत् उस युद्धका लोग कीर्त्तन करेंगे।

अनन्तर दुर्योधन भीष्मको अभिवादन करके स्व शिविरमें आय रात्रि अतिवाहित करने लगे, प्रातःकाल होतेही शयनसे उठके सैन्य सज्ज करनेकी आज्ञा करके वीरोंसे बोले, हे वीरगण! आज महावीर भीष्म क्रुद्ध हुए हैं औ समस्त सोमकोंका नाश करेंगे, भीष्म रात्रिमें दुर्योधनके वाक्यसे दुःखित होय पराधीनताकी निन्दा करते हुए अर्जुनसे युद्धके अभिलाषमें

बहुत काल चिन्ता करने लगे,दुर्योधन भीष्मकी चिन्ताकी चेष्टा से जानके दुःशासनसे बोले, दुःशासन ! तुम भीष्मरक्षक रथि-गणको औ द्वाविंशति अनीक शीघ्र प्रेरण करो, हमलोग बहुत दिनसे पाण्डव बध औ राज्य प्राप्तिकी चिन्ता करते थे सो समय उपस्थित हुआ है, इस समय भीष्मको रक्षा करना अति अवश्य है, उनके रक्षित होनेसे पाण्डवोंका नाश होगा, भीष्म शिखण्डीका बध करेंगे नही वह पहिले स्त्री था, इस लिये उस्को छोड़ देंगे, उनकी प्रतिज्ञा है स्त्री औ स्त्रीपूर्वक पुरुषका बध न करेंगे, इस लिये जिस्मे शिखण्डी उनका संहार न कर सके वैसी उनकी रक्षा करना, उनकी रक्षा होनेसे जय लाभमे संदेह नही ।

अनन्तर सकल रथ भीष्मके चतुर्दिक् हुए, आपके पुत्र औ अन्यान्य वीर भीष्मके आगे करके युद्धार्थ गमन करने लगे, तब दुर्योधन दुःशासनसे पुनः कहने लगे, हे दुःशासन ! युधामन्यु औ उत्तमौजा दोनो अर्जुन-वाम-दक्षिण चक्ररक्षक हैं, अर्जुन शिख-ण्डीके रक्षक हैं, शिखंडी अर्जुनसे रक्षित होय भीष्मका विनाश करेगा, जिसमे वह उनका नाश न कर सके सो करना चहिये, अनन्तर अर्जुनने भीष्मको रथिगण वेष्टित देखके धृष्टद्युम्नसे बोले, हे पांचालतनय ! आज तुम शिखंडीको भीष्मके संमुख करो हम उनकी रक्षा करेंगे ।

इति ८८ अध्याय ।

अनन्तर भीष्मने सर्वतोभद्र व्यूह रचना करके वीरोंको यथा-स्थानमे निवेशित किया, इधर पांडवोंने महाव्यूह रचना करके यथास्थानमे वीरोंका निवेश करके युद्धार्थ सज्ज हुए, परस्पर धावमान होय युद्ध आरंभ हुआ, उस समयके शब्दसे मेदिनी कम्पित होने लगी, पक्षि सब कोलाहल करके भ्रमण करने

लगी, सूर्यकी प्रभा तिरोहित होगई, महाभय सूचक वायु प्रवाहित होने लगा, शिवागण घोर नाद करने लगे, और औरभी नानाविध दुर्निमित्त होने लगे ।

इति १०० अध्याय ।

— — —

हे महाराज ! अभिमन्यु दिव्य रथारूढ़ होय वारिधाराके समान शर वर्षण करते दुर्योधनकी सैन्यपर धावमान हुए, कौरव पक्षीय वीरगण अभेद्य सैन्यमे प्रविष्ट अभिमन्युको किसी प्रकार निवारण कर सके नही, अभिमन्युने शरवृष्टिसे कौरवोंके असंख्य वीर नष्ट किये, क्रोधसे अश्वारोही, गजारोही औ रथिओंको विदारण करने लगे, उस समय कौरव सैन्यका कोई रक्षा कर सका नही, अर्जुनतनय पराक्रम कर्के प्रज्वलित अग्निके समान रणस्थलमे संचरण करने लगे, कौरव सैन्य सब छिन्न भिन्न होय आर्तनाद करने लगा, दुर्योधन सैन्यकी दुर्दशा देखके राक्षस अलंबुषको आह्वान करने लगे, औ उसको कहने लगे कि हे राक्षसेन्द्र ! अर्जुनतनय एकाकी हमारा सैन्य विद्रावित करता है, तुमही उसके निवारणमे समर्थ हो, इसलिये तुम उस्का संहार करो, हम लोग भीष्म द्रोणके साथ अर्जुनका संहार करेंगे ।

राक्षस अलंबुष दुर्योधनके आज्ञासे मेघगम्भीर शब्द कर्के अभिमन्युके ऊपर धावमान हुआ, महावीर अलंबुष अभिमन्युको देखके उनसे किंचित् दूरस्थित पांडव सैन्यको विद्रावित करते उनके पीछेर धावमान हुआ, घोररूपी राक्षस अलंबुष पराक्रम कर्के सहस्र२ शर निक्षेप पूर्वक पाण्डव सैन्यको पलायित करने लगा, द्रौपदेय पांचो उनके ऊपर शर निक्षेप करने लगे, उनके शरोंसे अलंबुष छिन्नकवच होके क्रोधसे द्रौपदी-पुत्रोंको विद्ध करने लगा, तब द्रौपदेयोंने तीक्ष्णशरोंसे उस्को मूर्छित कर

दिया, चणमात्रमे चेतन हो द्विगुणित क्रोधसे द्रौपदेयोंके धनु,
बाण औ ध्वज छेदन करके रथमे नृत्य करने लगा, तदुत्तर
द्रौपदेयोंके अश्व संहार कर दिया, इस प्रकार अलंबुषने द्रौप-
देयोंको विरथ करके उनके बधकी इच्छासे धावमान हुआ, तब
अभिमन्यु दुरात्मा राक्षसको द्रौपदेयोंका विरथ करते देखके
उसके ऊपर धावमान हुए, तब उन दोनोका घोर युद्ध होने
लगा ।

इति १०१ अध्याय ।

धृ० । अलंबुष औ अभिमन्युका किस प्रकार युद्ध हुआ ?
भीम, घटोत्कच, सात्यकी, नकुल औ सहदेवनेभी किस प्रकार
युद्ध किया ? औ अर्जुनने हमारे सेनाका क्या किया ? सो
कहो ।

सं० । अलंबुष औ अभिमन्यु परस्पर धावमान निशित शरों
से बिद्ध करने लगे, दोनोके शर परस्पर देह भेद करने लगे,
दोनोके देहसे रुधिरधारा बहने लगी, अनन्तर अलंबुषकी माया
से घोर अन्धकार हो गया, तब अभिमन्यु कुछभी देख न सके,
तब अभिमन्युने सौरास्त्रसे अन्धकार दूर कर दिया, औ क्रोधसे
राक्षसको आच्छन्न कर दिया, तब अलंबुष मायाशून्य, क्षत-
विक्षत औ व्यथित होय रथ छोड़के पलायित हो गया, तब
अभिमन्यु अलंबुषको पराजित करके कौरवसैन्य मर्दन करने
लगे, तब धार्त्तराष्ट्रगण अभिमन्युको चतुर्दिक्से प्रहार करने लगे
इतनेमे अर्जुन कौरवसेना नाश करते हुए अभिमन्युके पास उप-
स्थित हुए, तब भीष्मभी अर्जुनके संमुख समागत हुए, तब आप
के पुत्र भीष्मकी सावधानतासे रक्षा करने लगे, इधर पाण्डवभी
अर्जुनकी रक्षा करते युद्ध करने लगे, तब कृपाचार्य्यने अर्जुनको
शरोंसे आच्छन्न कर दिया, तब सात्यकी कृपके संमुख होय बिद्ध

करने लगे, कृपाचार्यने सात्यकी हृदयको विद्ध किया, तब सात्यकीने क्रुद्ध होय भयङ्कर शर निक्षेप किया, अश्वत्थामाने वह शर दो खण्ड कर दिया, तब सात्यकी कृपाचार्यको छोड़के अश्वत्थामा पर धावमान हुए, अश्वत्थामा सात्यकीका धनु छेदन करके प्रहार करने लगे, सात्यकीने शीघ्र अन्य चाप लेके अश्वत्थामाके बाहु औ हृदय बिद्ध किया, तब अश्वत्थामा गाढ़ बिद्ध होय ध्वजदण्ड धरके रथोपस्थमें बैठ गए, क्षणमात्रमें संज्ञा लाभ करके पुनः सात्यकीको बिद्ध करने लगे, तदुत्तर सात्यकीका ध्वज छेदन करके सिंहनाद करने लगे, सात्यकीभी सहस्र शरसे अश्वत्थामाको आच्छन्न करके सिंहनाद करने लगे, द्रोणाचार्य्य पुत्रको राहुग्रस्त निशाकरके समान देखके सात्यकीके ऊपर धावमान हुए, सात्यकी अश्वत्थामाको छोड़के द्रोणके ऊपर लोहमय शर निक्षेप करने लगे, अर्जुनभी द्रोणाचार्य्यके ऊपर धावमान हुए।

इति १०२ अध्याय।

पृ०। द्रोण औ अर्जुनका कैसा युद्ध हुआ? अर्जुन द्रोणाचार्यके प्रीतिपात्र औ द्रोणभी अर्जुनके प्रीतिपात्र तब दोनोका कैसा समागम हुआ?

सं०। द्रोणाचार्य रणमें अर्जुनको प्रियपात्र नहीं जानते औ अर्जुनभी क्षत्रिय धर्मसे द्रोणको गुरु जानके सम्मान नहीं करते, क्षत्रियगण रणमें मर्यादाशून्य होके पिता भ्रातासेभी युद्ध करते हैं द्रोणाचार्यको तीन बाणसे अर्जुन बिद्ध करने लगे, तब द्रोणाचार्य क्रुद्ध होके अर्जुनको आच्छन्न करने लगे, दुर्योधनने द्रोणके पास त्रिगर्त्तराज सुशर्माको प्रेरण किया, सपुत्र सुशर्मा क्रोधसे अर्जुनको बिद्ध करने लगे, अर्जुन सिंहनाद करके सपुत्र सुशर्माको बिद्ध करने लगे- तब उनका परस्पर घोर युद्ध होने लगा, अनन्तर

अर्जुनने वायवास्त्र प्रयोग किया, तब प्रबल वायु उत्थित होनेसे आकाशसे वृक्ष सब निपतित होके सैन्य विध्वंस करने लगे, तब द्रोणाचार्य भयङ्कर वायवास्त्र देखके शैलास्त्र प्रयोग करने लगे, उससे वायु प्रशांत हो गया, तब अर्जुनने त्रिगर्त्तराजके रथिओं को निरुत्साह औ परांमुख कर दिया, अनन्तर दुर्योधन, कृप, अश्वत्थामा, शल्य, काम्बोज, विन्दानुविन्द औ वाल्हीक चतुर्दिक् से अर्जुनको शरप्रहार करने लगे, भीमसेन भगदत्त औ श्रुतायुके गजसैन्यसे आक्रांत हुए, भूरिश्रवा, शल औ शकुनि नकुल औ सहदेवको निवारण करने लगे, भीष्म धार्त्तराष्ट्रोंके साथ युधिष्ठिरको आक्रमण करने लगे, महावीर भीमसेन गजसैन्यको आगत देखके गदा ग्रहण पूर्वक रथसे अवतीर्ण हुए, तब उस सैन्यके हृदयमे भय सञ्चार होने लगा, तब गजारोही सब गदा हस्त भीमसेनको देखके सावधान होके चतुर्दिक् उनको वेष्टन करने लगे,वायु जैसे मेघोंका चालित कर्ता है तद्रूप गदासे भीमसेन गजोंको ताड़ित करने लगे, गजोंके दन्त उत्पाटन कर्के उसी दन्तसे उनका गण्डस्थल भिन्न कर्के पातित करने लगे, रुधिरचर्चित देह होके रुधिर रञ्जित गदासे अन्तकके समान गजोंका संहार करने लगे, हतावशिष्ट गज स्वीय सैन्य मर्दन कर्ते पलायन करने लगे।

इति १०२ अध्याय।

अनन्तर मध्याह्न कालमे सोमक औ भीष्मसे घोर युद्ध होने लगा, भीष्म शत सहस्र शरोंसे पाण्डवसैन्य छिन्न भिन्न करने लगे, तब शिखंडी, धृष्टद्युम्न, विराट औ द्रुपद भीष्मको प्रहार करने लगे,भीष्मने धृष्टद्युम्नको विद्ध कर्के विराटको प्रहार कर्ते द्रुपदके ऊपर नाराच निक्षेप किया, शिखण्डीको स्त्री जानके प्रहार किया नही, धृष्टद्युम्नने क्रुद्ध होय भीष्मके बाहु औ वक्ष

बिद्ध किया, शिखण्डीने पञ्चविंशति, विराटने दश औ द्रुपदने पांच बाणोंसे भीष्मको बिद्ध किया, भीष्म रुधिरधारावलिप्त होके तीन२ बाणोंसे उनको बिद्ध कर्के द्रुपदका धनु छेद किया, द्रुपदने अन्य धनु लेके भीष्मको बिद्ध कर्के तीन बाणसे उनके सारथिको बिद्ध किया, तब भीम द्रौपदेय, कैकय औ सात्यकी युधिष्ठिर औ धृष्टद्युम्नको लेके भीष्मके ऊपर धावमान हुए, इधर कौरवगणभी भीष्मके रक्षामे यत्नवान् हुए, तब उभय पक्षीय तुमुल संग्राम होने लगा, योद्धा सब निपतित होने लगे, रुधिर नदी प्रवाहित हुई, आरोही सब अश्व, रथ औ गज त्याग कर्के पलायन करने लगे, सैन्य सब संत्रस्त होने लगा, तब क्षत्रियगण भयानक हत्याकाण्ड देखके उच्चस्वरसे कहने लगे, हे वीरगण ! दुर्योधनके अपराधसे यह क्षत्रिय सब नष्ट होते हैं, धृतराष्ट्रने लोभसे गुणवान् पाण्डवोंसे द्वेष कर्के यह संहार उत्पन्न किया, हे महाराज ! आपके सैन्यमे यह कोलाहल होने लगा, तब दुर्योधन भीष्म, द्रोण औ शल्यको कहने लगे, हे वीरगण ! आप क्यों विलंब करते हो, अहङ्कारशून्य होके युद्ध करो, तब दोनो पक्षके अक्षक्रीड़ाजनित भयङ्कर हत्याकाण्ड युद्ध होने लगा, हे महाराज ! महात्माओंने आपको वारंवार निवारण किया, परंतु आपने न माना उसीका यह फल है, आपके दुर्नीतिसे यह क्षय हो रहा है ।

इति ११० अध्याय ।

अनन्तर महावीर अर्जुन अनुचर भूपतियोंका संहार करने लगे, तब सुशर्माने वासुदेवको सप्तति औ अर्जुनको नव बाणसे बिद्ध किया, अर्जुनने उनके बाणोंको निवारण कर्के उनके सहचर योद्धाओंका संहार किया, योद्धागण अर्जुनके शरसे व्याकुल होय वाहन औ शस्त्र त्याग कर्के पलायन करने लगे, सैन्य

पलायित होने पर दुर्योधन सुशर्माके रक्षार्थ भीष्मके सहित असंख्य सैन्य लेके धनञ्जयके ऊपर धावमान हुए, उस समय केवल दुर्योधनही संग्राममें रह गए और सब पलायित हो गए, पाण्डवगण अस्त्र शस्त्र प्रक्षेप करते भीष्मके ऊपर धावमान हुए, भीष्मको शरजालसे आच्छन्न करने लगे, तब पाण्डव कौरवों का घोर युद्ध होने लगा, सात्यकी पांच बाणसे कृतवर्माको बिद्ध करके सहस्र बाण वर्षण करने लगे, द्रुपदने द्रोणको बिद्ध करके उनके सारथिको बिद्ध किया, भीमसेन बाह्लीकको बिद्ध करके गर्जन करने लगे, अभिमन्युने चित्रसेनके हृदयमें बिद्ध किया, तदुत्तर उनके अश्व नाश करके गर्जन करने लगे, चित्रसेन विरथ होय दुर्मुखके रथ पर आरूढ़ हो गए, द्रोणाचार्यने द्रुपदका देह भेद करके उनके सारथिको बिद्ध किया, द्रुपद द्रोणके शरसे पीड़ित होय पूर्ववैर स्मरण करके पलायित हो गए, भीमसेनने बाह्लीकके अश्व औ सारथिका नाश किया, तब बाह्लीकने भ्रांत होय लक्ष्मणके रथ पर आरूढ़ हुए, इधर कृतवर्माको सात्यकीने निराकुल करके शरवर्षण करते हुए भीष्मके समीप जाय साठ बाणोंसे उनका बिद्ध किया, भीष्म सात्यकीके ऊपर महाशक्ति निक्षेप किया, सात्यकीने उसको अर्द्धपथहीमें छेदन कर दिया, तदुत्तर उनके ऊपरभी सात्यकीने शक्ति निक्षेप किया, भीष्मनेभी उनके शक्तिके क्षुरप्रसे दोखण्ड कर दिया, पाण्डवगण सात्यकीके रक्षार्थ असंख्य सैन्य,लेके भीष्मको वेष्टन करने लगे, तब कौरव पाण्डवोंका भयानक संग्राम होने लगा।

इति १०५ अध्याय।

———

हे महाराज! दुर्योधन भीष्मको पाण्डवसे वेष्टित देखके दुःशासनसे बोले, हे दुःशासन! देखो भीष्म पाण्डवोंसे वेष्टित

हुए हैं, इनकी रक्षा करना तुमको अवश्य है, भीष्म हम लोगोंके रक्षक हैं, वह रक्षित रहेंगे तो निश्चय पाण्डवोंका संहार करेंगे, दुःशासन यह सुनके असंख्य सैन्य लेके भीष्मके निकट हुआ, शकुनि शत सहस्र अश्वारोही लेके धर्मराज, नकुल औ सहदेवको निवारण करने लगे, तब युधिष्ठिर, नकुल औ सहदेव सन्नतपर्व वाणोंसे अश्वारोहियोंके मस्तक पातित करने लगे, उनके मस्तक ताल फलके समान निपतित होने लगे, हतावशिष्ट अश्वारोही चतुर्दिक् पलायन करने लगे, पाण्डवगण उनको पराजित करके शंखध्वनि करने लगे, दुर्योधन उस सैन्यको पराजित देखके दीनचित्त होय शल्य से बोले, हे महाबाहो! पाण्डवगण हमारा सैन्य विद्रावित करते हैं, आप पराक्रम प्रकाश करके उनको निवारण कीजिये शल्य दुर्योधनके कहनेसे युधिष्ठिरके ऊपर धावमान हुए, युधिष्ठिरने उनको अनायास निवारण करके उनके वक्षस्थलमें दश वाण निक्षेप किये, माद्रीनन्दनोंभी सात२ वाणोंसे उनको विद्ध किया, शल्यनेभी प्रत्येकको तीन२ वाणसे विद्ध करके पुनः दो दो वाण निक्षेप किया, भीमसेन युधिष्ठिरको शल्यके संमुख देख के उनके रक्षार्थ शल्यके अभिमुख हुए, तब भास्कर पश्चिम दिक् होके ताप देने लगे, कौरव पाण्डवोंका तुमुल संग्राम होने लगा।

इति १०६ अध्याय।

सं०। भीष्म क्रुद्ध होके पाण्डव औ उनके सैन्यको आघात करने लगे, उन्होंने द्वादश शरसे भीमसेनको, नव शरसे सात्यकी को, तीन शरसे नकुलको, सात शरसे सहदेवको विद्ध करके युधिष्ठिरके बाहु औ वक्षस्थलमें द्वादश शर निक्षेप किये, तदुन्तर धृष्टद्युम्नको विद्ध करके सिंहनाद करने लगे, नकुलने द्वादश

सात्यकीने तीन, धृष्टद्युम्नने सप्तति, भीमसेनने सात औ युधिष्ठि-रने द्वादश सायकोंसे उनको बिद्ध किया, तब द्रोणाचार्य पांच२ बाणोंसे प्रत्येकको बिद्ध करने लगे, वह लोगभी द्रोणको तीन२ शरसे बिद्ध करने लगे, भीष्म उस समय पाण्डवसैन्यको विद्रा-वित करने लगे, उनका एकभी शर व्यर्थ हुआ नही, रथि-गण निहत होनेसे शून्यरथ इतस्तत धावमान होने लगे, किसीका रथभङ्ग, किसीके चक्रभङ्ग, किसीके अश्वभङ्ग, औ कोई छिन्नबाहु, कोई छिन्नमस्तक होय निपतित होने लगे, मृतदेह, आयुध औ अलंकारोंसे समरभूमि आक्रांत हो गई।

वासुदेव सैन्यको भग्न देखके अर्जुनसे बोले, हे पार्थ! विराट नगरमे राजसभाके बीच संजयसे तुमने कहा था कि सैन्य सहित धार्तराष्ट्रों समूल उन्मूलन करेंगे, अब वह वाक्य सार्थक करो, क्षत्रियधर्म स्मरण करके संताप त्याग पूर्वक युद्ध करो, धनंजय सुनके तिर्यक्दृष्टि औ अधोमुख होके बोले, वासुदेव! अवध्योंका बध करके नरक हेतु राज्य लेना था तब वनवास दुःख भोगका क्या प्रयोजन था, जो होय, अश्वचालना करो, तुम्हारा वाक्य रखना चाहिये, भीष्मको पातित करेंगे, तब वासुदेव रथको भीष्मके संमुख ले चले, युधिष्ठिरका सैन्य धनंजयको भीष्माभि-मुख गमन कर्ते देखके पुनः युद्धमे प्रवृत्त हुआ, भीष्म धनं-जयको आच्छादित करके सिंहनाद कर्ने लगे, रथ, अश्व आच्छा-दित होनेसे धैर्य पूर्वक वासुदेव अश्वचालन करने लगे, धनंजय भीष्मका धनु छेदन कर दिया, तब भीष्म अन्य धनु लेके ज्यारो-पण करने लगे, तब अर्जुनने वहभी धनु छेदन कर दिया, तब भीष्म साधु धनंजय! साधु२! कहके उनके हस्तलाघवकी प्रशंसा करने लगे, तदुत्तर पुनः अन्य धनु लेके शरवर्षण करने लगे, वासुदेवने रथके मंडलगतिसे वह सब उनके शर व्यर्थ कर दिये, पार्थ मृदु युद्ध औ भीष्म तीक्ष्ण युद्ध करते हैं औ सैन्यभग्न हो

रहा है देखके क्रोधप्रज्वलित होय अश्वरज्जु छोड़के रथसे उतर कशा हाथमे लेके भीष्मके ऊपर धावमान हुए, वासुदेवको समरोद्यत देखके 'भीष्म हत हुए, 'भीष्म हत हुए' ऐसा कोलाहल होने लगा, भीष्म वासुदेवको आगत देखके धनुर्धारण पूर्वक कहने लगे, हे पुंडरीकाक्ष ! हे देव देव ! तुमको नमस्कार, आओ इस महायुद्धमे हमको पातित करो, तुम्हारे हाथसे निपतित होनेसे श्रेयोलाभ होगा, धनंजयने कृष्णके पीछही धावमान होय उनका बाहु धारण किया, तब कृष्ण अर्जुनको लेके धावमान हुए, तब शीघ्र अर्जुनने उनके चरण धर लिया औ अतिकष्टसे उनको निवृत्त किया, अनंतर अर्जुन प्रणाम पूर्वक कहने लगे, हे महाबाहो ! निवृत्त हो, तुमने कहा था हम युद्ध न करेंगे, वह बात मिथ्या नही करना चाहिये, नही तो तुमको मिथ्यावादी कहेंगे, हमारे ऊपरही सब भार अर्पित है, हम शपथ करते हैं पितामहका नाश करेंगे, वासुदेव अर्जुनका वाक्य सुनके कुछभी न बोले, क्रुद्धचित्तसे रथपर आरूढ़ हुए, तब भीष्म उन दोनोको पुनः शरजालसे आच्छन्न करने लगे औ सैन्यका संहार करने लगे, पांडवसैन्य भग्न होय पलायन करने लगा, इतनेमे सूर्य अस्तमित होगए, सैन्य सब श्रमसे कातर होय अवहार करनेकी इच्छा करने लगे।

इति १०७ अध्याय।

:o:o:o:

दिवाकर अस्तंगत होने पर अंधकार हुआ, सैन्य सब भीष्मसे आहत होय पलायन करने लगा, तब युधिष्ठिरने अवहार किया, दोनो पक्षका अवहार हुआ, अनन्तर रात्रि उपस्थित हुई, तब पांडव, वृष्णि औ सृंजय मंत्रणा करने लगे, राजा युधिष्ठिर क्षणमात्र चिन्ता करके कृष्णके ऊपर दृष्टिपात करके कहने

लगे, हे वासुदेव! उग्रपराक्रम भीष्म हमारा सैन्य सब संहार करते हैं, हमलोगोंका ऐसा सामर्थ्य नही है जो उनको देख सकें, इन्द्रादि दिक्पालभी उनका पराभव नही कर सकते, हम लोग दुर्बलतासे भीष्मके युद्धमे शोकसागर निमग्न हुए हैं, वह इसी प्रकार हम लोगोंको नष्ट कर देंगे, इसलिये हमारे हित-कर उपदेश दीजिये, वासुदेव बोले, महाराज! अमितपराक्रम भ्राता तुम्हारे हैं तब तुम क्यो विषाद करते हो, आप आज्ञा कीजिये हम युद्ध करेंगे, अर्जुनको युद्धमे इच्छा न होय तो हम ही सबका संहार करेंगे, प्राणपर्यंत हमारे आपको अर्पित हैं, युधिष्ठिर बोले, हे केशव! तुम यथार्थ कहते हो, कौरव सब एकत्र होकेभी तुम्हारा वेग धारण न कर सकेंगे, जब तुम हमारे पक्षमे हो तब हमारे सब अभिलाष पूर्ण होंगे संदेह नही, अपने कार्यार्थ तुमको मिथ्यावादी करना हमको उचित नही है, भीष्मतो युद्ध उधरहीसे करते है औ करेंगे परन्तु मंत्रणा हम लोगोंकि कहेंगे, इस लिये चलो उनके बधकी मंत्रणा उनहीसे पूछें, वह अवश्य सत्य औ हित बोलेंगे, वासुदेव बोले आपका वाक्य हमारे मनोगत हुआ, आपने जो कहा वही कर्त्तव्य है, इस प्रकार मंत्रणा करके वासुदेव औ पाण्डव पितामहके पास जाय प्रणति पूर्वक कृतांजलिपुटसे उनके शरणापन्न हुए, तब भीष्म बोले, हे केशव! हे धर्मराज! हे भीमसेन! हे अर्जुन! हे नकुल! हे सहदेव! तुम लोगोंका स्वागत, क्या तुम्हारा प्रीतिवर्द्धन कार्य है, हम सर्वप्रयत्नसे वह संपादन करेंगे, इस प्रकार वारंवार प्रीतिपूर्वक भीष्मके पूछनेसे दीनचित्तसे युधि-ष्ठिर बोले, पितामह! किस प्रकार हमलोगोंका जय होगा? किस प्रकार प्रजारक्षण करेंगे? इस लिये आप हमलोगोंको अपने बधका उपाय कहिये, हम लोग किसी प्रकार आपसे संग्राम कर सकते नही, आपके लघुहस्तताने हम लोगोंका

कुछभी चल सकता नही, इस भूमण्डलमे आपका पराजय करे ऐसा कोई नही है, जिस्मे हमलोगोंको राज्यलाभ औ सैन्यका कल्याण होय सो उपाय कहिये, भीष्म बोले, हे पाण्डु-नगण! तुमलोग सत्य कहते हो, हम जीवित रहते किसी प्रकार तुम लोगोंका जय होगा नही, हमारे पराजित होनेसे जय होगा, हमारे निहत होनेसे सबही निहत होंगे, यदि जय लाभकी इच्छा होय तो हम आज्ञा देते हैं तुमलोग हमारे ऊपर प्रहार करो।

युधिष्ठिर बोले, हे पितामह! आप क्रुद्ध होते हैं तब बोध होता है कि यमराजही दंडहस्त होके आगमन करते हैं, इस लिये किस उपायसे आपका पराजय करे सोई कहिये, देवराज, यमराजकाभी पराजय होगा, परंतु आपका पराजय नही हो सकेगा।

भीष्म बोले, हमारे अस्त्रग्रहण करने पर इन्द्रादिभी पराजय नही कर सकेंगे यह सत्य है, हम शस्त्रत्याग करेंगे तब बध होगा, हे युधिष्ठिर! जो अस्त्र, कवच, वा ध्वजहीन, पतित, पलायमान, भीत, स्त्रीजाति, स्त्रीनामा, विकलांग, एकही पिताका पुत्र, औ हम तुम्हारे हैं ऐसा कहके शरणागत इन लोगोंसे हम युद्ध नही करते हैं, और पहिले हमने संकल्प किया है कि अमंगल लक्षण ध्वजसे युद्ध न करेंगे, तुम्हारे सैन्यमे शिखण्डी नामक महारथ है, वह पहिले स्त्री थे पीछे वह पुरुष हुए हैं, सो तुमभी जानते हो, धनंजय उनको अग्रे सर करके तीक्ष्णबाणोंसे हमको प्रहार करें, शिखंडी अमंगल्य ध्वज है, विशेष करके स्त्रीपूर्व है इससे उस पर प्रहार करनेकी हम इच्छा नही करते, धनंजय उसी अवसरमे हमारे सर्वांगमे आघात करें, हम संग्राममे समुद्यत होंगे तो कृष्ण औ धनंजय भिन्न इस भूमंडलमे कोई हमारा बध नही कर सकेगा, इस

लिये धनंजय यत्नसे शिखण्डीको अग्रेसर करके हमको पातित करें, उसीसे तुम्हारा जय होगा, हमने जैसा कहा वैसा करो इससे संग्राममे समस्त धार्त्तराष्ट्रोंका संहार करोगे, कृष्ण औ पाण्डव यह उपाय पायके पितामहको अभिवादन करके स्वीय शिबिरमे आए, धनंजय प्राणत्यागतत्पर पितामहका वाक्य सुनके दुःखित औ लज्जित होके कृष्णसे बोले, वासुदेव ! बाल्य-कालमे क्रीड़ा करतेर धूलिधूसर हो जिनके अंकपर बैठके पिता कहते थे तब वह कहते थे हम तुम्हारे पिता नही हैं, तुम्हारे पिताके पिता है, उनका बध कैसा करें, इससे तुम क्या कहते हो ?

वासुदेव बोले, हे पार्थ ! तुमने भीष्मका बध करेंगे ऐसी प्रतिज्ञा किया है, क्षत्रिय होके वह मिथ्या कैसी करोगे, इस लिये युद्ध करो औ उनको पातित करो, उनके बध विना जय नही होगा, हे धनञ्जय । बृहस्पतिने इन्द्रसे कहा था कि आत-तायी ज्येष्ठ वृद्ध अथवा गुणवान् होय तोभी संमुख होतेही उसका बध करना अवश्य है, क्षत्रियोंका सनातन धर्म यही है ।

धनञ्जय बोले, हे वासुदेव ! भीष्म शिखण्डीको देखतेही युद्धसे परांमुख होंगे, इससे शिखंडी भीष्मके मृत्यु हैं इसमे संदेह नही, हम लोग उनको आगे करके उनको पातित करेंगे, वासु-देव औ पांडव यह निश्चय करके स्वस्व स्थानमे गए ।

इति १०८ अध्याय ।

धृ० । शिखंडी औ भीष्मका युद्ध कैसा भया ? भीष्मसे औ पांडवोंसेभी कैसा युद्ध हुआ ? कहो ।

सं० । प्रातःकाल होतेही पांडवगण शिखंडीको अग्रेसर करके युद्धार्थ निर्गत हुए, शिखंडी दुर्भेद्य व्यूह रचना करके आगे अवस्थान करने लगे, भीमसेन औ अर्जुन, उनके चक्ररक्षक

हुए, द्रौपदेय औ अभिमन्यु पृष्ठरक्षक हुए, इन सभोंके रक्षक धृष्टद्युम्न हुए, युधिष्ठिर प्रभृति सब उनके चतुर्दिक् गमन करने लगे।

इधर कौरवभी भीष्मको अग्रसर करके गमन करने लगे, आपके पुत्र सब उनके रक्षामे नियुक्त हुए, अन्यान्य वीर सब उनके चतुर्दिक् यथास्थानमे निविष्ट होय गमन करने लगे, दोनो पक्ष सैन्य व्यूहित करके प्रहार करनेमे प्रवृत्त हुए, अर्जुन प्रभृति कौन्तेयगण शिखंडिको अग्रसर करके भीष्मके संमुख हुए, युद्ध आरंभ होतेही भीमसेन आपके सैन्यको ताड़ित औ रुधिरक्लिन्न करके यमालय भेजने लगे, नकुल, सहदेव औ सात्यकी कौरव सैन्यको विद्रावित करने लगे, पांडव औ सृञ्जयोंसे हन्यमान आपका सैन्य पांडवसैन्यको निहत करनेमे असमर्थ औ आश्रय न पाय पलायन करने लगे।

इति १०९ अध्याय।

—०—

धृ०। पांडव औ सोमकोंके सैन्यसे नितांत पीड़ित हमारा सैन्य पलायित देखके भीष्मने क्या किया?

सं०। महावीर भीष्म स्वीय सैन्यको पलायित देखके असहमान होय जीविताशा छोड़के नाराच, वत्सदन्त औ अञ्जलिक वाणोंसे पांडव, पांचाल औ सृञ्जयोंको आघात करने लगे, शरजालसे पांडवसेनाके पांच प्रधान योधाओंको निपातित कर दिया औ अपरिमित हस्ती औ अश्वोंका संहार करने लगे, रथके ऊपर रथिको, अश्व पर आरोहीको औ गज औ गजारोहीको पातित करने लगे, अग्नि जैसे वनको दग्ध करता हैं, दशवें दिनके युद्धमे भीष्म शरजालसे शिखंडीके रथ सैन्यको दग्ध करने लगे, तब शिखंडीने भीष्मके वक्षस्थलमे तीन शरसे आघात किया, तब भीष्म हास्य करके शिखंडीसे बोले, हे शिखंडी!

तुम हमारे ऊपर शरप्रहार करो वा मत करो हम तुमसे युद्ध करेंगे नही, विधाताने तुमको शिखंडिनी रूपसे उत्पन्न किया, तुम वही शिखंडिनी हो ।

शिखंडी भीष्मका यह वाक्य सुनके क्रुद्ध होय बोले, हे भीष्म ! हे क्षत्रियांतकारी ! हम तुमको जानते हैं, तुमने परशुरामसे युद्ध किया सोभी हमने सुना है, तुम्हारा दिव्य-प्रभावभी हमको ज्ञात है, तथापि पांडवोंके हितार्थ तुमसे युद्ध करेंगे, तुम हमारे ऊपर शरप्रहार करो वा मत करो, हम सत्य कहते हैं तुम्हारा संहार करेंगे, शिखंडी इस प्रकार भीष्मको पहिले पांचवाणसे बिद्ध करके पीछे सन्नतपर्व पांचवाणोंसे बिद्ध किया, धनञ्जय अवसर देखके शिखंडीको उत्तेजित करते बोले हे शिखंडी ! हम तुम्हारी सहायता करेंगे तुम शरोंसे शत्रुनाश करते भीष्मको आक्रमण करो,कोई तुमको पीड़ित कर सकेगा नही, तुम सावधानतासे भीष्मका संहार करो नही तो हास्या-स्पद हो जाओगे, तुम्हारे सहित हमलोग हास्यास्पद न होंय सो यत्न करके भीष्मका संहार करो, हम द्रोण प्रभृति वीरोंको निवारण करके तुम्हारी रक्षा करेंगे ।

इति ११० अध्याय ।

—०—

ध० । शिखंडीने किसप्रकार भीष्मको आक्रमण किया ? कौन२ शिखण्डीकी रक्षा करने लगे भीष्म औ सोमकोंसे कैसा युद्ध हुआ भीष्मको शिखण्डीने आक्रमण किया सो हम सह सकते नही, भीष्मका क्या रथ भग्न हुआ था वा धनु भग्न हुआ था ।

सं० । भीष्मका धनु वा रथ कुछभी भग्न नही हुआ था, अनेक सहस्र रथी, गजी औ अश्वी सुसज्ज होके उनको अग्र-सर करके रणस्थलमे अवतीर्ण हुए थे, भीष्मभी प्रतिज्ञानुसार पाण्डवसैन्य क्षय करते थे, शत्रुभी उनके निवारणमे असमर्थ थे,

अर्जुन सिंहनाद करते हुए बाणजाल वर्षण करते हुए आगमन करने लगे, तब कौरवसैन्य उनके भयसे पलायन करने लगा, तब दुर्योधन भीष्मसे बोले, पितामह! अर्जुन अग्निके तुल्य हमारे सेनाको दग्ध कर रहे हैं, और भीमसेन प्रभृति वीरभी हमारे सैन्यको छिन्नभिन्न कर रहे हैं, इस लिये अब आप युद्धमे प्रवृत्त होय पीड़ित सैन्यके आश्रय होइये।

भीष्म क्षणमात्र चिंता करके बोले, हे दुर्योधन! सुनो हमने पहिले प्रतिज्ञा किया था कि प्रतिदिन दश सहस्र रथि निहत किये विना निवृत्त न होंगे, सो प्रतिज्ञानुसार कार्य करते हैं, आज एक औरभी महत् कार्य करेंगे, या आपही निहत हो जायंगे वा पाण्डवोंका संहार करेंगे, आज सेनामुखमे प्राणत्याग करके स्वामिदत्त अन्नके ऋणसे मुक्त होंगे, भीष्म यह कहके शर वर्षण करते हुए पाण्डवसैन्यमे प्रविष्ट हुए, भीष्मने दशम दिन के युद्धमे आत्मशक्तिसे दश सहस्र वीरको धराशायी कर दिया, सूर्य जैसे करसे जल ग्रहण करते हैं, तद्रूप भीष्म पांचालोंका तेज हरण करने लगे, तदुत्तर दश सहस्र गज, आरोही सहित दश सहस्र अश्व औ एक लक्ष पदातिका संहार किया, तब सूर्यके समान दुर्निरीक्ष्य होय उठे, दुर्योधन महती सेनासे उनकी रक्षा करने लगे।

इति १११ अध्याय।

अर्जुन भीष्मका पराक्रम देखके शिखंडीसे बोले, हे शिखंडी! पितामहका आक्रमण करो, उनसे तुमको कुछभी भय नही है, हम तीक्ष्णशरोंसे उनको रथसे पातित करेंगे, शिखण्डी, धृष्टद्युम्न, अभिमन्यु विराट, द्रुपद, कुंतिभोज, नकुल, सहदेव, युधिष्ठिर औ अन्यान्य वीर सब अर्जुनका वाक्य सुनके भीष्मके ऊपर धावमान हुए, कौरव पक्षीयभी भीष्मके रक्षामे तत्पर

हुए, चित्रसेन चेकितानके, कृतवर्मा धृष्टद्युम्नके, सौमदत्ति भीमसेनके, विकर्ण नकुलके, कृप सहदेवके, दुर्मुख घटोत्कचके, दुर्योधन सात्यकीके, सुदक्षिण अभिमन्युके, अश्वत्थामा विराटके, द्रोण युधिष्ठिरके, दुःशासन शिखंडी औ उनके अनुगामी अर्जुनके संमुख हो निवारण करने लगे, धृष्टद्युम्न कुपितचित्तसे एकमात्र भीष्मके ऊपर धावमान होय उच्चस्वरसे पुनः पुनः कहने लगे, हे वीरगण! अर्जुन भीष्मके अभिमुख गमन करते हैं, तुम लोग भीष्मको आक्रमण करो, भीष्म तुम लोगोंको ग्रहण कर न सकेंगे, सत्वहीन भीष्म क्या हैं देवराजभी अर्जुनसे युद्धमें समर्थ नहीं हैं, तब सब वीर सेनापतिका वाक्य सुनके हृष्टचित्तसे भीष्मके ऊपर धावमान हुए, कौरवपक्षीय निवारणमें प्रवृत्त हुए, पाण्डवगणभी भीष्मके रथके पास आयके पुनोंको आक्रमण करने लगे, दुःशासन भीष्मकी रक्षाके लिये अर्जुनपर धावमान हुए, क्या आश्चर्य! महारथ धनंजय दुःशासनके रथको अतिक्रम कर सके नहीं, प्रत्युत दुःशासनही निवारण करने लगे, औ शरजालसे अर्जुनको बिद्ध करने लगे, तब अर्जुनने क्रुद्ध होके दुःशासनके ऊपर शत नाराच निक्षेप किये, वह सब नाराच दुःशासनका कवच भेद करके रुधिर पान करने लगे, तब दुःशासनने तीन बाण अर्जुनके ललाटमें निक्षिप्त किये, अंतमें अर्जुनने अति क्रुद्ध होये दुःशासनका रथ औ धनु छेदन कर दिया, तदुत्तर भयंकर असंख्य शर निक्षेप किये दुःशासनने वह बाण अर्द्धपथहीमें छेदन करके अर्जुनको भिन्न किया, तब अर्जुनने पुनः शरजाल निक्षेप किया, वह शर दुःशासनके देहमें प्रविष्ट हो गए, दुःशासन अति पीड़ित होय उस अवस्थामें भीष्मके रथ पर चले गए, तदुत्तर दुःशासन पुनः मध्याह्नको अर्जुनको बिद्ध करने लगे, अर्जुन उससे कुछभी व्यथित न हुए।

इति १०४ अध्याय॥

अनंतर अलंबुष भीष्मके ऊपर धावमान सात्यकीका पथ रोध करने लगा, सात्यकीने नव बाणसे उस राक्षसको विद्ध कर दिया, तब भगदत्त सात्यकीको ताड़न करने लगे, सात्यकी राक्षसको छोड़के भगदत्तको सन्नतपर्व बाणोंसे बिद्ध करने लगे, भगदत्तने लघुहस्ततासे सात्यकीका धनु छेदन कर दिया, सात्यकी अन्य धनु लेके भगदत्तको बिद्ध करने लगे, भगदत्तने गाढ़ बिद्ध होय शक्ति निक्षेप किया, सात्यकीने उसके दो खण्ड कर दिये, तब दुर्योधन रथपरंपरासे सात्यकीको वेष्टन करके भातृगणसे बोले, हे भ्रातृगण! सात्यकी रथवेष्टनसे पराभूत न हो सके, सात्यकीके नष्ट होनेसे पाण्डवोंका महत् बल नष्ट होगा, तब धार्तराष्ट्रगण भीष्मके संमुख सात्यकीसे युद्ध करने लगे, भीष्मके ऊपर धावमान अभिमन्युको सुदक्षिण निवारण करने लगे, अभिमन्युने सन्नतपर्व बाणोंसे सुदक्षिणको विद्ध करके पीछे चतुःषष्ठि शर निक्षेप किया, सुदक्षिणने पांच बाणसे अभिमन्युको औ नव बाणसे उनके सारथिको बिद्ध किया, तब उनको घोर संग्राम होने लगा, विराट औ द्रुपद कौरवसैन्यको प्रतिहत करते हुए भीष्मके ऊपर धावमान हुए, अश्वत्थामा उनके संमुख हुए, उनकाभी घोर युद्ध होने लगा, अश्वत्थामाके ऊपर विराटने दश भल्ल औ द्रुपदने तीन शर निक्षेप किया, अश्वत्थामा असंख्य शरोंसे दोनोंको बिद्ध करने लगे, कृपाचार्यने सहदेवके संमुख होय सप्तति शर निक्षेप किया, सहदेवने उनका धनु दो खण्ड करके नव बाणोंसे बिद्ध किया, कृपाचार्यने अन्य धनु लेके दश बाणसे सहदेवको बिद्ध किया, सहदेवनेभी उनको बिद्ध किया, उन दोनोंका घोर युद्ध होने लगा, नकुल औ बिकर्णका घोर युद्ध होने लगा, हार्दिक्यने धृष्टद्युम्नका गतिरोध किया, धृष्टद्युम्नने दश बाणसे उनको बिद्ध करके पंचाशत् बाण निक्षेप किया, दृप वासवके तुल्य दोनो युद्ध करने लगे,

भीमसेन भीष्मके ऊपर धावमान हुए, तब भूरिश्रवा उनको नाराचसे वक्षस्थलमें बिद्ध करने लगे, इन दोनोंकाभी परस्पर भयंकर युद्ध होने लगा, युधिष्ठिर महती सेना लेके भीष्मके ऊपर धावमान हुए तब द्रोणाचार्यने उनको गतिरुद्ध कर दिया, चित्रसेन चेकितानको रुद्ध करने लगे, इधर दुःशासन वारंवार अर्जुनको रुद्ध करने लगे, अंतमें अर्जुनने उनको निरस्त करके सेना विमर्दन करने लगे, कौरवसैन्य अति निपीड़ित होने लगा।

इति ११२ अध्याय।

अनंतर द्रोणाचार्य पाण्डवसैन्यको पीड़ित करने लगे, और चतुर्दिक् देखके अश्वत्थामासे बोले, वत्स ! महाबल धनंजय जिस दिन भीष्मके वधके लिये यत्नकी पराकाष्ठा करेंगे वही दिन आज उपस्थित हुआ है, वाण हमारे उत्पतित होते हैं, धनु स्पंदित होता है, पक्षी चीत्कार करते हैं, दिवाकर प्रभाशून्य हुए हैं, ऐसे ऐसे अनेक दुर्निमित्त होते हैं, धनंजयके शंख औ गांडीवका भयंकर शब्द होता है, अवश्य आज धनंजय सबको पराजित करके भीष्मको आक्रमण करेंगे, भीष्म औ अर्जुनके समागमके चिंतासे हमारे रोम उत्थित औ अन्तःकरण अप्रसन्न होता है, धनंजय शठ पापचेता शिखंडीको आगे करके भीष्मसे युद्ध करते हैं, भीष्मने कहा है, अमंगल्य ध्वज शिखंडीको प्रहार करेंगे नहीं, वह पहिले स्त्री था पीछे पुरुष हुआ है, इससे भीष्म उसको प्रहार करेंगे नहीं, परन्तु वह शिखंडीने क्रुद्ध होके भीष्मको आक्रमण किया है, इस चिन्तासे हमारा अन्तःकरण अवसन्न होता है, विशेष करके युधिष्ठिरका कोप, भीष्मार्जुनका समागम औ हमारा समरोद्योग प्रजाके अमंगल का हेतु है, महानुभव धनंजय, बलवान, शौर्यशाली, कृतास्त्र, लघु-विक्रम, दूरपाती, निमित्तज्ञ, अजेय, बुद्धिमान् औ प्रसहिष्णु

औ नित्य विजयी हैं, तुम उनके पराजयमें शीघ्र यत्न करो, देखो आज इस घोर युद्धमें महामारी उपस्थित होगी, अर्जुन क्रुद्ध होके सन्नतपर्व बाणोंसे शूरोंके कवच, ध्वजाग्र, तोमर शरासन, प्रास, शक्ति, हस्तियोंकी पताका छेदन कर देंगे, हे पुत्र! यह उपजीवियोंके प्राणरक्षाका काल है, स्वर्ग औ यशके ऊपर लक्ष्य करके विजय करनेमें यत्नवान् हो, धनंजय आज समर सागर उत्तीर्ण होंगे, धनंजय, भीम, नकुल, सहदेव जिनके भ्राता औ कृष्ण जिनके रक्षक, उनकी ब्रह्मनिष्ठा, तप, दम औ दान इसी लोकमें प्रत्यक्ष होता है, वही तपोदग्ध कलेवर युधिष्ठिर शोकसंभूत कोपसे दुर्मति दुर्योधनका सैन्य दग्ध होता है, कृष्णसहाय पार्थ कौरवसैन्यका संहार करते हैं, युधिष्ठिरके व्यूहमें रथिगण दुर्गम हो रहे हैं, सात्यकी धृष्टद्युम्न प्रभृति महावीर धावमान हो रहे हैं, पुत्र! चिरकाल जीवित रहे ऐसी इच्छा किसीको नहीं है परंतु क्षत्रियधर्म स्मरण करके युद्धमें प्रवृत्त करते हैं, देखो यह भीष्म यम वरुणके तुल्य सेनाको दग्ध करते हैं।

इति १९४ अध्याय।

द्रोणका वाक्य सुनके भगदत्त, कृप, शल्य, कृतवर्मा, विन्दानुविन्द, जयद्रथ, चित्रसेन, विकर्ण औ दुर्मर्षण भीष्मके समरमें यशोलाभार्थ भीमसेनसे युद्ध करने लगे, शल्य औ कृप नव नव बाणोंसे, कृतवर्मा औ जयद्रथ तीन२ बाणोंसे, चित्रसेन, विकर्ण, भगदत्त दश दश बाणोंसे, विन्द औ अनुविन्द पांच पांच बाणोंसे औ दुर्मर्षण विंशति बाणसे भीमसेनको विद्ध करने लगे, भीमसेन शल्यको सात, कृतवर्माको आठ, कृपाचार्यका धनु छेदन करके सात बाण, विन्दानुविन्दको पांच पांच बाण औ दुर्मर्षणको विंशति बाणसे विद्ध करने लगे, जयद्रथको पहिले

पांच बाणसे बिद्ध करके पीछे तीन बाणक्षेप करके सिंहनाद करने लगे, कृपाचार्य्यने अन्य चाप लेके दश बाणसे बिद्ध किया, भीमसेनने कृपाचार्य्यको आहत करके जयद्रथके अश्व आसारथिका संहार किया, जयद्रथ अश्व सारथि हीन; रथसे उतरके भीमके ऊपर शरजाल निक्षेप करने लगे, भीमसेनने जयद्रथका धनु छेदन कर दिया, तब जयद्रथ चित्रसेनके रथ पर आरूढ़ हुए, भीमसेनने एकाकी सबको पराजित कर दिया, शल्य भीमसेनका पराक्रम न सहके तिष्ठ२ कहके तीक्ष्ण शरोंसे बिद्ध करने लगे, तब कृप प्रभृति वीर पुनः भीमसेनको आहत करने लगे. भीमसेनने प्रत्येकको पांच पांच बाणसे बिद्ध करके शल्यको सप्तति बाणसे बिद्ध करके और दश बाणसे बिद्ध किया, शल्यने भीमको बिद्ध करके उनके सारथिको बिद्ध किया, भीमसेनने शल्यके बाहु औ वक्षस्थल बिद्ध किया और कृतवर्माका धनु छेदन कर दिया, इतनेमे भीमसेनको इन महारथियोंके साथ युद्ध करते देखके धनञ्जय वहां उपस्थित हुए उनके आवतेही भीम औ अर्जुन इन दोनोको देखके कौरव पक्षीयोंने जीविताशा त्याग कर दिया, तब दोनो वीर उन सभी वीरोंको बिद्ध करने लगे, राजा दुर्य्योधनने सुशर्माको भीम औ अर्जुनके बधके लिये प्रेरण किया, सुशर्मा सहस्र रथ लेके भीम औ अर्जुनके ऊपर धावमान हुए, अनन्तर घोर युद्ध होने लगा।

इति ११५ अध्याय।

धनञ्जय सैन्यको निपीड़ित करते हुए महारथीको शरजालसे आच्छादित करने लगे, वह लोगभी धनञ्जयको बिद्ध करने लगे, चित्रसेनके रथारूढ़ जयद्रथ भीम औ अर्जुनको शराघात करने लगे, चित्रसेन प्रभृति आपके पुत्र प्रत्येक पांच२ बाणसे उन दोनोंको बिद्ध करने लगे, भीम औ अर्जुन प्रत्येकको शराहत

कर्के सिंहनाद करने लगे, तदुत्तर शूरोंके धनु, शर औ शत २ मनुष्योंके मस्तक छेदन कर दिये, शतशत अश्व निहत होने लगे, शत २ गज औ गजारोही धराशायी होने लगे, शत२ कालकवलित अश्व, गज औ भग्न रथोंसे आकीर्ण हो गया, दुर्योधन भीम औ अर्जुनका महापराक्रम देखके भीष्मके पास चले गए, तथापि कृप प्रभृति वीरोंने रणत्याग नही किया, दोनो कौरवसैन्यको विद्रावित करने लगे तब वीरगण उनके ऊपर अयुत२ औ अर्बुद अर्बुद बाण निक्षेप करने लगे, दोनो भ्राता उन शरोंको निवारण कर्के संहार करने लगे, तब महारथ शल्य क्रुद्ध होके सन्नतपर्व बाणोंसे धनंजयका वक्षःस्थल विद्ध करने लगे, धनंजयने पांच बाणसे शल्यका धनु औ हस्तावाप छेदन कर्के शरोंसे मर्मसे आघात किया, शल्यने अन्य धनु लेके अर्जुनके ऊपर तीन औ वासुदेवके ऊपर पांच बाण मारके भीमसेनका वक्ष औ बाहु विद्ध किया, इतनेमे उसीस्थानमे द्रोणाचार्य औ मगधराज जयत्सेन दुर्योधनके आज्ञासे उपस्थित हुए, जयत्सेनके आठ बाणसे भीमसेनको विद्ध कर्ने पर भीमसेनने जयत्सेनके सारथिको पातित कर दिया, जयत्सेनको उस सारथिरहित अश्वोंने इतस्ततः धावमान होके रणसे दूर कर दिया, तब द्रोणने आठ बाणसे भीमको विद्ध किया, तब धनंजयने सुशर्माको विद्ध कर्के उनकी सेनाको छिन्नभिन्न कर दिया, अनंतर भीष्म, दुर्योधन औ हहदल भीम औ अर्जुनके संमुख हुए, इधर पाण्डव औ धृष्टद्युम्न भीष्मके ऊपर धावमान हुए, शिखंडी भीष्मको प्राप्त होके निर्भयचित्तसे आक्रमण करने लगे, युधिष्ठिर प्रभृति पाण्डव औ सृञ्जय शिखंडीको औ कौरवगण भीष्मको अग्रसर करके घोर युद्ध करने लगे, धृष्टद्युम्नके आज्ञासे सेना सब भीष्मको आक्रमण करने लगी।

इति ११६ अध्याय।

छ०। भीष्मने दसवें दिन पाण्डव औ सृञ्जयसे कैसा युद्ध हुआ? कौरवोंने पाण्डवोंको कैसा निवारण किया?

सं०। कौरवगण अर्जुनके शरजालसे प्राणत्याग औ भीष्मसे पाण्डवोंका बलक्षय होता था, किसी पक्षका जय पराजय निर्द्धारित न हुआ, परंतु दसवें दिन भीष्म औ अर्जुनका अति भयंकर संग्राम हुआ, भीष्मने उस दिन अज्ञात नामगोत्र शतश महायोद्धाओंका संहार किया, भीष्मको दसवें दिन पाण्डव सैन्यको संतापित करके स्वीय जीवनका निर्वेद उपस्थित हुआ, इससे अधिक मनुष्य हत्या करना नही ऐसा मनमे करके समीपवर्ति युधिष्ठिरसे बोले, हे युधिष्ठिर! तुम महाप्राज्ञ औ सर्वशास्त्रविशारद हो, अब हम धर्म औ स्वर्गके उचितवाक्य कहते हैं सुनो, बहुत प्राणिहत्या करनेसे हमको देहके ऊपर निर्वेद उपस्थित हुआ है, इस लिये तुम हमारा प्रिय चाहते हो तो पांचाल औ सृञ्जयोंके साथ अर्जुनको आगे करके हमारे प्राण संहारमे यत्नवान् हो, सत्यदर्शी युधिष्ठिर भीष्मका अभिप्राय जानके धृष्टद्युम्न औ सृञ्जयोंके सहित सेनाको प्रेरण करते कहने लगे, हे सैन्यगण! धावमान हो, भीष्मसे युद्ध करके जय लाभ करो, धनंजय, धृष्टद्युम्न औ भीमसेन तुम लोगोंकी रक्षा करेंगे, हे सृञ्जयगण! भीष्मसे कुछ भय नही है, हम लोग शिखंडीको आगे करके भीष्मका पराजय करेंगे, ऐसा कहके शिखंडीको आगे करके भीष्मके संहारमे यत्नकी पराकाष्ठा करने लगे, उस समय असंख्य भूपति, द्रोण, अश्वत्थामा औ दुःशासन भीष्मकी रक्षा करते थे, अनंतर वह सब भीष्मको आगे करके शिखंडी औ पाण्डवोंको आक्रमण करने लगे, धनंजय शिखंडीको आगे करके चेदि औ पांचालोंके साथ भीष्म सात्यकी अश्वत्थामाके, धृष्टकेतु पौरवके, युधामन्यु दुर्योधनके, विराट जयद्रथके, युधिष्ठिर शल्यके, भीमसेन गजसैन्यके औ

धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्यके संमुख धावमान हुए, इल्वल अभिमन्युके ऊपर धावमान हुए, धार्तराष्ट्रगण शिखंडी औ धनंजयको आक्रमण करने लगे, इस प्रकार परस्पर मिलित होनेसे धरा कम्पित होने लगी, सूर्य प्रभा रहित हो गए, धूलिपटल उड्डीन हुआ, दोनो पक्ष परस्पर संहारमें उत्सुक होय भीष्मके निमित्त महा संग्राम करने लगे।

इति ११७ अध्याय।

हे महाराज! अभिमन्यु भीष्मके निमित्त महती सेना लेके दुर्योधनसे युद्ध करने लगे, दुर्योधनने क्रुद्ध होके अभिमन्युके वक्षमें नव आनतपर्व बाणाक्षेप करके पीछे तीन बाणसे विद्ध किया, अभिमन्युने कुपित होय दुर्योधनके रथपर शक्ति निक्षेप किया, दुर्योधनने खण्ड खण्ड कर दिया, तब दोनोका घोर संग्राम होने लगा, अश्वत्थामाने सात्यकीको विद्ध किया औ सात्यकीने उसका मर्मभेद किया, पौरव औ धृष्टकेतु परस्पर क्षतविक्षत करने लगे, अन्तमें दोनो विरथ हो खड्गचर्म लेके भूतलमें युद्ध करने लगे, दोनो विचित्र मंडलगतिसे प्रहार करने लगे, पौरवने तिष्ठ, तिष्ठ कहके धृष्टकेतुके ललाटमें खड्ग प्रहार किया, औ धृष्टकेतुने पौरवके जत्रुमें खड्गाघात किया, तब दोनो भूतलमें निपतित हुए, आपके पुत्र जयत्सेनने पौरवको स्वरथ पर लेके दूर कर दिया, औ सहदेवने धृष्टकेतुको स्वरथमें लेके दूर कर दिया, इन्द्रने जैसे पर्वतोंको विदारित किया था वैसही भीमसेन गजसैन्यको विदारित करने लगे, पर्वताकार मातंग सब निपतित होने लगे, इतस्ततः राशि राशि गजोंसे विकीर्ण हो गया, युधिष्ठिर सेनाके साथ शल्यको पीड़ित करने लगे, जयद्रथसे औ विराटसे विचित्र युद्ध होने लगा, द्रोणाचार्यने अरवर्षण करते हुए, धृष्टद्युम्नका

धनु छेदन कर दिया, तब धृष्टद्युम्नने गदा प्रक्षेप किया, द्रोणने उसको खंड कर दिये, तब उन्होंने शक्ति प्रक्षेप किया द्रोणने उसकोभी छेदन कर दिया, इस प्रकार द्रोण धृष्टद्युम्नको पीड़ित करने लगे, इधर धनञ्जय भीष्मको शरजालसे पीड़न करने लगे, तब भगदत्त अर्जुनके ऊपर धावमान हुए, धनंजयने भगदत्तके गजको विद्ध करके चलो चलो भीष्मका वध करें कहके शिखंडीको नियोग करने लगे, भगदत्त अर्जुनको छोड़के द्रुपदके ऊपर धावमान हुए, अर्जुन शिखंडीको आगे करके भीष्मके संमुख हुए, तब कौरवसैन्य अर्जुनके ऊपर धावमान हुआ, अर्जुन उनको विद्रावित करने लगे, और शिखंडी भीष्मको शरजालसे आच्छादित करने लगे, भीष्म क्रोधसे अधीर होय सोमकसैन्य विदारण करने लगे, रथी, अश्व, गज औ मनुष्य निपतित होने लगे, देह, बाहु औ मस्तकोंसे रणस्थल पूर्ण हो गया, सहस्रर चेदि, काशि औ करूषक प्राणत्याग करने लगे, उस समय शिखंडी, औ अर्जुन भिन्न कोई उनके संमुख न रह सका।

इति ११८ अध्याय ।

शिखंडीने भीष्मके वक्षस्थलमें दश बाण निक्षेप किये, भीष्म क्रुद्ध होके केवल दृष्टिपातसे उनको दग्ध करने लगे, तब अर्जुन बोले, हे शिखंडी ! भीष्मके ऊपर धावमान हो, दुसरा कुछ कार्य नही है, भीष्मका वध करो, हम सत्य कहते हैं कि युधिष्ठिरके पक्षमें तुम्हारे बिना कोई भीष्मका प्रतियोद्धा नही है, शिखंडीने अर्जुनका वाक्य सुनके विविध बाणोंसे भीष्मको आकीर्ण कर दिया, भीष्म शिखंडीके ऊपर दृष्टिपात करके क्रोधसे अर्जुनको निवारण औ सैन्यको यमालयमें प्रेरण करने लगे, पाण्डवगण महती सेना लेके भीष्मको वेष्टन करने लगे, उस समय

दुःशासनने अद्भुत पराक्रम प्रकाश पूर्वक अर्जुनको निवारण करके भीष्मकी रक्षा करने लगे, पाण्डवोंमे कोई उनका निवारण कर सका नही, दुःशासनने रथियोंको विरथ, अश्वारोही औ मातंगारोहीको धराशायी कर दिया, अर्जुन भिन्न कोई उनके संमुख न हुआ, शिखंडी वज्रतुल्य बाणोंसे भीष्मको बिद्ध करने लगे, भीष्म उससे कुछभी व्यथित न हुए औ हास्य करने लगे, वारिधारा समान शिखंडीकी शरधारा ग्रहण करने लगे, औ पाण्डवसैन्यको दग्ध करने लगे, अनंतर दुर्योधन कहने लगे,हे सैन्यगण! धनंजयको आक्रमण करो, भीष्म तुमलोगकी रक्षा करेंगे, हे भूपतिगण! भीष्म सबके रक्षक हैं, उनका इन्द्रभी पराजय नही कर सकते, पलायन मत करो, दुर्योधनकी आज्ञा होतेही विदेह, कलिंग, दशेरक, निषाद, सौवीर, बाल्हीक, दरद, प्रतीच्य, मालव, अभीषाह, शूरसेन, शिवि, वसाति प्रभृति वीरगण अर्जुनके ऊपर धावमान हुए, महाबल धनंजय ध्यान पूर्वक दिव्यास्त्रोंका संधान करके अस्त्र समूहोंसे उन महारथोंको दग्ध करने लगे, सहस्र सहस्र बाणोंसे ध्वज, मस्तक, रथ, गज, अश्व, सारथि, मनुष्य, आयुध औ अलंकार छिन्न भिन्न होय भूतलमे निपतित होने लगे, अवशिष्ट सैन्य पलायन करने लगा, धनंजय इस प्रकार सैन्यभग्न करके दुःशासनको विरथ कर दिया, तदुत्तर विविंशति,कृप,शल्य, विकर्ण औ शाल्वको असंख्य बाणोंसे बिद्ध करके विरथ कर दिया, कृप, शल्य, विकर्ण, विविंशति औ दुःशासन विरथ औ पराजित होके पलायन करने लगे, महावीर धनंजय अनवरत शरनिकर वर्षण पूर्वक अन्यान्य पार्थिवोंका संहार करके रुधिरनदी प्रवाहित कर दिया, समरांगण भयंकर हो गया।

अनंतर दिव्यास्त्र निक्षेप करते हुए भीष्म अर्जुनके ऊपर धावमान हुए, तब शिखंडीने उनको आक्रमण किया, भीष्मनेभी

तत्त्वणही वह अग्नि सदृश दिव्यास्त्रका उपसंहार किया, इतने अवकाशमें धनंजयने असंख्य कौरव सैन्यका संहार किया।

इति ११८ अध्याय।

हे राजन्! सकलही जीविताशा त्याग करके स्वर्गलाभमें कृतनिश्चय होय युद्ध करने लगे, रथि रथिसे, पदाति पदातिसे, अश्व अश्वसे, औ गज गजसे मिलित होय उन्मत्तके तुल्य युद्ध करने लगे, अनंतर शल्य, कृप, विकर्ण, चित्रसेन औ दुःशासन रथारूढ़ होय सेना कंपित करते धावमान हुए, इधर भीष्म पाण्डवसैन्यके मर्मभेद करने लगे, धनंजयभी मातंगोको निपातित औ नाराचोंसे वीरोंको मर्दित करने लगे, पाण्डवोंके सेनापति सोमक औ सृञ्जयोंसे कहने लगे, हे सोमक! हे सृंजय! भीष्मको आक्रमण करो, सोमक औ सृंजय सेनापतिके कहनेसे भीष्मको आघात करने लगे, भीष्मभी क्रुद्ध होय उनसे युद्ध करने लगे, महावीर भीष्मने पहिले परशुरामसे जो परसैन्यविनाशिनी अस्त्र शिक्षा लाभ किया था, उससे प्रतिदिन दश सहस्र सैन्य संहार किया, दसवें दिनके युद्धमें एकाकी भीष्मने पांचाल औ मत्स्योंके दश सहस्र रथी, दश सहस्र अश्व, विराटके भ्राता शतानीक औ अन्यान्य सहस्र सहस्र भूपतिगणको भल्लोंसे निपातित किया, जो जो राजा धनञ्जयके पार्श्ववर्त्ती थे वह सकल निपातित हुए, तदुत्तर शरवर्षण पूर्व्वक पांडवसैन्यको चतुर्दिक् आच्छन्न करके दग्ध करने लगे।

वासुदेव भीष्मका पराक्रम देखके धनञ्जयसे बोले, हे धनञ्जय! भीष्मको बल पूर्वक निहत करनेहीसे जय लाभ होगा, इस लिये जहां सेना छिन्न भिन्न हो रही है, वहीं उनको स्तम्भित करो, तुम्हारे विना कोई उनके शरसे रक्षा न कर सकेगा, धनञ्जयने कृष्णके नियोगानुसार भीष्मका ध्वज, रथ औ

अस्त्रोंसे सहित शरजालसे आच्छादित कर दिया, भीष्मनेभी अर्जुनके सब शर खण्ड खण्ड कर दिये, द्रुपद, धृष्टकेतु, भीमसेन, धृष्टद्युम्न नकुल, सहदेव, चेकितान, पांचो कैकय, पांचो द्रौपदेय, सात्यकी, अभिमन्यु, घटोत्कच, शिखण्डी, कुन्तिभोज, विराट, सुशर्मा औ अन्यान्य वीर सब भीष्मके सायकोंसे निपीड़ित हुए तब धनञ्जयने अस्त्रजालसे उनका उद्धार किया, अनन्तर शिखण्डी अति उत्कृष्ट आयुध लेके भीष्म पर धावमान हुए, रणवित् धनञ्जय भीष्मके अनुचरोंका संहार करके शिखण्डीके रक्षणार्थ भीष्मके ऊपर धावमान हुए, सात्यकी प्रभृति वीरगण धनञ्जयकी रक्षा करने लगे, तीक्ष्ण शस्त्रोंसे भीष्मको आघात करने लगे, भीष्म उन सभोंके अस्त्र निवारण करके शरजाल वर्षण करने लगे, शिखण्डीको स्त्री रूप स्मरण करके वारम्वार हास्य करने लगे, उनके ऊपर एकभी शर निक्षेप न करते द्रुपद सैन्य पर शरक्षेप करने लगे, तब पाण्डवपक्षीय सबही वीर एकमात्र भीष्मके ऊपर शरजाल प्रहार करने लगे, धनञ्जय शिखण्डीको आगे करके शरक्षेप करने लगे।

इति १२० अध्याय।

हे महाराज! इस प्रकार समस्त पाण्डव औ सृञ्जय एकत्र होके शिखण्डीको अग्रसर करके भीष्मके वेष्टन पूर्वक शतघ्नी, परिघ, परशु, मुद्गर, मुसल, प्रास, क्षेपणीय, शर, शक्ति, तोमर, कम्पन, नाराच, वत्सदन्त, औ भुशुण्डी समूहसे उनको आघात करने लगे, उससे उनका तनुत्राण विशीर्ण औ मर्मभेद हुआ, तो भी वह अधीर न हुए, प्रत्युत क्रोधसे प्रज्वलित हो उठे, तदनन्तर उस रथ मण्डलसे वहिर्गत होय शत्रुसेनामें विचरण करने लगे, धृष्टद्युम्न, सात्यकी भीम अर्जुन औ द्रुपद प्रभृति वीरोंको आघात करने लगे, सात्यकी प्रभृति छः वीर उनके

शर निराकरण करके उनको मर्दन करने लगे, शिखण्डीने जो तीक्ष्णशर निक्षेप किये वह सब उनके शरीरमे प्रविष्ट हो गए, अर्जुनने शिखण्डीको आगे करके भीष्मका धनु छेदन कर दिया, द्रोण, कृतवर्मा, जयद्रथ, भूरिश्रवा, शल, शल्य औ भगदत्त यह सात वीर भीष्मका धनुछेद न सहके दिव्यास्त्रोंसे अर्जुनको आच्छादन करने लगे, सात्यकी, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, विराट, द्रुपद, घटोत्कच औ अभिमन्यु यह सात वीर द्रोणप्रभृतिसे मिलित होय लोमहर्षण संग्राम करने लगे, इधर शिखण्डीने छिन्न कार्मुक भीष्मको दश बाणसे औ उनके सारथिको दश बाणसे विद्ध करके उनका ध्वज निपातित कर दिया, भीष्मने अन्य धनु लिया, अर्जुनने उसकोभी छेदन कर दिया, भीष्मने जैवार धनु लिया अर्जुनने तैवार छेदन कर दिया, अन्तमे भीष्मने अर्जुनके ऊपर शक्ति निक्षेप किया, अर्जुनने पांच भल्लोंसे पांच खण्ड कर दिया, जब शक्ति छिन्न हुई तब भीष्म मनमे कहने लगे, यदि वासुदेव पाण्डवोंके रक्षक न होते तो एकमात्र धनुष्यसे उनका संहार करते, परंतु पाण्डव अवध्य औ शिखण्डी स्त्रीरूप इन दो कारणोसे उनसे युद्ध करनेसे हम क्षान्त हुए, पिताने कालीके पाणिग्रहणके समय सन्तुष्ट होके हमको स्वेच्छामरण औ रणमे अवध्यत्व यह दो वर दिये थे, बोध होता है, मृत्युका समय उपस्थित हुआ, तब आकाशस्थ ऋषिगण औ वसुगण भीष्मको कहने लगे, कि हे भीष्म! तुमने जो मनमे स्थिर किया उसीमे हम लोगकी प्रीति है, इस लिये रणकी बुद्धि दूर करके अभिलषित विषयका अनुष्ठान करो, ऐसे ऋषिगणके वाक्यके अन्तमे सुगन्ध वायु प्रवाहित होने लगा, देवदुन्दुभि बजने लगीं, भीष्मके ऊपर पुष्पवृष्टि होने लगी, वह ऋषि वाक्य भीष्म भिन्न किसीने नही सुना, वेदव्यासके प्रसादसे हमने सुना, भीष्म ऋषिगणका वाक्य सुनके सर्वावरण भेदी निशित

शरोंसे क्षतविक्षत होकेभी अर्जुनसे युद्धमे नही प्रवृत्त हुए, शिखण्डीने क्रोधसे भीष्मके वक्षस्थलमे नव बाण निक्षेप किया, भीष्म उससे कुछभी विचलित न हुए महारथ अर्जुनने हास्य करके पहिले पञ्चविंशति क्षुद्रक एकशत शरोंसे भीष्मका सर्वाङ्ग औ सर्व मर्म बिद्ध किया, भीष्मको अन्यान्य वीर जो ताड़न करते थे भीष्म उनके शरोंको निवारण करते उनको आक्रमण करने लगे, अनन्तर अर्जुनने शिखण्डीको आगे करके भीष्मका धनु छेदन कर दिया, तदुत्तर दश बाणसे उनको बिद्ध, एक बाणसे उनका ध्वज औ दश बाणसे उनके सारथिको कम्पित कर दिया भीष्मने अन्य शरासन लिया, अर्जुनने वहभी छेदन कर दिया, भीष्मने जितने धनु लिये उतनेही अर्जुनने छेदन कर दिये, तदुत्तर भीष्मने अर्जुनको आक्रमण नही किया, परन्तु अर्जुनने पुनः उनके ऊपर पञ्चविंशति क्षुद्रक निक्षेप किये, महाधनुर्द्धर भीष्म अतिमात्र बिद्ध होके दुःशासनसे बोले, हे दुःशासन! वज्रपाणि पुरन्दर जिनको पराजय नही कर सकते, वह अर्जुन कुपित होके हमारे ऊपर अनेक सहस्र शर निक्षेप करते हैं, अन्य कोई देवदानवभी हमको पराजित नही कर सकता, दुःशासनसे इतना कहते हैं इतनेमे पुनः अर्जुनने शिखण्डीको आगे करके भीष्मको बिद्ध करने लगे, भीष्म उससे अधिक पीड़ित होय पुनः दुःशासनसे कहने लगे, हे दुःशासन! यह वज्रसदृश बाण जो हमारे ऊपर निपतित होते हैं, यह शिखण्डीके बाण नही है, यह हमारे आवरणको भेद करते हैं, यह कदापि शिखण्डीके बाण नही हैं, यह यमदूतके ऐसे बाण हमारे ऊपर गिरते हैं, यह शिखण्डीके बाण नही है, अर्जुनहीके बाण हैं, संदेह नही, गांडीवधारी अर्जुन भिन्न कोई राजा हमको क्लेशित नही कर सकता है, भीष्म यह कहते २ पांडवोको दग्ध करनेके लिये धनञ्जयके ऊपर शक्ति निक्षेप किया, धन-

अयने तत्क्षणाही उसको तीन खंड कर दिये, तब भीष्म जय वा मृत्यु यह मनमे करके खड्गचर्म लेके रथसे उतरने लगे, अर्जुनने हस्तलाघवसे उनके उतरते पहिलेही चर्म शतधा छिन्न कर दिया, तब राजा युधिष्ठिर कहने लगे, हे सैन्यगण! भीष्मको आक्रमण करो, तुमको कुछभी भय नही है, इतना कहतेही सैन्य भीष्मके ऊपर अनेकविध शस्त्र प्रहार करने लगे, धार्त्तराष्ट्र अर्जुनके ऊपर धावमान होने लगे, अर्जुन शर प्रहारसे उनको पीड़ित करने लगे, भीष्मने मर्माहत होकेभी दश सहस्र योद्धाओंको निहत किया; अर्जुन सेनामुखमे अवस्थान करके सैन्यको विद्रावित करने लगे, सैन्य सब अर्जुनसे पीड़ित होके भीष्मके निकटसे दूर न हुए, पाण्डवगण एकमात्र भीष्मके ऊपर शरजाल वर्षण करते हुए, सहस्र सहस्र सैन्यका संहार करने लगे।

हे महाराज! भीष्मका शरीर धनञ्जयके निशित शरोंसे ऐसा बिद्ध हुआ था, कि दो अंगुलभी स्थल अवशिष्ट न रहा, इस प्रकार क्षतविक्षत शरीर भीष्म सूर्य्यास्तके किञ्चित् पूर्व आपके पुत्रोंके समक्ष पूर्वशिरा होके रथसे निपतित हुए, स्वर्गमे देवगण औ मर्त्यलोकमे भूपतिगण उच्चस्वरसे हाहाकार करने लगे, उनको निपतित देखके हम लोगोंका हृदयभी उनके साथ निपतित हुआ, उनके निपतित होनेसे धरा कम्पित होने लगी, वह ऐसे शरजालसे आहत हुए थे, कि निपतित होकेभी पृथ्वीको स्पृष्ट न हुए, शरशय्याहीके ऊपर रह गए, दिव्यभाव उनमे प्रविष्ट हुआ, जलधर वर्षण करने लगे, महावीर भीष्म पतनके समय दिवाकरको दक्षिणदिक्मे देखके उचित समय प्रतीक्षाके लिये पुनः चैतन्य हुए, उस समय अन्तरीक्षसे दिव्य वाक्य उनको श्रुत हुआ कि धनुर्द्धराग्रगण्य भीष्म किस निमित्त दक्षिणायनमे प्राणत्याग करेंगे, भीष्मने

यह दिव्यवाणी सुनके हम जीवित हैं, ऐसा उत्तर दिया, इस प्रकार भीष्म निपतित होकेभी, उत्तरायणकी प्रतीक्षाके लिये प्राणधारण करके रह गए, भगवती भागीरथीने भीष्मका अभिप्राय जानके ऋषिगणको हंसरूपसे उनके निकट प्रेरण किया, हंसरूप ऋषिगण शीघ्र उनके निकट आय प्रदक्षिण करके बोले, भीष्मने क्यों दक्षिणायनमे प्राणत्याग किया, इतना कहके दक्षिणदिक् चले, तब भीष्म बोले, हे हंसगण! हमने मनमे स्थिर किया है, कि उत्तरायण होय पर्यन्त प्राणधारण करेंगे, उत्तरायण होने पर पुरातन स्थानमे उपस्थित होंगे, पिताने स्वेच्छा मरणका वर दिया है, वह अब सफल होगा, यह कहके शरशय्याही पर रह गए, कुरुकुलतिलक अवध्य भीष्म निपतित हुए, तब पाण्डव औ सृञ्जय सिंहनाद करने लगे, दुर्योधन प्रभृति आपके पुत्र औ अन्यान्य क्षत्रिय कर्त्तव्यता मूढ़ होके रोदन, दीर्घश्वास औ स्तब्ध हो गए, उनके युद्धका अभिलाष नष्ट हुआ, अत्यन्त निगृहीत होकेभी पाण्डवो पर धावमान हुए नही, भीमसेन बाहुशब्द करके गर्जन करने लगे तब कोई पलायित हुए, किसीने अस्त्रत्याग किया, कोई चिन्ता करने लगे, कोई मोहाविष्ट हुए, कोई क्षत्रिय धर्मकी निन्दा करने लगे, भीष्म महोपनिषद् विहित योगाश्रय पूर्वक जपमे प्रवृत्त होय समय प्रतीक्षा करने लगे।

इति १२१ अध्याय।

धृ०। महाबल देवकल्प पिताके लिये ब्रह्मचारी भीष्म निहत हुए तब योद्धाओंका मन कैसा हुआ? जब घृणासे शिखण्डीके ऊपर भीष्मने शरक्षेप न किया तबही हमने जाना कि कौरव पाण्डवोंसे निहत होंगे इससे औ दुःखकी कथा क्या है, हमारा हृदय प्रस्तरकेभी दृढ़ है यह सुनकेभी विदीर्ण

नही होता है, जो होय, भीष्मके निपतित होने पर क्या हुआ ? सो कहो ।

स० । भीष्मके पतन होने पर कौरवोंके दुःखकी औ पाण्डवोंके हर्षकी सीमा न रही, ऋषिगण आकाशसे भीष्मकी स्तुति करने लगे, तदुपरांत दुःशासन दुर्य्योधनकी आज्ञासे द्रोणकी सैन्याभिमुख गमन करने लगे, कौरवगण यह क्या कहेंगे ऐसा मनमे करके उनको वेष्टन करने लगे, अनंतर उन्होंने द्रोणसे भीष्मके निधनकी वार्ता कहा, द्रोण वह अप्रिय संवाद सुनके सहसा रथमे निपतित हुए, क्षणमात्र संज्ञा लाभ करके सैन्यको युद्धमे निवृत्त करने लगे, पांडवोंनेभी कौरवोंको निवृत्त देखके द्रुतगामी अश्वारूढ़ दूतोंसे स्वीय सैन्यकोभी निवृत्त किया, सैन्यगण निवृत्त हुए, तब भूपतिगण कवच परित्याग करके भीष्मके निकट गमन करने लगे, योद्धागणभी उनके निकट गमन करने लगे, कौरव औ पांडव उनके निकट हो अभिवादन पूर्वक खड़े रहे, तब भीष्मने उनका स्वागत करके कहा कि, हे भूपतिगण ! हमारा मस्तक लंबमान होता है, इस लिये उपधान देओ, तब भूपतिगण शीघ्र कोमल सूक्ष्म उपधान आनयन करने लगे, तब भीष्म अर्जुनके ऊपर दृष्टिपात करके बोले, हे धनंजय ! वत्स ! हमारा मस्तक लंबमान होता है, उपयुक्त उपधान देओ ।

इति १२२ अध्याय ।

धनंजय गांडीव रखके अभिवादन पूर्वक अश्रुपूर्णनयनसे बोले, हे पितामह ! हम आपके भृत्य हैं, क्या आज्ञा है, भीष्म बोले, वत्स ! हमारा मस्तक लंबमान होता है, उपयुक्त उपधान देओ, धनंजय तथास्तु कहके गांडीवको आमन्त्रण औ सन्नत पर्व्ववाण लेके भीष्मको अभिवादन करके तीन शर क्षेप किया,

वह तीनों शर उनके मस्तकमें बिद्ध होय उपधान रूप हो गए, धनंजयने अभिप्राय जाना इससे भीष्म अति संतुष्ट हुए, सकलके ऊपर दृष्टिपात करके धनंजयसे बोले, हे धनंजय! तुमने शय्या-नुरूप उपधान दिया, यदि ऐसा न करते तो हम क्रुद्ध होके शाप देते, इतना कहके राजगणसे बोले, हे राजगण! देखो धनंजयने शय्यानुरूप उपधान दिया, सूर्य्यके उत्तरायण होने पर्य्यन्त इसी शरशय्या पर शयन करेंगे, धर्मनिष्ठ क्षत्रियका यही धर्म है, जब दिवाकर उत्तरायणमें होंगे तब जो हमारे पास आवेंगे, सो देखेंगे, हम प्राण विसर्जन करेंगे, अब इस हमारे वासस्थानमें चतुर्दिक् परिखा खनन कर देओ, हम दिवाकरकी उपासना करेंगे, तुम लोग वैरभाव त्याग करके युद्धसे निवृत्त हो।

अनन्तर शल्योद्धारण कुशल चिकित्सक सर्व उपकरणसहित वहां उपस्थित हुए, भीष्म उनको देखके बोले, हे दुर्योधन! सत्कार पूर्वक धन देके वैद्योंको विदा करो, हम क्षत्रियधर्मकी प्रशंसनीय परमगति लाभ किया है, चिकित्सकोंका प्रयोजन क्या है, तुम लोग हमको इन शरोंके सहित दग्ध करो, दुर्य्योधनने भीष्मके वाक्यसे सत्कार पूर्वक धन देके वैद्योंको विदा किया, भीष्मका इस प्रकार अवस्थान देखके सबही विस्मयापन्न, हुए, अनन्तर सब भीष्मको प्रदक्षिणा करके स्वस्व स्कंधावारमें गमन करने लगे, पांडवगण हर्षसे शिविरमें जाय उपविष्ट हुए तब वासुदेव बोले, हे महाराज! यह परम भाग्यका विषय है, जो भीष्मको निपतित किया, भीष्म देव औ मनुष्य सबसे अवध्य थे, केवल तुम्हारे कोपदृष्टिहीसे दग्ध हुए।

युधिष्ठिर बोले, हे वासुदेव! हम लोगोंने तुम्हारे प्रसाद हीसे जय लाभ किया है, तुम हमारे शरण्य औ भक्तोंके अभय दाता हो, तुम जिसके रक्षक औ हितकारी हो, उसका जय होना असंभव नहीं है, तुम्हारे लाभसे कुछभी

विस्मयकर नही है, जनार्द्दन हास्य करके बोले, हे महाराज! ईदृश वाक्य आपहीके उपयुक्त है।

इति १२३ अध्याय।

सं०। प्रातःकाल हुआ तब कौरव पांडव औ अन्यान्य पार्थिवगणने भीष्मके निकट जाय अभिवादन किया, सहस्र सहस्र कन्यागण वहां आयके भीष्मके ऊपर चन्दनचूर्ण लाजा औ माल्य प्रक्षेप करने लगी, जैसा प्राणि सूर्य्यकी उपासना करते हैं, वैसे ही स्त्री बालक, वृद्ध औ अन्यान्य दर्शकगण पितामहके समीप उपस्थित हुए, वादक, गणिका, वाराङ्गना, नट, नर्त्तक औ शिल्पी सब भीष्मके निकट उपस्थित हुए, कौरव औ पांडव यथः क्रमसे समीप उपविष्ट हुए भीष्म अस्त्रसंतापित होयकेभी धैर्य्यसे वेदना संवरण पूर्व्वक भुजङ्गके समान श्वासत्याग करते हुए, भूपति गणको देखके जलकी प्रार्थना करने लगे क्षत्रियगण नानाविध खाद्यसामग्री औ शीतल पूर्णकुम्भ आनयन किये, भीष्म वह जल देखके बोले, हे भूपालगण! हम शरशय्या पर शयान होके मनुष्य लोकसे निष्क्रान्त हुए हैं, केवल सूर्य्यकी प्रतीक्षा करते हैं, इस लिये मनुष्योचित भोग ले सकते नही, यह कहके भूपालोंकी निन्दा करते हुए बोले, हम अर्जुनको देखनेकी इच्छा करते हैं, इतना कहतेही अर्जुन उनके समीप जाय अभिवादन करके बोले, हे पितामह! क्या करना होगा, भीष्म अर्जुनको प्रणतभावसे स्थित देखके प्रीति पूर्व्वक बोले, धनंजय! तुम्हारे शरजालसे हमारा शरीर दग्ध होता है, मर्म्म सब व्यथित औ मुख शुष्क होता है, तुम समर्थ हो इससे हमको पानीय देओ, अर्जुन तथास्तु कहके रथ पर आरोहण औ गांडीव पर ज्यारोपण करके आकर्षण करने लगे, समस्त सैन्य औ पार्थिवगण वज्र तुल्य उनकी ज्यातलका निर्घोष सुनके चकित होय उठे, धनंजय भीष्मको

प्रदक्षिण करके प्रदीप्त शरका संधान, आमन्त्रण औ पर्जन्यास्त्र संयोजन पूर्वक सकल लोकके समक्ष भीष्मके दक्षिणपार्श्वमे पृथ्वीको विद्ध किया, अनन्तर उसी स्थानमे अमृत तुल्य, दिव्य गन्ध, दिव्यस्वादु औ अति शीतल जलधारा उत्पन्न हुई, धनं-जयने उससे दिव्य पराक्रम भीष्मको परितृप्त किया, सब लोक अर्जुनका दिव्यकर्म देखके अतिशय विस्मयापन्न हुए, ऐसे उद्भ्रान्त हुए, कि उनके उत्तरीय वस्त्र स्रस्त हो गए, कौरवगण कम्पित होने लगे, चतुर्दिक् शंख दुन्दुभी बजने लगी ।

भीष्म तृप्त होके पार्थिवोंके संमुख अर्जुनका सम्मान करके बोले, धनञ्जय ! जो कार्य तुमने किया, सो विचित्र नही है, कारणकी नारदने तुमको पूर्वतन ऋषि कहा था, देवराज इन्द्र देवगण सहित एकत्र होके जो कार्य न कर सकेंगे, सो कार्य तुम वासुदेवकी सहायतासे करोगे, धनुर्द्धरोंमे तुमसे श्रेष्ठ कोई नही है, जैसे पक्षियोंमे गरुड़, चतुष्पदोंमे गौ, जलाशयोंमे सागर, गिरियोंमे हिमालय वैसेही तुम धनुर्द्धरोंमे श्रेष्ठ हो, हम दुर्य्योधनको बारंवार कहते हैं, विदुर, द्रोण, बलदेव, वासुदेव औ संजयने पुनः पुनः कहा था, परंतु विपरीत बुद्धि अचेतन शास्त्रत्यागी दुर्य्योधनने वह सुना नही औ उसपर श्रद्धाभी किया नही, इस लिये वह थोड़ेही दिनमे भीमसेनके बलसे अभिभूत औ निहत होके शयन करेगा ।

राजा दुर्य्योधन भीष्मका वाक्य सुनके अति दुःखित हुए, वह देखके भीष्म बोले, दुर्य्योधन ! क्रोध त्याग करो, धनंजयने शीतल अमृतगंधी जलधारा उत्पन्न किया सो देखा, इस धरा-मंडलमे ऐसाकार्य करने वाला कोई नही है, इस मनुष्यलोकमे कृष्ण औ अर्जुन भिन्न कोई आग्नेय, वारुण, सौम्य, वायव्य, वैष्णव ऐन्द्र, पाशुपत, पारमेष्ठ्य, प्राजापत्य, धात्र, त्वाष्ट्र, सावित्र, औ वैवस्वत अस्त्र नही जानते हैं, अधिक क्या कहे सुरासुरभी

धनञ्जयका पराजय नही कर सकते हैं, इस लिये अमानुषकर्मा, सत्यवादी, शौर्यशाली सव्यसाचीके साथ तुम्हारा संधि होय महाबाहु कृष्ण स्वाधीन रहते रहते धनञ्जयके साथ तुम्हारा संधि होय. तुम्हारे हतावशिष्ट भ्राता औ भूपालगण निहत न होते होते, कोपोद्दीप्त युधिष्ठिरके दृष्टिसे सैन्य दग्ध न होते होते औ भीमसेन, नकुल औ सहदेवसे तुम्हारा सैन्य नष्ट न होते होते तुम्हारा धनञ्जयसे संधि करना उपयुक्त है, हमारे निधनहीसे युद्ध अवसान होय, हे धार्मिक! हमारे वाक्यमे तुम्हारी रुचि होय, पांडवोंसे तुम्हारा सौहार्द होय, हम तुम्हारे वंशके लिये क्षेमंकर बोध करते हैं, मित्रद्रोही पार्थिवोंके जघन्य होके पापीयसी कीर्ति भोग मत करो, यदि समयोचित वाक्य ग्रहण न करोगे तो हम सत्य कहते हैं तुम परितापित औ नष्ट होगे, हे महाराज! शल्यसंतप्त भीष्म यह कहके वेदनासंवरण पूर्वक आत्माको योगयुक्त करके तुष्णींभूत हुए, मुमुर्षुको औषध पर रुचि नही होती है वैसही आपके पुत्रको उनके धर्मार्थयुक्त हितकर वाक्यपर अभिरुचि न हुई।

इति १२४ अध्याय।

भीष्म तूष्णींभूत हुए तब पार्थिवगण स्वस्व शिबिरमे गए, अनंतर पुरुषश्रेष्ठ कर्ण भीष्मकी मृत्युसे किंचित् भीत होके शीघ्र उनके निकट जाय चरण पर मस्तक रखके बोले, हे कुरुश्रेष्ठ! जिनको देखके प्रतिदिन आप द्वेष करते थे, हम वही राधेय है, भीष्म यह सुनके बलपूर्वक नेत्र उन्मीलित करके शनैः शनैः दृष्टिपात करने लगे, वहां किसीको न देखके रक्षकको दूर करके एकहस्तसे कर्णको आलिङ्गन करके सस्नेह वचनसे बोले, हे कर्ण! तुम हमारे विरोधी होके सर्वदा स्पर्द्धा करते थे, इस समय हमारे पास न आवते तो तुम्हारा मंगल न होता, हमने नारद

औ व्यासके मुखसे सुना है, तुम कुंतीनन्दन हो राधेय नही, अधिरथ तुम्हारा पिता नही है, इसमे संदेह नही है, हम सत्य कहते हैं, तुम्हारा हम द्वेष नही करते थे, तुम अकारण पाण्डवोंकी निन्दा करते थे इससे तुम्हारा तेज हत करनेके लिये परुष वाक्य कहते थे, नीचाश्रय, मात्सर्य औ धर्मलोप कर्के तुम्हारा जन्म हुआ उससे तुम्हारी बुद्धि गुणिजन विद्वेषिनी हुई, इसीसे कुरुसभामे वारंवार तुमको रूक्ष वाक्य कहते थे, हम तुम्हारा दुर्विषह वीरत्व, ब्रह्मनिष्ठता, औ दानशौण्डता जानते हैं, केवल कुलभेदके लिये कहते थे, तुमभी अर्जुन औ वासुदेवके तुल्य हो, तुम्हारे ऊपर जो क्रोध था सो आज अपगत हुआ, हमारा अभिलषित चाहो तो पांडवोंसे वैरभाव दूर करो, युद्ध समाप्त होय भूपतिगण कुशलसे स्वस्व स्थानमे जांय।

कर्ण बोले, हे महाबाहो! आपने जो कहा वह सब यथार्थ हैं, इससे कुछ संशय नही है, हम यथार्थ कौन्तेय हैं सूतपुत्र नही हैं, परन्तु कुन्तीने हमारा त्याग किया, सूतके द्वारा बर्द्धित हुए, तदुत्तर दुर्य्योधनके समृद्धिका भोग किया, यह कदापि मिथ्या कर सकेगे नही, जैसे दृढ़व्रत वासुदेव पांडवोंके लिये धन, शरीर, पुत्र, दारा औ यशका त्याग किया है, वैसही हमने दुर्य्योधनके लिये त्याग किया है, क्षत्रियोंको व्याधि मरण नही है, पांडवगण दुर्य्योधन पर नितांत कुपित हुए हैं, इस लिये अवश्यंभावी व्यापार किसीसे निवारित होता नही, दैव कापुरुषकारसे अतिक्रम नही होता है, आपनेभी पृथ्वीक्षयसूचक निमित्त सब देवके सभामे कहाथा, हमभी जानते हैं, कि वासुदेव औ धनंजयको कोई पराजय कर सकता नही, तथापि हम उनसे युद्ध करनेमे कृतनिश्चय हुए हैं, यह दारुण वैरभाव किसी प्रकार निराकृत होगा नही, अतएव हम स्वधर्म्मसे प्रीत

होके धनंजयसे युद्ध करनेमें कृतनिश्चय हुए हैं, आप आज्ञा दीजिये, आपसे अनुज्ञात होके युद्ध करेंगे, हमने आपको क्रोध औ चपलतासे जो कुछ कहा होगा सो चमा कीजिये।

भीष्म बोले, हे कर्ण! यदि दारुण वैरभाव निराकृत कर न सको तो आज्ञा देते हैं, युद्ध करो, दीनता औ क्रोध त्याग करके स्वर्गकाम होके युद्ध करो, युद्ध भिन्न चत्रियको अन्य शुभ कर्म कुछ नहीं है, क्या कहें संधि करनेकी हमारी इच्छा अतिशय थी परन्तु कृतकार्य्य न हुए।

संजय बोले, हे महाराज! भीष्मका यह सुनके राधेय उनको अभिवादनपूर्वक प्रसन्न करके दुर्योधनके निकट उपस्थित हुए।

इति १२५ अध्याय।

भीष्मबध पर्वाध्याय समाप्त।

भीष्मपर्व सम्पूर्ण हुआ।

संवत् १९२१ मिति अधिक आषाढ़
कृष्ण १० वृहस्पतिवार शुभमस्तु शम्।

महाभारत।

द्रोणपर्व

—०—

द्रोणाभिषेक पर्वाध्याय।

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत्॥

जा०। सत्व, तेजस्विता, बल, वीरत्व औ पराक्रममें अद्वितीय भीष्म निहत हुए सुनके धृतराष्ट्र औ उनके पुत्रोंने क्या किया? सो कहिये।

वै०। राजा धृतराष्ट्रने भीष्मका बध सुनके अतिशय शोकाकुल हुए, इतनेमें रात्रि उपस्थित हुई, तब सञ्जय शिविरसे हस्तिनापुरमें जाय धृतराष्ट्रके निकट उपस्थित हुए, सञ्जयके आवतेही उन्होंने पूछा कि सञ्जय! कालप्रेरित कौरवोंने भीष्मके बधसे शोकाकुल होय क्या किया, सो कहो।

सञ्जय बोले, महाराज! भीष्मके निहत होने पर कौरव औ पाण्डव पृथक् पृथक् चिन्ता करने लगे, कौरव विस्मयसे औ पाण्डव हर्षसे चत्रधर्मानुसार पितामहको प्रणाम करके संनत पर्व शरजालसे उनको उपाधान सहित शय्या प्रस्तुत करके चतुर्दिक् रक्षक नियुक्त किये, तदुत्तर उनकी अनुमति लेके प्रदक्षिण पूर्वक क्रोधरक्तनेत्रसे परस्पर दृष्टिपात पूर्वक पुनः युद्धार्थ प्रचलित हुए, पर दिन प्रातःकाल कौरवगण क्रोधपरवश औ कालोपहत होके भीष्मका हितकर वाक्य मानके अस्त्रग्रहण पूर्वक प्रवृत्त हुए, कालसे आहूत कौरव औ अन्यान्य भूपगण अत्यन्त दुर्मनायमान हो गए, पाण्डवोंसे

विदारित होय शरभहत सिंह गिरिकन्दराके तुल्य भीष्म हीन उस भारती सेनामे अश्व, गज, रथ औ वीर विपन्न, दीन औ भीत हो गए ।

अनन्तर कौरवोंने भीष्मतुल्य कर्णका स्मरण किया, जैसा आपद्ग्रस्त पुरुषका मन बन्धुके प्रति धावमान होता है, वैसा उनका मन कर्णके ऊपर धावमान हुआ, तब पार्थिवगण कर्णको अपना हितकारी जानके कर्ण! कर्ण! करके आ-ह्वान करने लगे, औ कहने लगे, कि, कर्ण औ उनके अमा-त्योंने दश दिन युद्ध किया नही, इस लिये उनको शीघ्र आह्वान करने लगे, महाबाहु कर्ण दो रथीके तुल्य रथातिरथके अग्रगण्य औ इन्द्रादिसे युद्ध करनेमे समर्थ थे, तथापि भीष्म उनको अर्द्धरथी कहते थे, इस क्रोधसे उन्होने भीष्मसे कहा था कि, हे भीष्म! तुम जीवित रहते हम कदापि युद्ध करेंगे नही, महायुद्धमे पाण्डव तुमसे निहत हुए तो हम दुर्य्योधनकी अनुज्ञा लेके वनमे गमन करेंगे, अथवा तुम पाण्डवोंसे निहत होगे तो हम एक रथसे तुम्हारे अभिमत रथिगणका संहार करेंगे, इसी लिये कर्णने दश दिन युद्ध किया नही, इस समय कर्णही रक्षा करेंगे यह बोध करके हा! कर्ण! हा! कर्ण करने लगे ।

धृतराष्ट्र यह सुनके सर्पके तुल्य निश्वास त्याग करके बोले, सञ्जय! दुर्य्योधन प्रभृति सब नितान्त कातर औ त्रस्त होके कर्णका स्मरण औ साक्षात्कार किया सो तो उन्होने मिथ्या नही किया? भीष्मके मरणसे जो क्षति हुई सो कर्णने पूरा किया? उन्होने शत्रुगणको भीत औ हमारे पुत्रगणकी जयाशा सफल करनेमे पराङ्मुख नही हुए ।

इति १ अध्याय ।

सं०। भीष्मका निधन सुनके पिता जैसे पुत्रकी रक्षा करते हैं तद्रूप विपद्ग्रस्त कौरवसेनाका परित्राण करेंगे ऐसा उन्होंने उनके निकट जायके कहा, कि हे सैन्यगण! चन्द्रमा जैसे नित्य शशचिह्नसे अङ्कित हैं, वैसही जो धृति, बुद्धि, पराक्रम, ओजस्विता, सत्य, दम, समस्त वीरगुण, दिव्यास्त्र,नम्रता, ह्री, प्रियवादिता औ कृतज्ञता करके निरन्तर अलंकृत औ द्विज-गणके शत्रु निपातन है सो भीष्म जब नष्ट हुए, तब सबही योद्धा नष्ट हुए, अब कल सूर्य्योदय होगा कौन जानता है? इस लिये कर्मके प्रभावसे कोई वस्तु अविनाशी नहीं है, इस प्रकार कर्ण दुर्मना होके गलदश्रुलोचनसे उनको आश्वासन देने लगे, कर्णका वाक्य सुनके सब हाहाकार करने लगे।

अनन्तर पुनः युद्ध करनेमे प्रवृत्त हुए, तब महारथ कर्ण आह्लादकारक वाक्य रथिगणको कहने लगे, हे पार्थिवगण! इस अनित्यजगत्मे सबही निरन्तर मृत्यु,मुखमे धावमान होते हैं, विचार करनेसे हम सब अस्थायी हैं, देखो, अपने रह-तेही गिरितुल्य भीष्म निपातित हो गए औ प्रधान प्रधान वीर नष्ट हुए, सैन्य सब निर्भर पीड़ित हो गया है, शत्रुओंने उनका उत्साहभङ्ग कर दिया है, इस समय कोई पार्थिव अर्जुनको सहन नही कर सकेगा, इस लिये हम आज भीष्मके तुल्य कौरवी सेनाका पालन करेंगे, आज यह भार हमारे ऊपर समर्पित हुआ, जगत् अनित्य है औ रणवीर भीष्म निपातित हुए, इस लिये किसी निमित्तसे हमको भय न होगा, जो होय, इस महायुद्धमे विचरण करके पाण्डवोंको समनसदनमे प्रेरण करके इस जगत्मे यशस्वी परमधन मानके अवस्थान करेंगे, अथवा उनके हस्तसे प्राणत्याग करके युद्धक्षे-त्रमे शयन करेंगे, युधिष्ठिर धैर्य्य, बुद्धि, धर्म औ उत्साह सम्पन्न है, भीमसेन शतमातङ्ग तुल्य पराक्रमी, अर्जुन देव-

राज पुत्र युवा औ यमके तुल्य नकुल सहदेव हैं, इस लिये उनके सैन्यका जय करनी बलहीसे बलका निवारण होता है, हमारा मन शत्रु विनाश औ स्वपक्ष रक्षामे कृतनिश्चय हुआ, आजही शत्रुगणका पराभव प्रतिहत करके उनका पराजय करेंगे, मित्रद्रोह हमको सह्य नही है, सैन्य भग्न होने पर जो स्थित होगा वह हमारा मित्र है, आज हम दुर्य्योधनको शत्रु नष्ट करके राज्यमे स्थापन करेंगे।

हे सूत! अब सुवर्णमय रत्नभूषित विचित्रकवच, सूर्य्य-प्रभ शिरस्त्राण, अग्नि, विष औ भुजङ्ग तुल्य धनु औ षोड़श तूणीर बन्धन कर देओ, दिव्य शर, महती गदा, औ सुवर्ण-खचित शङ्ख ले आओ, सुवर्णमयी नागकक्षा औ इन्दीवर-प्रभ ध्वज विचित्रमालालंकृत करके ले आओ, श्वेतवर्ण हृष्ट-पुष्ट अश्वको मन्त्रपूत जलसे स्नान कराय‌के शीघ्र ले आओ, औरभी जो समरोचित उपकरण हो सो सब संयोजित करो, प्रस्थान कालोचित कांस्य औ हेम घट दधिपूर्ण करके ले आओ, जयभेरी वादन करो।

हे सूत! जहां युधिष्ठिरादि वीर है वहां चलो, जिस सैन्यमे युधिष्ठिरादि हैं, उसकी कृतान्त आप रक्षा करते है, उसका जय करनी भूपालोंको साध्य नही है, तथापि हम संहार करेंगे वा भीष्मके अनुगामी होंगे, अनन्तर सज्जित रथपर आरोहण करके भीष्म जहां थे वहा गए।

इति २ अध्याय।

महाराज! वृत्रासुरसे पराजित इन्द्रके तुल्य सव्यसाचीके दिव्यास्त्रसे निपातित शरशय्यागत भीष्मको देखके रथसे अव-तीर्ण होके शोक मोहाच्छन्न औ वाष्पाकुल नयनसे उनको अभिवादन पूर्वक कृताञ्जलिपुटसे बोले पितामह! आपका

श्रेय होय, हम कर्ण हैं, युद्धमार्गण औ मयन उन्मोलन करके देखिये, आप धर्मपरायण औ दृढ़ हैं, जब आप आहत होके शयान हैं, तब निश्चयही इस लोकमें कोई पुरुषका फलभोग कर सकता नहीं, कुरुगणमें कोशवर्द्धन, सन्नद्धा, व्यूहरचना औ अस्त्रप्रयोगकुशल अन्य कोई नहीं है, आपके शयन करनेसे पाण्डवगण क्रुद्ध होके कौरवोंका क्षय करेंगे, आज धनञ्जय वज्रध्वनितुल्य गाण्डीव निर्मुक्त शरनिकरके शब्दोंसे कौरव औ पार्थिवगणको विवासित करेंगे, धनञ्जय प्रज्वलित अग्नि-तुल्य औ वासुदेव वायुतुल्य हैं, वायु अग्नि जहां जहां गमन करते हैं, वहां वहांके तृण गुल्म द्रुम दग्ध हो जाते हैं।

हे वीर! आपके विना अर्जुनको कोई सह्य कर सकेगा नहीं, जिन्होंने शिवसे वरदान पाया, औ जिनको वासुदेव रक्षा करते हैं, उस धनञ्जयसे युद्ध करके कौन पराजय कर सकता है, आप क्षत्रियान्तक औ आपने देवदानव पूजित परशुरामको पराजित किया है, इस लिये आपकी अनुमतिपावनेसे हम दिव्यास्त्रोंसे पाण्डवोंका क्षय कर सकेंगे।

इति २ अध्याय।

—०—

भीष्मने कर्णका वाक्य सुनके प्रफुल्लचित्तसे देशकालोचित वाक्य बोले, हे कर्ण! जैसा समुद्र सब नदियोंके अवलम्बन हैं, तद्रूप तुम सुहृद्गणके आश्रय हो, अमरगण जैसे इन्द्रके अनुजीवी हैं, वैसे सुहृद्गण तुम्हारे अनुजीवी होंय, तुम शत्रुओंका मन हरण करके मित्रोंको आनन्दित करो, तुमने दुर्य्योधनके हिताभिलाषी होके निजभुजबलसे काम्बोज, गिरिव्रजीय, नग्नजित् प्रभृति भूपालगण, अम्बष्ठ, विदेह, गान्धार, उत्कल, मेकल, पौण्ड्र, कलिङ्ग, निषाद, त्रिगर्त औ वाल्हीकगणको पराजित किया औ हिमालय दुर्गम रण-

निष्ठुर किरातोंको दुर्य्योधनके वशीभूत कर दिये, सो इसकाल तुम उनके आश्रय हो, कौरवोंको आज्ञावर्ती करके दुर्य्योधनको जयशाली करो, दुर्य्योधनके तुल्य तुमभी हमारे पौत्रतुल्य हो, हमलोग अन्यान्य व्यक्तिके तुल्य दुर्य्योधनके अधिकृत हैं, पण्डितलोग परस्पर सहवासहीको योनिसम्बन्धसे अधिक कहते हैं, तुम्हारा औ दुर्य्योधनका वैसही सम्बन्ध है, सो तुमभी दुर्य्योधनके ऐसा ममतासे कौरव सैन्यका पालन करो।

कर्ण भीष्मका यह वाक्य सुनके उनको अभिवादन करके अन्यान्य भूपालोंके निकट जायके सैन्यको प्रोत्साहित करने लगे, दुर्य्योधन प्रभृति कौरवोंने महाबाहु कर्णको सेनाके अग्रसर औ युद्धमें प्रवृत्त देखके उनका पूजन करने लगे।

इति ४ अध्याय।

दुर्य्योधन कर्णको रथारूढ़ देखके प्रफुल्लचित्तसे बोले, हे कर्ण! तुम्हारे सैन्यके रक्षण करनेसे हमलोग सनाथ हो गए, परन्तु जो सामर्थ्यके आयत्त औ हितकर है सो सुनो। भीष्मने सेनापति होके दश दिन रक्षा किया, अब वह सुरलोकमें गये, सो कोई सेनापति करना चाहिये, सेनापति न रहनेसे कर्णधारहीन नौकाके तुल्य सेना यथेच्छ हो जायगी।

कर्ण बोले, राजन्! इस समय सकलही सेनापति होनेकी स्पृहा रखते हैं, इस लिये ऐसा सेनापति होना चाहिये, जो कि बुद्धिमान् व्यूह रचना कुशल समरमें अपरांमुख है, इस लिये सकल योद्धाके आचार्य्य वृद्ध धनुर्धराग्रगण्य द्रोणाचार्य्यही सेनापति होनेके योग्य हैं, उनके सेनापति होनेसे सबही उनके अनुगामी होंगे।

इति ५ अध्याय।

दुर्य्योधन यह सुनके द्रोणाचार्य्यसे बोले, हे आचार्य्य आपही सर्वप्रकारसे श्रेष्ठ हैं, इस लिये आप सेनापति होके स्वपक्ष रक्षण पूर्वक शत्रु संहार कीजिये, आपसे शत्रु युद्ध करेंगे नही, इससे हमलोग अनायास उनका संहार करेंगे, दुर्य्योधनका वाक्य सुनके सबही द्रोणाचार्य्यको जयशब्द देने लगे।

इति ६ अध्याय।

द्रोणाचार्य्य बोले, हे दुर्य्योधन! हम तुम्हारे कहनेसे पाण्डवोसे युद्ध करेंगे, परंतु धृष्टद्युम्नका हम नाश न कर सकेंगे, वह हमारे वधहीके लिये उत्पन्न हुआ है, समस्त सोमगणका विनाश औ अन्यान्य सैन्यसे युद्ध करेंगे, परंतु पाण्डवगण हमसे हर्षित होके युद्ध करेंगे नही।

अनन्तर दुर्य्योधनने आचार्य्यकी अनुज्ञा लेके उनको सेनापति किया, स्वस्तिवाचन पूर्वक उनके अभिषिक्त होने पर सबही वाद्यघोषपूर्व पाण्डवोको पराजित बोध कर्ने लगे।

अनन्तर द्रोणाचार्य्य सेनापति होके सैन्यको व्यूहित कर्ते हुए युद्धार्थ चले, तब जयद्रथ, विकर्ण औ कलिङ्ग उनके दक्षिणपक्षसे हुए, शकुनि अश्वारोही औ गान्धारगणके सहित उनके पक्ष हुए, कृपाचार्य्य, कृतवर्मा, चित्रसेन, विंविशति औ दुःशासन प्रभृति वीरगण उनके वामपक्ष हुए, काम्बोजगण सुदक्षिणको आगे करके शक औ यवनोके साथ उनके प्रपक्ष होके चलने लगे, मद्र, त्रिगर्त, अम्बष्ठ, प्राच्य, प्रतीच्य, उदीच्य, दाक्षिणात्य, मालव, शिवि, सूरसेन, शूद्र, मलद, सौवीर, कितव यह लोग दुर्य्योधन औ कर्णको आगे करके गमन कर्ने लगे, कर्ण सबका बलबर्धन कर्ते आगे आगे चलने लगे, उस समय कौरोको भीष्म मरणको हानी [illegible]

न होने लगी, कर्णको देखके कोई शत्रु समरमें अवस्थान कर सकेगा नहीं ऐसा सब परस्पर कहने लगे, भीष्मने पाण्डवोंकी रक्षा किया था, परंतु कर्ण उनको नष्टही करेंगे, ऐसे सब निश्चित जानने लगे, तब द्रोणाचार्य्यने शकटव्यूह रचना किया।

युधिष्ठिरने क्रौञ्चव्यूह रचना किया, वासुदेव औ अर्जुन कपिध्वज उच्छ्रित करके व्यूहके मुख पर अवस्थित हुए, अर्जुन समस्त योद्धाओंमें श्रेष्ठ, गाण्डीव सब धनुष्योंमें श्रेष्ठ, वासुदेव सब प्राणियोंमें श्रेष्ठ औ सुदर्शन सब चक्रमें श्रेष्ठ, श्वेताश्वसंयुत रथ इन चारो तेजको वहन करके शत्रुगणके संमुख कालचक्रके तुल्य अवस्थान करने लगा, कौरवगणके अग्रसर कर्ण औ पाण्डवोंके अग्रसर अर्जुन यह दोनो परस्पर जातक्रोध होके अवलोकन करने लगे।

अनन्तर द्रोणाचार्य्य सहसा युद्धमें प्रवृत्त होनेसे पृथ्वी कम्पित होने लगी, धूलिसे दिनकर आच्छन्न हो गए, अन्तरिक्ष मेघशून्य होकेभी मांस, अस्थि औ रुधिरवर्षण करने लगा, शतशः गृध्र, श्येन, काक औ कङ्क सैन्यके ऊपर निपतित होने लगे, शृगाल भीषणशब्द करने लगे, वह सब कौरवोंके दक्षिणदिक् गमन करने लगे, इस प्रकार अनेक उत्पात होने लगे।

अनन्तर कौरव औ पाण्डव सेना औ शरशब्दसे जगत् परिपूरित करके युद्धमें प्रवृत्त हुए, द्रोणाचार्य्य शत शत शरोंसे सैन्यको आच्छन्न करते हुए पाण्डवोंके ऊपर धावमान हुए, पाण्डव औ सृञ्जयगणने शरवर्षण पूर्वक उनको ग्रहण किया, द्रोणाचार्य पाण्डव सैन्य औ पाञ्चालगणको छिन्नभिन्न करते हुए क्षणमें भूरि भूरि दिव्यास्त्र छोड़ करके पाण्डव औ सृञ्जयोंको पीड़ित करने लगे, तदुपरि धृष्टद्युम्न उनसे ताड़ित

होय कम्पित होने लगे, तदुत्तर उन्होंने क्रोधसे तीक्ष्ण शर-जालसे द्रोणसैन्यको छिन्नभिन्न करके द्रोणास्त्रका निवारण पूर्वक कौरवोंका संहार करने लगे, द्रोणाचार्य्यने अपने सैन्यको एकत्र करके धृष्टद्युम्नको आक्रमण किया, द्रोणके शरप्रहारसे धृष्टद्युम्न, पाण्डव औ सृञ्जय वारंवार भग्न होने लगे, द्रोण पाण्डवोंके सैन्यमे भ्रमण करने लगे, उनके रथ घोषसे दिङ्‌-मण्डल व्याप्त होने लगा, इस प्रकार सैन्यको विचासित औ निहत करने लगे।

इति ७ अध्याय।

द्रोणाचार्यके अश्व, सारथि औ हस्ती संहार करनेसे पाण्ड-गण व्यथित न होके निवारण करने लगे, अनन्तर युधिष्ठिर धृष्टद्युम्न औ अर्जुनसे बोले, हे धृष्टद्युम्न! हे अर्जुन! तुम लोग सावधानतासे द्रोणाचार्य्यका निवारण करो, तब अर्जुन, धृष्ट-द्युम्न, औ अन्यान्य महारथिओंने द्रोणाचार्य्यका आक्रमण किया, कैकेयगण, भीमसेन, अभिमन्यु, घटोत्कच, युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव, मत्स्य, द्रुपद, शिखण्डी, द्रौपदीके पञ्चपुत्र, धृष्टकेतु, सात्यकी, चेकितान, युयुत्सु, औ पाण्डवोंके अनुयायी सब स्वीय कुलवीर्य्यानुरूपकार्य्य करने लगे, द्रोणाचार्य्यने उनको स्वपक्ष रक्षण करते देखके क्रुद्ध होय वारिवर्षणके तुल्य शरवर्ष-णसे सैन्यको छिन्नभिन्न करदिया, दृद्धहोकेभि युवाके तुल्य रणा-ङ्गणमे विचरण करने लगे, पाण्डवसैन्य त्रिवासित होके पला-यन करने लगे, कोईभी सम्मुख अवस्थिति न कर सका, भीतग-णके आर्त्तनाद होने लगे, द्रोणाचार्य्य पुनः स्वनामोच्चारण पूर्वक शतर शरनिक्षेप करने लगे, इस प्रकार युगान्तकालीन क्रतान्तके तुल्य पाण्डवसैन्यमे विचरण करनेसे मस्तक औ बाहु छिन्न औ निर्मनुष्य रथ होगए, पृथ्वी सब रुधिर कर्दमसे

लुप्त होगई, पाण्डव औ सृञ्जयोंके निकट होय दिव्यास्त्र वर्षण करने लगे, अनन्तर द्रोणाचार्यने कैकेय औ द्रुपदको पीड़ित करके युधिष्ठिरके सैन्यके समीपवर्ती हुए, तब भीमसेन, धनञ्जय, सात्यकी, द्रुपदपुत्रगण, शैव्यनन्दन काशिराज औ शिविने हृष्ट होके सिंहनाद करते हुए शरजालसे उनको आच्छन्न कर दिया, द्रोणाचार्यने स्वर्णपुङ्ख बाणोंसे गज औ अश्वके देह भेदन करके भीमसेनादिको विमर्दन करके अन्तमे सुरलोकमे गमन किया, वह पाण्डवोंके अनेक सहस्र योद्धाओंका संहार करके धृष्टद्युम्नके हस्तसे निपातित हुए, उन्होने पाण्डवकी दो अक्षौहिणी सेना निपातित किया, अन्तमे असङ्ख्य पाञ्चालके हस्तसे निपातित हुए, अनन्तर सैन्यमे घोर नाद उत्थित हुआ, भूतगणके अहो धिक् शब्दसे दिग्विदिक् प्रतिध्वनित होगए, पाण्डवगण जय लाभ करके सिंहनाद करने लगे।

इति ८ अध्याय।

धृ०। पाण्डव औ सृञ्जयोने तादृश अस्त्रनिपुण द्रोणाचार्यको किस प्रकार निहत किया? उनका क्या रथभग्न वा शरासन विशीर्ण होगया? अथवा वह अनवधान होगये? उनके तुल्य अस्त्र औ दिव्यास्त्र तुल्य औ हस्तलाघवकारी अन्य नही कोई, सो ऐसा रहते कैसे निहत हुए? उनका मरण सुनके हमारा शोक शान्त नही होता है, आज हम दिवाकर पतनके तुल्य उनका मरण सुनके हमारा हृदय शतधा विदीर्ण होता है, जो धृष्टद्युम्नका निवारण औ धार्मिकोंकि रक्षा करते, वह दीन दुर्योधनके लिये निहत हुए? जो कदापि व्यथित होते नही, जो समस्त दिव्यास्त्र सहन कर सकते असंख्य शत्रुको संहार करते वह पाण्डवोंके सैन्यसे

उत्तीर्ण न हुए? सकल सैन्यके आक्रमण करनेसे अर्जुनसे रक्षित धृष्टद्युम्नने संहार किया क्या? अथवा धनञ्जयके बाणों से व्यथित हुए, तब धृष्टद्युम्नने पातित किया? जिनका पराभव कोई कर सकता नहीं उनका बध सुनके हमारा मन मोहाक्रान्त होगया है।

इति ८ अध्याय।

राजा धृतराष्ट्र सञ्जयको यह पूछके पुत्रगणके जय लाभमें हताश होके अचेतन भूतलमें निपतित हुए, परिचारकगण उनको व्यजन वीजन औ सुगन्ध शीतलजलसे सेक करने लगे, कामिनीगण उनको मृदुकरतल सेकने लगी, अनन्तर उनका धीरेसे उत्थित करके आसनपर उपविष्ट किया, तदुत्तर कुछ कालमें संज्ञा लाभ करके संजयसे पूछने लगे, जिन्होंने उदित सूर्य्यके समान किरणसे तिमिर नाश पूर्व्वक उन द्रोणाचार्य्यके निकट आगमन किया, जिन्होंने हमारे बहुत वीर निहत किये जिन्होंने एकाकी तीक्ष्णदृष्टिसे दुर्य्योधनके समस्त सैन्यको दग्ध किया, हमारे किस वीरने उन दुर्धर्ष अजातशत्रुका निवारण औ उनके साथ युद्ध किया, जिन अयुत मातङ्गतुल्य बलवानने द्रोणाचार्य्यको निपीड़ित किया, किस किस वीरने उनकी गति रोध किया, जो जलदके समान दीप्तिमान् जो मेघके तुल्य शरवर्षणकारी, जो अन्तकके समान संहारकारी, वह गाण्डीवधन्वा अर्जुन जब आवने लगे तब तुम लोगोंका मन कैसा हुआ? तुम लोगोंमें कोई उनके अभिमुख हुआ था? कोई उनके सम्मुख सकता नहीं, जिसके वासुदेव सारथि उनका पराजय होना कठिन है, जब महावीर नकुल द्रोणाचार्य्यके सम्मुख हुए उस समय किस वीरने उनका निवारण किया? पृथक् पृथक् पांचो भ्राताने द्रोणाचार्य्यको आक्रमण किया, तब कौन

वीर उनके निवारणमें प्रवृत्त हुआ, औ सात्यकी प्रभृति महा-वीरोंको किसने निवारण किया, लोकगुरु सनातन भगवान् वासुदेव जिनके सहाय हैं, उनको कौन पराजय कर सकता है, हमभी भक्तिसे उनके गुण कीर्त्तन करेंगे।

इति १० अध्याय।

हे संजय! हम वासुदेवके गुण कहते हैं सुनो, महात्मा वासुदेवने बाल्यावस्थामें गोपकुलमें बाहुबलका कर्म्म किया सो भुवनत्रयमें ख्यात है, उन्होंने उच्चैःश्रवा तुल्य बलवान् यमुनावासी अश्वराजका बध किया, उन्होंने वृषभरूप दानवका भुजसे संहार किया, उन्होंने प्रलम्ब, नरक, जम्भ, महासुर पीठ सुरतुल्य मुरका नाश किया, उन्होंने जरासन्धरक्षित कंसका नाश किया, अक्षौहिणीपति कंसभ्राता सुनाका नाश किया, उन्होंने पत्नी सहित दुर्वासाकी आराधना करके वर लाभ किया वासुदेवने गान्धारराजकन्याके स्वयम्बरमें सकल भूपालोंको पराजित करके उनसे विवाह किया औ वैवाहिक रथमें भूपा-लोंको योजित करके कषासे ताड़ित किया, महाबल अक्षौ-हिणीपति जरासन्धका बध अन्यसे सहजमें करवाय दिया, युधिष्ठिरकी राजसूयमें अर्घ्यके विवादमें पशुवत् शिशुपालका बध किया, उन्होंने आकाशस्थ दैत्योंका शाल्वरक्षित सौभ नगरको समुद्रमें निक्षिप्त किया, पृथ्वीमें ऐसा कोई भूपाल नहीं है जो उनसे पराभूत न हुआ होय, खाण्डववन दाहकी समय त्रैलोक्य दुर्धर्ष चक्र लाभ किया, उन्होंने गरुड़ पर आरोहण करके अमरावतीको त्रासित करके इन्द्रभवनसे पारिजात आन-यन किया, उन्होंने कौरव सभामें जो अद्भुत कर्म किया, वैसा कोई कर सकेगा नहीं, वासुदेवके आह्वान करनेसे सकल यादव पाण्डवोंके रक्षाके लिये धावमान होंगे, यह होनेसे हमको

सबही संशय होगा, जहां कृष्ण वहां बलरामभी उपस्थित होंगे, सन्देह नहीं, द्विजगण जिनको पिता कहते हैं, वह वासुदेव पाण्डवोंके लिये युद्ध करेंगे तो कोई योद्धा उनके सम्मुख न होगा, यदि पाण्डवोंको कौरवगण पराजित करेंगे तो महाबाहु वासुदेव अस्त्रग्रहण पूर्वक समस्त नरपतिका संहार करके कुन्तीको मेदिनी देंगे, हम किसी प्रकार कौरवोंका जय लाभ देखते नहीं, जो वासुदेव सोई अर्जुन औ जो अर्जुन सोई वासुदेव हैं, अर्जुन अजेय है औ वासुदेव भगवान् है, दुर्योधन दैवदुर्विपाकसे मोहित औ आसन्नमृत्यु होके अर्जुन औ केशवको जाना नहीं, यह दोनो पहिले नरनारायण दोनो एकात्मा द्विधा हुए हैं, उनके इच्छाहीसे संहार हो सकता है, परंतु मानुष देह धारण किया है इस लिये इच्छा करते नहीं, जो होय इस समय दुश्चिंत्य विषय उपस्थित हुआ है, इसका परिहार हो सकता नहीं, सो अब यथार्थ युद्धका वृत्तान्त कहो।

इति ११ अध्याय।

सं०। हमने नेत्रसे जो द्रोणाचार्यका बध देखा है सो कहते हैं सुनिये, द्रोणाचार्य सेनापति होके सैन्यगणके समक्ष दुर्योधनसे बोले, राजन्! तुमने भीष्मके अनन्तर हमको सेनापति पद दिया है उसके अनुरूप फल लाभ करोगे, अब तुम्हारा क्या अभिलाष है सो कहो?

दुर्योधन, कर्ण औ दुःशासन प्रभृति एकत्र होके आचार्यसे बोले, हे आचार्य! यदि आप वर दान करते हो तो युधिष्ठिरको जीवित ग्रहण करके हम लोगोंके निकट ले आओ।

यह सुनके द्रोणाचार्य बोले, हे दुर्योधन! राजा युधिष्ठिर धन्य है, कारण कि उनका संहार न करते जीवित ग्रहण करने

की इच्छा करते हो, क्या आश्चर्य ' धर्मराजका कोई द्वेष्टा नहीं, तुम उनको जीवित रखके कुलकी रक्षा करते हो वा पाण्डवोंका जय करके अन्तमे उनको राज्य देके सौभ्रात्र करनेकी इच्छा करते हो।

यह सुनके दूर्योधन बोले, हे आचार्य ! युधिष्ठिरका संहार करनेसे हमारा जय होगा नही, उनका नाश करनेसे धनञ्जय हम लोगोका सबका नाश करेगा, उन सभोंका संहार करना सुरगणकोभी असाध्य है, युधिष्ठिरको आनयन करके पुनः द्यूतक्रीड़ामे पराजित करके वनमे प्रेषण करेंगे, उससे उनके अनुगत पाण्डवभी वनमे जायंगे, ईदृश जयभी चिरस्थायी इस लिये उनके बधकी इच्छा करते नही।

अर्थतत्त्ववित् द्रोणाचार्य दुर्योधनका दुर्भाव जानके चिन्ता पूर्वक प्रार्थित वरमे इस प्रकार नियम किया कि, यदि अर्जुन युधिष्ठिरकी युद्धमे रक्षा न करेंगे तो हम उनको तुम्हारे वश कर देंगे, अर्जुनका प्रत्युद्गमन सुरगणभी नही कर सकते, इस लिये हम साहसी होते हैं नही, यद्यपि धनञ्जय हमारा शिष्य है तथापि वह तरुण औ इन्द्र औ रुद्रसे लब्ध दिव्यास्त्र है, इस लिये हम युधिष्ठिरको ग्रहण कर सकेंगे नही, तुम लोग किसी उपायसे अर्जुनको युद्धस्थलसे अपसारित करो तो युधिष्ठिरको हम पराजित कर देंगे।

द्रोणाचार्यके इस प्रकार प्रतिज्ञा करनेसे अति मूर्ख तुम्हारे पुत्रगण युधिष्ठिरको गृहीतही निश्चय करने लगे, परंतु द्रोणाचार्य पाण्डवोके पक्षपाती हैं, यह जानते थे इससे उनकी प्रतिज्ञा दृढ़ करनेके लिये सब सैन्यमे युधिष्ठिरके ग्रहणकी घोषणा कर दिया ।

इति १२ अध्याय।

—०—०—

हे महाराज! इधर राजा युधिष्ठिरने यह वार्त्ता सुनके अर्जुनसे बोले, हे भ्रातः! आज द्रोणाचार्यचिकीर्षित तुमने सुना है, जिसमे वह सफल न होय सो करनी चहिये, द्रोणने जो नियम रखा है, सो नियम तुम्हारेहीमे है इस लिये तुम हमारे साथ रहके उनसे युद्ध करो।

अर्जुन बोले, हे पाण्डवश्रेष्ठ! जैसा आचार्यका प्राण संहार हमको अकर्तव्य है, वैसही आपका त्यागभी हमको अकर्त्तव्य है, हमारा प्राण जायगा तोभी हम आचार्य्यसे विग्रह न होगे, परंतु दुर्य्योधन जो आपको ग्रहणकी कामना कर्त्ता है सो कदापि पूर्ण होगी नही, हमारे जीवित रहते वज्रधर इन्द्रभी आवे तो आपका ग्रहण कर सकेगा नही।

अनन्तर पाण्डवोंके सैन्यमे शङ्ख भेरी प्रभृति वाद्य वादन होने लगे, वह सुनके तुम्हारे सेनामेभी वाद्य वजने लगे, अनन्तर आपके औ पाण्डवोके व्यूहित वीर सब युद्धके लिये परस्पर निकट होने लगे, द्रोण औ पाञ्चालोंका तुमुल युद्ध होने लगा, सृञ्जयगण द्रोणाचार्य्यके सैन्य नाश कर्नेमे प्रयत्न कर्केभी कृतकार्य्य न हुए, दुर्य्योधनभी अर्जुनपालित सैन्यसे युद्ध कर्नेमे समर्थ न हुए, अनन्तर द्रोण पाण्डवी सेनाको विद्रवण कर्के भीतर विचरण कर्ने लगे, दानवगण समरक्रुद्ध इन्द्रको देख नही सक्ते तद्रूप पाण्डवोंके सेनामे कोई द्रोणाचार्य्यको देख न सके, अनन्तर वह इतर सैन्यको त्रासित कर्के धृष्टद्युम्नके सैन्यको त्रास देते हुए धृष्टद्युम्नको शरजालसे आच्छन्न कर दिया।

इति १२ अध्याय

हे महाराज! द्रोणाचार्य्यके निशित शरवर्षणसे पाण्डवसैन्यके सहस्रशः वीरोंको यम सदनमे प्रेरण कर्ने लगे, तब

युधिष्ठिर प्रभृति वीरगण चतुर्दिक्से उनके ऊपर धावमान हुए, दृढ़ विक्रम कौरवपक्षीयोंने चतुर्दिक्से उनको ग्रहण कर लिया, शकुनिने सारथि, ध्वज औ रथके सहित सहदेव को विद्ध किया, सहदेवनेभी उनके ध्वज, सारथि औ अश्वोंको विद्ध करके साठ बाणसे शकुनिको विद्ध कर दिया, शकुनिने गदा लेके रथसे उतर करके सहदेवके सारथिको निपातित कर दिया, तब सहदेवभी गदा लेके दोनो विरथ होय पर्वतके तुल्य युद्ध करने लगे, द्रोणने दश बाणसे द्रुपदको विद्ध किया, तब उन्होंनेभी उनको असंख्य बाणोंसे विद्ध किया, भीम-सेनने विंशति शरसे विविंशतिको विद्ध करके कम्पित कर सके नहीं, विविंशतिने तो भीमसेनको अश्वशून्य, रथशून्य कर दिया, तब भीमसेनने गदासे उनके रथको चूर्ण कर दिया, तब विविंशति गजके ऊपर गज धावमान होय ऐसे भीमसेनके ऊपर धावमान हुए, वीर्य्यशाली शल्य प्रीति-पात्र भागिनेय नकुलको कुपित करनेके लिये हास्य पूर्वक शर-वर्षण करने लगे, प्रतापी नकुलने उनके अश्व, ध्वज, छत्र, सारथि औ धनुष्य विनष्ट करके शंखनाद करने लगे, धृष्टकेतुने कृपाचार्य्यनिक्षिप्त शरोंका छेदन करके उनके ध्वजका चिह्न नष्ट कर दिया, सात्यकीने कृतवर्माको विद्ध करके अन्यान्य शरको विद्ध कर दिया, सेनानी औ सुशर्मा दोनो परस्पर विद्ध करने लगे, विराटने कर्णको निवारित कर दिया, सो अद्भुत हो गया, कर्णका यही पौरुष जो सैन्यको मात्र निवारण किया, द्रुपद भगदत्तसे युद्ध करने लगे, भगदत्तने द्रुपदके रथ, अश्व, औ सारथिको नष्ट किया तब द्रुपदने उनका वक्षस्थल विद्ध किया, भूरिश्रवा औ शिखण्डीसे तासदाय युद्ध करने लगे, घटोत्कच औ अलंबुषसे युद्ध होने लगे, हार्दिक्य औ अभि-मन्युका युद्ध होने लगा, हार्दिक्यने अभिमन्युको शरसे आच्छन्न

कर दिया तब अभिमन्युने हार्दिक्यके अश्व, ध्वज, छत्र औ सारथि नष्ट कर दिये, हार्दिक्यने सात शरसे अभिमन्युको औ पांच शरसे उनके सारथिको विद्ध कर्के सिंहनाद कर्ते हुए उनका धनुष्य छेदन कर दिया, तब अभिमन्यु खड्ग चर्म लेके हार्दिक्यके रथ पर कूदके उनके केशग्रहण कर्के पादाघातसे सारथिका निपातित कर्के उनका ध्वज छेदन कर दिया, तब जयद्रथने हार्दिक्यको अभिमन्युसे निपातित देखके खड्ग चर्म लेके अभिमन्यु पर धावित हुए, अभिमन्यु उनको देखके हार्दिक्यका त्याग कर्के उनके ऊपर श्येनवत् निपतित हुए, शत्रुचिह्न अनेक अस्त्रोंको खड्गसे छेदित औ चर्मसे निवारित कर्ने लगे, तब जयद्रथ औ अभिमन्युका खड्ग युद्ध होने लगा, युद्ध कुशलतासे किसीका खड्गाघात न हुआ, अन्तमे अभिमन्युके चर्मके ऊपर खड्ग प्रहार होनेसे उनका खड्ग भग्न हुआ, तब जयद्रथ स्वखड्ग भग्न देखके त्वरासे स्वीय रथ पर आरोहित हो गए, अभिमन्यु युद्धसे मुक्त होय स्वरथारूढ़ हुए, इस प्रकार अभिमन्यु जयद्रथको पराजित कर्के सिंहनाद कर्ने लगे, तब शल्यने उनके ऊपर लोहमय भयङ्कर शक्ति निक्षेप किया, अभिमन्युने शीघ्र कूदके वह शक्ति लेके स्वीय कोशसे असि निष्कासन कर्के प्रक्षेप किया, राजगण वह अद्भुत कार्य्य देखके वाह्वा कहने लगे, अनन्तर अभिमन्युने शल्यके ऊपर रत्न खचित शक्ति निक्षेप किया, उस्से उनका सारथि निपतित होगया, उस्से विराट प्रभृति वीरगण उनको धन्यवाद देने लगे उस्से वह अधिक प्रफुल्ल हो गए; आपके पुत्रगण वह असहमान होके क्रोधसे शरवर्षण कर्ने लगे, सारथिके पतनसे शल्य क्रुद्ध होके अभिमन्युको आक्रमण कर्ने लगे।

इति १४ अध्याय

धृ०। तुम विचित्र द्वन्द्वयुद्ध कहा, सो देवासुर संग्रामके तुल्य कहना चाहिये, युद्ध सुनके हमारी तृप्ति नही होती है, इस लिये शल्य औ अभिमन्युका युद्ध कहो।

सं०। शल्य सारथिके नष्ट होने पर क्रोधसे गदा लेके रथसे उतर कर्के अभिमन्युके सम्मुख धावमान होने लगे, अभिमन्यु भी वृहत् गदा लेके रथसे उतर कर्के आओ आओ कहके आह्वान कर्ने लगे, इतनेमे भीमसेन महती गदा लेके अभिमन्युको निवारण कर्के अचलके समान शल्यके सम्मुख उपस्थित हुए, मद्रराज भीमसेनको देखके शार्दूलके तुल्य उनके अभिमुख गमन कर्के दोनो वीर मण्डलाकार भ्रमण कर्के घोर युद्ध कर्ने लगे, गदाका गदाके ऊपर प्रहार होनेसे अग्नि उत्पन्न होने लगा, अनन्तर दोनो वीर भयङ्कर गदा प्रहारसे रुधिराक्त कलेवर होके साथही मूर्छित होय भूतलमे निपतित हुए इतनेमे कृतवर्माने शल्यको मूर्छित औ व्याकुल देखे रथपर आरोपित कर्के संग्रामसे दूर कर दिया, क्षणमात्रमे भीमसेन उत्थित होय स्वरथ पर आरूढ़ हुए, कौरव पक्षीय शल्यका पराभव देखके कम्पित होने लगे, तब पाण्डवसैन्यसे अधिक ताड़ित होय चतुर्दिक् पलायन कर्ने लगे, पाण्डवसैन्य हर्षित होय शंख भेरी प्रभृति वाद्य वादन कर्ने लगे।

इति १५ अध्याय।

हे महाराज! महावीर वृषसेन अपनी सेनाको छिन्न भिन्न देखके अल्पमायासे रक्षा कर्ते हुए शरवर्षणसे पाण्डवसैन्यके भूतलमे पातित कर्ने लगे, एकाकी वृषसेन सहस्रशः वीरोको निपातित कर्ते हुए भ्रमण कर्ने लगे, तब नकुलपुत्र शतानीकने मर्मभेदी नाराचोसे वृषसेनको विद्ध किया, वृषसेनने शतानीकका धनु औ ध्वज छेदन कर दिया, द्रौपदीके पुत्रोने

वृषसेनको वाणोसे अदृश्य कर दिया, तब अश्वत्थामा प्रभृति वीरोने द्रौपदेयोंको आच्छन्न कर दिया, पाण्डव औ पञ्चा-लोने उनको आक्रमण कर लिया, तब देवदानवके तुल्य उनका युद्ध होने लगा, वह संग्रामस्थल प्रलयकालीन दृष्ट होने लगा, अनन्तर कौरवपक्षीय सब पलायन कर्ने लगे, द्रोणाचार्य्य स्वपक्षको भग्न औ पलायमान देखके आश्वासन देते हुए युधिष्ठिरको आक्रमण कर्ने लगे, युधिष्ठिरने कङ्कपत्र वाणोसे उनको विद्ध किया, द्रोणने उनका शरासन छेद कर दिया, वेला जैसी समुद्रको रोध कर्ती है, वैसही पाञ्चालोंके चक्ररक्षक कुमारने द्रोणको रुद्ध कर दिया, द्रोणाचार्य्य उस्से निवारित होय शरवर्षण कर्ने लगे, तब कुमारने द्रोणके वक्षःस्थलको विद्ध कर दिया, द्रोणाचार्य्यने क्रुद्ध होय कुमा-रको निहत कर दिया, अनन्तर रणमे विचरण कर्ते हुए द्वादश वाणसे शिखण्डीको, विंशति वाणसे उत्तमौजाको, पांच वाणसे नकुलको, सात वाणसे सहदेवको वारह वाणसे युधि-ष्ठिरको, तीन तीन वाणोसे द्रौपदेयगणको, पांच वाणसे सात्यकीको औ दश वाणसे विराटको विद्ध करके अन्यान्य वीरोको आक्रमण किया, अनन्तर युधिष्ठिरको ग्रहण कर्नेकी इच्छासे उनके समीप आवने लगे, तब युगन्धर उनको निवा-रण कर्ने लगे, द्रोणाचार्य्यने सन्नतपर्व वाणसे युधिष्ठिरको विद्ध करके युगन्धरको रथनीड़से निपातित कर दिया, अन-न्तर विराट द्रुपद प्रभृति वीरगण युधिष्ठिरके रक्षार्थ भूरि भूरि शरक्षेप कर्ने लगे, द्रोणाचार्य्यने भल्लास्त्रसे व्याघ्रदत्तका कुण्डलभूषित मस्तक छेदन कर दिया, औ पाण्डवोको विचा-सित करके युधिष्ठिरके अति निकट आय गये, द्रोणाचार्य्य युधिष्ठिरके निकट होतेही पाण्डवोके सैन्यमे यह शब्द उत्थित हुआ कि (राजा निहत हुए,) आपके पक्षीय द्रोणाचा-

र्थ्य का पराक्रम देखके युधिष्ठिर गृहीत हुए बोध करके कृतार्थ जानने लगे, यह कोलाहल सुनके महावीर अर्जुन द्रोणसैन्यको शरजालसे विमोहित कर्ते हुए द्रोणको आक्रमण कर्ने लगे, अनन्तर अर्जुनके असंख्य शरनिकरोंसे चतुर्दिक् ऐसा अन्धकार हो गया कि कोई किसीको न देख सकै, सर्वत्र वाणमय हो गया, अनन्तर द्रोण औ दुर्य्योधन प्रभृतिने युद्धको समाप्त किया, अर्जुननेभी उनको परांमुख देखके स्वसैन्यका धीरे धीरे एकत्र किया, इतनेमे सूर्य्यभी अस्ताचल-चूड़ावलम्बी हुए, ब्राह्मण जैसे सूर्यस्तुति कर्ते हैं वैसे सब अर्जुनकी स्तुति कर्ने लगे, अनन्तर सकल वीर शनैः शनैः सेनाके सहित स्व स्व शिविरमे आगत हुए।

इति १६ अध्याय।

द्रोणाभिसेक पर्वाध्याय समाप्त।

संसप्तकबध पर्वअध्याय।

स०१। अनन्तर उभय पक्षीय सेनागण शिविर प्रविष्ट होय स्व स्व स्थानमे वास कर्ने लगे, द्रोणाचार्य्य शिविरमे जायके लज्जित होय दुर्य्योधनसे बोले, राजन्! हम पहिलेही कहते थे कि अर्जुन रहते देवगणभी युधिष्ठिरको ग्रहण कर सकेंगे नही, तुम लोगोने बहुत यत्न किया, परंतु अर्जुनने वह सब समाप्त कर दिया, इस लिये हमारे वाक्यमे सन्देह मत करो, किसी प्रकार तुम लोग अर्जुनको अपसारित करो हम युधिष्ठिरको ग्रहण कर देंगे, कोई वीर अर्जुनको स्थानान्तरमे

आह्वान करे, अर्जुन उनको पराजित किये विना निवृत्त न होंगे, उस अवसरमें हम पाण्डव सैन्य भेद करके धृष्टद्युम्नके समक्ष युधिष्ठिरको ग्रहण कर लेङ्गे, द्रोणका यह सुनके त्रिगर्त्ताधिपति दुर्य्योधनसे बोले, महाराज ! अर्जुन वारंवार हम लोगोंका पराभव करते हैं, हमलोग निरपराधी हैं वही हम लोगोका अपराध करते हैं, उसीसे हम लोग निरन्तर दग्ध होते हैं, आज भाग्योदयसे वह अस्त्रसम्पन्न मिले हैं, अब आपके हित-कर कार्य्य करेंगे कि, रणस्थलके बहिर्भागमें उनको युद्धार्थ आ-ह्वान करके संहार करेंगे, आज त्रिगर्तशून्य वा अर्जुनशून्य पृथ्वी होगी, हम लोग सब मिलके पृथक् पृथक् शपथ करते हैं, यह कहके पृथक् पृथक् अग्नि स्थापन पूर्व्वक नियुत धेनु दान औ ब्राह्मणगणको तृप्त करके समरव्रत धारण पूर्व्वक प्रज्वालित अग्निको स्पर्श करके कहने लगे, यदि हम लोग अर्जुनको बध किये विना निवृत्त होय अथवा उनके भयसे पलायित होय मिथ्यावादी, ब्रह्मघाती, मद्यपायी, स्वर्णस्तेयी, गुरुदारगामी इत्यादि समस्त पातकीको जो लोक प्राप्त होता उस लोकमें हम-लोग जायँगे, इसप्रकार शपथ करके युद्धार्थ निर्गत हुए, समरमें उपस्थित हुये तब अर्जुन युधिष्ठिरसे बोले, महाराज ! हम युद्धमें आहूत होके कदापि निवृत्त न होंगे, यह हमारा व्रत है, सो इस समय संसप्तकगण हमको आह्वान करते हैं, उनके नाश करनेकी अनुमति दीजिये, युधिष्ठिर बोले, अर्जुन ! द्रोणाचार्य्यने जो अभिलाष किया है सो तुमको ज्ञात है, जिसमें वह मिथ्या होय सो करो, अर्जुन बोले, महाराज ! महाराज सत्यजित् आपके रक्षक हैं, उनके जीवित रहते द्रोणाचार्य्यका अभि-लाष पूर्ण होगा नहीं, अनन्तर युधिष्ठिरने आलिङ्गन पूर्व्वक अर्जुनको आज्ञा दिया, तब अर्जुन क्षुधार्त्त सिंह मृगगणपर धावमान होता है वैसही त्रिगर्तगणके ऊपर धावमान हुए,

इधर कौरवगण अर्जुनहीन युधिष्ठिरको ग्रहण करनेकी इच्छासे युद्धार्थ प्रस्थित हुए।

इति १७ अध्याय।

अनन्तर संसप्तकोंने समतल भूतलमें चक्राकार रथोंका व्यूह रचना करके सिंहनाद करने लगे, तब अर्जुन उनको हृष्ट देखके कृष्णसे बोले, वासुदेव! तुम यह मुमूर्षु त्रिगर्तोंको देखो, यह रोदनके स्थलमें हर्ष करते हैं, अथवा दुष्प्राप्य लोक लाभ होगा इस लिये हर्ष करते हैं, यह कहके देवदत्त शंखकी ध्वनि करने लगे, संसप्तकोंकी सेना सब उस भयङ्कर शङ्खध्वनि सुनके नितान्त शङ्कित होय प्रस्तरमूर्त्तिके तुल्य निश्चेष्ट हो गई, अश्व सब स्तब्ध होके मूत्र त्याग करने लगे, अनन्तर संसप्तकगण संज्ञा लाभ करके सैन्यको प्रकृतिस्थ करते हुए एक कालमें सबही बाण वर्षण करने लगे, अर्जुनने पञ्चदश बाणोंसे संसप्तकोंके सहस्र बाणोंको आकाशहीमें खण्ड खण्ड कर दिये, अनन्तर उन्होंने पांच शरसे धनञ्जयको विद्ध किया धनञ्जयने दो दो शरसे उनको विद्ध किया, तब वह लोग क्रुद्ध होके असंख्य शरोंसे वासुदेव औ धनञ्जयको समाच्छन्न कर दिया, सुबाहुने तीस बाणसे धनञ्जयका किरीट विद्ध किया, धनञ्जयने भल्लास्त्रसे सुबाहुका हस्तावाप छेदन किया, अनन्तर सुशर्मा, सुरथ, सुधर्मा, सुधनु औ सुबाहुने दश२ बाणोंसे अर्जुनको विद्ध किया, धनञ्जयने एक एकके शर छेदन पूर्वक उनके ध्वज छेदन कर दिया, तदुत्तर सुधन्वाका धनु छेदन औ अश्वोंका नाश करके किरीटशोभित मस्तक छेदन किया, तब उनका सैन्य भयसे दुर्योधनके सैन्यके पास धावमान हुआ, तब त्रिगर्त गण धनञ्जयको अतिशय क्रुद्ध देखके शङ्कित होने लगे, औ पार्थके शरसे ताड़ित होय स्तब्ध हो रहे, अनन्तर त्रिगर्तराज

क्रोधाविष्ट होके त्रिगर्तीय वीरोंसे बोले, हे वीरगण! तुमलोग पलायन मत करो, पलायन करना युक्त नहीं है, देखो तुम लोगोंने क्या शपथ किया है, पलायन करके दुर्योधनादिसे क्या कहोगे, अतिशय उपहास होगा, यह सुनके सब वीर होय सन्तोषसे शङ्खध्वनि करने लगे, अनन्तर संशप्तक औ नारायणी सेना मृत्यु स्वीकार करके युद्धमें प्रवृत्त हुए।

इति १८ अध्याय।

—०—

अनन्तर महावीर धनञ्जय संशप्तकोंको प्रत्यागत देखके वासुदेवसे बोले, केशव! ज्ञात होता है कि संशप्तकगण जीवित रहते रणत्याग करेंगे नहीं, इस लिये उनके ऊपर अश्व चालन करो, आज तुम हमारा भुजबल औ गाण्डीवबल देखो, आज पशुके तुल्य उनका बध करेंगे, तब वासुदेव हास्य करके शुभाकांक्षासे उनको अभिनन्दित करते हुए विमानके तुल्य रथ चालन करने लगे, अनन्तर नारायणी सेना अर्जुनके ऊपर शर वर्षण करके आच्छन्न करने लगे, क्षणमात्रमें वासुदेव औ अर्जुनको लुप्त कर दिया, तब अर्जुन शङ्खध्वनि करके त्वाष्ट्र अस्त्र त्याग करके सहस्र२ मूर्त्ति उत्पन्न किया, तब वह सेनागण विमोहित होके परस्परको धनञ्जय बोध करके परस्पर विनाश करने लगे, तब सबही त्वाष्ट्र अस्त्रसे विमोहित होके एक-कालमें क्षय होगए, अनन्तर धनञ्जय हास्य करके ललित्थ, मालव, मावेल्ल औ त्रिगर्तोंको शरजालसे पीड़ित करने लगे, तब क्षत्र उन्होंनेभी शरजालसे इनको आच्छन्न कर दिया, तब कृष्ण औ धनञ्जय दोनो नष्ट हुए, ऐसा कोलाहल करने लगे, तब अत्यन्त क्लान्त औ घर्माक्त होके धनञ्जयसे बोले, हे पार्थ! तुम कहां हो हम तुमको देखते नही है? यह सुनके पार्थ शीघ्र वायव्यास्त्रसे उन शरोंको निवारण करने लगे, तब आश

शुष्क पत्तोंके तुल्य हस्ती, अश्व, रथ औ आयुध सहित संस-प्तकोंको उड्डीन करने लगे, इस प्रकार उनको उड्डीन औ व्याकुल करके सहस्र२ बाणोंसे पीड़ित करने लगे, धनञ्जय भल्ला-स्त्रसे उनके शिर, बाहु, ऊरु, स्कन्ध, पृष्ठ औ चरण खण्ड२ करके भूतलमें पातित करने लगे, हस्ती, अश्व औ रथ सब चूर्ण२ कर दिये, कोई विदीर्ण देह, कोई छिन्न बाहु, कोई हत, कोई हन्यमान औ कहीं आरोही सहित अश्व भूतलमें शयान हो गये, रणस्थल अत्यन्त भयङ्कर होगया, प्रलयकालीन रुद्रके तुल्य धनञ्जय वहां शोभित होने लगे, इधर द्रोणाचार्य्य युधिष्ठिरको ग्रहण करनेके लिये बहुसैन्य सहित धावमान हुए।

इति १८ अध्याय।

अनन्तर द्रोणाचार्य्यने व्यूह रचना करके युधिष्ठिरके ग्रहणो-त्कासे सज्ज होने पर युधिष्ठिरने द्रोणका सुपर्णव्यूह देखके मण्डलार्द्धव्यूह रचना किया, द्रोणाचार्य्य सुपर्णव्यूहके मुख, दुर्योधन मस्तक, कृतवर्म्मा औ गौतम नेत्रद्वय, भूतशर्म्म प्रभृति शतशः वीर ससैन्य उसकी ग्रीवा, सुशर्म्मा, सोमदत्त, भूरिश्रवा औ बाह्लीक उसके दक्षिणपार्श्व, विन्दानुविन्द औ काम्बोज वामपार्श्वमें अवस्थान औ अश्वत्थामा अग्रे अवस्थान करने लगे, उसके पृष्ठभागमें अम्बष्ठ, मागध, पौण्ड्र, मद्रक प्रभृति औ पुच्छ देशमें कर्ण औ अन्यान्य देशीय राजगण अवस्थित हुए, जयद्रथ, भीमरथ प्रभृति व्यूहके वक्षस्थलमें अवस्थान करने लगे, इस प्रकार द्रोणाचार्य्यने सुपर्णव्यूह रचना पूर्वक प्राग्-ज्योतिष औ गजारोही भगदत्त मध्यमें अवस्थान करके नक्षत्रगणशोभित चन्द्रके तुल्य शोभित होय गर्जन किया, सबही शङ्ख भेरी वाद्य वादन करने लगे।

राजा युधिष्ठिर उस दुर्भेद्य व्यूहको देखकर धृष्टद्युम्नसे

बोले, हे वीर ! जिससे हम ब्राह्मणके वशवर्ती न होय सो उपाय करो, द्रोणाचार्य्य अनेक यत्न करके वशहीं करनेमें समर्थ हैं, धृष्टद्युम्न बोले, महाराज ! आप उद्विग्न मत होइये, हम सर्व प्रकारसे उनको निवारण करेंगे, द्रोणाचार्य्य कदापि हमारा पराजय नहीं कर सकेंगे, यह कहके धृष्टद्युम्न शरजाल विस्तार पूर्व्वक द्रोणके अभिमुख धावमान हुए, द्रोणाचार्य्य उन अशुभ दर्शन धृष्टद्युम्नको देखके तत्क्षणही अप्रसन्न हो गए, तब आपके पुत्र दुर्मुखने द्रोणको विमना देखके उनके प्रीत्यर्थ धृष्टद्युम्नको निवारण किया, तब दोनोंका युद्ध आरम्भ हुआ, धृष्टद्युम्नने दुर्मुख शरोंसे आच्छन्न करके द्रोणको निवारण किया, दुर्मुखने द्रोणको निवारित देखके धृष्टद्युम्नको शरोंसे मोहित कर दिया, इतनेमें द्रोण युधिष्ठिरके सैन्यको शरनिकरसे पीड़ित करने लगे, वह युद्ध पहिले बहुत होते होते ऐसा घोर हुआ कि मर्य्यादा न रही, मनुष्य मनुष्यसे, हस्ती हस्तीसे अश्व अश्वसे औ रथी रथीको नाश करने लगे, गजोंके परस्पर दन्त संघट्टसे सधूम अग्नि उत्पन्न होने लगा, गज सब इतस्ततः विकीर्ण होने लगे, कोई भ्रमण, कोई नाद, कोई विदीर्ण औ कोई वाणोंसे पूर्ण कोई आरोही रहित, कोई दन्तभग्न कोई पतितोत्थित औ कोई आरोही सहित निपतित हुए, पृथ्वी समांस शोणित कर्द्दमसे दुर्गम हो गई, रुधिरके कर्द्दममें मनुष्यके गुल्फपर्य्यन्त निमग्न हो गए, ऐसे घोर युद्धसे किसीको कुछभी ज्ञात न हुआ, तब द्रोण युधिष्ठिरके ऊपर धावमान हुए ।

इति २० अध्याय ।

हे राजन्! द्रोणाचार्य्यको युधिष्ठिरके समीप समागत देखे सैन्य सब कोलाहल करने लगा, तब सत्यजित् द्रोणको युधिष्ठिरके समीप आगत देखके उनके रक्षार्थ आचार्य्यके ऊपर धावमान हुए, द्रोणाचार्य्य औ सत्यजित दोनो सैन्योंको विक्षोभित करते हुए घोर संग्राम करने लगे, तब सत्यजित्ने तीक्ष्ण शरोंसे द्रोणको विद्ध करके सारथि औ पार्ष्णि सारथिको मूर्छित करके उनके ध्वज छेदन कर दिया, महावीर द्रोण सत्यजित्का पराक्रम देखके उनका कालप्राप्त हुआ है बोध करके उनका धनु छेदन पूर्वक सर्वशरीर विद्ध कर दिया, सत्यजितने दूसरा धनु लेके तीसवाणसे द्रोणको विद्ध किया, पाण्डवगण सत्यजित्से द्रोणको आक्रान्त देखके सिंहनाद करने लगे, उस समय वृकने क्रोधसे साठवाण द्रोणके ऊपर निक्षिप्त किये, द्रोणाचार्य्य उनके शरसे आच्छन्न हो क्रोधसे वृकका धनु, सारथिको निपातित करके उनका संहार किया, सत्यजित्ने बहु शरोंसे द्रोणके अश्व, सारथि औ ध्वज आच्छन्न कर दिया, द्रोणाचार्य्य सत्यजित्का प्रहार न सहके उनके बधके लिये सत्वर अश्व, ध्वज, शरासन मुष्टि औ पार्ष्णि सारथिके ऊपर शर वर्षण करने लगे, इस प्रकार द्रोणाचार्य्यके वारंवार शरासन छेदन करनेसे सत्यजित् घोर बाण वर्षण करने लगे, द्रोणाचार्य्यने सत्यजित्का तादृश प्रभाव देखके क्रोधसे अर्द्ध-चन्द्र बाणसे सत्यजितका मस्तक छेदन कर दिया, इस प्रकार द्रोणसे सत्यजितको निहत देखके युधिष्ठिर द्रोणके भयसे पलायन करने लगे, तब पाञ्चाल, कैकय, मत्स्य, चेदि, करूष औ कोसल युधिष्ठिरके रक्षार्थ द्रोणके संमुख धावमान हुए, द्रोणाचार्य्य युधिष्ठिरके ग्रहणकी वासनासे अग्नि जैसा तूलको दहन करते हैं वैसा उनका संहार करने लगे, तब शतानीक द्रोणके अश्वादिको विद्ध करके सिंहनाद करने लगे, द्रोणाचार्य्यने

सत्वर उनका मस्तकच्छेदन कर दिया, मत्स्यगण यह देखके पलायन करने लगे, इस प्रकार शतानीकका संहार करके पांचालादिका पराजय करने लगे, स्रुञ्जयगण द्रोणको संहार करते देखके शर वर्षण करने लगे, द्रोणाचार्य वाणोंसे उनके अश्व, हस्ती, रथ औ पदातियोंका संहार करने लगे, द्रोणके प्रभावसे शमन सदन गामिनी नदी प्रवाहित होने लगी, तब पाण्डु-नन्दन औ अन्यान्य वीर सब द्रोणको क्रतान्तके तुल्य संहार करते देखके उनके संमुख होय निवारण करने लगे, कौरवपक्षीय राजा सब द्रोण रक्षार्थ धावमान हुए, तब शिखण्डीने पांच-वाण, क्षत्रवर्माने वीस, वसुदानने पांच, उत्तमौजाने तीन, क्षत्रदेवने पांच, सात्यकीने शत, युधामन्युने आठ, युधिष्ठिरने द्वादश, धृष्टद्युम्नने दश औ चेकितानने तीन वाणसे द्रोणको विद्ध किया, तब द्रोणाचार्य्यने क्रुद्ध होके सेनाका अतिक्रम करके दृढ़सेनको निपातित किया, तदुत्तर क्षेमकोभी निपातित किया, शिखण्डि औ उत्तमौजाको विद्ध करके भल्लास्त्रसे वसुदानका संहार किया, अनन्तर अशीति वाणसे क्षेमवर्माको औ षड़्विंशति वाणसे सुदक्षिणको विद्ध करके क्षत्रदेवको रथसे निपातित करके युधामन्युको चौसठ औ सात्यकीको तीस वाणसे विद्ध करके युधिष्ठिरके ऊपर धावमान हुए, तब युधिष्ठिर शीघ्र उनके समीपसे प्रस्थित हुए, तब पांचाल तनयके द्रोणके ऊपर धावमान होतेही द्रोणने उनको रथसे अश्व सारथि समेत निपातित कर दिया, यह देख द्रोणका संहार करो, ऐसा सबका शब्द होने लगा, इस प्रकार द्रोणसे सबही पराजित होय कम्पित होने लगे।

इति २१ अध्याय

धृ०। द्रोणाचार्य्यने पाण्डव औ पांचालादिका पराजय किया तब कौन उनके अभिमुख हुआ।

सं०। कौरवगण उन लोगोंको द्रोणसे व्यथित औ पलायित देखके सिंहनाद औ वाद्यावादन करने लगे, उस समय राजा दुर्य्योधन कर्णसे बोले, हे राधेय! देखो द्रोणके सायकोंसे अभिभूत होय सिंहनादसे भीत होय पलायित मृगके तुल्य पाण्डवपक्षीय दृष्ट होते हैं, बोध होता है कि अब कोई उनके सम्मुख न होगा, असंख्य वीर उनसे निपातित हुए हैं, देखो क्रोधपरायण भीमसेन पाण्डव औ सृञ्जयोंसे त्यक्त होके कौरवोंसेनासे परिवृत हुए हैं।

कर्ण बोले, राजन्! महाबाहु भीमसेन जीवित रहते कदापि संग्राम त्याग करेंगे नहीं, रणदुर्मद पाण्डव सहसा संग्राममें पराजित होंगे यहभी नहीं है, वह लोग पूर्व्व क्लेश स्मरण करके कदापि संग्रामसे निवृत्त न होंगे, देखो भीमपराक्रम भीमसेन संग्राममें प्रत्यागत होते हैं, यह अवश्य असंख्य वीरोंको निहत करेंगे, पांचाल प्रभृति सबही उनके अनुवर्त्ती हुए हैं, यह सबही द्रोणके ऊपर धावमान होते हैं, वह सब कृतास्त्र हैं, द्रोणको निवारण करनी उनको अशक्य नहीं है, इस लिये उनकी समीप अपने लोगोंको चलना अवश्य है, जिसमें वह द्रोणको निपातित न करें सो कर्त्तव्य है, दुर्य्योधन यह सुनके ससैन्य द्रोणके निकट धावमान हुए, तब पाण्डवगण सिंहनाद करने लगे।

इति २२ अध्याय।

धृ०। भीमसेन प्रभृति जो जो वीर द्रोणके ऊपर धावमान हुए उन सभोंके रथ चिन्ह वर्णन करो।

सं०। महावीर भीमसेन ऋक्ष्यवर्ण्ण अश्वयोजित रथपर,

सात्यकी रजत वर्ण अश्व योजित रथ पर, युधामन्यु सारङ्गवर्ण अश्वयोजित रथपर, धृष्टद्युम्नपुत्र कपोतवर्ण पिताके रक्षार्थ रक्त-वर्णाश्वयोजित रथ पर, शिखण्डिपुत्र क्षत्रदेवने पद्मपत्र तुल्य अश्वयोजित रथ पर, नकुल काम्बोजाश्वयुक्त रथपर, उत्त-मौजा मेघसनिभाश्वयुतरथपर, सहदेव तित्तिरवर्णाश्वयोजित रथपर, दन्तसवर्ण-कृष्णाक्षीयराश्व-योजित रथपर युधिष्ठिर, सैन्य सब सुवर्णभूषिताश्वोपर, युधिष्ठिरानुगामी द्रुपद सुवर्ण वर्णाश्वयुत रथपर आरोहण करके धावमान हुए, इस प्रकार दिव्य सुवर्ण रत्न भूषित रथ अश्व औ हस्तीपर आरूढ़ हो यथोचित रक्षायोग्यपर अवस्थान पूर्वक सकल वीर धावमान हुए, द्रोणाचार्य्यका ध्वज कृष्णाजिनयुक्त कमण्डलु लाञ्छित, युधिष्ठिरका चन्द्रचिन्हित, भीमसेनका सिंहचिन्हयुक्त, नकुल-का शरभचिन्हित, सहदेवका हंसलाञ्छित, द्रौपदी पुत्रका अश्विनीकुमार-मूर्त्ति-लाञ्छित, अभिमन्युका शार्ङ्गपक्षी-लाञ्छित, घटोत्कचका गृध्रलाञ्छित ध्वज शोभमान होतेथे, इस प्रकार अन्यान्य भूपतिके विविध चिन्ह चिन्हित ध्वज सब उड्डीन होतेथे, युधिष्ठिरने माहेन्द्रधनु, नकुलने वैष्णवधनु, सहदेवने आश्विन धनु, भीमसेनने वायव्य धनु, घटोत्कचने पौलस्त धनु, द्रौपदेयोने रौद्र, आग्नेय, कौवेर, याम्य औ गौरीश धनु औ अभिमन्युनेभी रौद्र धनु धारण किया, इस प्रकार सकल विविध धनु धारण करके धावमान हुए।

इति २३ अध्याय।

धृ०। संग्रामस्थलमें वृकोदरके सहित जो उक्त भूपतिगण हैं वह देवताओंकाभी पराभव कर सक्ते, पुरुष अदृष्टहीसे जन्मग्रहण कर्ते हैं, इस लिये इनका अभिलषित पदार्थ अन्यही दृष्ट होता है, देखो युधिष्ठिरने दीर्घकाल अरण्यमें

क्रोध सहन औ अज्ञात वास करकेभी महती सेना सम्पादित किया, हमारे पुत्रोंके दुरदृष्ट भिन्न और कुछकारण नहीं है, अदृष्टहीमे इच्छानुसार कार्य्य सम्पादित होता है, युधिष्ठिर द्यूतकी समय अत्यन्त क्लेशित हुए थे, इस समय अदृष्टबलहीसे सहायसम्पन्न हुए, दुरात्मा दुर्य्योधनने पहिले कहा था कि पृथ्वीके अधिकांश हमारे आधीन हैं, युधिष्ठिरकी अतिअल्प, परंतु अदृष्टहीसे उनका अनिर्वचनीय प्रभाव है, द्रोणाचार्य्य हमारे असंख्य भूपतिसे रक्षित होकेभी धृष्टद्युम्नकी हस्तसे निहत हुए, भीष्म औ द्रोणकी मरणसे हमको जीवनेकी वासना नहीं है, विदुरने जो कहा सोई हुआ, राजा धर्म त्याग करके अर्थपरायण होय तो अवश्य हीनदशाको प्राप्त होते हैं, जिन दोनो पुरुषोत्तमोंकी प्रभावसे हमलोग जीवनधारण करते थे उनके निहत होनेसे किस प्रकार हमलोगोंकी रक्षा होगी, जो होय, अब जैसा युद्ध भया सो कहो।

इति २४ अध्याय।

सं०। पाण्डवगण समरक्षेत्रमे आगमन करके द्रोणाचार्य्यको शरोंसे मेघाच्छादित दिनकरकी तुल्य आच्छन्न करने लगे, पाण्डवोंका सैन्योत्थित धूलिसे कौरवसेना लुप्त हो जानेसे द्रोण हत हुए ऐसा बोध होने लगा, उस समय दुर्य्योधन पाण्डवोंका दुष्कर कार्य्य देखके स्वसैन्यको प्रेरण करने लगे, तब आपके पुत्र दुर्मर्षण भीमसेनको दूरसे देखके द्रोणके रक्षार्थ भीमके ऊपर शरवर्षण करने लगे, जैसे दुर्मर्षणने भीमके ऊपर शरक्षेप किया वैसही भीमसेनभी शरक्षेप करने लगे, दोनोंका घोर संग्राम होने लगा, कृतवर्मा सात्यकीको, सिंधुराज क्षत्रवर्मीको औ उग्रधन्वाने महेष्वासको द्रोणके समक्ष, उसे निवारण करने लगे, क्षत्रवर्मीने सिंधुराजका ध्वज, कार्मुक छेदन

कर्के मर्मस्थान विद्ध किया, सिंधुराजने अन्य धनु लेके क्षत्र-वर्माको विद्ध किया, सुबाहुने युयुत्सुको द्रोणाभिमुखसे निवा-रण कर्ने लगे तब युयुत्सुने तीक्ष्ण बाणोंसे उनके दोनो बाहु छेदन कर दिया, मद्रराजने युधिष्ठिरको निवारण किया तब युधिष्ठिरने मद्रराजके ऊपर असंख्य बाण विक्षेप किये, मद्रपति चौसठ बाण युधिष्ठिरके ऊपर निक्षेप कर्के गर्जन कर्ने लगे, धर्मराजने गर्जन सुनके क्रुद्ध होय मद्रराजका ध्वज औ धनु छेदन कर दिया, बाल्हीक असंख्य सेनाके साथ द्रुप-दको निवारण कर्ने लगे, तब मत्तमातङ्गकेतुल्य दोनो वृद्ध भूपति संग्राम कर्ने लगे, विन्दानुविन्द शरजालसे विराटको विद्ध कर्ने लगे, तब मत्स्य औ कैकेयोंका युद्ध अति भयङ्कर होने लगा, शतानीक जब द्रोणाभिमुख धावमान हुए तब भूतवर्मा उनको निवारण कर्ने लगे, तब शतानीकने क्रोध कर्के भल्लास्त्रसे भूतवर्माके बाहु औ मस्तक छेदन कर दिया, विविं-शतिने द्रोणाभिमुख धावमान सुतसोमको निवारण कर्ने लगे तब सुतसोमने उनको विद्ध कर दिया, भीमरथने लौह शरसे शाल्व औ उनके सारथि औ अश्वोंको निहत किया, चित्रसेनने श्रुतकर्माको निवारण किया, अश्वत्थामा प्रति-विंध्यको वारण कर्ने लगे, श्रुतकीर्तिको दुःशासन पुत्र निवा-रण कर्ने लगे, श्रुतकीर्तिने दुःशासन तनयका ध्वज, सारथि, धनु औ मस्तक छेदन कर दिया, तब लक्ष्मण उनको निवा-रण कर्ने लगे, तब उन्होने लक्ष्मणका शरासन औ ध्वज छेदन कर दिया, विकर्ण शिखण्डीको निवारण कर्ने लगे, तब शिखण्डीने असंख्य बाण उनके ऊपर निक्षिप्त किये, तब उत्तमौजा द्रोणके ऊपर धावमान हुए, तब अङ्गदने निवारण किया, दुर्मुखने द्रोणाभिमुख धावमान पुरुजित्को वारण कर्ने लगे तब पुरुजितने दुर्मुखके भ्रूयुगलके बीचमे बाणोंसे

विद्ध कर दिया, कर्ण द्रोण सम्मुख धावमान कैकेय देशीय पञ्चभ्राताको निवारण करने लगे तब उन्होंने कर्णको शरोंसे आच्छादित कर दिया, तब दोनो परस्पर शरजालसे आच्छादित हो गए। हे महाराज! आपके तीन पुत्र दुर्जय, जय औ विजयने नील, काश्य औ जयत्सेनको वारित कर दिया, तब उनका परस्पर घोर युद्ध होने लगा, क्षेमधूर्ति औ बृहन्त यह दोनो भ्राताने द्रोणके ऊपर धावित सात्वत्‌को क्षतविक्षत कर दिया, चेदिराजने अम्बष्टराजको द्रोणके सम्मुखसे दूर कर दिया, तब अंबष्टराजने अस्थिभेदिनी शलाकासे चेदिराजको विद्ध किया तब चेदिराज व्याकुल हो धनुर्वाण त्याग पूर्वक रथसे निपतित हुए, कृपाचार्यने वार्धक्षेमीको शरोंसे विद्ध किया, सोमदत्तिने अभिमन्युको निवारित करते हुए उनकी ध्वज, पताका, धनु, छत्र औ सारथिको रथसे पातित कर दिया, तब अभिमन्युने कूदके खड्गसे सोमदत्तिके ध्वज, अश्व, रथ औ सारथिको छेदन कर दिया औ शीघ्र अपने रथ पर आरोहण करके अन्य धनुग्रहण पूर्वक पाण्डवसेनाको प्रहार करने लगे, दुष्यसेन पाण्डवको निवारण करने लगे।

महावीर घटोत्कच गदा, परिघ, खड्ग, पट्टिश, आयोघन, शूल, मुशल, मुद्गर, चक्र, भिन्दिपाल, परशु, पांशु, वायु, अग्नि, जल, भस्म, लोष्ट्र तृण औ दृक्षोंसे सेनागणको भग्न, रुग्ण, विनष्ट, विद्रावित, विच्छिन्न औ भीषित करने लगे, तब राक्षसराज अलंबुष नाना अस्त्र निक्षेप पूर्वक हिडिम्बातनयको प्रहार करने लगे, तब उनका विचित्र घोर संग्राम होने लगा।

इति २५ अध्याय।

धृ०। इस प्रकार परस्पर आक्रमण करने लगे, तब असमत्सैयोका किस प्रकार युद्ध हुआ?

सं०। जब वीरगण परस्पर रणासक्त हुए तब दुर्य्योधन गजसैन्य लेके भीमसेनके ऊपर धावमान हुए; महावीर भीमसेन गजसैन्यको आवते देखके शीघ्र गजोको निपातित कर्ने लगे, पर्वताकार गज सब भीमसेनके नाराच प्रहारसे छिन्न भिन्न होय पलायन कर्ने लगे, और सब क्षत विक्षत औ रुधिराक्त होके गजसे नीचे निपतित होने लगे, तब भीमसेनने निशित सायकोसे दुर्योधनको विद्ध किया, दुर्योधन भीमसेनके शरसे क्षत विक्षत होके क्रोधसे वारिवर्षण तुल्य नाराच निक्षेप कर्ने लगे, तब भीमसेनने सत्वर नाराच उनके शर निवारण पूर्वक दुर्योधनके ध्वज औ धनु छेदन कर दिया, तब अङ्गराज दुर्योधनको भीमसेनसे निपीड़ित देखके गजारोहण पूर्वक भीमसेनके ऊपर धावमान हुए, भीमसेनने अङ्गराजके गजके गण्डस्थलमे नाराच निक्षेप किये, वह भीमनिक्षिप्त नाराच उस गजका देह भेद करके भूतलमे प्रविष्ट हुए, वह हस्तीभी वज्राहत पर्वतके तुल्य भूतलमे निपतित हुआ, तब अङ्गराजभी भूतलमे निपतित होते हैं इतनेमे लघुहस्तसे भीमसेनने भल्लास्त्रसे उनका मस्तक छेदन कर दिया, अङ्गराजके निहत होतेही सैन्य सब चतुर्दिक् पलायन कर्ने लगे, अश्व, हस्ती औ रथ सब इतस्तत होनेसे पदाति सैन्य असंख्य निहत होने लगे, इतने भगदत्त कुञ्जर लेके भीमसेनके ऊपर धावमान हुए, वह गजराज चरण उत्क्षेप औ शुण्ड संहत करके भीमसेनके समीप धावित हुआ औ एककालमे भीमसेनका रथ औ अश्वोंको चूर्ण कर दिया, भीमसेन अञ्जलिकावेध विद्या जानते थे इस लिये पलायित न होके पादचारसे धावमान होके उस गजके शरीरमे लीन होगये, इस प्रकार गजके देहमे प्रविष्ट होय भीतरसे कर प्रहार कर्ने लगे, तब वह गज व्याकुल होय भ्रमण कर्ने लगा, तब महाबली भीमसेन गजके देहसे बहि-

भूत होय उस्के संमुखीन हुए, तब गज अवसर पायके शुण्डा से भीमसेनकी ग्रीवा वेष्टन कर्के जानुसे उनको निपातित कर्के उनका संहार कर्नेमे उद्यत हुआ, तब महावीर भीमसेन मोटनसे करिकी शुण्डावेष्टन छोड़ायके पुन उस्के देहमे प्रविष्ट होय स्वपक्षहस्तीके आगमनकी प्रतीक्षा कर्ने लगे, कियत्क्षण पर उस्के देहसे निकले महावेगसे धावमान हुए, इधर सैन्य सकल हा धिक्! भीमसेन हस्तीसे निहत हुए, ऐसा कोलाहल कर्ने लगे, पाण्डवसैन्य हस्तीके भयसे भीमसेन के पास धावमान हुए, इधर युधिष्ठिर भीमसेनको हस्तीसे निहत जान कर असंख्य रथ लेके धृष्टद्युम्नके साथ उनको वेष्टन कर्के सहस्र२ वाणोंसे विद्ध कर्ने लगे, भगदत्त अंकुशसे उन शरोंको निवारण कर्के गजसे उनको आक्रमण कर्ने लगे, दशार्णाधिप मदस्रावी गज लेके भगदत्तके ऊपर धावमान हुए, भगदत्तके हस्तीने दशार्णराजके हस्तीका पार्श्वभेद कर्के निहत कर दिया, औ तत्क्षणाही भगदत्तने तोमर प्रक्षेप कर्के दशार्णाधिपका गजके ऊपरही संहार किया, अनन्तर भगदत्तने गज सात्यकीके ऊपर धावित किया, तब उस गजने सात्यकीका रथ उठायके निक्षेप कर्के चूर्ण कर दिया, तब सात्यकी सत्वर कूदके भूतलमे आय पलायित हो गए, उनकी सारथिभी अश्व त्याग कर्के उनकी अनुगामी हुए, इतनेमे वह हस्ती उस वेष्टित मण्डलसे निष्क्रान्त होय भूपतिगणको निक्षेप कर्ने लगा, इस प्रकार भगदत्त सैन्यको भग्न कर्ने लगे तब सब पलायमान होने लगे, तब भीमसेन पुन रथारोहण कर्के भगदत्तके सम्मुख हुए, भगदत्तके गजने स्वीय शुण्डा निर्मुक्त जलसे भीमसेनके वाहनोको त्रासित कर दिया, तब वह वाहन सब भीमसेनको लेके पलायित हुए, तब चित्ररथी रथारोहण पर्वक भीमसेनके पीछे धावमान हुए, तब सुवर्चाने

आनतपर्व बाणसे चित्रवर्माको निहत किया, तदुत्तर अभिमन्यु, द्रौपदेयगण, चेकितान, धृष्टकेतु औ युयुत्सु उस हस्तीके ऊपर शर वर्षण करने लगे, तब भगदत्तके गजने युयुत्सुके सारथिका संहार किया, युयुत्सु सत्वर पलायित हुए, तब पाण्डव पक्षीय गजको विद्ध करने लगे, तब वह अभिमन्युके ऊपर धावमान हुयी, तब अभिमन्यु द्वादश, युयुत्सु दश, द्रौपदेय औ धृष्टकेतु तीन तीन शरोंसे गजको विद्ध करने लगे, तब वह गज सव्यापसव्य सैन्यका निक्षेप करने लगा, इस प्रकार भगदत्त वारंवार पाण्डवसैन्यको त्रासित करने लगे तब वह सब पलायन करने लगे, तब कोई उसके सम्मुखस्थित होने सका नही।

इति २६ अध्याय।

सं०। अब अर्जुनने जो जो किया सो सो कहती है सुनो, भगदत्तके संग्राममें भयङ्कर कार्य्य करनेसे अर्जुन धूलिपटल देखके औ मनुष्योंका कोलाहल सुनके कृष्णसे बोले, वासुदेव! भगदत्तके गज लेके युद्धमे आवनेसे यह कोलाहल होता है, वह गज यानविशारद औ गजयोधोमे श्रेष्ठ औ उनके गजके तुल्य कोई गजभी दूसरा भूमण्डलमें नही है, वह एकाकी पाण्डवसैन्यका ध्वंस करेङ्गे, हम तुम विना कोई उसका निवारण नही कर सकेगा, इस लिये शीघ्र भगदत्तके निकट गमन करो, हम आज उनको यमके अतिथि करेङ्गे, वासुदेव अर्जुनके वचनानुसार भगदत्ताभिमुख रथ चालन करने लगे, इतनेमे त्रिगर्तके दशसहस्र औ कृष्णके पहिले अनुचर चार सहस्र महारथ यह चतुर्दश सहस्र संसप्तक उनको संग्रामार्थ आह्वान करने लगे, इधर भगदत्त सैन्य संहार कर रहे हैं, इधर यह आह्वान करते हैं, यह दोनों सङ्कट उपस्थित होनेसे अर्जुनका

चित्त दोलायमान होने लगा, अन्तमे संसप्तकोंका संहार करनेके निश्चयसे उधिरको धावमान हुए, महावीर दुर्य्योधन औ कर्णने अर्जुनके बधार्थ दोनोदिक् संग्राम उपस्थित किया था, धनञ्जयने संसप्तकका बध निश्चित करके बहुउनको आशा विफल कर दिया, तब संसप्तगण अर्जुनके ऊपर सहस्र सहस्र बाण निक्षेप करने लगे, उनके बाणजालसे कृष्ण औ अर्जुन समाच्छन्न हो गए, वासुदेव उनके बाणसे विमुग्ध औ खेदान्त हुए तब अर्जुनने बज्रास्त्रसे संसप्तकोंका प्रायः संहार कर दिया, सहस्र सहस्र धनुर्बाणहस्त, सहस्र सहस्र ध्वज, सारथि, अश्व औ महारथि छिन्न कलेवर होके भूतलमे निपतित होने लगे, हस्ती जैसा पद्मवनका नाश करती है तद्रूप धनञ्जयने सकल सैन्य संहार कर दिया, यह देखके कृष्ण साधुवाद देने लगे, अनन्तर धनञ्जय भगदत्ताभिमुख रथचालनकी आज्ञा कृष्णको देने लगे।

इति २७ अध्याय।

इधर उनका रथ चालने पर त्रिगर्ताधिप सुशर्मा भ्रातृगण सहित धनञ्जयके पीछे धावमान हुए, तब धनञ्जय पुन दोलायमान होके कृष्णके कहनेसे पुनः सुशर्माके सम्मुख होय सातबाणसे सुशर्माको विद्ध करके क्षुरबाणसे उनका धनु औ ध्वज छेदन करके छ बाणसे उनके भ्रातृगणको अश्व सारथि समेत शमनमे प्रेरित किया, सुशर्मा यह देखके क्रोधसे धनञ्जय ऊपर शक्ति औ कृष्णके ऊपर तोमर निक्षेप किया, तब धनञ्जयने शीघ्र उनका छेदन करके शरजालसे सुशर्माको मोहित करके द्रोणसैन्याभिमुख धावमान हुए, कौरवसैन्यमे कोई उनको निवारण कर सका नही, महावीर धन-

ञ्जय महारथियोंका संहार कर्ते हुए गमन कर्ने लगे तब उनका वेग कोई सहन न कर सके, इस प्रकार संहार कर्ते हुए भगदत्ताभिमुख धावमान हुए, तब कौरवसैन्य उनको उच्चस्वरसे आह्वान कर्ने लगे, तब अर्जुन कौरवसैन्यमें प्रविष्ट होय संहार कर्ते हुए भगदत्तके संमुख हुए, गजारूढ़ भगदत्त औ रथारूढ़ अर्जुन दोनो संमुख हुए तब भगदत्त गजके ऊपरसे अर्जुनके ऊपर शरवर्षण कर्ने लगे, अर्जुन अर्द्ध-मार्गहीमें भगदत्तके शर निवारण कर्के उनके ऊपर शरवर्षण कर्ने लगे, तब भगदत्तनेभी धनञ्जयके शर अनायास निवारण कर्के शरोंसे कृष्णको विद्ध कर्के उनके संहारार्थ गज सञ्चालित किया, महामति वासुदेव उस गजको कालान्तक सदृश आगमन कर्ते देखके शीघ्र रथको दक्षिणपार्श्व कर दिया, धनञ्जय ऐसे सुयोगमें हस्ती औ भगदत्तका संहार कर्ते परंतु धर्मस्मरण कर्के वह नहीं किया, तब वह गज असंख्य हस्ती, रथ औ अश्वोंका संहार कर्ने लगा, यह देखके धनञ्जय अतिशय क्रुद्ध होय उठे।

इति २८ अध्याय।

शौ०। धनञ्जयने क्रुद्ध होके भगदत्तका क्या किया औ भगदत्तने उनका क्या किया? सो कहो।

सं०। महावीर अर्जुन औ वासुदेव जब उस गजके समीप गए तब सब कोई निश्चय कर्ने लगे कि यह यमके दंष्ट्रामें निपतित हुए, भगदत्त गजके ऊपर शरनिकरसे कृष्णको विद्ध कर्ने लगे, वह शर कृष्णको विद्ध कर्के भूतलमें प्रविष्ट हुए, अर्जुन भगदत्तका धनु छेदन कर्के क्रीड़ातुल्य संग्राम कर्ने लगे, तब भगदत्तने अर्जुनके ऊपर चतुर्दश तोमर निक्षेप किया, सव्यसाचीने लघु हस्तसे उनके तीन तीन खण्ड कर दिये, तब

भगदत्तने कृष्णके ऊपर लोहमये हेममण्डित शक्ति निक्षेप किया, धनञ्जयने उसकोभी दो खण्ड कर दिये, और भग-दत्तका छत्र, ध्वज छेदन करके दश बाणसे उनको विद्ध कर दिया, भगदत्तने उनसे दृढ़ विद्ध होके अत्यन्त क्रोधसे अर्जु-नके मस्तक पर तोमर प्रक्षेप किया उससे धनञ्जय किरीट किंचित् परिवृत्त हो गया, अर्जुन किरीट यथास्थित करके भग-दत्तसे बोले, हे प्राग्ज्योतिषेश्वर ! इस समय सबको उत्तमरूपसे देख लेओ, भगदत्त यह सुनके अत्यन्त क्रुद्ध होय अन्य धनु लेके धनञ्जय और कृष्णके ऊपर शरवर्षण करने लगे, धन-ञ्जयने तत्क्षणही उनका धनु और तूणीर छेदन करके द्विसप्तति बाणसे उनके मर्मस्थानमें आघात किया, भगदत्त उन शरोंसे अत्यन्त पीड़ित होय क्रोधसे वैष्णव अंकुशास्त्र अभिमन्त्रण करके धनञ्जयके वक्षस्थलमें प्रक्षेप किया, तब महात्मा वासु-देवने धनञ्जयको आच्छादन करके आप वह भगदत्तप्रक्षिप्त सर्वघाती वैष्णवास्त्रको वक्षस्थलमें ग्रहण किया, वह अस्त्र कृष्णके वक्षस्थलमें वैजयन्ती माला होके रह गया, तब धनञ्जय अत्यन्त क्लिष्टचित्तसे कृष्णसे बोले, केशव ! तुमने प्रतिज्ञा किया था युद्ध करेंगे नहीं, केवल तुम्हारे अश्व संयमन करेंगे, सो इस समय प्रतिज्ञा रखो नहीं, हमारे अशक्त होने पर तुमको युद्ध करना युक्त था, हम धनुर्बाण धारण करके सुरा-सुरका जय कर सकते हैं सो तुम जानते नहीं ?

तब कृष्ण बोले, पार्थ ! हम गुह्य पुरातन कहते हैं सुनो, हमने लोक रक्षार्थ अपनी मूर्ति चतुर्धा विभक्त किया है, हमारी एक मूर्ति भूमण्डलमें तपस्या, द्वितीय मूर्ति जग-त्का साधु, असाधु कर्मावलोकन, तृतीयमूर्ति मर्त्यलोकमें मनुष्यरूप धारण करके कार्य्यसाधन और चतुर्थमूर्ति शयन करके सहस्र वर्ष निद्रा सुख अनुभव करती है, वह चतुर्थ मूर्ति सहस्र

वर्षके अनन्तर उत्थित होके वरयोग्योंको वरदान देंगे, उस समय पृथ्वीने वरदानकाल जानेके हमसे वरदान प्रार्थना किया कि हे नारायण! हमारा पुत्र नरकासुर तुम्हारा वैष्णवास्त्र लाभ करके अबध्य होय, हमने तथास्तु कहके वर दिया, उस दिनसे नरकासुर दुधर्ष हो गया, महावीर प्राग्ज्योतिषेश्वरने नरकासुरसे वह अस्त्र पाया था, कोई इससे त्रैलोक्यमे जीवित रह सकता नही, देवगणको बध होता है, इसी लिये हमने वह अस्त्र धारण कर लिया, देवद्वेषी भगदत्त महासुर अब अस्त्रहीन हो गया, जैसा हमने नरकासुरको नष्ट किया वैसा इनको तुम नष्ट करो, यह सुनके अर्जुन भगदत्तके ऊपर निशित शर निक्षेप करने लगे, अनन्तर पार्थने भगदत्तके हस्तीके कुम्भस्थलमे एक नाराच निक्षेप किया, वह नाराच उस गजके कुम्भमे प्रविष्ट हो गया, भगदत्त बारंबार हस्तीको चालन करने लगे, परंतु दरिद्रकी स्त्री जैसा पतिके वाक्य पर कर्णपातभी नही करती वैसा वह गज भगदत्तके वाक्य पर कर्णपात नही किया, तदुत्तर वह करिवरने स्तब्ध गात्र औ दन्तसे अवनितल गतहोके आर्तनाद करते हुए प्राणत्याग किया, तब धनञ्जयने अर्द्धचन्द्र बाणसे भगदत्तका हृदय भेद किया, भगदत्त अर्जुनके शरसे भिन्न हृदय होके धनुर्वाण त्याग करके पञ्चत्वको प्राप्त भए, वृक्ष जैसा पर्वतसे निपतित होता है, तद्रूप भगदत्त उस हस्तीसे निपतित हुए, इस प्रकार भगदत्तको निहत करके कौरव सैन्यका संहार करने लगे।

इति २८ अध्याय।

अनन्तर अर्जुन रणमे प्रदक्षिणा करने लगे, तब गान्धारराजके पुत्र वृषक औ अचल दोनो भ्राता धनञ्जयको विद्ध करने

लगे एक आगे एक पीछे होके उनको पीड़ित कर्ने लगे, तब धनञ्जयने वृषकके अश्व, सारथि, धनु, छत्र, ध्वज औ रथ तिल तिल छेदन कर दिया, तब वृषक अपने भ्राता अचलके रथ पर आरूढ़ होके धनञ्जयको विद्ध कर्ने लगे, तब धनञ्जयने क्रोधसे उग्रनाराच दोनो भ्राताओंको यमालयमे भेज दिया, तब दोनो रथसे निपतित हुए, तब आपके पुत्र दोनो मातुल को निपतित देखके अर्जुनके ऊपर शर वर्षण कर्ने लगे, शकुनि अपने दोनो भ्राताको विनष्ट देखके कृष्ण औ धनञ्जय को विमोहित कर्के मायाजाल विस्तार कर्ने लगे, तब लगुड़, अयोगुड़, प्रस्तर, शतघ्नी, शक्ति, गदा, परिघ, खड्ग, शूल, मुद्गर, पट्टिश, कम्पन, ऋष्टि, नखर, मुसल, परशु, क्षुरप्र औ अन्यान्य आयुध सब चतुर्दिक्से धनञ्जयके ऊपर निपतित होने लगे, खर, उष्ट्र, महिष, व्याघ्र, सिंह, सृमर, चिल्लक, ऋक्ष, वृक, गृध्र, वानर औ विविध राक्षस क्षुधार्त होके धनञ्जयके ऊपर धावमान होने लगे, तब सव्यसाची उनको शरजालसे प्रहार कर्ने लगे तब वह ताड़ित होय चीत्कार कर्ते नष्ट होने लगे, अनन्तर घोरतर अन्धकार उपस्थित हुआ, उस अन्धकारमे धनञ्जयको भर्त्सनाके शब्द उत्थित होने लगे, धनञ्जयने ज्योतिष्कास्त्रसे उस गाढ़ान्धकारका निरास कर दिया, अनन्तर भयङ्कर जलप्रवाह प्रादुर्भूत हुआ, पार्थने आदित्यास्त्रसे उसको शोषण कर दिया, इस प्रकार धनञ्जयने शकुनिकी सब माया नष्ट कर दिया तब शकुनि भीत हो अश्वारोहण पूर्व्वक पलायन कर्ने लगे, तब धनञ्जय हस्तलाघवसे कौरवसैन्य को पीड़ित कर्के दो भागसे विभक्त कर दिया, तब कोई दुर्यो-धनके पास औ कोई द्रोणाचार्य्यके निकट जाने लगे, अनन्तर सैन्य सब धूलिजालसे आच्छन्न हो गया, धनञ्जयको कोई देख न सके केवल दक्षिण दिक् गाण्डीवका शब्दमात्र श्रुत होता

था, अनन्तर दक्षिण दिक् घोर संग्राम आरम्भ हुआ, हम लोगोने द्रोणाचार्यका अनुसरण किया, अनन्तर युधिष्ठिरका सैन्य कौरव सैन्यका विनाश करने लगा, शरवर्षी पार्थका कोई निवारण न कर सका, कौरवगण पार्थके शरसे ताड़ित होय इतस्ततः पलायन करने लगे, तब स्वपक्षीका नाश करने लगे धनञ्जयके शरसे प्रत्येक गतासु होके भूतलमें निपतित होने लगे, हत हस्ती, मनुष्य औ अश्वगणसे रणस्थल पूर्ण होगया, शृगाल कुक्कुर कोलाहल करने लगे, पिता पुत्रका, पुत्र पिताका, सुहृद सुहृदका त्याग करके आत्मरक्षामे यत्नवान् होगए, अधिक क्या कहें, धनञ्जयके शरसे ताड़ित होय अनेक वीर वाहन त्याग करके पलायन करने लगे।

इति ३० अध्याय।

धृ०। जब कौरवसेना सब छिन्न भिन्न हो गई तब तुम लोग पलायन करने लगे उस समय तुम लोकोका मन कैसा हुआ? छिन्न भिन्न सैन्यको एकत्र करनाभी कठिन है वहभी कैसा हुआ? सो कहो।

सं०। सैन्यविशृङ्खल होने पर दुर्योधनके हितैषी वीर लोग यशके लिये द्रोणाचार्य्यका अनुगमन करने लगे, तब वह सब भीमसेन, सात्यकी औ धृष्टद्युम्नके संमुख धावमान हुए, क्रूरस्वभाव पाञ्चालगण द्रोणको आक्रमण करो ऐसा कहके सैन्य प्रेरण करने लगे, आपके पुत्रगण द्रोणका बध न होय इस लिये कौरवोंको प्रेरण करने लगे, तब द्रोणाचार्य्य पाञ्चालोका जिस२ वीरको मथित करने लगे धृष्टद्युम्न उस२ वीरके निकट उपस्थित होने लगे, इस प्रकार निर्दिष्टस्थानके विपर्य्यय होने से रणस्थल भयङ्कर हो गया, पाण्डवगण कौरवसैन्यको दुरा-क्रम्य होगए, अनन्तर वह लोग द्रोणके वधार्थ प्राणपणसे

संग्राम कर्ने लगे,ऐसा युद्ध होने लगा कि जैसे कभी न हुआ था पृथ्वी कम्पित होने लगी, इतस्ततः घूर्णमान कौरवसैन्य पाण्डव-सैन्यमे प्रवेश कर्ने लगा, द्रोणाचार्य पाण्डवसैन्यमे प्रविष्ट होय छिन्नभिन्न कर्ने लगे, तब धृष्टद्युम्नने द्रोणको निवारण कर दिया तब द्रोण औ पाञ्चालोसे अति अद्भुत युद्ध हुआ, तब महावीर नील तृणराशि दहन कर्ता अग्निके समान कौरवसैन्यको दहन कर्ने लगे, तब अश्वत्थामा बोले, हे नील ! तुम सैन्यसे क्या युद्ध कर्ते हो? हमसे युद्ध करो, तब नील वीर अश्वत्थामाको विद्ध कर्ने लगे, तब अश्वत्थामाने भल्लास्त्रसे नीलका धनु, ध्वज औ छत्र खण्ड२ कर दिया, तब नील रथसे उतर कर्के खड्गसे अश्वत्थामाका मस्तक छेदन कर्ते हैं इतनेमे अश्वत्थामाने भल्लास्त्रसे उनके मस्तक छेदन कर दिया, उनको निपतित देखके पाण्डवसैन्य व्याकुल हो गया, पाण्डव सब चिन्ता कर्ने लगे कि धनञ्जय संसप्तकोसे युद्ध कर्ते हैं इहां कौन महावीर रक्षा करेंगे ।

इति २१ अध्याय ।

अनन्तर भीमसेन स्वीय सैन्य नष्ट होते देखके क्रोधसे साठ शरसे बाल्हीकको औ दश शरसे कर्णको विद्ध कर्ने लगे, द्रोणने भीमके वधार्थ तीक्ष्ण शरसे उनके मर्ममे प्रहार कर्के ऊपर२ छब्बीस बाण क्षेप किया, कर्णने बारह बाण, अश्वत्थामाने सात बाण औ दुर्य्योधनने छबाणसे उनको विद्ध किया, भीमसेनभी उनको विद्ध कर्ने लगे, वह पांच बाणसे द्रोणको, दश सरसे कर्णको, द्वादश बाणसे दुर्य्योधनको औ आठ बाणसे अश्वत्थामाको विद्ध कर्के सिंहनाद कर्ने लगे, तब युधिष्ठिर भीमसेनकी रक्षार्थ योद्धाओंको प्रेरण कर्ने लगे,

नकुल सहदेव औ युयुधान प्रभृति वीरगण भीमसेनके निकट प्राप्त हुए, सब समवेत होके कौरवसैन्य नाश करने लगे, तब दुर्य्योधन प्रभृति प्राणपणसे युद्ध करनेमे प्रवृत्त होय गजारोही गजारोहीका औ रथी रथीका संहार करने लगे, वीरगण शक्ति, असि औ परशु प्रहार करने लगे, अनन्तर गजसैन्य घोर युद्ध करने लगा, कोई गजपृष्ठसे, कोई अश्वपृष्ठसे अधः-शिर होके निपतित होने लगे, कोई निमर्द्दसे वर्मशून्य होके गिरे, एक हस्तीने उनका मस्तकमे पाद रखके चूर्ण कर दिया, अन्य हस्ती निपतित लोगोको पेषण करने लगे, कितने एक गज भूतलमे निपतित होयके दन्तसे अनेक वीरोको मथित करने लगे, अनेक हस्ती दन्तलग्न वाणोंसे वीरोंका प्राण संहार करने लगे, पिता पुत्रका पुत्र पिताका नाश करने लगे, चारो दिक रथ से अक्षभग्न, ध्वज छिन्न औ ध्वज भिन्न होके निपतित होने लगे, कोई अश्वछिन्न रथही लेके धावमान होने लगे, खड्गदण्डखण्डित बाहु औ कुण्डलालंकृत मस्तक निपतित होने लगे, कहिं कहीं रथ, अश्व औ हस्ती आरोही सहित निपतित होने लगे ।

इस प्रकार मर्य्यादाशून्य युद्ध होने लगा, तब हा पुत्र ! हा तात ! हा सखे ! तुम कहां हो, इहां आओ, धावमान मत हो, इसको प्रहार करो, इसको ले आओ इत्यादि अनेक कहने लगे, मनुष्य, हस्ती औ अश्वोसे रुधिर प्रवाह चलने लगा, पृथ्वीकी धूलि शान्त हो गई, किसी वीरके रथमे चक्र भग्न हो पर अन्य रथके चक्र संलग्न करके युद्ध करने मे शरके कालाति-पातने वह वीर अन्यसे हत होके निपतित होने लगे, निरा-श्रय आश्रय लाभार्थी वीरगण दारुण केशाकर्षण, मुष्टियुद्ध औ नख दन्त प्रहार करने लगे, कोई पलायन, कोई आक्रमण, कोई आर्तनाद औ कोई स्वपक्ष वा परपक्षका नाश करने

लगा, कोई भीरु रुधिरधारा देखके मोहित हो गए, सबही उद्विग्न औ कुछभी ज्ञान न पड़ने लगा।

अनन्तर पाण्डव सेनापति अवसर पायके त्वरा कर्ने लगे, औ सैन्य संहारपूर्वक द्रोणाभिमुख धावमान हुए, तब उनकी सम्मुख द्रोणको ग्रहण करो, धावमान हो, शङ्का त्याग करो उनको प्रहार करो ऐसा शब्द उत्थित होने लगा, अनन्तर द्रोण, कृप, कर्ण, अश्वत्थामा, जयद्रथ, विन्दानुविन्द औ शल्य उनको निवारण कर्ने लगे, पाण्डव औ पाञ्चालगण शरजालसे पीड़ित होय द्रोणको त्याग करते हैं इतनेमें धनञ्जय बहुसंख्यक संसप्तको पराजित करके वहां उपस्थित हुए, बाण-किरणजाल विस्तार करते हुए अर्जुन सूर्य्य संसप्तक सागरको शुष्क करके कौरवसैन्यको संतप्त कर्ने लगे, गजारोही अश्वारोही रथारोही सब अर्जुनके शरजालसे ताड़ित होय निपतित होने लगे, कौरवगण सबही विस्मित औ समरमें पराङ्मुख होके हाहाकार औ हा कर्ण हा कर्ण कर्ने लगे, कर्ण उसकाल उन्हें पास न थे, अनन्तर कर्ण शरणार्थी कौरवोंका रोदनशब्द सुनके भीत मत हो, यह कहके अर्जुनके सम्मुख धावमान हुए, औ आग्नेयास्त्र त्याग किया, धनञ्जयने तीक्ष्ण शरोंसे वह शर सब निवारण कर दिये, धृष्टद्युम्न, भीम औ सात्यकीने तीन बाणसे कर्णको विद्ध किया, कर्णने शरवर्षण पूर्वक अर्जुनके शरोंको निवारण करके तीन बाणसे धृष्टद्युम्न प्रभृति तीन वीरके धनु: छिन्न कर दिये, छिन्नधन्वा तीनो वीरोंने तीन शक्ति निक्षेप किया, कर्णने तीन तीन बाणोंसे वह तीनो शक्ति छेदन कर दिया, औ अर्जुनके ऊपर शर-वर्षण करके गर्जन कर्ने लगे, अर्जुननेभी सात शरसे कर्णको विद्ध करके उनके भ्राताको निहत किया, तदुत्तर शत्रुञ्जयका संहार करके भल्लास्त्रसे विपाटका मस्तक छेदन किया, इस

प्रकार कर्णके तीनो भ्राता कर्ण औ धार्तराष्ट्रोंके समक्षही अर्जुनने नष्ट किये ।

अनन्तर भीमसेनने रथसे उतरके खड्गसे कर्णपक्षीय पञ्चदश वीरोंको निहत करके पुनः रथ पर आरोहण करके पञ्चदश शरसे कर्णको औ उनके सारथिको विद्ध किया, धृष्टद्युम्नने खड्गचर्म लेके चन्द्रवर्मा औ बृहत्क्षत्रको आहत करके पुन रथारोहण पूर्वक विंशति शरसे कर्णको विद्ध करके गर्जन करने लगे, सात्यकीने चतुष्षष्ठि शरसे कर्णको विद्ध किया, तदुत्तर भल्लास्त्रसे उनका धनुच्छेदन करके तीन वाणसे उनके दोनो भुज औ वक्षस्थल विद्ध किया, तब दुर्य्योधन द्रोण औ जयद्रथने कर्णको उस विपत्तिसे उद्धार किया, उनके निहत्त होने पर उनका सैन्य सब भीत होके उनके पीछे पीछे धावमान हुआ, धृष्टद्युम्न, भीम, अभिमन्यु, नकुल औ सहदेव सात्यकीकी रक्षा करने लगे, इस प्रकार आपके पक्ष औ पाण्डवपक्षको घोर युद्ध होने लगा ।

अनन्तर पदाति, रथी, हस्ती औ अश्वोंका परस्पर युद्ध आरम्भ हुआ, कहीं रथी हस्ती औ पदातिके साथ, कहीं हस्ती रथी औ पदातिके साथ, कहीं रथी औ पदाति रथी औ हस्तीके साथ, कहीं अश्वके साथ अश्व, रथीके साथ रथी, कहीं रथी अश्वके साथ युद्ध करने लगे, रथी, अश्व, हस्ती, मनुष्य सब नष्ट होने लगे, रक्तकी नदी औ मांसके राशि हो गए, सर्वत्र छिन्नभिन्न अवयव निपतित हो गए इतनेमे दिनकार अस्तमित हुए तब कौरव औ पाण्डव स्व स्व शिविरमे प्रस्थित हुए ।

इति ३२ अध्याय ।

यद्ध संसप्तकवध पर्वाध्याय समाप्त ।

अभिमन्युवध पर्वाध्याय।

सं०। अमितबलशाली अर्जुनके प्रभावसे हम लोगोंका सैन्य सब छिन्नभिन्न, द्रोणका अभिलाष निष्फल औ युधिष्ठिर सुरक्षित होनेसे युद्धपराजित वर्मशून्य धूलिधूसर हास्यास्पद कौरवगण उद्विग्न मनसे दशदिक् अवलोकन कर्ते हुए द्रोणके अनुमतिसे युद्धोपसंहार पूर्वक अर्जुनके गुणको प्रशंसा औ उनका औ कृष्णसख्यभाव श्रवण कर्के चिन्ता औ मौनभावसे अवस्थान कर्ने लगे।

अनन्तर प्रातःकाल राजा दुर्य्योधन शत्रुके उन्नतिसे अत्यन्त विमनायमान होके प्रणय औ अभिमानसे योद्धाओंके समक्ष द्रोणसे बोले, हे आचार्य्य! हम लोग आपके बध्यो भया है, क्यों कि, युधिष्ठिरको समीपस्थ देखके ग्रहण न किया, वह आपके निकट होनेसे देवताभी रक्षा नहीं कर सकते हैं, पहिले आपने प्रसन्नतासे वरदान दिया अब उस्का अन्यथा आचरण कर्ते हो, परन्तु आर्य्यलोग कदापि भक्तकी आशा विफल नहीं कर्ते हैं।

तब द्रोणाचार्य्य नितान्त लज्जित होके बोले, महाराज! हम तुम्हारे प्रियकार्य्यमे अत्यन्त यत्नवान् हैं, हमको ऐसा कदापि मत जानो, देव, दानव, गन्धर्व औ राक्षसमे कोही धनञ्जय रक्षित युधिष्ठिरको ग्रहण नही कर सकेगा, जहां जनार्दन भगवान् आप विराजमान है औ धनञ्जय सेनापति है, वहां शूलपाणि भिन्न किसीकी क्रिया सफल नही होगी, आज हम सत्य कहते हैं, कि पाण्डवोमे एक महारथिका बध करेंगे, और एक देवगणकोभी दुर्भेद्य व्यूह रचना करेंगे, सो अब धनञ्जयको किसी प्रकार धर्मराजके निकटसे दूर करो।

आचार्य्य यह कहने पर संसप्तक पुनः धनञ्जयको दक्षिण

दिक् आह्वान करने लगे, इस लिये धनञ्जय उनसे घोर युद्ध करने लगे, इधर द्रोणने चक्र व्यूह रचना किया, अभिमन्यु युधिष्ठिरके आज्ञासे वारंवार उस व्यूहका भेद करने लगे, तदुत्तर वह सहस्र सहस्र वीरको निपातित करके छ वीरोंके सहित व्याघृत औ दुःशासन पुत्रके वशवर्ती होके निहत हुए, हम लोग सन्तुष्ट हुए औ पाण्डव शोकार्त हुए, अनन्तर युद्ध समाप्त हुआ।

धृ०। अर्जुनात्मज अप्राप्तयौवन अभिमन्यु विनष्ट हुआ यह सुनके हमारा हृदय विदीर्ण होता है, हा! क्या दारुण क्षत्रधर्म है, हमारे पक्षीय वीरोंने अभिमन्युको नष्ट किया सो सब कीर्तन करो।

सं०। अभिमन्युने रणस्थलमे जो पराक्रम किया औ जिस प्रकार निहत हुआ सो कहते हैं सुनो।

इति २३ अध्याय।

हे नरनाथ! पञ्चपाण्डव औ कृष्ण युद्धमे अतिशय भयङ्कर हैं, देवगणके अजेय औ वह अतिशय श्रमशील है सो उनके कर्महीसे ज्ञात होता है, आप शोक सम्वरण करके सुनो, द्रोणाचार्य्यने चक्रव्यूह रचना करके उसमे भूपालोंको स्थापित किया, उसके द्वारदेशपर समस्त राजकुमार संस्थापित किये, वह सब आपके पौत्र लक्ष्मणको आगे करके उत्साहसे युद्धमे प्रवृत्त हुए, दुर्य्योधन, कर्ण, कृप औ दुःशासनसे वेष्टित होके सेनाभिमुखमे स्थित हुए, जयद्रथ सेनाके मध्यमे स्थित हुए, आपके तीस पुत्र अश्वत्थामाको आगे करके जयद्रथके पार्श्व-भागमे स्थित हुए, शल्य, शकुनि, भूरिश्रवाभी उनके पास अवस्थित हुए, सभोंने मृत्यु पण करके युद्धारम्भ किया।

इति २४ अध्याय।

अनन्तर भीमसेन प्रमुख पाण्डवगण, सात्यकी, चेकितान, धृष्टद्युम्न, कुन्ती, भोज, द्रुपद, अभिमन्यु, शिखण्डी, उत्तमौजा, विराट, द्रौपदेय, क्षत्रवर्मा, बृहत्क्षत्र औ अन्यान्य महावीर युद्धार्थी होके द्रोणाभिमुख धावमान हुए, द्रोणाचार्य्य उनके ऊपर शरवर्षण करने लगे, पाण्डवपक्षीय द्रोणके शरसे निपीड़ित होके उनके सम्मुख अवस्थान कर सके नहीं, युधिष्ठिर द्रोणको आगमन करते देखके उनके निवारणका अनेक उपाय चिन्तन करते धनञ्जय औ वासुदेव तुल्य तेजस्वी अभिमन्युके ऊपर दुर्वह भार समर्पण करके बोले, वत्स अभिमन्यो! हमलोग कैसा चक्रव्यूह भेद करेंगे, सो जान सकते नहीं।

अर्जुन आयके हम लोगोंकि जिस्मे निन्दा न करे सो करनी चाहिये, तुम, अर्जुन, कृष्ण औ प्रद्युम्न यह तुम चारही चक्रव्यूह भेद करनी जानते हो, इस समय पितृगण, मातुलगण औ सैन्यगण तुमसे यह वरदान मांगते हैं, तुम इनको वरदान करो।

अभिमन्यु बोले, आर्य्य! हम पितृगणके जयाभिलाषी होके शीघ्र द्रोणसैन्यका ध्वंस करेंगे, आप हमको आज्ञा करते हैं, परन्तु हम विपदावह कार्य्यमे अग्रसर होनेमे उत्साह करते नहीं।

युधिष्ठिर बोले, तुम सैन्यभेद करके हम लोगोंका प्रवेशद्वार कर देओ, तब हमलोग तुम्हारे अनुगामी होंगे, तुम युद्धमे धनञ्जयतुल्य हो, तुम्हारे भेद करनेसे हम लोग वीरोंका ध्वंस करेंगे।

अभिमन्यु बोले, आर्य्य! पतङ्ग जैसा प्रज्वलित अग्निमे प्रवेश करता है तद्रूप दुरधिगम्य द्रोणसैन्यमे हम प्रवेश करेंगे, यह पितृगणका हितकर कार्य्य अवश्य करेंगे, एकमात्र हम

बालककी नष्ट वीरोंको सब कोई देखेंगे, हम नष्ट न करेंगे तो अर्जुन औ सुभद्राके पुत्र नही।

युधिष्ठिर बोले, वत्स! तुम इस गुरुकार्य्यमे उत्साहित हुए हो इस लिये तुम्हारी बल वृद्धि होय।

अभिमन्यु युधिष्ठिरका वाक्य सुनके सारथिसे बोले, सुमित्र! तुम शीघ्र द्रोणाचार्य्यके सम्मुख रथ चालन करो।

इति २५ अध्याय।

अनन्तर अभिमन्यु बारंबार रथ चालनकी आज्ञा देने लगे तब सारथि बोले, हे आयुष्मन्! पाण्डवोने आपके ऊपर गुरुतर भार अर्पण किया है, सो इस समय वह अपने योग्य है कि नही यह विचारकरके युद्धमे प्रवृत्त हो, द्रोणाचार्य्य कार्य्यकुशल दिव्यास्त्रसंपन्न औ निपुण हैं, आप सुखसंभोगसे बर्द्धित हुए हो, तब अभिमन्यु हास्य करके बोले, सारथे! क्षत्रियगण औ द्रोणकी कथा दूर रहे इन्द्रभी आवें तो हम युद्ध करेंगे, आज क्षत्रियगणका कुछभी हमको भय नही है, यह कहके शीघ्र रथ चालन करो ऐसो पुनः आज्ञा देने लगे।

अनन्तर सारथि सन्तुष्ट होके द्रोणाभिमुख रथ चालन कर्ने लगे, कौरवगण अभिमन्युको आगत देखके द्रोणाचार्य्यको आगे करके धावमान हुए, इधर पाण्डवगणभी अभिमन्युके अनुगत हुए, कौरवगण हृष्ट होके अभिमन्युको प्रहार कर्ने लगे, अभिमन्यु उनके ऊपर शरवर्षण कर्ने लगे, उनके तीक्ष्ण शरोंसे अग्निमे शलभके तुल्य निपतित होने लगे, अभिमन्यु गोधा, अंगुलित्राण, शर, धनु, असि, चर्म, अंकुश, अभिष्ट, तोमर, परशु, गदा, अयोगुड़, प्रास, ऋष्टि, पट्टिश, भिन्दिपाल, परिघ प्रभृति आयुध भूषित सहस्र सहस्र बाहु छिन्न छिन्न करके निपातित कर्ने लगे, सहस्र सहस्र कुण्डलमण्डित

मुण्ड खण्ड खण्ड होके धरणितलमें निपतित होने लगे, महा-रथियोंके रथ, चक्र, अश्व, हस्त, पाद, जंघा, नाशा प्रभृति छिन्न अवयवोंसे भूतल पूर्ण हो गया, विष्णु जैसे दैत्यदल विदारण कर्ते हैं, वैसे अभिमन्यु विदारित कर्ने लगे, अभि-मन्युका कौरवसैन्यका पराक्रम देखके कौरवोंके मुख शुष्क औ नयनचञ्चल होने लगे, सब वीर रोमाञ्चित, सेदाक्त औ उत्साहशून्य होके पलायन कर्ने लगे ।

इति ३६ अध्याय ।

अनन्तर दुर्य्योधन अभिमन्युको सैन्य छिन्नभिन्न कर्ते देखके क्रोधसे उनके ऊपर धावमान हुए, द्रोणाचार्य्य दुर्य्योधनको अभिमन्युके ऊपर धावमान देखके सैन्यसे बोले, हे वीर-गण! तुमलोग शीघ्र दुर्य्योधनकी सहायता करो, यह सुनके सबोंने दुर्य्योधनको वेष्टन कर लिया, तब द्रोण, कृप, कर्ण, कृतवर्मा, शकुनि, बृहद्दल, मद्रराज, औ अन्यान्य वीर सब अभिमन्युके ऊपर शरवर्षण कर्ने लगे, अभिमन्यु वह अस-हमान होके शरजालसे सबको पराङ्मुख कर्के सिंहनाद कर्ने लगे, द्रोण प्रभृति क्रुद्ध होके उनके ऊपर चतुर्दिक्से शरवर्षण कर्ने लगे, अभिमन्यु उनके शरोंको अन्तरिक्षहीमें निवारण कर्के उनको विद्ध कर्ने लगे, वह व्यापार अद्भुत दृष्ट होने लगा, द्रोणाचार्य्यादि महावीर अपराङ्मुख अभिमन्युको देखके क्रोधसे तीक्ष्ण शरक्षेप कर्ने लगे, अभिमन्यु समुद्रके वेलातुल्य उनका वेग धारण कर्ने लगे, इस प्रकार परस्पर संहार कारक युद्ध होने लगा, तब दुःशासनने द्वादश, दुस्सहने नव, कृपा-चार्य्यने तीन, द्रोणने सप्तदश, विविंशतिने सत्तर, कृतवर्माने सात, बृहद्दलने आठ, अश्वत्थामाने सात, भूरिश्रवाने तीन, मद्रराजने छः, शकुनिने दो औ दुर्य्योधनने तीन शरोंसे अभि-

मन्युको विद्ध किया, अभिमन्युनेभी तीन तीन शरोंसे सभोंको विद्ध किया औ सम्मुख समागत अश्मकेश्वरको विद्ध करके हास्यपूर्वक उनके दश शरसे अश्व, सारथि, ध्वज, बाहुयुगल, धनु औ मस्तक भूतलमे पातित कर दिया तब अश्मकेश्वरका सैन्य पलायन करने लगा, तब द्रोण प्रभृति सब वीर अभिमन्युके ऊपर शरक्षेप करने लगे, अभिमन्युने उनके शरोसे विद्ध औ क्रुद्ध होके कर्णके ऊपर एक मर्मभेदी बाण निक्षेप किया, महाबल कर्ण उस बाणसे अत्यन्त व्यथित औ विह्वल होके विचलित हो गए, अनन्तर अभिमन्युके सुषेण, दीर्घलोचन औ कुण्डभेदीको विद्ध करनेसे कर्णने पञ्चविंशति बाण, अश्वत्थामाने विंशति औ कृतवर्मांने सात शर निक्षेप किये, अभिमन्यु सन्निहितस्थ शल्यको शरजालसे आच्छन्न करके सेनाको विचासित करने लगे, शल्य उस बाणोंसे गाढ़ विद्ध होके रथमे विमोहित होय पड़े, कौरवसैन्य शल्यको निपातित देखके द्रोणाचार्य्यके समक्षही पलायन करने लगा।

इति ३७ अध्याय।

—०—

धृ०। इस प्रकार धनञ्जयतनय जब हमारे वीरोको मर्दन करने लगे तब किसने उनका निवारण किया ?

सं०। शल्यका कनिष्ठभ्राता स्वीय ज्येष्ठभ्राताको व्यथित देखके अभिमन्युके ऊपर शरजाल निक्षेप करने लगे, अर्जुनात्मजने लघु हस्ततासे उनका रथ, ध्वज, धनु, हस्त, पाद औ मस्तक छेदन कर दिया, अनुचरगण उनके सब पलायन करने लगे, यह अभिमन्युका अलौकिक कार्य्य देखके वीर सब साधुवाद देने लगे, अनन्तर शल्यके सहचर वीरगण अभिमन्युके ऊपर धावमान हुए, उनमे कोई रथ, कोई गज, कोई अश्व औ कोई पादचारसे घोरतर शरवर्षण करने लगे,

अभिमन्यु हास्य करके पहिले उनसे स्वतु युद्ध करने लगे, उस समय उनका वाण सन्धान औ वाण निक्षेप कुछभी दृष्ट नही होता था, केवल चापके भ्रमणसे इन्द्रधनुके समान शोभा दृष्ट होती थी, अनन्तर भास्कर जैसे क्रम क्रमसे तीक्ष्ण होते हैं, उस प्रकार अभिमन्यु क्रम क्रमसे तीव्र होके सहस्र सहस्र मस्तक निपातित करने लगे, तब वह सब वीर विमुख हो गए।

इति ३८ अध्याय।

धृ०। अभिमन्युने हमारा सैन्य सब लघुहस्ततासे निवारण किया सुनके हमारे हृदयमे लज्जा औ सन्तोष युगपत् आक्रान्त होते हैं, सो वह संग्राम यथास्थित वर्णन करो।

सं०। रथारूढ़ अभिमन्यु उत्साहसे कौरवसैन्यके ऊपर शरवर्षण करने लगे, द्रोणादि प्रत्येक वीरोंको विद्धकरने लगे, हे महाराज! आपके पक्षीय वीर सब अभिमन्युके अलौकिक पराक्रमसे वित्रासित औ प्रकम्पित होने लगे, तब द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्यसे बोले, हे भव्य! देखो यह अभिमन्यु युधिष्ठिरादिको संतुष्ट करते हुए पाण्डवों अग्रे अग्रे गमन करते हैं, यह इच्छा करेंगे तो अनायास कौरवसैन्य नष्ट करेंगे, परंतु क्यों नही इच्छा करते क्या जाने, तब दुर्य्योधन, कर्ण, दुःशासन औ अन्यान्य भूपति बोले, हे भूपगण! देखो द्रोणाचार्य्य अभिमन्युको निहत करनेकी इच्छा नही करते हैं, हम लोग सत्य कहते हैं, कि द्रोणाचार्य्य इच्छापूर्वक युद्ध करेंगे तो यमभी निस्तार नही पावेंगे, परंतु धनञ्जय इनके शिष्य औ उनके यह पुत्र है यह जानके उनकी रक्षा करते हैं, इसीसे यह पौरुष प्रकाश कर रहे हैं, इस लिये अब शीघ्र इस मूढ़का संहार करो, वीरगण दुर्य्योनका वाक्य सुनके द्रोणके रक्ष

अभिमन्युके ऊपर धावमान हुए, तब दुःशासन गर्वसे दुर्य्योधनसे बोले, महाराज! राहु जैसा दिवाकरको ग्रास कर्ता है तद्रूप हम पाञ्चाल औ पाण्डवोंके समक्ष अभिमन्युका संहार करेंगे, अभिमन्युके मरणसे अवश्य कृष्ण औ अर्जुन प्राणत्याग करेंगे, कृष्णार्जुनके मरणसे पाण्डव सब अनायास कालकवलित होंगे, इस लिये हम अभिमन्युहीको निपातित कर्ते हैं आप हमारे मङ्गलकी चिन्ता कीजिये, इस प्रकार उच्चस्वरे कहके अभिमन्युके ऊपर धावमान हुए, अभिमन्युभी शरवर्षण कर्ने लगे, तब उन दोनोंका मण्डलाकार भ्रमणपूर्वक घोर संग्राम होने लगा, दुःशासन क्रुद्ध होके शरवर्षण औ सिंहनाद कर्ने लगे।

इति ३८ अध्याय।

अनन्तर अभिमन्यु गर्वसे दुःशासनसे बोले, रे अधर्मनिरत! आज भाग्यहीसे संग्राममे प्राप्त हुआ है, तूंहीने धृतराष्ट्रके समक्ष सभामे कटुवाक्यसे धर्मराजको कुपित किया, कपट द्यूतसे बलदर्पित होके भीमसेनको कटुवाक्य कहा, आज उसका फलप्राप्त होगा, इतना कहके क्रोधसे कालाग्नि सदृश भीषण बाण निक्षेप किया, दुःशासन उसबाणसे गाढ विद्ध औ व्यथित होके रथमे मूर्छित होय शयान हो गए, तब उनके सारथिने उनको संग्रामसे दूर कर दिया, पाण्डवपक्षीय दुःशासनको निपतित देखके सिंहनाद कर्ने लगे, औ कौरवसैन्यको छिन्नभिन्न कर्ने लगे, इस प्रकार भयङ्कर संग्राम होने लगा तब दुर्य्योधन कर्णसे बोले, कर्ण! देखो दुःशासन पराक्रम करके अन्तमे शत्रुके वशीभूत हुए औ शत्रु वीर सब अभिमन्युकी रक्षा कर्नेके लिये धावमान होते हैं, तब कर्ण क्रोधा-

धीर होके तीक्ष्ण बाणोंसे अभिमन्युको विद्ध कर्के उनके अनुचरगणको विद्ध कर्ने लगे, अभिमन्युभी तिस प्रतिबाणोंसे कर्णको विद्ध कर्के क्रोधसे समीपस्थ वीरोंको व्यथित कर्ने लगे, तथापि कोई उनको निवारण कर्नेमें समर्थ हुआ नहीं, तब कर्ण शत शत उत्तम अस्त्र अभिमन्युके ऊपर निक्षेप कर्ने लगे, परंतु अभिमन्यु कुछभी व्यथित न होके भल्लास्त्रोंसे शरोंके धनु छेदन कर्ने लगे, अनन्तर अभिमन्यु कर्णके ऊपर शराघात कर्ने लगे, तब कर्णका ध्वज, छत्र, धनु, अश्व औ सारथि निहत हो गए, तब कर्णने अभिमन्युके ऊपर सन्नत पर्व पोङ्खबाण निक्षेप किये, तब अभिमन्युने अनायास वह सहन कर्के कर्णका ध्वज औ धनु पुनः निपातित कर दिया, कर्णके भ्राता कर्णका तदवस्थ देखके क्रोधसे अभिमन्युके ऊपर धावमान हुए, अभिमन्युने उनके बाणसे किञ्चित् व्यथित होके क्रोधसे उनका मस्तक छेदन कर दिया, कर्णके भ्राता निपातित होनेसे कर्ण अतिशय दुःखित औ अभिमन्युसे पराभूत होके रणस्थलसे पलायन कर गए, सैन्यभी उनको देखके पलायन कर्ने लगा, अभिमन्युके बाणोंसे रणस्थल समाच्छन्न हो गया कुछभी दृष्टिगोचर न होने लगा, तब केवल सिंधुराज जयद्रथही अवस्थित रह गए, अनन्तर अर्जुनात्मज शङ्खवादन पूर्वक कौरव सैन्यमें निपतित होके अग्निकेतुल्य शत्रु सैन्यको दग्ध कर्ने लगे, मुहूर्तमें असंख्य रथ, गज, अश्व औ पदाति अभिमन्युके शरसे कातर होय चतुर्दिक् आत्मरक्षाके लिये धावमान होके स्वपक्षहीका संहार कर्ने लगे, सहस्र सहस्र छिन्नबाहु, असंख्य बाण, धनु, खड्ग, मनुष्यदेह, मस्तक धरातलमें निपतित होने लगे, राशि राशि ध्वज, कुण्ड, रथ, चक्र, आयुध, अलङ्कार औ क्षत देह निपतित होनेसे रणस्थल अगम्य औ भयानक हो गया, बध्यमान

राजपुत्र सब परस्पर क्रन्दन कर्ने लगे, इस प्रकार अभिमन्यु शङ्खवादन पूर्व्वक संहार कर्ते सैन्यमे भ्रमण कर्ने लगे।

इति ४० अध्याय।

धृ०। अभिमन्यु जब प्राणपणसे युद्धमे प्रवृत्त होय शत्रु-सैन्यमे प्रविष्ट हुए तब पाण्डवपक्षीय कौन वीर उनके अनु-गामी हुए?

सं०। धर्मराज, भीमसेन प्रभृति सबही वीर उनके रक्षार्थ अनुगत होके धावमान हुए, कौरवपक्षीय पाण्डवोंको धाव-मान देखके रणमे परांमुख हो गए, तब आपके जामाता जयद्रथ सैन्यको स्थिर कर्के पाण्डवोको निवारण कर्ने लगे।

धृ०। महाबाहु जयद्रथने एकाकी होके पाण्डवोंको निवा-रण किया सो अद्भुत बलवीर्य्य किया, तुम उनका समरवृत्तान्त सविस्तर कहो, कोई ऐसी उन्होंने तपस्या किया था जिस्से एकाकीने महावीरोंको निवारण किया?

सं०। जयद्रथने जिस काल द्रौपदी हरण किया था, उस समय भीमसेनने उनका पराजय किया था, उस्से वह अत्यन्त दुःखी होय प्रियवस्तु त्याग पूर्वक इन्द्रिय निग्रह कर्के कठोर तपस्या कर्ने लगे, अनन्तर महादेव तपस्यासे प्रसन्न होय वरदान देनेमे उद्यत हुए, तब जयद्रथने यही वर मांगा कि हम एकाकी रथारूढ़ होके पाण्डवोंको निवारण कर सकें, तब महादेवने कहा तुम अर्जुन विना चार पाण्ड-वोंको निवारण कर सकोगे, जयद्रथने तथास्तु कहके स्वीकार किया।

हे महाराज! उसी वरदानके प्रभावसे दिव्यास्त्रसम्पन्न पाण्डवोंको निवारण किया, उनके धनुके टङ्कारसे शत्रुगण

भीत औ कौरवगण आह्लादित होने लगे, जयद्रथ एकाकी समस्त भार ग्रहण करके पाण्डवके ऊपर धावमान हुए।

इति ४१ अध्याय।

हे महाराज! जयद्रथने सिंधुदेशीय अश्वशोभित दिव्य-रथारोहण करके महाचाप विस्फारण पूर्वक असंख्य शर निक्षेप करके अभिमन्यु विदारित व्यूहको पूर्ण कर दिया, तदुत्तर सात्यकीको तीन, भीमसेनको आठ, धृष्टद्युम्नको साठ, विराटको दश, द्रुपदको पांच, शिखण्डीको दश, युधिष्ठिरको सत्तर, कैकयगणका पच्चीस औ द्रौपदेयोंको तीन तीन वाणोंसे विद्ध करके अन्यान्य भूपोंको विद्ध कर्ने लगे, युधिष्ठिरने हास्य करके उनका धनु छेदन कर दिया, जयद्रथने शीघ्र अन्य शरासन लेके युधिष्ठिरके दश वाणसे विद्ध करके अन्यको विद्ध कर्ने लगे, भीमसेनने जयद्रथका हस्त लाघव देखके तीन भल्लास्त्रसे जयद्रथका धनु, ध्वज औ छत्र छेदन कर दिया, सिंधुराजने पुनः अन्य धनु लेके भीमसेनका धनु अश्व औ ध्वज छेदन कर दिया, भीमसेन शीघ्र उस रथसे उत्तार करके सात्यकीके रथपर आरूढ़ हो गए, एकाकी जयद्रथ अभिमन्यु कृतमार्गसे निवारण करके जिधर जिधर पाण्डव प्रवेश करें उधरही उधर निवारण कर्ने लगे।

इति ४२ अध्याय।

अनन्तर जयाभिलाषी पाण्डवगण इस प्रकार जयद्रथसे निरुद्ध होके घोर संग्राम कर्ने लगे, तेजस्वी अभिमन्यु सैन्यमें प्रवेश करके मकरविक्षोभि सागरकेतुल्य सैन्यको विक्षोभित कर्ने लगे, तब प्रधान प्रधान कौरवपक्षीय वीरगण अभिमन्युके ऊपर धावमान हुए, उनके साथ उनका दारुण युद्ध होने लगा,

कौरव वीरोंने निरन्तर शरविक्षेप करके चतुर्दिक् रथसे रुद्ध कर दिया अभिमन्युने वृषसेनका सारथिका नाश औ धनु छेदन कर दिया, अश्वोंने सहसा वृषसेनको रणसे दूर कर दिया, इतनेमे अभिमन्युकेभि सारथिने रथ लेके अन्यत्र प्रस्थान किया, अनन्तर महारथ सब सातिशय अभिमन्युके ऊपर धावमान होके शरवर्षण पूर्वक गर्जन करने लगे, अभिमन्युने लोहवर्मधारी वसातियका हृदय विद्ध कर दिया, वसातीय हृदयमे विद्ध होनेसे गतासु होके भूतलमे निपतित हुए, उनको हतदेखके कौरवपक्षीय वीरगण अभिमन्युको विनष्ट करनेके लिये वेष्टन करने लगे, वह युद्ध अतिशय भयङ्कर हो गया, अभिमन्युने क्रोधसे उन सभोंके मस्तक छेदन करने लगे, तब रणस्थल हत मनुष्य, गज, रथ, पदाति औ आयुधोंसे पूर्ण हो गया, तब अभिमन्यु इतस्ततः भ्रमण करने लगे, शरजालसे सर्वत्र समाच्छन्न करने लगे, उससे सर्वत्र अदृश्य हो गया।

इति ४२ अध्याय

हे महाराज! प्रलयकालीन कृतान्तके तुल्य अभिमन्यु संहार करने लगे, अनन्तर सैन्यमे प्रवेश करके सत्यश्रवाको ग्रहण करके आकर्षण करने लगे, तब महारथगण अभिमन्युके ऊपर धावमान हुए, हम पहिले अभिमन्युका नाश करेंगे ऐसी परस्पर स्पर्धा करने लगे, जैसा सागरमे नक्र क्षुद्रमत्स्योका नाश करते है, तद्रूप अभिमन्यु उनका संहार करने लगे, अभिमन्युका वेग वहलोग सहन करनेसे पराङ्मुख हो गए, और क्षुभित विह्वल औ कम्पित होने लगे।

अनन्तर शल्यतनय रुक्मरथ संत्रस्त सैन्यको आश्वासन देते हुए अभिमन्युके ऊपर धावमान होके तीन बाणसे उनका वक्षस्थल, तीन तीन बाणसे दोनो बाहु विद्ध करके सिंहनाद

कर्ने लगे, अभिमन्युने तत्क्षणाही उनका धनु, दोनो बाहु औ मस्तक छेदन कर दिया, तब शल्यतनयके प्रियसखा शत-राजकुमार अभिमन्युके ऊपर धावमान होके शरजालसे उनको आच्छन्न कर दिया, दुर्य्योधन देखके अतिशय संतुष्ट हुए, जो अर्जुनने तुम्बुरुसे पाया था वह गन्धर्वास्त्र अभिमन्युने प्रक्षेप कर्के राजकुमारोको विमोहित कर दिया, तब शत शत अभिमन्यु दृष्ट होने लगे, तत्काल अभिमन्यु हस्त लाघ-वसे उन सभोंके मस्तक भूतलमे पातित कर्ने लगे, एकाकी अभिमन्युसे शतराजकुमार निपतित होनेसे दुर्य्योधन अति क्रुद्ध होके अभिमन्युके सम्मुखीन हुए, तब उनको घोर संग्राम होने लगा, अनन्तर दुर्य्योधन नितान्त पाड़ित होके परांमुख हो गए।

इति ४४ अध्याय।

धृ०। जब अभिमन्युके अद्भुत पराक्रमसे शतराजपुत्रका नाश औ दुर्य्योधन विमुख होने पर हमारे वीरोने क्या किया? सो कहो।

सं०। आपके पक्षीय वीरोंके मुख शुष्क, नयन चञ्चल, देह रोमाञ्चित औ स्वेद प्रवाह होने लगा, तब वह विजय लाभमे उत्साहशून्य हो गए औ पलायनमे कृतसंकल्प हुए, तब द्रोणाचार्य्य, अश्वत्थामा, कृप, कृतवर्मा, दुर्य्योधन, कर्ण औ सौबल यह वीर सैन्यको छिन्नभिन्न देखके क्रोधसे अभि-मन्युके ऊपर धावमान हुए, तब अभिमन्यु उनकोभी विमुख-प्राय कर्ने लगे, तब दर्प निर्भय लक्ष्मण एकाकी अभिमन्युके ऊपर धावित हुए, पुत्रवत्सल दुर्य्योधन उनके अनुगामी हुए, अन्यान्य महारथि दुर्य्योधनके अनुगामी हुए, मेघकेतुल्य अभिमन्युके ऊपर वह सब शरवर्षण कर्ने लगे, वायुके समान

अभिमन्यु उनकी शरोंको निवारण कर्नें लगे, अनन्तर अभिमन्यु लक्ष्मणके अभिमुख हुए, लक्ष्मणऽ निशित शरोंसे अभिमन्युकी हृदयको विद्ध कर्नें लगे, तब अभिमन्यु क्रोधसे बोले, हे लक्ष्मण! अब तुम यमके अतिथि होगे, सबको सम्यक् देख लेओ, सबके समक्षही तुमको शमित कर्ते हैं, इतना कहके एक तीक्ष्ण भल्लास्त्र उनके भ्रूयुगलके मध्यमे निक्षेप किया, वह बाण निक्षिप्त होतेही उनको कुण्डलभूषित मस्तक भूतलमे निपतित हुआ।

सबकोई लक्ष्मणको निहत देखके हाहाकार कर्नें लगे, दुर्य्योधन उच्चस्वरसे क्षत्रियोंसे कहने लगे कि अभिमन्युको संहार करो, अनन्तर द्रोण, कृप, कर्ण, अश्वत्थामा, कृतवर्मा औ हार्दिक्य इन छः वीरोंने अभिमन्युको वेष्टन किया, अभिमन्युने उन लोगोंको तीक्ष्ण शरोंसे विह्वल कर्के जयद्रथकी सैन्यपर धावमान हुए, कलिङ्ग, निषाद औ क्राथने गज सैन्यसे उनका पथ रोध किया, तब दोनो पक्षको घोर युद्ध होने लगा, अनन्तर महावीर अभिमन्यु गजोको छिन्नभिन्न कर्नें लगे, द्रोण प्रभृति वीरगण पुन आयके अभिमन्युकी ऊपर शरवर्षण कर्नें लगे, अभिमन्युने उनको निवारण कर्के क्राथपुत्रको निहत कर दिया, तब अन्यान्य वीर पराङ्मुख हो गए।

इति ४५ अध्याय।

धृ०। कुलोचित कार्य्यकारी अभिमन्यु इस प्रकार पराक्रमशाली देखके किसने उनको निवारण किया।

सं०। अभिमन्युकी सब सैन्य औ वीरोंको विद्रावित कर्नें पर द्रोणादि छ वीरोंने उनको वेष्टन किया, सैन्यगण युधिष्ठिरकी ऊपर धावमान हुआ, तब वह छओ वीर अभिमन्युकी ऊपर शरवर्षण कर्नें लगे, अभिमन्यु शरजालसे उन वीरको

स्तम्भित करके द्रोणको बीस बाण, बृहद्दलको अशीति बाण, कृतवर्माको षाठ, कृपको षाठ अश्वत्थामाको दश औ कर्णको कर्णि अस्त्रसे विद्ध करने लगे, अनन्तर कृपाचार्य्यके सारथि औ अश्वको निहत करके दश बाणसे उनका हृदय विद्ध किया, अनन्तर आपके पुत्र औ अन्य वीरोंके समक्ष कौरवकुलदीपक वृकोदर नामक वीरका संहार किया, अनन्तर अश्वत्थामाको विद्ध किया, परंतु अश्वत्थामा उनको विद्ध कर सके नहीं, तब द्रोणाचार्य्यने शत शर, अश्वत्थामाने षाठ शर, कर्णने बाईस शर, कृतवर्माने चतुर्दश भल्ल, बृहद्दलने पचास भल्ल औ शारद्वतने दश भल्ल प्रक्षेप किये, अभिमन्युने उनको दश दश बाण प्रक्षेप किया, तब उन लोगोंके अश्व, सारथि, ध्वज, औ धनु भूतलमे गिर पड़े, अनन्तर बृहद्दल विरथ होके खड्गचर्म धारण करके अभिमन्युके शिर छेदके इच्छासे धावमान हुए, अभिमन्युने उनका हृदय विद्ध कर दिया उससे वह तत्क्षणही भूतलमे निपातित हुए, उस समय अशुभ वाक्य बोलनेवाले भूपाल दश सहस्र भग्न हो गए, अनन्तर अभिमन्यु इतस्ततः सञ्चरण करने लगे।

इति ४६ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर अभिमन्युने कर्णके कर्णदेशमे कर्णिक बाण निक्षेप करके दशबाणसे विद्ध किया, कर्णने क्रुद्ध होके अभिमन्युके ऊपर शरक्षेप किया, तब अभिमन्युने कर्णके ऊपर असंख्य शर निक्षेप किया, उससे कर्णका शरीर क्षत-विक्षत औ रुधिराक्त हो गया, अनन्तर अभिमन्युने राजा सचिवके सारथि, अश्व, ध्वज औ रथ छेदन करके इनका संहार किया, तदुत्तर छ बाणसे मागधपुत्रका संहार किया, अश्वके-

तुके सारथि औ अश्व नष्ट किये, तब दुःशासनके पुत्रने चार वाणसे अभिमन्युको, चारवाणसे अश्व औ एक वाणसे उनके सारथिको विद्ध किया, तब अभिमन्यु क्रुद्ध होय बोले, रे दुःशासनतनय! तेरा पिता युद्धसे पलायित हुवा अब तै नही रह सकेगा, इतना कहके नाराच निक्षेप किया। तब अश्वत्थामाने बीचहीमे वह नाराच खण्ड कर दिया, तब अभिमन्युने अश्वत्थामाको न मारके शल्यहीके उपर तीन वाण निक्षेप किये, शल्यने अभिमन्युके वक्षस्थलमे गृध्रपक्षशर निक्षेप किया, तब अभिमन्युने छ वाणसे उनके सारथि औ धनु छेदन कर दिया, तब शल्य अभिमन्युके शरसे जर्जरित होके अन्य रथपर आरोहण करके शरक्षेप करने लगे, इतने अभिमन्युने शत्रुञ्जय, चन्द्रकेतु, महामेघ, सुवर्चा औ सूर्यभास इन पांचो वीरोका संहार किया, अनंतर शकुनिको विद्ध करने लगे, तब शकुनि अभिमन्युके ऊपर शरक्षेप करके दुर्योधनसे बोले, महाराज! सब कोई एकत्र होके अभिमन्युका संहार करना चहिये, नही तो अभिमन्यु एक एक करके हम सभोंका संहार करेगा, इस लिये द्रोण प्रभृति इनके वधका चिन्ता करो, तब कर्ण द्रोणसे बोले, आचार्य! अभिमन्युके बधका उपाय कहो नही तो हम लोगोंका यह बध करेगा, तब द्रोणाचार्य बोले, हे वीरगण! देखो अभिमन्युका हस्तलाघव कैसा है, इतस्ततः सञ्चरण करते हैं, परन्तु कुछभी अवकाश लक्षित होता नही, केवल चापमण्डल ही प्रकाशित होता है, उनके शराघातसे हम सब लोग जर्जरित होगए हैं इसे उस्के वीरतासे हमको अतिशय सन्तोष होता है, महारथगण क्रोधपरवश होकेभी उनका कुछ कर सकते नही, उन एकाकीने दश दिक आच्छन्न कर लिया है, अर्जुनसे कुछभी भिन्नता उनको दृष्ट नही होती है।

तब कर्ण अभिमन्युके शरसे अत्यन्त व्यथित होके पुनः बोले,

आचार्य! क्षत्रियने रणत्याग नही कर्नी इस लिये इहां अव-स्थान कर्ते हैं, परन्तु अभिमन्युके शर सह सकते नही, तब द्रोणाचार्य बोले, हे राधेय! अभिमन्युका कवच अभेद्य है किसी प्रकार उनके रथ, सारथि औ धनु छेदन करो तो उनके विरथ औ धनुहीन होनेसे पराभव हो सकेगा, यह सुनके कर्णने शरक्षेप कर्के अभिमन्युका धनु छेदन किया, भोजने अश्व सब निहत किये, क्षपाचार्यने उनके पार्ष्णि औ सारथि निहत किये, अन्यान्य वीर उनके ऊपर शरनिक्षेप कर्ने लगे, उस समय दयाशून्यहृदय छः महारथी एक बार अभिमन्युके ऊपर शरवर्षण कर्ने लगे, तब अभिमन्यु छिन्नधन्वा विरथ होके क्षत्रियधर्म प्रतिपालन कर्ते खड्गचर्म धारण कर्के आका-शमे समुत्थित होके कौशिकादि गतिसे गरुड़के तुल्य आकाश-मे विचरण कर्ने लगे, रन्ध्र देखनेवाले धनुर्धरगण अभिमन्यु हमारे ऊपर गिरेंगे ऐसी ऊर्द्धदृष्टि होके वाणनिक्षेप कर्ने लगे, द्रोणाचार्यने इतनेमे उनका खड्ग छेदन कर दिया, कर्णने चर्म छेदन कर दिया, इस प्रकार असि, चर्म औ वाण सब छिन्न होने पर अभिमन्यु चक्र हस्तमे लेके भूतलमे अवतीर्ण होके द्रोणाभिमुख धावमान हुए, तब चक्रहस्त वासुदेवके तुल्य भयानक हो उठे।

इति ४८ अध्याय

अनन्तर वीरगणने उनका चक्र खण्ड खण्ड कर दिया, तब अभिमन्यु गदा ग्रहणपूर्वक अश्वत्थामाके ऊपर धावमान हुए, अश्वत्थामा उनको देखतेही भयसे तीन उल्लान कर्के रथसे पलायमान होगए, तब अभिमन्युने गदासे उनके अश्व, सारथि औ रथको चूर्ण कर दिया, अनन्तर कालिकेयको संहार कर्के हिसप्तति गान्धारोंका संहार किया, ब्रह्मसातीयके दशरथी,

कैकेय सात सारथि औ दशगजका संहार करके दुःशासनपुत्रका रथ चूर्ण कर दिया, दुःशासनपुत्र क्रोधसे विरथ होय गदा लेके तिष्ठ तिष्ठ कहके अभिमन्युके ऊपर धावमान हुए, तब दोनोका परस्पर घोर गदायुद्ध होने लगा, परस्पर गदाघातसे श्रान्त होय दोनो भूतलमे निपतित हुए, इतने दुःशासनपुत्र शीघ्र उठके अभिमन्युको उठते उठते उनके मस्तक पर गदाघात किया, उनके दारुण गदाघात औ संग्रामश्रमसे अचेतन होय भूतलमे निपतित हुए।

हे महाराज! इस प्रकार अर्जुनतनय शत्रुपक्षके असंख्य सैन्य औ वीरोंको निपातित करके अन्तमे अनेक वीरोसे निहत होके पद्मवनप्रमाथी व्याधोंके हस्तसे निहत मत्तमातङ्गके तुल्य औ प्रशान्त पावकके तुल्य भूतलमे शयान होगए, पूर्णचन्द्रानन अभिमन्युको भूतलमे निपतित देखके आपके पक्षीय सब आह्लादसे सिंहनाद करने लगे, इधर पाण्डवपक्षीयोके नयनसे अविरल सलिलधारा वहने लगी, पक्षिगण सब चीत्कार करने लगे, कि द्रोण, कर्ण प्रभृति छः वीरोने अभिमन्युको निहत किया सो अतिशय अधर्म हुआ। इतस्ततः विकीर्णआण अस्त्र-शस्त्रोके मध्यमे निपतित अभिमन्यु नक्षत्रपरिवेष्टित पूर्णचन्द्रके तुल्य शोभमान होने लगे, उस समय पाण्डवसैन्य युधिष्ठिरके समक्षही पलायन करने लगे, युधिष्ठिर उनको पलायमान देखके बोले, हे वीरगण! महाबल पराक्रान्त रणविशारद अभिमन्यु समरमे परांमुख न होके शत्रुहस्तसे प्राणत्याग पूर्वक स्वर्गमे गए हैं, तुम लोग स्थिर होय पलायन मत करो अभी शत्रुगणका पराजय होता है, इस प्रकार सब सैन्यको धैर्य्य देने लगे।

इति ४८ अध्याय।

हे महाराज। इस प्रकार अभिमन्युको निहत करके सायं-काल शिविरमें गमन किया, भानुभी अस्तमित हुए, दोनो पक्षीय सब खल शिविरमें प्रस्थित हुए, चलतेर देखा कि रणभूमि वज्राहत पर्वतके तुल्य मातङ्गोसे व्याप्त रथि, यन्त्री, विभूषण, अश्व, सारथि, पताकाहीन चूर्णित रथोसे भरी हुई है, अनेक विस्तारित दशन, जिह्वा औ नेत्र क्षत व्यक्तिके निपतित समुदायसे समरस्थल भयङ्कर होगया था, दुस्तर वैत-रणी नदीके तुल्य रुधिर नदी प्रवाहित हो रही है, विकट दर्शन भयावह पिशाच, शृगाल, कुक्कुर औ मांसाशी पक्षि-गण परमानन्दसे उस नदीमें पान भोजन करते हुए भीषण शब्द करने लगे, इस प्रकार देखते हुए शिविरको गए।

इति ५० अध्याय।

हे महाराज! अभिमन्युके निहत होने पर पाण्डवपक्षीय वीरगण रथ, कवच औ शस्त्र त्याग करके दुःखित मनसे अभि-मन्युका शोक करते हुए युधिष्ठिरके चतुर्दिक् उपविष्ट हुए, युधिष्ठिर भ्रातृपुत्रके निधनसे अति कातर होके विलाप करने लगे, हा! महावीर अभिमन्यु हमारा प्रिय करनेके लिये व्यूह भेद पूर्वक सिंह जैसा गोगणमें प्रविष्ट होय तद्रूप दुर्भेद्य द्रोणसैन्यमें प्रविष्ट होय समरदुर्मद धनुर्धर महावीरोंको रणमें भग्न करके हमारे प्रधान शत्रु दुःशासनको क्षणमात्रमें विचेतन औ विमुख करके अनायास सैन्य ध्वंस करके शमनसद-नमें गए, अब हम कैसा अर्जुन औ सुभद्राको मुख दिखावेंगे, धनञ्जय आयके क्या हमसे पूछेंगे, तब हम क्या उत्तर देंगे, हम जय लाभकी इच्छासे यह उनका अप्रिय कार्य्य किया, हा! जो होय आज हम लोग क्रोधप्रदीप्त धनञ्जयके दीप्त नयनाग्निसे दग्ध होके अभिमन्युके साथ भूतलमें शयन करेंगे,

जिस धनञ्जयने इन्द्रके लिये दुर्द्धर दानवोंका बध किया, जो शरणागत शत्रुको अभयदान करते हैं, उन धनञ्जयके पुत्रकी रक्षा हम लोग कर सके नहीं, धनञ्जय पुत्र बधसे क्रुद्ध होके अवश्य कौरवोंका संहार करेंगे, अभिमन्युके बधसे हम लोगोंको जय लाभ, राज्य लाभ वा सुरलोक लाभ कुछभी प्रीतिजनक बोध नहीं होता है।

इति ५१ अध्याय।

हे नरनाथ! अनन्तर महर्षि वेदव्यास विलापकारी युधिष्ठिरके निकट उपस्थित हुए, युधिष्ठिरने उनका यथोचित सत्कार किया, अनन्तर भ्रातृपुत्रके बधसे शोकाकुलतासे बोले, भगवन्! स्थिरबुद्धि बालक अभिमन्यु नितान्त निरुपाय होके युद्ध करते थे, इतनेमें अनेक अधर्मी महारथियोंने उनको वेष्टन करके संहार किया, हमने उनको कहा था कि हमलोगो तुम कौरव व्यूहमें द्वार करके प्रवेश दे देओ, वह हमारे वाक्यसे व्यूहमें प्रविष्ट हुए, हम लोग उनका अनुगमन करने लगे, परंतु जयद्रथके अवरोध करने हम लोग प्रविष्ट हो सके नहीं, तुल्यबलसे संग्राम युक्त है, परंतु शत्रुओंने जो किया सो अत्यन्त अनुचित हुआ, हम उसीसे अत्यन्त सन्तप्त औ शोकाकुल होते हैं, किसी प्रकार शान्ति लाभ कर सकते नहीं।

व्यास बोले, हे सर्वशास्त्रविशारद! तुम्हारे ऐसे महात्मा विपदमें कदापि मुग्ध नहीं होते हैं, अभिमन्यु बालक अतुल कार्य्य औ असंख्य शत्रु हनन करके स्वर्गमें गए, मृत्यु देव, दानव, गन्धर्वादिकोभी हरण कर्ती है, मृत्युका अतिक्रम कोई कर सकता नहीं।

युधिष्ठिर बोले, महात्मन्! यह सब वीर निहत होके

सैन्यके बीचमे निपतित हुए हैं, इनमे कोई अयुत गजतुल्य बलवान्, कोई वायुतुल्य वेगवान्, जिनका कोई पराजय न कर सके, उन लोगोंकी परस्पर पराजय करनेको वासना जागरूक थी, इस समय वह कालके ग्रास हुए, उनके निहत होनेसे मृत्यु शब्द सार्थक हुआ, हे महर्षे! इन लोगोको देखके हमको संशय होता है, कि मृत्यु कौन है? कहांसे उत्पन्न औ किस लिये प्रजागणका संहार करते हैं? सो कृपा करके कहिये।

व्यास बोले, हे महाराज! पूर्वकालमे अकम्पन नामक राजा थे, वह रणस्थलमे शत्रुओंसे पराजित हुए, उनका एक बलवान् शिक्षितास्त्र हरिनामक पुत्र संग्राममे असंख्य शत्रुओंका संहार करके अन्तमे निहत हुए, राजा अकम्पन उनका प्रेतकार्य करके दिवाराज शोक करने लगे, अनन्तर महर्षि नारद वहां उपस्थित हुए, राजाने उनका यथायोग्य सत्कार करके शत्रुओंका जय औ स्वपुत्रका मरण वृत्तान्त कथन किया औ पूछने लगे, भगवन्! मृत्यु कौन है? औ उसका बलवीर्य्य कैसा है? सो कहिये।

नारद बोले, पहिले ब्रह्माने समस्त सृष्टि किया, वह जगत् नष्ट नही होता है यह देखके चिन्ताकुल हुए, परंतु कुछभी उपाय कर सके नही, तब उनको रोष हुआ, उसमे आकाशमे एक अग्नि उत्पन्न हुआ, वह अग्नि सकल संसारको दग्ध करने लगा, तब भगवान् शङ्कर उनके शरणागत हुए, ब्रह्मा उनको शरणागत देखके बोले, वत्स! तुम हमारे इच्छासे उत्पन्न हुए हो, कहो क्या तुम्हारा प्रियकार्य्य करें।

इति ५२ अध्याय।

रुद्र बोले, हे प्रभो! आपहीने प्रजा उत्पन्न औ बर्द्धित

किया, अब वह आपकी क्रोधाग्निसे नष्ट होती है सो देखके हमको करुणा उत्पन्न हुई है, इस लिये आप प्रसन्न होइये।

ब्रह्मा बोले, हे रुद्र! सृष्टि संहार करनेमें हमारी इच्छा नहीं थी, परंतु पृथ्वीके प्रीत्यर्थ हमको क्रोध उत्पन्न हुआ, पृथ्वी भाराक्रान्त होके हमसे प्रार्थना करने लगी हम उस भारावतरणका उपाय कुछ कर नहीं सके इससे क्रोध हो गया।

रुद्र बोले, भगवन्! आप प्रसन्न होइये, जगत्‌का मङ्गल होय, आपकी प्रसन्नतासे जगत बना रहे, इहा हमको वर दीजिये।

अनन्तर ब्रह्माने क्रोध शान्त करके जगत्‌के हितार्थ प्रवृत्ति धर्म औ मोक्षधर्म कीर्तन किया, जब उन्होने क्रोधसंवरण किया उस काल उनकी इन्द्रियद्वारसे कृष्णवर्ण रक्तजिह्वा रक्तनेत्र भूषणभूषित एक नारी उत्पन्न हुई, उस नारीको उत्पन्न होतेही ब्रह्मा औ रुद्रको देखके हास्य करती हुई उसकी दक्षिणदिक्‌को गई, ब्रह्माने मृत्यु, कहके उसको आह्वान करके कहा, तुम हमारे संहार बुद्धिसे उत्पन्न हुई हो इस लिये हमारे आज्ञासे क्या जड़ क्या पण्डित समस्त पृथ्वीके प्रजाका संहार करो।

मृत्यु यह सुनके चिन्ताकुल होय रोदन करने लगी, तब ब्रह्माने लोक हितार्थ शीघ्र मृत्युका नेत्रजल अञ्जलिपुटमें लेके उनको अनुनय करने लगे।

इति ५२ अध्याय।

—०—

अनन्तर मृत्यु रोदनसंवरण करके बोली, भगवन्! इस पापिनी को क्यों उत्पन्न किया औ हम यह क्रूर कर्म कैसा करेंगे, हम अधर्मसे अति भय करते हैं, जिनके पुत्र पितादि

नष्ट होंगे वह अवश्य हमारा अनिष्ट चिन्तन करेंगे, इस लिये हम प्रार्थना करते हैं, इस कार्य्यमें हमको नियुक्त मत कीजिये, हम कठोर तपस्या करके आपको प्रसन्न करेंगे, हम कदापि विलापाकुल प्राणिगणका प्राणनाश न करेंगे।

ब्रह्मा बोले, हे मृत्यो! प्रजा संहारके लियेही तुम उत्पन्न हुई हो, इस लिये हमारे आज्ञासे विना विचार वह कार्य्य करनी होगा, लोकक्षय अवश्य होगा इस लिये हमारी आज्ञा पालन करो, तुम्हारी निन्दा कोई करेगा नहीं, यह सुनके मृत्यु चुप हो रही, उस कार्य्यमें उनका अभिलाष किसी प्रकार न हुआ, मृत्यु मौनभावसे वहांसे धेनुकाश्रममें जाय कठोर व्रत करने लगी, एकविंशति पद्म वर्ष खड़ी रहके अयुत पद्म वर्ष मृगके साथ विचरण किया, अनन्तर नन्दातीर्थमें अष्टोत्तर सहस्र वर्ष जलमें व्यतीत किया, अनन्तर कौशिकी तीर्थमें वायुभक्षण औ जलपान करके पुनः तपस्या कीया, पञ्च गङ्ग तीर्थमें औ वेतस तीर्थमें देह शुष्क करके गङ्गा औ महा-मेरु स्थानमें प्राणायाम करके स्थाणुवत् अवस्थान किया, फेर हिमालयके शिखर पर एकांगुलि पर भार देके निखर्व वर्ष अवस्थान किया, अनन्तर पुष्कर, गोकर्ण, नैमिष औ मलय तीर्थमें घोर तपोनुष्ठान किया।

अनन्तर ब्रह्मा वहां आयके बोले, हे मृत्यो! तुम किस लिये यह कठोर तपस्या करती हो?

मृत्यु बोली, भगवन्! जगत् स्वस्थ रहे, हम निरपराध उनका संहार न करेंगे, यही वर दीजिये, इसी लिये अधर्मके भयसे तपस्या करते हैं।

ब्रह्मा बोले, हे कन्ये! तुमको प्रजाके संहारसे किञ्चित्‌भी अधर्म नहीं होगा, हमारा वाक्य अन्यथा होना नहीं इस लिये तुम अशङ्कित मनसे चतुर्विध प्रजा संहार करो, तुमको

सनातनधर्म लाभ होगा, सकल देवता औ हम तुम्हारी सहायता करेंगे, औ जिस्से तुम पापमुक्त औ रजोगुण रहित होके ख्याति लाभ करोगी वैसा वरदानभी हम देंगे।

मृत्यु बोली, भगवन्! हमारे विना आपका यह कार्य्य न होता होय तो हमको स्वीकार कर्ना पड़ेगा, परंतु एक हम प्रार्थना कर्ते हैं सो सुनिये, लोभ, मोह, क्रोध, असूया, ईर्षा, द्रोह औ निर्लज्जता यह सब कठोर इन्द्रियवृत्ति प्राणिगणका देह भेद करे।

ब्रह्मा बोले, जो तुम कहोगी सोई होगा, हमारे अञ्जलिमे जो तुम्हारे अश्रुबिन्दु हैं, वह सब प्राणियोंके शरीरस्थ व्याधि होके संहार करेंगे इस्से तुमको अधर्म न होगा, तब मृत्युने शापके भयसे ब्रह्माका वाक्य स्वीकार किया, औ अन्तमे प्राणियोंा संहार कर्ने लगी, व्याधि सब पीड़ित कर्ते हैं औ मृत्यु प्राणवियोग कर्ती है इस लिये जीवगणके लिये वृथा शोक कर्ना युक्त नही है, इन्द्रिय सब जीवनान्तमे जीवगणके साथ परलोकमे गमन औ स्व स्व कार्य्यसाधन पूर्वक प्रतिनिवृत्त होती हैं, इस प्रकार देवगणभी मनुष्यके तुल्य परलोक औ स्व स्व कार्य्यसाधन कर्ते हैं, भीमरूप, भीमनाद, सर्वगामी, उग्र अनन्ततेजा प्राणवायु देह भेद कर्ता है, उस्को यातायात नही है, सब देवताभी मर्त्यसंज्ञाधारी हैं। हे महाराज! अब आप स्वीय पुत्रके निमित्त शोक मत करो, वह स्वर्गमे रम्यवीरलोक प्राप्त होके दुःख त्याग औ साधुसमागमसे दिन दिन आनन्दित हो रहे हैं, प्राणिगण स्वयं नष्ट होता है, मृत्यु कुछ दण्ड धारण कर्के उनकी हिंसा कर्ती नही, यही जानके पण्डितलोक शोक कर्ते नही, हे महाराज! अकम्पन नारदका यह वाक्य सुनके वीतशोक होके बोले, हे मुने! आपके वचनसे हमारा शोक दूर हुआ

अब आपको नमस्कार करते हैं, अनन्तर नारद वहांसे प्रस्थित हुए, हे धर्मराज ! इस इतिहासका श्रवण वा कीर्तन करनेसे पुण्य आयु औ स्वर्गलाभ होता है, तुम यह वाक्य श्रवण करके क्षत्रधर्म औ वीरगणकी उत्कृष्टगति जानके धैर्य्यावलम्बन करो, चन्द्रांशसंभूत महारथ अभिमन्यु असंख्य धनुर्धारीके समक्ष शत्रुगणका नाश करके संग्राम करते शस्त्रोंसे निहत होके पुनः चन्द्रमे लीन हुए हैं, इस लिये तुम धैर्य्य अवलम्बन औ क्रुद्ध होके युद्धमे प्रवृत्त हो ।

इति ५४ अध्याय ।

सं० । मृत्युकी उत्पत्ति सुनके युधिष्ठिर व्याससे पुनः बोले, भगवन् ! पूर्वतन राजर्षिगण इन्द्रतुल्य पराक्रमी पुण्यवान् पापहीन सत्यवादी थे आप उनके शोकापनोदक कार्य्य औ वाक्य कथन करके हमको आश्वासित कीजिये ।

व्यास बोले, युधिष्ठिर ! राजाश्वित्यके सृञ्जय नामक पुत्र थे, नारद औ पर्वतके साथ उनकी मैत्री थी, एकदा दोनो मुनि सृञ्जयसे मिलनेके लिये उनके इहां आए, राजाने उनका यथोचित सत्कार किया, तब वह कुछ दिन वहां रहे, एकदा वह सुखसे उपविष्ट थे ऐसे समय राजाकी एक अविवाहिता कन्या वह उपस्थित हुई, वह दोनो मुनि उस कन्याको देखके राजासे बोले, महाराज ! यह कन्या किसकी है ? यह सर्य्यकी प्रभा वा चन्द्रकी कान्ति वा लक्ष्मी है ? सृञ्जय बोले, हे सखे ! यह हमारी कन्या है, हमसे वरकी प्रार्थना करती है, तब नारद बोले, यह कन्या हमको भार्य्यार्थ दीजिये, राजाने तत्क्षणाही स्वीकार किया, तब पर्वत क्रुद्ध होके नारदसे बोले, हमने पहिले इसको मनमे वरण किया है, पीछे

तुमने वरण किया, इस लिये तुम स्वेच्छासे स्वर्गमे जाय सकोगे नही, नारद बोले, 'यह हमारी भार्य्या ऐसा ज्ञान वा वाक्य औ उदक पूर्वक दान, पाणिग्रहण मन्त्र यह परिणय इत्यादि परिणयकी लक्षण हैं, इन्होसे भार्य्यात्व सिद्ध होता है यहभी नही किंतु सप्तपदी गमनही भार्य्यात्वसंपादक है, इस प्रकार यह कन्या तुम्हारी भार्य्या न होती तुमने हमको शाप दिया, इस लिये तुमभी हमारे विना स्वर्गमे न जाय सकोगे, इस प्रकार दोनो मुनि परस्पर शाप देके वहां रहने लगे।

इधर राजा सृञ्जय पुत्र कामनासे विशुद्ध मनसे ब्राह्मणोंको अन्न, पान औ वस्त्र दान करके प्रसन्न करने लगे, एकदा ब्राह्मण राजाको पुत्रदानकी अभिलाषसे नारदके पास आयके बोले, भगवन्! आप महाराजको एक पुत्र प्रदान कीजिये, तब नारदने स्वीकार करके राजासे कहा, राजन्! ब्राह्मणगण प्रसन्न होके तुम्हारे लिये एक पुत्र प्रार्थना करते हैं, तुमको जैसी पुत्रकी इच्छा होय वैसा वर प्रार्थना करो, राजा बोले, महात्मन्! आपके प्रसादसे हमको सर्वगुणसंपन्न, कीर्तिमान्, यशस्वी औ तेजस्वी एक पुत्र होय, नारदने तथास्तु कहा, अनन्तर यथाकालमे तादृश पुत्र उत्पन्न हुआ, पुत्र वह स्वर्णष्ठी-वी अर्थात् सोनाथूकनेवाला नामसे ख्यात हुए, उस पुत्र महर्षिके वरदानसे अपरिमित सुवर्ण बर्द्धित किया, राजाने सब वस्तु सुवर्णमय कर लिया, सब नगरही काञ्चनमय हो गया, कियद्दिनोत्तर दस्युगणने राजपुत्रका यह वृत्तान्त सुनके औ देखके दलबद्ध होके पुरमे प्रवेश पूर्वक राजकुमार स्वर्णष्ठी-वीको ग्रहण करके पलायित हुए, वह लोक तदुत्तर किंकर्तव्यता मूढ़ होके उस राजकुमारको खण्ड खण्ड छेदन किया, परंतु कुछभी अर्थ लाभ न हुआ, राजकुमारका प्राणनाश होनेसे वरसंजात धन सब नष्ट हो गया, अनन्तर वह

सब ज्ञानशून्य होके परस्पर विनाश करके घोर नरकमे गए।

इधर राजा सृञ्जय उस पुत्रका नाश सुनके अत्यन्त दुःखित होके विलाप करने लगे, राजाको दुःखित देखके नारद बोले, हे सृञ्जय! हम लोग ब्रह्मवादी सतत तुम्हारे इहाँ वास करते हैं, परंतु तुमकोभी विषयवासनासे अपरितृप्त होके मृत्यु-मुखमे निपतित होना पडेगा, हम लोगोने सुना है कि अविक्षितके पुत्र मरुत्तभी मृत्युग्रस्त हुए, उन महात्मा बृह-स्पतिसे संवर्तसे यज्ञानुष्ठान कराया था, महादेवने उनको यज्ञके लिये हिमालयका एक सुवर्णमय प्रत्यन्त पर्वत दिया था, उन्होने यावद्धर्मकृत्य किये थे, तुम्हारा तो पुत्र अयाज्ञिक था, ऐसे पुरुष जब कालग्रस्त हुए तब तुम पुत्रके लिये शोक करते हो।

इति ५५ अध्याय।

नारद बोले, राजन्! राजा सुहोत्रभी मृत्युग्रस्त हुए, अमरगण जिनका साक्षात्कार करनेके लिये नित्य आवते थे, जिनके लिये वर्षभर सुवर्णकी वृष्टि हुई थी, सुवर्णकी नदी वही थी, उस नदीमे जलजन्तु सुवर्णमय थे, सर्वदा धर्मसे प्रजापालन करते थे, सहस्र अश्वमेध जिन्होने किया था, वहभी कालग्रस्त हुए तब तुम पुत्रके लिये शोक मत करो।

इति ५६ अध्याय।

नारद बोले, राजन्! अद्वितीय वीर राजा पौरवभी काल-ग्रस्त हुए, जिन्होने दशलक्ष श्वेतवर्ण अश्वदान किये थे, और अश्वमेध यज्ञमे मदस्रावी सुवर्णपूर्ण दश सहस्र गज और रथ और सहस्रश कन्या दिया था, वह तुमसे सर्वप्रका-

रसे उत्कृष्ट थे, तुम्हारा पुत्र तो अयाज्ञिक औ अनध्यायी था सो उसके लिये शोक मत करो ।

इति ५७ अध्याय ।

नारद बोले, राजन्! राजा शिविभी कालकवल हुए, उन्होने सर्वशत्रु संहार करके पृथ्वी सब अपने वशीभूत किया था, उन्होने यज्ञमे सहस्र कोटि निष्क सुवर्ण दान औ असंख्य गो दान किया था, ऐसे पुण्यवान् राजा कालग्रस्त हुए, तब सामान्य पुत्रकी लिये शोक मत करो ।

इति ५८ अध्याय ।

नारद बोले राजन्! दशरथात्मज रामचन्द्रभी कालग्रस्त हुए, जिन्होने पिताकी आज्ञासे चतुर्दश वर्ष वनवास करके सुरासुरकी अवध्य देवब्राह्मणकण्टक रावणका नाश किया, जिनकी कीर्ति अद्यापि जगत्मे देदीप्यमान है, जिनकी राज्यमे देव, ऋषि औ मनुष्य एकत्र वास करते थे औ कोई अपमृत्यु नही पावता था, जिन्होने अपने दो पुत्र औ भ्राताओंकी छ पुत्र! ऐसे आठ पुत्रोंको आठ राज्यमे अभिषिक्त करके चतुर्विध प्रजाके सहित स्वर्गमे गए, वह तुमसे सर्वथा उत्तम थे, तब तुम पुत्रके लिये शोक न करनी चहिये ।

इति ५९ अध्याय ।

नारद बोले, राजन्! राजा भगीरथभी मृत्युग्रस्त हुए, जिन्होने गङ्गाका तीर काञ्चनयूपसे व्याप्त कर दिया था, राजा औ राजकुमारोंका पराभव करके दश लक्ष कन्या ब्राह्मणोंको दान किया, वह कन्या रथारूढ थी, उन रथोंमे चार चार

अश्व योजित थे, प्रत्येक रथके पीछे हेममाली शत गज, प्रत्येक मातङ्गके पीछे सहस्र अश्व, प्रत्येक अश्वके पीछे शत गौ औ गौओंके पीछे अज औ मेष दिये थे, उनके भूरि भूरि दक्षिणा दानके समय गङ्गाजलके आक्रमणसे व्यथित होय उनके क्रोड़में उपविष्ट हुई थीं, उसी दिनसे गङ्गा भगीरथकी कन्या होके भागीरथी नामसे ख्यात हुई, हे सृञ्जय! ऐसे भगीरथभी कालग्रस्त हुए तुम क्यों पुत्रके अर्थ अफसोस करते हो।

इति ६० अध्याय।

नारद बोले, सृञ्जय! ऐलविल तनय महात्मा दिलीपभी मृत्युग्रस्त हुए, जिन्होंने असंख्य यज्ञानुष्ठान करके ब्राह्मणोंको वसुपूर्ण वसुन्धरा दान किया था, उनके यज्ञके पथ सब सुवर्णमय थे, यूपादि सब सामग्री सुवर्णमय थी, वह महात्मा जलके ऊपर रथारोहण करके संग्राम करते थे, परंतु उनके रथका चक्र जलमें निमग्न नहीं होता था, ऐसा सामर्थ्य किसीका नहीं था, उनके दर्शनसे स्वर्गलाभ होता था, ऐसे पुण्यवान् मृत्युमुखमें निपतित हुए, इस लिये तुम पुत्रके लिये शोक मत करो।

इति ६१ अध्याय।

नारद बोले, राजन्! महाराज मान्धाता जिनको अश्विनी-कुमारने पिताके गर्भसे उनको निष्काशन किया, एकदा मान्धाताके पिता युवनाश्वने तृषार्त होके यज्ञीय पृषदाज्य पान किया था, उससे उनको गर्भ हुआ था उसी गर्भसे मान्धाता भए, उनके पिताके अङ्गपर शयान देखके सब लोग कहने लगे कि यह क्या पान करेंगे, तब इन्द्रने कहा यह हमारी

अङ्गुलि पान करे इतना कहतेही अङ्गुलिसे अमृतमय दुग्ध उत्पन्न हुआ था, उन्ही मान्धाताने एक दिनमे समस्त पृथिवी जय किया था, उन्होने शत अश्वमेध औ शतराजसूय यज्ञ करके रत्नखचित सुवर्णमय शतयोजन दीर्घ, एक योजन विस्तीर्ण मत्स्य ब्राह्मणोको दान किया था, वहभी मृत हुए, इस लिये तुम पुत्रार्थ शोक मत करो।

इति ६२ अध्याय।

नारद बोले, सृञ्जय! महाराजा ययाति जिन्होने शत राजसूय, शत अश्वमेध, सहस्र पौण्डरीक, शत वाजपेय, सहस्र अतिरात्र, असंख्य चातुर्मास्य अनेक ज्योतिष्टोम औ अन्यान्य असंख्य भूरिदक्षिण यज्ञ किये थे, जिन्होने देवासुर संग्राममे देवगणकी सहायता किया था, वहभी कालग्रस्त हुए इस लिये तुम शोक मत करो।

इति ६३ अध्याय।

नारद बोले, सृञ्जय! महात्मा अम्बरीष जिन्होने एकाकी दश लक्ष भूपतिने संग्राम किया था, उन सब भूमिपति अम्ब-रीषके वशीभूत हुए थे, उन्होने असंख्य यज्ञ करके सुस्वादु अन्नसे समस्त भूमण्डल ब्राह्मणोको तृप्त किया था, और असंख्य राजाओंको राज्य ब्राह्मणोंका दान कर दिये थे, वहभी कालकवलित हुए इस लिये तुम शोक मत करो।

इति ६४ अध्याय।

नारद बोले, सृञ्जय! महाराज शशबिन्दु जिन्होने असंख्य यज्ञ किये, जिनको एक लक्ष भार्य्या थीं, उन एक एक स्त्रीके

गर्भमे सहस्र सहस्र पुत्र हुए थे राजाने अश्वमेध करके वह सब पुत्र ब्राह्मणोंको दक्षिणारूपसे दान किये थे, उन राजकुमारोंके साथ असंख्य राजकन्या थीं, उनके साथ असंख्य गज, रथ, अश्व, गौ औ छाग थे, ऐसे शशबिन्दु मृत हुए, इस लिये तुम वृथा शोक त्याग करो।

इति ६५ अध्याय।

नारद बोले, सृञ्जय! अमूर्तरयाके पुत्र गय जिन्होने शत वर्ष केवल हुतावशिष्ट भक्षण करके कालयापन किया था, अग्नि गयके नियमसे संतुष्ट होय वर दान देनेमे उद्यत हुए, तब वह अग्निसे बोले हे अग्ने! हमको यही वर दीजिये कि हम सर्वदा तपस्या, ब्रह्मचर्य्य, व्रत, नियम औ गुरुप्रसादसे वेदज्ञ होंय, स्वधर्ममे रहके हिंसा न करते धन लाभ करते हुए श्रद्धासे अन्नदान करते रहें, केवल सवर्णा भार्य्याओंमे पुत्र होंय, हमारे धर्म्मानुष्ठानमे विघ्न न होय, भगवान् अग्निने तथास्तु कहके वरदान पूर्वक अन्तर्धान किया, इस प्रकार राजा गय अग्निके वरदानसे विविध यज्ञादि धर्म्मानुष्ठान करते थे, जिन्होने एक लक्ष छः अयुत गौ, दश सहस्र अश्व औ एक लक्ष निष्क दान किया था, ऐसेभी कालग्रस्त हुए तब तुम क्यौं शोक करते हौ।

इति ६६ अध्याय।

नारद बोले, सृञ्जय! राजा रन्तिदेव जिनके इहां दिनरात ब्राह्मणभोजन होता था, जिनके यज्ञमे स्वर्ग लाभके इच्छासे पशुगण आप आवते थे, उनके यज्ञमे इतने पशु नष्ट हुए थे कि जिनके चर्मके राशिसे जलस्राव होके चर्म्मण्वती नदी बह गई थी, अद्यापि वह चर्मण्वती नदी है, उनके दानकी

संख्या नही हुई, एसेभी कालग्रस्त हुए इस लिये तुम शोक मत करो।

इति ६७ अध्याय।

नारद बोले, सञ्जय! दुष्यन्तपुत्र भरत जिन्होने बाल्यावस्थाहीमे सिंहव्याघ्रादिको बन्धन किया, उन्होने यमुना तीरमे शत, सरस्वतीके तीरमे तीन शत, गङ्गाके तीरमे चार शत अश्वमेध किये थे, पुनः सहस्र अश्वमेध, शत राजसूय, अतिरात्र, अग्निष्टोम, उक्थ, विश्वजित् औ वाजपेय किये थे, यज्ञोमे सुवर्णके यूप थे, उस समय भरतने महर्षि कण्वको सहस्र पद्म सुवर्ण मुद्रा दक्षिणा दिया था, ऐसे महात्मा पञ्चत्व प्राप्त हुए तब तुम वृथा अपुण्य पुत्रके लिये शोक मत करो।

इति ६८ अध्याय

नारद बोले, सञ्जय! महाराज पृथु जिनको महर्षिगणने उनके राजसूय यज्ञमे पृथ्वी साम्राज्यका अभिषेक किया था, पृथ्वीके समस्त वीरोंका जय किया इसी पृथु नाम हुआ, उनके राज्यमे धेनु सब कामदुघा थीं, कुश सब सुवर्णमय थे, सबही रोगशून्य थे।

एकदा शैल, वनस्पति, देवता, असुर, नर, उरग, यक्ष, गन्धर्व, अप्सरा, सप्तर्षि औ पितृगण पृथु राजाके निकट आय बोले, महाराज! आप हम लोगोंके सम्राट् प्रभु हो, इस समय जिस्से हम लोगोकी निरन्तर तृप्ति बनी रहे ऐसा वर दीजिये, तब राजाने तथास्तु कहके धनुर्बाण ग्रहण पूर्वक क्षणकाल चिन्ता करके पृथ्वीसे बोले, वसुन्धरे! तुम इनके लिये अभिलषित दुग्ध क्षरण करो, इसी हम इनको अभिलषित अन्न दान करेंगे, तब पृथ्वी बोलीं, महाराज! आप

इसको दुहिता जानिये, तब पृथुराजा तथास्तु कहके दोहन करनेका उद्योग करने लगे, वनस्पति दोहनके इच्छासे पहिले उत्थित हुई, पृथ्वी वत्स, पात्र औ दोहन कर्त्ताके अभिलाषसे उत्थित हुई, तब शालावृक्ष वत्स, वटवृक्ष दोग्धा, छिन्न अङ्कुर दुग्ध औ उदुम्बर पात्र हुए, पर्वतोंकी दोहन समयमे उदयपर्वत वत्स, सुमेरु दोग्धा, रत्न औ औषधी दुग्ध औ प्रस्तर सब पात्र हुए, अनन्तर देवगणने दोग्धा औ तेजस्कर प्रियवस्तु दुग्ध हुआ, अनन्तर असुरोने आमपात्रमे मद्य दोहन किया, उस काल द्विमूर्द्धा दोग्धा औ विरोचन वत्स हुए मनुष्योंने कृषि औ शस्य दोहन किया, उस समय स्वायंभुव मनु वत्स औ पृथु दोग्धा हुए, नागगणने अलाबुपात्रमे विष दोहन किया, तब धृतराष्ट्र दोग्धा औ तक्षक वत्स हुए, सप्तर्षिगणने वेद दोहन किये, तब बृहस्पति दोग्धा, छन्द पात्र औ सोमराज वत्स हुए, यक्षोंने आमपात्रमे अन्तर्धान दोहन किया, कुवेर दोग्धा औ वृषध्वज वत्स हुए, अप्सरा औ गन्धर्वोंने पद्मपात्रमे पवित्र गन्ध दोहन किया, चित्ररथ वत्स औ विश्वरुचि दोग्धा हुए थे, पितृगणने रजतपात्रमे स्वधा दोहन किया, वैवस्वत वत्स औ अन्तक दोग्धा हुए, वह सब पात्र प्रभृति अद्यापि विद्यमान है, ऐसे प्रतापी पृथु कालग्रस्त हुए तब तुम शोक त्याग करो।

इति ६९ अध्याय।

नारद बोले, राजन्! महावीर परशुराम जिन्होने क्षत्रियकुल ध्वंस कर दिया, और अश्वमेध करके समस्त पृथ्वी दान किया ऐसेभी मृत हुए इस लिये तुम शोक त्याग करो।

इति ७० अध्याय।

वेदव्यास बोले, हे धर्मराज! राजा सृञ्जय यह पुण्य कथा सुनके तूष्णीं हो रहे, तब नारद बोले, हमने जो उपाख्यान कहा सो तुमने सुना? अथवा वह निष्फल हुआ।

तब सृञ्जय बोले, हे तपोधन! हम आपके मुखसे पुरातन कथा सुनके विगतशोक हो गए, अब आज्ञा कीजिये क्या करें?

नारद बोले, राजन्! तुम अभिलषित वर प्रार्थना करो, अनन्तर राजा बोले, मुने! आप प्रसन्न हुए इसी हम कृतार्थ हुए, आपके प्रसादसे कुछभी अलभ्य नही है, नारद बोले, सृञ्जय! तुम्हारे पुत्रको दस्युगणने वृथा नष्ट किया, अब हम प्रोक्षित पशुके तुल्य उसका नरकसे उद्धार करके तुमको देते हैं, अनन्तर महर्षिके प्रभावसे वह पुत्र प्रादुर्भूत हुआ, सृञ्जय पुत्र लाभसे अत्यन्त सन्तुष्ट होय बहुविध याग करने लगे, हे धर्मराज! वह स्वर्णष्ठीवी अकृतकार्य्य, भीत, अयाज्ञिक और अपत्यहीन थे, इस लिये पुनर्जीवित हुए, तुम्हारे अभिमन्यु सैन्यके अभिमुख होके सहस्र सहस्र वीरोंको निहत करके कृतार्थता लाभ पूर्वक रणमे निहत हुए हैं, इसी उनको अक्षय पुण्य लोक लाभ हुए हैं, तपस्वी जो गति चाहते हैं वह गति उनको लाभ हुई है, इस लिये उनके निमित्त शोक कर्तव्य नही है, हे युधिष्ठिर! यह सब जानके धैर्य्यावलम्बनपूर्वक शत्रुविनाशमे प्रवृत्त हो यह कहके व्यास अन्तर्धीन हुए, अनन्तर युधिष्ठिर विगतशोक होके अर्जुन क्या कहेंगे इस चिन्तामे निमग्न हुए।

इति ७१ अध्याय।

प्रतिज्ञा पर्व अध्याय।

सञ्जय बोले, महाराज! इधर धनञ्जय संसप्तकोंका संहार करके शिविरमें आवने लगे तब साश्रुकण्ठसे वासुदेवसे बोले, गोविन्द! क्यों हमारा हृदय भीत, वाक्य स्खलित, अङ्ग कम्पित होता है? असङ्गलचिन्ता हमारे हृदयमें होती है, चतुर्दिक् अनिष्ट सूचित होती है, इससे हमको संशय उत्पन्न होता है।

वासुदेव बोले, धनञ्जय! युधिष्ठिरने अवश्य जय लाभ किया है, तुम दुर्भावना मत करो, अनन्तर वासुदेव औ अर्जुन शिविरमें उपस्थित हुए, देखते हैं, शिविर आनन्दशून्य औ नितान्त बीभत्स हो रहा है, तब धनञ्जय आकुल होके वासुदेवसे बोले, केशव! आज मङ्गलवाद्य बजते नहीं, बन्दीगण हमारे आगे आयके स्तुतिपाठ करते नहीं वीरगण हमको देखके अधोमुख हो रहे हैं, हमारे भ्रातृगण कुशलसे तो हैं? इस प्रकार कहते हुए शिविरमें प्रविष्ट होय भ्रातृगणको नितान्त दुःखित देखके सकलको देखा परंतु अभिमन्यु दृष्ट न हुए, तब विषण्ण होके बोले, हे वीरगण! तुम सभोंको अप्रसन्न देखते हैं औ वत्स अभिमन्यु कहां है?! हमने सुना था कि द्रोणाचार्य्यने चक्रव्यूह रचना किया था, तुम लोगोंमें अल्पवयस्क अभिमन्यु बिना कोई उसका भेद करने जानता नहीं, हमने उसको भेद करना शिक्षित किया था, परंतु निर्गम हमने नहीं कहा था, तुम लोगोंने क्या उस बालकको चक्रव्यूहमें प्रवेशित किया था? धनुर्द्धर बालक युद्धमें नष्ट हुआ क्या? वह किस प्रकार युद्धमें निहत हुआ? यदि आज हम सुभद्राका दयाभाजन औ हमारा निरन्तर लालित शौर्य्यशाली पुत्रको न देखेंगे तो अवश्य यमालयको जायेंगे, मृदुकुञ्चितकेश, मृगनयन, मत्तवारणविक्रम, सस्मित प्रियभाषी,

अन्होत्साह, दांत, शत्रुभयबर्द्धन, छताच्च, पितृगणका जयाभि-लाषी बालक होकेभी तरुणवत्कार्य्यकारी उसको विना देखे कैसे प्राण हमारे रहेंगे, सुकुमार महार्हशयनोचित महा वीर अभिमन्यु असंख्यसहायसम्पन्न होकेभी आज अनाथकी तुल्य भूतलमे शयान हो गए, जिनको वन्दी मागध जागरित कर्त्ते थे वह आज श्वापदो चीत्कार शब्दोमे पतित हैं, हा पुत्र! हम तुमको वारंवार देखकेभी तृप्त नही होते थे, सो आज काल बलपूर्वक उनको हरण कर ले गया, आज पुण्य-वान् लोगोकी स्थानमे शोभित हुए हौ।

नौका भग्न होनेसे नाविक जैसा विलाप करे धनञ्जय वैसा विलाप कर्के युधिष्ठिरसे पूछने लगे, महाराज! अभिमन्यु शत्रुमर्दन पूर्वक महावीरोंकी साथ संग्राम कर्के स्वर्गगामी हुए? असहाय अभिमन्युने यत्नसे बीरोकी साथ युद्ध कर्के सहायचिन्तनमे हमारा अवश्य स्मरण किया होगा, हमको बोध होता है कि अभिमन्यु कर्ण द्रोण प्रभृति नृशंसगणकी तीक्ष्ण शरोंसे निपीड़ित होय हा तात हमारी रक्षा करो यह कहते हुए भूतलमे निपतित हुए होंगे, हमारा हृदय वज्रमय है सन्देह नही, उनको न देखने सब विदीर्ण होता नही, हाय! आज सुभद्रा वा द्रौपदी अभिमन्युको न देखके हमको क्या कहेंगी।

महात्मा वासुदेव धनञ्जय पुत्रशोकसे अतिशय कातर देखके सांत्वन कर्त्ते बोले, हे धनञ्जय! ऐसे मत हो, शूरगण युद्धोपजीवी सकल क्षत्रियोंका यही पथ है, धर्मशास्त्रमे शूरोको यही गति कही है, क्षत्रियोको युद्धहीमे प्राणत्याग कर्ना युक्त है, अभिमन्यु उत्तम लोकको प्राप्त भए हैं सन्देह नही, इस लिये तुम शोक मत करो, तुम्हारे भ्रातृगण और भूपतिगण सबही दीनमना हुए हैं, तुम शान्तवाक्यसे उनको आश्वासित

करो, शेष विषय तुम जानते हो, इस लिये शोक करना तुमको उचित नहीं है।

वासुदेवका यह वाक्य सुनके भ्रातृगणसे बोले, हे भ्रातृगण! अभिमन्युका युद्ध कैसा हुआ सो सविस्तर कहो, तुम लोगोंके समक्ष वैरीगण क्या युद्ध कर सकते हैं औ अभिमन्युको क्या नष्ट कर सकते हैं, हम जानते पाण्डव पाञ्चालगण हमारे पुत्रके रक्षणमें असमर्थ हैं तो हमही रक्षा करते, तुम लोग रथारूढ़ औ शरवर्षण करते रहते किस प्रकार शत्रुओंने बालकको निहत किया क्या आश्चर्य है? पुत्र शोकसन्तप्त धनञ्जय यह कहके अश्रुपूर्ण नयन होके धनु औ खड्ग अवलम्बन करते क्रुद्ध कृतान्तके तुल्य मुहुर्मुहु दीर्घनिश्वास त्याग करने लगे, उस समय युधिष्ठिर औ वासुदेव भिन्न कोई उनसे बोलने वा देख नहीं सकता था, अनन्तर युधिष्ठिर उनको कहने लगे।

इति ७२ अध्याय।

यु॰ हे महाबाहो! तुम संसप्तकोंके साथ युद्धकरने गए, तब द्रोणाचार्य सेनाव्यूहित करके हमको ग्रहणके लिये दृढ़तर यत्नवान् हुए, तब हम लोगोंने रथ सैन्य प्रतिव्यूहित करके द्रोणाचार्य्यको निवारण करने लगे, तब द्रोणाचार्य्य हम लोगोंको निशित शर जालसे ऐसा निपीड़ित करने लगे, कि सैन्य भेद करना दूर रहा उनको ऊपर दृष्टिपात नहीं कर सकते थे, तब अप्रतिम वीर्य्यसम्पन्न सुभद्रानन्दनको कहा वत्स! द्रोणाचार्य्यकी सैन्यका भेद करो, तब अभिमन्युने हमारे आज्ञानुसार वह असह्यभार स्वीकार किया, गरुड़ जैसा समुद्रमें प्रवेश करे तद्रूप वह बालक द्रोण सैन्यमें प्रविष्ट हुए, हम लोग उनका अनुगमन करने लगे, वह जैसा प्रवेश करने

लगे हम लोगभी उसी प्रकार प्रवेश करनेकी चेष्टा करने लगे, परंतु क्षुद्र जयद्रथने रुद्रकी वरदानसे हम सबहीको निवारण किया, तब महावीर द्रोण, कृप, कर्ण, अश्वत्थामा, कोशल-राज, बृहद्दल औ कृतवर्मा इन छओ वीरोने उन असहाय बालकको वेष्टन कर लिया, महावीर अभिमन्यु साध्यानुसार यत्न करकेभी उनकी शरोसे विरथ हो गए, तब दुःशासन पुत्रने शीघ्र उनके पास आयके स्वयं संशयापन्न होके उनका प्राण संहार किया, महावीर अभिमन्युने पहिले सहस्र मनुष्य, अश्व, रथ औ मातङ्ग, तदुत्तर पुनः आठ सहस्र रथ, नवशत हस्ती, दो सहस्र राजपुत्र औ अलक्षित बहुतभी औ राजा बृहद्दलको नष्ट करके स्वयं स्वर्गमे गए, हे धनञ्जय! हम लोगोंको यही शोकजनक कार्य्य उपस्थित हुआ।

तब पुत्रवत्सल धनञ्जय हा पुत्र! कहके निश्वास त्याग करने लगे औ भूतलमे निपतित हुए, सबही विषणवदनसे अनि-मिषनयनसे उनको देखने लगे, कियत्क्षणोत्तर धनञ्जय चैतन्य लाभ करके क्रोधसे अधीर होय निश्वास औ देहकम्पन पूर्वक अश्रुधारा मोचन करने लगे, तब परस्पर हस्तनिष्पीड़न करके युधिष्ठिरसे बोले, महाराज! हम प्रतिज्ञा करते हैं, कि काल हम जयद्रथको नष्ट करेंगे, यदि जयद्रथ मृत्युभयसे धार्तराष्ट्रोंको छोड़ न दे, यदि हम लोग हम लोगी वा कृष्णकी शरण न होय तो अवश्य हमारे शरसे नष्ट होगा, वह पापात्मा हम लोगोंका सौहृद विस्मृत होके दुर्य्योधनका प्रियकार्य्य करता है, वही पापात्मा अभिमन्युके वधका हेतु है, इस लिये कालही संहार करेंगे, द्रोण होय वा कृप होय जो उसको रक्षार्थ हमसे युद्ध करेगा अवश्य हमारे शरोंसे आच्छादित होगा, हे पुरुषश्रेष्ठ! हमने जो कहा यदि संग्राममे वह कार्य्य न करेंगे तो हमको पुण्यलब्ध लोक लाभ न होगी, यदि जय-

द्रथका बध न करेंगे तो मातृहन्ता, पितृहन्ता, गुरुदाररत, विश्वासघाती ब्रह्मघाती इत्यादि जितने पातकी हैं उनकी भयानकगति हमको प्राप्त होय, हम औरभी प्रतिज्ञा कर्ते हैं यदि कल जयद्रथका बध न करें तो कल हम इसी स्थानमें प्रज्वलित अग्निमें प्रवेश करेंगे, अभिमन्युका शत्रु जहां रहेगा वहांही हम उसका मस्तक छेदन करेंगे, महावीर धनञ्जय यह कहके वाम औ दक्षिणमें शरासनका निक्षेप कर्ने लगे, तब शरासनके शब्दसे आकाश व्याप्त हो गया, तब वासुदेवभी पाञ्चजन्य शंख शब्द कर्ने लगे, उनके शंख शब्दसे तीन लोक कम्पित होने लगा, तब अन्यान्य वाद्यभी बजने लगे।

इति ७३ अध्याय।

चरगणने पाण्डवोंका यह शब्द सुनके कौरवोंको समाचार कहा, जयद्रथ सुनके नितान्त दुःखित औ विक्षुब्ध होके अनेक विवेचना कर्ते भूपालोंके सभामें गए, अर्जुनके भयसे अत्यन्त व्याकुल होय भूपोंसे बोले, हे राजगण! पाण्डुके क्षेत्रमें इन्द्रके बीजसे उत्पन्न दुर्बुद्धि धनञ्जय हमको यमालय प्रेषण कर्नेकी प्रतिज्ञा करता है, इस लिये आपका मङ्गल होय हम स्वस्थानमें गमन कर्ते हैं, अथवा आप लोग हमारी रक्षा कीजिये, द्रोण प्रभृति सकल वीर यमनिपीड़ित व्यक्तिका रक्षण कर सकते हैं, इस लिये एकाकी धनञ्जय हमारा संहार नहीं कर सकेगा, परंतु हमको बोध होता है आप सब एकत्र होकेभी हमारी रक्षा नहीं कर सकेंगे, पाण्डवोंके जयध्वनिसे हमारा हृदय भीत औ मुमूर्षुके समान गात्र अवसन्न होता है, निश्चय गाण्डीवधन्वा हमारा बध करेगा, इसीसे पाण्डवोंको शोक कालमेंभी हर्ष हुआ है, भूपालोंकी कथा

दूर रहें देव गन्धर्वभी अर्जुनकी प्रतिज्ञा अन्यथा नहीं कर सकता है, इस लिये हम पलायन करके लुकाय रहते हैं, यह सुनके दुर्य्योधन बोले, सिन्धुराज! भीत मत हो, तुम क्षत्रिय औ वीरगणोंमे अवस्थान करोगे त किसका तुम्हारे साथ युद्ध करनेका साहस होगा, हम लोग जितने वीर हैं सबही सेनाके सहित तुम्हारे चतुर्दिक अवस्थान करेंगे, यह दुर्भावना त्याग करो, तुम रथीश्रेष्ठ औ शौर्य्यशाली होके क्या पाण्डवोंका भय करते हो, एकादश अक्षौहिणी सेना तुम्हारे रक्षाके लिये यत्नसे युद्ध करेगी ।

हे राजन्! इस प्रकार दुर्य्योधनसे आश्वासित होके उसी रात्रिको द्रोणाचार्य्यके समीप गए, अभिवादन पूर्वक उनको पूछने आचार्य्य! दूरस्थ लक्ष्यमे शरनिपातन, लघुत्व औ दृढ़-वेधनमे अर्जुनसे हमसे क्या भेद है? आपसे हमारा औ अर्जुनका युद्ध विद्यामे तारतम्य क्या है सो पूछते हैं, इस लिये आप यथार्थ धनञ्जयकी विद्या कथन कीजिये ।

द्रोण बोले, वत्स! तुम्हारा औ धनञ्जयका गुरूपदेश समान है, परंतु धनञ्जयने योग औ दुःखावस्थासे उत्कर्ष लाभ किया है, जो होय तुम धनञ्जयसे भय मत करो, मद्रुत रक्षितके ऊपर देवगणकाभी प्रभाव हो सकेगा नहीं, हम ऐसी व्यूह रचना करेंगे, उसे पार्थभी उत्तीर्ण नहीं हो सकेगा, इस लिये युद्धमे प्रवृत्त हो भीत मत हो, स्वधर्म प्रतिपालन पूर्वक पितृ पितामहके पथमे गमन करो ।

सिंधुराज द्रोणसे इस प्रकार आश्वासित होके भय त्याग करके युद्धमे कृतसङ्कल्प हुए, तब कौरव सैन्यमे वादित्र बजने लगे ।

इति ७४ अध्याय ।

इधर धनञ्जयकी प्रतिज्ञा सुनके वासुदेव बोले, हे धनञ्जय! तुमने हमसे विचार किये विना यह प्रतिज्ञा किया सो अत्यन्त साहस कर्म किया, इस विषमभारसे किस प्रकार उपहाससे परित्राण पावेंगे, हमने दुर्य्योधनको शिविरमें चरगणको प्रेषण किया था, उन्होंने वहांसे आयके कहा कि तुम जयद्रथके वधमें प्रतिज्ञारूढ़ हुए, तब हम लोगोंके वादित्र उन्होंने सुने तब वह सब भीत हुए, अर्जुन पुत्रवधसे क्रुद्ध होके इसी रात्रिमें युद्ध करनेको आवते हैं ऐसा जानके युद्धमें प्रस्तुत होने लगे, इतनेमें तुम्हारी जयद्रथके वधकी प्रतिज्ञा सुनी, तब दुर्य्योधनादि सब दुर्मनायमान हुए, जयद्रथ नितान्त भीत होके राजाओंसे कहने लगे कि अर्जुनने हमारे वधकी प्रतिज्ञा किया है देवगणभी उनकी प्रतिज्ञा अन्यथा कर सकते नहीं इससे हम इहांसे जाते हैं अथवा आप लोग हमारी रक्षा कीजिये, दुर्य्योधन यह सुनके अधोमुख हो रहे, तब जयद्रथ बोले, राजन्! हमारे सैन्यमें ऐसा कोई नहीं जो वासुदेवके सहायतासे अर्जुन गाण्डीव कम्पित करेगा तब रक्षा करे, इस लिये हम पलायन करते हैं, तब दुर्य्योधनने जयद्रथके वाक्यानुसार आचार्य्य द्रोणसे प्रार्थना किया है इससे उन लोगोंका एक दुर्भेद्य व्यूह रचना होगी, उसके पूर्वार्द्धमें शकटाकार औ पश्चादर्द्धमें पद्माकार होगा, पद्मके बीचमें सूची नामक गूढ़व्यूह होगा, जयद्रथ असंख्य वीरोंसे रक्षित होके उसी व्यूहमें अवस्थान करेगा, द्रोणादि महावीर अत्यन्त असह्य हैं, कर्ण, भूरिश्रवा, अश्वत्थामा, वृषसेन, कृप, शल्य यह छ वीर रणमें अग्रसर होंगे, इन लोगोंका पराजय करनी सहज नहीं है, इस लिये पुनः मन्त्रणा करनी चाहिये।

इति ७५ अध्याय।

अर्जुन बोले, केशव! तुमने जो छ वीरोंको कहा उनका बल हमारे बलका अर्द्धांशभी नही है, तुम देखोगे इन छओ वीरोको छिन्नभिन्न करके जयद्रथका मस्तक छेदन करेंगे तब द्रोणाचार्य्य उनके साथ विलाप करेंगे, इन्द्रादि देवगणभी रक्षा करेंगे तोभी तुम जयद्रथको निहत देखोगे, हम सत्य करके प्रतिज्ञा करते हैं, द्रोणाचार्य्य जयद्रथके रक्षक हैं इस लिये उन्होको पहिले आक्रमण करेंगे, दुरात्मा दुर्य्योधनका द्रोणहीके ऊपर जयपराजयका निर्भर है, इस लिये हम द्रोणसेनाग्रहीका भेद करके सिंधुराजके पास जायङ्गे, हम राक्षसोको दृप्त, शत्रुओको विदारित, सुहृदोको आनन्दित औ जयद्रथको निहत करेंगे, दिव्य गाण्डीवधनु, हम योद्धा औ तुम सारथि तब जयमे क्या शङ्का है, ब्राह्मण, सत्य, साधु, नम्रता, यज्ञ, श्री औ नारायणमे नियत जय विराजमान है, हे केशव! प्रभात होतेही रथ सज्जित रहे।

इति ७६ अध्याय।

सं०। शोकदुःखाकुल वासुदेव औ धनञ्जय उस रात्रिको निद्रा न हुई, इन्द्र प्रभृति देवगण नर औ नारायणको जातक्रोध जानके क्या दुर्घटना होगी ऐसी चिन्ता करने लगे, रूक्ष वायु प्रवाहित होने लगा, दिवाकरमे कबन्धादि अनेक दुर्निमित्त सूचित होने लगा, अनन्तर धनञ्जय वासुदेवको कहने लगे कि तुम सुभद्रा औ हमारी पुत्रबधु औ उनके सखीगणको आश्वासित करो। तब नितान्त दुर्मनायमान वासुदेव अर्जुनके गृहमे जायके पुत्रशोकाकुला भगिनीको आश्वासन देने लगे, हे सुभद्रे! कुमारके निमित्त स्नुषाके सहित शोक मत करो, काल सकल प्राणिका ध्वंस करता है, सत्कुलजात धर्य्यशालि क्षत्रिय जिस प्रकार प्राणत्याग करना उचित है,

तुम्हारे पुत्रने वैसही प्राणत्याग किया है, महारथ, वीर पितृतुल्यपराक्रमी अभिमन्युने भाग्यहीसे वीरगणाभिलषित गति लाभ किया है, तुम वीरपत्नी, वीरजननी औ वीरबान्धवा हो इस लिये शोक करनो उचित नही है, शिशुघातक सिंधुराजभी कालही नष्ट होगा, कालही सुनोगे कि सिंधुराजका मस्तक स्यमंतपञ्चकके बहिर्भूत हुआ है, इस लिये शोक त्याग करो, रोदन मत करो, तुम्हारे स्वामीने जो प्रतिज्ञा किया है वह कदापि नष्ट न होगी, सिंधुराज अवश्य नष्ट होगा,।

इति ७७ अध्याय।

सञ्जय बो०। पुत्रशोकाकुला सुभद्रा वासुदेवका वाक्य सुनके विलाप करने लगी, हा वत्स ! हतभागिनीके पुत्र ! तुम पितृतुल्यपराक्रमी होके कैसे युद्धमे नष्ट हुए, हम तुम्हारे मुखकमल कैसा देखेंगे, हा ! जो तुम सुखशय्यामे शयन करते थे सो तुम वाणबिद्ध होके भूतलमे शयान हो, हा पुत्र ! अनेक सहाय रहतेभी तुम अनाथके तुल्य हो गए, हा वत्स ! यह तुम्हारी तरुणी भार्य्या मनवेदनासे नितान्त कातर हुई है, इसकी सान्त्वना हम कैसे करेंगे।

दीनवदना सुभद्रा इस प्रकार अनेक विलाप करके रोदन करती है इतनेमे द्रौपदी उत्तराको साथ लेके वहां आई, तब वह सबही नितान्त शोकाकुल होय रोदन औ विलाप करती हुई धरातलमे निपतित हुई, वासुदेव अत्यन्त दुःखित होय उन लोगोंको आश्वासित करने लगे, हे सुभद्रे ! अब तुम लोग अभिमन्युके लिये शोक मत करो, क्षत्रियश्रेष्ठ अभिमन्युने जो गति लाभ किया है, हम लोगोंके कुलके सबही वह गतिलाभ करें, वासुदेव इस प्रकार भगिनीको आश्वासन देके धनञ्जयके निकट आयके भूपालगण, बंधुवर्ग औ धन-

ञ्जयको अनुज्ञा कर्के अन्तःपुरमे प्रविष्ट ऊए, वह लोगभी स्वस्व स्थानमे गए ।

इति ७८ अध्याय ।

तब वासुदेव धनञ्जयके घरमे प्रविष्ट होय उदकस्पर्श पूर्वक सुलक्षण स्थण्डिलमे कुशविस्तीर्ण कर्के मङ्गल द्रव्य औ आयुध रखे, तदुत्तर रात्रिकर्तव्य त्र्यम्बक बलिकर्म कर्के वासुदेवको उपहार प्रदान किया, अनन्तर वासुदेव उनको आशीर्वाद देके स्व शिविरमे प्रविष्ट ऊए, शुभ्रशय्या पर शयन कर्के धनञ्जयके हितार्थ योगावलम्बनसे तेजोवर्द्धन औ दुःखनाशक उपाय कर्ने लगे ।

हे महाराज ! उस रात्रिको पाण्डवोंके शिविरमे कोई निद्रित न ऊआ, सबही चिन्ताकुल हो रहे, धनञ्जयने पुत्र-शोकाकुल होके सहसा जयद्रथके बधकी प्रतिज्ञा किया सो कैसे सफल होगी, जयद्रथभी सामान्य वीर नही है, जो होय पार्थ प्रतिज्ञासे उत्तीर्ण होय, वह यदि काल सिंधु-राजका बध न करेंगे तो अवश्य अग्निमे प्रवेश करेंगे प्रतिज्ञा कदापि मिथ्या नही करेंगे, क्या हम लोग सत्कार्य्य करें जिस्से धनञ्जयके कार्य्य सफल होय पाण्डवपक्षीयोने सकल इस प्रकार चिन्ता कर्ते रात्रि सब व्यतीत किया ।

इधर वासुदेव उसी रात्रिमे जागरित होके पार्थकी प्रतिज्ञा स्मरण कर्के दारुकसे बोले, दारुक ! पुत्रशोकसे दुःखित होय धनञ्जयने जयद्रथ बधकी प्रतिज्ञा किया है, औ दुर्य्योधन यह सुनके जिस्मे जयद्रथका बध न होय ऐसी मन्त्रणा करेंगे, उनकी अनेक अक्षौहिणी सेना औ सपुत्र द्रोणाचार्य्य रक्षा करेंगे, द्रोणाचार्य्य जिसकी रक्षा करेंगे देवदानवभी

उसको नाश नही कर सकते, धनञ्जयसे प्रिय हमको कोई नही है, हम आप उनके लिये युद्ध करके वीरों संहार करेंगे, हम तुम्हारे समस्त पाण्डवोंके हितार्थ चक्रसे कौरवोंको प्रमथित करेंगे, जो धनञ्जयका द्वेष्टा सो हमारा द्वेष्टा, धनञ्जय हमारे अर्द्ध शरीर हैं, हे दारुक ! कल तुम हमारा रथ सज्ज करके हमारे साथ ले चलो, जब हम ऋषभ स्वरसे भयङ्कर शंखका शब्द करेंगे तब तुम सत्वर रथ हमारे निकट लेआओ, हम एक दिनहीमे पितृष्वसा पुत्रोंका दुःख दूर कर देंगे, धनञ्जय जिस्से धार्तराष्ट्रोंके समक्ष सिंधुराज बध करें सो उपाय करेंगे, दारुक बोले, हे पुरुषोत्तम ! आपने जिस्को साहाय्य दिया है उस्का जय अवश्य होगा, जो आपने आज्ञा किया हम वैसही अवश्य करेंगे।

इति ७९ अध्याय।

सं०। इधर अचिंत्यपराक्रम धनञ्जय आत्मकृत प्रतिज्ञा पालनकी चिन्ता करने लगे, व्यासदत्त मन्त्र स्मरण पूर्वक निद्रित हुए, तब महात्मा वासुदेव स्वप्नमे उनके निकट गए, धनञ्जयने उत्थान पूर्वक उपवेशन कराया, वासुदेव धनञ्जयका अभिप्राय जानते थे सोई कहने लगे, पार्थ ! तुम क्या विषाद-सागरमे निमग्न हो? शोक त्याग करो, शोकसे आत्मनाश होता है।

धनञ्जय कृष्णका वाक्य सुनके बोले, केशव ! हमने प्रतिज्ञा किया है कि कल जयद्रथका बध करेंगे, महारथ धार्तराष्ट्रगण उस प्रतिज्ञाके विघातार्थ सिंधुराजको पृष्ठभागमे स्थापन करेंगे, एकादश अक्षौहिणी सेना औ वीरोंसे रक्षित होके दुःसाध्य होगा, और दक्षिणायनके दिन छोटे शीघ्र सूर्य्य

अस्त्र होंगे कार्य्य न होगा तो हम कैसे जीवित रहेंगे।

वासुदेव बोले, धनञ्जय! तुमने महादेवसे पाशुपतास्त्र लाभ किया है, यदि तुमको वह स्मृत होगा तो अब उससे जयद्रथका संहार करोगे, नहीं तो मनमें देव देव महादेवका ध्यान करो, उनके प्रसादसे वह अस्त्र प्राप्त होगा, धनञ्जय यह सुनके जलस्पर्श पूर्वक भूतलमें उपविष्ट होय महादेवका स्मरण करने लगे, अनन्तर ब्राह्म मुहूर्त सन्निहित हुआ तब धनञ्जय देखते हैं कि आप केशवके साथ गगनमण्डलमें उपस्थित हुए हैं, वहां केशव उनको दक्षिण हस्त धारण करके हिमालयके पास मणिमान् पर्वत पर वायुवेगसे उपस्थित हुए, वहांसे उत्तरदिक् श्वेतपर्वत, कुवेरका वन, गङ्गा औ रमणीय प्रदेश देखते हुए काल पर्वत होके ब्रह्मतुङ्ग, शतशृङ्ग, शर्य्यातिवन, अश्वशिरस्थान, आथर्वस्थान, वृषदंश पर्वत, मन्दरगिरि, समुद्र देखते हुए एक दीप्तिमान् पर्वत पर उपस्थित हुए, वहां देवाधिदेव महादेव तपस्या कर रहे हैं, उनका रूप सहस्र भानु समान, हस्तमें शूल, मस्तकमें जटा, परिधान वल्कल औ अजिन शरीर श्वेतवर्ण औ सहस्र लोचन शोभित हैं, उनके साथ पार्वती औ भूतगण अवस्थान करते हैं, वह देव कभी गीत, कभी नृत्य, कभी हस्तपाद चालन औ कभी शब्द करते हैं, उनके शरीरका दिव्यगन्ध बह रहा है, ब्रह्मवेत्ता औ ऋषि उनकी स्तुति करते हैं।

वासुदेव उन शरासनधारी भवानीपतिको देखके ब्रह्मनामोच्चारण पूर्वक साष्टांग प्रणाम करने लगे, इस प्रकार दोनो उनके शरणापन्न हुए, तब देवदेव महादेव नर औ नारायणको समागत देखके स्वागत प्रश्न पूर्वक बोले, हे वीरद्वय! तुम स्वीय अभिलाष व्यक्त करो, हम सम्पादन करेंगे, तब वासुदेव औ धनञ्जय उनका वाक्य सुनके उठके अञ्जलि बन

पूर्वक स्तव करने लगे, विविध स्तव करके उनको प्रसन्न किया।

इति ८० अध्याय।

सं०। अनन्तर धनञ्जयने रात्रिमें प्रदत्त त्र्यम्बकबलि आगे निहित है सो देखा, अनन्तर वासुदेव औ महादेवकी पूजा करके बोले, हे देव! हम दिव्यास्त्र लाभकी अभिलाष करते हैं।

महादेव बोले, हे पुरुषोत्तमद्वय! जो तुम्हारा अभिलाष है वह हम देते हैं, इसी स्थानमें एक सरोवर है उस शर औ शरासन रखा है वह लेआओ, तब वह दोनो तथास्तु कहके उस सरोवरके निकट जाय देखते हैं कि भीतर दो भुजङ्ग विराजमान हैं, एक अत्यन्त भयङ्कर हैं, दूसरे सहस्र मस्तक औ अति तेजस्वी, उनके सहस्र मुखोंसे ज्वाला निकल रही हैं, तब वासुदेव औ धनञ्जय जलस्पर्श पूर्वक कृताञ्जलिपुट होके शत रुद्रीय वेद पठन करके नमस्कार करने लगे, तब वह भुजङ्गद्वय नागरूप त्याग करके धनुर्वाणरूप हो गए, तब उन्होंने उनको लेके महादेवको दिया, तब पिङ्गनेत्र धूम्रवर्ण तपस्याके आधार एक महाबलपराक्रान्त ब्रह्मचारीने महादेवके पार्श्वभागसे उत्पन्न होके वह धनुर्ग्रहण किया, दक्षिणजंघा प्रसारण औ वामजंघा संकोच पूर्वक अवस्थान करके शर सहित उस शरासनका आकर्षण करने लगे, धनञ्जय उनका मौर्वी आकर्षण धनुर्धारण औ पादसंस्थापन देखके औ महादेवके मुखसे मन्त्र श्रवण करके ग्रहण कर लिया, तब उन ब्रह्मचारीने वह धनुर्वाण उस सरोवरमें रख दिया, धृतिमान् अर्जुन महादेवको प्रसन्न जानके मनमें चिन्ता करने लगे कि हमने पहिले अरण्यमें महेश्वरके निकट जो वर पाया था वही यह वर है औ उनका दर्शन सफल होय, महादेव उनका अभिप्राय जानके पाशुपतास्त्र दान पूर्वक प्रतिज्ञासे

उद्धार होगा यह वर दिया, अर्जुन पुनः दिव्यास्त्रलाभ करके आनन्दसे अपनेको कृतकृत्य बोध करने लगे, अनन्तर दोनो महादेवको नमस्कार करके वहांसे प्रस्थित होय अपने शिविरमे उपस्थित हुए।

इति ८१ अध्याय।

सं०। अनन्तर कृष्ण औ दारुक परस्पर वार्तालाप करते रात्रि व्यतीत हुई, राजा युधिष्ठिर सूत मागध बन्दियोंकी स्तुति औ मङ्गल तूर्य्यवाद्योंसे जागरित हो स्नानाह्निक होमादि नित्यक्रिया सम्पादन करके सुसज्जित होय दिव्यासन पर बैठे अनन्तर वासुदेव कृतनित्यक्रिय होके उनके निकट गए, युधिष्ठिरने उनका पूजन किया।

इति ८२ अध्याय।

सं०। अनन्तर वीरगण सब उपस्थित हुए, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, सात्यकी, चेकितान, चेदिपति धृष्टकेतु प्रभृति यथास्थानमे उपविष्ट हुए, अनन्तर युधिष्ठिर उन लोगोंके संमुख कृष्णसे बोले, अमरगण जैसा इन्द्रका आश्रय करते हैं, हम लोगोंके वैसही आप एक आश्रय रूप हैं, हम लोगोंका जय औ युद्धमे गमन सब तुम्हारे ऊपरही निर्भर है, अब प्रार्थना यही है जिसमे अर्जुनकी प्रतिज्ञा सफल होय, तुमही हम लोगोंके इस दुःखार्णवमे नौका स्वरूप हो, इस लिये हम लोगोंका उद्धार करो।

यह सुनके वासुदेव बोले, महाराज। नरश्रेष्ठ महाबल-पराक्रान्त धनञ्जय जैसे धनुर्द्धर वीर्य्यवान् अस्त्रसम्पन्न रणविख्यात हैं वैसे अमरगणमे कोई नही है, वही धनञ्जय आपके शत्रुओंका संहार करेंगे, हमभी अर्जुनके ऐसे तुम्हारे शत्रु-

संहारमें प्रवृत्त होंगे, आज अवश्य उस पापात्मा जयद्रथका वध करेंगे, आप चिन्ता मत कीजिये।

इति ८३ अध्याय।

—०—

सं०। अनन्तर अर्जुन युधिष्ठिर औ अन्यान्य सुहृद्गणकी दर्शनार्थ वहां उपस्थित हुए, युधिष्ठिरने उनको आलिङ्गन औ मस्तकाघ्राण करके उपवेशन कराया, औ बोले, अर्जुन! तुम्हारे पराक्रमसे औ जनार्द्दनकी प्रसादसे अवश्य जय लाभ होगा, तब धनञ्जय बोले, महाराज! आपका मङ्गल होय, हमने केशवकी प्रसादसे अति आश्चर्य विषय देखा, यह कहके सकल रात्रिका स्वप्न विषय कह दिया, तब सब लोग विस्मयापन्न होके महादेवको नमस्कार करने लगे औ अर्जुनको साधुवाद देने लगे।

अनन्तर धर्मराज सकल सुहृद्गणको संग्राममें गमन करनेका आदेश करने लगे, वह लोग उनके आदेशानुसार सुसज्जित होके युद्धार्थ निर्गत हुए, महावीर सात्यकी, वासुदेव औ धनञ्जय राजाको अभिवादन करके वहांसे प्रस्थित हुए, सात्यकी औ वासुदेव एक रथ पर आरोहण करके अर्जुनके स्थानमें गए, वहां वासुदेव सारथिके तुल्य धनञ्जयका रथसज्ज करने लगे, अनन्तर धनञ्जय किरीट, हेमवर्म, शरासन औ शर धारण पूर्वक रथको प्रदक्षिण करके उसके ऊपर आरूढ़ हुए, विविध वाद्य वादन होने लगा, सूत मागध स्तुति करने लगे, तपस्वी ब्राह्मण आशीर्वाद देने लगे, उस समय पुण्यगन्ध वायु प्रवाहित होने लगे, जयसूचक विविध शुभचिह्न होने लगे।

धनञ्जय शुभचिह्न देखके दक्षिण पार्श्वस्थित सात्यकीसे बोले, हे युयुधान! आज शुभचिह्न देखते हैं इससे अवश्य जय लाभ होगा ऐसा बोध होता है, इस लिये जयद्रथ यमा-

लयको जानेके लिये जहां अवस्थान करते है हम वहांहि जायंगे, परंतु हमको जयद्रथ बध जैसा अवश्य है, वैसही राजा युधिष्ठिरकोभी रक्षा अवश्य है, इस लिये राजाके रक्षाके लिये तुमको नियुक्त करते हैं, तुम वा प्रद्युम्न राजाके रक्षाका भार ग्रहण करोगे, तो हम निश्चिन्त होके जयद्रथका बध करेंगे, जहां वासुदेव हैं वहां कुछभी विपद नही है इस लिये तुम हमारी चिन्ता कुछभी मत करो, सात्यकी अर्जुनका यह वाक्य सुनके युधिष्ठिरके निकट प्रस्थित हुए।

इति ८४ अध्याय।

इति प्रतिज्ञापर्वाध्याय समाप्त हुआ।

जयद्रथबध पर्व्वाध्याय।

धृ०। पाण्डवगणने पुत्रशोकसे कातर होके पर दिवस क्या किया? हमारे वीरोंमे कौन२ उनसे युद्ध करनेमे प्रवृत्त हुए? कौरवगणने अरातिनिपातन सव्यसाचीका असाधारण सब कार्य्य देख जानकेभी किस प्रकार तादृश अन्याय कार्य करके निर्भय अवस्थान किया? पुत्रशोकसन्तप्त कालान्तकतुल्य शरासन स्फालन करते संग्राममे आवने पर अस्मत्पक्षीय वीरोने कैसा उनको देखा? संग्राममे दुर्योधनकी क्या अवस्था हुई? सो सब कहो, आज हम आश्चर्य ध्वनि श्रवण नही करते हैं, जयद्रथके घरमे मनोहर वाद्य बजते नही हे कौरवोंका सिंहनाद सुन्ते थे, सो आज नही सुनते हैं, सकल हमको शोकहीका कारण ज्ञात होता है, हा! हम क्या

अपुण्य है! आज पुत्रगणके गृहोंमें निरुत्साह औ आर्तनाद सुन्ते हैं, हे सञ्जय! जब जनार्दन सन्धिस्थापनकी अभिलाषसे विराट नगरसे आए थे, तब हमने मूर्ख दुर्योधनको कहा था कि इस समय कृष्णके सहायतासे पाण्डवोंसे सन्धिस्थापन करो हमारे मतसे सन्धिस्थापन समयोचित है, इस लिये हमारा वाक्य उल्लंघन मत करो, महात्मा वासुदेव तुम्हारे हितार्थही सन्धि कर्ते हैं, यदि तुम न स्वीकार करोगे तो संग्राममें कदापि जय लाभ न करोगे, हे सञ्जय! हमने ऐसा वारंवार उसको कहा, परंतु उस कुलाङ्गारने हमारे वाक्य पर अनास्था करके कर्ण औ दुःशासनका अनुवर्ती होके कृष्णको प्रत्याख्यान किया, महात्मा विदुरने कितना कहा परंतु किसीका न माना, जो होय इस समय अनन्तर क्या हुआ सो कहो।

इति ८५ अध्याय।

सं०। आपहीके दुर्नीतिसे यह विपद उपस्थित हुई है, उसी दुर्नीतिका फल है, विगत सलिल प्रदेशमें सेतु बन्धन कर्नी जैसा विफल है, तद्रूप इस समय आपका अनुताप कर्नी निः-फल है, यदि आप द्यूतहीसे पुत्रोंको निवृत्त कर्ते अथवा युद्धके समय सन्धिस्थापन कर्ते तो क्यों अनुताप कर्नी पड़ता, जो होय अब युद्धकी वार्ता सुनिये।

इति ८६ अध्याय।

सं०। प्रातःकाल होते महावीर द्रोणाचार्य्य स्वीयसैन्य लेके व्यूह रचना कर्ने लगे, सैनिक सब कोलाहल कर्ने लगे, कोई धनुर्विस्फारण, कोई ज्यामार्जन कोई धनञ्जयको पुकारने लगे, कोई खड्ग निष्काशन, कोई शिक्षानैपुण्य देखावने लगे, धनञ्जय कहां है, भीम कहां है ऐसा कोई पुकारने लगे,

व्यूह रचनाके उपरान्त द्रोणाचार्य्य जयद्रथसे बोले, सिंधुराज ! तुम सौमदत्ति, कर्ण, अश्वत्थामा, शल्य, वृषसेन, कृप, एक लक्ष अश्व, साठहजार रथ, चौदहजार गज औ एक्कीस-हजार पदाति लेके हमसे छ कोस दूर अवस्थान करो, वहां कोई आक्रमण नही कर सकेगा, स्वस्थ हो, सिंधुराज यह सुनके उतना सैन्य लेके कथित स्थानमे गए, उस समय आपके पुत्र दुर्मर्षण उत्तम पञ्चदशशत मत्तमातङ्ग लेके युद्धार्थ सैन्यके आगे अवस्थित हुए, दुःशासन औ विकर्ण अग्रगामी सैन्यके मध्यमे अवस्थित हुए, जो द्रोणाचार्य्यने व्यूह रचा उसका पूर्वार्द्ध शकटाकार औ पश्चार्द्ध चक्राकार था, उसकी दीर्घता चौवीस कोसकी औ पश्चार्द्धका विस्तार दस कोश, इस व्यूहके पश्चार्द्ध स्थित पद्माकृति व्यूहमे सूचीनामक दुर्भेद्य गूढ़ एक व्यूह निर्माण किया, धनुर्द्धारी कृतवर्मा उस व्यूहमे अवस्थित हुए, कृतवर्माके पश्चात् काम्बोज औ जलसन्ध औ उनके पश्चात् राजा दुर्य्योधन औ कर्ण अवस्थित हुए, एक लक्ष वीरपुरुष शकटके अग्रभागमे रक्षार्थ नियुक्त हुए, सिंधुराज इन सभोंके पीछे उस सूची नामक व्यूहके पास अवस्थित हुए, महावीर द्रोणाचार्य्य शकटके मुखमे अवस्थित हुए, भोजप्रभृति द्रोणके पृष्ठभागमे अवस्थित हुए, सिद्ध औ चारण द्रोणाचार्य्य रचित व्यूह देखके विस्मयाविष्ट हुए, राजा दुर्य्योधन अतिशय संतुष्ट हुए।

इति ८७ अध्याय।

हे महाराज ! इस प्रकार सैन्यनिवेशित होने पर भेरी-मृदङ्ग प्रभृति वाद्यवादन होने लगे, अनन्तर उस रणक्षेत्रमे धनञ्जय उपस्थित हुए, उनके सम्मुख द्रोण काक क्रीड़ा करने लगे, हम लोगोंके सेनाके दक्षिण पार्श्वमे अशिवदर्शन शिवा

औ घोरदर्शन अन्यान्य पशुगण भयङ्कर शब्द कर्ने लगे, तदनन्तर नकुलपुत्र शतानीक औ धृष्टद्युम्न पाण्डवोंकी सेना रचनामे प्रवृत्त हुए, उस समय तुम्हारे पुत्र दुर्मर्षण पुनः सहस्र रथ, शत हस्ती, तीन सहस्र अश्व औ दश सहस्र पदातियोंसे सार्द्ध सहस्र धनुः परिमित भूभाग आक्रमण करके सर्वाग्रे अवस्थान कर्ने लगे, वह गर्वित वाक्यसे बोले, हे वीरगण! वेला जैसी समुद्रको निवारण कर्ती है, तद्रूप हम गाण्डीवधारी अर्जुनको निवारण करेंगे, तुम लोगोंको किसीको युद्ध कर्नेका प्रयोजन नहीं, हम एकाकीही पाण्डवपक्षीयोंसे युद्ध करके यश औ मानवृद्धि लाभ करेंगे, धनञ्जय दुर्मर्षणका वाक्य सुनके क्रुद्ध होके गाण्डीव कम्पित कर्ने लगे, कालान्तक तुल्य धनञ्जय कौरव सैन्यके सम्मुख रथसंस्थापन करके शंखध्वनि कर्ने लगे, महात्मा वासुदेवभी पाञ्चजन्य ध्वनि कर्ने लगे, उन दोनोंके शंखनादसे सैन्यगण देह रोमाञ्चित औ कम्पित होने लगा, उस दारुण नादसे वाहन सब मलमूत्र त्याग कर्ने लगे, वीर सब भीत औ विचेतन औ उद्विग्न होने लगे, अर्जुनध्वजस्थित कपिवर मुख व्यादान करके सैन्यगणको त्रासोत्पादन पूर्वक घोर शब्द कर्ने लगे, अनन्तर कौरव सैन्यमे पुन वाद्यध्वनि होने लगा, अर्जुन उस शब्दको सुनके हर्षित होय कृष्णको कहने लगे।

इति ८८ अध्याय।

धनञ्जय बोले, वासुदेव! जहां दुर्मर्षण अवस्थान कर्ते हैं, वहा रथ ले चलो, हम लोग सैन्यभेद करके शत्रु सेनामे प्रविष्ट होंगे, तब वासुदेवने उधरही रथ सञ्चालन किया, अनन्तर धनञ्जयके साथ कौरवोंका घोर संग्राम उपस्थित हुआ, कौरव सैन्यमे असंख्य वीर प्राणत्याग कर्ने लगे, पर्वतके ऊपर मेघके

समान धनञ्जय शरवर्षण कर्ने लगे, कौरवपक्षीयभी अर्ज्जुनके ऊपर शरवर्षण कर्ने लगे, तब धनञ्जय क्रुद्ध होके रथिगणोके मस्तक छेदन कर्ने लगे, समरभूमि उन मस्तकोंसे पुण्डरीक वनके तुल्य शोभित होने लगी, परिपक्क ताल फलोंके धरातलमे निपतित होनेमे जैसा शब्द होता है, तद्रूप रथियोंके मस्तक गिर्नेसे शब्द होने लगा, क्रोधान्ध वीरगण धनञ्जयके पराजयमे एकाग्र होके स्वीय मस्तक छेदनभी न जान सके, अश्वोके मस्तक, गजोंके शुण्ड, वीरोंके बाहु औ मस्तकोंसे रणस्थल पूर्ण हो गया।

हे महाराज! आपके पक्षीय सब सब जगत् अर्ज्जुनमय देखने लगे, कालप्रभावसे सबही अर्ज्जुन ज्ञान करके परस्पर आघात कर्ने लगे, कोई कोई अपने शरीरमे आघात कर्ने लगे, खड्ग परशु प्रभृति विविध शस्त्र इतस्ततः विलुण्ठित होने लगे, अर्ज्जुनका हस्त लाघव किसोको लक्षित न होने लगा, सूर्य्य जैसे अन्धकारको नष्ट कर्ते हैं वैसही अर्ज्जुन कौरवसैन्य संहार कर्ने लगे, तब कौरवसैन्य पलायन कर्ने लगे, इस प्रकार आपके पक्षीय उत्साहशून्य औ विमनायमान होने लगे।

इति ८८ अध्याय।

धृ०। इस प्रकार धनञ्जन संहार कर्ने लगे तब कौन वीर उनके संमुखीन हुए? वासवही पलायित होय द्रोणके शरणागत हुए?

सं०। धनञ्जय इस प्रकार संहार कर्ने लगे तब दुःशासन क्रोधसे धनञ्जयके संमुख हुए, असंख्य सैन्य लेके सव्यसाचीको परिष्टत कर्ने लगे, अनन्तर क्षणमाल अति भीषण युद्ध हो गया, दुःशासन गजसैन्यसानो पृथ्वीको संग्राम कर्ता हुआ धनञ्जयके ऊपर धावमान हुआ, धनञ्जय उस गजसैन्यको

आवते देखके शरजाल वर्षण कर्ने लगे, और मकर जैसा तरङ्गसंकुल समुद्रमे प्रवेश कर्ता है, तद्रूप उस गजसैन्यमे प्रविष्ट हुए, कुञ्जरगण गाण्डीव निक्षिप्त शत शत तीक्ष्ण बाणोंके प्रहारसे विच्छताङ्ग होके चीत्कार कर्ते हुए, भूतलमे निपतित होने लगे, धनञ्जय तीक्ष्णबाणोंसे गजारोहीगणके मस्तक छेदन कर्ने लगे, एक एक शरसे तिन तिन मनुष्यका देह विदीर्ण होने लगा, रथिगणोंके मौर्वी, ध्वज, धनु, युग औ ईषा खण्ड खण्ड होने लगे, सर्वत्र कबन्ध, कवच, शस्त्र, मस्तक, वस्त्र अलङ्कार निपतित दृष्ट होने लगे।

हे राजन्! इस प्रकार दुःशासनका सैन्य ध्वस्त होके पलायन कर्ने लगा, दुःशासनभी धनञ्जयके शरोंसे जर्जरित होके भयसे पलायन कर्के द्रोणका आश्रय कर्नेके लिये व्यूहमे प्रविष्ट हो गए।

इति ९० अध्याय।

अर्जुन इस प्रकार दुःशासनका पराभव कर्के द्रोणाचार्य्यके अभिमुख धावमान हुए, व्यूहके मुखसे आचार्य्यको अवस्थित देखके कृष्णके अनुमतिसे कृताञ्जलिपुट होय बोले, ब्रह्मन्! आप हमारा कल्याण कीजिये, हम आपके प्रसादसे इस दुर्भेद्य चमूमे प्रवेश कर्नेकी इच्छा कर्ते हैं, सत्य कहते हैं, हम आपको पिताके तुल्य कृष्णके तुल्य औ ज्येष्ठभ्राता धर्मराजके तुल्य जानते हैं, हे तात! आप अश्वत्थामाकी जिस प्रकार रक्षा कर्ते हैं, हमारीभी वैसही रक्षा कर्नी आपको चाहिये, हम आपके अनुग्रहसे रणस्थलमे सिंधुराजका विनाश कर्नेकी इच्छा कर्ते हैं, इस लिये आप हमारी प्रतिज्ञा रक्षण कीजिये।

महावीर द्रोण यह सुनके हास्य कर्ते हुए बोले, हे अर्जुन!

तुम हमारा जय किये विना कदापि जयद्रथका पराजय कर सकोगे नही, यह कहके हंसते हंसते तीक्ष्ण शरजालसे धनञ्जय औ उनका रथ, अश्व, ध्वज औ सारथिको समाच्छन्न करने लगे, तब महावीर धनञ्जय क्षत्रिय धर्मानुसार उनके शर निवारण करते ऊये तीक्ष्ण शरक्षेप करने लगे, द्रोणाचार्य्यनेभी पार्थके वाण छेदन करके उनको औ कृष्णको विद्ध करने लगे, धनञ्जय आचार्य्यका धनुछेद न करते है इतनेमे धनञ्जयको ज्या छेदन कर दिया, धनञ्जय शीघ्र कार्मुकमे अपर ज्या संयोजन करके स्वीय लघुहस्तता दिखावनेके लिये हजार वाण निक्षेप किये, तदुत्तर असंख्य वाणोंसे उनके सैन्यका विनाश करने लगे, असंख्य मनुष्य, मातङ्ग औ तुरङ्ग धनञ्जयके शरोसे निपतित होने लगे, अनन्तर द्रोणाचार्य्यने नाराचसे धनञ्जयके वक्षःस्थलको विद्ध किया, धनञ्जय आचार्य्यके नाराचसे विद्ध होय व्याकुल हो गए, तदुत्तर धैर्य्यावलम्बन करके उनको विद्ध किया, तब द्रोणने पांच वाणोंसे वासुदेवको औ त्रिसप्तति वाणोंसे धनञ्जयको विद्ध किया औ तीन शरसे धनञ्जयका ध्वज विपाटित कर दिया, निमेषमात्रसे उनको अदृश्य कर दिया।

तब महामति वासुदेव द्रोण औ धनञ्जयका भयङ्कर युद्ध देखके प्रकृत कार्य्य साधनकी चिन्ता करते ऊए धनञ्जयसे बोले, हे महावाहो! अपनेको कालक्षेप करनी कर्त्तव्य नही है, द्रोणके साथ अनेककाल युद्ध ऊआ, इस लिये चलो अन्यत्र गमन करे, धनञ्जय स्वीकार करके द्रोणको प्रदक्षिण करके वाण निक्षेप करते ऊए अन्यत्र गमन करने लगे, तब द्रोणाचार्य्य बोले, हे धनञ्जय! कहां चले शत्रुका पराजय किये विना निवृत्त मत हो, धनञ्जय बोले, आचार्य्य! आप हमारे गुरु शत्रु नही हैं, हम आपके पुत्र समान शिष्य हैं, आपका

युद्धमे पराभव करे ऐसा कोई नही, जयद्रथ वधोत्सुक धनञ्जय यह कहके कौरवो सेना पर धावमान हुए, युधामन्यु औ उत्तमौजा उनके चक्र रक्षक होके उनके साथ गमन कर्ने लगे, तब कौरव पक्षीय जय, कृतवर्मा, सात्वत, काम्बोज औ श्रुतायु उनको निवारण कर्ने लगे, इनके अनुगामी दश सहस्र रथी औ अभीषाधह, शूरसेन, शिवि, वशाति, मावेल्लक, ललित्थ, कैकेय, मद्रक, नारायण, गोपाल यहभी प्राणपणसे निवारण कर्ने लगे, इस प्रकार लोमहर्षण तुमुल संग्राम होने लगा।

इति ८१ अध्याय।

हे महाराज! इस प्रवह लोग निवारण कर्ने लगे औ द्रोणाचार्य्य उनका अनुसरण कर्ने लगे तब व्याधि जैसा देहको सन्तापित करे तद्रूप धनञ्जय कौरव सैन्यको तापित कर्ने लगे, अर्जुनके शरजालसे गाढ़ विद्ध रथि, कुञ्जर छिन्न होके धरातलमे निपतित होने लगे, सैन्य सब पलायन कर्ने लगा, तब द्रोणाचार्य्यने उनके ऊपर विंशति वाण निक्षेप किया, धनञ्जय उनके वाणोको निवारण कर्ते हुए धावमान हुए, और सन्नतपर्व भल्लास्त्रसे आचार्य्यका भल्लास्त्र छेदन करके ब्रह्मास्त्र प्रयोग किया।

हे महाराज! उस समय द्रोणाचार्य्य ऐसा आश्चर्य्य देखा कि युवा अर्जुन यथासाध्य करकेभी विद्ध न कर सके, मेघके तुल्य धनञ्जयके ऊपर शर वर्षण कर्ने लगे, धनञ्जयने ब्रह्मास्त्रसे आचार्य्यके सब वाण छेदन कर दिये, द्रोणने पञ्चविंशति वाणसे धनञ्जयको विद्ध करके वासुदेव वक्षस्थल औ भुजद्वयमे सप्तति वाण निक्षेप किये, धनञ्जय यह देखके हंसते हुए द्रोणाचार्य्यको निवारण कर्ने लगे।

अनन्तर वासुदेव औ धनञ्जय अग्नि सदृश द्रोणकी बाणोंसे व्यथित होय उनको छोड़के भोजराजके सैन्याभिमुख धावमान हुए, भोज सैन्यमे प्रविष्ट होय शरजालसे पीड़ित कर्ने लगे, तब कृतवर्मा दश शरसे धनञ्जयको विद्ध कर्ने लगे, अर्जुन-नेभी तीन शत बाणसे कृतवर्माको विद्ध किया, कृतवर्मा कृष्ण औ अर्जुनके ऊपर शरक्षेप कर्के हास्य कर्ने लगे, अर्जुन यह देखके क्रुद्ध होय उनका धनु छेदन कर दिया, कृतवर्माने अन्य धनु लेके तीक्ष्ण शर पार्थके वक्षस्थलमे निक्षेप किया, केशव पार्थको अनेक काल कृतवर्मासे युद्ध कर्ते देखके बोले, पार्थ ! अब कालक्षेप मत करो शीघ्र इनका संहार करो, धनञ्जय शीघ्र निशित शर निक्षेप पूर्वक कृतवर्माको मूर्छित कर्के काम्बोज सैन्यमे प्रविष्ट हुए, कृतवर्मा उनको सैन्यमे प्रविष्ट होते देखके शरधनु विस्फारण पूर्वक उनके चक्र रक्षक युधामन्यु औ उत्तमौजाको निवारण कर्ने लगे, तब उन्होने कृतवर्माको दश दश बाणसे विद्ध कर्के तीन तीन बाणोंसे उनका रथ, ध्वज औ कार्मुकका छेदन कर दिया, कृतवर्मा उनके निवारणकी अनेक चेष्टा कर्केभी कृतकार्य्य न हुए, तब पार्थ सैन्यमे प्रविष्ट होय संहार कर्ने लगे, तब महावीर श्रुतायुध पार्थको संहार कर्ते देखके पार्थके ऊपर तीन शर औ जनार्दनके ऊपर सप्तति शर निक्षेप पूर्वक उनका ध्वज छेदन कर दिया, पार्थने यह देखके क्रुद्ध होय नवति शर निक्षेप किया, श्रुतायुध अत्यन्त क्रुद्ध होके सप्तति नाराच निक्षेप कर्ने लगे, तब पार्थ क्रोधसे श्रुतायुधका धनु औ तुणीर छेदन कर्के गर्जन कर्ने लगे, तब श्रुतायुधने अन्य धनु लेके पार्थके बाहु औ वक्षस्थल विद्ध किया, तब धनञ्जय सहस्र बाणसे उनका सारथि औ अश्वोंका नाश कर्के हास्य कर्ने लगे, तब श्रुता-युध गदा हस्तमे लेके पार्थके ऊपर धावमान हुए ।

हे महाराज! श्रुतायुध वरुणके पुत्र, शीततोया महानदी पर्णाशा उनकी जननी, महानदी पर्णाशाने हमारा पुत्र अवध्य होय ऐसा वर वरुणसे मांगा था, तब वरुणने प्रसन्न होके कहा हे नदी! हम यह दिव्य अस्त्र देते हैं, इसके प्रभावसे तुम्हारा पुत्र अवध्य होगा, हे भद्रे! मनुष्य कदापि अमर नहीं होता है, जो होय हम कहते हैं, तुम्हारा पुत्र इस अस्त्रके प्रभावसे रणमें शत्रुओंसे अजेय होंगे, यह कहके श्रुतायुधको गदा दिया, और कहा, वत्स! जो व्यक्ति युद्धमें प्रवृत्त न होय उसके ऊपर इस गदाका प्रहार मत करना, यदि प्रहार करोगे तो वह प्रतीपगामिनी होके तुम्हारा नाश करेगी।

हे महाराज! श्रुतायुध वही गदाके प्रभावसे त्रैलोक्यमें दुर्जय हो गए थे, वह वही गदा लेके पार्थके रथाभिमुख धावमान हुए, परंतु दैवके दुर्विपाकसे वरुणके वाक्यको रक्षा न करके जनार्दनके ऊपर प्रहार किया, वासुदेवने अनायास पीनस्कन्ध पर उसका आघात सह लिया, वरुणके वाक्यसे वह गदा उलट करके श्रुतायुधके ऊपर निपतित होके उनको शमन सदनमें प्रेरण कर दिया, श्रुतायुधको निहत देखके सैन्यमें हाहाकार पड़ गया, सकल सैन्य पलायन करने लगे, तब काम्बोजराजके पुत्र सुदक्षिण पार्थके ऊपर धावमान हुए, पार्थ उनको आगत देखके अतिभेदी सात बाणसे विद्ध करने लगे, तब सुदक्षिण क्रुद्ध होके दश बाणसे पार्थको और तीन शरसे वासुदेवको विद्ध करने लगे, पार्थने उनका ध्वज और धनु छेदन करके भल्लास्त्रसे विद्ध किया, तब सुदक्षिण भल्लास्त्रसे विद्ध होके ओघसे पार्थके ऊपर लोहमय शक्ति निक्षेप किया, पार्थ उस शक्तिके आघातसे मूर्छित हो गए, क्षणकालसे चैतन्य होके दीर्घश्वास त्याग पूर्वक चतुर्दश नाराचसे उनको

औ उनके धनु, ध्वज औ सारथिको बिद्ध किया, तदनन्तर असंख्य बाणोंसे उनका रथ चूर्ण करके उनका हृदय विदीर्ण कर दिया, सुदक्षिण छिन्नवर्म्म विदीर्णगात्र होके भूतलगामी हुए, श्रुतायुध औ सुदक्षिणके निहत होनेसे सैन्य सब धावमान हुआ।

इति ९२ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर अभीषाह, शूरसेन, शिवि, वशातिदेशीय वीरगण पार्थके ऊपर धावमान हुए, तब धनञ्जय एककाल उनको पष्टिशत सैन्य निपीड़ित करने लगे, जैसे क्षुद्र मृग व्याघ्रके भयसे पलायन करते हैं, वैसे वह सब पलायन करने लगे, पुनः प्रत्यागत होके चतुर्दिकसे पार्थको अवरोध करने लगे, तब पार्थ शीघ्र उन लोगोंका बाहु, मस्तक छेदन करने लगे, तब श्रुतायु औ अच्युतायु धनञ्जयको साथ संग्राममें प्रवृत्त हुए, वह दोनो धनञ्जयके दोनो पार्श्वसे शरक्षेप करने लगे, उन्होंने पार्थको शरोंसे आच्छन्न कर दिया, उसी समय श्रुतायुने पार्थके ऊपर तोमरास्त्र निक्षेप किया, पार्थ दारुण तोमरास्त्रसे अति बिद्ध होके केशवको सुग्ध करते हुए मोह प्राप्त हो गए, इस अवसरमें, अच्युतायु तीक्ष्ण शूलसे पार्थको प्रहार करने लगे, महावीर पार्थ उससे अत्यन्त कष्टित होके ध्वज दण्डका अवलम्बन करके रह गए, कौरवसैन्य धनञ्जयको निहत बोध करके सिंहनाद करने लगे, महात्मा कृष्ण पार्थको विचेतन देखके शोकसन्तप्त होय मधुर वाक्यसे आश्वासित करने लगे, उस समय श्रुतायु औ अच्युतायु बाणवृष्टिसे धनञ्जय, वासुदेव, रथचक्र, युगन्धर, अश्व औ ध्वजको समाच्छन्न कर दिया, वह देखके सबको आश्चर्य्य हो गया।

हे राजन्! तब धनञ्जय पुनर्जीवितकी तुल्य क्रम क्रमसे चेतन होके वासुदेव औ रथको समाच्छन्न औ शत्रुद्वयको अचलकी तुल्य सम्मुख देखके इन्द्रास्त्रका प्रयोग किया, उस इन्द्रास्त्रसे सहस्र सहस्र नतपर्व वाण उत्पन्न होके श्रुतायु औ अच्युतायुके ऊपर निपतित होनेसे उनके बाहु औ मस्तक छिन्न हो गए, इस प्रकार दोनो वीर पार्थको शरोंसे निहत हो गए, धनञ्जय युद्ध कर्ते इतस्ततः सञ्चरण कर्ने लगे, अनन्तर श्रुतायु औ अच्युतायुके पुत्र नियुतायु औ दीर्घायु पिताका निधन देखके क्रोधसे धनञ्जयके ऊपर धावमान हुए, पार्थने मुहूर्तमात्रमे सन्नतपर्व वाणोंसे उनको यमालयमे भेज दिया, अनन्तर कौरव सैन्यको विद्रावित कर्ने लगे, तब कोई उनको वारित न कर सके, तब अङ्गदेशीय असंख्य गजारोही, पूर्व, दक्षिण औ कलिङ्ग प्रभृति देशीय भूपालगण दुर्य्योधनके आज्ञासे धनञ्जयके ऊपर धावमान हुए, धनञ्जयने देखके क्रोधसे सत्वर उन लोगोंके मस्तक औ बाहु छेदन कर दिया, समरभूमि उनके मस्तक औ बाहुओंसे समाच्छन्न हो गई, गजपृष्ठगत म्लेच्छगण भूतलमे निपतित होने लगे, तब विकटवेश, विकटचक्षु आसुरीमायाभिज्ञ यवन, पारद, शक, बाल्हीक प्रभृति युद्ध विशारद वीर सब धनञ्जयके ऊपर शरवर्षण कर्ने लगे, तब धनञ्जय मेघ समान शरवर्षण पूर्वक खण्डित, अर्द्धखण्डित, अपविद्ध औ जटिल एकत्र समवेत म्लेच्छोका संहार कर्ने लगे, हे राजन्! इस प्रकार महावीर धनञ्जय संहार कर्ने लगे, तब अम्बष्ठाधिपति श्रुतायु पार्थको निवारण कर्ने लगे, पार्थ तीक्ष्ण शरोंसे उनका ध्वज औ अश्वोंका संहार कर्के भ्रमण कर्ने लगे, तब अम्बष्ठाधिपति गदा ग्रहण कर्के पार्थके ऊपर धावमान वारंवार केशव औ अर्जुनको गदा प्रहार कर्ने लगे, तब

पार्थने क्षुरप्र बाणसे उनकी गदा चूर्ण कर दिया तब वह पुन: गदा लेके प्रहार करने लगे, तब पार्थने क्रोधसे तीक्ष्ण क्षुरप्रसे उनका गदायुक्त भुज छेदन करके अन्य बाणसे उनका मस्तक छेदन कर दिया, तब पार्थ असंख्य रथ, गज, अश्व परिवेष्टित होके घनघटाच्छन्न दिवाकरके तुल्य शोभित होने लगे।

इति ८२ अध्याय।

हे महाराज! इस प्रकार पार्थ दुर्भेद्य द्रोणसैन्य औ भोज-सैन्य भेद करके सैन्य सकल छिन्नभिन्न करनेसे दुर्य्योधन सत्वर रथ लेके द्रोणाचार्य्यके पास गए, औ बोले, ब्रह्मन्! पार्थ यह समस्त सैन्य प्रथित करके गमन करते हैं, ऐसे भयङ्कर संहार कालमें पार्थके बधके लिये कार्य्यावधारण करनी चहिये, आपही हम लोगोंमें प्रधान हैं, जिससे पार्थ जयद्रथका संहार न कर सके ऐसा उपाय कहिये, अग्नि जैसा वनको दग्ध करे, वैसा पार्थ हमारे सैन्यका संहार करते हैं, पहिले विश्वास था कि पार्थ जयद्रथका बध न कर सकेंगे, परंतु इस काल सबहीको भय उपस्थित हुआ है, हे महात्मन्! आपके समक्ष पार्थ सैन्य भेद करके गए, इससे सबको ज्ञात होता है कि आप पाण्डवगणके हितमें निरत हो, हम आपसे सर्वदा सद्व्यवहार रखते हैं, सोभी आप जानते हो, आज हमारा अभिलाष सफल नहीं करते हो, हमसे जीविका निर्वाह करके हमारा अपकार करनी उचित नहीं है, आपने स्वीकार किया इससे हमने जयद्रथको स्वगृहमें जाने नहीं दिया, इस लिये हे महात्मन्! जिससे जयद्रथका बध न होय वैसा कीजिये।

द्रोणाचार्य बोले, महाराज! तुम हमारे अश्वत्थामाके तुल्य हो, इस समय हम जो कहते हैं वह सुनके वैसा आचरण

करो, एक तो कृष्ण सारथि, उत्तमोत्तम अश्व औ महावीर अर्जुन अल्पमात्र पथ प्राप्त होनेसे ऐसा शीघ्र गमन कर्ते हैं, उनका निक्षिप्त शर उनके रथसे एक क्रोश पीछे रह जाता हैं, और हम अतिशय वृद्ध इससे शीघ्र गमन कर सकते नही, और देखो पाण्डवोंका सैन्य सम्मुख उपस्थित हुआ है, युधिष्ठिरको ग्रहण कर्नेकी प्रतिज्ञा हैं, वह इस समय अर्जुनहीन हैं, हम व्यूहका मुख पर स्थित है, इहांसे अन्यत्र जाय सकते नही, तुम महाबली पराक्रमी युद्धविजयी हो, इस लिये तुम अर्जुन जहां है वहीं तुम जाय निर्भय होय सहाय लोगोंके सहित एकाकी पार्थसे युद्ध करो।

दुर्योधन बोले, हे आचार्य! आप अस्त्रधारियोंके अग्रगण्य, पार्थ आपकोभी अतिक्रम कर गए, इस लिये हम किस प्रकार उनको निवारण कर सकेंगे, हम पार्थका पराभव किसी प्रकार कर सकते नही, जिन्होंने अस्त्रबलसे भोजराज, हार्द्दिक्य, औ आपका पराजय, सुदक्षिण, श्रुतायुध, श्रुतायु, अच्युतायु, अम्बष्ठपति औ असंख्य म्लेच्छगणका विनाश किया, उन दुर्धर्ष पार्थसे कैसे युद्ध करेंगे। हे आचार्य! किसी प्रकार हमारी यथो रक्षा कीजिये।

द्रोणाचार्य, बोले हे महाराज! धनंजय यथार्थ दुर्धर्ष है, परंतु तुम जिससे उनका बलवीर्य्य सहसको वह उपाय कहते हैं, हमारा यह अद्भुत कर्म सब कोई देखें, हम यह कवच तुम्हारे शरीरमें बन्धन कर देते हैं, इसके प्रभावसे मनुष्यका अस्त्र तुम्हारे शरीरमें वेध करेगा नही, यदि देव, असुर, गन्धर्व यक्ष, राक्षस प्रभृति कोई तुम्हारे साथ युद्ध करेंगे तोभी तुमको कुछभी भय नही है, इस लिये तुम कवच धारण कर्के युद्धार्थ गमन करो, ब्रह्मविदग्रगण्य द्रोणाचार्य्य यह कहके स्वीय विद्याबलसे वीरोंको विस्मयोत्पादन कर्ते हुए उदक

स्पर्श पूर्वक मन्त्रजप पूर्वक दुर्य्योधनके शरीरमे दिव्य कवच बद्ध कर्के बोले, हे राजन्! तुम्हारा मङ्गल होय, इन्द्रादि देवता, वसिष्ठादि ऋषि, लोकपाल, दिग्गज, ग्रहगण, ययाति प्रभृति राजर्षि सब तुम्हारा मङ्गल करें हे राजन्! इन्द्रादि देवता वृत्रासुरसे पराजित होके ब्रह्माके शरण गए, तब ब्रह्मा बोले हे देवगण! विश्वकर्म्माने अति दुःसह तप कर्के वृत्रासुरको उत्पन्न किया, वह वृत्रासुर महादेवके प्रसादसे तुम लोगोंका नाश कर्नेमे समर्थ हुआ है, तुम लोग मन्दरपर्वत पर जायके महादेवको आराधन करो उनके प्रसादसे वृत्रा-सुरका पराभव कर सकोगे, देवगण ब्रह्माके परामर्षसे मन्दर-पर्वत पर जायके महादेवको देखके प्रणत हुए, महादेव देवगणको देखके स्वागत प्रश्न पूर्वक बोले, हे देवगण! क्या तुम लोगोंका कार्य्य है? देवगण बोले, हे महेश्वर! दुरात्मा वृत्रासुरने हम लोगोंका तेज क्षय किया है, इस लिये उसका नाश करना चाहिये, महादेव बोले, देवगणका साहाय्य कर्नी हमको अवश्य है, इस लिये तुम लोग हमारे शरीरका यह-कवच लेके धारण करो औ यह मन्त्र जप करो, यह कहके कवच औ मन्त्र प्रदान किया, तब देवराजने वह कवच धारण कर्के वृत्रासुरका नाश किया, वही कवच इन्द्रने अङ्गिराको दिया, अङ्गिराने वृहस्पतिको वृहस्पतिने अग्निवेश्यको अग्नि-वेश्यने हमको दिया है, वही कवच तुमको बद्ध कर दिया, दुर्य्योधन इस प्रकार आश्चार्य्यसे कवच लाभ कर्के त्रिगर्तदेशीय सहस्र रथ, सहस्र मातङ्ग, नियुत अश्व औ अन्यान्य महा-रथोंको साथ लेके नानाविध वादित्रवादन पूर्वक अर्जुनके ऊपर धावमान हुए, तब कौरवसैन्यमे महान् कोलाहल होने लगा।

इति ९४ अध्याय।

हे महाराज ! इधर पाण्डवगण सोमकोंके साथ द्रोणाचार्य्यको आक्रमण करने लगे, उनको घोर संग्राम उपस्थित हुआ, उस समय भगवान् भास्कर गगनमण्डलके मध्यवर्ती हुए थे, उस समय व्यूहके मुख पर पाण्डव औ कौरवोंका ऐसा घोर युद्ध हुआ जैसा पहिले कभीं नहीं हुआ, असंख्य सैन्य सहित पाण्डव धृष्टद्युम्नको अग्रसर करके शरजालसे द्रोणसैन्यको आच्छन्न करने लगे, कौरवगणभी द्रोणाचार्य्यको पुरस्कृत करके धृष्टद्युम्न प्रभृति पाण्डवोंको विद्ध करने लगे, द्रोणाचार्य्य शरवर्षण करके पाण्डवसैन्यको निवारण करने लगे, औ सैन्यमें प्रवेश करने लगे, पाण्डवगण धृष्टद्युम्न द्रोणसैन्यको भेद करनेके लिये बारंबार द्रोणके ऊपर आघात करने लगे, द्रोणाचार्य्य जिस प्रकार धृष्टद्युम्नके ऊपर शरक्षेप करने लगे, उसी प्रकार धृष्टद्युम्नभी द्रोणके ऊपर शरक्षेप करने लगे, महावीर द्रोण बाणवर्षण करते हुए जिस जिस मार्ग रथ चालन करें उसी उसी मार्गसे धृष्टद्युम्न उनको निवारण करने लगे, इस प्रकार द्रोणाचार्य्यके रणस्थलमें असाधारण कार्य्य करनेभी उनका सैन्य तीन भागसे विभक्त होगया, कितना सैन्य भोजराजके निकट, कुछ सैन्य जलसंधके शरण गया, कुछ सैन्य द्रोणके निकट रहके निहत होने लगा, रथिश्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य जितने बार सैन्य संयोजन करें, उतनेही बार धृष्टद्युम्न सैन्यको छिन्न भिन्न कर देने लगे, माना धृष्टद्युम्न सैन्यको ग्रास करते हैं, इस प्रकार द्रोणसैन्य संहार होने लगा तब द्रोणाचार्य्य अतिशय क्रुद्ध होय पाण्डवको समाच्छन्न करने लगे, और तीक्ष्णबाणोंसे पाण्डवसैन्यको निपातित करने लगे, पाण्डवसैन्यगण द्रोण शरसे ताडित होके इतस्ततः भ्रमण करने लगे, इधरसे धृष्टद्युम्नभी कौरवसैन्यको विनाशित करने लगे, इस प्रकार द्रोण औ धृष्टद्युम्न बाणोंसे विद्ध होके जीविताशा त्याग

पूर्व्वका साध्यानुसार युद्ध कर्ने लगे, उस समय आपके तीनो पुत्र विविंशति, चित्रसेन औ विकर्ण भीमसेनको अवरुद्ध कर्ने लगे, विन्द, अनुविन्द औ क्षेमधूर्ति यह तीन जन तीनोंके अनुगत हुए, बाह्लीक द्रौपदी तनयोंका अवरोध कर्ने लगे, शल्य सहस्र सेना परिवृत होके काशिराजका अवरोध कर्ने लगे, मद्रराज युधिष्ठिरका, दुःशासन सात्यकीका, शकुनि नकुलका अवरोध कर्ने लगे, इस प्रकार परस्पर आक्रमण पूर्व्वक घोर संग्राम कर्ने लगे ।

इति ८५ अध्याय ।

हे महाराज ! पाण्डवगण व्यूह भेद कर्नेकी इच्छासे घोर युद्धमे प्रवृत्त हुए, द्रोणाचार्य्यभी यशोलाभकी इच्छासे संग्राम कर्ने लगे, उस काल विन्दानुविन्दोने विराटको विद्ध किया विराटनेभी उनको आहत किया, शिखण्डी बाह्लीकको विद्ध कर्ने लगे, दुःशासनने नतपर्व्व बाणसे सात्यकीको किञ्चित् मूर्च्छित किया, सात्यकीभी शीघ्र सज्ञालाभ कर्के तीक्ष्ण बाणसे दुःशासनको पीड़ित कर्ने लगे, महावीर अलंवुष कुन्ती भोजके शरसे निपीड़ित होय उनको विविध बाणोंसे विद्ध कर्ने लगे, नकुल औ सहदेव शकुनिको विद्ध कर्ने लगे, इस प्रकार समरक्षेत्रमे जनसंक्षय उपस्थित होने लगा, पाण्डवोंका क्रोधानल, आपकी दुर्नीतिसे उत्पन्न, कर्णसे वर्द्धित औ आपके पुत्रगणसे संरक्षित होके इस समय ससागरा पृथ्वीको दग्ध कर रहा है, महावीर शकुनि नकुल औ सहदेवके शरोंसे रणविमुख औ पराक्रम कर्नेमे असमर्थ होय कर्त्तव्यतामूढ़ हो गए, माद्रीपुत्रद्वय शकुनिको रणविमुख देखके औरभी तीक्ष्ण शरवर्षण कर्ने लगे, शकुनि उनके शर प्रहारसे अतिशय पीड़ित होके

सत्वर द्रोणसैन्यमें प्रविष्ट हो गए, महावीर घटोत्कच अलायुध राक्षसके अभिमुख धावमान हुए, रामरावणके तुल्य उन दोनो राक्षसोंका युद्ध होने लगा, विविंशति, चित्रसेन औ विकर्ण भीमसेनसे युद्ध करने लगे।

इति ९६ अध्याय।

हे महाराज! इस प्रकार तुमुल युद्ध उपस्थित होने पर पाण्डवगण उस त्रिधाभूत कौरवसैन्य पर धावमान हुए, भीमसेन जलसन्धको, युधिष्ठिर कृतवर्माको औ धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्यको आक्रमण करने लगे, इन सबोंका परस्पर घोर युद्ध होने लगा, धृष्टद्युम्न औ द्रोणाचार्य्यके युद्धसे असंख्य मस्तक भूमिमें निपतित होने लगे, वस्त्र, अलङ्कार, कवच, ध्वज, आयुध औ विदीर्ण देहोंसे रणस्थल विकीर्ण हो गया, राजा युधिष्ठिर मद्रराजको बिद्ध करके पुन: उनके ऊपर शरवर्षण करने लगे, जीविताशा परित्याग पूर्व्वक परस्पर ऐसा संग्राम उपस्थित हुआ जिसमें अनेक बंध उत्थित हुये, रथिसे रथी, अश्वारोहीसे अश्वारोही गजारोहीसे गजारोही पदातिसे पदाति संलग्न हो गए, धृष्टद्युम्न औ द्रोणाचार्य्यके रथ परस्पर संमिलित हो गए, उस समय धृष्टद्युम्न खड्गहस्त होके द्रोण रथ पर जाय कभी अश्वके ऊपर, कभी उनके पश्चाद्भागमें, कभी युगमें अवस्थान करने लगे, इस प्रकार धृष्टद्युम्न द्रोणके रथ पर विचरण करने लगे, तब द्रोण किसी प्रकार उनका छिद्र देखने सके नहीं जिसमें प्रहार कर सके नहीं, श्येनपक्षीके तुल्य द्रोणका नाश करनेके लिये धृष्टद्युम्न उनके रथ पर विचरण करने लगे, कियत्क्षण पर द्रोणने शतबाणसे धृष्टद्युम्नका चर्म, दश बाणसे खड्ग चौसठ बाणसे अश्व औ दो भल्लसे उनका ध्वज, छत्र, पृष्ठ रक्षक औ सारथिको निहत

करके उनके ऊपर जीवितान्तक बाण निक्षेप किया, सात्य-
कीने यह देखके सत्वर चतुर्दश बाण निक्षेप पूर्वक वह द्रोण
निक्षिप्त शर छेदन करके धृष्टद्युम्नका रक्षण किया, द्रोणा-
चार्य्य सात्यकीको धृष्टद्युम्नकी रक्षा करते देखके उनके
ऊपर षड्‌विंशति शरक्षेप करके संजयगणका संहार करने लगे,
सात्यकीने वह देखके क्रुद्ध होके द्रोणके वक्षस्थलमें षड्‌विंशति
शर निक्षेप किया, पांचालगणोंने सात्यकीको द्रोणाभिमुख
देखके सत्वर धृष्टद्युम्नको रणसे अपसारित किया।

इति ९७ अध्याय।

धृ०। सात्यकी औ द्रोणका कैसा युद्ध हुआ?

सं०। तब द्रोण क्रोधसे शरनिक्षेप करते हुए, सात्यकीके
ऊपर धावमान हुए, सात्यकीभी उनके सम्मुख धावमान
हुए, अनन्तर उन दोनोंका घोर संग्राम उपस्थित हुआ,
दोनो वीर वारिधाराके तुल्य शरवर्षण करने लगे, उनके शर-
वृष्टिसे आकाश समाच्छन्न हो गया, सूर्य्यकी प्रभा औ वायुकी
गति बद्ध हो गई, सर्व्वत्र अन्धकार हो गया, सकल वीर उन
दोनोंका युद्ध देखने लगे, लोगोंको उनके ज्यानिर्घोषही श्रवण-
गोचर होने लगा, अनन्तर दोनोंने परस्परके छत्र औ ध्वज
छेदन कर दिये तब सात्यकीने द्रोणके शर समुदाय औ धनु
छेदन कर दिया, द्रोणनेभी शीघ्र अन्य शरासन लेके सात्य-
कीका धनु छेदन कर दिया, इस प्रकार सोलह बार सात्य-
कीने द्रोणके धनु छेदन कर दिया तब द्रोणाचार्य्य मनमें
चिन्ता औ सात्यकी कि प्रशंसा करने लगे, अनन्तर द्रोणाचार्य्य
अन्य धनु लेके अस्त्र सन्धान करने लगे, सात्यकीभी उनका
वह अस्त्र छेदन करके उनको तीक्ष्ण बाणसे बिद्ध करने लगे,
वह देखके सबको चमत्कार हो गया, द्रोणाचार्य्य जो

जो अस्त्र निक्षेप कर्ने लगे, उन्होंर अस्त्र सात्यकीभी निक्षेप कर्ने लगे, अनन्तर द्रोणाचार्य्य क्रुद्ध होके सात्यकीके नाशकी इच्छासे आग्नेयास्त्रक्षेप कर्ने लगे, तब सात्यकी वारुणास्त्र प्रयोग करके गर्जन कर्ने लगे, उन दोनोंके दिव्यास्त्र ग्रहण कर्नेसे सेनामें हाहाकार होने लगा, उस समय पक्षिभी आकाशमें उड़ न सके, दोनोंके दिव्यास्त्र दोनोंके प्रभावसे व्यर्थ हो गए, भगवान् भास्करभी अस्तगमनोन्मुख हुए तब युधिष्ठिरादि उनको रक्षा कर्ने लगे, अनन्तर धृष्टद्युम्न प्रभृति द्रोणके ऊपर धावमान हुए, सहस्र राजपुत्रोंको साथ लेके दुःशासन द्रोणको रक्षा कर्ने लगे, तब एक वार पुनः सभोंका तुमुल संग्राम घोर होने लगा।

इति ९८ अध्याय।

हे महाराज! जब दिनमणि अस्ताचल शिखरोन्मुखी न हुए तब इधर कृष्ण औ अर्जुन जयद्रथके अभिमुख धावमान हुए, कृष्ण जिधर जिधर रथचालन कर्ने लगे, अर्जुन उस उस स्थलकी सैन्यकी शरक्षेपसे अपसारित कर्ने लगे, इस प्रकार उनका रथ चलित हुआ कि अर्जुन निक्षिप्त एकक्रोश गामी शर शत्रुको विद्ध कर्ता है इतनेमें एक क्रोश रथ आगे होने लगा, यह देख सबही विस्मयापन्न हो गए, अनन्तर अर्जुनके अश्व शत्रुओंके अस्त्राघातसे क्षत विक्षत औ क्षुत्पिपासासे कातर हो गए थे, इस लिये रणभूमिस्थ समुदायके बीचमें उपस्थित होके अति कष्टसे रथाकर्षण कर्ते हुए मण्डलाकार गमन औ निहत मनुष्य, गज, अश्व औ रथोंके ऊपरसे धीरे धीरे गमन कर्ने लगे, उस समय विन्दानुविन्द अर्जुनके वाहनोंका श्रान्त देखके सेना सहित उनके ऊपर शरवर्षण कर्ने लगे, तब अर्जुन कोपान्वित होके मर्मभेदी वाण उनके ऊपर

प्रक्षेप कर्ने लगे, तब वहभी क्रुद्ध होके कृष्ण औ अर्जुनको शरों से समाच्छन्न कर्ने लगे, तब अर्जुनने क्रुद्ध होके दो भल्लास्त्रसे दोनोके धनु छेदन पूर्वक ध्वज, सारथि, पृष्ठरक्षकका संहार कर्ते हुए क्षुरप्रसे विन्दका मस्तक छेदन कर दिया, तब अनुविन्दने भ्राता विन्दको निहत देखके क्रुद्ध होय हताश्व रथ त्याग कर्के गदा हस्तमे लेके धावमान होय कृष्णके ललाटमे गदाघात किया, महात्मा वासुदेव उस्से किंचित्‌भी व्यथित न हुए, तब अर्जुनने क्रोधसे छ बाणसे अनुविन्दका भुजद्वय, पादद्वय, मस्तक औ ग्रीवा छेदन कर दिया, अनन्तर उनके अनुगामी लोग शरवर्षण कर्ते हुए अर्जुनके ऊपर धावमान हुए, अर्जुनने तत्क्षणाही निदाघ कालीन वनदाहक अग्निके तुल्य संहार कर दिया, कौरवपक्षीय वीरगण धनञ्जयको श्रान्त औ जयद्रथको दूरस्थ जानके उनको आक्रमण कर्ने लगे, धनञ्जय उनको आवते देखके कृष्णसे बोले, माधव! अपने अश्व सब शरार्दित औ क्लान्त हुए हैं, जयद्रथभी दूर है, इस लिये क्या कर्नी, अश्वोको विशल्य कर्नी अवश्य है, वासुदेव बोले, भ्रातः! तुम जो कहते हो वही हमारे मनमें है, धनञ्जय बोले, कृष्ण! तुम इसी स्थानमे अपना कर्तव्य कर्म करो हम समस्त सैन्यको निवारण कर्ते हैं, यह कहके महावीर धनञ्जय असंभ्रान्तचित्तसे रथसे उतर कर्के गाण्डीवधारण पूर्वक स्थिर खड़े हो गए, शत्रुगण धनञ्जयको भूमिस्थ देखके यही उपयुक्त समय है जानके उनके ऊपर धावमान हुए, तब धनञ्जय अपूर्व बाहुबल प्रदर्शन पूर्वक उनके शरोंको निवारण कर्ते हुए उनको स्वीय शरजालसे आच्छन्न कर्के निवारण कर्ने लगे, बाणोके परस्पर घर्षणसे आकाशमण्डलमे अग्नि उत्पन्न होने लगा, असंख्य वीर जयाभिलाषी होके क्रुद्धचित्तसे बहुसंख्यक मातङ्ग, अश्व औ रथ लेके एकमात्र भूमिस्थ धनञ्जयके

पराजयकी चेष्टा कर्ने लगे, परंतु धनञ्जय शरजालसे कोईभी क्षतकार्य्य न हो सके, तब कृष्ण अशंकितचित्तसे धनञ्जयसे बोले, सखे! अश्वगण जलपान कर्नेको अत्यन्त उत्सुक हुए हैं, इनको तो जल अवश्य पान करावना चहिये, कहां जल पान करावें? कूपभी इहां कोई नही हैं, महावीर धनञ्जयने यह सुनके अश्वके जल पानके लिये अस्त्रसे अवनि विदारण पूर्वक चक्रवाकादि राजित निर्मल जलपूर्ण सरोवर उत्पन्न देवर्षि नारद उस तत्क्षणोत्पन्न सरोवरको देखनेके लिये वहां उपस्थित हो गए, तब अद्भुत कर्मा धनञ्जयने वहां शरवंश, शरस्तम्भ औ शराच्छादनसम्पन्न अद्भुत शरगृह निर्माण किया, महात्मा कृष्ण यह अद्भुत कार्य्य देखे धनञ्जयको धन्यवाद देने लगे।

इति ८८ अध्याय।

हे महाराज! इस प्रकार धनञ्जयके प्रभावसे उस समर स्थलमे जल उत्पन्न औ शरगृह निर्मित होजानेसे महामति वासुदेव रथसे उतर कर्के रथसे अश्वको मुक्त किया, उस समय शत्रुगणका कुछभी न चल सका, धनञ्जय असंख्य सैन्यको निवारण कर्ते हुए अशंकितचित्तसे युद्ध कर्ने लगे, धनञ्जयके ऊपर असंख्य शस्त्र निपतित होने लगे परंतु पार्थ कुछभी व्यथित न हुए, यह दोनोका अद्भुत पराक्रम देखके शत्रुगणभी प्रशंसा कर्ने लगे, अनन्तर अश्वविद्याविशारद कृष्णने शत्रुसैन्यके समक्ष उस समय धनञ्जय निर्मित शरगृहमे अश्वोंको लेजायके उनका श्रम, ग्लानि, प्रस्वेद दूर कर्के उनके शल्य दूर कर्के जलपान कराया, कियत्क्षणमे अश्वगणका उदकपान, स्नान भक्षण औ श्रम निवारण हुआ, तब महात्मा कृष्णने हृष्टचित्तसे अश्वोंको पुनः रथमे नियोजन किया, औ

अर्जुनके साथ उसके ऊपर आरोहण करके द्रुतवेगसे गमन करने लगे, कौरवगण धनञ्जयके अश्वोंको सुसज्ज देखके पुनः विमनायमान हुए, वह लोग मन्त्रदग्ध सर्पके तुल्य दीर्घ निश्वास त्याग करते हुए कहने लगे, हा! कृष्ण औ अर्जुन गमन करते हैं, हम लोगोंको धिक्! कोई बोले, देखो यह कृष्ण औ धनञ्जय रथ योजन करके हम लोगोंको छिन्नभिन्न करते हुए, जयद्रथके सम्मुख धावमान होते हैं, कोई धनञ्जयका अद्भुत व्यापार देखके कहने लगे कि हा! यह दुर्य्योधनके अपराधहीसे पृथिवी उत्सन्न हो रही है, कोई बोले सिंधुराजका अब जीवित रहना कठिन है, मृगयूथके ऊपर मृगराजके धावनतुल्य रथ सञ्चालन करते हुए कृष्ण पाञ्चजन्यध्वनि करने लगे, तब क्षत्रियगण साहस करके पुन अर्जुनको आक्रमण करने लगे, दुर्य्योधनभी उनके पृष्ठभागसे धावमान हुए, तब अर्जुन शरजालसे सभोंको आच्छन्न करने लगे, वह लोग धनञ्जयके शरजालसे ताड़ित होके कृष्ण औ धनञ्जयको देख न सके।

इति १०० अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर धनञ्जय औ कृष्ण जयद्रथके बधकी मन्त्रणा करने लगे कि कौरवपक्षीय छः महावीर जयद्रथको चतुर्दिक्से रक्षा करते हैं, परंतु वह दुरात्मा एक बारभी हमसे नयनगोचर होता नहीं, अधिक क्या कहें इन्द्रभी यदि उसको रक्षा करेंगे तो भी उसका निस्तार न होगा, धनञ्जय औ कृष्ण जयद्रथको ढूंढ़ते हुए परस्पर इस प्रकार भाषण करने लगे सो आपके पुत्रोंने सुनको कोलाहल करते हुए धनञ्जयको आक्रमण किया, कृष्ण औ धनञ्जय कौरवसैन्यको

विद्रावित करते हुए दूरसे जयद्रथको देखने लगे, तब धनञ्जय सिंधुराजको देखके हृष्टचित्त होके सिंहनाद करने लगे, आमिषलोलुप श्येनपक्षीके तुल्य विक्रम प्रकाश करते हुए सिंधुराजके समीप गमन करने लगे, तब दुर्य्योधन वेगसे उनके समीप उपस्थित हुए, तब कौरवसैन्यमें वाद्य वादन होने लगा, सिंधुराजके रक्षामें जो जो वीर नियुक्त थे, वह सब दुर्य्योधनको धनञ्जयके सम्मुख जाते देखके आह्लादित हुए, तब कृष्ण दुर्य्योधनको अतिक्रम करते देखके तत्कालोचित वाक्य धनञ्जयसे बोले।

इति १०१ अध्याय।

"हे धनञ्जय! यह देखो दुर्य्योधन हम लोगोंको अतिक्रम कर रहा है औ यह दृढ़ योद्धा है, सर्वदा यह दुरात्मा हम-लोगोंका द्वेष करता है, इस लिये तुम इसके ऊपर चिरसञ्चित क्रोध निक्षेप करो, यही दुरात्मा अनर्थकका मूल है, आज तुमसे युद्ध करनेको आया है, जिसमें शीघ्र नष्ट होय सो करो, इसके नष्ट होनेसे सब सैन्य अनाथ हो जायगा, अर्जुन कृष्णका वाक्य स्वीकार करके उन्होंके सम्मुख रथ चालन करनेको कहने लगे, तब दुर्य्योधन उनको सम्मुख आवते देखके अशंकित-चित्तसे उनका निवारण करने लगे औ सिंहनाद करते हुए अर्जुनको युद्धार्थ आह्वान करने लगे, केशव औ अर्जुन उनको आह्वान करते देखके शंखवादन करने लगे, तब कौरवगण उनको अग्नि आकृतिके तुल्य अर्जुनके सम्मुख देखके उनकी जीविताशा त्याग करते हुए शोक करने लगे, तब दुर्य्योधन स्वसैन्यको आश्वासन देते हुए धनञ्जयसे बोले, हे पार्थ! यदि तुम पाण्डुराजाके पुत्र हो तो जितने अस्त्र शस्त्र तुम्हारे

होय सो प्रकट करो, केशवका जो पराक्रम है सोभी प्रकाश करें।

इति १०२ अध्याय।

हे महाराज! राजा दुर्य्योधन धनञ्जयसे यह कहके मर्म्म-भेदी तीन बाणसे उनको चार बाणसे उनका अश्व औ दश बाणसे केशवको बिद्ध करके भल्लास्त्रसे प्रतोद छेदन कर दिया, तब धनञ्जयने दुर्य्योधनके ऊपर चौदह बाण निक्षेप किये, वह बाण दुर्य्योनके वर्म्ममें लगतेही व्यर्थ होके भूतलमें गिरे, अर्जुनने पुन: क्रुद्ध होके चौदह शरक्षेप किये, वहभी कवचके स्पर्शसे वृथा हो गए, तब कृष्ण पार्थके बाणोंको विफल होते देखके बोले, हे पार्थ! तुम्हारे शर विफल होते देखके हमको अति विस्मय होता है, क्या आज गाण्डीव वा तुम्हारे भुज-बलकी हानि हुई? धनञ्जय बोले, वासुदेव! महावीर द्रोणा-चार्य्यने हमारे अस्त्रोंसे अभेद्य दारुण कवच दुर्य्योधनके शरी-रमें बन्धन कर दिया है, यह कवच केवल वही जानते हैं औ हमने उनसे जाना है, एतद्भिन्न इस त्रिलोकीमें और कोई नही जानता है, मनुष्यके बाणोंकी क्या कथा, इन्द्रके वज्रसेभी अभेद्य है, तुम सर्वज्ञ होके क्या पूछते हो? इस दुरात्माने कवच धारण किया है, परंतु कवच धारण करके क्या करना सो जानता नही, इस लिये हमारा धनु औ बाहुद्वय आज देखो कैसा करते हैं, हमारे शरीरमें जो कवच है वह पहिले महादेवने अङ्गिराको दिया अङ्गिराने बृहस्पतिको, बृहस्पतिने इन्द्रको इन्द्रने हमको दिया है, जो होय आज दुर्य्योधनका पराजय करते हैं, यह कहके अर्जुन शर समुदाय मन्त्रपूत करके आकर्षण करने लगे, तब अश्वत्थामाने दूरहीसे सर्वास्त्र नाशक अस्त्रसे उन शरोंका छेदन कर दिया, यह

देखकी धनञ्जय विस्मयाविष्ट होकी केशवसी बोले, केशव! हम अब वह शस्त्र पुनः प्रक्षेप कर सकते नहीं, कारण की यह शस्त्र दो बार हमसी प्रयुक्त होनेसे हमारा सैन्यका नाश करेगा।

हे महाराज! इस प्रकार धनञ्जयकी शर भिन्न होने पर दुर्य्योधन तीक्ष्ण नव बाणसे कृष्णको, नव बाणसे धनञ्जयको बिद्ध करके पुनः उनके ऊपर शरवर्षण करने लगे, तब महाबल पराक्रान्त धनञ्जय क्रुद्ध होय सृक्कणी लेहन करने लगे, परंतु दुर्य्योधनका शरीर कवचसे आपादमस्तक रक्षित था इससे उनके शरीर पर शरक्षेप कर सके नहीं, तब उन्होने अन्तक सदृश शरनिकरसे दुर्य्योधनकी शरमुष्टि, शरासन, अश्व, पार्ष्णि औ सारथिका छेदन करके तीक्ष्ण बाणोसे रथको खण्ड खण्ड करके शीघ्र उनको तलहस्त बिद्ध कर दिया, कौरवगण दुर्य्योधनको पार्थके शरसे पीड़ित औ विपद्ग्रस्त देखके उनके रक्षार्थ सहस्र सहस्र रथ, गज, बाजी औ पदातियोसे धनञ्जयको वेष्टन करके शरवर्षण करने लगे, तब कृष्ण धनञ्जयसे बोले, हे पार्थ! तुम धनुर्विस्फारण करो हम शंखध्वनि करते हैं, महावीर धनञ्जय वासुदेवके वाक्यानुसार गाण्डीव विस्फारण करने लगे, औ शराघातसे रिपुगणको निपातित करने लगे, वासुदेव पाञ्चजन्य वादन करने लगे, वासुदेवका शंखनाद औ अर्जुनका गाण्डीवशब्द इन दोनो शब्दसे क्या बलवान् क्या दुर्बल सबही भूतलमे निपतित होने लगे, तब धनञ्जका रथ उस सेनाजालसे मुक्त होके वायुवेग प्रेरित मेघके समान शोभित होने लगा, उस समय सिंधुराजके रक्षक वीरगण सहसा धनञ्जयको आगमन करते देखके बाण-शब्द, शंखशब्द औ भीषण सिंहनाद करने लगे, कृष्ण औ अर्जुनभी वह शब्द श्रवण करके शंखध्वनि करने लगे, वह शब्द

समुदायसे धरणी कम्पित होने लगी, कौरवगण कृष्ण औ धनञ्जयको देखके पहिले भीत होय पलायन करके पुनः धैर्य्य-धारण करके युद्ध करने लगे।

इति १०३ अध्याय।

हे महाराज! इस प्रकार कौरवगण युद्धमे प्रवृत्त होय अर्जुनके ऊपर शरजाल विस्तार करने लगे, अश्वत्थामाने वासुदेवके ऊपर त्रिसप्तति बाण धनञ्जयके ऊपर तीन औ अश्वोंके ऊपर पांच भल्ल निक्षेप किया, धनञ्जय वासुदेवको शरार्दित देखके रुष्ट होय अश्वत्थामाको छःसो, कर्णको दश औ वृषसेनको तीन बाणसे बिद्ध करके शल्यका मुष्टिस्थित बाण सहित धनु छेदन कर दिया, शल्य तत्क्षणही अपर शरासन लेके अर्जुनको बिद्ध करने लगे, तब भूरिश्रवा तीन बाण, कर्ण बत्तीस बाण, वृषसेन सात बाण, जयद्रथ त्रिसप्तति बाण, कृप दश बाण, शल्य पुनः दश बाणसे अर्जुनको बिद्ध करने लगे, अश्वत्थामा पहिले साठ बाणसे अर्जुनको बिद्ध करके पुन उनको पांच बाण औ वासुदेवको बीश बाण प्रक्षेप करने लगे, तब धनञ्जय हास्य करके स्वीय हस्तलाघवसे उन सब वीरोंको ताड़ित करने लगे, कर्णको द्वादश, वृषसेनको तीन, शल्यको दश सिंधुराजको शत बाणसे बिद्ध करके पुनः शल्यका मुष्टिस्थित सशर शरासन छेदन कर दिया, अश्वत्थामाके ऊपर अग्निशिखाके तुल्य आठ शर निक्षेप करके पुनः सप्तति शर निक्षेप किया, तब भूरिश्रवाने तीक्ष्णबाणोंसे कृष्णके हस्तस्थित अश्वके रज्जु छेदन करके धनञ्जयको ऊपर त्रिसप्तति बाण निक्षेप किया, तब धनञ्जय क्रुद्ध होके तीक्ष्णबाणोंसे उनको छिन्नभिन्न करने लगे।

इति १०४ अध्याय।

धृ०। हमारे पक्षीय औ पाण्डवपक्षीयोंको ध्वज कीर्तन करो।

सं०। सभोंके रथके ऊपर ध्वजसुवर्णालङ्कारभूषित माल्यमण्डितकाञ्चनशृङ्गके तुल्य शोभित होते थे, उनके ऊपर विचित्र पताका शोभित होती थी, धनञ्जयके ध्वजस्थित सिंहलांगूलधारी विकटवदन भयङ्कर वानरवर संग्रामस्थलमे कौरवपक्षीयोंको त्रासोत्पादन कर्ने लगे, अश्वत्थामाका ध्वज सूर्य्यतुल्य तेजसे कौरवोंको हर्षबर्द्धन कर्ने लगा, कर्णका हस्तिकक्षाध्वज वायुकम्पित होनेसे मानो आकाशका भेद करके नृत्य कर रहा है, पाण्डवगणके आचार्य्य गौतमतनय कृपाचार्य्यका वृषध्वज शोभित होता था, वृषसेनके ध्वज पर मयूर शोभित होता था, शल्यके ध्वज पर लाङ्गल शोभित होता था, जयद्रथका ध्वज वराहसे भूषित होता था, सौमदत्तिका यूप ध्वज था, शल्यराजका मातङ्गध्वज था, दुर्य्योधनका नागध्वज था, हे राजन्! आपके पक्षीय इन नव महावीरोंके ध्वज आपके सेनाको प्रदीप्त करते थे, उन्मे एकमात्र धनञ्जयका कपिध्वज अग्निसे हिमाचल जैसा देदीप्यमान होय वैसा प्रदीप्त होता था।

अनन्तर अर्जुनका पराभव कर्नेकी इच्छासे वृहद्धनु ग्रहण पूर्वक शरक्षेप कर्ने लगे, धनञ्जयभी गाण्डीव ग्रहण करके बाणवृष्टि कर्ने लगे, उनके शरोंके प्रभावसे नानादेशीय समागत भूपतिगण कालकवलमे निपतित होने लगे,तब दुर्य्योधन प्रभृति महारथ औ धनञ्जय परस्पर गर्जन पूर्वक भर्त्सन कर्ने लगे, उस समय एकाकी अर्जुन उनसे अधिको दीप्तिमान् भासित होने लगे, तब धनञ्जयने बाणवृष्टि करके उन सभोंको अदृश्य कर दिया, उन्होनेभी शरजालसे अर्जुनको अदृश्य कर दिया इस प्रकार अदृश्यमान होनेसे सेनामे कोलाहल होने लगा।

इति १०५ अध्याय।

धृ०। जब धनञ्जय जयद्रथके समीप उपस्थित हुए, तब द्रोणसे आक्रान्त पाञ्चालगणने कौरवोंके साथ क्या किया ?

स०। उस अपराह्णकालीन लोमहर्ष संग्रामके समय पाञ्चालगण द्रोणका संहार करनेके इच्छासे प्रयत्न पूर्वक वाण विक्षेप करने लगे, उनका देवासुर संग्रामके तुल्य युद्ध उपस्थित हुआ, पाञ्चालगण पाण्डवों से मिलित होके द्रोणाचार्य्यके रथके समीप रथ स्थापन करके उनके सैन्यका भेद करनेके लिये उनके ऊपर असंख्य वाण निक्षेप करके द्रोणके ऊपर शरवर्षण करने लगे, वृहत्क्षत्र वज्रतुल्य वाण निक्षेप करते हुए द्रोणके ऊपर धावमान हुए, तब क्षेमधूर्ति वृहत्क्षत्रके ऊपर धावमान हुए, क्षेमधूर्तिको आवते देखके वीरधन्वा उनके ऊपर धावमान हुए, द्रोणाचार्य्य युधिष्ठिर औ उनके सैन्यको निवारण करनेलगे, विकर्ण नकुलके ऊपर धावमान हुए, दुर्मुख सहदेवके ऊपर धावित हुए, व्याघ्रदत्त तीक्ष्ण वाणसे सात्यकीको कम्पित करने लगे, सौमदत्ति द्रौपदीपुत्रोंको निवारण करने लगे, ऋष्यशृङ्गपुत्र भीमसेनको निवारण करने लगे, रामरावणके तुल्य इन दोनो वीरोंका युद्ध होने लगे, तब युधिष्ठिरने नतपर्वनब्बे वाणोंसे द्रोणाचार्य्यको मर्म स्थानको विद्ध किया, आचार्य्यभी क्रुद्ध होके उनके वक्षस्थलमें पंचविंशति शर निक्षेप करके पुनः उनके देह, अश्व, ध्वज औ सारथिके ऊपर शरनिक्षेप करने लगे, युधिष्ठिरनेभी हस्तलाघवतासे उनके सब शर छेदन कर दिये द्रोणाचार्य्यने शीघ्र उनका धनु छेदन करके असंख्य वाणो उनको आच्छन्न कर दिया, धर्मराजके द्रोणके वाणोंसे अदृश्य होनेसे लोगोंको युधिष्ठिर निहत हुए ऐसा बोध होने लगा, तब धर्मराजने अन्य धनु लेके द्रोणके सब शर छेदन कर दिये, अनन्तर क्रोधसे सुवर्णालंकृत अष्टघण्टाविशिष्टने गिरिविदारणसमर्थ भयङ्कर शक्ति

निक्षेप करके सिंहनाद करने लगे, द्रोणाचार्य्यने उस भयङ्कर शक्तिको आवती देखके ब्रह्मास्त्र प्रयोग किया, उस अमोघ ब्रह्मास्त्रसे वह शक्ति भस्म हो गई और वह अस्त्र युधिष्ठिरके सम्मुख उपस्थित हुआ, तब युधिष्ठिरनेभी ब्रह्मास्त्रसे उनका ब्रह्मास्त्र निवारण करके क्षुरप्रसे उनका धनु छेदन कर दिया, तब द्रोणाचार्य्यने गदा निक्षेप किया, युधिष्ठिरनेभी गदा निक्षेप करके उनके गदाको भूतलमे पातित कर दिया, तब द्रोणाचार्य्यने क्षुरबाणोसे युधिष्ठिरके धनु, ध्वज अश्वोको नष्ट किया, तब युधिष्ठिर विरथ और विगतास्त्र होनेसे ऊर्द्ध बाहु होके खड़े हो गए, तब द्रोणाचार्य्य उनको रथहीन और अस्त्रहीन देखके उनके सैन्यका संहार करने लगे, तब सेनामे हाहाकार होने लगा, युधिष्ठिर शीघ्र सहदेवके रथ पर आरोहण करके महा वेगसे पलायमान हुए।

इति १०६ अध्याय

हे महाराज! क्षेमधूर्तिने दृहत्क्षेचके वक्षस्थलमे असंख्य बाण निक्षेप किये, दृहत्क्षेचनेभी नब्बे नतपर्व बाणोसे उनको बिद्ध किया, तब क्षेमधूर्त्तिने क्रुद्ध होके भल्लास्त्रसे उनका धनु छेदन कर दिया और नतपर्व बाणोसे उनका सर्व शरीर बिद्ध कर दिया, तब दृहत्क्षेचने हास्य करके अन्य शरासन ग्रहण पूर्वक क्षेमधूर्तिके अश्व, सारथि और रथका छेदन करके भल्ला-स्त्रसे उनका कुण्डलालंकृत मस्तक छेदन कर दिया, अनन्तर पाण्डवोके साहाय्यार्थ कौरव सेनाके अभिमुख धावमान हुए, धृष्टकेतु द्रोणके ऊपर धावमान हुए तब वीरधन्वाने उनको निवारण कर दिया, तब इन दोनो वीरोको घोर युद्ध होने लगा, तब वीरधन्वाने भल्लास्त्रसे धृष्टकेतुका धनु दो खण्ड कर दिया, धृष्टकेतुने क्रोधसे लौहमयी शक्ति वीरधन्वाके ऊपर

प्रक्षेप किया, वीरधन्वा उस पुरुषघातिनी शक्तिसे भिन्न हृदय होके रथसे भूतलमें निपतित हुए, हे महाराज! इस प्रकार त्रिगर्तदेशाधिपति वीरधन्वाके मृत्यु होने पर, पाण्डवगण आपके सैन्यका ध्वंस करने लगे, तब आपके पुत्र दुर्मुख सहदेवके ऊपर षाठ शर निक्षेप करके गर्जन करने लगे, सहदेव लीलासे दुर्मुखको विद्ध करने लगे, अन्तमें उनको नव बाणसे उनको गाढ़विद्ध करके भल्लसे ध्वज, चार बाणसे चारों अश्व, शाणित बाणसे सारथिका मस्तक औ क्षुरप्रसे धनु छेदन करके पांच बाणसे उनको विद्ध किया, तब दुर्मुख उस अश्व सारथिहीन रथको छोड़के निरमित्रके रथ पर आरूढ़ हो गए, सहदेवने तत्क्षणही भल्लास्त्रसे निरमित्रका संहार किया, तब सैन्यमें हाहाकार होने लगा, महावीर नकुलने आपके पुत्र पृथुलोचनको क्षणमें पराजित करके सबको विस्मयोत्पादन करने लगे, उस समय व्याघ्रदत्तने बाणोंसे सात्यकीको रथ सहित अदृश्य कर दिया, सात्यकी हस्त लाघवतासे व्याघ्रदत्तको रथसे निपातित कर दिया, इस प्रकार मगधराज व्याघ्रदत्त निपातित होने पर मगधदेशीय वीर सब सात्यकीके ऊपर असंख्य शर निक्षेप करने लगे, सात्यकीने अनायास उनका पराभव कर दिया, हतावशिष्ट मागध सब पलायित हो गए, यह देखके आपका सैन्यभी पलायन करने लगा, इस प्रकार सात्यकी आपके सैन्यका पराभव करके धनुर्विधूनन पूर्वक भ्रमण करने लगे, तब कोपाविष्ट द्रोणाचार्य्य सात्यकीके अभिमुख धावमान हुए।

इति १०७ अध्याय।

हे महाराज! महारथ सौमदत्तिने द्रौपदीके तनयोंको पांच पांच बाणोंसे पुनः सात सात बाणोंसे विद्ध किया, द्रौप-

हृदयगण सौमदत्तिके बाणोंसे नितान्त निपीड़ित औ विचेतन प्राय होके इति कर्तव्यतामूढ़ हुए, अनन्तर नकुलपुत्र शता-नीक सौमदत्तिको तिन बाणसे विद्ध करके गर्जन करने लगे, तब अन्य चारो भ्राताओने सौमदत्तिको आहत कर दिया, सौमदत्तिने पांचोके वक्षस्थलमे पांच बाण निक्षेप किये, तब पांचो भ्राताओने चतुर्दिक्से सायक वर्षण पूर्वक आच्छन्न कर दिया, धनञ्जयके पुत्रने चार बाणसे उनके चार अश्व नष्ट किये, भीमसेन पुत्रने धनु छेदन किया, युधिष्ठिरके पुत्रने ध्वज छेदन कर दिया, नकुलके पुत्र सारथिको निपातित किया, सहदेवके पुत्रने सौमदत्तिका मस्तक छेदन किया, सौमदत्तिके नष्ट होतेही आपका सैन्य पलायन करने लगा, अनन्तर राक्षस अलंबुष क्रुद्ध होके भीमसेनसे घोर युद्धमे प्रवृत्त हुए, तब भीमसेन नव बाणसे अलंबुषको विद्ध किया, तब अलंबुष भीमसेनके बाणसे विद्ध होके उनके अनुगामी-योंके त्रिंशत् रथ नष्ट किया, और भीमसेन तीक्ष्ण शरोसे विद्ध किया, तब भीमसेन राक्षसके बाणसे पीड़ित होके मूर्छित हो गये, कियत् क्षणोत्तर चैतन्य होके तीक्ष्ण शरोसे उसको पीड़ित करने लगे, तब अलंबुषको भ्रातृ बकका स्मरण हुआ, तब वह घोररूप धारण करके भीमसेनसे बोला, रे मूढ़! तैने हमारे भ्राता बकका बध किया, उस समय हम नही थे, आज तुमको यमालयमे प्रेरण करते हैं, इतना कहके असंख्य बाण निक्षेप करके अदृश्य हो गया, भीमसेनने निशाचरको अदृश्य जानके असंख्य नतपर्व बाणोंसे गगनमण्डल आच्छन्न कर दिया, राक्षस भीमसेनके शरोंसे पीड़ित होके रथारोहण पूर्वक क्षणमे भूतलमे क्षणमे आकाशमे होने लगा, क्षणमे सूक्ष्म, क्षणमे स्थूलरूप धारण करने लगा, क्षणमे अनेक विध अस्त्र प्रक्षेप करने लगा, तब पाण्डवसैन्यमे असंख्य अश्व, रथ,

गज औ पदाति नष्ट होने लगे, कौरवपक्षीय सब आनन्दित होने लगे, तब भीमसेनने क्रुद्ध होके त्वाष्ट्र अस्त्रका प्रयोग किया, उससे चतुर्दिक् सहस्र सहस्र शर उत्पन्न होनेसे कौरव-सैन्य पलायन करने लगा, उस त्वाष्ट्र अस्त्रसे राक्षसकी माया नष्ट हो गई, तब वह राक्षस अत्यन्त शरार्दित होके प्राण भयसे द्रोणसैन्यमे पलायित हो गया।

इति १०८ अध्याय।

हे महाराज! अलंबुष जब पलायित हुआ तब घटोत्कच उसके ऊपर धावमान होके निशितशरसे बिद्ध करने लगे, अलंबुषभी क्रुद्ध होके उनको ताड़ित करने लगे, घटोत्कच विंशति नाराचसे अलंबुषका वक्षस्थल बिद्ध करके गर्जन करने लगे, अलंबुषभी भीमसेनपुत्रको पुनः पुनः बिद्ध करके गर्जन करने लगे, दोनो वीर मायायुद्ध कुशलतासे परस्पर मोहित करते हुए मायायुद्ध करने लगे, जब अलंबुषकी मायासे घटोत्कचकी माया नष्ट हो गई, तब भीमसेन प्रभृति पाण्डवगण चतुर्दिक्से अवरोधन पूर्वक शरवर्षण करने लगे, अलंबुष उनके शरोंसे आहत होके प्रत्येकको पांच पांच शरसे बेध करने लगा, उन्होनेभी अलंबुषको आच्छन्न कर दिया, अलंबुष घटोत्कचको सायक समूहसे आहत करने लगा, घटोत्कच सहित पाण्डवोंने अलंबुषको शरजालसे नितान्त निपीड़ित करके कर्तव्यतामूढ़ कर दिया, घटोत्कच अलंबुषको कर्तव्यतामूढ़ देखके स्वीय रथसे उतरके उसको नीलाभ रथ पर आरोहण करके अलंबुषको रथसे उत्तोलन पूर्वक बारंबार निक्षेप करके चूर्ण गात्र कर दिया, कौरवसैन्य घटोत्कचका यह अद्भुत व्यापार देखके शंकित हो गए, भीमसेन प्रभृति घटोत्कचको धन्यवाद देने लगे।

इति १०९ अध्याय।

प्र०। सात्यकीने द्रोणाचार्य्यको किस प्रकार निवारण किया?

उ०। महावीर द्रोणाचार्य्य सात्यकीको सेना संहार करते देखके उनके ऊपर धावमान हुए, सात्यकीभी उनको आवते देखके पञ्चविंशति क्षुद्रकास्त्र निक्षेप करने लगे, द्रोणाचार्य्य पांच निशितधारोंसे उनको बिद्ध करने लगे, सात्यकी पञ्चाशत् नाराचोंसे उनको बिद्ध किया, तब द्रोणाचार्य्यने उनको तीक्ष्ण शरोंसे अतिशय बिद्ध कर दिया, उससे सात्यकी कर्त्तव्यतामूढ़ औ विपन्न हो गए, धर्मराज सात्यकीको तदवस्थ देखके शीघ्र वीरगणको उनके निकट प्रेषण किया, तब पाण्डव औ सृंजय युगपत् द्रोणके ऊपर धावमान होय शरवर्षण करने लगे, द्रोणाचार्य्य उनके वाणोंको ग्रहण करके शरवर्षण करने लगे, जैसे सूर्य्यके तीव्र किरणोंसे लोक संतापित होते हैं वैसे द्रोणाचार्य्यके शरवर्षणसे पाण्डव औ सृंजय पीड़ित होने लगे, उस समय धृष्टद्युम्नके प्रिय पाञ्चालदेशीय सुविख्यात पञ्च विंशति महारथ निहत हुए, पाण्डव औ सृञ्जयोंकेभी प्रधान प्रधान महारथ नष्ट किये, एक शत कैकेयको नष्ट किया, उस समय द्रोणाचार्य्यके सम्मुख कोई निरीक्षण न कर सके, इस प्रकार वीरक्षयकर भयङ्कर संग्राम होता है, इतनेमें पाञ्चजन्यका शब्द युधिष्ठिरके कर्णगोचर हुआ, उसी समय जयद्रथ रक्षक वीरोंका सिंहनादभी होता था, वहभी युधिष्ठिर सुनके मनमें चिन्ता करने लगे, कि केवल कृष्णके शंखका औ कौरवोंका सिंहनाद श्रवण होता है, गाण्डीवशब्द श्रुत होता नहीं इससे कुछ अर्जुनका अमङ्गल हुआ ऐसा बोध होताहै, धर्मराज इस प्रकार व्याकुल होके चिन्ता करके सात्यकीसे बोले, हे शैनेय! जो निरन्तर अनुगत रहे युद्धमें नियुक्त करनी चाहिये, तुम कृष्णके तुल्य बलवीर्य्य

सम्पन्न हो, इस लिये जो भार अर्पण करते हैं वह वहन करो, हे शैनेय! देखो दुर्योधन द्रोणाचार्य्यसे बद्ध कवच होके धनञ्जयके सम्मुख धावमान हुए हैं, कौरवपक्षीय अन्यान्य वीरभी वहां वहां पहिलेहीसे अवस्थित हैं औ धनञ्जयके रथाभिमुखी वीरोंका कोलाहल समुत्थित हुआ है, इस लिये वहां जाना अवश्य चाहिये, केवल पाञ्चजन्य शंखशब्दही श्रुत होता है गाण्डीवशब्द श्रुत होता नहीं, इस लिये तुम उनके सहायार्थ वहां जाओ, यदि द्रोणाचार्य्य हम लोगोंको आक्रमण करेंगे तो हम लोग भीमसेन औ अन्यान्य वीरोंके साथ उनको निवारण करेंगे, हे शैनेय! यह देखो कौरवसैन्य समर त्याग करके महाकोलाहल करते हुए पलायन करते हैं, धनञ्जय सिंधु औ सौवीरोंसे वेष्टित हुए हैं, उन सभोंका निवारण करके जयद्रथका बध करनी असाध्य होगा, वह लोग जयद्रथके रक्षार्थ प्राणपणसे यत्न करेंगे, महावीर धनञ्जय इस असीम सैन्यमें प्रविष्ट हुए हैं, इस लिये उनके अमङ्गलकीभी संभावना हो सकती है, इस लिये उनकी सहायता करनी चाहिये, तुम रहते हमको क्या यह कष्ट होगा, अब दिनभी थोड़ा रह गया है, अर्जुन जीवित है वा नही, कुछ ज्ञान नही होता है, असंख्य सैन्यमें एकाकी अर्जुन हैं, हमको अतिशय चिन्ता होती है, इस लिये जो उचित होय सो करो।

इति ११० अध्याय।

हे महाराज! सात्यकी धर्मराजका न्यायानुगत वचन सुनके बोले, हे महाराज! आपने जो कहा सो यथार्थ, हम धनञ्जयके निमित्त प्राणत्यागार्थभी स्वीकृत हैं, जबभी आपका अनुरोध है, इससे इन्द्रभी होय तो उससे भी युद्ध करेंगे, दुर्बल दुर्य्योधन क्या है? हे महाराज! हम निर्विघ्न

धनञ्जयके निकट जायेंगे औ दुरात्मा जयद्रथ निहत होने पर पुनः आपके पास आवेंगे, परंतु वासुदेव औ धनञ्जयने हमको कहा है कि यावत् हम जयद्रथका बध न करें तावत् तुम अप्रमत्तचित्तसे धर्मराजकी रक्षा करो, तुम्हारे करमें यह भार है कि द्रोणाचार्य्यने युधिष्ठिरके ग्रहण करनेकी प्रतिज्ञा किया है, यह कहके आपको हमारे हस्तमें समर्पण किया है, हम महात्मा धनञ्जयकी आज्ञा कैसे उल्लंघन करेंगे, प्रद्युम्न भिन्न द्रोणाचार्य्यसे युद्ध करनेवाला कोई इस समय दृष्ट होता नहीं, हमकोभी कोई कोई उनके प्रतिद्वन्द्वी कहते हैं, यदि कृष्णपुत्र प्रद्युम्न रहते तो निःशंक उनके हस्तमें आपको समर्पण करके जाते, द्रोणसे युद्धमें आपको आत्मरक्षा करनी अवश्य है, और महावीर धनञ्जयके विषयमें आप कुछभी शङ्का मत कीजिये, सिंधु सौवीरादि वीरोंमें कोई अर्जुनके षोडशांशभी नहीं हैं, देवासुरादिमेंभी धनञ्जयका जय करे ऐसा कोई नहीं है, जहां कृष्ण औ धनञ्जय हैं वहां विघ्नकी संभावनाभी नहीं है, हे महाराज! आप द्रोणाचार्य्यका बल, विक्रम, दृढ़ता, कृतास्त्रता औ दैवबल विचार कीजिये, औ हम किसके विश्वास पर आपको छोड़के जांय, इस लिये विवेचना करके हमको आज्ञा कीजिये।

धर्मराज बोले, हे सात्यके! तुमने जो कहा सो यथार्थ है, परंतु धनञ्जयकी अनिष्ट शङ्का हमारे हृदयमें उत्पन्न हुई है, इस लिये हम स्वयं आत्मरक्षा करेंगे, तुम हमारे आज्ञासे धनञ्जयके निकट अवस्थान करो, महाबल भीमसेनादि सकल हमारी रक्षा करेंगे औ धृष्टद्युम्न द्रोण विनाशार्थही उत्पन्न हैं, उनके रहते द्रोण आक्रमण नहीं कर सकेंगे।

इति ११३ अध्याय।

———

सं०। सात्यकि मनमे चिन्ता करने लगे, युधिष्ठिरका परित्याग करें तो धनञ्जयके पास अपराधी होंगे, लोकभी हमको धनञ्जयके निकट जाते देखके भीत कहेंगे क्या करें ऐसी चिन्ता करके बोले हे महाराज। यदि आत्मरक्षाके विषयमे कृतनिश्चय होंय तो आपका मङ्गल होय, हम आपके आज्ञासे जाते हैं, आपके आदेशसे अतिशय दुस्तर सेनासागर विक्षोभित करके प्रियतम धनञ्जयके पास जायङ्गे।

अनन्तर युधिष्ठिरने सात्यकीके निमित्त तुणीर, नानाविध अस्त्र औ अन्यान्य उपकरण सब रथके यथास्थानमे निवेशित करवाय दिया औ अश्वोंको विशल्य औ सुसज्ज करके दिव्य रथमे योजन करके सारथिने सात्यकीको निवेदन किया, तब सात्यकी ब्राह्मणोंको दान औ कृतमङ्गल होके किरातदेशीय मद्यपान करके लोहितलोचन होय युधिष्ठिरको चरणवन्दन करके रथारूढ़ हुए, भीमसेनभी युधिष्ठिरको अभिवादन करके सात्यकीके अनुगत हुए, तब सात्यकी भीमसेनको आगत देखके बोले, हे महावीर। आपको धर्मराजकी रक्षा करनी ही उचित है, हम आप कौरवसैन्य भेद करके प्रवेश करेंगे, आप राजाकी रक्षा न करेंगे तो युक्त न होगा, इस लिये आप निवृत्त होइये, भीमसेन यह सुनके स्वीकार पूर्वक सात्यकीको आशीर्वाद देने लगे, सात्यकी शीघ्र कौरवसैन्यमे प्रवेश करने लगे।

इति ११२ अध्याय।

हे महाराज। सात्यकीके कौरव सैन्यमे प्रविष्ट होने पर महाराज युधिष्ठिर सेनायुक्त होके द्रोणाचार्य्यके अभिमुख धावमान हुए, युद्ध दुर्मद धृष्टद्युम्न औ वसुदान दोनो वीर आगमन करो, प्रहार करो, धावमान हो लिये सात्यकी

अनायास सैन्य भेद करेंगे, ऐसा घोषणा करने लगे, कौरव पक्षीय वीरभी उन वीरोंके ऊपर धावमान होने लगे, उस समय सात्यकीके रथके समीप महान् कोलाहल उत्पन्न हुआ, दुर्योधनका सैन्य सात्यकीके ऊपर धावमान हुआ, तब महा-रथ सात्यकी उस सैन्यको अग्निसन्निभ वाणोंसे शतधा छिन्न भिन्न करने लगे, क्षणमें एक वाणसे शत पुरुष, क्षणमें शत वाणसे एक पुरुष विद्ध करते हुए असंख्य हस्त्यश्वादि निपातित करने लगे, उस समय कोई उनको देखने न सके रथिगण मुग्ध होय चतुर्दिक् पलायन करने लगे, वीरोंके मुण्ड, हस्त, पाद, आभूषण, अस्त्र, रथ, चक्र, अश्व औ गजोंसे समर भूमि पूर्ण होगई, इस प्रकार सात्यकी कौरवी सेनाको विद्रावित करने लगे, तब द्रोणाचार्य्य उनको निवारण करने लगे, सात्यकीभी निरस्त न होके द्रोणाचार्य्यसे युद्ध करने लगे, तब द्रोणाचार्य्यने मर्मभेदी वाणोंसे सात्यकी को विद्ध किया, सात्यकीने भी कङ्क-पत्र वाणोंसे उनको विद्ध किया, द्रोणाचार्य्य उनको औ उनके सारथिको विद्ध करने लगे, सात्यकी द्रोणाचार्य्यका विक्रम सहन करने न सके तब दस, छः, आठ, वाणोंसे विद्ध करके सिंहनाद करने लगे, तदुत्तर दस वाणसे उनको चार वाणोंसे चार अश्व, एक शरसे ध्वज औ एक शरसे सारथिको विद्ध किया, तब द्रोणाचार्य्य एकबार पतङ्ग समूहके तुल्य शरजालसे सात्यकीका रथ, अश्व, ध्वज औ सारथिको आच्छन्न कर दिया, सात्य-कीनेभी उनको रथ सहित समाच्छन्न कर दिया, तब द्रोणा-चार्य्य बोले, हे शैनेय! तुम्हारे गुरु अर्जुन जिस प्रकार आज कापुरुषके तुल्य हमारे साथ युद्ध करते करते रण परित्याग करके दक्षिणदिक् पलायन कर गए, यदि तुम वैसा पलायन करोगे तो जीवित नहीं रहोगे, यह सुनके सात्यकी बोले, हे ब्रह्मन्! आपका मङ्गल होय! हम अब कालविलम्ब नहीं कर सकते

है, हमको धर्मराजकी आज्ञासे धनञ्जयकी निकट जाना है, इस लिये हम आपको छोड़के गुरुके पास जायगे, यह कहके द्रोणाचार्य्यको छोडके गमन करते करते सारथिसे बोले, हे सारथे! द्रोण हमारे निवारणमे बहुत यत्न करेंगे, इस लिये तुम सावधानतासे रणस्थलमे रथ चालन करो, यह जो अवन्तीदेशीय सैन्य है, उसके पर वाह्लीकसैन्य है, उसके पर कर्ण प्रभृति महावीरोको सैन्य है। यह सब भिन्न भिन्न हैं, परंतु रण सब परस्परकी सहायता कर्ते हैं, यह कहके असंभ्रान्तचित्तसे गमन कर्ते हुए कर्णके सैन्य पर धावमान हुए, द्रोणाचार्य्य क्रोधसे उनके पश्चात् धावमान होने लगे, तब सात्यकी शरवर्षण कर्के कर्णके सैन्यको आहत करते हुए असीम सैन्यसे प्रविष्ट हुए, उनके प्रविष्ट होतेही सैन्य सब पलायन करने लगे, कृतवर्मा यह देखके क्रोधसे उनको निवारण कर्ने लगे, तब सात्यकीने कृतवर्माको वाणसे विद्ध कर्के चार वाणसे उनके अश्वोका संहार करके उनके ऊपर षोड़श नतपर्व वाण निक्षेप किये, कृतवर्मा सात्यकीके शरसे निपीड़ित होके वत्सदन्त वाणसे सात्यकीका कवच भेद करके शरासन च्छेदन कर दिया, सात्यकीने कृतवर्माके दक्षिण भुज पर शक्ति प्रहार कर्के शीघ्र अपर धनु लेके शरोसे उनको समाच्छन्न कर्के सारथिका मस्तकच्छेदन कर दिया, तब भोज-राज कृतवर्मा सारथिहीन होके आप अश्वरज्जु धारण पूर्वक धनु ग्रहण कर्के सैन्यमे अवस्थिति कर्ने लगे, सात्यकी कृतवर्मा को त्याग कर्के काम्बोज सेना पर धावमान हुए, कृतवर्मा भीम-सेनके अभिमुख धावमान हुए।

हे महाराज! इस प्रकार सात्यकी भोजसैन्यसे अवतीर्ण होके काम्बोजसैन्यमे प्रविष्ट हुए, तब महारथगण उनको अव-रोध कर्ने लगे, इससे वह आगे जाय सके नही, उस समय

द्रोणाचार्य्यं सात्यकीका अनुसन्धान पायके स्वीय सैन्य रक्षणका भार कृतवर्माको समर्पण करके युद्धकी इच्छासे सात्यकीके ऊपर धावमान हुए, सात्यकीपश्चाद्गामी द्रोणाचार्य्यको देखके पाण्डव पक्षीय प्रधान प्रधान वीरगण उनको निवारण करने लगे, उस काल भीमसेनपरिरक्षित पाञ्चालगण कृतवर्माके समीप उपस्थित होके उनसे निवारित औ अत्यन्त पीड़ित होके हतोत्साह होगए, यातवाहन औ सन्तापित हुए, परन्तु जयाभिलाषसे पराङ्मुख न हुए।

इति ११२ अध्याय।

धृ०। हमारा सैन्यगण दिव्यदेह, व्याधिशून्य, शस्त्रग्रहणनिपुण औ न्यायानुसार व्यूहित औ हम लोगोंकी अभिलाषानुसार सतत कार्य्य करनेवाले, युद्धविद्यानिपुण, कुलीन है, जिनको मानपुरःसर हम लोग पालन करते हैं, ऐसे ऐसे असंख्य उत्तमपुरुष समराङ्गणमे नष्ट होते हैं, हे संजय! हमारा पुत्र मूढ़ दुर्य्योधन अर्जुनको जयद्रथके संमुख अवस्थान करते औ सात्यकीको निर्भय सैन्यमे प्रविष्ट होते देखके तत्कालोचित क्या कार्य्य किया? औ हमारे पक्षीय वीरगण कृष्ण औ अर्जुनको समस्त अस्त्रजाल निवारण करके प्रविष्ट होते देखके क्या करने लगे, हमको बोध होता है कि कृष्ण औ सात्यकीको अर्जुनकी साहाय्य करते देखके शोकाकुल भए होंगे, हे संजय! हम कृष्ण औ अर्जुनका औ पीछेसे सात्यकीका सेनामे प्रवेश सुनके अत्यन्त विमोहित होते हैं, जो होय! सात्यकी भोजसैन्य भेद करके प्रविष्ट हुए, तब कौरवने क्या किया? पाण्डवभी द्रोणसे निगृहीत होके क्या करने लगे? औ अर्जुनने सिंधुराजके बधके लिये क्या किया? सो कहो।

सं०। महाराज! आपहीके अपराधसे यह व्यसन उपस्थित

हुआ है, जो होय, अब शोक करना उचित नहीं है, अब युद्धवृत्तांत सुनिये, सात्यकी जब सैन्यमे प्रविष्ट हुए, तब भीम-सेन औ अन्यान्य आपके सेनाभिमुख धावमान हुए, तब एकाकी कृतवर्मा पाण्डवोंको आगत देखके निवारण करने लगे, उस समय पाण्डवगण समवेत होकेभी उनको अतिक्रम कर सके नही, अनन्तर भीमसेन तीन बाणसे कृतवर्माको विद्ध करके शङ्ख नाद करने लगे, तब सहदेव विंशति, धर्मराज पांच, नकुल शत, द्रौपदेय त्रिसप्तति, घटोत्कच सात औ धृष्ट-द्युम्न सात बाणसे कृतवर्माको विद्ध करने लगे, तदुत्तर विराट औ शिखण्डिने विद्ध किया, तब कृतवर्माने प्रत्येकके ऊपर पांच पांच बाण निक्षेप करके भीमसेनको सात बाणसे विद्ध करके उनका ध्वज औ धनुच्छेदन कर दिया, तत्क्षणही और सप्तति बाण उनके वक्षस्थलमे निक्षेप किये, महाबल पराक्रांत भीम-सेन हार्दिक्यके शराघातसे विचलित हो गए, तब युधिष्ठिरादि सब भीमसेनको तदवस्थ देखके उनके रक्षार्थ कृतवर्माको रथोंसे अवरुद्ध करके शरनिकरसे पीड़ित करने लगे, अनन्तर भीमसेनने चेतना पायके लोहमयी शक्ति निक्षेप किया, कृतवर्माने तत्क्षण उसके दो खण्ड कर दिये, तब भीमसेनने शक्ति निष्फल हुई देखके पांच बाणोंसे उनके वक्षस्थलमे गाढ़ वेध किया, कृतवर्मा भीमसेनके शरोंसे क्षतविक्षत होके क्रोधसे भीमसेनको तीन बाणसे विद्ध किया, वह लोगभी सात सात बाणोंसे विद्ध करने लगे, तब कृतवर्माने शिखण्डी का कार्मुक छेदन कर दिया, शिखंडीने क्रोधसे असि निक्षेप किया, उससे कृतवर्माका धनुच्छिन्न हो गया इतिमें, सब महारथीने उनको गाढ़तर विद्ध कर दिया, तब कृतवर्माने अन्य धनु लेकर तीन२ शरोंसे पाण्डवोंको औ आठ बाणसे शिखण्डीको विद्ध कर दिया, तब शिखण्डीने कूर्मनख बाणसे

कृतवर्माको निवारित कर दिया, तब कृतवर्मा क्रुद्ध होके शिखण्डीके ऊपर धावमान हुए, तब शिखण्डी औ कृतवर्माका परस्पर घोर संग्राम होने लगा, अन्तमे कृतवर्मा चिसप्तति शरोंसे शिखण्डीको विद्ध करके पुनः सात बाणसे विद्ध किया, तब शिखण्डी कृतवर्माके शराघातसे मूर्छित होय रथो-पस्थमे निविष्ट हो गये, तब शिखण्डीके सारथिने उनको मूर्छित देखके सत्वर रणस्थलसे अपसारित कर दिया, तब पाण्डवगण शिखण्डीको अवसन्न देखके कृतवर्माको अवरुद्ध करने लगे, परंतु एकाकी कृतवर्मा उनको निवारण करने लगे, अन्तमे उनको पराजित करके चेदी औ पाञ्चालोंको पराजित कर दिया, पाण्डवगण कृतवर्माके शरोंसे ताड़ित होय इत-स्ततः धावमान होने लगे।

इति ११४ अध्याय।

अनन्तर सात्यकी पाण्डवोंको तदवस्थ देखके कृतवर्माके ऊपर धावमान होय कृतवर्माके चारो अश्व, पृष्ठरक्षक औ धनु छेदन पूर्वक उनके सैन्यका छिन्नभिन्न करके वहांसे प्रस्थित हुए, अनन्तर सारथिसे बोले, हे सारथे! तुम निः-शंकचित्तसे मन्दवेगसे रथ चालन करो, यह द्रोणसैन्यके वाम भागमे गजसैन्य लेके त्रिगर्तदेशीय हैं। उनको निवारण करना कठिन है, और वह लोग दुर्य्योधनके आदेशसे जीवन-निरपेक्ष होके हमसे युद्ध करनेके लिये स्थित हैं, इस लिये उनके अभिमुख रथ चालन करो, हम द्रोणके समक्ष उनसे युद्ध करेंगे, अनन्तर सारथि उनके आज्ञासे रथ चालन करने लगे, तब वह लोग सब गजसैन्य लेके सात्यकी आवते देखके अवरोधन करने लगे, तब महावीर सात्यकी मेघके उनके ऊपर शरवर्षण करने लगे, सात्यकीके तीक्ष्ण

शरनिकराघातसे करिसैन्य निपीड़ित, शीर्णदन्त, भग्नकुम्भ औ रुधिराक्त होके इतस्ततः पलायन कर्ने लगी, श्रारोही सब ऊपरसे निपतित होने लगी, इस प्रकार गजसैन्य नष्ट होने लगा, तब महावीर जलसंध सात्यकीके ऊपर अपना मत्तमातङ्ग प्रेरण करने लगे, तब सात्यकी जलसन्धको सहसा श्रावते देखके समुद्रको वेलाभूमिके तुल्य तत्क्षणही निवारण कर्ने लगे, जलसन्धने अपने गजको निवारित देखके क्रोधसे भल्लास्त्रसे सात्यकीके वक्षस्थलमें वेध करके धनु छेदन कर दिया, तब सात्यकी उनके शरसे निपीड़ित होकेभी कुछभी विचलित न होके हास्य पूर्वक साठ बाणोंसे उनका धनु औ मुष्टि छेदन कर दिया, तब जलसन्धने सात्यकीके ऊपर तोमर प्रक्षेप किया, वह तोमर सात्यकीका बाहु भेद करके धरातलमें निपतित हुआ, तब सात्यकी पोड़ितबाहु होकेभी तीक्ष्ण बाणोंसे उनको पीड़ित कर्ने लगे, तब जलसन्धने खड्ग प्रक्षेप किया, उस खड्गसे सात्यकीका धनु भग्न हो गया, तब सात्यकीने अत्यन्त क्रुद्ध होके अन्य शरासन ग्रहण पूर्वक दो क्षुरप्र बाणोंसे जलसन्धके दोनो भुज छेदन कर दिये, तदुपरान्त अन्य शरसे उनका कुण्डलमण्डित मस्तक छेदन कर दिया, अनन्तर सात्यकीने गजस्कन्धसे महामात्रको निपातित कर दिया, तदुत्तर वह रुधिराभिषिक्त मातङ्ग चीत्कार कर्ते हुए स्वीय सैन्यका मर्दन कर्ते धरातलमें निपतित हुआ, योधगण जलसन्धको निहत देखके पराङ्मुख पलायन कर्ने लगे, तब द्रोण शीघ्र सात्यकीके सम्मुख धावमान हुए, कौरवगणभी द्रोणके साथ धावमान हुए, तब द्रोण औ कौरवोंके साथ सात्यकीका घोर युद्ध होने लगा।

इति ११५ अध्याय।

हे महाराज! वीरगण सात्यकीके ऊपर शरवर्षा करने लगे, द्रोणाचार्य्य सप्तसप्तति, दुर्मर्षण द्वादश, दुःसह दश, विकर्ण तीस, दुर्मुख दस, दुःशासन आठ औ चित्रसेन दो बाणोंसे सात्यकीको विद्ध करने लगे, दुर्य्योधन औ अन्यान्य वीरगण असंख्य बाणोंसे उनको विद्ध करने लगे, सात्यकि उनके बाणोंसे विद्ध होके द्रोणको तीन, दुःसहको नव, विकर्णको पञ्चविंशति, चित्रसेनको सात, दुर्मर्षणको द्वादश विविंशतिको आठ शरोंसे विद्ध करने लगे, तदुत्तर रुक्माङ्गदको पीड़ित करते हुए दुर्य्योधनके अभिमुख धावमान हुए, तब उन दोनोका घोर संग्राम होने लगा, सात्यकीने सुरग्र बाणसे दुर्य्योधनका धनु छेदन कर दिया, तब वह असहमान होके अन्य धनु ग्रहण पूर्वक सात्यकीको विद्ध करने लगे, सात्यकी क्रोधसे दुर्य्योधनको अतिशय आघात करने लगे, अनन्तर प्रत्येकको पांच पांच बाणोंसे विद्ध करने लगे, अनन्तर तीक्ष्ण बाणोंसे दुर्य्योधनका धनु, ध्वज, चार अश्व औ सारथिका संहार करके उनको आच्छन्न कर दिया, तब दुर्य्योधन पलायन करके चित्रसेनके रथ पर आरूढ़ हो गए, तब सकल वीरगण हाहाकार करने लगे, तब कृतवर्मा उनके संमुख धावमान हुए सात्यकीभी उनके संमुख हुए, कृतवर्मा सात्यकीको छब्बीस बाणोंसे, सारथिको पांच बाण और चारो अश्वोंको चार बाणसे विद्ध करने लगे, सात्यकीने उनको तीक्ष्ण शरोंसे विद्ध किया, तब कृतवर्मा नितान्त पीड़ित होके कम्पित होने लगे, सत्यविक्रम सात्यकीने उसी अवसरमे त्रिषष्टि शरोंसे उनके अश्व औ सात शरोंसे सारथिको विद्ध करके उनके ऊपर एक भुजगाकार स्वर्णपुङ्ख बाण निक्षेप किया, वह कालदण्डसदृश बाण कृतवर्माका कवच छेदन औ गात्रभेद करके धरातलमे निपतित हुआ, महावीर कृतवर्मा अत्यन्त

व्याकुल होय धनु त्याग पूर्वक रथोपस्थमे निपतित हुए।

हे महाराज! इस प्रकार महावीर सात्यकी कृतवर्माका पराभव करके अक्षोभ्य सैन्यसागर अतिक्रम करने लगे, इधर कृतवर्मा संज्ञा लाभ करके अन्य धनु ग्रहण पूर्वक पाण्डवोंको निवारण करने लगे।

इति ११६ अध्याय।

हे महाराज! इस प्रकार कौरवसैन्य सात्यकीसे विह्वल होने लगा, तब द्रोणाचार्य उनको शरोंसे आच्छन्न करने लगे, द्रोण औ सात्यकीका घोर संग्राम होने लगा, द्रोणाचार्यने सर्पाकृति तीन बाण सात्यकीके ललाटमे निक्षेप किये, उन तीनों शरोंसे विद्ध होनेसे सात्यकी त्रिशृङ्ग पर्वतके समान शोभित होने लगे, उसी अवसरमे द्रोणने उनके ऊपर शर समूह निक्षेप किया, सात्यकीने तन्निक्षिप्त प्रत्येक बाणके ऊपर दो दो बाण निक्षेप पूर्वक समस्त बाण छेदन कर लिये, द्रोणाचार्यनेभी उनका हस्त लाघव देखके हास्य पूर्वक स्वीय हस्तलाघव देखावते हुए पहिले बीस औ पीछे पंचाशत् बाण निक्षेप किये, सात्यकीनेभी वैसही शीघ्रगामी शरोंसे द्रोणको आच्छन्न कर दिया, इस प्रकार दोनोंका समान युद्ध होने लगा, कोई किसीको पराजय न कर सके, अनन्तर सात्यकीने द्रोणको नव बाणसे विद्ध करके उनके ध्वज पर असंख्य शर औ सारथिके ऊपर शत बाण निक्षेप किये, द्रोणाचार्यने सप्तति शरसे उनके सारथिको औ तीन तीन शरसे अश्वोंको विद्ध करके एक शरसे उनका ध्वज औ हेमपुङ्ख बाणसे धनुच्छेदन कर दिया, तब सात्यकीने द्रोणके ऊपर गदा निक्षेप किया, द्रोणने शरसमूहसे उस गदाको निवारण कर दिया, तब सात्यकी अन्य धनुग्रहण

करके उनको असंख्य वाणोंसे विद्ध करके सिंहनाद करने लगे, तब द्रोणाचार्यने वह असहमान होके उनके ऊपर शक्ति निक्षेप किया, वह शक्ति सात्यकीको स्पर्श न करते रथ भेद करके भूतलमें निपतित हुई, तब सात्यकीने द्रोणका दक्षिण भुज आहत कर दिया, द्रोणनेभी अर्द्धचन्द्र वाणसे सात्यकीका धनु छेदन करके रथशक्तिसे सारथिको मोहित कर दिया, सारथि कियत्क्षण निश्चेष्ट रह गया, तब सात्यकी आप रथरज्जुधारण पूर्वक संग्राम करने लगे, तब द्रोणने पांच वाण निक्षेप किये, सात्यकी द्रोणशरसे निपीड़ित होके क्रोधसे उनके ऊपर असंख्य वाण निक्षेप पूर्वक एक शरसे उनके सारथिका संहार करके अन्य शरोंसे अश्वोंको विद्रावित कर दिया, द्रोणके अश्व वाणोंसे ताड़ित होके पलायन करने लगे, तब कौरवगण कोलाहल करने लगे कि द्रोणके पलायमान अश्वोंको धारण करो, ऐसा कहते हुए सात्यकीको छोड़के द्रोणाभिमुख धावमान हुए।

हे महाराज! आपकी सेना महारथोंको सात्यकीके शरसे पलायमान देखके शङ्कित होय रणत्याग पूर्वक पलायन करने लगी, द्रोणाचार्यभी उन अश्वोंको संवरण करके व्यूहके द्वारमें प्राप्त हुए, तब पाण्डव औ पाञ्चालोंने व्यूह भेद किया है देखके सात्यकीके निवारणके यत्न न करते पांडव औ पांचालोंको निवारण करने लगे।

इति ११७ अध्याय।

हे महाराज! महावीर सात्यकी द्रोण औ कृतवर्म्माका पराभव करके हास्यमुखसे सारथिसे बोले, हे सूत! कृष्ण औ अर्जुनने पहिलेही शत्रुओंका संहार किया है, हम लोग निमित्तमात्र हैं, उनसे निहत हुए को हम लोग मार रहे

हैं, यह कहके श्येन पक्षीके समान गमन करने लगे, कौरव-गण उनको देखके कोई निवारण नही कर सके, अनन्तर महावीर सुदर्शन सात्यकीको निवारण करने लगे, महावीर सुदर्शन सात्यकीके ऊपर वारंवार शरसमूह प्रक्षेप करने लगे, सात्यकीने वह समस्त वाण दूरहीसे छेदन कर दिये, सात्यकी जो जो सुदर्शनने शर निक्षेप किये वह सब छेदन करने लगे, तब सुदर्शन स्वीय सब वाण निष्फल देखके क्रोधसे पुनः वाणवर्षण पूर्वक अग्निसदृश तीन वाण निक्षेप किये, वह तीन वाण सात्यकीका कवच भेद करके शरीरमे प्रविष्ट हुए, तदुत्तर सुदर्शनने चार वाणसे सात्यकीके चार अश्व संहार किये, सात्यकी सुदर्शनके शरोंसे ताड़ित होके क्रोधसे उनकेभी अश्वोंका संहार करके सिंहनाद करने लगे, तदुत्तर भल्लास्त्रसे उनके सारथीका संहार करके क्षुरप्र वाणसे सुदर्शका कुण्डलमण्डित मुण्ड खण्डित कर दिया, इस प्रकार सुदर्शनका मस्तकछेद करके उसी उत्तम अश्व योजित रथपर आरोहण करके कौरवसेनाको निवारित औ निहत करते हुए सबको विस्मित करके अर्जुनके समीप धावमान हुए, तब सबही उनकी प्रशंसा करने लगे।

इति ११८ अध्याय।

हे महाराज सात्यकी गमन करते हुए पुनः सारथिसे बोले, हे सारथे महासागररूप द्रोणसैन्य अतिक्रम किया, अब यह सैन्य क्षुद्र नदीके तुल्य बोध होता है, इस लिये तुम शीघ्र रथसञ्चालन करो, हम शीघ्र इसको अतिक्रम करते हैं, जब द्रोण औ कृतवर्मा पराभूत हुए, तब अर्जुन अब समीपस्थही हैं ऐसा बोध होता है, इस सैन्यको देखके हमको कुछभी त्रास नही होता है, वह प्रदीप्त अग्निमे

तृणके समान हमारे शरसे दग्ध होंगे, यह देखो जिस मार्गसे अर्जुन गए हैं, वहां असंख्य हस्ती, रथ, अश्व औ मनुष्य निपतित हैं, कौरवसैन्य अर्जुनके शरोंसे ताड़ित होके पलायन करते हैं, यह कोलाहल शब्द औ धूलि उत्थित होती है, इसे बोध होता है कि अर्जुन बहुत दूर नहीं हैं, हे सारथे! इस समय जो निमित्त दृष्ट होते हैं, उससे बोध होता है कि दिनमणि अस्त न होते अर्जुन जयद्रथका बध करेंगे, अब जहां दुर्य्योधन प्रभृति वीरगण, काम्बोजगण, यवनगण, शक, किरात, दरद, बर्बर औ ताम्रलिप्तक प्रभृति म्लेच्छगण युद्धार्थि होके उपस्थित हैं, वहां रथ चालन करो, तुम दानकी शिक्षा रक्खो हम सब सङ्कटसे उत्तीर्ण होंगे।

सारथि बोले, हे वार्ष्णेय! जमदग्निपुत्र परशुरामभी आपके संमुख आवे तोभी आपके आश्रयसे हमको कुछभी शङ्का नहीं है, हे आयुष्मन्! आप किसके ऊपर क्रुद्ध हैं? वा किसका मृत्यु उपस्थित है? अथवा किसका यमराजने स्मरण किया है? आज्ञा कीजिये उसके अभिमुख रथ ले चले।

सात्यकी बोले, हे सूत! तुम शीघ्र रथ चालन करो, हम पहिले काम्बोजोंका नाश करके अर्जुनका साक्षात्कार करेंगे, आज शरविक्षत कौरवोंका आर्तनाद श्रवण करके दुर्य्योधन अवश्य अनुतापित होंगे, हम महात्मा धनञ्जयके निर्दिष्ट पथहोसे गमन करेंगे, सारथि यह सुनके रथ चालन करने लगे, तब युयुधान शीघ्रही यवनगणोंके समीप उपस्थित हुए, तब वह सब एकत्र होके संयुगस्थ सात्यकीके ऊपर असंख्य शरविक्षेप करने लगे, सात्यकी उनके शर सब बीचहीमें छेदन करते हुए तीक्ष्ण बाणसे उनके भुज औ मस्तक छेदन करने लगे, इस प्रकार शत शत यवन सात्यकीके शराघातसे गतासु होके भूतलमें निपतित होने लगे, एक२ बाणसे

पांचर सातर यवनोंका संहार करने लगे, उनके रुधिरसे भूमि
उस कर्दममय होगई, अवशिष्ट योधगण पलायन करने लगे।
हे महाराज! इस प्रकार पुरुषव्याघ्र सात्यकी दुर्जय काम्बोज,
शक और यवनगणको विद्रावण करके सारथिको रथ चालनकी
आज्ञा देने लगे, सकल उनकी प्रशंसा करने लगे।

इति ११९ अध्याय।

हे महाराज! इस प्रकार सात्यकी विजय लाभ करते हुए
अर्जुनके समीप गमन करने लगे, कौरवसैन्यगण मृगघाती
शार्दूलसदृश सात्यकी देखके भीत होने लगे, तब दुर्योधन,
चित्रसेन, दुःशासन, विविंशति, शकुनि, दुःसह, दुर्मर्षण और
क्राथ प्रभृति असंख्य वीर क्रोधसे सात्यकीके पश्चात् २ धावन
करने लगे, सात्यकी उनको आवते देखके सारथिको मन्द-
वेगसे रथचालनकी आज्ञा करने लगे, उनको आगत देखके
सात्यकी शरजालसे आच्छन्न करने लगे, सात्यकी और उन
लोगोंका घोर संग्राम उपस्थित हुआ, सात्यकी तीक्ष्ण शरोंसे
दुर्योधनके सैन्यको छिन्नभिन्न करके असंख्योंका संहार करने
लगे, उस समय सात्यकीका एक वाणभी व्यर्थ न हुआ,
यह देखके सबही विस्मयापन्न हुए।

इस प्रकार उस सैन्य महासागरको वेलाके तुल्य सात्यकी
ने निवारित कर दिया, कौरवसेना शार्ङ्गधन्वीके शरसे ताड़ित
होके चतुर्दिक् भ्रमण करने लगी, उस समय सात्यकीके
शरसे विद्ध नहो ऐसे एकभी दृष्ट न हुआ, अनन्तर दुर्योधनने
आठ वाणसे सात्यकीको विद्ध करके तीन शरसे सारथि और
चार शरसे अश्वोंको विद्ध किया, तब दुःशासनने षोड़श,
शकुनिने पच्चीस, चित्रसेनने चार और दुःसहने पञ्चदश वाणसे
उनको विद्ध किया, सात्यकी तीनर वाणोंसे प्रत्येकको विद्ध

करके शार्दूलके तुल्य रणमें विचरण करने लगे, अनन्तर शकुनिका धनु छेदन करके दुर्योधन प्रभृतिको तीन२ बाणोंसे विद्ध किया, तब शकुनि अन्य धनु लेके पहिले आठ औ पश्चात् पांच बाणसे विद्ध करने लगे, दुःशासन दश, दुःसह तीन औ दुर्मुख द्वादश बाण त्याग करके गर्जन करने लगे, तब दुर्योधनने भी त्रिसप्तति शर निक्षेप करके सारथिको विद्ध किया, सात्यकीने पांच२ बाणोंसे सबका विद्ध करके भल्लास्त्रसे दुर्योधनके सारथिका संहार किया, अश्व सब सारथिहीन होके दुर्योधनको लेके समरपलायित होगए, सात्यकी उन अश्वोंको पलायित देखके उनको विदार करके अर्जुनके रथाभिमुख धावमान हुए, कौरवपक्षीय सात्यकीकी लघुहस्तता, शर-क्षेपण, सारथिरक्षा औ आत्मरक्षा देखके प्रशंसा करने लगे।

इति १२० अध्याय।

धृ०। महावीर सात्यकी कौरवोंसेना विदारण करके अर्जुन के समीप गमन करने लगे, तब हमारे निर्लज्ज पुत्रोंने क्या किया? युयुधान एकाकी हमारे सब दल रहते पराक्रम करने लगे इससे स्पष्ट बोध होता है कि हमारे पुत्रोंका दैव प्रति-कूल है।

स०। आपकी कुमंत्रणा औ दुर्योधनकी दुर्बुद्धिही जन-संक्षयकी कारण है, अब जो जो हुआ है सो सो सुनो, संशप्तकगण आपके पुत्रकी आज्ञासे युद्धमें दृढ़चित्त होके पुनः समागत हुए, तीन सहस्र शक, काम्बोज, वाह्लीक, यवन, पारद, कुलिङ्ग, तुङ्गण, अम्बष्ठ, पिशाच, बर्बर औ पाषाण-हस्त पार्वतीयगण औ पञ्चशत महावीर दुर्योधनको अग्रसर करके अग्निमें पतङ्गसमूह शलभके तुल्य शत महारथ, सहस्र

हस्ती औ द्विसहस्र अश्व लेके सात्यकीके सम्मुख उपस्थित हुए, परन्तु क्या आश्चर्य! एकाकी सात्यकी इन सभोंके साथ युद्ध करके असंख्योंका संहार करने लगे, इस प्रकार सेना संहार होनेसे हतावशिष्ट पलायन करने लगे, दुःशासन उनको भग्न देखके बोले, हे मूर्खगण! तुमलोग पलायन क्यों करते हो? निवृत्त होके संग्राममें प्रवृत्त हो, इतना सुनकेभी वह निवृत्त न हुए, अनन्तर पाषाणहस्त पार्वतीयोंसे कहने लगे, तुम लोग पाषाणयुद्धमें निपुण हो, सात्यकी पाषाणयुद्ध कुछभी जानते नहीं, इस लिये उनको पाषाणसे निहत करो, दुःशासनके कहनेसे वह लोग मातङ्गतुल्य पाषाण उत्तोलन पूर्वक युद्धमें प्रवृत्त हुए, अन्यान्य सब दुःशासनकी आज्ञासे सात्यकीका नाश करनेके लिये क्षेपणीसे चतुर्दिक आच्छन्न करने लगे, सात्यकी उनको पाषाणवर्षण करते आवते देखके निशित शरोंसे उनके निक्षिप्त पाषाण चूर्ण करने लगे, उन पत्थरोंका चूर्ण सब घर्षण होके अग्नि उत्पन्न होनेसे सेना दग्ध होने लगी औ हाहाकार करने लगी, अनन्तर उनमेंसे शत वीर सात्यकीके शरसे आघात करते२ निहत होगए, इस प्रकार सहस्र पाषाणयोधोंका संहार होनेसे सबको आश्चर्य हो गया, तब शूलधारी असंख्य दरद, तुङ्गण, खश, लम्पक औ पुलिन्द शिक्षित होके चतुर्दिक् शिलावृष्टि करते हुए सात्यकीके ऊपर धावमान हुए, सात्यकी नाराच बाणोंसे उन शिलाओंका भेद करने लगे, तीक्ष्ण शरोंसे निर्भिन्न शिला के शब्दसे रणस्थ हस्ति, अश्व, रथि औ पदाति सब भीत होने लगे, और आहत होके पलायन करने लगे, हे महाराज! वह कोलाहल सुनके द्रोण अपने सारथिसे बोले, हे सूत! सात्यकी कोपपूर्ण होके सैन्यका विदारण करते हुए कृतान्तके तुल्य विचरण करते हैं, यहां कोलाहल श्रुत है, उससे बोध

होता है उसी स्थानमें पाषाणवर्षी योधाओंके साथ समागत हुए हैं, इस लिये तुम रथ वहां ले चलो, सारथि बोले, महात्मन! देखिये कौरवसैन्य भयसे इधर उधर धावमान होते हैं, सात्यकीभी इहांसे दूर हो गए हैं, और इधर पाञ्चालगण आपको नष्ट करनेकी इच्छासे मिलित हो रहे हैं, इन दोनो कार्य्योंमें क्या कर्तव्य सो स्थिर कीजिये, ऐसो इन दोनोकी वार्ता होती है उसी अवसरमें सात्यकी उन रथीगणका संहार करने लगे, रथिगण सात्यकीके शरोंसे पीड़ित होके द्रोणसैन्यमें प्रविष्ट होने लगे, दुःशासनभी संग्राममें प्रवृत्त हुए हे वहभी शङ्कित होके द्रोणाचार्य्यका रथ देखके धावमान होने लगे।

इति १२१ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर द्रोणाचार्य्य संमुखस्थ दुःशासनको देखके बोले, हे दुःशासन! सकल रथि पलायन क्यों करते हैं? सिंधुराज जीवित है? तुम क्यों पलायन करते हो? पहिले तुमने द्रौपदीको, रे दासि! हम लोगोने तुझको द्यूतमें जीत लिया है, इस लिये राजा दुर्य्योधनके वस्त्र वहन करो, तेरे पतिगण षण्ड है औ जीवित न हैं,ऐसा कहके आज तुम महारथ होके समरसे क्यों पलायन करते हो, तुमही पाञ्चाल औ पाण्डवोंसे दृढ़ वैरके कारण हो, परंतु इस समय एकमात्र सात्यकी देखके क्यों भीत होते हो? पहिले द्यूतक्रीड़ामें अक्ष लेके क्या जान नही सकते थे, जो यह अक्षही परिणाममें भुजगाकार बाणस्वरूप होगा, तुमहीने पहिले पाण्डवोंको कटुवाक्य कहे हैं, तुमहीसे द्रौपदी अत्यन्त पीड़ित हुई है, इस समय वह अभिमान कहा है? वह दर्प कहा है? वह वीर्य्य कहां है? सर्पसदृश पाण्डवोंको कुपित करके कहां

पलायन करते हो? इस समय तुम बाहुबलसे कौरवसैन्यकी रक्षा करो, तुम पलायन करोगे तो युद्ध कौन करेगा, आज सात्यकीको देखके पलायन करते हो तो अर्जुन वा भीमसेनको देखके क्या करोगे? सात्यकीके शर अर्जुनके शर तुल्य हैं, यदि पलायनहीमे क्रतनिश्चय हो तो, तुम्हारे भ्रातृगण औ अन्यान्य वीर पाण्डवोंके हस्तमे यमसन्दिरमे नाजांय तावत् धर्मराजसे सन्धिस्थापन करके उनको राज्य प्रदान करो, पहिले भीष्मने कहा है तुम्हारे ज्येष्ठभ्राता दुर्य्योधनको कहा है कि रणस्थलमे पाण्डवोंका कदापि पराजय नही कर सकोगे, इस लिये सन्धि करो, मन्दबुद्धि दुर्य्योधनने वह किया नही, इस लिये तुम धैर्य्यधरके पाण्डवोंके साथ युद्धमें प्रवृत्त हो, सात्यकी जहां हैं वहां जाओ, नही तो सब सैन्य पलायन करेगा, यह सुनके दुःशासनने कुछभी उत्तर न देके सात्यकी जिस मार्गसे गए उसी मार्गसे चले, वहां सात्यकीके साथ उनसे घोर संग्राम उपस्थित हुआ?

इधर द्रोणाचार्य्य पाण्डव औ पांचालोंके ऊपर धावमान हुए, उनके सैन्यमे प्रविष्ट हो असंख्य योधवानको विद्रावित करते हुए पांचाल औ मत्स्योंका नाश करने लगे, अनन्तर पांचालपुत्र वीरकेतु द्रोणाचार्य्यको आह्वान करते सन्नतपर्व्व वाणोसे उनको विद्ध करके एक वाणसे उनका ध्वज औ सात वाणसे उनके सारथिको विद्ध किया, महावीर द्रोणाचार्य्य यत्न करकेभी वीरकेतुको निवृत्त करनेमे समर्थ हुए नही, यह देखके हम सब चमत्कृत हुए, तब पांचालगण द्रोणको चतुर्दिक वेष्टन करके विविध शस्त्र वर्षण करने लगे, उनके सब अस्त्र द्रोणके अस्त्रोसे विच्छिन्न होगए, तब द्रोणने अग्निसदृश शर वीरकेतुके ऊपर निक्षेप किये, उस शरसे वीरकेतुका देह विदीर्ण होगया, तब धनुर्धारी वीरकेतु रथसे भूतलमे निपतित

हुए, उस समय महावीर सुधन्वा, चित्रकेतु, चित्रवर्म्मा औ चित्ररथ भ्रातृवधसे दुःखित होय वर्षाकालीन मेघके समान द्रोणके ऊपर शरवर्षण करने लगे, द्रोणाचार्य्यने उनके शरोंसे निपीड़ित होके क्रोधसे तीक्ष्ण शरोंसे उनको व्याकुल कर दिया, वह राजपुत्रगण द्रोणके शरसे व्याकुल होय कर्त्तव्यतामूढ़ हो गए, तब द्रोणाचार्य्यने हास्य करके उनके अश्व सारथि संहार पूर्वक उनके मस्तक छेदन कर दिये।

अनन्तर धृष्टद्युम्न महारथ पाञ्चालोंको निहत देखके अश्रुमोचन करते हुए, क्रोधसे द्रोणाभिमुख धावमान हुए, द्रोणाचार्य्य धृष्टद्युम्न शरसे आच्छन्न हो गए तब सैन्यमें हाहाकार होने लगा, परंतु द्रोणाचार्य्य उससे कुछभी व्यथित न होके हास्य पूर्वक युद्ध करने लगे, तब धृष्टद्युम्नने उनके वक्षस्थलमें नवति शर निक्षेप किये, तब द्रोणाचार्य्य उनके शरोंसे गाढ़ बिद्ध होके रथके ऊपर मूर्छित हो गए, धृष्टद्युम्न उनको तदवस्थ देखके उनके शिरश्छेदके इच्छासे खड्ग लेके शीघ्र कूदके उनके रथ पर आरूढ़ हुए, इतनेमें द्रोण चेतन होके जिघांसु धृष्टद्युम्नको देखके पुन धनु लेके समीप युद्धोपयोगी वितस्तिमात्र बाणोंसे उनको बिद्ध करने लगे, धृष्टद्युम्न उनके बाणोंसे बिद्ध होके सत्वर कूदके स्वीय रथ पर आरूढ़ हो गए, तत्काल तीक्ष्ण शरोंसे उनको प्रहार करने लगे, उस समय उन दोनोंको घोरतर संग्राम होने लगा, अन्तमें द्रोणने धृष्टद्युम्नके सारथिका मस्तक छेदन कर दिया, धृष्टद्युम्नके अश्व सारथिहीन होके इतस्तत धावमान होने लगे, तब द्रोणाचार्य्य पाञ्चाल औ सृञ्जयोंको विद्रावित करने लगे, इस प्रकार द्रोणाचार्य्य पाञ्चालोंको पराजित करके स्वीय व्यूहमें पुनः प्रविष्ट हुए, पाण्डवगणमें कोई उनका पराजय कर सका नहीं।

इति १२२ अध्याय।

हे महाराज! इधर दुःशासन शरवर्षण करते हुए सात्य- कीके ऊपर धावमान होय पहिले पाठ वाण औ पीछे षोड़श बाण निक्षेप किये, तब सात्यकीने उनको शरजालसे आच्छन्न कर दिया। दुःशासनके साथ समागत वीर सब सात्य- कीके शरोंसे व्यथित होके पलायन करने लगे, तब एकाकी दुःशासन सात्यकीसे युद्ध करने लगे, सात्यकीने उस समय दुःशासनको शरोंसे जटिल कर दिया, तब राजा दुर्य्योधनने दुःशासनको शरजालसे आच्छन्न देखके त्रिशत त्रिगर्तदेशीय वीरोंको लेके युयुधानके ऊपर प्रेरण किया, उनके आव- तेही सात्यकीने त्रिगर्तके प्रधानतम पांचशत वीर निहत कर दिये, और उनके शरजालसे हस्ति, अश्व, रथी औ पदाति सब निहत होके भूतलमें निपतित होने लगे, तब वह सब वीर द्रोणसैन्यमें पलायित हो गए, सात्यकी इस प्रकार उनका पराभव करके मन्दवेगसे धनञ्जयके समीप गमन करने लगे, तब दुःशासनने नव वाण निक्षेप किये, सात्यकीनेभी पांच वाणसे उनको विद्ध किया, तब दुःशासनने उनको पहिले तीन वाण औ पीछे पांच वाण प्रक्षेप करके हास्य करने लगे, सात्यकी वह देखके क्रुद्ध होय पांछ वाणसे उनका धनु छेदन करके धनञ्जयके समीप धावमान हुए, दुःशासन उनको गमन करते देखके उनके ऊपर लोहमय शक्ति निक्षेप किया, सात्यकीने तत्क्षणाही उसका छेदन कर दिया, तब दुःशासन अन्य धनु लेके उनको विद्ध करने लगे, तब सात्यकीने उनके वक्षस्थलमें तीन शर निक्षेप करके शाणित शरोंसे अश्व औ सारथिको नष्ट किया, अनन्तर एक भल्लसे धनु पांच भल्लसे शरमुष्टि, दो भल्लसे ध्वज औ रथ- शक्ति छेदन करके अन्यान्य वाणोंसे रथके दोनो पार्श्वरक्ष-

कोंका नाश किया, त्रिगर्त सेनापतिने दुःशासनको हताश्व, हतसारथि, छिन्नधन्वा औ विरथ देखके खोय रथ पर आरोपित करके रणसे अपसारित कर दिया, महावीर सात्यकीने दुःशासनके वधका उपक्रम किया, परंतु भीमसेनने सभामे आपके पुत्रोंका वध करेंगे, ऐसी प्रतिज्ञा किया था, सो स्मरण करके छोड़ दिया। हे महाराज! इस प्रकार सात्यकी दुःशासनका पराभव करके जिस मार्गसे धनञ्जय गए उसी मार्गसे गमन करने लगे।

इति १२२ अध्याय।

धृ०। हमारे सेनामे ऐसा कोई न था कि कौरवसैन्य-प्रहर्ता सात्यकीको प्रहार वा रोध करे? एकाकी सात्यकीने रणस्थलमे इन्द्रतुल्य पराक्रम किया, अथवा सात्यकीने बहु सैन्य मर्दन करके शून्यपथसे गमन किया, जो होय सात्यकी किस प्रकार गए सो कहो।

सं०। आपके सैन्यमे असंख्य रथ, गज, अश्व औ पदाति थे उनका पराक्रम दर्शन औ कोलाहल श्रवण करनेसे बोध होने लगा कि युगान्तकाल उपस्थित हुआ है, प्रतिदिन आपके सैन्यका जैसा व्यूह होता था, वैसा जगतीतलमे नही हुआ, विशेष करके जयद्रथके वधके समय जो व्यूह हुआ था वैसा कदापि न हुआ, उस व्यूहके धावमान सैन्योंका घोर शब्द होने लगा, हे महाराज! आपके औ पाण्डवोंके बलमे असंख्य भूपाल समवेत हुए थे, तब भीमसेन, धृष्ट-द्युम्न, नकुल, सहदेव औ धर्मराज सैनिकगणसे कहने लगे, हे वीरगण! तुम लोग शीघ्र आओ, प्रहार करो, महावीर अर्जुन औ सात्यकी अरिसैन्यमे प्रविष्ट हुए हैं, वह जिस्से जयद्रथके पास अनायास जाय सकें, सब एकत्र होके रिपु-

सैन्यको विक्षोभित करो, यह सुनके सब वीर प्राणपणसे युद्धमें प्रवृत्त हुए, हे महाराज! वह भयानक संग्राम उपस्थित होने पर सात्यकी उस समस्त सैन्य पराजित करके धनञ्जयके पास गमन करने लगे, चतुर्दिक् कवचोंकी प्रभासे वीरोंकी दृष्टि प्रतिहत होने लगी, उस समय दुर्य्योधन पाण्डवोंकी सैन्यमें प्रविष्ट होय घोर युद्ध करने लगे।

धृ०। दुर्य्योधनने उस असंख्य सैन्यमें प्रविष्ट होय विपद्-ग्रस्त होके पलायन तो नही किया? कारण कि वह नरपति चिरकालसे सुखसे संवर्द्धित हुए थे, इस लिये बोध होताहै वह अति सङ्कटमें पड़े होंगे।

स०। आपके पुत्रने अनेक वीरोंके साथ आश्चर्य्य युद्ध किया, मत्तमातङ्ग जैसा नलिनीकुलको विलोड़ित करे वैसही दुर्य्योधनने पाण्डवसैन्य मर्दित किया, महावीर भीमसेन औ पाञ्चालगण सेनाको निहत देखके सबही धावमान हुए, तब दुर्य्योधन भीमसेनको दश, नकुल औ सहदेवको तीन तीन धर्मराजको सात, विराट औ द्रुपदको छः औ द्रुपद-पुत्रोंको तीन तीन, शिखण्डी औ धृष्टद्युम्नको बीस बाणोंसे बिद्ध करके असंख्य अश्वारोही औ हस्त्यारोहीओंका संहार करने लगे, उनके लघुहस्ततासे शरक्षेप लक्षित नही होता था, अनन्तर धर्मराजने उनका वह धनु छेदन करके उनके ऊपर दश बाण निक्षेप किये, शर सब दुर्य्योधनके शरीरमें लगतेही भग्न होय भूतलमें निपतित हुए, तब दुर्य्योधनने अन्य धनु लेके तिष्ठ तिष्ठ कहके धावमान हुए, पाञ्चालगण उनको आवते देखके धावमान हुए, उस समय दुर्य्योधनकी रक्षाके लिये द्रोण पाञ्चालोंको निवारण करने लगे, उस समय कौरव औ पाण्डवोंका अति भीषण संग्राम हुआ, हतदेहसे रणभूमि आकीर्ण हो गई, उसी समय जहां

धनञ्जय थे, वहां महान् कोलाहल उपस्थित हुआ, अर्जुन और सात्यकीसे कौरवोंके युद्धसे और व्यूहद्वारस्थित द्रोण औ पाण्डवोंसे युद्ध होने अत्यन्त जनसंक्षय हो गया।

इति १२४ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर अपराह्ण समयमें सोमक औ द्रोणसे तुमुल युद्ध हुआ, द्रोणाचार्य्य पाण्डवसैन्यके प्रधान प्रधान योद्धोंको बिद्ध करके भ्रमण करने लगे, तब कैकयदेशीय वृहत्क्षेत्र शरवर्षण करके आचार्य्यको निपीड़ित करने लगे, आचार्य्यनेभी क्रुद्ध होके उनके ऊपर तीक्ष्ण शर निक्षेप किये, वृहत्क्षेत्रने उनके शरोंके पांच पांच खण्ड कर दिये, द्रोणाचार्य्यने पुनः आठ बाण निक्षेप किये, वृहत्क्षेत्रने वहभी शर नष्ट कर दिये, वृहत्क्षेत्रका वह कार्य्य देखके कौरवपक्षीय विस्मयापन्न हो गए, तब द्रोणाचार्य्यने वृहत्क्षेत्रकी प्रशंसा करते हुए उनके ऊपर दिव्य ब्रह्मास्त्रका प्रयोग किया, वृहत्क्षेत्रभी स्वीय ब्रह्मास्त्रसे उनका ब्रह्मास्त्र छेदन करके साठ बाण निक्षेप पूर्वक सिंहनाद करने लगे, तब द्रोणाचार्य्यने उनके ऊपर निशित नाराच निक्षेप किया, वह नाराच वृहत्क्षेत्रका देह भेद करके धरातलमें निपतित हुआ, वृहत्क्षेत्र उससे व्याकुल होय तीक्ष्ण शाणित सप्तति शरोंसे आचार्य्यको पीड़ित करके एक शरसे उनके सारथिको व्यथित कर दिया, तब द्रोणाचार्य्यने क्रुद्ध होके तीक्ष्ण शरसे उनको व्याकुल करके चार शरोंसे उनके चारो अश्व निहत किये, तदुपर एक शरसे उनके सारथिको निहत करके छः शरोंसे वृहत्क्षेत्रका हृदय विदीर्ण करके उनको धरातलमें पातित कर दिया, इस प्रकार वृहत्क्षेत्रके निपतित होनेसे शिशुपाल पुत्र धृष्ट-

केतु उनके ऊपर धावमान हुए, पतङ्ग जैसा पावकमें पतित होय वैसही धृष्टकेतु द्रोणके अभिमुख होय षष्टि बाण निक्षेप करके उनके ध्वज, रथ, अश्व औ सारथिको विद्ध करने लगे, तब द्रोणाचार्य्यने चार बाणोंसे चारो अश्व औ एक बाणसे सारथिका मस्तक छेदन करके हास्य पूर्वक पञ्च-विंशति बाण निक्षेप किये, तब धृष्टकेतुने रथसे उतर करके द्रोणके ऊपर गदा प्रक्षेप किया, द्रोणने तत्क्षणही उस्को चूर्ण कर दिया, तब धृष्टकेतुने तोमर औ शक्ति प्रक्षेप किया, तब द्रोणाचार्य्यने उस्काभी खण्ड खण्ड करके एक निशित शरसे उनका हृदय विदीर्ण करके पातित कर दिया, उनके नष्ट होने पर उनके पुत्र द्रोणके ऊपर धावमान हुए, द्रोणने हास्य करते करते उनको यमालयमें भेज दिया, अनन्तर जरासन्धपुत्र द्रोणके ऊपर धावमान हुए औ मेघके तुल्य द्रोणके ऊपर शरवर्षण करने लगे, द्रोणाचार्य्यने उनका हस्त लाघव देखके उनको अनेक शरोसे आच्छन्न करके सभोंके समक्ष एक बाणसे उनकाभी संहार किया, उस समय जो जो वीर द्रोणके अभिमुख हुए, वह सब नष्ट होने लगे, अनन्तर सृञ्जयोको आच्छन्न करते हुए असंख्य सैन्य संहार करने लगे, आचार्य्यके शरोसे सबही व्याकुल होने लगे, इस प्रकार द्रोणके शरसे व्याकुल होने पर पाण्डवसैन्यमें हाहाकार होने लगा, तब चेदि, सृञ्जय, काशी औ कोशल देशीय वीरगण द्रोणाचार्य्यको नष्ट करनेके इच्छासे सबही 'द्रोण आज नष्ट हुए' ऐसा कहते हुए उनकी अभिमुख धावमान हुए, द्रोणाचार्य उन वीरोको औ विशेष करके चेदिदेशीयोका संहार किया, इस प्रकार चेदी वीर सब नष्ट हुए तब पाञ्चाल क्षीणबल औ द्रोणके शरसे पीड़ित होय कम्पित होने लगे, औ द्रोणका अद्भुत कर्म औ अवयव

देखते हुए भीमसेन औ धृष्टद्युम्नको आह्वान करने लगे, औ कहने लगे कि इन ब्राह्मणने कठोर तपस्या किया है इसीसे यह संग्राममें क्षत्रियोंको दग्ध करते हैं, क्षत्रियको युद्ध औ ब्राह्मणको तपस्याही प्रधान है, हतविद्य तपस्वी दर्शनहीसे लोकको दग्ध करते हैं।

हे महाराज! धृष्टद्युम्नपुत्र क्षत्रधर्मीने यह उनका वाक्य सुनके क्रोधान्ध होय द्रोणके संमुख आयके अर्द्धचन्द्र बाणसे द्रोणका धनु छेदन कर दिया, द्रोणने वह देखके अतिशय क्रुद्ध हो तीक्ष्ण शर निक्षेप करके क्षत्रधर्माका हृदय विदारण पूर्वक भूतलमें पातित कर दिया, इस प्रकार धृष्टद्युम्नका पुत्र निहत होनेसे सैन्य सब कम्पित होने लगा, अनन्तर महाबल चेकितान द्रोणको आक्रमण करके दश बाणसे उनको बिद्ध करके पुन उनके वक्षस्थलमें बिद्ध करने लगे, तदुत्तर चार बाणसे चार अश्व औ चार बाणसे सारथिको बिद्ध किया, तब द्रोणाचार्यने षोड़श बाणसे उनका दक्षिण भुज बिद्ध करके षोड़श शरसे उनका ध्वज औ सात शरसे उनके सारथिका संहार किया, सारथि नष्ट होनेसे चेकितानके अश्व रथ लेके पलायन करने लगे, पाञ्चाल औ पाण्डव चेकितानको सारथि-हीन देखके अत्यन्त भीत हुए, उस समय पञ्चाशीतिवर्ष-वयस्क आकर्णपलित वृद्ध द्रोणाचार्य्य चेदि, पाञ्चाल औ सृञ्जयोंको विद्रावित करते हुए षोड़शवर्षीय युवाके तुल्य संग्राममें विचरण करने लगे, अनन्तर मतिमान् द्रुपद कहने लगे कि व्याघ्र जैसा लोभसे क्षुद्र मृगोंका नाश करता है, वैसा यह दुरात्मा दुर्य्योधन क्षत्रियोंका नाश करता है, परकालमें अवश्य यह नरकगामी होगा, इसी दुरात्माके लोभसे शतशः प्रधान प्रधान क्षत्रिय विनष्ट होके कुक्कुर शृगालोंके भक्ष्य होके रणभूमिमें निपतित हुए हैं, यह कहके अक्षौहिणी-

पति द्रुपदराज पाण्डवोंको पुरोवर्त्ती करके द्रोणाभिमुख धाव-
मान हुए ।

इति १२५ अध्याय ।

हे महाराज ! इस प्रकार पाण्डवोंका व्यूह विलोड़ित होनेसे वह लोग पाञ्चाल औ सोमको सहित अति दूरमें गए, उस युगान्तकालतुल्य लोमहर्षण संग्राममें द्रोणाचार्य्य वारं-वार गर्जन करने लगे, पाञ्चाल हीनवीर्य्य औ पाण्डव अत्यन्त पीड़ित हुए, तब धर्मराज किसीके आश्रयसे छतकार्य्य न हुए, किस प्रकार रक्षा होगी यही चिन्ता करने लगे, अन-न्तर अर्जुनको देखनेके उत्कण्ठासे चतुर्दिक् दृष्टिपात करने लगे, परंतु उनको किसी प्रकार देख सके नही, केवल धन-ञ्जयका कपिध्वज दर्शन औ गाण्डीवका शब्द सुनने लगे । कियत्क्षणोत्तर सात्यकीको देखा, परंतु कृष्णार्जुनको देखने विना किसी प्रकार शान्तिलाभ न कर सके, औ मनमें चिन्ता करने लगे कि हमने धनञ्जयके पास सात्यकीको प्रेरण किया, पहिले तो धनञ्जयही कि चिन्ता थी अब तो धनञ्जय औ सात्यकि इन दोनोकी चिन्ता उपस्थित हुई है, इस समय सात्यकीके निकट किसको प्रेरण करें, सात्यकी अनुसन्धान न करके धनञ्जयहीका अनुसन्धान करें तो लोगमें निन्दा होगी, इसी निन्दाके परिहारार्थ भीमसेनको सात्यकीके निकट प्रेरण करें, जैसे हम को धनञ्जय प्रिय हैं, वैसही सात्यकी प्रिय है, मित्रोपरोधसे होय वा गौरव लाभसे होय सागरमध्यगामी न करके तुल्य कौरवसैन्यमें प्रविष्ट हुए हैं, सात्यकीके आगे कोलाहलभी श्रुतिगोचर होता है, इस लिये सात्यकीके निकट भीमसेनको प्रेषण करना यही अवश्य है, वस्तुतः उन

लोगो कि वासुदेव स्वयं रक्षा करते हैं, हमको चिन्ता करना न चाहिये, परंतु हमारा मन अत्यन्त उत्कण्ठित हुआ है, इस लिये भीमसेनको प्रेषण करना चहिये।

धर्मराज इस प्रकार मनमें चिन्ता करके सारथिसे बोले, हे सारथे! तुम भीमसेनके रथके पास हमारा रथ ले चलो, सारथिने तत्क्षणही भीमसेनके निकट धर्मराजको समानीत किया, युधिष्ठिर भीमसेनके निकट प्राप्त होय अवसर देखके उनसे बोले, हे भीम! जिसने एक रथसे देव गन्धर्वादिका जय किया है, हम उसी भ्राता धनञ्जयका ध्वज देखते हैं, यह कहके शोकसे मोहाविष्ट हो गए, भीमसेन उनको मोहाविष्ट देखके बोले, महाराज! हमने आपको ऐसा मोहाविष्ट कदापि नहीं देखा, पहिले हम लोग दुःखसे कातर होते थे, तब आप प्रबोध करते थे, हे राजेन्द्र! इस लिये शोक त्याग करके उत्थित होइये, आज्ञा कीजिये हम क्या करें, इस भूमण्डलमें हमको असाध्य कुछ नहीं हैं, अनन्तर धर्मराज दीर्घश्वास त्याग करके अश्रुपूर्णलोचनसे बोले, भ्रातः! कृष्णके मुखसे पाञ्चजन्यकामात्र शब्द श्रवणगोचर होता है, इसे बोध होता है कि धनञ्जय निहत हुए, औ वासुदेव धनञ्जयको नष्ट देखके आप युद्ध करते हैं, हे वृकोदर! जिनके आश्रयसे हम लोग जीवित हैं, वह धनञ्जय जयद्रथके बधार्थ अनेककालसे कौरवसैन्यमें प्रविष्ट हुए हैं, वह अद्य निवृत्त होके आवते नही हैं, यही हमारे शोकका कारण है, धनञ्जय औ सात्यकीके लिये हम व्याकुल हो रहे हैं, हम धनञ्जयका ध्वजभी नही देखते हैं इसे औरभी चित्तव्यग्र होता है, यदि तुम हमारा वाक्य स्वीकार करो तो अर्जुन औ सात्यकीके निकट गमन करो, तुम्हारा विना अन्य किसीका उस अगम्य स्थानमें जानेका सामर्थ्य नही है,

तुम वहां जायके अर्जुन औ सात्यकीका कुशल सिंहनादसे बोधित कर देओ।

इति १२६ अध्याय।

भीमसेन बोले, हे महाराज! पहिले ब्रह्मा, इन्द्र औ महेश्वर जिस रथ पर आरूढ़ हुए थे, उसी रथ पर अर्जुन आरूढ़ होके गए हैं, इससे उनको कुछ भय नहीं है, जो होय हम आपकी आज्ञा शिरोधार्य्य करके गमन करते हैं, हम उनके निकट जायके आपको संवाद देंगे।

हे कुरुराज! भीमसेन यह कहके धृष्टद्युम्नसे बोले, हे महाबाहो! द्रोणाचार्य्य धर्मराजके ग्रहण करनेमे जितने यत्नवान् हैं सो तुमको विदितही है, धर्मराजकी रक्षा धनञ्जयके समीप गमनसेभी अधिक है, परंतु धर्मराजने जो कहा उसका हम उत्तर दे सकते नहीं, अब जहां सुमूर्षु सैन्धव अवस्थान करता है, उसी स्थानमे अर्जुन औ सात्यकीके अनुसरणक्रमसे हम जायंगे, तुम सावधानतासे धर्मराजकी रक्षा करो, धृष्टद्युम्न बोले, हे वीर! तुम कुछ चिन्ता मत करो, द्रोणाचार्य्य धृष्टद्युम्नको नष्ट किये विना धर्मराजको ग्रहण न कर सकेंगे, यह सुनके भीमसेन युधिष्ठिरको उनके हस्तमे समर्पण करके धर्मराजके पादवन्दन करके उद्यत हुए, धर्मराजभी उनको आलिङ्गन औ मस्तकाघ्राण करके आशीर्वाद देने लगे, भीमसेनने अर्चित सन्तुष्ट ब्राह्मणोको प्रदक्षिण औ अष्टविध मङ्गलद्रव्य स्पर्श पूर्वक कैरातक मद्य पान किया, तब उनके नेत्र रक्तवर्ण औ तेजोराशि द्विगुणित-परिवर्द्धित हो गई, वायु अनुकूलगामी होके विजय लाभ सूचित करने लगा, ब्राह्मणोने अनेक आशीर्वाद दिये, अस्त्रादि धारण करके सन्नद्ध हुए, इतनेमे पाञ्चजन्य ध्वनि हुआ,

युधिष्ठिर वह त्रैलोक्यव्यापक शङ्खध्वनि सुनके पुनः भीमसे बोले, हे भीम! ईश्वो शंखोत्तम पाञ्चजन्य कृष्णके मुखसे पूरित हो रहा है, इससे निश्चय बोध होता है कि कुछ विपद उपस्थित है, इस लिये हे भीम! शीघ्र तुम उनके निकट गमन करो, यह सुनके महावीर भीमसेन विशोक सारथिसे संयोजित मारुतगामी अश्वयुक्त दिव्य रथारोहण करके धनुर्ज्या स्फालन पूर्वक विपक्षपक्षीय सेना मर्दन करते हुए गमन करने लगे, जैसा सुरगण इन्द्रका अनुसरण करते हैं, वैसही पाञ्चाल सोमके सहित उनका अनुसरण करने लगे, अनन्तर दुःशल, चित्रसेन, कुण्डभेदी, विविंशति, दुर्मुख, दुःसह, विकर्ण, शल, विन्द, अनुविन्द, सुमुख, दीर्घबाहु, सुदर्शन, वृन्दारक, सुहस्त, सुषेण, दीर्घलोचन, अभय, रौद्रकर्मा, सुवर्मा औ दुर्विमोचन यह सब आपके पुत्र असंख्य सैन्य लेके यत्नसे भीमके ऊपर धावमान हुए। मेघमण्डल जैसा सूर्यको आच्छादन करता है तद्रूप वह वीरगण अस्त्र-जालसे भीमसेनको समाच्छन्न करने लगे, तब भीमसेन महा वेगसे उनको अतिक्रम करके द्रोणसैन्याभिमुख धावमान हुए, औ शरजालसे चतुर्दिक् विद्रावित करने लगे, जैसे मृगकुल अरण्यमे शरभ दर्शनसे वित्रासित होते हैं, वैसही कुरुसैन्य भीमसेनसे विचल होने लगा, वेलाभूमि समुद्रको जैसा अवरोध करती है, तद्रूप आचार्य्य उनका अवरोध करके उनके ललाटमे नाराच निक्षेप करने लगे।

अनन्तर अर्जुनके ऐसा भीमसेनभी हमारा संमान करेंगे, यह मनमे बोध करके बोले, भीमसेन! आज हमारा पराजय किये विना किसी प्रकार सैन्यमे प्रवेश नही कर सकोगे, यद्यपि तुम्हारे अनुज अर्जुन हमारे आदेशसे सैन्यमे प्रविष्ट हुए, तथापि तुम नही प्रवेश कर सकोगे, तब निर्भीक भीम-

सेन गुरु द्रोणाचार्य्यका वाक्य सुनके क्रुद्ध मन औ रक्तनेत्रसे बोले, हे ब्रह्मबन्धो! जितात्मा दुर्धर्ष महावीर अर्जुन युद्धके सैन्यमें प्रवेश कर सकते हैं, वह जो आपके आज्ञासे सैन्यमें प्रविष्ट हुए यह कदापि संभवता नहीं, उन्होंने आपका सम्मान किया, परन्तु हम कृपापरवश अर्जुन नहीं हैं, हम आपके परम शत्रु भीमसेन हैं, हे आचार्य्य! आप हमारे पिता, गुरु औ बन्धु, औ हम लोग आपके पुत्र हैं, इस प्रकार विवेचना करहीके प्रणत हैं, परन्तु आज आप विपरीत वाक्य कहते हो, यदि आप अपनेको हम लोगोंके शत्रु ऐसा बोध करते हो तो कुछ क्षति नहीं, हमभी आपसे शत्रुतुल्य आचरण करेंगे, भीमसेनने इतना कहके कालदण्डके तुल्य भीषण गदा विघूर्णन करके आचार्य्यके ऊपर प्रक्षेप किया, समर-विशारद द्रोणाचार्य्य तत्क्षणही रथसे अवतीर्ण हुए, तब भीमसेनने उनका रथ, अश्व, सारथि औ ध्वज चूर्ण कर दिया, वायु जैसा प्रबलवेगसे वृक्ष मर्दन करे, तद्रूप उनके सैन्यका मर्दन करने लगे, हे महाराज! उस समय आपके चित्रसेनादि पुत्रगण पुनः भीमसेनको वेष्टन करके शर प्रहार करने लगे, द्रोणाचार्य्य अन्य रथ पर आरूढ़ होके युद्धार्थ व्यूहके मुखमें उपस्थित हुए, तब भीमसेन जितात्मा क्रुद्ध होके संमुखस्थ रथ सैन्यके ऊपर शरवर्षण करने लगे, आपके पुत्रगण भीमसेनके शरोंसे पीड़ित होकेभी जयलाभके आशासे घोर युद्ध करने लगे।

अनन्तर दुःशासनने रोषपरवश होके भीमसेनके वधके इच्छासे तीक्ष्ण शक्ति निक्षेप किया, भीमसेनने तत्क्षणही खण्ड २ कर दिया, अनन्तर भीमसेनने कुण्डभेदी, सुषेण औ दीर्घनेत्रको तीन तीन शरोंसे बिद्ध किया, तदुत्तर वृन्दारकको बिद्ध करके अभय, रौद्रकर्मा औ दुर्विमोचनको तीन सायकसे

संहार किया, तब अन्यान्य आपके पुत्रगण भ्रातृत्रयको निहत देखके भीमके ऊपर असंख्य शर निक्षेप करने लगे, तब भीमसेनने हास्य करते आपके पुत्र विंद, अनुविंद औ सुशर्माको यममन्दिरमें प्रेरण कर दिया, इतनेमें सुदर्शनभी भीमके शरसे पीड़ित होय रथसे भूतलमें निपतित हुए, भीमसेनने क्षणमात्रमें वह सब रथसैन्य विमर्दित कर दिया; हतावशिष्ट आपके पुत्र भीमसेनके भयसे पलायन करने लगे, भीमसेन उनके पीछे गमन करते हुए, कौरवसेना विमर्दन करने लगे, भीमसेन इस प्रकार उन आपके पुत्रोंका पराभव करके गर्जन करने लगे, अनन्तर द्रोणसैन्यके संमुख उपस्थित हुए।

इति १२७ अध्याय ।

हे महाराज! अनन्तर द्रोणाचार्य्य भीमसेनको रथसैन्यसे उत्तीर्ण देखके उनको निवारण करने लगे, भीमसेन द्रोण-प्रेरित शरोंको निवारित करके माया‍से सैन्यको विमोहित करके धार्तराष्ट्रके ऊपर धावमान हुए, तब महीपालगण आपके पुत्रोंके आदेशसे महावेगसे भीमसेनको वेष्टन करने लगे, महावीर भीम उनको देखके गर्जन करते हुए हास्य-मुखसे उनके ऊपर एक गदा निक्षेप किया, वह गदा भीषण शब्द करती हुई सैन्यका संहार औ आपके पुत्रोंको भय-कम्पित करने लगी, सैन्य सब गदाको देखके इतस्ततः पला-यन करने लगा, रथि सब उस गदाके दुःसहशब्दसे रथसे निपतित होने लगे, इस प्रकार महावीर भीमसेन उस शत्रु-गणको विद्रावित करके गरुड़के तुल्य महावेगसे सेना अति-क्रम पूर्वक गमन करने लगे।

अनन्तर द्रोणाचार्य्य भीमसेनको सैन्य संहार करते देखके

शरनिकरसे उनको निवारण करके पाण्डवोंको भीत करने लगे, तब भीमसेन औ द्रोणाचार्य्यका देवासुरसंग्रामके तुल्य भीषण युद्ध होने लगा, द्रोणाचार्य्य सुतीक्ष्ण शरोंसे सहस्र सहस्र वीरोंका संहार करने लगे, तब महावीर भीमसेनने सत्वर रथसे अवतीर्ण होय पादचारसे नेत्रनिमीलन पूर्वक द्रोणके शरोंको सहन करते द्रोणके रथको उठायके अति दूर निक्षेप कर दिया, द्रोणाचार्य्य इस प्रकार भीमसे निक्षिप्त होय सत्वर अन्य रथ पर आरोहण करके व्यूहद्वार पर उपस्थित हुए, उस समय भीमके सारथि महावेगसे अश्व चालन करने लगे, वह देखके सबही विस्मयापन्न हो गए, तब महावीर भीमसेन महावेगसे कौरवसैन्य अतिक्रम कर गये, उद्धत वायु जैसा वृक्ष समूह नष्ट करे तद्रूप भीमसेन सैन्य नष्ट करते हुए गमन करने लगे, तदुत्तर कृतवर्मासे रक्षित भोजसैन्य प्रथित औ तलध्वनिसे अन्यान्य कौरवोंका विचस्त करते हुए गमन करने लगे, हे महाराज! इस प्रकार महावीर भीमसेन कौरवपक्षीय भोजसैन्य, काम्बोजसैन्य औ अन्यान्य युद्धविशारद असंख्य म्लेच्छगणको अतिक्रम करके सात्यकीको संग्राममें प्रवृत्त देखके धनञ्जयके दर्शनाभिलाषसे महावेगसे गमन करने लगे, कियत्क्षणोत्तर जयद्रथवधार्थ प्रवृत्त महावीर धनञ्जय उनके नेत्रगोचर हुए, तब भीमसेन धनञ्जयको देखके प्रलयकालीन मेघपटलके तुल्य अति भयङ्कर गर्जन करने लगे, अर्जुनभी भयङ्कर भीमसेनका सिंहनाद सुनके उनको देखनेके लिये वारंवार सिंहनाद करने लगे।

इधर धर्मराज भीम औ धनञ्जयके सिंहनाद श्रवण करके नितान्त प्रसन्न औ शोकशून्य होके धनञ्जयके विजयकी प्रार्थना करने लगे, औ मनमें हास्य करके कहने लगे, हे भीम!

तुमने गुरु आज्ञा प्रतिपालन करके धनञ्जयका कुशलसंवाद प्रदान किया, हमने जाना महावीर धनञ्जय भाग्यहीसे जीवित हैं, औ सात्यकीकोभी मङ्गल है, महावीर धनञ्जयने पुत्र शोकसे नितान्त कातर होके जयद्रथ वधकी दुष्कर प्रतिज्ञा किया है, आज वह हाथासे सुरक्षित होय सूर्य्य अस्त न होते जयद्रथका वध करके हमारे पास आवेंगे? दुर्य्योधनका हित-कारी जयद्रथ धनञ्जयके शरसे निहत होके हमको आनन्दित करेगा? मूढ़ दुर्य्योधन जयद्रथको निहत औ भीमसेन निहत भ्रातृगणके देखके हम लोगोंसे सन्धि करेगा? औ अन्यान्य भूपालो भूतलमे निपतित देखके पश्चात्ताप करेगा? इस प्रकार कृपालु राजा युधिष्ठिर मनमे चिन्ता करते थे, उस समय कुरुपाण्डवो भीषण युद्ध होता था।

इति १२८ अध्याय।

धृ०। इस प्रकार महावीर भीमसेन मेघगंभीर घोर गर्जन करने लगे, तब किस वीरने उनका अवरोध कि? भीम क्रुद्ध होने पर कौन उनको संमुख अवस्थित था? जब वह कृतान्तके तुल्य गदा उद्यत करते हैं, तब उनके संमुख अवस्थित करे ऐसा कोई नही है, भीम रथसे रथ औ गजसे गजका नाश करते हैं, जो होय उनके संमुख उस समय कौन हुआ सो कहो।

सं०। महावीर कर्ण भीमसेनको गर्जन करते देखके तुमुल कोलाहल करते हुए उनके संमुख हुए, उनसे युद्धके इच्छासे शरवर्षण करते हुए वृक्ष जैसा वायुका पथ रुद्ध करता है तद्रूप कर्ण भीमसेनका पथ रोध करने लगे, भीमसेन कर्णको संमुखस्थ देखके क्रुद्ध होय निशित शर निक्षेप करने

वीर कर्णभी उनके ऊपर शरवर्षण करते हुए,

उनके शरीको ग्रहण करने लगे, उसकाल रथी औ अश्वारोही प्रभृति योधगण भीम औ कर्णका युद्ध अवलोकन करते थे, वह सब वीर उनके तलध्वनि श्रवण करके कम्पित होने लगे, उस समय भीमसेनने पुनः भीषण सिंहनाद किया, उस सिंहनादसे योधाओंके हस्तसे धनु निपतित होने लगे, वाहन सब भीत होय मलमूत्र त्याग करने लगे, उस समय बहुत दुर्निमित्तभी प्रादुर्भूत होने लगे, तब कर्णने विंशति शरसे भीमसेनको पीड़ित करके पांच शरसे उनके सारथिको बिद्ध किया, भीमसेनभी शीघ्र चतुःषष्टि शरसे कर्णको बिद्ध करके हास्य करने लगे, कर्णने चार बाण प्रक्षेप किये, भीमसेनने हस्तलाघव उन बाणोंको दूरहीसे खण्ड खण्ड कर दिये, अनन्तर महावीर कर्ण शरजालसे भीमसेनको समाच्छन्न करने लगे, भीमसेन वारंवार कर्णके शरोंसे आच्छन्न होके क्रोधसे कर्णके धनुका मुष्टिदेश छेन कर दिया, तब कर्ण धनु पर ज्यारोपण करके भीमसेनको बिद्ध करने लगे, महावीर भीम कर्णके शरोंसे बिद्ध औ क्रुद्ध होके सहसा कर्णका धनु छेदन करके अश्व औ सारथिका संहार किया, तब कर्ण उस अश्व सारथिशून्य रथसे अवतीर्ण होय वृषसेनके रथ पर आरूढ़ हुए।

हे महाराज! इस प्रकार कर्णका पराजय करके गर्जन करने लगे, राजा युधिष्ठिर भीमसेनका सिंहनाद श्रवण करके कर्णको पराजित जानके सन्तुष्ट हुए, धनञ्जय गाण्डीवका टङ्कार औ वासुदेव पाञ्चजन्य ध्वनि करने लगे, अनन्तर कर्ण मृदुभावसे औ भीम दृढ़ भावसे युद्ध करने लगे।

इति १२९ अध्याय

हे महाराज! इस प्रकार समस्त सैन्य मर्द्दित औ धनञ्जय, सात्यकी औ भीमसेन सिन्धु राजके ऊपर धावमान हुए, तब आपके पुत्र दुर्य्योधन कर्तव्यविषयकी चिन्ता करने लगे, औ शीघ्र द्रोणाचार्य्यके निकट उपस्थित हुए, उनसे कहने लगे कि हे आचार्य्य! धनञ्जय, सात्यकी औ भीमसेन रणमे अपराजित होके सिन्धु राजके समीप गमन करते हैं, औ हम लोगोके असंख्य वीर संहार करके घोर युद्ध कर रहे है। हे महात्मन्! आप किस प्रकार सात्यकी औ भीमसेनसे पराभूत हुए, आपका पराभव करना समुद्रशोषणकी तुल्य है, उनसे आपका पराजय सुनके सब निन्दा करते हैं, औ आपके ऊपर अश्रद्धा करते हैं, जब यह तीन जन आपको अतिक्रम कर गए, तब अवश्य इस युद्धमे हमारा मृत्यु होगा, जो होय, इस समय सिन्धु राजके रक्षाका उपाय कहिये।

द्रोणाचार्य्य बोले, महाराज! संप्रति तीन महारथ अतिक्रम कर गए हैं, उनके पीछे जैसी भयकी सम्भावना वैसही अन्यान्य वीरोंके आगे भयकी सम्भावना है, परन्तु जहां कृष्ण औ धनञ्जय है वहां अधिक भयकी सम्भावना, जो होय, धनञ्जयसे सिंधुराजकी रक्षा करना अवश्य है, हे महाराज! तुम पहिले शकुनिके बुद्धिसे जो द्यूत क्रीड़ा किया था, इस समय उसीका परिणाम हो रहा है, सेना सब द्यूतकारी, शर सब अक्ष औ जयद्रथ पणस्वरूप हो रहा है, जयद्रथकी रक्षा औ नाश यही हम लोगोका जय पराजय इस लिये जहां धनुर्धरगण जयद्रथके रक्षामे नियुक्त हैं, शीघ्र वहां जायके उनके रक्षामे प्रवृत्त हो, हम इहां रहके अन्यान्य सेनाका प्रेरण औ पाण्डव, सृञ्जय औ पाञ्चालोका निवारण करेंगे।

अनन्तर दुर्य्योधन आचार्य्यका वाक्य सुनके पदातियोंके

सहित वहांसे प्रस्थित हुए, उस समय पाण्डवपक्षीय चक्र-रक्षक युधामन्यु औ उत्तमौजा सेनाके पार्श्वभागसे अर्जुनके निकट गमन करने लगे, पहिले धनञ्जय कौरवसैन्यमें प्रविष्ट हुए, तब यही चक्ररक्षक उनके साथ गमन करनेकी चेष्टा करते थे, तब कृतवर्माने उनको निवारण किया था, इस समय दुर्य्योधन उनके धनञ्जयके निकट जाते देखके युद्ध करने लगे, तब युधामन्युने तीस शरसे दुर्य्योधनको औ बीस शरसे उनके सारथिको औ चार शरसे चारो अश्वको विद्ध किया, दुर्य्योधनने क्रुद्ध होके एक वाणसे उनका धनु औ एक वाणसे ध्वज छेदन कर दिया, तदुत्तर सारथिको रथसे पातित कर दिया, तब युधामन्युने क्रोधसे दुर्य्योधनके वक्षःस्थलमें तीक्ष्ण वाण निक्षेप किया, उत्तमौजानेभी क्रोधसे दुर्य्योधनके सार-थिका संहार किया, तब दुर्य्योधनने उत्तमौजाके पार्ष्णि, सारथि औ अश्वोंका संहार किया, महावीर उत्तमौजाने हताश्व औ हतसारथि होके शीघ्र युधामन्युके रथ पर आरूढ़ हो दुर्य्योधनके अश्वोंके संहार किया, उसी समय युधा-मन्युने दुर्य्योधनका तूणीर औ धनु छेदन कर दिया, तब दुर्य्योधन विरथ होय गदा लेके उनके ऊपर धावमान हुए, वह दोनो दुर्य्योधनको गदा लेके आवते देखके सत्वर रथसे अवतीर्ण हुए, तब दुर्य्योधनने गदाघातसे रथ चूर्ण कर दिया, तब वह दोनो वीर दो रथ पर आरूढ़ होय धनञ्जयके निकट गमन करने लगे।

इति १२० अध्याय।

हे महाराज! इधर सैन्य सब विद्रावित होने पर कर्ण भीमसेनके संमुख उपस्थित हुए।

धृ०। धनञ्जयके रथके समीप भीमसेन औ कर्णका

किस प्रकार युद्ध हुआ? कर्ण भीमसेनसे पहिले पराजित होकेभी किस लिये पुनः उनसे युद्धमे प्रवृत्त हुए, युधिष्ठिरको कर्णका अतिशय भय है, कर्णने कुन्तीके आगे धनञ्जय भिन्न और किसीको निहत न करेंगे ऐसी प्रतिज्ञा किया है, तब क्यौ भीमसेनसे युद्धमे प्रवृत्त हुए, भीमसेनभी कर्णका पूर्व वैर स्मरण करके किस प्रकार युद्धमे प्रवृत्त हुए, दुर्य्योधन केवल कर्णहीके ऊपर निर्भर रखता है, वह महारथ ससागरा पृथ्वीका जय कर सकता है, ऐसे वीर भीमसे पराजित होके पुनः क्यौ युद्धमे प्रवृत्त हुए, उन दोनोका युद्ध कैसा हुआ सो कहो।

सं०। भीमसेन कर्णको छोड़के धनञ्जयके निकट गमन करने लगे, महावीर कर्ण क्रुद्ध होके उनके निकट जाय शर-वर्षण करने लगे, औ बोले, हे पाण्डुतनय! तुम शत्रुसे युद्ध करोगे यह हम स्वप्नमेभी नही जानते थे, तुम हमसे पलायित होके धनञ्जयके निकट जाते हो सो कुन्तीपुत्रके योग्यकर्म करते हौ? पलायन मत करो हमारे ऊपर शरवर्षण करो, महावीर भीमसेन कर्णका यह वाक्य सुनके क्रुद्ध होय अर्द्ध-मण्डल भ्रमण पूर्वक शरवर्षण करने लगे, कर्णभी उनके ऊपर शरवर्षण करने लगे, भीमसेनने कर्णके ऊपर तीक्ष्ण बाण प्रक्षेप किये, कर्णने भीमसेनके सब शर अस्त्रमायासे दूर कर दिये, कर्ण शिक्षानिपुण थे इससे युद्धमे हास्यपूर्वक भीमसेनकी अवमानना करने लगे, भीमसेन उनका हास्य सहन न करते तीक्ष्ण वत्सदन्त निक्षेप करके पुनः एकविंशति बाणसे उनका वक्षस्थल विद्ध किया, कर्णने भीमसेनके अश्वोको पांच पांच बाणोसे विद्ध किया, तदुत्तर उनको रथ सारथि-सहित आच्छन्न करके चतुःषष्टि शरसे उनका कवच भेद कर दिया, भीमसेन उससे किञ्चित्भी व्यथित न होय द्वाविंशत्

भल्लोसे कर्णको विद्ध किया, कर्ण उनको आच्छन्न करके दृढ़ भावसे युद्ध करने लगे, भीमसेन पूर्ववैर स्मरण करके क्रोधसे उनका अपमान सह्य न करके उनको तीक्ष्ण शरोसे आच्छन्न कर दिया, कर्णने लीलासे उनके सब शर निवारण कर दिये, तब भीमसेन बहुविध भल्लोसे उनको विद्ध किया, कर्ण उनके शरसे समाहत होके तीक्ष्ण शर वर्षण करने लगे, तब दोनो वीर रुधिरस्रुत होय किंशुक वृक्षके समान शोभित होने लगे, अन्तमे भीमसेनने क्रोधविस्फारितनेत्र होके चतुर्दश बाणसे कर्णका मर्मभेद करके तीक्ष्ण शरसे उनका चाप छेदन पर्वक अश्व औ सारथिका संहार किया, पुरुषाभिमानी कर्ण भीमसेनके शरसे विरथ, छिन्नधन्वा औ विक्षताङ्ग होके अन्य रथसे पलायन करने लगे।

इति १३१ अध्याय।

धृ०। जिस कर्णके ऊपर हमारे पुत्रोकी महती आशा थी उस कर्णको रणमे पराङ्मुख देखके दुर्योधनने क्या कहा? तब कर्णनेभी प्रज्वलित पावकके समान भीमसेनको देखके क्या किया?

स०। कर्ण पुनः अन्य सुसज्जित रथ पर आरोहण करके भीमसेनके संमुख हुए, उस समय कर्णको क्रुद्ध देखके आपके पुत्रगण भीमसेनको अग्निके मुखमे आहुति समान बोध करने लगे, राधेय भयङ्कर ज्या शब्द औ करतलशब्द करते हुए भीमसेनके ऊपर धावमान हुए, उस काल दोनोका भीषण युद्ध होने लगा, परस्पर बधार्थी वीरद्वय परस्परको देखके गर्जन करने लगे।

हे महाराज! यद्यपि द्यूतक्रीड़ा, वनवास, अज्ञातवास, सभामे कटुवचन, द्रौपदीके केशाकर्षणादि समस्त दुःख भीम-

सेनके मनमें उदित होने लगी, तब वह अतिशय क्रुद्ध जीविताशा त्याग करके धनुर्विस्फारण पूर्वक कर्णके ऊपर शरजाल विस्तार करने लगे, महावीर कर्ण हास्य करके भीमसेनके शरोंको निवारण करके तीन शरोंसे उनको विद्ध किया, महावीर भीमसेन अङ्कुशाहत मातङ्गके तुल्य राधेयके शरसे निवारित होके महावेगसे उनके ऊपर धावमान हुए, राधेय समरसमुत्सुक भीमसेनको आगत देखके प्रत्युद्गत हुए, औ शङ्खध्वनि करते हुए भीमसेनके सैन्यको विक्षोभित करने लगे, भीमसेनने स्वसैन्यको विक्षोभित देखके कर्णको शर-धारासे आच्छन्न कर दिया, तब कर्णने अपने अश्वोंसे उनके अश्व सम्मीलित कर लिये, तब कौरवसैन्यमें हाहाकार होने लगा, कौरवपक्षीय दोनों वीरोंको क्रोधाक्रान्त देखके भयसे कम्पित होने लगे, दोनों वीर समीप होके अस्त्रयुद्ध करने लगे, उन दोनोंके शरोंसे गगनमण्डल समाच्छन्न हो गया, उस समय कृष्ण औ धनञ्जय दोनों वीरोंके मिलित देखके अति भाराक्रान्त विवेचना करने लगे, अनन्तर वह दोनों परस्पर शरनिकर निवारित करके दृढ़तर शर प्रयोग करने लगे, तब असंख्य अश्व, रथ, मनुष्य औ गज भूतलमें निपतित होने लगे, उनके निपतनसे असंख्य कौरवसैन्य ध्वस्त हो गया।

इति १३२ अध्याय।

धृ०। जो कर्ण सर्वशस्त्रधारी संग्राममें उद्यत यक्ष, असुर औ मानुषगणके सहित अमरगणको निवारण कर सकते वह भीमसेनको क्यों पराजय कर सके नहीं? जो होय उन दोनोंका कैसा युद्ध हुआ सो कहो, हमको बोध होता है

जय वा पराजय दोनोके आयत्त है, हमारा पुत्र कर्णके सहा-यतासे कृष्णार्जुन सहित पाण्डवोके जय करने लालायित हुआ था सो कर्ण भीमसेनसे वारंवार पराजित होते हैं, सुनके मोह होता है, हमारे पुत्रके दुर्नीतिसे कौरवगण कालकवलमे निपतित होते हैं, कर्ण कदापि पाण्डवोका परा-भव कर सकेगा नही, मूढ़ दुर्य्योधन यह जानता नही, हमने पुत्रवत्सलतासे पाण्डवोसे वञ्चना किया उसीका यह फल है।

स०। महावीर कर्णने विंशत शरोसे भीमसेनको विद्ध किया, भीमसेनने क्रोधसे तीन शरसे उनका धनुश्छेदन करके भल्लास्त्रसे उनके सारथि भूतलमे निपातित कर दिया, तब कर्णने उनके ऊपर महाशक्ति निक्षेप किया भीमसेनने तीक्ष्णशरसे वह शक्ति आकाशहीमे छेदन कर दिया, और कर्णके ऊपर असंख्य शरवर्षण करने लगे, तब कर्ण अन्य रथारोहण औ अन्य शरासन लेके शरजाल विस्तार करने लगे, भीमसेन नत पर्व बाणोसे उनके शरछेदन करके गर्जन करने लगे वह दोनो क्षणमे गर्जन, क्षणमे प्रहार, क्षणमे रंध्रान्वेषण औ क्षणमे निरीक्षण करने लगे, अन्तमे भीमसेनने कर्णके धनुके मुष्टि छेदन औ अश्वोका संहार करके सारथिको पातित कर दिया, इस प्रकार कर्ण भीमसे विरथ होके चिन्तासागरमे निमग्न हुए।

हे महाराज! उस समय दुर्य्योधनने कर्णको विपद्ग्रस्त देखके दुर्जयसे कहा, हे दुर्जय! देखो कर्ण भीमके शरसे निपीड़ित हुए हैं, तुम उनकी सहायता करो, तब आपके पुत्र दुर्जय भ्राताके आज्ञासे शरजाल विस्तार पूर्वक भीमसेनके ऊपर धावमान हुए, औ भीमसेनको नव बाण अश्वगणको आठ बाण औ सारथिको छ बाणसे निपीड़ित करने लगे, तब भीम-

हीन ओघसे दुर्जयको शर निकारसे मर्मभेद पूर्वक अश्व सारथि के साथ यमालयको भेज दिया, महावीर कर्ण उस कनकालंकृत दुर्जयको निपतित देखके वाष्पाकुल नयनसे प्रदक्षिण करने लगे, तब कर्णको रथशून्य देखके भीमसेन तीक्ष्णशरोंसे पीड़ित करने लगे, कर्ण भीमके शरसे क्षतविक्षत होय वह्नीसे प्रज्व-लित हुए।

इति १३२ अध्याय।

हे महाराज! महावीर कर्ण पुनः भीमसे रथशून्य होय अन्य रथारोहण पूर्वक भीमसेनको विद्ध करने लगे, भीमसेनने पहिले दश वाणसे उनको विद्ध करके पुनः विंशति वाणसे बिद्ध किया, कर्ण भीमसेनके वक्षस्थलमें नव वाण प्रक्षेप करके गर्जन करने लगे, तब भीमसेन त्रिषष्टिसायकोंसे विद्ध किया, कर्ण भीमके वाणसे गाढ़ बिद्ध होके उनके संहारार्थ वज्रतुल्य देहविदारक एक वाण निक्षेप किया, वह वाण भीमसेनका देहभेद करके भूतलमें प्रविष्ट हुआ, तब भीमसेन अतिशक्त होके चतुर्हस्त परिमित षट्कोण भूषित गुरुतर गदा प्रक्षेप करके कर्णके अश्वोंका संहार किया, तब उत्तर क्षुरप्रसे उनके सारथिका संहार करके ध्वजछेदन कर दिया, तब कर्ण अत्यन्त विमनाय मान होके उस अश्वहीन ध्वजहीन सारथिहीन रथसे उत्तर करके शरासन ग्रहण पूर्वक भूतलमें अवस्थान करने लगे, तब दुर्य्योधनने कर्णको रथभ्रष्ट देखके दुर्मुखको प्रेषण किया, आपके पुत्र दुर्मुख भ्राताकी आज्ञासे भीमसेनके ऊपर धाव-मान हुए, भीमसेन दुर्मुखको आगत देखके नतपर्व नव वाणोंसे उनको भूतलमें पातित कर दिया, दुर्मुख नष्ट होने पर कर्ण उनके रथपर आरूढ़ होके दुर्मुख को भूतलमें निपतित देखके

मुहूर्त्तकाल युद्धसे विरत होके अश्रुपूर्णलोचनसे दीर्घश्वास त्याग करने लगे, इस अवसरमें भीमसेनने चतुर्दशनाराच निक्षेप किये, वह नाराच कर्णका रुधिरपान करके भूतलमें प्रविष्ट हुए, तब कर्णभी भीमसेनको चतुर्दश नाराचसे बिद्ध करने लगे, उनबाणने भीमसेनका दक्षिण भुज भेद करके भूतलमें प्रवेश किया, तब भीमसेनने तीन शरसे कर्णको औ सात शरसे उनके सारथिको बिद्ध किया, कर्ण भीमके बाहु-बलसे अत्यन्त विह्वल होय समर परित्याग पूर्वक पलायन करने लगे, तब भीमसेन धनुविस्फारण पूर्वक रणमें अवस्थान करने लगे।

इति १३४ अध्याय।

धृ०। अकिञ्चित्कर पुरुषकारको धिक्, हम दैवहीको श्रेष्ठ कहते हैं, महावीर कर्ण कृष्णके साथ पाण्डवोंका जय करनेमें उत्साह देखावते थे आज भीमसेनका पराभव करके, हम दुर्य्यो-धन के मुखसे वारंवार यही कथा सुनते थे, कि कर्ण महाबल पराक्रान्त दृढ़धन्वा औ क्लमशून्य हैं वह हमारे सहाय होंगे तो हतवीर्य पाण्डवोंकी कथा दूर रहे अमरगणकाभी पराजय करेंगे, वह कर्ण आज रणस्थलसे पलायमान हुए तब वह दुर्य्योधन क्या कहता होगा, दुरात्मा दुर्य्योधन मूढ़ने दुर्जय औ दुर्मुखको हुताशनके मुख प्रक्षेप किया, भीमके सम्मुख होय ऐसा कोई नही है, इस लिये इस समय अवश्य हमारे पुत्रोंका संहार होगा।

स०। आप यह शोकका समय देखके शोक करते हो, परन्तु शोकके मूल आपही हो, जो होय, अब शोक संवरण करके युद्ध वृत्तान्त सुनिये, अनन्तर आपके पुत्र दुर्मर्षण,

दुःसह दुर्म्मद औ जय यह पांचो भ्राता कर्णका पराजय देखके क्रुद्ध हो भीमसेनके ऊपर धावमान हुए, उन को वेष्टन करके चतुर्दिकसे शरवर्षण करने लगे, तब कर्ण उनको भीमसेनके सम्मुख देखके शरवर्षण करते हुए, पुनः धावमान हुए, उस समय भीमसेनके आपके पुत्रोंसे निवारित होके भी कर्णके ऊपर धावमान हुए, तब आपके पुत्र कर्णके चतुर्दिक् अवस्थान करके भीमके ऊपर शरवर्षण करने लगे, महाबल पराक्रान्त भीमसेन क्रुद्ध होय पंचविंशति वाण निक्षेपपूर्वक दुर्मर्षणादि पांचो भ्राताओंको सारथि सहित यमके अतिथि कर दिया, वह सब पर्वतसे दृक्षके तुल्य रथसे भूतलमे निपतित हुए, हे महाराज! इस प्रकार भीमसेन कर्णके समाक्रन्न करके आपके पुत्रोंको नाश करते देखके सबही विस्मयाविष्ट हुए, तब कर्ण भीमसेनके शरोंसे निवारित होके भीमसेनको केवल देखने लगगए, भीमसेनभी उनको विस्फारित नेत्रसे देखने लगे।

इति १२५ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर महारथ कर्ण आपके पुत्रोंका निहत देखके क्रोधाविष्ट औ आत्मरक्षासे हताशन हुए, औ उनके समक्ष आपके पुत्र नष्ट हुए इससे आपनेको अपराधी बोध करने लगे, तब महावीर भीमसेन पूर्व वैर स्मरण पूर्वक रोषसे कर्णके ऊपर निशित शर निक्षेप करने लगे, कर्णने पहिले पांच वाण निक्षेप करके हास्यपूर्वक पुनः सप्तति वाण निक्षेप किये, तब भीमसेनने कर्णके ऊपर पहिले आनतपर्व्व शत वाण निक्षेप करके हास पूर्वक सुतीक्ष्ण पांच वाणोंसे उनका मर्मस्थल विद्ध करके एक भल्लसे उनका चापच्छेदन कर दिया, तब कर्ण नितान्त विमनायमान होके अन्य धनुग्रहण

पूर्वक भीमको आच्छन्न करने लगे, तब भीमसेन ओघसे कर्णके सारथि औ अश्वोंका संहार करके पुन: हास्यमुखसे उनका कार्मुक छेदन कर दिया, अनन्तर कर्ण रथसे उतर करके गदा ग्रहण पूर्वक भीमके ऊपर धावमान हुए, तब भीमसेन कर्णके गदाको आगमन करते देखके सर्वसैन्यके समक्ष शरोंसे उसको निवारण करके उनके संहारके इच्छासे निरन्तर सहस्र सहस्र बाण निक्षेप करने लगे, तब महावीर कर्णने शरजालसे भीमके शर निवारण करके असंख्य बाणोंसे भीमका कवच भेद कर दिया, यह देखके सबही विस्मित हुए, तब भीमसेनने कर्णके ऊपर नव बाण निक्षेप किये, वह बाण सब कर्णका कवच औ दक्षिण भुज भेद करके भूतलमे प्रविष्ट हुए, तब भीमसेनने भीमशरसे आच्छन्न होय पुन: समरसे पराङ्मुख हुए, यह देखके दुर्य्योधन भ्रातृगणको कहने लगे, हे भ्रातृगण! तुम लोग यत्नसे कर्णरथाभिमुख धावमान हो।

हे महाराज! तब आपके पुत्र चित्र, उपचित्र चित्राक्ष चारुचित्र, शरासन, चित्रायुध औ चित्रवर्मा यह सब भ्राताके आज्ञासे भीमके ऊपर धावमान हुए, भीमसेनने उनको समीप न आवते आवते एक २ शरसे विनष्ट कर दिया, वह सब भग्न महीरुहके तुल्य रथसे भूतलशायी हुए, तब कर्ण आपके पुत्रोंको निहत देखके विदुरके वाक्योंका स्मरण करने लगे, अनन्तर पुन: सज्जित रथ पर आरूढ होय भीमसेनाभिमुख उपस्थित हुए, तब दोनो वीर पुन: परस्पर विद्ध करने लगे, तब भीमसेनने षट्त्रिंशत् बाणोंसे कर्णका कवच छेदन कर दिया, सूतपुत्र आनतपर्व बाणोंसे उनको विद्ध करने लगे, तब दोनो वीर परस्पर प्रहार करके रुधिरसिक्त होगए, वह दोनो क्षणमे गर्जन, क्षणमे प्रहार, क्षणमे अवलोकन औ क्षणमे मण्डलाकार भ्रमण करने लगे, भीमसेन वारंवार कर्णको शर-

जालसे समाच्छन्न करने लगे, आपके पुत्रगण भीमसेनका अलौकिक पराक्रम देखके अत्यन्त विमनायमान होगए।

इति १२६ अध्याय।

हे महाराज! कर्ण भीमसेनका धनुटङ्कार सुनके असहमान होके क्षणमात्र भीमके समीपसे पलायित होय आपके पुत्रो रणभूमिमें शयान देखके दुःखित होय पुनः भीमसेनके अभिमुख आगत हुए, आपके भीमसेनके ऊपर शरसमूह निक्षेप करने लगे, भीमसेन किरणजालविराजित दिवाकरके तुल्य शरीरसंलग्न वाणोंसे भूषित होने लगे, तब भीमसेन अन्धकारको सूर्य्यके तुल्य कर्णके वाणोंको निवारित करके तीक्ष्ण पंचविंशतिवाणोंसे राधानन्दनको बिद्ध करने लगे, जैसा कर्णने पहिले भीमसेनको आच्छन्न किया था, वैसही भीमसेनने कर्णको आच्छन्न कर दिया, तब सबही भीमसेनको धन्यवाद देने लगे, तब दुर्य्योधन सत्वर सहोदरगणको कहने लगे, हे भ्रातृगण! तुम लोग शीघ्र कर्णको भीमसेनसे रक्षण करो, नहीं तो भीमसेन राधानन्दनको संहार करेगा, तब आपके सात पुत्र दुर्य्योधनके आज्ञासे भीमसेनके अभिमुख धावमान हुए, मेघ जैसे वारिधारासे पर्वतको आच्छादित करते हैं, तद्रूप वह सब वृकोदरको आच्छन्न करने लगे, भीमसेनने उनके प्राण निष्कासन करनेके लिये, उनके ऊपर तीक्ष्ण वाण प्रक्षेप किये, वह सब वाण उन सातोंके देह विदारण करते हुए, गगनमण्डलमें समुत्थित हुए, आपके पुत्रभी विदीर्णहृदय होके रथसे भूतलमें निपतित हुए।

हे महाराज! इस प्रकार शत्रुञ्जय, शत्रुसह, चित्र, चित्रायुध, दृढ़, चित्रसेन और विकर्ण यह आपके सात पुत्र निहत हुए, उनके निमित्त के लिये, भीमसेन शोकाकुल होय

कहने लगे, हे विकर्ण! हम रणस्थलमें तुम सतत्त्वो आतताओंका नाश करेंगे ऐसी प्रतिज्ञा किया था, उसी प्रतिज्ञा पालनके लिये, तुमको निहत किया, तुम हमलोगोंको औ विशेष करके युधिष्ठिरके हितसाधनमें तत्पर थे, हे भ्रातः! युद्धही क्षत्रियका प्रधान धर्म है, यही मनमें करके न्यायानुसार रणमें समागत हुए, इस लिये तुम्हारे निमित्त शोक करना न्यायानुगत नहीं है।

हे कुरुराज! भीमसेन राधेयके समक्ष आपके पुत्रोंका नाश करके गर्जन करने लगे, धर्मराज भीमसेनका सिंहनाद सुनके अपनेको जयशाली बोध करके प्रसन्न होने लगे, राजा दुर्य्योधन एकविंशत् सहोदरोंको निहत देखके चिन्ता करने लगे, महात्मा विदुरने जो कहा वह सार्थक होता है, ऐसी चिन्ता करते कर्तव्यतामूढ होगए, उस समय जो जो आपके पुत्र भीमके नयनगोचर हुए, वह वह सब निहत हुए, आपहीके लिये यह सैन्य संक्षय दृष्ट हुआ।

इति १३७ अध्याय।

धृ०। बोध होता है, कि हमारेही दुर्नीतिका यह फल उपस्थित हुआ है, पहिले जो हुआ उसको अब चिन्ता करनी वृथा है, परन्तु इस समय जो उपस्थित हुआ है, उसके प्रति-विधानमें व्यग्र हो रहे हैं, जो होय, अब हमने धैर्य्य अवलम्बन किया है, तुम हमारे दुर्नीतिका जो फल महान् वीरक्षय उपस्थित हुआ है, उसका वृत्तांत वर्णन करो।

स०। अनन्तर कर्ण औ भीमसेन वारिधारावर्षी मेघके समान शरधारा वर्षण करने लगे, भीमनामाङ्कित शर कर्णके शरीर मे प्रवेश करने लगे, कर्णके मयूरपिच्छ शर भीमसेनको आच्छन्न करने लगे, दोनोंके शर चतुर्दिक् निपतित होनेसे कौरव सैन्य छिन्न भिन्न होगया, तब भीमसेन शर

निकरसे कौरव सैन्य ध्वंस करने लगे, वातभग्न तरुसमूहके तुल्य हस्ती अश्व निपतित होने लगे, सहस्र २ कौरवीय वीर भीमके शराघातसे पीड़ित होय यह क्या आश्चर्य व्यापार। ऐसा कहते हुए पलायन करने लगे, महावीर कर्णभी विमोहित होके कौरव सैन्यहीका संहार करने लगे, हतावशिष्ट कौरव सैन्य दोनोंके शराघातसे चतुर्दिक् पलायमान होगए, असंख्य स्तत हस्ती अश्व मनुष्योंसे रणस्थल आकीर्ण होगया, मांस कर्दम औ रुधिर नदी प्रवाहित होने लगी, वायुसंदीपित अग्निके समान दोनो वीर विचरण करने लगे।

इति १३८ अध्याय।

अनन्तर कर्ण तीन वाणसे भीमसेनको बिद्ध करके बहुविध चित्र शरवर्षण करने लगे, तब भीमसेनने तैलधौत निशित कर्णिसे कर्णके कर्णदेश भेद करके उनके सुन्दर कुण्डल भूतलमे पातित कर दिये, औ भल्लसे उनका वक्षस्थल बिद्ध करके ललाटमे नाराच निक्षेप किया, सर्प जैसा विलमे प्रवेश करे तद्रूप भीमसेनका नाराच कर्णके ललाटमे प्रविष्ट हुआ, तब कर्ण भीमके शरसे गाढ़ बिद्ध होके तत्क्षण रथकूबरका अवलम्बन पूर्वक नेत्र निमीलन करके रह गए, क्षणकालमे चेतना पाय क्रोधसे गृध्रपक्ष शान शर भीमके ऊपर निक्षेप किये, तब भीमसेन उनके ऊपर उग्रशर निक्षेप करने लगे, कर्णनेभी भीमसेनका वक्षस्थल बिद्ध किया, तब भीमसेन क्षुरप्रसे कर्णका शरासन छेदन करके सिंहनाद करने लगे, तब कर्ण अन्य दृढ़ शरासन लेके असंख्य सैन्य भीमसे निहत देख क्रोधाग्निसे प्रदीप्त होय भीमसेनके ऊपर असंख्य शर निक्षेप किया, उस समय कर्ण ऐसा शरवर्षण करने लगे कि

उनके हस्तलाघवसे कब शर ग्रहण करते हैं, कब सन्धान करते हैं, कब विसर्जन करते हैं, सो कुछभी लक्षित न होने लगा, उनके शरके ऊपर शर निक्षेप करनेसे गगनमण्डल औ दिक् विदिक् पूर्ण होगया, सूर्य्यकी प्रभा आच्छन्न हो गई, भीमसेनभी तादृश हस्तलाघवसे असंख्य २ शर निक्षेप करने लगे, दोनो वीरोके शरोंका परस्पर संघट्टन होनेसे गगनमण्डलमें अग्नि प्रज्वलित होय उठा, तब कर्ण अत्यन्तक्रुद्ध होके भीमके संहारकी इच्छासे कर्मारपरिमार्जित शर निक्षेप करने लगे, महावीर भीमसेन कर्णके शरोंको आकाशहीमें तीन २ खंड करके उनका तिष्ठ २ करते हुए, आस्फालन करने लगे, अनन्तर वह पुनः क्रोधोद्दीप्त होके शरवर्षण करने लगे, उन दोनोके गोधांगुलित्रके चट २ शब्दसे, तलशब्दसे, ज्याशब्दसे, रथके घर्घर शब्द औ सिंहनादसे समर भूमि पूर्ण होगई, अन्यान्य योद्धागण परस्पर बधार्थी दोनो वीरोके युद्ध देखनेके लिये, निस्तब्ध होगए, देवर्षि, सिद्ध, गन्धर्व साधुवाद देने लगे, विद्याधर पुष्पवृष्टि करने लगे।

अनन्तर भीमसेनने क्रोधसे कर्णके सब शर निवारित करके अस्त्र प्रयोगसे कर्णको विद्ध करने लगे, कर्णनेभी उनके शर निवारण करके नव नाराच निक्षेप किये, भीमसेन उनके नाराचोंका छेदन करके तिष्ठ तिष्ठ कहके आस्फालन करने लगे, तदुत्तर उनके ऊपर एक यमदण्डतुल्य शर निक्षेप किया, कर्णने भीमके शरका न आवते आवते तीनखण्ड कर दिया, महावीर भीमसेनने पुन भयङ्कर शर निक्षेप किया, कर्णने निर्भीकतासे वह शर ग्रहण किया, तदुत्तर कर्णने सन्नतपर्व बाणोंसे भीमसेनका तूणीर, धनुर्ज्या, अश्वगणकी रज्जु औ यन्त्रका छेदन कर दिया, तदुत्तर उनके अश्वोंको संहार करके सारथिको विद्ध किया, भीमसेनके सारथि कर्णके शरसे समा-

हत होके सत्वर युधामन्युके रथ पर आरूढ़ होगए, तब कर्णने भीमके रथकी पताका औ ध्वज छेदन कर दिया, भीमसेनने यह देखके अत्यन्त क्रुद्ध होके कर्णके ऊपर शक्ति निक्षेप किया, कर्णने दश शरसे उस शक्तिके खण्ड खण्ड कर दिये, तब भीमसेनने खड्ग औ चर्म धारण किया, कर्णने हास्य करते करते असंख्य शरोंसे उनका चर्म छेदन कर दिया, तब भीमसेनने कर्णके ऊपर खड्ग प्रक्षेप किया, उस असिसे कर्ण धनु छिन्न हो गया, तब कर्ण भीमके नाश करनेकी इच्छासे अन्य सुदृढ़ धनु ग्रहण करके रुक्मपुंख सहस्र सहस्र बाण वर्षण करने लगे।

महावीर भीम इस प्रकार कर्णके शरसे नितान्त पीड़ित होके अन्तरिक्षमे उत्थित हुए, तब कर्णने भीमका असाधारण कार्य देखके रथमे लीन होके उनको वञ्चित कर दिया, भीम कर्णको रथमे लीन औ व्याकुलेन्द्रिय देखके उनके ध्वज ग्रहण करके भूतलमे अवस्थित हो गए, कौरव औ चारणगण भीमको पतङ्गराज गरुड़ जैसा भुजङ्गके संहारमे यत्न करते हैं, तद्रूप रथसे कर्णको विनाश करनेमे यत्नवान् देखके भूयसी प्रशंसा करने लगे, इस प्रकार भीमसेन अपना रथ त्याग करके क्षत्रियधर्म प्रतिपालन पूर्वक युद्धार्थ कर्णके सन्निध अवस्थान करने लगे, महावीर कर्ण भी भीमसेनके सन्निध समागत हुए, तब दोनो वीर तर्जन गर्जन करने लगे, देवासुर संग्रामके तुल्य दोनोका संग्राम होने लगा, तब कर्ण अस्त्रबलसे भीमसेनको शस्त्रहीन करके उनके पीछे धावमान हुए, भीमसेन देखके भीत होय अर्जुनसे निहत करिसैन्यमे कर्ण रथ लेके आय सकेंगे नही यह मनमे करके उसमे प्रविष्ट हुए, तदुत्तर रथ दुर्गमे प्रविष्ट होय प्राणरक्षाके लिये कर्णको और प्रहार किया नही, आत्मरक्षाके लिये हनूमान्ने जैसे

गन्धमादनका उत्तोलन किया था, तद्रूप धनञ्जयशरनिहत महान् गजको उत्तोलन करके अवस्थान करने लगे, कर्णने तीक्ष्ण विशिखोंसे उस गजको छिन्नभिन्न कर दिया, भीमसेन यह देखके क्रोधसे मातङ्गकी देह उठाय उठायके कर्णके ऊपर निक्षेप करने लगे, और चक्र, अश्व, रथ औ देह प्रभृति जो जो वस्तु रणस्थलमे निपतित हुई थी वह सब निक्षेप करने लगे, कर्णने वह सब भीमनिक्षिप्त वस्तु तत्क्षण छेदन कर दिया, अनन्तर भीमसेनने कर्णके संहार करनेकी इच्छासे दारुण मुष्टि उद्यत किया, परंतु उनको संहार करने समर्थ होकेभी अर्जुनकी पूर्वप्रतिज्ञा रक्षणके लिये सतपुत्रका संहार किया नही, तब कर्ण निशित शरजालसे भीमसेनको नितान्त पीड़ित औ वारंवार मोहाभिभूत करने लगे, परंतु तत्काल कुन्तीका वाक्य स्मरण करके निरस्त्र भीमसेनका संहार किया नही, अनन्तर कर्णने धावमान होके धनु: कोटिसे भीमका अङ्गस्पर्श कर दिया, भीमसेनने तत्क्षणात् कर्णका धनुश्छिन्न करके उनके मस्तक पर आघात किया, तब कर्ण क्रोधसे कहने लगे, हे तूवरक ! तुम मूढ़ उदरपरायण संग्रा-मकातर औ बालक हो, तुम अस्त्रविद्या कुछभी जानते नही, रणमे तुम्हारा उपयोग नही है, जहां बहुविध भक्ष्यभोज्य है वही तुम्हारे योग्य स्थान है, हे वृकोदर ! तुम वनवासनिरत हो इस लिये रण त्याग करके वनमे जाओ, अथवा भोजनके लिये गृहमे जाओ, युद्ध करना तुम्हारा कार्य्य नही है।

महावीर भीम कर्णका यह दारुण वाक्य श्रवण करके हास्य करते सर्वसमक्ष बोले, हे मूढ़ कर्ण ! हमने तुम्हारा अनेकवार पराजय किया है, तब क्यों वृथा आत्मश्लाघा करते हो, पहिले लोगोने इन्द्रकाभी जयपराजय देखा है, हे दुष्कुलोद्भव ! तुम एक बार हमसे मल्लयुद्ध करो तब सबके समक्ष तुम्हारा संहार

करते हैं, मतिमान् कर्ण भीमसेनका तात्पर्य्य जानके सबके समक्ष मल्लयुद्धसे विरत हुए।

अनन्तर धनञ्जय केशवके वाक्यानुसार कर्णके ऊपर शाणित शर निक्षेप करने लगे, वह धनञ्जयनिक्षिप्त बाण कर्णके शरीरमे प्रवेश करने लगे, पहिले भीमने कर्णका धनु छेदन कियाही था, उस समय धनञ्जयके शरसे व्याकुल होय भीमके समीपसे पलायन करने लगे, महावीर भीमसेनभी सात्यकीके रथ पर आरूढ़ हो धनञ्जयके अनुगमनमे प्रवृत्त हुए, तब महावीर धनञ्जय क्रुद्ध होय सत्वर कर्णको लक्ष्य करके नाराच निक्षेप करने लगे, उसकाल अश्वत्थामा कर्णको धनञ्जय हस्तसे उद्धार करनेके लिये अर्जुनके नाराच आकाश-होमे द्विखण्ड कर दिये, महावीर अर्जुन वह देखके चतुःषष्टि बाणसे द्रोणपुत्रको बिद्ध करने लगे, औ बोले, हे अश्वत्थामन्! पलायन न करके क्षणकाल रणस्थलमे अवस्थान करो, शर-निपीड़ित अश्वत्थामा धनञ्जयका वाक्य न सुनके हस्त्यश्व-रथसंकुल सैन्यमे प्रविष्ट हुए, तब महावीर धनञ्जय थोड़ दूर पृष्ठलग्न होके अश्वत्थामाको त्रासित करने लगे।

इति १३८ अध्याय।

धृ०। प्रतिदिनही हमारा प्रदीप्त यश क्षीण होता है औ असंख्य वीर शत्रुओसे निहत होते हैं, इससे बोध होता है कि दैव हम लोगोंको प्रतिकूल है, महावीर धनञ्जय, अश्वत्थामा औ कर्णसे रक्षित सुरगणको अप्रवेश्य कौरव-सैन्यमे प्रविष्ट हुए, कृष्ण भीम औ सात्यकीके मिलित होनेसे उनका पराक्रम परिवर्द्धित हो गया, यह सुनके शोकाग्नि हमको दग्ध करते हैं, सिंधुराज अर्जुनका अनिष्ट करके किस प्रकार आत्मरक्षा करेगा, जो होय युद्धवृत्तान्त कहो।

८०। अनन्तर सात्यकी कर्णशरनिपीड़ित वृकोदरको आगमन करते देखके उनका अनुगमन करने लगे, अनन्तर वह गर्जन पूर्वक शत्रुसैन्य संहार करने लगे, उस काल कोई वीर उनको निवारण कर सके नहीं, अनन्तर राजा अलंबुष सात्यकीके संमुख अभ्यागत हुए, तब अलंबुष औ सात्यकीका दारुणयुद्ध होने लगा, अलंबुषने दश बाण सात्यकीके ऊपर निक्षेप किये, सात्यकीने दश्हीसे वह छेदन कर दिये, अलंबुषने पुनः तीन शर क्षेप किया, वह शर सात्यकीके शरीरमे प्रविष्ट हुए, सात्यकीने क्रुद्ध होके अलंबुषके अश्वोंका संहार कर दिया, तदुत्तर भल्लसे सारथिका नाश करके किरीट-मण्डित अलंबुषका मस्तक छेदन कर दिया।

हे महाराज! इस प्रकार अलंबुषका संहार करके कौरवसैन्यका निवारण करते हुए धनञ्जयके निकट गमन करने लगे, तब आपके पुत्रगण औ अन्यान्य योधगण दुःशा-सनको अग्रवर्ती करके सात्यकीके अभिमुख धावमान हुए, सैन्यसहित उनको वेष्टन करके शरवर्षण करने लगे, महा-वीर सात्यकीने उन सभोंको निवारण करके दुःशासनके अश्व संहार किये, उस समय कृष्ण औ धनञ्जय सात्यकीको देखके प्रसन्न हुए।

इति १४० अध्याय।

हे महाराज! तब त्रिगर्त्तदेशीय महारथगण सात्यकी दुःशासनके रथाभिमुख देखके असंख्य सैन्य लेके उनको वेष्टन पूर्वक शरवर्षण करने लगे, सात्यकीने असंख्य शरोंसे अनायास उनको पराजित कर दिया, उस समय सात्यकीने ऐसी शीघ्र-गति किया कि पश्चिमदिक् दृष्टिपात करके पूर्वदिक् देखते हैं तो वहां दृष्ट होते हैं, इस प्रकार सात्यकी एकाकी शत-

रथोके तुल्य मुहूर्तमे नृत्य करतेहो मानो समस्त दिग्विदिक् विचरण करने लगे, त्रिगर्तदेशीय सैन्य सब सात्यकीको द्रुत-गति देखके संतप्त होय स्वजनके समीप प्रस्थित हुए, तब शूरसेनगण उनको निवारण करने लगे। सत्यविक्रम सात्यकी क्षणमे उनको पराजित करके कलिङ्गदेशीयोंके साथ युद्ध करने लगे, तत्क्षण उनकोभी अतिक्रम करके धनञ्जयको प्राप्त हुए, सन्तरणक्लान्त व्यक्ति स्थलभाग प्राप्त होनेसे जैसे आह्लादित होते हैं, तद्रूप अर्जुनको देखके सात्यकी सन्तुष्ट हुए।

महात्मा केशव सात्यकीको आवते देखके अर्जुनसे बोले, हे पार्थ! यह तुम्हारे पदानुसार शैनेय आवते हैं, यह वीर तुम्हारा शिष्य औ प्राणाधिक प्रियसखा! यह वीर योधगणको तृणतुल्य गणना करके पराजय करता है, इनके प्रभावसे द्रोण औ कृतवर्मा पराजित हुए, यह सर्वदा धर्मराजके हित-साधनमे तत्पर हैं, अनेक वीरोंका संहार करके तुम्हारे पास आए हैं।

महावीर अर्जुन कृष्णका वचन सुनके विमनायमान होके बोले, हे महाबाहो! सात्यकीके आगमनसे हमको कुछ प्रस-न्नता नहीं है, धर्मराज सात्यकीसे विहीन होके जीवित है कि नहीं सन्देह, सात्यकीके ऊपर धर्मराजके रक्षाका भार अर्पित हुआ था, तब वह क्यों हमारे पास आए, इससे बोध होता है कि धर्मराज द्रोणसे निगृहीत हुए, जयद्रथके वध-मेभी विलक्षण व्याघात हुआ, यह देखो भूरिश्रवा सात्यकीसे युद्ध करनेको धावमान होते हैं, हम जयद्रथके वधके लिये गुरुतर भारसे आक्रान्त हुए हैं, इस समय धर्मराजका तत्त्वा-वधान औ सात्यकीका रक्षा करना हमको अवश्य है, ईधर

भो अस्ताचलोन्मुख हुए हैं, शीघ्र जयद्रथका विनाश

करना है, हे माधव! संप्रति सात्यकीके शर सब निःशेष होने पर आए हैं, औ वह अति श्रान्त हुए हैं, अश्व औ सारथिभी श्रान्त हुए हैं, सहायसम्पन्न भूरिश्रवा अभी श्रान्त नही हैं, सात्यकी क्या उनको जय कर सकेंगे, धर्मराजका क्या यह बुद्धि विपर्य्यय हुआ जो सात्यकीको हमारे पास भेजा, द्रोणाचार्य्य आमिषलोलुप श्येनके तुल्य धर्मराजके ग्रहण करनेमे यत्नवान् हैं, इससे हमारा चित्त अत्यन्त सन्दिहान है।

इति १४१ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर भूरिश्रवा सात्यकीको आगत देखके क्रोधसे उनके सन्निकट आयके बोले, हे शैनेय! आज भाग्यसे तुम हमारे नेत्रगोचर हुए हो, आज हम रणस्थलमे चिर-सञ्चित मनोरथ पूर्ण करेंगे, यदि तुम रणसे पलायन करोगे तो हमसे जीवित नही रहोगे, आज तुम्हारा संहार करके कुरुराजको आनन्दित करेंगे, आज कृष्ण औ अर्जुन तुमको निहत देखेंगे, जिसके आज्ञासे सैन्यमे प्रविष्ट हुए हो, वह धर्मराज तुमको निहत सुनेंगे, अब आज तुम्हारा निस्तार नही है।

हे महाराज! सात्यकी भूरिश्रवाका यह कटुवाक्य श्रवण करके हास्यमुखसे बोले, हे कौरवेय! हम युद्धमे भीत नही हैं, केवल वाक्यसे हमको भय देखावना किसीका साध्य नही है, जो हमको शस्त्रशून्य करेगा वह हमारा संहार करेगा वह चिरकाल अप्रतिहतगति होके अवस्थान करेगा, जो होय, वृथा वाग्जाल विस्तार करनेका क्या प्रयोजन है, जो कहते हो सो करो, तुम्हारा यह आस्फालन शरत्कालीन मेघके तुल्य है, इस प्रकार परस्पर कटूक्ति करके प्रहार करने लगे, तब भूरिश्रवा सात्यकीको शरनिकरसे समाच्छन्न

करके दश बाण बिद्ध करने लगे, तदुत्तर अनवरत असंख्य बाण निक्षेप करने लगे, सात्यकीने उनके बाण उपस्थित न होते होते बीचहीमे खण्ड खण्ड कर दिया, इस प्रकार दोनो वीर शरवर्षण करने लगे, तब उन दोनोके कलेवर छिन्नभिन्न होय रुधिरधारा निर्गत होने लगी, इस प्रकार परस्पर प्राण संहारमे प्रवृत्त होय परस्परको लक्षित करने लगे, अनन्तर दोनो वीर अस्त्रहीन औ रथहीन होके असियुद्ध करनेमे प्रवृत्त हुए, दोनो खड्गचर्म लेके रणस्थलमे सञ्चरण करने लगे, तब वह दोनो वीर मण्डलाकार भ्रमण, भ्रान्त, उद्भ्रान्त, आबिद्ध, आप्लुत, सम्पात औ समुदीर्ण प्रभृति विविधगति प्रदर्शन पूर्वक परस्पर प्रहार करने लगे, परस्पर छिद्रान्वेषी होके आश्चर्य वल्गन, शिक्षालाघव औ सौष्ठव पूर्वक परस्पर आकर्षण करने लगे, इस प्रकार वह वीरद्वय सेनाके समक्ष परस्पर कियत्क्षण प्रहार करके क्षणकाल विश्राम करने लगे, अनन्तर विशालवक्ष दीर्घबाहु युद्धकुशल दोनो वीर परस्पर खड्गचर्म छेदन करके बाहुयुद्धमे प्रवृत्त हुए, लोहार्गल तुल्य भुजद्वयसे परस्पर बाहुवेष्टन करके भुजबन्धन औ भुजमोक्षण करने लगे, क्षणमे मस्तकाघात, क्षणमे चरणाकर्षण, क्षणमे तोमर, अंकुश प्रहार, क्षणमे पादवेष्टन, क्षणमे भूतलभ्रमण, क्षणमे गत प्रत्यागत, औ क्षणमे पातन, उत्थान औ लंघन करते हुए घोरयुद्ध करने लगे, सबही द्वात्रिंशत्क्रियाविशिष्ट युद्ध देखने लगे, उस समय सात्यकीको आयुध निःशेष हो गये थे, तब वासुदेव अर्जुनसे बोले, हे पार्थ! देखो धनुर्द्धराग्रगण्य सात्यकी रथशून्य होके संग्राम करते हैं, सात्यकी तुम्हारे पीछे अनेक योद्धाओसे युद्ध कर चुके हैं, भूरिश्रवा उनको श्रान्त देखके युद्धमे प्रवृत्त हुए हैं, यह युक्त नही है, उसी समय भूरिश्रवाने सात्यकीको आघात किया, कृष्ण वह देखके

पुन: बोले, धनञ्जय! सात्यकी दुष्कार्य्य करके भूरिश्रवाके वशवर्ती हुए हैं, वह तुम्हारे प्रियशिष्य हैं उनकी रक्षा करना तुमको अवश्य है।

धनञ्जय हृष्टचित्तसे बोले, हे वासुदेव! देखो वनमें मत्त-मातङ्गोंकी जैसी क्रीड़ा होती है, वैसेही सात्यकी भूरिश्रवासे क्रीड़ा करते हैं, इतनेमें भूरिश्रवाने सात्यकीको भूतलमें पातित कर दिया, वह देखके सैन्यमें हाहाकार होने लगा, सिंह जैसा गजको आकर्षण करे तद्रूप भूरिश्रवा सात्यकीको आकर्षण करने लगे, तदुत्तर कोशसे खड्ग निष्कासन पर्वक सात्यकीके केशा-कर्षण औ वक्षस्थलमें पदाघात करके मस्तकछेदनमें प्रवृत्त हुए, उस समय महावीर सात्यकी दण्डभ्रमित कुलालचक्रके तुल्य केशधारी भूरिश्रवाके हस्तसहित मस्तक विघूर्णन करने लगे, तब वासुदेव सात्यकीको तदवस्थ देखके अर्जुनसे बोले, हे पार्थ! देखो सात्यकी भूरिश्रवाके वशवर्त्ती हुए हैं, वह तुम्हारे प्रियशिष्य औ धनुर्वेदमें तुमसे न्यून नहीं हैं, भूरिश्रवा उनका पराभव करेंगे तो सत्यविक्रम नाम व्यर्थ हो जायगा, तब अर्जुन भूरिश्रवाकी मनमें प्रशंसा करते हुए बोले, कुरु-कुलतिलक भूरिश्रवा वृष्णिप्रवीर सात्यकीका नाश न करके खगेन्द्र जैसा गजको आकर्षण करता है तद्रूप आकर्षण करते हैं, इससे हम बहुत आह्लादित हुए हैं, हे वासुदेव! हम निरन्तर सिंधुराजको देखते हैं, इससे भूरिश्रवा हमारे दृष्टि-गोचर नहीं होते हैं, जो होय! इस काल सात्यकीके रक्षाके लिये दुष्कार्य्य करते हैं, यह कहके गाण्डीवमें क्षुरप्र योजन करके निक्षेप किया, वह क्षुरप्रने आकाशसे च्युत उल्काके तुल्य भूरिश्रवाका अङ्गदभूषित खड्गसहित हस्त छेदन कर दिया।

इति १४२ अध्याय।

हे महाराज! महावीर भूरिश्रवाका खड्गसहित दक्ष अङ्गद्युक्त अर्जुनके शरसे पंचास्य भुजङ्गके तुल्य भूतलमे निपतित हुआ, तब भूरिश्रवा अपनेको नितान्त अकर्मण्य जानके सात्यकीको छोडके अर्जुनको तिरस्कार करके कहने लगे, हे कौन्तेय! हम अन्य मनसे कार्य्यान्तरसे व्याप्त थे, उस अवस्थामे हमारा भुजच्छेदन किया, सो गर्हित कार्य किया, धर्मराज हमारे बधका वृत्तान्त पूछेंगे तब क्या कहोगे? तुमने जो हमारे ऊपर अस्त्र प्रयोग किया, वैसा अस्त्र प्रयोग करनेका इन्द्र वा रुद्र वा द्रोणाचार्य्य वा कृपाचार्य्यने उपदेश किया था, तुम अन्य वीरोंसे अस्त्रका धर्म अधिक जानते हो, तब क्या जानके अप्रवृत्तके ऊपर अस्त्र प्रयोग किया, साधुलोग अप्रमत्त, भीत, रथशून्य, प्रार्थनापरतन्त्र औ विपदापन्नको कदापि प्रहार नही करते हैं, तुमने नीचाचरण करके पाप कार्य्य किया, आर्यलोक अन्यासक्तको कदापि प्रहार नही करते हैं।

अर्जुन बोले, हे वीर! निश्चय बोध होता है, कि मनुष्य जराजीर्ण होता है, तब उसके बुद्धिको विपर्यय होता है, हम धर्मज्ञ होके क्यों अधर्म करेंगे, क्षत्रियगण पिता भ्राता औ बान्धवोंके सहित युद्धमे प्रवृत्त होते हैं, रणस्थलमे आत्मरक्षा-ही करना राजाका धर्म नही है, जिनको कार्य्यमे नियुक्त किया है, उनकी रक्षा पहिले कर्नी चहिये, उनके रक्षित होनेसे राजा सुरक्षित होते हैं, महावीर सात्यकीने हम लोगोंके निमित्त नितान्त दुष्कर कार्य्यमे प्रवृत्त हुए है, प्राणत्यागसेभी निरपेक्ष होके युद्धमे तत्पर हुए,वह हमारे शिष्य, संबन्धी औ दक्षिणभुजस्वरूप है, यदि उनको निहन्यमान देखे उपेक्षा करते तो अवश्य हम पापभागी होते,हमने इसी लिये सात्यकी को रक्षा किया, तब तुम क्यों वृथा हमारे ऊपर रुष्ट होते हो?

तुम्हारे अन्यके साथ युद्धावस्थामें भुजच्छेदन किया इसमें हमारी निन्दा मत करो, विशेष विवेचना करनेसे हम निन्दनीय नहीं हैं, इस भीषण समरसागरमें एकाकी सात्यकी असंख्य महारथोंके साथ संग्राम करते हुए, उनका पराजय पूर्वक श्रान्तवाहन, अस्त्रपीड़ित, क्लान्त औ विमनायमान होके तुम्हारे वशवर्ती हुए, तुम क्या उनका पराभव करके शौर्य्याभिमान प्रकाश करते हो, तुम खड्गसे उनका शिरश्छेद करते थे इसमें हमने रक्षा किया, कोईभी आत्मीयको विपद्ग्रस्त देखके उपेक्षा नकती है? तुम आश्रितोंसे कैसा व्यवहार करते हो, जो होय, तुम आत्मरक्षामें असनोयोगी होके परको पीडित करते थे, इस लिये अपनीही निन्दा कर्नी तुमको उचित है।

हे महाराज! भूरिश्रवा यह सुनके प्रायोपवेशनमें कृतसंकल्प हुए, वह ब्रह्मलोकगमनकी अभिलाषसे सव्यहस्तसे शरशय्या प्रस्तुत करके इन्द्रियाधिष्ठात्री देवतामें इन्द्रिय ग्रामको समर्पण करके सूर्य्यमें दृष्टि औ चन्द्रमें मनस्समाधान पूर्वक महोपनिषद् ध्यान करते योगारूढ़ होय मौनावलम्बी हुए, तब कौरव सैन्य समुदाय अर्जुनकी निन्दा औ भूरिश्रवाकी प्रशंसा करने लगे, कृष्ण औ अर्जुन निन्दा श्रवण करके कुछभी न बोले, भूरिश्रवाकी प्रशंसा सुनके कुछभी आह्लादित न हुए, तब धनञ्जय भूरिश्रवा औ आपके पुत्रोंका वाक्य सहन न करते अक्रुद्ध चित्तसे भूरिश्रवासे बोले, हे यूपकेतो! हमारा पक्षीय जो कोई, हमारे संमुख रहेगा उसको कोई विनाश नहीं कर सकेगा, हम प्राणपणसे उसकी रक्षा करेंगे, हमारा यह महाव्रत है, सो सब क्षत्रिय जानते हैं, यह विचार करके हमारी निन्दा नहीं कर्तव्य है, यथार्थ धर्म न जानके अन्यकी निन्दा करना विधेय नहीं है, हम तुमको प्रभूतअस्त्रयुक्त औ अस्त्रहीन सात्यकीका संहार करते देखके तुम्हारा बाहुच्छेदन किया

सो अधर्म कदापि नहीं है, परन्तु कहो तुम रथ, वर्म औ अस्त्रहीन बालक अभिमन्युका बध किया, सो धार्मिकोंमें प्रशंसनीय हुआ है?

हे महाराज! तब महावीर भूरिश्रवा पार्थका यह सुनके मस्तक द्वारा भूमिस्पर्श पूर्वक अर्जुनने धर्ममार्गहीसे बाहुछेदन किया यह जनावनेके लिये सव्यहस्तसे दक्षिण भुजलेके उनको प्रदान करके अधोमुख होय तूष्णींभूत होगए, तब अर्जुन बोले, हे भूरिश्रवः! चारो भ्रातामें जैसी हमारी प्रीति है, वैसही तुम्हारेमें भी है, इस लिये हम महात्मा केशवके आदेशानुसार कहते हैं, शिविराजा जिस पवित्र स्थानमें गए हैं, तुमभी उसी स्थानमें गमन करो, तब वासुदेव बोले, हे भूरिश्रवः! तुमने असंख्य यज्ञोंका अनुष्ठान किया है, इस लिये ब्रह्मा प्रभृति सुरगण हमारे जिस स्थानकी प्रार्थना करते हैं, तुम शीघ्र उसी स्थानमें गमन पूर्वक हमारे समान होके गरुड़से वाहित हो।

सं०। अनन्तर महावीर सात्यकीने भूरिश्रवासे मुक्त होके छिन्नबाहु निरपराधी उपविष्ट महात्मा भूरिश्रवाका मस्तक छेदनके वासनासे खड्ग ग्रहण किया, तब सब सैन्य उच्चस्वरसे निन्दा करने लगे, महात्मा कृष्ण, अर्जुन, भीमसेन, उत्तमौजा युधामन्यु, अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य, कर्ण, वृषसेन औ सिन्धुराज वारंवार उनको निषेध करने लगे, परन्तु सात्यकीने किसीका वाक्य न सुनके खड्गाघातसे प्रायोपविष्ट संयमी भूरिश्रवाका मस्तक छेदन कर दिया, सिद्धचारणादि भूरिश्रवाको धन्यवाद देने लगे, सैनिक लोग कहने लगे, इस विषयमें सात्यकीका कुछभी अपराध नहीं है, भाग्यमें जो था, सो हुआ, इस लिये रोषाविष्ट होना हम लोगोंको युक्त नहीं है, विधाताहीने सात्यकीके हस्तसे भूरिश्रवाका बध निर्देश किया।

तब सात्यकीने क्रोधसे कौरवोंसे बोले, हे धर्मकञ्चुकधारि अधार्मिक कौरवगण! तुम लोग हमको भूरिश्रवाके विनाश करनेमे निषेध करके धार्मिकता प्रकाश करते थे, परन्तु अति बालक अस्त्रहीन सुभद्रानन्दनके विनाशमे तुम्हारा धर्म कहां था? हमने पहिले प्रतिज्ञा किया था, जो हमको भूतलमे पातित करके वक्षस्थलमे पदाघात करेगा वह मुनिव्रतधारीभी होय तो उसका नाश करेंगे, अर्जुनने स्वीय प्रतिज्ञापालनके लिये हमको वञ्चित किया, जो होय, जो भाग्यमे रहता है तो होता है, भूरिश्रवाके बधसे हमको क्या अधर्म हुआ? महाकवि बाल्मीकने कहा है, स्त्रीका बध नही करना शत्रुको तो शोष अवश्य देना चहिये।

हे महाराज! सात्यकीका यह वाक्य सुनके पाण्डव औ कौरवोने कुछभी उत्तर नही दिया, इस प्रकार भूरिश्रवा देहत्याग करके पूर्वकृत पुण्योसे आकाशमण्डल व्याप्त करके ऊर्द्ध लोकमे समागत हुए।

इति १४२ अध्याय।

धृ०। सात्यकी युधिष्ठिरके पास प्रतिज्ञा करके अनायास सैन्य सागर समुत्तीर्ण हुए, जिस सात्यकीको द्रोण, कर्ण, विकर्ण औ कृतवर्मा पराजित न कर सके, भूरिश्रवाने किस प्रकार उनको बलपूर्वक भूतलमे पातित किया?

सं०। सात्यकी औ भूरिश्रवाका जन्म वृत्तान्त कहते हैं, सुनिये, महर्षि अत्रिके पुत्र सोम, सोमके पुत्र बुध, बुधके पुत्र पुरूरवा, पुरूरवाके पुत्र आयु, आयुके पुत्र नहुष, नहुषके पुत्र ययाति, ययातिके पुत्र यदु, यदुके वंशमे देवमीढ़ हुए, देवमीढ़के पुत्र शूर, शूरके पुत्र वसुदेव औ शूरके वंशमे शिनि हुए, वह शिनिने देवक राजाके कन्याके स्वयंवरमे सकल नर-

पतिको पराजय करके देवकनन्दिनीका ग्रहण किया था, वह शिनि उस देवकीका वसुदेवके साथ परिणय करनेके इच्छासे रथमे लेके गृहगमनको उद्यत हुए, उस समय महा-वीर सोमदत्त शिनिका यह कार्य्य देखके सहन न कर सके इससे युद्धमे प्रवृत्त हुए, दो प्रहर दोनो वीरोका अद्भुत बाहु-युद्ध हुआ, अन्तमे महावीर शिनिने अनेक भूपालोके समक्ष बलपूर्वक सोमदत्तको भूतलमे पातित करके केशाकर्षण पूर्वक करवाल उद्यत करके उनको पदाघात किया, तदुत्तर कृपापरवश होय "तुम जीवित रहो' ऐसा कहके छोड़ दिया।

हे कुरुराज! महाराज सोमदत्त इस प्रकार शिनिसे आघातित होके असर्षित चित्तसे भगवान् भवानीपतिकी आराधना करने लगे, वरदाता महादेव सोमदत्तके भक्तिमात्र से प्रसन्न होय वर मांगनेको कहने लगे, तब सोमदत्तने कहा, भगवन्! हम ऐसा एक पुत्र प्रार्थना करते है, कि वह असंख्य महीपालके समक्ष समरांगणमे शिनिके पुत्र वा पौत्रको निक्षेप करके पदाघात करे, महादेव तथास्तु कहके अन्तर्धान होगए, सोमदत्तको उसी वरदानसे भूरिश्रवा पुत्र हुए, भूरिश्रवाने महादेवके वरदानसे समस्त नरपतिके समक्ष शैनेय सात्यकीको पातित करके पदाघात किया, हे महाराज! जो आपने पूछा सो कहा, सात्यकीको कोई पराजित नही कर सकता है, वृष्णिवंशीय सब देव दानवकेभी जेता हैं, वह कहा दुर्नीति वा अधर्म कदापि नही करते, यह सब आपके दुर्नीति हीसे घटना हो रही है।

इति १४४ अध्याय।

४०। भूरिश्रवाके निहत होने पर किस प्रकार युद्ध हुआ।

सं०। भूरिश्रवाके परलोक गमनके उत्तर अर्जुन वासु-देवसे बोले, हे हृषीकेश! तुम शीघ्र जयद्रथके समीप रथ चालन करके हमारी प्रतिज्ञा सफल करो, अब दिवाकर सत्वर अस्तं-गत होंगे, हमको यह कार्य्य शीघ्र करना चाहिये, कौरव-पक्षीय वीरगणभी प्राणपणसे सिंधुराजकी रक्षा करते हैं, इस लिये जिसमें हम दिवाकर अस्त न होते उनका नाश होना चाहिये, वासुदेव तत्क्षणही जयद्रथके अभिमुख रथ चालन करने लगे, तब दुर्य्योधन, कर्ण, वृषसेन, शल्य, अश्वत्थामा, कृप औ सिंधुराज अमोघास्त्र अर्जुनको वेगसे आगमन करते देखके उनके सम्मुख धावमान हुए, महावीर सिंधुराजको सम्मुख देखके क्रोधप्रदीप्त नेत्रसे उनको दग्ध करने लगे।

हे महाराज! तब दुर्य्योधन कर्णसे बोले, हे कर्ण! अर्जुनका यही युद्ध समय उपस्थित हुआ है, जिसमें जयद्रथका बध न होय पराक्रम प्रकाश करके वही चेष्टा करना चाहिये, दिवाभाग अति अल्प अवशिष्ट है, शरनिकरोंसे शत्रुको विघ्न करनेका उपाय करो चाहिये, दिनक्षय होनेहीसे हमारा जय हो जायगा, धनञ्जयको प्रतिज्ञा भंग होनेहीसे अग्निमें प्रवेश करेंगे, उनके नष्ट होनेसे उनके सहोदर मुहूर्तमें प्राण त्याग करेंगे, तब हम ससागरा पृथ्वी निष्कण्टक भोग करेंगे।

महावीर कर्ण बोले, हे राजन्! भीमसेनने वारंवार शरजालसे हमारा शरीर छिन्नभिन्न कर दिया है, रणस्थलसे जाना नहीं इसी लिये स्थित हैं, हमारे अङ्ग प्रत्यङ्ग अवसन्न हुए हैं, जो होय तुम्हारे लिये प्राणपणसे साध्यानुसार चेष्टा करेंगे, हम रणस्थलमें शरनिकर वर्षण करेंगे तो धनञ्जय कदापि जयद्रथको प्राप्त न होंगे, हितानुष्ठानपरतंत्र भक्ति-परायण जैसा कार्य्य करते हैं, तद्रूप हम कार्य्य करेंगे, परन्तु जयद्रथ पराजय दैवायत्त है, ऐसा दोनो बोलते हैं, इतनेमें

धनञ्जय आपकी सैन्यकी संहारमे प्रवृत्त होय निशित भल्ल द्वारा वीरोंके भुज औ मस्तक छेदन करने लगे, तदुत्तर अश्व रथ गज चूर्ण२ खंड२ करने लगे। असंख्य रथ, गज, अश्व, धुज, चक्र, वीर निपतित होने लगे, तृणराशिकी समान सैन्यध्वंस करने लगे, इस प्रकार संहार करके सिंधुराजकी समीप उपस्थित हुए, वह भीम औ सात्यकीसे सुरक्षित होके प्रज्वलित अग्निकी समान शोभित होने लगे, तब द्रोण, कर्ण, वृषसेन, शल्य, अश्वत्थामा औ कृप यह सब जयद्रथको साथमे लेके धनञ्जयको वेष्टन करने लगे, संग्रामकोविद महावीर धनञ्जय धनुष्टंकार औ तलध्वनि करते मानो नृत्य करते हैं, कौरवपक्षीय वीर सब जयद्रथको पृष्ठभागमे करके कृष्णसहित धनञ्जयके संहारमे अभिलाषी हुए, उस समय भास्कर लोहितवर्ण हुए, कौरवपक्षीय सूर्य्यको आच्छादित होय शीघ्र अस्त गमन वासना करते हुए, धनञ्जयके ऊपर घोर शर वर्षण करने लगे, धनञ्जय उनके शर खण्ड खण्ड करते उनको विद्ध करने लगे, अश्वत्थामा धनञ्जयको निवारण करने लगे, सात शरसे कृष्णको औ दश शरसे धनञ्जयको विद्ध किया, धनञ्जय उनके शर निवारण करके प्रत्येकको नव नव बाणसे विद्ध करने लगे, तब अश्वत्थामा पञ्चविंशति, वृषसेन सात, दुर्य्योधन विंशति, कर्ण औ शल्य तीन तीन शरक्षेप करके गर्जन करने लगे, तब धनञ्जयने बाणोंको निवारण करके असंख्य वीरोंका प्राण संहार करते हुए, जयद्रथके निकट गमन करने लगे, तब कर्ण निवारण करने लगे, धनञ्जयभी उनको विद्ध करने लगे, तदुत्तर सात्यकी तीन, भीम तीन, धनञ्जय सात शरसे कर्णको विद्ध करने लगे, कर्णने चतुःषष्टि शरसे प्रत्येकको विद्ध किया, इस प्रकार दारुण युद्ध उपस्थित हुआ, अनन्तर धनञ्जयने कर्णको शत सायकसे विद्ध

किया, कर्णने रुधिराक्त कलेवर होके पंचाशत् शरोंसे उनको विद्ध किया, धनञ्जयने कर्णका हस्तलाघव देखके नितान्त क्रुद्ध होके उनका धनु छेदन पूर्वक नव बाणसे विद्ध करके उनके संहारकी वासनासे एक सूर्य्यसंकाश बाण प्रक्षेप किया, अश्वत्थामाने तीक्ष्ण अर्द्धचन्द्रसे वह बाण छेदन कर दिया, तब सूतपुत्रने अन्य धनु लेके सहस्र बाणोंसे धनञ्जयको आच्छन्न कर किया, धनञ्जयने सत्वर वह शर निवारण करके सहस्र बाणसे कर्णको समाच्छन्न कर दिया, इस प्रकार दोनोका दारुण युद्ध होने लगा, तब दुर्य्योधन स्वपक्षीयोंको कहने लगे, कि हे वीरगण! कर्णने हमको कहा है, वह धनञ्जयका नाश किये बिना निवृत्त न होंगे, इस लिये सावधानतासे उनको रक्षा करो, यह कहते है, इतनेमे धनञ्जयने चार बाणसे कर्णके चारो अश्व औ एक भल्लसे सारथिका संहार करके शर निकरसे उनको आच्छन्न कर दिया, कर्ण धनञ्जयके शरसे समाच्छन्न, हताश्व औ हतसारथि होके मोहसे कर्त्तव्यतामूढ़ हो गए, तब अश्वत्थामा कर्णको लोय रथपर आरोपित करके पुनः युद्धमे प्रवृत्त हुए, उस समय मद्रराजने त्रिंशत् शरसे धनञ्जयको विद्ध किया, कृपाचार्य्यने द्वाविंशति शरसे वासुदेवको विद्ध किया, सिंधुराजने चार औ वृषसेनने सात बाणसे विद्ध किया, इस प्रकार प्रत्येक वीर कृष्ण औ धनञ्जयको प्रहार करने लगे, तब धनञ्जय अश्वत्थामाको चतुःषष्टि, मद्रराजको शत, औ जयद्रथको दश भल्ल, कृपाचार्य्यको विंशति औ वृषसनको तीन बाणसे विद्ध करके गर्जन करने लगे, तब आपके पक्षीय वीर सब पार्थको प्रतिज्ञाघात करनेके लिये, सत्वर उनके निकट धावमान हुए।

अनन्तर अर्जुनने कौरवोको त्रासोत्पादन करके चतुर्दिक् वारुणास्त्र प्रयोग किया, कौरवभी महार्ह रथारूढ होके शर-

वर्षण कर्ते हुए अर्जुनाभिमुख धावमान हुए, तब अर्जुन पूर्व्व वैर स्मरण करके क्रोधसे गाण्डीवनिर्मुक्त शरनिकरसे चतुर्दिक् समाच्छन्न कर दिया, तब कौरवगण गदा, शक्ति, लोहार्गल औ अन्यान्य अस्त्र निक्षेप कर्ने लगे, तब धनञ्जय हास्य करके शराग्निसे उनको दग्ध करने लगे, इसप्रकार असंख्य वीर अस्त्र- हीन औ छिन्नदेह होके निपतित होने लगे।

इति १४५ अध्याय।

हे महाराज! इस प्रकार धनञ्जय सैन्य संहार करने लगे, तब कौरवगण उद्भ्रान्त औ उद्विग्न होने लगे, तब धनञ्जयने गाण्डीवनिर्मुक्त शरजालसे चतुर्दिक् आच्छन्न करके इन्द्रास्त्रका प्रयोग किया, उस अस्त्रसे असंख्य अग्निमुख प्रदीप्त दिव्यास्त्र उत्पन्न होने लगे, उससे आकाशमण्डल महोल्कापरिदृष्ट औ दुर्निरीक्ष्य हो गया, कौरवोंने जो शरजालसे अन्धकार कर दिया था वह सब अन्धकार दूर होय निदाघकालीन रवि- किरणके समान निपतित होके टणराशिके तुल्य सैन्य भस्म होने लगा।

हे महाराज! इस प्रकार धनञ्जय शत्रुओंका जीवन औ कीर्ति लोप कर्ते हुए साक्षात् मृत्युके समान रणस्थलमें भ्रमण करने लगे; तब वह किसीका मस्तक किसीका भुज, किसीके कर्ण, सादिगणके प्रासयुक्त, निषादिगणके तोमर युक्त, रथि- गणके कार्मुकयुक्त, पदातिगणके चर्मयुक्त, सारथिगणके प्रतोद- युक्त बाहु खण्ड२ करके निपातित कर दिये, वह उस समय वारिधारावर्षक जलधरके तुल्य शर वर्षण कर्ते भ्रमण करने लगे, इस प्रकार महावीर धनञ्जय भयङ्कर अस्त्रजाल विस्तार करने लगे, सैन्य सब छिन्न भिन्न हो गया, उसका रण स्थल संहारकारी रुद्रके आक्रीड़ स्थानके तुल्य दृष्ट होने लगा, चतु-

दिक् राशि राशि मुकुट, उष्णीष, कुण्डल, वर्म्म, हस्ती, अश्व-रथ, अङ्गद, अलङ्कार इतस्ततःसे व्याप्त होगया, रुधिरकी विस्तीर्ण नदी वहने लगी।

हे महाराज! मूर्तिमान् अन्तकके तुल्य धनञ्जयके अद्भुत विक्रम प्रकाश करनेसे कौरवोंको अभूतपूर्व भय सञ्चार हुआ, तब धनञ्जय स्वीयास्त्रसे शत्रुओंके अस्त्र निवारण करते हुए रौद्रकर्म्मा नामसे स्वीय परिचय देने लगे, वह रथिगणको अतिक्रम करने लगे, तब मध्यान्हकालीन मार्तण्डके तुल्य दुर्नि-रीक्ष्य हो गए, चतुर्दिक् सुग्ध करके शर वर्षण करते हुए द्रुत-वेगसे भ्रमण करने लगे, उस समय कब कार्मुक ग्रहण, कब शरसन्धान औ कब शरनिक्षेप करते थे सो कुछ भी लक्षित न होता था, इस प्रकार समस्त रथियोंको व्याकुल करके जयद्रथके ऊपर धावमान होके दश वाणसे उनको विद्ध किया, कौरव-पक्षीय पार्थको जयद्रथके अभिमुख देखके उनके जीवनकी आशा छोड़के युद्धसे निवृत्त होने लगे, उस समय जो जो अर्जुनके सम्मुख हुए सो सो जीवित नहीं रहे, अनन्तर अश्व-त्थामाको पञ्चाशत्, कर्णको द्वात्रिंशत्, कृपाचार्य्यको नव, शल्यको षोड़श औ सिन्धुराजको षोड़श वाणसे विद्ध किया, सिन्धुराज पार्थके शरसे क्रुद्ध हो उनका विक्रम सहन न कर सके, तब उन्होंने कङ्कपत्र वाण अर्जुनके औ वासुदेवके ऊपर निक्षेप किये, अर्जुनने वह देखके सत्वर उनके शर निरास करके युगपत् उनके सारथि औ ध्वज छेदन कर दिया, उस समय दिवाकरको अति सत्वर अस्ताचल शिखर पर आरोहण करते देखके कृष्ण अर्जुनसे बोले, हे अर्जुन! यह देखो, महाबल पराक्रान्त छः महारथी जयद्रथको मध्यमे करके अवस्थान करते हैं, सिन्धुराजभी प्राणरक्षार्थ नितान्त भीत हो रहा है, तुम इन छओंका पराजय किये बिना प्राणपणसे यत्न करकेभी जय-

द्रथका वध न कर सकोगे, इस लिये हम सूर्यको आवरण करनेके लिये योगमाया प्रकाशित करेंगे, उस मायाके प्रभावसे जयद्रथ सूर्य अस्तंगत जानके आत्मगोपन नही करेगा, उसी सुयोगमे तुम विनाश कर सकोगे, परन्तु तुम उस समय सूर्य अस्तंगत हुए ऐसा मनमे करके उनके वधसे विराम मत करो, अर्जुनने तत्क्षण कृष्णका वाक्य स्वीकार किया।

अनन्तर वासुदेवने योगमायासे अन्धकार उत्पन्न किया, दिवाकर तिरोहित होनेसे कौरवपक्षीय आह्लादित हुए, सिंधुराज आनन उन्नत करके दिवाकरको निरीक्षण करने लगे, तब वासुदेव पुनः बोले, हे अर्जुन! देखो यह जयद्रथ निःशङ्कचित्तसे दिवाकरको देखते हैं, यही संहारका उपयुक्त समय है, इस लिये सत्वर उनका मस्तक छेदन करके स्वीय प्रतिज्ञा सफल करो, केशवका यह वाक्य सुनके अर्जुन अग्निसंकाश बाणोसे कौरव सैन्यको विनाश करते हुए कृपाचार्यको विंशति कर्णको पञ्चाशत्, शल्यको छः, दुर्योधनको छः, वृषसेनको आठ, सिंधुराजको षष्टि शरोसे विद्ध करके जयद्रथके ऊपर धावमान हुए, कौरवपक्षीय वीरगण अर्जुनके ऊपर असंख्य शर निक्षेप करने लगे, उस समय अर्जुन असंख्य शर जाल विस्तार करने लगे, शत्रुगण पार्थके शरसे व्याकुल होय पलायन करने लगे, उस समय धूलिपटल औ अन्धकार होने से सबकी दृष्टि प्रतिरुद्ध होगई।

इस प्रकार सैन्य विद्रावित करते हुए अश्वत्थामा प्रभृति वीरोको आच्छन्न कर दिया, वीरगण अत्यन्त व्याकुल हुए तब अर्जुनने अग्निसन्निभ मन्त्रपूत गन्धमाल्यचर्चित भयङ्कर शर तूणीरसे निकालके गाण्डीवमे संयोजित किया, आकाश मण्डलस्थ सब महान् शब्द करने लगे, तब वासुदेव पुनः बोले, हे अर्जुन! दिवाकर अस्ताचल पर आरोहण करते हैं, तुम

शीघ्र दुरात्माका शिरश्छेद करो परन्तु जो हम कहते हैं सो सुनो, जयद्रथके पिता वृद्धक्षत्रने बहुत कालमे पुत्र जयद्रथका लाभ किया है, जयद्रथके जन्म कालमे आकाशवाणी हुई थी, सो उन्होने सुनी थी कि तुम्हारा पुत्र सद्गुणसम्पन्न औ कीर्त्तिमान् होगा परन्तु एक क्षत्रियप्रधान समरमे उसका शिरश्छेद करेगा, तब उन्होने सभामे यह वृत्तान्त कहके कहा कि जो इसका शिरश्छेद करके भूतलमे पातित करेगा उसका मस्तक शतधा विदीर्ण होगा, यह कहके जयद्रथको अभिषेक करके आप तपोनुष्ठानको गए, वह इस समय कुरुक्षेत्रके बहिर्भूत स्यमन्तपञ्चक तीर्थमे तपस्या करते हैं, इस लिये तुम दिव्यास्त्रसे जयद्रथका मस्तक छेदन करके उनके अङ्कमे निपातित करो, भूमिमे मस्तक निपातित करोगे तो तुम्हारा मस्तक शतधा भिन्न होगा।

यह सुनके अर्जुनने वह भीषण शर त्याग किया, उस शरने श्येनपक्षी जैसा वृक्षसे फल हरण करता है तद्रूप जयद्रथका मस्तक हरण किया, वह मस्तक धरातलमे निपतित न होते२ शरनिकरसे पुनः उत्तोलित करके स्यमन्तपञ्चकके बहिर्भागमे नीत किया, उस समय वृद्धक्षत्र सन्ध्योपासन करते थे, धनञ्जयने वह मस्तक उन्होके अङ्कमे निपातित किया, वृद्धक्षत्रका जप समाप्तिके अनन्तर आसनसे उत्थित होने पर मस्तक शतधा विदीर्ण होगया।

हे महाराज! इस प्रकार जयद्रथका बध होने पर कृष्णने अन्धकार दूर कर दिया, तब आपके पुत्रोने वासुदेवकृत मायाजाल का विषय जान लिया, जयद्रथ आठ अक्षौहिणी सेना नष्ट करके अर्जुनके हस्तसे निहत हुए, तब आपके पुत्रोके नयन युगलसे अनर्गल अश्रुधारा निर्गत होने लगी, महावीर धनञ्जय देवदत्त शङ्ख औ कृष्ण पांचजन्य शङ्ख वादन करने लगे, भीमसेनभी युधिष्ठिरको बोधित करनेके लिये सिंहनादसे

रोदसी पूरित करने लगी, इधर युधिष्ठिरभी शङ्खनाद औ सिंहनाद सुनके जयद्रथ निहत हुआ, यह अनुमान करके वाद्य वादन द्वारा आपलोग कौरवगणको आनन्दित कर्ते हुए द्रोणके अभिमुख धावमान हुए, उस समय दिवाकर अस्ताचलचूडाव-लम्बी हुए, सोमक औ द्रोणसे घोरतर संग्राम होने लगा, सोमकगण द्रोणके बध वासनासे यत्न पूर्वक युद्ध करने लगे, पाण्डवगणभी जयद्रथ बधसे उन्मत्त होय द्रोणके ऊपर धाव-मान हुए, अर्जुनभी सिंधुराजका बध करके कौरवोंसे युद्ध करने लगा। .

इति १४६ अध्याय।

धृ०। हमारे जामाता जयद्रथ निहत हुए तब कौरवोंने क्या किया?

स०। कृपाचार्य्य जयद्रथको निहत देखके क्रोधसे अर्जुनके ऊपर धावमान हुए, अश्वत्थामाभी अर्जुनके ऊपर धावमान हुए, कृपाचार्य औ अश्वत्थामा अर्जुनको शर वर्षा करके आच्छन्न करने लगे, महावीर अर्जुन उनके शराघातसे व्याकुल पहिले उन दोनोंके बध वासनासे तीक्ष्ण शर निक्षेप करके पीछे संहारवासना त्याग करके मृदु युद्ध करने लगे, अर्जुनके शर उनके ऊपर निपतित होनेसे वह दोनो वीर अत्यन्त कातर हो गए, कृपाचार्य पार्थके शरसे मूर्च्छित होय रथ पर अवसन्न हो गए, सारथिने उनको विह्वल औ क्षत जानके रणसे अप-सारित किया, तब अश्वत्थामाभी देखके भीत हो अर्जुनके निकटसे प्रस्थित हो गए।

तब धनञ्जय कृपाचार्यको रथ पर मूर्च्छित देखके विलाप औ अश्रु मोचन पूर्वक कहने लगे, इस कुलान्तक पापात्मा दुर्य्योधनके जन्मके समय महात्मा विदुरने धृतराष्ट्रसे कहा था

कि इस कुलाङ्गारका नाश करो, इस्से कौरवोंको महाभय उपस्थित होगा, सत्यवादी विदुरका वचन इस समय सप्रमाण होता है, दुरात्मा दुर्य्योधनहीके लिये आज गुरुको शरशय्यामे शयान देखते हैं, इस लिये क्षत्रियोंके आचार औ बलवीर्य्यको धिक् है, हमारे सदृश कौन आचार्य्यके अनिष्टाचरणमे प्रवृत्त होय, महात्मा कृप ऋषिपुत्र, हमारे आचार्य्य औ द्रोणके प्रियसखा, हमने इच्छा न करतेभी उनको शरनिपीड़ित किया, देखके हमारा हृदय विदीर्ण होता है, पुत्रशोकसेभी अधिक शोक होता है, इन्होंने अस्त्रशिक्षाके समय हमको कहा था कि तुम गुरुको प्रहार मत करो, सो आज हमने उल्लङ्घन किया, इस्से हमको धिक् है, उस समय कर्ण पार्थके ऊपर धावमान हुए, युधामन्यु, उत्तमौजा औ सात्यकी कर्णका पार्थके ऊपर धावमान देखके सहसा उनके ऊपर धावमान हुए, तब कर्ण अर्जुनको छोड़के सात्यकीके सम्मुख हुए, तब धनञ्जय हास्य करके कृष्णसे बोले, हे कृष्ण देखो कर्ण सात्यकीके ऊपर धावमान हुए हैं, यह भूरिश्रवाके वधसे क्रुद्ध होय सात्यकीका नाश किये बिना निवृत्त न होंगे, इस लिये कर्णके सम्मुख रथ चालन करो ।

तब केशव समयोचित बोले, हे पार्थ! सात्यकी एकाकी कर्णसे युद्ध करनेमे समर्थ है, उसमेभी युधामन्यु औ उत्तमौजा उनको सहाय हैं, इस काल कर्णसे युद्ध करना तुमको उचित नही है, इनके पास महोल्कासदृश अमोघ इन्द्रदत्त शक्ति है, कर्णने तुम्हारे संहारार्थ उस्को यत्नसे रखा है, अतएव इस समय सात्यकीही युद्ध करे ।

प्र० । भूरिश्रवा औ जयद्रथके वधोत्तर कर्णने सात्यकी-से कैसा युद्ध हुआ ? सात्यकी रथहीन हुए थे, उन्होंने किस रथ पर आरोहण करके युद्ध किया ?

सं०। महात्मा वासुदेव अतीत औ अनागतके ज्ञाता हैं, भूरिश्रवा सात्यकीका पराजय करेंगे सोभी पहिलेही वह जानते थे, इस लिये उन्होंने निज सारथि दारुकको रथ सज्ज करके रखनेको कहा था, अनन्तर वासुदेव सात्यकी को रथ-शून्य औ कर्णको उनके ऊपर धावमान देखके ऋषभ स्वरसे पांचजन्य वादन करने लगे, दारुक वह शङ्ख शब्द सुनके कृष्ण का सङ्केत जानके सात्यकीके निकट गरुड़ध्वज प्राप्त किया, तब सात्यकी केशवके आज्ञासे उस रथ पर आरूढ़ शरवर्षण कर्ते हुए धावमान हुए, तब सात्यकी औ कर्णका दारुण युद्ध उपस्थित हुआ, उभयपक्षीय वीरगण उन दोनोका अद्भुत कार्य्य देखके युद्धविरत हो देखने लगे, दोनोका अलौकिक संग्राम औ गत प्रत्यागत, आवृत्त, मण्डल औ सन्निवर्तप्रभृति गति सारथ्य कार्य देखके विस्मित होने लगे, आकाशमे देव-गन्धर्वभी युद्ध देखने लगे, मित्रार्थ युद्धप्रवृत्त दोनो वीर परस्पर शर वर्षण कर्ने लगे; तब कर्ण शरवर्षण कर्ते हुए सात्यकीको मर्दन करने लगे, सात्यकीभी अनवरत शरनिकर वर्षण करने लगे, दोनोके शरीर क्षत विक्षत हो गए।

अनन्तर सात्यकीने वारंवार शरोंसे कर्णका देह भेद कर्ते हुए उनके सारथिको निपातित कर दिया, अनन्तर चारो अश्वोंका संहार कर्के ध्वजच्छेदन पूर्वक दुर्य्योधनके समक्ष कर्ण को रथहीन कर दिया, अनन्तर मद्रराज शल्य, कर्णात्मज वृषसेन औ अश्वत्थामा चतुर्दिक्से सात्यकी को वेष्टन करने लगे, तब सब सैन्य व्याकुल होय उठा, कर्ण एकान्त विह्वल होय दीर्घनिश्वास त्याग कर्ते दुर्य्योधनके रथ पर आरूढ़ हुए।

महावीर सात्यकी कर्णको रथशून्य कर्के दुःशासन प्रभृति वीरोको रथशून्य औ विह्वल करने लगे, परन्तु भीमसेनके प्रतिज्ञाका स्मरण कर्के उनका संहार नही किया, अर्जुनने

धूतक्रीड़नके समय कर्णके बधकी प्रतिज्ञा किया था इसी उनकाभी संहार नही किया, कर्ण प्रभृति वीरोंने सात्यकीके बधका यत्न किया परन्तु क्षतकार्य न हो सके, हे महाराज! इस भूमण्डलमे कृष्ण, अर्जुन औ सात्यकीके तुल्य कोई धनुर्द्धर नही है।

धृ०। सात्यकीने कृष्णकी अजेय रथ पर आरोहण करके कर्णको रथशून्य किया, अनन्तर अन्य रथ पर वह आरूढ़ हुए थे?

सं०। कियत्क्षणोत्तर दारुककी भाता यथाविधि सज्जित लोह औ काटनपट्टविभूषित विचित्रकूवर सिंहध्वज औ वायुवेगगामी अश्वयुक्त दिव्य रथ सात्यकीके निकट ले आए, सात्यकी उस पर आरूढ़ होय कौरवोंके ऊपर धावमान हुए, दारुक स्वेच्छासे कृष्णके सन्निध गए, तब कर्णके एक सारथिने भी शंखके समान श्वेतवर्ण काञ्चनमय दिव्याश्वयुक्त बहुविध अस्त्रपूर्ण रथ आनयन किया, कर्ण उस पर आरूढ़ होय धावमान हुए, हे महाराज! जो आपने पूछा सो कहा, अब अपने दुर्नीतिसे उपस्थित विनाश वृत्तान्त सुनिये, इस युद्धमे भीमसेनने आपके एकतीस पुत्र निहत किये, अर्जुनने भीष्म औ भगदत्त प्रभृति शत शत वीर नष्ट किये, सात्यकीनेभी असंख्य वीर नष्ट किये, यह सब आपकी दुर्मन्त्रणाका फल है।

इति १४७ अध्याय।

धृ०। रणस्थल सब वीर तदवस्थ हुए तब भीमसेनने क्या किया?

सं०। रथहीन भीमसेन कर्णकी वाक्यसे क्रुद्ध होय अर्जुनसे बोले, हे भ्रातः! कर्ण तुम्हारे समक्ष हमको तुवरक, मूढ़, अस्त्रमूढ़, बालक औ संग्रामकातर कहके वारंवार कटूक्ति

कहता है, हमने पहिले कहा था जो हमको कटूक्ति कहेगा वह हमारो बध्य होगा, हे पार्थ! तुमनेभी पहिले कर्णके बधकी प्रतिज्ञा किया था, इस लिये जिस्से दोनोका वाक्य पालन होय सो चेष्टा करो।

अर्जुन भीमसेनका वाक्य सुनके कर्णके सम्मुख होय बोले, हे सूतपुत्र! तुम नितान्त पापाशय, अदूरदर्शी औ आत्म-श्लाघापरायण हौ, जो होय, जो हम कहते है, सो सुनो, युद्धमे वीरोका जय पराजय दोनो होता है, रणस्थलमे इन्द्र भी कभी जयशाली औ कभी पराजित होते हैं, तुम सात्यकीसे विरथ, विकलेन्द्रिय औ मुमूर्षु हो गए, परन्तु सात्यकीने तुम हमारे बध्य हौ यह जानके तुमको जीवित छोड़ दिया, इस समय तुम भीमसेनको रथशून्य करके दुर्वाक्य बोलते हौ सो अत्यन्त अधर्माचरण करते हौ, शत्रुका पराजय करके आत्म-श्लाघा परग्लानि, वा शत्रुको कटुवाक्य बोलना वीरपुरुषोंका कार्य्य नही है, तुम सूतपुत्र औ अल्पज्ञानी हौ इसीसे असद्व्य-वहार करते हौ, महावीर भीमसेनने समस्त सैन्य, केशव औ हमारे समक्ष अनेक वार तुमको रथहीन किया, परन्तु एक-वारभी परुष वाक्य तुमको कहा नही, जो होय, तुम भीम-सेनको दुर्वाक्य औ हमारे पीछे अन्यान्य वीरोंके सहित होके अभिमन्युका नाश करके गर्व प्रकाश करते हौ, शीघ्रही उसका फलभोग करोगे, हे दुर्मते! तुमने आत्मविनाशही अभि-मन्युका नाश किया, हम तुम्हारा भृत्य, बल, औ वाहन सहित नाश करेंगे, हे राधानन्दन! अब तुम्हारा भयावह समय उपस्थित हुआ है, जो करनी होय सो करलेओ, हम अस्त्र स्पर्श करके कहते हैं, आज तुम्हारे समक्ष तुम्हारे पुत्र वृषसेन का संहार करेंगे, और जो वीर हमारे सम्मुख आवेंगे उनको यमालय भेजेंगे, हे आत्माभिमानी अज्ञान! दुर्मति

दुर्य्योधन निश्चयही तुमको रणस्थलमें रथमें निपातित देखके अनुताप करेगा।

इस प्रकार धनञ्जयने कर्णके पुत्रके बधकी प्रतिज्ञा किया, तब सैन्यमें कोलाहल होगया, उस भयानक समयमें दिवाकर करनिकर संकोच करके अस्ताचल पर आरूढ़ हुए, तब महात्मा वासुदेव धनञ्जयको आलिङ्गन करके बोले, हे अर्जुन! तुम भाग्यसे जयद्रथ बधकी प्रतिज्ञासे उत्तीर्ण हुए, भाग्यहीसे वृद्धक्षत्रभी पुत्रके साथ निहत हुए, इस धार्तराष्ट्र सैन्यमें कार्तवीर्य्यभी आवते तो अवसन्न होते, तुमसे भिन्न दूसरे किसीका सामर्थ्य नही है, इस सैन्यमें अवगाहन करनेका, तुमसे अधिक बलवान् महीपाल दुर्य्योधनके आदेशसे एकत्र हुए हैं, वह तुमको क्रोधाविष्ट देखके तुम्हारे पास आयकेभी युद्ध कर सके नही, तुम रुद्र, इन्द्र औ अन्तकके तुल्य पराक्रम प्रकाश करते हो, अवश्य यह दुरात्मा कर्ण तुम्हारे शरसे निहत होगा, तब हम पुनः तुम्हारो प्रशंसा करेंगे।

तब अर्जुन बोले, हे माधव! हम तुम्हारे अनुग्रहहीसे दुस्तर प्रतिज्ञा सागरसे उत्तीर्ण हुए है, हे मधुसूदन! तुम जिनके नाथ हो उनके जय होनेमें आश्चर्य क्या है, धर्मराज तुम्हारे प्रसादहीसे समग्र पृथिवीका अधिकार करेंगे, हे कृष्ण, हमलोगोंके समस्त कार्य्यका भार आपहीके ऊपर समर्पित है, इस लिये जय लाभ तुम्हाराही हुआ, हम लोग तुम्हारे किङ्कर हैं।

मधुसूदन अर्जुनका यह सुनके भयङ्कर रणस्थल देखावते हुए मन्दवेगसे गमन करने लगे, हे अर्जुन! देखो, यह महाबल पराक्रान्त पार्थिवगण युद्धमें जय औ विपुलयशोलाभके निमित्त तुमसे संग्राम करके तुम्हारे शरसे निहत होय समरांगणमें शयान है, यह उनके शस्त्र आभरण इतस्ततः विकीर्य्य-

साथ ङुए हैं, यह रथ सब चूर्ण अश्व औ हस्ती विनष्ट होय पड़े हैं, यह वर्म सब छिन्नभिन्न हो गए हैं, यह सब हत महीपाल स्वीय प्रभावसे जीवितके ऐसे भासते हैं, इह असंख्य वाहन औ असंख्य अस्त्र, असंख्य तूवर, असंख्य चक्र, असंख्य ध्वज, असंख्य घण्टा, औ असंख्य महार्हवस्त्र पड़े हैं, यह सब पदाति रुधिरलिप्तदेह औ धूलिधूसर होके पृथ्वीको आलिङ्गन करते हैं, यह असंख्य निशाचर, शृगाल औ कुक्कुर आमोद करते हैं, हे महाराज! इसप्रकार वासुदेव हृष्ट अनुचरगणके सहित धनञ्जयको रणस्थल दिखावते औ पांचजन्य शब्द करते ङुए, गमन करने लगे।

इति १४८ अध्याय।

अनन्तर महात्मा हृषीकेश आह्लादपूर्वक धर्मराजके निकट आयके उनको पादवन्दन पूर्वक कहने लगे, हे नरोत्तम! आज आपका परम सौभाग्य है, आज भाग्यसे आपका शत्रु नष्ट ङुआ, अर्जुनभी प्रतिज्ञासे उत्तीर्ण ङुए, धर्मनन्दन कृष्णका वाक्य सुनके परमाह्लादित होय स्वीय रथसे उतर करके कृष्ण औ धनञ्जयको आलिङ्गन करने लगे, औ बोले, हे वीरद्वय! आज भाग्यहीसे नराधम सिंधुराज निहत ङुए, औ आरातिगण शोकसागरमें निमग्न ङुए हैं, आज तुमने अलौकिक कार्य्य किया, हे वासुदेव! तुम त्रैलोक्यके गुरु तुम्हारे सहाय रहनेसे त्रैलोक्यमें असाध्य नहीं हैं, हे गोविन्द! पहिले तुम्हारे प्रसादसे जैसा इन्द्रने दानवोंका जय किया, वैसही तुम्हारे प्रसादसे हम लोग शत्रु पराजय करते हैं, तुम जिस्कोऊपर प्रसन्न हो उनको पृथ्वी पराजय क्या है वह त्रैलोक्य पराजय कर सकते हैं, तुम्हारे प्रसादसे देवगण, अमरत्व औ शक्र देवाधिपति ङुए हैं, तुम सब लोगके स्रष्टा, परमात्मा,

सनातन, अव्यय, पुराणपुरुष, देवदेव, अनादिनिधन, वेद-गीत औ परमेश्वर हो। हे महाराज! युधिष्ठिर इस प्रकार बोले तब कृष्ण औ अर्जुन कहने लगे, हे राजन! आपकी क्रोधाग्निसे कौरव सैन्य दग्ध होता है, जिनको देवतासी पराभव कर सकते नही सो कुरुवृद्ध पितामह भीष्म आपकी क्रोधहीसे शरशय्यामे शयान हुए, आप जिनके द्वेष्टा वह अवश्य मृत्युमुखमे निपतित होंगे।

इस प्रकार कृष्ण औ अर्जुन कहते हैं इतनेमे क्षतविक्षताङ्ग भीमसेन औ सात्यकी उपस्थित हुए, युधिष्ठिर अभिवादन करके पाञ्चालोंसे वेष्टित होय क्षितितलमे स्थित हुए, धर्मराज उनको देखके आनन्दसे बोले, हे वीरद्वय! आज तुम भाग्यहीसे द्रोणरूप ग्राह औ हार्दिक्यरूप मकरयुक्त कौरव सैन्यसागर उत्तीर्ण हुए, भाग्यहीसे द्रोण औ कृतवर्मा पराजित हुए, आज भाग्यहीसे तुम दोनोको कुशल देखते हैं, हे महाराज! युधिष्ठिरने ऐसा कहा, तब सब वीर हृष्टान्तः-करणसे युद्धमे उत्सुक हुए।

इति १४९ अध्याय।

हे महाराज! इधर आपके पुत्र सिंधुराजको निहत देखके धनञ्जयसे उत्साहशून्य औ नितान्त विमनायमान होके दीन-वदनसे भग्नदन्त सर्पके तुल्य दीर्घ निश्वास त्याग करते हुए अश्रुविसर्जन करने लगे, वह लोग अर्जुन, भीम औ सात्यकीके शरोसे निहत सैन्यको देखके विवर्ण, कृश औ अत्यन्त दीन होके मनमे चिन्ता करने लगे, इस पृथिवीमे धनञ्जयके तुल्य योद्धा नही है, उन्होने हमारा सब सैन्य संहार करके सिंधु-राजको निहत किया, परंतु कोई उनका निवारण न कर सके।

पाण्डवगण निश्चय हमारा विपुल सैन्य नष्ट करेंगे, हम लोग जिसके आश्रयसे युद्धमें प्रवृत्त हुए औ कृष्णको तृणके समान जाना अर्जुनने उसी महारथ कर्णका पराजय करके जयद्रथको निहत किया।

हे महाराज! राजा दुर्योधन इस प्रकार कलुषितचित्त होके द्रोणके समीप जाय कौरव औ धार्त्तराष्ट्रका नाश वृत्तान्त कहते हुए बोले, हे आचार्य्य! अस्मत्पक्षीय महीपालोंका विनाश देखिये, वह लोग जिन भीष्मको अग्रसर करके समरमें प्रवृत्त हुए थे, शिखण्डी उनका संहार पूर्वक पूर्णमनोरथ औ विजयान्तर लाभमें लोलुप होके पाञ्चालोंके सहित सेनामुखमें अवस्थान करते हैं, धनञ्जय आपके शिष्य नितान्त दुर्द्धर्ष हैं, वह सात अक्षौहिणी सेनाके संहारकारी होके महावीर जयद्रथका संहार कर गए, हे आचार्य! इस समय हम किस प्रकार अस्मदुपकारी विजयाभिलाषी औ यमालयमें उपस्थित सुहृद्गणके ऋणसे मुक्त होंगे, जो महीपाल हमको राज्यदेनेमें अभिलाषी हुए थे, वह सब समस्त ऐश्वर्य्य त्याग करके समरांगणमें शयान हुए हैं, हम अत्यन्त कापुरुष हैं, हमने मित्रोंको मृत्युमुखमें निपातित किया, हम सहस्र अश्वमेध करेंगे तोभी उस पापका ध्वंस नही होगा, हम शपथ करते हैं कि पाञ्चालोंके सहित पाण्डवोंका नाश करके उन मृत महीपालोंके ऋणसे मुक्त होंगे अथवा उनके शरोंसे निहत होके उनकी सलोकता लाभ करेंगे, हमारे साहाय्यकारी वीरलोग यथोचित रक्षित न होनेसे अब हमारा पक्ष अवलम्बन करनेमें अभिलाषी नही होते हैं। हे आचार्य! आपने संग्राममें हम लोगोंका मृत्युविधान किया है, देखिये आपके धनञ्जयको शिष्य जानके उपेक्षा करनेसे सब वीर नष्ट होते हैं, अब हमको जीवन धारण करनेका कुछ प्रयोजन नही है, आप आज्ञा

दौड़ीये इस हत वीरोंका अनुगमनमें अति उत्सुक हैं।

इति १५० अध्याय।

धृ०। सिंधुराज औ भूरिश्रवाके मरने पर तुम लोगोंका मन कैसा हुआ? औ दुर्य्योधनने सब कौरवोंके आगे द्रोणाचार्य्यको इस प्रकार कहा तब द्रोणने क्या उत्तर दिया? सो कहो।

सं०। भूरिश्रवा औ सिंधुराज निहत होने पर आपके सैन्यमें महान् आर्त्तनाद उपस्थित हुआ, आपके पुत्रकी मन्त्रणाके अन्तमें शतशः वीर पुरुष हत देखके उनकी मन्त्रणाकी सब अवज्ञा करने लगे, महावीर द्रोणाचार्य्य दुर्य्योधनका वाक्य सुनके अत्यन्त विमनायमान होके क्षणमात्र चिन्ता करके बोले, हे दुर्य्योधन! क्यों वृथा हमको वाक्यवाणों से विद्ध कर्ते हो, हमतो पहिले ही से कहते आए हैं कि अर्जुन अजेय हैं, शिखण्डी के अर्जुनसे रक्षित होय महावीर भीष्मको निपातित करने हीसे धनञ्जयका बलवीर्य्य ज्ञात हुआ, हमने दानवगण कोभी अवध्य महावीर भीष्मको निहत निरीक्षण करके कौरव सैन्यका समूल निर्मूलन स्थिर किया है, हम लोग जिनको सर्व्वापेक्षया महावीर बोध कर्ते थे, वही निहत हुए। तब हमारा क्या उपाय है, हे वत्स! शकुनिने कौरव सभामें जो अक्षनिक्षेप किया वह अक्ष नहीं शत्रु विनाशन तीक्ष्ण शर थे, वही सब शर इस समय अर्जुनसे निक्षिप्त होय हम लोगों का संहार कर्ते हैं, हे दुर्य्योधन! धीरप्रकृति महात्मा विदुरने तुम्हारेही हितके लिये अनेक उपदेश किया औ तुम्हारे समक्ष वारंवार विलाप औ परिताप किया, परंतु तुमने अनादर करके उनके वाक्य पर कर्णपातभी नहीं किया, उसीसे यह हत्याकाण्ड उपस्थित हुआ है, जो हितकारी सुहृद्का वाक्य

न सुनके अपने मनका कर्त्ता है वह अवश्य शोकाकुल होता है, हे महाराज! तुमने जो सत्कुलोत्पन्न सत्कारोपयुक्त द्रौपदी को हम लोगोंके समक्ष सभामे आनयन किया था, उसी अधर्मका यह फल है, परलोकमे इससे भी अधिक फल भोग करोगे, तुमने कपटाचरण पूर्वक पाण्डवो द्यूतमे पराजित करके मृग चर्म परिधान करायके वनमे प्रव्राजित किया, कोईभी हमसे भिन्न ब्राह्मणवादी मनुष्य उन धर्मपरायण पुत्रतुल्य पाण्डवोका अनिष्ट न करेगा? तुमने शकुनिके सहायतासे धृतराष्ट्रके सम्मतिसे पाण्डवोका कोपाग्नि संग्रह किया है, दुःशासन और कर्णने उसको प्रदीप्त किया है, देखो तुम सब पराजित होकेभी जयद्रथके रक्षार्थ यत्नसे अर्जुनके निवारणार्थ गए थे, तब क्यों तुम लोगोंके बीचमे जयद्रथ नष्ट हुआ, जो होय, इस समय पाण्डव और सृञ्जय सैन्य हमारे संमुख आगमन कर्त्ते हैं, हम तुम्हारे हितार्थ समस्त सृञ्जयगणके नाश किये विना कवच मोचण न करेंगे, तुम अश्वत्थामासे कहो, तुम सोमकोका परित्याग मत करो, तुम्हारे पिताने जो आज्ञा किया है वह प्रतिपालन करो, हम तुम्हारे वाक्यसे पीड़ित होय सैन्यमे युद्ध कर्नेको चले। तुम समर्थ हो तो सैन्यको रक्षा करो, पाण्डव और सृञ्जय अतिशय क्रुद्ध हुए हैं, वह रात्रिको भी युद्धसे निवृत्त न होंगे, हे महाराज! द्रोणाचार्य दुर्य्योधन को ऐसा कहके पाण्डव और सृञ्जयके ऊपर धावमान हुए, दिवाकर जैसा नक्षत्रोका तेज नाश कर्त्ते है तद्रूप क्षत्रियो का तेज विनाश करने लगे।

इति १५१ अध्याय।

हे महाराज! द्रोणाचार्य्यका यह वाक्य सुनके दुर्य्योधन

रोषसे युद्धार्थ प्रस्तुत होके कर्णसे बोले, हे राधेय! देखो एकाकी धनञ्जय कृष्णके सहायतासे द्रोण प्रभृति वीरोंके समक्ष दुर्भेद्य व्यूह भेद कर गए, हमारा सैन्य निःशेषप्राय हो गया, द्रोणाचार्य अर्जुनका निग्रह करते तो अर्जुन कदापि प्रतिज्ञासे उत्तीर्ण न होते, हमारा क्या दुर्भाग्य! आचार्यने सिन्धुराजको अभय देके अर्जुनको मार्ग दिया, वह पहिले ही सिंधुराजको गृह जानेकी अनुमति देते तो कदापि ऐसा जनक्षय न होता। हा! हमारे समस्त चित्रसेन प्रभृति भ्राता नष्ट हुए।

कर्ण बोले, हे महाराज! द्रोणाचार्य जीवित निरपेक्ष होके बलवीर्य उत्साहानुसार युद्ध करते हैं, तुम उनकी निन्दा मत करो, अर्जुन उनका अतिक्रम कर गए उसमें उनका कुछभी अपराध नहीं है, एकतो वह वृद्ध शीघ्र गमनमें असमर्थ औ बाहुव्यायाममें अशक्त हैं, कृष्णसारथि अर्जुन कृतकार्य, युवा, शिक्षितास्त्र, लघुविक्रम, दुर्भेद्यकवचधारी औ बाहुबल-दर्पित है। उन्होंने वानरध्वज दिव्य रथ पर आरूढ़ होके अजर गाण्डीव धारण पूर्वक तीक्ष्ण शर वर्षण करके द्रोणाचार्यका अतिक्रम किया, उसमें आश्चर्य क्या! जब अर्जुन उनको अतिक्रम कर गए तब पाण्डवोंका पराजय करनी उनके साध्य नहीं है, हे महाराज! दैवनिर्दिष्ट विषय कदापि अन्यथा होता नहीं, देखो हम लोग शक्त्यनुसार युद्ध करते थे, परन्तु सिंधुराज निहत हुए, इस लिये दैवही बलवान् है, हम लोगोंने पाण्डवोंका जतुगृहादि सर्व प्रकार नाशका उपाय किया, परन्तु दैवसे हम लोगही विघ्नित होते हैं, इस लिये अब जीवित निरपेक्ष होके युद्धमें प्रवृत्त हो।

सं०। इस प्रकार दोनोंका युद्ध होता है इतनेमें संग्राम-स्थलमें पाण्डवोंका सैन्य लक्षित हुआ, तब उभय पक्षका घोर

संग्राम उपस्थित हुआ, आपके दुर्मन्त्रणाहीसे यह जनसंक्षय उपस्थित हुआ है।

जयद्रथ बधपर्वाध्याय समाप्त।

इति १५२ अध्याय।

घटोत्कचबधपर्वाध्याय।

हे महाराज! आपका सैन्य पाण्डव सैन्यको अतिक्रम करके चतुर्दिक् युद्ध करने लगा, पाञ्चाल औ कौरव यमालयमें गमन के सङ्कल्पसे युद्ध करने लगे, रथी रथिगणसे, गजारोही गजारोहीसे, अश्वारोही अश्वारोहीसे औ पदाति पदातिसे दारुण युद्ध करने लगे, इस प्रकार युद्ध होने लगा तब दुर्य्योधन रथध्वनिसे चतुर्दिक् प्रतिध्वनित करते हुए सैन्यमें प्रविष्ट होय पाण्डवोंसे युद्ध करने लगे, इस युद्धमें असंख्य सैन्य नष्ट हुआ, दिवाकरसमान दुर्य्योधन अरिसैन्यको सन्तापित करने लगे, पाण्डवगण उनको देखने असमर्थ होय पलायन करने लगे, पाञ्चालगणभी दुर्य्योधनके शरसे पीड़ित होय इतस्ततः धावमान होने लगे, पाण्डवसैनिक लोग निहत होने लगे, उस समय दुर्योधनने वैसा पराक्रम किया वैसा कदापि पाण्डवभी नही कर सके, तब पाञ्चालगण भीमसेनको अग्रवर्ती करके दुर्योधनके अभिमुख धावमान हुए, तब दुर्योधनने भीमसेनको दश, नकुलको तीन, सहदेवको तीन, विराट औ द्रुपदको छः, शिखण्डीको सात, धृष्टद्युम्नको सप्तति, युधिष्ठिरको सात, सात्यकीको पांच, द्रौपदीपुत्रोंको तीन२ केकय औ चेदिगणको असंख्य शरोंसे विद्ध किया, तब युधिष्ठिरने उनके धनुच्छेदन कर दिया, औ शाणित दश बाणोंसे विद्ध किया, वह युधिष्ठिर निक्षिप्त शर दुर्योधनका देह भेद करके धरातलमें प्रविष्ट हुए, तब पाण्डव पक्षीयोंने युधिष्ठिरको वेष्टन कर लिया, पुनः युधि-

छिरके शर निक्षेपसे दुर्योधन अत्यन्त विद्ध अवसन्न होके रथ पर अवस्थान करने लगे, तब पाञ्चालगण, राजा दुर्योधन नष्ट हुए ऐसा कोलाहल कर्ने लगे, वह शब्द सुनके द्रोणाचार्य वहां उपस्थित हुए, तब दुर्योधन पुनः हृष्टान्तःकरणसे युद्ध करने लगे, तब पाञ्चालगण द्रोणके सम्मुख हुए, उनका परस्पर भीषण युद्ध होने लगा।

इति १५२ अध्याय।

धृ०। जब द्रोणाचार्य सैन्यमे प्रविष्ट होय इतस्ततः सञ्चरण कर्ने लगे तब पाण्डवोने किस प्रकार उनको निवारण किया? जब द्रोणाचार्य शत्रु संहार मे प्रवृत्त हुए तब उनके चक्ररक्षक कौन थे? औ उनके सम्मुख कौन हुए?

सं०। सात्यकीके सहित अर्जुन उनके संमुख है, तब पाण्डवपक्षीय सबही आचार्यके अभिमुख हुए, जब सब वीर युद्धार्थ उपस्थित हुए तब भीरुजनभयवर्द्धिनी रजनी प्राप्त हुई, उस रात्रिमे असंख्य कुञ्जर औ योद्धाओका नाश हुआ, उस रजनीमे शिवागण भयङ्कर शब्द करने लगे, उलूक सब कौरवोको भयशङ्कित कर्ते हुए शब्द करने लगे, तब सैन्यमे तुमुल कोलाहल उपस्थित हुआ, उस समय सृञ्जय औ द्रोण का घोर संग्राम उपस्थित हुआ, दिङ्मण्डल गाढ़तर अन्धकार से समाच्छन्न होगया, धूलिपटलके आकाशमे उड्डीन होनेसे कुछ दृष्ट न होने लगा, कियत्क्षणोत्तर मनुष्य, अश्व औ मातङ्गोके रुधिर प्रवाहसे धूलिपटल निवारित हुआ, निशाकालमे पर्वतके ऊपर दह्यमान वंशवनके तुल्य प्रक्षिप्त शस्त्रोके चटचटा शब्द होने लगे, वाद्योकेभी भयङ्कर शब्द होने लगे, तब हम लोग मोहाभिभूत हुए, किसीको आत्म पर विवेचना न रही, सबही उन्मत्तके तुल्य हो गए, अनन्तर भूषण औ

करते हैं, इस प्रकार दोनो कहते हैं, इतनेहो दुर्योधन अयुत हस्ती औ अश्व औ सभद्र रथ लेके सोमदत्तके सहाय हुए, शकुनि पुत्र, पौत्र औ भ्राताओंके सहित एक भार प्रजा लेके सोमदत्तकी चतुर्दिक् गमनागमन करने लगे, महावीर सोमदत्त इस प्रकार कौरवोंसे रक्षित होय सात्यकीसे युद्धमें प्रवृत्त होय पचीस बाण निक्षेप किये, महाधनुर्द्धर धृष्टद्युम्न क्रोधसे असंख्य सैन्य लेके उनके सम्मुख हुए, सोमदत्तने सात्यकीके ऊपर नवबाण निक्षेप किये, तब सात्यकीने नवशरसे उनको विद्ध किया, सोमदत्त सात्यकीके शर प्रहारसे अत्यन्त विद्ध औ विगत-संज्ञ होय रथ पर मूर्च्छित होगए, सारथिने उनको मूर्च्छित देखके रणसे अपसारित किया, तब द्रोणाचार्य क्रुद्ध होय सात्यकीके विनाशवासनासे उनके ऊपर धावमान हुए, युधि-ष्ठिर प्रभृति वीरोंने द्रोणको सात्यकीके ऊपर धावित देखके सात्यकीकी रक्षार्थ उनके चतुर्दिक् होगए। तब बलिवासवस-दृश दारुण संग्राम होने लगा, तब द्रोणाचार्य्यने पाण्डव सैन्यको समाच्छन्न औ युधिष्ठिरको विद्ध किया, तदुत्तर सात्यकीको दश, धृष्टद्युम्नको विंशति, भीमसेनको नव, नकुलको पांच, सह-देवको आठ, शिखण्डीको शत, विराटको आठ, द्रुपदको दश, द्रौपदेयोंको पांच पांच, युधामन्युको तीन, उत्तमौजाको छह औ अन्यान्य सेनापतियोंको असंख्य बाणोंसे विद्ध करके युधि-ष्ठिरके ऊपर धावमान हुए, पाण्डव सैन्य इस प्रकार द्रोण शरसे विद्ध हो आर्त्तनाद करते हुए, पलायन करने लगे।

तब महावीर अर्जुन सैन्यको द्रोण शरसे छिन्न भिन्न देखके ईषत्कोपान्वित होके आचार्य्यके ऊपर धावमान हुए, यह देखके पाण्डवसैन्य पुनः प्रहत्त भागया, अनन्तर पुनः पाण्डव औ द्रोणका दारुण संग्राम उपस्थित हुआ, द्रोणाचार्य्य पुनः पाण्डव सैन्यको दग्ध करने लगे, तब कोई उनको निवारण

सुवर्ण वर्मके प्रभासे नभोमण्डल निरीक्षित हो गया, उस समय युद्धार्थी वीरगण परस्पर सेनामें प्रवेश करने लगे, जब वह पाण्डव पक्षीय सब द्रोणके सम्मुख हुए तब द्रोण कितनों को विमुख औ कितनोंका निहत करने लगे, उस समय एकाकी द्रोणने सहस्र हस्ती, अयुत रथ, अयुत पदाति औ अर्बुद अश्व संहार किया।

इति १५४ अध्याय।

धृ०। अरातिनिपातन द्रोणाचार्य पाञ्चालगणोंमें प्रविष्ट होय किस प्रकार पञ्चत्वको प्राप्त हुए? उस रात्रिकालमें समस्त महारथ औ सैन्य एकत्र होके विमर्दित होने लगे, तब तुम लोगोंमें कौन२ वहां अवस्थान करते थे? तुम कहते हो हमारे पक्षीय महारथगण निहत, पराभूत औ रथशून्य हो गए, इस समय वह लोग गाढ़ान्धकारमें निमग्न पाण्डवगणका शरोंसे निपीड़ित औ मोहाविष्ट होके किस प्रकार कर्त्तव्याव-धारण करने लगे? और तुम कहते हो पाण्डवगण जयलाभ से नितान्त संतुष्ट और अस्मत्पक्षीय विमनस्क औ भीत होते हैं, परंतु उस घोर निशाकालमें पाण्डव औ कौरवोंकी विभि-न्नता किस प्रकार अनुमान हुई?

सं०। उस रात्रिकालमें दारुण युद्ध उपस्थित हुआ तब पाण्डवगण सोमकोंके साथ द्रोणाभिमुख धावमान हुए, तब आचार्यने द्रुतगामी शरोंसे केकयगण औ धृष्टद्युम्नके पुत्रगणका संहार किया, उस समय जो जो महारथ उनके सम्मुख गए वह सबही यमके अतिथि हुए, तब प्रबलप्रतापशाली महाराज शिवि क्रोधाविष्ट होके द्रोणके ऊपर धावमान हुए, आचार्यने उनको आवते देखके लौह दशवाणो से बिद्ध किया तब शिविने त्रिंशत् वाणसे बिद्ध करके भल्लास्त्रसे उनके सारथिको निपातित

कर दिया, आचार्यने यह देखके क्रुद्ध होय शि[illegible]के सारथिको औ अश्वोंका संहार करके धृष्टद्युम्नका उनका धनुष छेदन कर दिया, तब दुर्योधनको भीम [illegible] सारथिको आचार्यके निकट प्रेरण कर दिया।

इधर कलिङ्गराजपुत्र [illegible] अपने पुत्रके कलिङ्ग सैन्य लेके भीमके ऊपर धावमान होके बाण मारके उनको विद्ध करके तीन बाणसे उनके सारथिको [illegible] करके एक बाणसे उनका [illegible] किया, तब भीमसेन क्रुद्ध होय स्वीय रथसे [illegible] मुष्टि प्रहारसे उनको निहत किया, भीमसेनके मुष्टि प्रहारसे कलिङ्गराज-पुत्रके अस्थि सब चूर्ण चूर्ण होके रथसे भूतल निपतित हुए, तब महावीर कर्ण औ कलिङ्गराजतनयके भ्राता ध्रुव औ जयरात प्रभृति वीरगण क्रोधान्ध होके आशीविष नाराचसे भीमसेनको प्रहार करने लगे, तब महावीर भीमसेनने ध्रुवके रथ पर आरूढ़ होय करके उनको भी मुष्टि प्रहारसे निहत किया, तदुत्तर जयरातके रथ पर आरूढ़ होय सिंहनाद पूर्वक वाम हस्तसे उनको आकर्षण करके तल प्रहारसे निहत किया, तब कर्णने भीमके ऊपर शक्तिप्रयोग किया, महावीर भीमसेनने हास्य पूर्वक वही शक्ति ग्रहण करके कर्णहीके ऊपर निक्षिप्त किया, शकुनिने वह शक्ति कर्णके ऊपर निक्षिप्त देखके तीक्ष्ण सायकसे छेदन कर दिया, भीमसेन इस प्रकार भीमपराक्रम करके पुनः स्वरथारोहण पूर्वक आपके सैन्य पर धावमान हुए, तब आपके पुत्रगण अन्तककी तुल्य भीमको आगमन करते देखके शरजालसे निवारण करने लगे, तब भीमसेन हास्य करके शरवर्षणसे आपके पुत्र दुर्मदके सारथिको नष्ट किया, तब दुर्मद दुष्कर्णके रथ पर आरूढ़ हुए, तब भीमसेनने क्रोधसे कर्ण, द्रोण, दुर्योधन, कृप, सोमदत्त, औ बाह्लीककी समक्ष

पादप्रहारसे उन दोनोका रथ शीथिल कर दिया औ उन दोनोको मुष्टिप्रहारसे निहत कर दिया, तब सैन्यमे हाहा-कार होने लगा। महीपाल सब कहने लगे। यह भीमसेन साक्षात् रुद्र हैं, भीमसेनके रूपसे धृतराष्ट्र तनयोका संहार करते है, हे महाराज! भूपतिगण यह कहके मोहाविष्ट होय रथ चालन पूर्वक पृथक् पृथक् दिशामे पलायमान हुए।

इस प्रकार भीमसेनने निशाकालमे धार्तराष्ट्रोका संहार करके युधिष्ठिरके पास जायके उन की पूजा किया। युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव, विराट, द्रुपद औ केकयगण भीमको देखके संतुष्ट होय सत्कार करने लगे, अनन्तर आपके पुत्रोने द्रोणके साथ भीमसेनको वेष्टन किया, अन्धकारसमाच्छन्न निशाकालमे उनका घोर युद्ध होने लगा।

इति १५५ अध्याय।

हे महाराज! इधर सोमदत्त स्वपुत्र भूरिश्रवाके निधनसे क्रुद्ध होय सात्यकीसे बोले, हे युयुधान! तुम क्षत्रियधर्मज्ञ औ विज्ञतासे प्रसिद्ध हो, तब तुमने क्षत्रधर्म त्याग करके प्रायो-विष्ट हमारे पुत्रका क्यों संहार किया? जो होय, इस समय हम तुमको उसका फल देते हैं, हे वृष्णिकुलाङ्गार! हम शपथ करके कहते हैं, कि आजही तुम्हारा तुम्हारे पुत्र औ भ्राताओका संहार करेंगे। जो हमारी प्रतिज्ञा विफल होगी तो हम नरकगामी होंगे, यह कहके सोमदत्त शङ्खध्वनि औ सिंहनाद करने लगे।

सात्यकी यह सुनके बोले, हे कौरवेय! हमको तुमसे वा अन्यसे युद्ध करनेमे कुछभी भय नहीं होता है, तुम युद्धमे निर-ास्त्र प्रयोग करते हो, यदि तुम्हारी युद्ध करने की वासना आओ प्रहार करो, पुत्रकी गतिको तुमको भी प्राप्त

करते हैं, इस प्रकार लोगो कहते हैं, इतनेमें दुर्य्योधन प्रभृत हस्ती ओ अश्व ओ बहुत रथ लेके सोमदत्तके सहाय हुए, शकुनि पुत्र, पौत्र ओ भ्राताओंके सहित एक लक्ष अश्व लेके सोमदत्तके चतुर्दिक् अवस्थान करने लगे, महावीर सोमदत्त इस प्रकार वीरोंसे रक्षित होय सात्यकीसे युद्धमें प्रवृत्त होय अनेक बाण निक्षेप किये, महाधनुर्द्धर धृष्टद्युम्न भीमसे असंख्य सैन्य लेके उनके सम्मुख हुए, सोमदत्तने सात्यकीके ऊपर नवबाण निक्षेप किये, तब सात्यकीनेभी नवशरसे उनको विद्ध किया, सोमदत्त सात्यकीके शराघातसे अत्यन्त विद्ध ओ विगत-संज्ञ होय रथ पर मूर्छित होगए, सारथिने उनको विह्वल देखके रथसे अपसारित किया, तब द्रोणाचार्य्य क्रुद्ध होय सात्यकीके विनाशवासनासे उनके ऊपर धावमान हुए, युधि-ष्ठिर प्रभृति वीरोंने द्रोणको सात्यकीके ऊपर धावित देखके सात्यकीके रक्षार्थ उनके चतुर्दिक् होगए। तब बलिवासव-तुल्य दारुण संग्राम होने लगा, तब द्रोणाचार्य्यने पाण्डव सैन्यको समाच्छन्न ओ युधिष्ठिरको विद्ध किया, तदुपरि सात्यकीको दश, धृष्टद्युम्नको विंशति, भीमसेनको नव, नकुलको पांच, सह-देवको आठ, शिखण्डीको शत, विराटको आठ, द्रुपदको दश, द्रौपदेयोंको पांच पांच, युधामन्युको तीन, उत्तमौजाको छः ओ अन्यान्य सेनापतिको असंख्य बाणोंसे विद्ध करके युधि-ष्ठिरके ऊपर धावमान हुए, पाण्डव सैन्य इस प्रकार द्रोण शरसे विद्ध हो आर्त्तनाद करते हुए, पलायन करने लगे।

तब महावीर अर्जुन सैन्यको द्रोण शरसे छिन्न भिन्न देखके ईषत्कोपान्वित होके आचार्य्यके ऊपर धावमान हुए, यह देखके पाण्डवसैन्य पुनः प्रवृत्त होगया, अनन्तर पुनः पाण्डव ओ द्रोणका दारुण संग्राम उपस्थित हुआ, द्रोणाचार्य्य पुनः पाण्डव सैन्यको दग्ध करने लगे, तब कोई उनको निवारण

कर सके नही, द्रोणके संमुख जो जो हुए, उन सभोंका आचार्य्यने शिरश्छेद करने लगे, तब पाण्डवसैन्य अर्जुनके समक्ष पुनः पलायन करने लगे, तब अर्जुन वासुदेवसे बोले, हे माधव! तुम आचार्य्यके सम्मुख रथ चालन करो। वासुदेव अर्जुनका वाक्य सुनके द्रोणाभिमुख रथ चालन करने लगे, तब भीमसेनभी अर्जुनके पीछे पीछे गमन करने लगे, तब पांचाल सृंजय, मत्स्य, चेदि, कारूष, औ केकय दोनो भ्राताओंको द्रोणाभिमुख धावमान देखके उनका अनुगमन करने लगे, अर्जुन दक्षिण पार्श्वसे औ भीम वाम पार्श्वसे रथिगणोंके साथ सैन्यमे प्रवेश करने लगे, तब धृष्टद्युम्न औ सात्यकी आपके सैन्य पर धावमान हुए, प्रचण्डवायुसे सागरके जैसा शब्द होता है, वैसही सैन्यमे कोलाहल होने लगा, तब अश्वत्थामा सात्यकीके ऊपर धावमान हुए, यह देखके भीमसेनपुत्र घटो-त्कच लोहनिर्मित ऋक्षचर्मसमाच्छन्न त्रिंशत् नल्व विस्तीर्ण यन्त्रसन्नाहयुक्त अष्टचक्रान्वित मेघगम्भीरनिस्वन अश्वमाला समलङ्कृत रुधिरार्द्र ध्वजपट परिशोभित भयङ्कर रथ पर आरोहण करके शूल, मुद्गर औ पादपधारी भीषण राक्षसी सेना साथमे लेके अश्वत्थामाके सम्मुख धावमान हुए, उनके रथमे अश्व वा मातङ्ग योजित नही थे, गजाकार पिशाचगण उसको आकर्षण करते थे, विकट गृध्रराज पक्ष औ चरण विस्तीर्ण करके उनके ध्वज दण्ड पर उपविष्ट था, महीपाल-गण उनको युगान्तकालीन दण्डपाणि अन्तकके तुल्य शरासन उद्यत करके आवते देखके अतिशय व्यथित होने लगे, आपका सैन्य सब उन गिरिशृङ्गसदृश, भीषण, दंष्ट्राकराल, विकट-मुख, शंकुकर्ण, ऊर्द्धकेश, लम्बोदर, किरीटालंकृतमस्तक, महागर्तके तुल्य विस्तीर्ण गलद्वार युक्त प्रदीप्त वक्ष, विपक्षोंके विक्षोभक राक्षस घटोत्कचको व्यादितास्य कालके तुल्य आवते

देखके भीत औ कम्पित होने लगे, मातङ्गगण उनका सिंह-नाद श्रवण करके मूत्र त्याग करने लगे।

अनन्तर राक्षसगण रात्रिकालमें अधिकतर बलशाली होके रणस्थलमें शिलावृष्टि करने लगे, लोहमय चक्र, भुशुण्डी शक्ति, तोमर, शूल, शतघ्नी औ पट्टिश प्रभृति अस्त्रोंकी दृष्टि करने लगे। समस्त नरपति, आपके पुत्र औ कर्ण वह भीषण संग्राम देखके अत्यन्त कातर होय पलायनमें प्रवृत्त हुए, उस समय केवल अस्त्रबलदीप्ति अश्वत्थामा एकाकी अनाकुल चित्तसे घटोत्कचकी माया छेदन करने लगे।

घटोत्कच उससे क्रुद्ध होय उनके ऊपर शरवर्षण करने लगे, क्रुद्ध भुजङ्ग जैसे बिलमें प्रवेश करते हैं, वैसेही घटोत्कचशर अश्वत्थामाका देह विदारण करके भूतलमें गिरे, तब महाप्रतापी लघुहस्त अश्वत्थामाने दशशरोंसे भीमपुत्रको बिद्ध किया, घटोत्कचने अश्वत्थामाके शरोंसे पीड़ित होय उनके नाशके इच्छासे एक सूर्य्यतुल्य एकलक्ष आरयुक्त क्षुरधार चक्र निक्षेप किया, वह चक्र आवते ही द्रोणपुत्रने उसका छेदन कर दिया, वह चक्र विफल होनेसे घटोत्कच क्रुद्ध हो शर जालसे अश्वत्थामाको आच्छन्न करने लगे।

इतनेमें अञ्जनसन्निभकलेवर अञ्जनपर्वा घटोत्कचकापुत्र सलिलवर्षी मेघके तुल्य शरवर्षण करते हुए अश्वत्थामाके ऊपर धावमान हुए, अश्वत्थामाने उसको आवते औ शर वर्षण करते देखके क्रोधसे तीन बाणसे त्रिवेणुक, एक बाणसे धनु, चार बाणसे चार अश्व, औ दो बाणसे उनके सारथिको संहार किया, तब अंजनपर्वा रथहीन होके अश्वत्थामाके ऊपर खड्ग प्रक्षेप करने लगे, अश्वत्थामाने तत्क्षणही उनके हस्तसे खड्गको द्विखण्ड करके गिराय दिया, तब अंजनपर्वाने उनके ऊपर गदा प्रक्षेप किया, द्रोणात्मजने उसकोभी

छेदन कर दिया, तब अंजनपर्वा आकाशमें उत्थित होय वृक्ष वृष्टि करने लगे, अश्वत्थामा उस वृक्षोंका छेदन करके शरोंसे अंजनपर्वाका देह भेद करने लगे, तब अंजनपर्वा पुनः रथारूढ़ होके युद्धमें प्रवृत्त हुए, तब अश्वत्थामाने क्रोध पूर्वक सुतीक्ष्ण बाण से अंजनपर्वाको यमालयमें प्रेषण कर दिया।

अनन्तर घटोत्कच स्वीय पुत्रको निहत निरीक्षण करके कोपप्रज्वलित होय अश्वत्थामासे बोले, हे द्रोणनन्दन! तुम क्षणकाल यहां अवस्थान करो, तुम कदापि हमारे हाथसे परित्राण नहीं पाय सकोगे, अश्वत्थामा बोले, वत्स! तुम हमसे प्रतिनिवृत्त होके अन्यसे युद्ध करो, पुत्रके साथ पिताको युद्ध कर्तव्य नहीं हैं, हे हिड़िम्बानन्दन! तुम्हारे ऊपर हमको कुछभी क्रोध नहीं हैं, परन्तु मनुष्य परवश होके आत्मनाशमें प्रवृत्त नहीं होता है, इसलिये तुम जाओ, तब पुत्रशोक-संतप्त घटोत्कच रोषकषायित लोचनसे बोले, हे द्रोणात्मज! हम नीचके ऐसे संग्रामसे कातर नहीं हैं, तुम क्यों वाक्य व्ययसे भय दिखावते हो, हम इस सुविस्तीर्ण कौरवकुलमें महावीर भीमके वीजसे उत्पन्न हैं, औ राक्षसोंके अधिराज हैं, तुम क्षणकाल अवस्थान करो, तुम्हारी युद्धकी वासना अपनीत करते हैं। घटोत्कच यह कहके कुञ्जराभिमुखीन सिंहके तुल्य अश्वत्थामाके सम्मुख हुए, औ उनके ऊपर अपरिमित शरवर्षण करने लगे, अश्वत्थामाने आकाशमेंही वह सब खण्डन कर दिये, दोनोंके बाणोंका आकाशमें संघर्ष होनेसे स्फुलिङ्ग उत्पन्न होने लगे।

इसप्रकार द्रोण पुत्रसे घटोत्कचकी अस्त्रमाया प्रतिहत हुई, तब भीमतनयने प्रच्छन्न भावसे पुनः मायाजाल विस्तार करनेकी इच्छासे उत्तुङ्गशृङ्ग सम्पन्न, पादपकुल समाच्छन्न, शूल प्रास, मुसल स्तूप प्रवण युक्त एक पर्वत का आकार धारण

किया, महाबाहु अश्वत्थामा उस अञ्जनतुल्यसदृश पर्वत और उससे अनवरत निपतित अस्त्रजाल निरीक्षण करके कुछभी चलित न होके हास्य मुखसे वज्र प्रयोग करके उस शैलको चूर्ण कर दिया।

अनन्तर घटोत्कचने इन्द्रायुधभूषित नीलनीरदरूप धारण करके पाषाणवर्षणसे अश्वत्थामाको समाच्छन्न कर दिया, महावीर अश्वत्थामाने वायव्यास्त्रसे उस मेघको अपसारित कर दिया, तदुत्तर शरनिकरसे दिङ्मण्डल समाच्छन्न करके लक्ष रथोंका संहार कर दिया, अनन्तर घटोत्कच सिंह शार्दूल सदृश विकटास्य भयङ्कर समरदुर्मद रथारोही, गजारोही, अश्वारोही राक्षसोंके साथ पुनः पुनः अश्वत्थामाके अभिमुख हुए, तब राजा दुर्य्योधन देखके विषण्ण हुए, तब द्रोणात्मज दुर्य्योधनको विषण्ण देखके बोले, हे महाराज! तुम धैर्य्यावलम्बन करके क्षणमात्र स्थिर रहो, हम सत्य प्रतिज्ञा करते हैं, तुम्हारे शत्रुओंका संहार करेंगे, तुम कदापि पराजित न होगे, यत्नसे सैन्यको आश्वासित करो, दुर्य्योधन उनका वाक्य सुनके बोले, हे द्रोणनन्दन! तुम्हारे हृदयमें ऐसो हम लोगों पर गाढ़ भक्ति होना आश्चर्य्य नहीं हैं, यह कहके शकुनिसे बोले, हे सुबलनन्दन! अर्जुन लक्षरथीयोंके सहित संग्राम करते हैं, तुम षष्टिसहस्र रथि लेके उनके अभिमुख हो। कर्ण, वृषसेन, दुःशासन और कृप प्रभृति महारथ और छ अयत पदाति तुम्हारे साथ आवेंगे, इन्द्र जैसा दानवोंका संहार करते हैं, वसोही तुम शत्रु संहार करो, विजयका भार इस समय तुम्हारे ऊपर निर्भर किया हैं, शकुनि दुर्य्योधनका वाक्य सुनके पाण्डवोंके नाशके इच्छासे सत्वर गमन करने लगे, उसी समय घटोत्कचने अग्नि तुल्य दश वाणोंसे अश्वत्थामाके वक्षःस्थलमें आघात किया, अश्वत्थामा घटोत्कचके वाणोंसे अत्यन्त

बिद्ध होय विह्वल होगए, तब घटोत्कचने अञ्जलिक बाणोसे उनका धनुच्छेदन कर दिया, अश्वत्थामा तत्क्षणही अन्य शरा-सन लेके शरवर्षण करने लगे, औ राक्षसगणोका संहार करने लगे, इस प्रकार द्रोणात्मजने वह एक अक्षौहिणी राक्षस संहार करके वैसही विराजमान होने लगे।

तब घटोत्कच राक्षसोको अश्वत्थामाके नाश करनेकी आज्ञा देने लगे, राक्षसगण असंख्य शस्त्र प्रहार करने लगे, हे महाराज! आपके पक्षीय सब अश्वत्थामा किंचित्भी विचलित न होके तीक्ष्ण शरोसे वह असंख्य अस्त्र निवारण करके दश बाणसे भीम तनयको बिद्ध करने लगे, निशाचरगण अश्वत्थामाके अस्त्रसे व्याकुल होय उनके विनाशके इच्छासे धावमान हुए, उस समय एकाकी अश्वत्थामा राक्षसी सेना विद्रावित करते हुए, अवस्थान करने लगे, औ घटोत्कच भिन्न और कोई उनके ऊपर दृष्टिपात न कर सके, तब घटोत्कच क्रोधसे अधर ओष्ठ दंशन करते हुए अश्वत्थामाके समीप गए, औ उनके साथ द्विरथ युद्धमे प्रवृत्त होय अष्टघण्टा युक्त देवनिर्मित अशनि निक्षेप किया, अश्वत्थामाने धनुरखके उत्थान पूर्वक वह अशनि लेके घटोत्कचके ऊपर निक्षेप किया, वह अशनि राक्षसेन्द्रके अश्व, सारथि औ ध्वज छेदन करके भूतलमे गिरा, तब घटोत्कच धृष्टद्युम्नके रथ पर आरोहण करके भीषण धनु लेके अश्वत्थामाको बिद्ध करने लगे, तब धृष्टद्युम्ननेभी अश्वत्थामाके वक्षस्थलमे शर निक्षेप किये, अश्व-त्थामा दोनोके ऊपर शरजाल निक्षेप करने लगे, उन्होनेभी उनके शर छेदन कर दिया।

इतनेमे भीमसेन सहस्र रथ, तीन शत हस्ती, औ छ अश्व लेके वहां उपस्थित हुए, उसकाल अश्वत्थामाने [illegible] पराक्रम करके निमिषमात्रमे भीमसेन, धृष्टद्युम्न,

घटोत्कच, नकुल, सहदेव, युधिष्ठिर, विजय औ वीभव समस्त असंख्य हस्त्यश्वादियुक्त राक्षसी अक्षौहिणी सेना नष्ट कर दिया इस प्रकार सेना संहार करके घटोत्कचको शरसे पीड़ित करने लगे, तदुत्तर अतिशय रोषाविष्ट होय द्रुपद औ पाण्डवोंको विद्ध करके द्रुपदके पुत्र सुरथ, शत्रुंजय, बलानीक, शतानीक औ जयका संहार किया, तदुत्तर सिंहनाद पूर्वक शत्रुघ्न औ चन्द्रसेनको निहत करके कुन्तिभोजके दश पुत्र औ श्रुतायुधको निहत किया, तदुत्तर आकर्ण धनुः आकर्षण करके भयङ्कर शर घटोत्कचके ऊपर प्रक्षिप्त किया, वह शर घटोत्कचका हृदय भेद करके भूगर्भमे गया, तब धृष्टद्युम्नने घटोत्कचको निहत बोध करके अश्वत्थामासे पलायन किया, वह देखके पाण्डव सैन्यभी परांमुख होगया, इस प्रकार अश्वत्थामा शत्रुसैन्य पराजय करके सिंहनाद करने लगे।

इति १५६ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर धर्मराज, भीमसेन, धृष्टद्युम्न औ सात्यकी अश्वत्थामाका पराक्रम देखके यत्न पूर्वक युद्धमे प्रवृत्त हुए, तब दोनो पक्षको दारुण युद्ध होने लगा, सोमदत्त पुनः सात्यकीको शरोसे आच्छन्न करने लगे, भीमसेन सात्यकीके सहायार्थ सोमदत्तको विद्ध करने लगे सात्यकी क्रुद्ध होके पहिले दश शर औ शक्तिसे विद्ध करके पुनः सात शरोंसे विद्ध करने लगे, तब भीमसेनने सोमदत्तके मस्तक पर दृढ़ परिघ निक्षेप किया, उस परिघाघातसे सोमदत्त मूर्च्छित होय भूतलमे निपतित हुए, महावीर वाह्लीक सुपुत्रको तदवस्थ देखके वर्षाकालीन वारिधरके समान सात्यकीके ऊपर शर वर्षण करने लगे, तब भीमसेनने वाह्लीकको दश शरसे

विद्ध किया, तब वाह्लीकने भीमसेनके वक्षस्थलमें शक्ति प्रहार किया, भीमसेन उस शक्तिके आघातसे विमोहित होगये, तत्क्षणही चैतन्यलाभ करके भीमसेनने गदाघातसे वाह्लीकका मस्तक चूर्ण कर दिया।

अनन्तर आपके पुत्र नागदत्त, दृढ़रथ, वीरबाहु, अयोभुज, दृढ, सुहस्त, विजय, प्रमाथ औ उग्रयायी यह नव महावीर वाह्लीकको निहत देखके भीमसेनके ऊपर धावमान हुए, भीमसेनने उनके मर्ममे नाराच निक्षेप किये, वह नवों आपके पुत्र भीमके नाराचसे विद्ध होय पर्वत शिखरके तुल्य रथसे भूतलमे निपतित हुए, इस प्रकार भीमने नवोंका संहार करके कर्णपुत्र वृषसेनको शरोंसे आच्छन्न कर दिया, तब कर्णके भ्राता वृकरथ भीमको विद्ध करने लगे, भीमसेनने तत्क्षणही उनका संहार किया, तदनन्तर आपके सात शालको संहार करके शतचन्द्रका संहार किया, तब वीरगवाक्ष, शरभ औ विभु इन्होंने शतचन्द्रको निहत देखके भीमसेनको शर प्रहार करना आरम्भ किया, भीमसेन शर वर्षण पूर्वक सुतीक्ष्ण नाराचोंसे उन तीनोंकाभी संहार किया, तब अन्यान्य महीपाल भीत होगए, उसी समय युधिष्ठिरने द्रोणाचार्य्य औ आपके पुत्रोंके समक्ष अम्बष्ठ, मालव, त्रिगर्त, शिवि, अभीषाह, शूरसेन, वाह्लीक, वसाती औ यौधेय औ मद्रकगणका संहार किया, उनके मांस शोणितसे पृथिवी कर्दममय होगई तब दुर्य्योधन प्रेरित द्रोणाचार्यने युधिष्ठिरको शत्रुसैन्य विद्रावित करते देखके उनके ऊपर वायव्यास्त्र प्रयोग किया, युधिष्ठिरने स्वीय अस्त्रसे द्रोणास्त्र छेदन कर दिया, तब द्रोणाचार्य्यने क्रोधसे वारुण, याम्य, आग्नेय, त्वाष्ट्र औ साविल अस्त्र प्रयोग किया, महाबाहु युधिष्ठिर अकुतोभयसे स्वीय अस्त्र प्रभावसे द्रोण निक्षिप्त शर सब निराकृत कर दिये, तब द्रोणाचार्य्य ने

ऐन्द्र औ प्राजापत्य अस्त्रका प्रयोग किया, धर्मराजने माहेन्द्र अस्त्रसे द्रोणके अस्त्रोंका छेदन कर दिया, तब द्रोणाचार्यने अत्यन्त कुपित होके ब्रह्मास्त्र प्रयोग किया, उस ब्रह्मास्त्रसे सर्वत्र अन्धकार होगया, तब धर्मराजने स्वीय ब्रह्मास्त्रसे द्रोणका ब्रह्मास्त्र निवारण कर दिया।

अनन्तर द्रोणाचार्य्य युधिष्ठिरसे दूर होय वायव्यास्त्रसे द्रुपद सैन्यको ताडित करने लगे, पाञ्चालगण द्रोणके शरसे व्यथित होय अर्जुन औ भीमसेनके समक्ष भयसे पलायन करने लगे, तब भीमसेन औ अर्जुन सहसा द्रोणके अभिमुख होयके शर वर्षण करने लगे, तब अन्धकारावृत निद्राआ[illegible] कौरव सैन्य अर्जुनके शरसे विदीर्ण होने लगे, तब द्रोण औ दुर्योधन किसी प्रकार निवारण कर सके नही।

इति १५७ अध्याय।

हे महाराज ! तब दुर्योधन पाण्डव सैन्यको अतिशय दर्पित देखके कर्णसे बोले, हे मित्रवत्सल ! मित्रकार्य्यका यही समय उपस्थित हुआ है, इस लिये हमारे पक्षीयोंका त्राण करो, कर्ण बोले, हे महाराज ! आज इन्द्रभी रक्षा करेगा तोभी अर्जुन हमसे जीवित नही रहेंगे, तुम आश्वस्त हो, हम सत्य कहते हैं आज पाञ्चाल औ पाण्डवोंका संहार करेंगे, अर्जुन सबसे अधिक हैं, इस लिये उनके ऊपर आज वासवदत्त अमोघ शक्ति निक्षेप करेंगे, अर्जुन निहत होनेसे उनके भ्रातृगण अनायास पराजित होंगे, हम जीवित रहते क्यों तुम विषाद करते हो? हम पाञ्चाल, पाण्डव, केकय औ वृष्णिगणका संहार करेंगे।

कृपाचार्य्य यह सुनके कर्णसे बोले, हे सूतपुत्र ! यदि तुम्हारे वाक्यसे कार्य्यसिद्धि होती तो कुरुनाथ सनाथ होते,

तुमने अनेक वार आत्मश्लाघा किया है, परन्तु कदापि तुम्हारा कार्य्य फल दैव नही गया, तुम कैवार अर्जुनसे युद्धमे प्रवृत्त हुए, परन्तु एकवारभी जय लाभ नही हुआ, गन्धर्वोंने दुर्य्योधनको हरण किया था, तब सब सैन्य युद्ध करती था, तुम एकाकी पलायित होगए, विराट नगरको युद्धमे तुम अर्जुनसे पराजित हुए थे, तुम अर्जुनसे युद्ध करनेमे समर्थ नही हो, तब क्यों कृष्णसहाय पाण्डवोंको पराजय करनेमे उद्यत होते हो, मेघको समान वृथा गर्जन करते हो, अर्जुनके शरोंसे विद्ध होगे, तब गर्जन विघूत हो जायगा।

कर्ण यह सुनके क्रुद्ध होय बोले, हे कृपाचार्य्य! वीरपुरुष वर्षाकालीन मेघके समान सफल गर्जन करते हैं, समरधुरन्धरोंको आत्मश्लाघा दोषावह नही है, कोईभी मन विचार-होके बोलता है, आज हम कृतकार्य्य होके दुर्य्योधनको निष्कण्टक राज्य देंगे।

कृपाचार्य्य बोले, हे कर्ण! हम तुम्हारा स्वेच्छा वाक्य ग्रहण करते नही, तुम सतत कृष्ण, अर्जुन औ युधिष्ठिरकी निन्दा करते हो, देवादिकोंभी अजेय अर्जुन औ कृष्ण जिनको सहाय है, उनको निश्चय जय लाभ होगा, वह सब धर्मशील, कार्य्यदक्ष, शिक्षितास्त्र औ महारथ हैं, अमितपराक्रम वासुदेव जिनके सहाय है उनसे युद्ध करनेकी तुम्हारी वासना अन्याय है।

कर्ण बोले, हे ब्रह्मन्! पाण्डवोंके गुण जो आपने कहे वह सब यथार्थ है, परंतु हमको इन्द्रने अमोघ शक्ति दिया है उसके प्रभावसे पाण्डवों का पराजय करेंगे, उसीसे अर्जुनका संहार होगा, तब उनके भ्रातृगण अनायास नष्ट होंगे, इसी से हम आस्फालन करते हैं, तुम ब्राह्मण, वृद्ध औ संग्राममे अनिपुन औ पाण्डवोंके पक्षपाती हो, जो होय, तुम पुनः ऐसा

दुर्वाक्य हमको कहो मत नहो तो हम खड्गसे तुम्हारो जिह्वा छेदन करेंगे, हे निर्बोध! तुम कौरवोंका भय दिखायके पाण्डवोंकी स्तुति करते हो? जहां द्रोण प्रभृति विद्यमान हैं, वहां इन्द्रभी जय नहीं कर सकते, जयलाभ तो दैवायत्त है, पराक्रमी होनेसे क्या है, देखो भीष्म देवताओंकेभी अजेय थे, वह क्यों शरशय्या शयान हुए? हे पुरुषाधम! तुम निरन्तर दुर्योधनरिपु हो, पाण्डवोंकी स्तुति करते हो, तुम पाण्डवोंको बलवान जानते हो, परन्तु जय लाभ दैवायत्त है।

इति १५८ अध्याय।

सं०। अनन्तर अश्वत्थामा मातुल कृपाचार्य्यको कठोर वाक्य बोलते कर्णको देखके क्रोधाविष्ट होके दुर्योधनके समक्ष खड्ग निष्काशन पूर्वक कर्णके ऊपर धावमान होय बोले, हे नराधम! महात्मा कृपाचार्य्यने अर्जुनके प्रकृत गुण वर्णन किये, परन्तु तुम द्वेषबुद्धिसे भर्त्सना करते हो, तुम अहङ्कारसे कुछभी लक्ष्य नहीं करते हो, धनुर्द्धरोंके आगे आत्मश्लाघा करते हो, जब अर्जुनने तुम्हारा पराजय करके तुम्हारे समक्षही जयद्रथका नाश किया तब तुम्हारा बलवीर्य्य कहां था, हे सूतकुलाङ्गार! जिन्होंने महादेवसे युद्ध किया उन अर्जुनसे युद्ध करनेको मनमें वृथा कल्पना करते हो, इन्द्रादि देवताभी कृष्णसहाय अर्जुनका पराजय कर सकते नहीं, तुम भूपालोंके सहित उन अद्वितीय अपराजित अर्जुनका कैसा पराभव करोगे? हे दुर्बुद्धि! अब हमारा बलवीर्य्य देखो, हम आज तुम्हारा मस्तक छेदन करते हैं, यह कहके अश्वत्थामा महावेगसे दुर्योधनके समक्ष कर्णका शिरश्छेदनमें प्रवृत्त हुए, तब दुर्योधन औ कृपाचार्य्य उनको निवारण करने लगे।

तब कर्ण दुर्योधनसे बोले, हे राजन्! यह ब्राह्मणाधम

नितान्त दुर्बुद्धि, परतन्त्र औ समरश्लाघी है, तुम इसको छोड़ो, यह दुरात्मा हमारा भुजवीर्य्य देखे, अश्वत्थामा बोले, रे सूतपुत्र ! हमने तुम्हारी क्षमा किया, परन्तु अर्जुन तुम्हारा दर्प चूर्ण करेंगे, तब दुर्य्योधन बोले, हे ब्रह्मन् ! आप प्रसन्न होके क्षमा कीजिये, सूतपुत्रके ऊपर कोप करनी उचित नहीं है, आप लोगोंके ऊपर गुरुतर भार है, यह देखिये पाण्डवगण कर्णसे युद्धमें स्पर्द्धा कर्ते हैं।

हे महाराज ! इस प्रकार दुर्य्योधनसे अश्वत्थामाको प्रसन्न किया, तब शान्तस्वभाव कृपाचार्य्य मृदुभावसे बोले, हे सूतनन्दन ! इस समय हम लोगोंने तुम्हारी क्षमा किया, परन्तु महावीर अर्जुन तुम्हारा दर्पचूर्ण करेंगे, सन्देह नहीं, अनन्तर पाण्डव औ पाञ्चाल तर्जन कर्ते आवने लगे, तब कर्ण उनके संमुख हुए, तब पाण्डव औ कर्णका भीषण संग्राम होने लगा, पाण्डव औ पांचालोंमें कर्णको देखके कोई यही कर्ण हैं, कोई कर्ण कहां, कोई रे दुरात्मन् कर्ण ! क्षणमात्र युद्धमें अवस्थान करो, ऐसे शब्द होने लगे, पाण्डवगण प्रेरित क्षत्रिय सब कर्णके विनाशार्थ असंख्य शरवर्षण करके चतुर्दिक् आच्छन्न कर दिया, महावीर कर्ण लघुहस्ततासे उनके शर निवारण करने लगे, इस प्रकार कर्णने उसकाल हस्त लाघव किया, वीरवर्ग यत्नवान् होकेभी आक्रमण न कर सके, इस प्रकार कर्ण उनके शरोंको निराकृत करके स्वनामांकित शरोंसे रथ, ध्वज प्रभृति सब वस्तु भिन्न करने लगे, तब कर्णशरार्दित भूपालगण इतस्तत विचलित होने लगे, निहतवीरोंके मस्तकोंसे रणस्थल समाच्छन्न होगया, तब दुर्य्योधन अश्वत्थामासे बोले, ब्रह्मन् ! देखो यह कर्ण विपक्षपक्षोंसे युद्ध करते हैं, यह अर्जुनभी स्वसैन्य विद्रावित देखके कर्णके ऊपर धावमान हो रहे हैं, जिसमें धनञ्जय सबके समक्ष कर्णका संहार न करें, वैसा

कीजिये, यह सुनके अश्वत्थामा, कृपाचार्य, शल्य औ हार्दिक्य कर्णके सहायार्थ धावमान हुए।

पृ०। कर्ण तो पहिले अर्जुनसे युद्धमें अति स्पर्धा करते थे, तब अर्जुनको देखके उन्होंने क्या किया?

सं०। गज जैसा प्रतिगजके ऊपर धावमान होय, वैसेही आगत अर्जुनके ऊपर कर्ण धावमान हुए, अर्जुनने उनका समागत देखके स्वर्णपुंखोंसे आच्छन्न कर दिया, तब कर्णने क्रोधसे अर्जुनको तीन बाणसे बिद्ध किया, धनंजयने त्रिंशत् शर कर्णके ऊपर निक्षिप्त करके एक नाराचसे उनका वाम हस्त बिद्ध किया, उस नाराचके आघातसे कर्णके हस्तसे धनु निपतित होगया, कर्ण तत्क्षणही धनुर्ग्रहण करके अर्जुनको शरोंसे समाच्छन्न कर दिया, धनंजयने हास्य करके वह शर छेदन कर दिया, इस प्रकार परस्पर प्रतीकारकारी वीरद्वयका घोरसंग्राम होने लगा।

अनंतर अर्जुनने सत्वर कर्णके धनुकी मुष्टि छेदन करके चार भल्लोंसे चारो अश्व औ एक भल्लसे सारथिका संहार किया, कर्ण विरथ होके कृपाचार्यके रथपर आरूढ़ होगए, तब कौरवसैन्य सूतपुत्रको पराजित देखके पलायन करने लगे, दुर्य्योधन पलायमान सैन्यको निवारण करने लगे, दुर्य्योधनके कहनेसे सैन्य पुनः निवृत्त होके दुर्योधनके साथ अर्जुनके ऊपर धावमान हुए, तब कृपाचार्य्य दुर्य्योधनको युद्धमें प्रवृत्त देखके अश्वत्थामासे बोले, हे द्रोणनन्दन! देखो दुर्योधन क्रोधसे पतङ्ग तुल्य अर्जुनके संमुख जाते हैं, उनको निवारण करो नही तो हमलोगोंके समक्ष अर्जुनके शरोंसे विनष्ट होंगे, हम लोग रहते दुर्योधनको असहायके तुल्य युद्धमें प्रवृत्त करना उपयुक्त नही है, अश्वत्थामा मातुलका वाक्य सुनके दुर्योधनसे बोले, राजन्! हम लोग सतत तुम्हारा हितसाधन करते हैं,

हम लोग जीवित रहते तुमको युद्धमे प्रवृत्त होना न चाहिये, तुम धैर्य धरो, हम अर्जुनका निवारण करते हैं।

दुर्योधन बोले, हे ब्रह्मन्! आचार्य पाण्डवोंको पुत्रके समान रक्षा करते हैं, आप लोगभी उनकी उपेक्षा करते हैं, इस समय हमारे दुरदृष्टसे वा युधिष्ठिर औ द्रौपदीके हितार्थ आप लोगोंका पराक्रम खर्व होगया है, आप लोगोंको छोड़के और कोई ऐसा नही है, जो शत्रुकी उपेक्षा करे, हे गुरुपुत्र! इस समय हमारे ऊपर प्रसन्न होके हमारे शत्रु विनाशमे प्रवृत्त होईये, आपही दिव्य तेजप्रभावसे पाण्डव औ पाञ्चालोंका निग्रह कर सकते हैं।

इति १५९ अध्याय।

सं०। अश्वत्थामा बोले, पाण्डव हमलोगोंके प्रिय हैं, औ हम लोग उनके प्रिय हैं, इसमे सन्देह नही, परंतु संग्राममे सो होना असंभव है हम सब लोग मिलित होके पाण्डवोंका जय कर सकते हैं, इसमे संदेह नही, परंतु परस्पर तुल्य पराक्रमसे परस्परका तेज प्रशमित होता है, जो होय, हम निश्चय कहते हैं, पाण्डव जीवित रहते बल पूर्वक विपक्ष सेना पराजय करनी दुःसाध्य है, बलवीर्यशाली पाण्डव आप लोगोंके लिये युद्ध करते हैं, इस लिये क्यों नही तुम्हारा सैन्य नाश करेंगे? तुम नितान्त लुब्ध शठतापरतन्त्र, सर्व विषयमे शङ्कित, अभिमानी औ पापात्मा हो इसीसे हम लोगो पर सर्वदा तुमको शंका रहती है, जो होय हम लोग जीविताशा त्याग करके युद्ध करते हैं, अश्वत्थामा यह कहके सैन्यविद्रावण करते युद्धमे प्रवृत्त हुए, औ केकय औ पाञ्चालोंसे बोले हे वीरगण। तुम लोग स्थिर होके प्रहार करो औ हमारी हस्त लाघवता देखो,

यह सुनके वारिधाराके तुल्य उनके ऊपर शरवर्षण

करने लगे, तब अश्वत्थामाने धृष्टद्युम्न औ पाण्डवोंके समस्त सैन्यको पीड़ित करते हुए वीरको निपातित कर दिया, पाञ्चाल औ सोमक उनके शरसे ताड़ित होय पलायन करने लगे, धृष्टद्युम्न सैन्यको पलायित देखके शत रथोंसे ही अश्वत्थामाके ऊपर धावमान हुए, औ बोले, हे निर्बोध आचार्यपुत्र! सामान्य वीरोंके नाश करनेसे क्या होगा? हमसे युद्ध करो क्षणमात्रसे तुम्हारा संहार करते हैं, यह कहके उन के ऊपर मर्मभेदी शर निक्षेप किया, वह सब शर अश्वत्थामाके देहमें प्रविष्ट होगए, तब अश्वत्थामा अतिमात्र विद्ध होके बोले, हे धृष्टद्युम्न! हमभी तुमको क्षणकालमें यमालय भेजते हैं, स्थिर हो, यह कहके अश्वत्थामाने उनको शरोंसे आच्छन्न कर दिया, तब धृष्टद्युम्न बोले, हे विप्रतनय! तुम हमारी उत्पत्ति औ प्रतिज्ञा जानते हो, पहिले द्रोणका नाश करेंगे पीछे तुम्हाराभी नाश करेंगे, ऐसी प्रतिज्ञा है इसीसे द्रोण रहते तुम्हारा नाश किया नहीं, प्रातःकाल होते पहिले तुम्हारे पिताका नाश औ पीछे तुम्हारा नाश करेंगे, इस लिये इस समय स्थिर होके पाण्डवों पर द्वेष औ कौरवों पर भक्ति करो, तुम जीवित रहते हमसे परित्राण पाओगे नहीं, हे नराधम! जो ब्राह्मण ब्रह्मानुष्ठान त्याग करके क्षत्रानुष्ठानमें तत्पर होय वह तुम्हारे ऐसा क्षत्रियहीका वध्य होगा।

धृष्टद्युम्नके यह कटु वाक्य सुनके तिष्ठ२ कहते हुए उनको समाच्छन्न करने लगे, धृष्टद्युम्नभी शर वर्षण करने लगे, इस प्रकार दोनो वीरोंका भयङ्कर युद्ध होनेसे चतुर्दिक् शरोंसे आच्छन्न होगई, किसीको कुछभी लक्षित न होने लगा केवल दोनोका धनुर्मण्डलकी प्रभा मात्र लक्षित होने लगी, उन दोनोमें कोई किसीका पराजय न कर सके, अनन्तर अश्वत्थामाने धृष्टद्युम्नको दण्ड, ध्वज, छत्र, पार्श्वरक्षक, अश्व औ

सारथिका छेदन कर दिया, तदनन्तर शरनिकर विस्तार करके पाञ्चालोको विद्रावित करने लगे, पाञ्चाल सब अश्वत्थामाके प्रहारसे व्यथित होने लगे, धृष्टद्युम्न औ अर्जुनके समक्ष अनेक पाञ्चालोका संहार किया, इस प्रकार शत्रुगणका पराजय करके अश्वत्थामा गर्जन करने लगे।

इति १६० अध्याय।

अनन्तर राजा युधिष्ठिर औ भीमसेनने अश्वत्थामाको वेष्टित किया, यह देखके दुर्योधन औ द्रोणाचार्य्य पाण्डवोंके ऊपर धावमान हुए; तब उभय पक्षमे भयङ्कर संग्राम उपस्थित हुया, तब राजा युधिष्ठिरने अम्बष्ठ, मालव, वङ्ग, शिवि औ त्रिगर्तोका संहार किया, भीमसेन अभीषाव्ह औ सूरसेनोको संहार करके पृथ्वी रुधिरकर्दममय कर दिया, अर्जुनने यौधेय, अद्रिज, मद्रक औ मालवोको यमालयमे भेज दिया, तब द्रोणाचार्य्य क्रुद्ध होके वायव्यास्त्रसे पाञ्चालोको विद्रावित करने लगे, पाञ्चालगण भयसे भीम औ अर्जुनके समक्ष पलायन करने लगे, अर्जुन यह देखके असंख्य सैन्य लेके धावित हुए, तब पाञ्चाल, मत्स्य, सृञ्जय औ सोमकोके सहित भीमसेनभी धावमान हुए, उस समय दिङ्मण्डल गाढ़ान्धकारसे आवृत औ सैन्य सब निद्रासे अभिभूत हुआ था, तब धनञ्जयके शरसे कौरव सैन्य पुन विद्रावित होने लगा, सैन्य सब स्व स्व वाहन त्याग करके धनञ्जयके भयसे इतस्तत धावमान होने लगा, द्रोण प्रभृति उनको निवारण करने लगे।

इति १४६ अध्याय।

इधर सात्यकी सोमदत्तको देखके उनके ऊपर धावमान हुए, सोमदत्त सात्यकीको वेगसे आवते देखके शरवर्षण करके

आच्छन्न करने लगे, सात्यकीभी उनको आच्छन्न करने लगे, तब सोमदत्तने साठ शरसे सात्यकीको विद्ध किया, सात्यकीने भी उनको विद्ध किया, तब सोमदत्तने अर्द्धचन्द्रसे सात्यकीका धनुश्छेदन कर दिया, सात्यकीने सत्वर अन्य धनु ग्रहण पूर्वक सोमदत्तको विद्ध करके उनका ध्वज छेदन कर दिया, सोम-दत्तने क्रोधसे पञ्चविंशति शरसे सात्यकीको विद्ध किया, सात्य-कीनेभी उनका धनु छेदन कर दिया, उसी समय भीमसेनने सात्यकीके रक्षार्थ सोमदत्तको दश बाणसे विद्ध किया, सोम-दत्तने असंख्य(?)तीक्ष्णसे भीमसेनको विद्ध किया, सात्यकीने सोम-दत्तके ऊपर परिघास्त्र प्रक्षेप किया, सोमदत्तने तत्क्षणही उसका छेदन कर दिया, तब सात्यकीने हास्य पूर्वक सोमदत्त की भल्लास्त्रसे धनुश्छेदन करके अश्वका संहार किया, तदुत्तर सारथिका संहार करके एक भयानक बाण उनकी वक्षस्थलमे प्रहार किया, सोमदत्त उस बाणाघातसे घूर्णित होय रथसे निपतित औ निहत हुए, कौरव पक्षीय सोमदत्तको निहत देखके असंख्य सैन्यसे सात्यकीके ऊपर धावमान हुए।

इधर पाण्डव प्रभद्रक औ अन्हती सेना लेके द्रोणसैन्याभि-मुख धावमान हुए, युधिष्ठिर क्रुद्ध होय द्रोणके समक्ष उनकी सैनिकपुरुषोंको विद्रावित करने लगे, द्रोणाचार्य क्रुद्ध होके युधिष्ठिरको तीक्ष्ण शरसे विद्ध करने लगे, युधिष्ठिरने उनको पांच बाणसे विद्ध किया, द्रोणाचार्य्य उससे अतिशय विद्ध होके क्रोधसे युधिष्ठिरका धनु औ ध्वज छेदन कर दिया, तब युधि-ष्ठिरने अन्य धनु लेके सहस्र बाणोंसे द्रोणके अश्व, सारथि औ ध्वज विद्ध किया, द्रोणाचार्य्य युधिष्ठिरके शरसे अत्यन्त व्यथित होय मुहूर्त्तमात्र रथ पर अवसन्न हो रहे, तदुत्तर संज्ञा लाभ करके दीर्घश्वास त्याग पूर्वक युधिष्ठिरके ऊपर वायव्यास्त्र प्रयोग किया, युधिष्ठिरने स्वीय अस्त्रसे उनका अस्त्र

निवारण करके धनुच्छेदन कर दिया, द्रोणने तत्क्षणही अन्य धनु ग्रहण किया, युधिष्ठिरने उसकोभी छेदन कर दिया।

हे महाराज! उस समय वासुदेव युधिष्ठिरसे बोले, हे महाराज! आप द्रोणाचार्य्यके सहित युद्धसे निवृत्त हो, वह आपको ग्रहण करनेमे यत्नवान् हैं, और जो इनके वधके लिये उत्पन्न हुए है वह इनका वध करेंगे, इस लिये आप इनको छोड़के दुर्योधनके संमुख जाओ, राजा राजाओंसे युद्ध करे योग्य होते हैं, युधिष्ठिर उनका वाक्य सुनके शीघ्र भीम-सेनके निकट गए, इधर द्रोणाचार्य्य पाञ्चालोंको विद्रावित करने लगे।

इति १६२ अध्याय।

इस प्रकार भयानक युद्ध प्रवृत्त हुआ तब अन्धकार औ धूलिसे कुछभी न निरीक्षण होने लगा, तब वीरगण स्व स्व नाम कीर्त्तन औ अनुमानसे युद्ध करने लगे, तब उभय पक्षीय वीरगण अन्धकारसे विमोहित होके परस्पर संहार करने लगे, औ अत्यन्त शङ्कित औ मुग्ध होने लगे।

धृ०। उस तिमिराच्छन्न प्रदेशमे अस्मत्पक्षीय औ पाण्डव पक्षीय किस प्रकार दृष्टिगोचर हुए?

सं०। उस समय सेनापतिगण द्रोणके आज्ञासे हताव-शिष्ट सैन्य सब संग्रह करके व्यूह रचना करने लगे, द्रोण उसके आगे, शल्य पश्चात् भागमे अश्वत्थामा औ शकुनि उसके पार्श्वभागमे उपस्थित हुए, दुर्योधन सैन्यके तत्त्वावधानमे प्रवृत्त हुए, वह पदातिगणको सान्त्ववादसे आश्वस्त करके बोले, हे पदातिगण! तुम लोग अस्त्र शस्त्र त्याग करके प्रज्वलित प्रदीप धारण करो, पदातिगणने उनके आज्ञासे प्रदीप ग्रहण किया, र देवर्षि, गंधर्व, विद्याधर प्रभृति कौतूहलसे प्रदीप

ग्रहण करने लगे, तब देवर्षि नारद औ पर्वतभी दुर्योधनके लिये सुगंधियुक्त तैलज्वलित दीप आकाशसे प्रक्षेप करने लगे, तब युद्ध प्रवृत्त सेनाके आभरण औ अस्त्रकी प्रभा उद्भासित हो गई, सेनासे प्रदीपहस्त पदातिगणको प्रतिगजके साथ सात२, प्रत्येक रथके साथ दश२, प्रत्येक अश्वके पृष्ठमे दो दो प्रदीप स्थापन किये। ध्वज औ समस्त सैन्य पश्चात्, आगे औ बीचमे दीप प्रज्वलित कर दिये, इस प्रकार उभय पक्षके सैन्यमे असंख्य दीप प्रज्वलित हो गए, उससे सब सैन्य प्रकाशित औ हृष्ट हो गया, तब महावीर अश्वत्थामा पाण्डवोंको शर-जालसे पीड़ित करने लगे।

इति १६२ अध्याय।

हे महाराज! इस प्रकार धूलिपटल, औ अन्धकार तिरो-हित होने पर परस्पर संग्राम आरम्भ हुआ।

धृ०। तब दुर्धर धनञ्जय हमारे सैन्यमे प्रविष्ट हुए, तब दुर्य्योधनने क्या कर्तव्य अवधारित किया? औ धनञ्जयके संमुख कौन कौन उपस्थित हुए?

सं०। दुर्य्योधन द्रोणाचार्य्यका अभिप्राय जानके अपने भ्राताओंको उनके रक्षार्थ नियुक्त किया, औ कहा कि आचार्य्यभी बलवान् क्षिप्रहस्त औ पराक्रमी हैं, सोमक सहित पाण्डवोंकी कथा दूर रहे वह एकाकी देवगणकाभी पराजय करसकते हैं, इस लिये तुम लोग यत्न करके धृष्ट-द्युम्नसे रक्षामे सावधान रहो, उनकी रक्षा होनेसे सृञ्ज-योंका पराजय अनायास होगा, सृञ्जय निहत होनेसे अश्व-त्थामा धृष्टद्युम्नको औ कर्ण धनञ्जयको पराजय करेंगे, हमभी भीमसेन प्रभृति अवशिष्ट पाण्डवोंका पराजय करेंगे, यह कहके युद्धमे प्रवृत्त हुए, उभयपक्षका घोर संग्राम होने

लगा, तब धनञ्जय कौरवोंको औ कौरव अर्जुनको प्रहार करने लगे, अश्वत्थामा द्रुपदको औ द्रोणाचार्य्य सृञ्जयोंको शरजालसे विद्ध करने लगे, उस काल परस्पर प्रहारसे दोनो सैन्यमे आर्त्तनाद उपस्थित होने लगा, इस रात्रिकालमे जैसा युद्ध हुआ वैसा कभी न हुआ था।

इति १६४ अध्याय।

सं०। इस प्रकार द्रोणके संमुख पाञ्चाल औ सोमक धावमान हुए तब आचार्य्य उनको आच्छन्न करने लगे, तब कृतवर्मा युधिष्ठिरके ऊपर धावमान हुए, कुरुकुलोद्भव भूरिश्रवा सात्यकीके ऊपर धावमान हुए, कर्ण सहदेवको द्रोणके ग्रहण करनेमे यत्नवान् देखके उनके ऊपर धावमान हुए, दुर्य्योधन भीमसेनके ऊपर धावमान हुए, शकुनि नकुलके ऊपर कृपाचार्य्य शिखण्डीके ऊपर धावमान हुए, इस प्रकार परस्पर समरप्रवृत्त होके मर्दन करने लगे, कृतवर्मा युधिष्ठिरको निवारण करने लगे तब युधिष्ठिर पहिले पांच औ पीछे बीस शरोंसे विद्ध करके तिष्ठ तिष्ठ कहते हुए आस्फालन करने लगे, कृतवर्मीने उस आस्फालनसे क्रुद्ध होय युधिष्ठिरका भल्लसे धनु छेदन कर दिया, तब युधिष्ठिरने शीघ्र अन्य धनु ग्रहण करके हार्दिक्यका हृदय औ बाहु विद्ध किया, तब कृतवर्मीने उनके शरसे गाढ़विद्ध किया, तब धर्मराजने उनका कार्मुक औ शरमुष्टि छेदन करके पांच शर निक्षिप्त किया, वह युधिष्ठिर निक्षिप्त शर कृतवर्माका कवच भेद करके भूतलमे प्रविष्ट हुए, तब कृतवर्मीने निमिषमे अन्य धनु ग्रहण करके पहिले साठ औ पीछे दश शरोंसे विद्ध किया।

अनन्तर धर्मराजने कार्मुक रखके भुजगाकार शक्ति निक्षेप

किया, वह शक्ति कृतवर्म्माका दक्षिण भुज भेद करके निपतित हुई, इतनेमे युधिष्ठिरने धनुर्ग्रहण करके कृतवर्म्माको आच्छन्न कर दिया, तब कृतवर्म्माने क्रोधसे युधिष्ठिरका रथ, सारथि औ अश्व नष्ट कर दिये, तब युधिष्ठिरने खड्ग औ चर्म धारण किया, तब कृतवर्म्मा एक भल्ल लेके उनके ऊपर धावमान हुए, तब युधिष्ठिरने तोमर प्रक्षेप किया, हार्दिक्यने उसके खण्ड खण्ड कर दिये, और निशितशर निक्षेप किये, तब युधिष्ठिरका कवच भूतलमे स्खलित होय गिर पड़ा।

हे महाराज! युधिष्ठिर इस प्रकार कृतवर्म्मासे छिन्न कवच होके शीघ्र रणसे अपसृत हुए, हार्दिक्य धर्म्मराजका पराजय करके पुनः द्रोणाचार्य्यकी रक्षा करने लगे।

इति १६५ अध्याय।

इधर भूरिने सात्यकीको निवारण किया, तब सात्यकीने शाणित शरोसे उनका शरीर शोणितधारा प्लुत कर दिया, भूरीने सात्यकीके वक्षःस्थलमे दश शर निक्षेप किये, सात्यकीने उनका धनु छेदन कर दिया, तब भूरि अन्य शरासन लेके सात्यकीको तीन बाणोसे विद्ध किया, तब सात्यकीने उनके वक्षःस्थलमे एक घोर शक्ति निक्षेप किया, इससे महावीर भूरी चूर्णदेह होके रथसे निपतित हुए, तब अश्वत्थामा द्रुतवेगसे सात्यकीके संमुख होय तिष्ठ तिष्ठ कहते हुए शर वर्षण करने लगे।

तब घटोत्कच बोले, हे द्रोणनन्दन! तुम इहां अवस्थान करो प्राण रहते इहांसे जायसकोगे नही, आज हम तुम्हारी युद्धवासना दूर करते हैं, यह कहके रथाक्ष परिमित शर

वर्षण करने लगे, अश्वत्थामाने उन शरोंको निराकृत करके तीक्ष्ण शर निक्षेप किये, तब घटोत्कचने क्षुरप्र, अर्द्धचन्द्र, नाराच, वराहकर्ण, नालीक औ विकर्ण प्रभृति विविध बाण निक्षेप किये, अश्वत्थामाने मन्त्रपूत बाणों उन सब शरोंको निराकृत कर दिया, उन दोनो वीरोंके शरोंका परस्पर संघर्षसे स्फुलिङ्ग उत्पन्न होने लगे, अनन्तर अश्वत्थामाके वक्षःस्थलमे घटोत्कचने दशबाणसे आघात किया, तब अश्वत्थामा उस आघातसे गाढ़बिद्ध औ व्यथित होय वायुचालित वृक्षके तुल्य विचलित होने लगे, औ मोहसे ध्वज दण्ड अवलम्बन करके रह गए, तब उनको निहत बोध करने लगे औ पाञ्चाल औ सृञ्जय गर्जन करने लगे, तब अश्वत्थामाने पुनः संज्ञालाभ करके धनुर्ग्रहण पूर्वक घटोत्कचके ऊपर भीषण शर निक्षेप किया, घटोत्कचभी उससे अत्यन्त बिद्ध होके रथ पर अवसन्न हो रहे, तब सारथि उनको विमोहित देखके अश्वत्थामासे दूर किया।

अनन्तर दुर्योधनने आचार्यसे युद्धमे प्रवृत्त भीमसेनको देखके उनको शरनिकरसे बिद्ध करने लगे, भीमसेनने उनको विंशति शरसे बिद्ध किया, तब दुर्योधन भीमको पांच बाणसे बिद्ध करके आस्फालन करने लगे, तब भीमसेनने उनका ध्वज औ धनु छेदन करके नवति बाणोसे बिद्ध किया, तब दुर्योधन क्रुद्ध होके अन्यधनुग्रहण पूर्वक भीमको पीड़ित करने लगे, भीमने उनके शर छेदन करके पञ्चविंशति क्षुद्रकास्त्रसे उनको बिद्ध किया, दुर्योधनने क्षुरप्रसे भीमका धनु छेदन कर दिया, इस प्रकार पांचवार भीमसेनका धनु छेदन किया, तब भीमने अतिशय क्रुद्ध होय उनके ऊपर घोर शक्ति निक्षेप किया, दुर्योधनने उसकोभी खण्ड खण्ड कर दिया, तब भीमसेनने भीषण गदा प्रक्षेप

किया, उससे दुर्य्योधनको अश्व रथ सब चूर्ण हो गया, दुर्य्योधन भीमकी पराक्रमसे भीत होय पलायन करके नन्दनकी रथ पर आरूढ़ हुए, तब शालिकी योगसे भीमसेनको दुर्य्योधन निहत हुए, ऐसा बोध हुआ, उससे वह गर्जन करने लगे, कौरव सैन्यमेंभी हाहाकार होने लगा, पांचाल संजय प्रभृतिकोभी वैसही बोध होकर द्रोण विनाशार्थ युगपत् उनकी धावमान हुए, तब द्रोण औ उनका भीषण संग्राम होने लगा।

इति १६६ अध्याय।

हे महाराज! तब कर्ण सहदेवको द्रोणाभिमुख धावमान देखके निवारण करने लगे, तब सहदेवने नव शरसे विद्ध करके पुनः नवशरसे विद्ध किया, कर्णने शत नतपर्वसे विद्ध करके उनका धनुश्छेदन कर दिया, सहदेवने सत्वर अन्य चाप लेके विंशति शरसे उनको विद्ध किया, तब कर्णने सहदेवकी अश्व औ सारथिका नाश किया, तब सहदेवने खड्ग औ चर्म धारण किया, कर्णने हास्य पूर्वक उसकोभी छेदन किया, तब सहदेवने गदा प्रक्षेप किया, उसकोभी उन्होंने चालित किया, तब सहदेवने रथचक्र क्षेपण किया, उसकोभी उन्होंने खण्ड खण्ड कर दिया, तब सहदेव रथकी ईषा, अक्ष, योक्र प्रभृति प्रक्षेप किये, उन्होंने वहभी सब चूर्ण कर दिये, तब सहदेव अस्त्रशून्य होके पलायित होगए, तब कर्ण उनकी पीछे धावमान होय बोले, हे माद्रितनय! तुम महाबल पराक्रान्तोंसे युद्धमें कदापि प्रवृत्त न होना, तुल्य व्यक्तिसे युद्ध करना तुमको उचित है, यह कहकी धनुःकोटिसे उनकी अङ्गमें स्पर्श करके पुनः बोले, हे माद्रेय! देखो अर्जुन परम यत्नसे कौरवोंके साथ युद्ध करते हैं, तुम उनकी पास जाओ वा गृह पर जाओ यह कहके पाञ्चाल सैन्य पर

धावमान हुए, उस समय कुन्तीका वाक्य स्मरण करके सहदेव छोड़ दिया, तब सहदेव अति विमनायमान होके पांचाल देशीय जनमेजयके रथ पर आरूढ़ हुए ।

इति १६७ अध्याय ।

अनन्तर मद्रराज द्रोणाचार्य्यसे युद्धमें प्रवृत्त विराटको शर निकरसे विद्ध करने लगे, तब उन दोनोंका बलिवासवकी तुल्य युद्ध होने लगा, मद्रराजने नतपर्व शत बाणोंसे विद्ध किया, विराटने शत बाणसे विद्ध करके पुनः त्रिसप्तति बाणसे विद्ध किया, तब शल्यने विराटके चारो अश्व नाश करके दो बाणसे ध्वज औ छत्र छेदन कर दिया, तब विराट रथसे कूदके धनुग्रहण करके शल्यके ऊपर शर वर्षण करने लगे, उस समय विराटके भ्राता शतानीक शल्यके ऊपर धावमान हुए, तब शल्यने सत्वराचसे शरोंसे विद्ध करके अन्तमें यमालय भेज दिया, तब विराटने क्रोधसे भ्राताके रथ पर आरोहण करके शल्यको समाच्छन्न कर दिया, तब शल्यने क्रोधसे शत बाण उनके वक्षःस्थलमें प्रक्षिप्त किये, तब विराट उन बाणोंके आघातसे मूर्च्छित होगए, तब सारथिने उनको वहांसे अपसारित कर दिया, तब धनञ्जय शल्यके ऊपर धावमान हुए, तब राक्षसेन्द्र अलंबुष अर्जुनके ऊपर धावमान हुए, अर्जुन औ अलंबुषका भयङ्कर युद्ध होने लगा, [illegible] अर्जुनने छ बाणसे अलंबुषके निपीड़ित करके दश बाणोंसे ध्वजा दण्ड छेदन, तीन शरसे सारथि, तीन शरसे त्रिवेणु, एक शरसे कार्मुक औ चार शरसे चारो अश्व छेदन कर दिया, तब राक्षसने अन्य धनुग्रहण किया, अर्जुनने उसकाभी छेदन कर दिया, तब अलंबुष गाढ़ विद्ध होके भयसे पलायित होगया ।

इस प्रकार अर्जुन अलंबुषका पराभव करके द्रोणाभिमुख धावमान हुए, तब द्रोण सैन्य उनसे युद्ध करने लगा, अर्जुनने तत्क्षणही निपातित करने लगे, तब वह सैन्य पलायन करने लगा।

इति १६८ अध्याय।

हे महाराज! इधर आपके पुत्र चित्रसेन नकुलपुत्रको कौरव सैन्य विद्रावित करते देखके निवारण करने लगे, नकुलनन्दन चित्रसेनको नाराचसे निपीड़ित करने लगे, तब चित्रसेनने उनको दश शरसे बिद्ध किया, तब नकुल-नन्दनने चित्रसेनका कवच छेदन कर दिया, तदनन्तर उनका ध्वज औ शरासन छेदन कर दिया, तब चित्रसेन वर्महीन शरासनहीन होके अन्य धनुग्रहण करके नतपर्व बाणसे उनको बिद्ध करने लगे, तब नकुलनन्दन शतानीकने चारो अश्व औ सारथिको नष्ट किया, चित्रसेन रथसे उतर करके पञ्च-विंशति शरसे निपीड़ित करने लगे, तब शतानीकने अर्द्धचन्द्र बाणसे उनका शरासन छेदन कर दिया, तब चित्रसेन रथ, अश्व, सारथि औ धनुहीन होके हार्दिक्यके रथ पर आरूढ़ हुए, तब कर्णपुत्र वृषसेनने द्रुपदको शरजालसे समाच्छन्न कर दिया, द्रुपदने साठ शरसे वृषसेनके बाहु औ वक्षःस्थल बिद्ध किया, अनन्तर वृषसेनने नवें बाण पीछे तीन बाणसे यज्ञसेनको बिद्ध किया, तदुत्तर सहस्र बाणोंसे आच्छन्न कर दिया, द्रुपदने क्रोधसे वृषसेनका चाप छेदन कर दिया, वृषसेन तत्क्षण अन्य धनु ग्रहण करके एक भल्ल निक्षेप किया, वह भल्ल द्रुपदका हृदयभेद करके भूतलमें गया, द्रुपद उससे मूर्च्छित होगए, सारथि स्वीय कर्म स्मरण करके उनको वहांसे अपसारित किया, तब, सोमकगणभी वृषसेनके शरसे पीड़ित

होय पलायन करने लगी, तब वृषसेन युधिष्ठिरके ऊपर धावमान हुए।

इधर आपके पुत्र दुःशासन प्रतिविंध्यके ऊपर धावमान हुए, दुःशासनने प्रतिविंध्यके ललाटमें तीन शर प्रक्षेप किया, प्रतिविंध्यने उन तीनो शरसे त्रिशृङ्ग पर्वतके तुल्य शोभित होय क्रोधसे नव शर औ पीछे सात शर प्रक्षेप किया, तब दुःशासनने तीक्ष्ण बाणसे प्रतिविंध्यके सारथि, ध्वज, पताका तूणीर, अश्व, रथ औ योद्धा चूर्ण कर दिया, प्रतिविंध्य रथहीन होकेभी धनुग्रहण करके युद्ध करने लगे, इतनेमे प्रतिविंध्यके भ्रातृगण उनको रथहीन देखके सेना सहित उनके समीप उपस्थित हुए, तब प्रतिविंध्य श्रुतसोमाके रथ पर आरूढ हुए, कौरवगणभी दुःशासनके सहायार्थ वहां उपस्थित हुए, उस समय कौरव औ पाण्डवोका घोर युद्ध हुआ।

इति १६९ अध्याय।

हे महाराज! उस समय सुबलनन्दन नकुलको सैन्य संहार करते देखके तिष्ठ २ कहते हुए, आस्फालन करने लगे, तब बद्धवैर दोनो वीरोका परस्पर बाण वर्षण करने लगे, नकुल जिस प्रकार अस्त्र प्रयोग करने लगे, उसी प्रकार शकुनिभी प्रयोग करने लगे, परस्पर दोनोके बाण वर्षणसे दोनो कण्टकाकीर्ण वृक्षके तुल्य होय परस्परका देह छिन्न भिन्न औ रुधिरधाराप्लावित करने लगे, तब शकुनिने एक तीक्ष्ण शर निक्षेप किया, उस बाणसे नकुल मूर्च्छित हो गए, तदुपरान्त क्षणमात्रमे संज्ञालाभ करके क्रोधसे साठ शरसे विद्ध करके पुनः शत बाणसे उनका हृदय भेद कर दिया, तदुत्तर उनका ध्वज, शरासन औ मुष्टिक छेदन कर दिया, औ निशित बाणसे उनका उरुद्वय भेद किया, तब शकुनि मूर्च्छित

होय रथमें निपतित हुए, सारथी उनको निपतित देखके वहांसे दूर हुए, तब नकुल वहांसे द्रोणसैन्याभिमुख धावमान हुए।

इधर कृपाचार्य्य शिखण्डीको द्रोणाभिमुख धावमान देखके उनके ऊपर धावित हुए, तब शिखण्डीने उनको आवते देखके नव वाणसे बिद्ध किया, कृपाचार्य्यने पहिले पांच वाणसे बिद्ध करके पुनः विंशति वाणसे बिद्ध किया, तब दोनोका घोर युद्ध होने लगा।

अनन्तर शिखण्डीने अर्द्धचन्द्र वाणसे कृपाचार्य्यका धनुश्छेदन कर दिया, तब कृपाचार्य्य क्रोधाविष्ट होके शिखण्डीके ऊपर शक्ति निक्षेप किया, शिखण्डीने उसको खण्ड खण्ड कर दिये, कृपाचार्य्यने अन्य धनु लेके शिखण्डीको समाछन्न कर दिया, तब शिखण्डी किञ्चित् अवसन्न हुए, तब पांचाल औ सोमक शिखण्डीको अवसन्न देखके सहायताके लिये उनको वेष्टन करने लगे, तब आपके पुत्रगणभी कृपाचार्य्यके सहायार्थ धावमान हुए, तब उभय पक्षको घोरतर तुमुल संग्राम उपस्थित हुआ, रथ, अश्व औ गजोंके ऊपरके दीपोंसे अम्बरस्खलित दीप्त उल्काके तुल्य बोध होने लगा।

हे महाराज! उस घोरतर रात्रि युद्धमें योधगण आत्मपरकीय विमूढ़ होके पिता पुत्रको, पुत्र पिताको, मित्र मित्रको, मातुल भागिनेयको औ भागिनेय मातुलको प्रहार करते हुए मर्यादाशून्य युद्ध करने लगे।

इति १७० अध्याय।

इस प्रकार युद्ध होने लगा तब धृष्टद्युम्न दृढ़ शरासन लेके बारंबार आकर्षण करते हुए द्रोणाभिमुख धावमान

हुए, पाञ्चाल औ पाण्डव धृष्टद्युम्नको द्रोण संधमे उद्यत देखके सहायताके लिये धावमान हुए, तब आपके पुत्रगणभी द्रोणसहायार्थ धावित हुए, तब धृष्टद्युम्नने आचार्य्यके वक्षःस्थलमे पांच शर निक्षेप किये, द्रोणाचार्य्यने उनका वह दृढ़ धनु छिन्न कर दिया, तब धृष्टद्युम्नने क्रोधसे अन्य चाप लेके एक जीवितान्तकारी शर निक्षेप किया, उस शरको देखके सबही व्याकुल हो गए, कर्णने उस भयानक शरको देखके द्रोणके ऊपर न गिरते द्वादश खण्ड कर दिये, और शरनिकरसे धृष्टद्युम्नको विद्ध करने लगे, तब अश्वत्थामा पांच, द्रोण पांच, शल्य नव, दुःशासन तीन, दुर्य्योधन विंशति, औ शकुनि पांच शरसे धृष्टद्युम्नको विद्ध करने लगे, इतनेमे द्रुमसेन क्रुद्ध होके धृष्टद्युम्नको तिष्ठ तिष्ठ करते हुए शराघात करने लगे, धृष्टद्युम्नने प्राणनाशक तीन शर निक्षेप करके एक भल्लसे द्रुमसेनका मस्तक छेदन कर दिया, और सब वीरोंको निपीड़ित करके कर्णका चाप छेदन कर दिया, तब कर्ण अतिशय क्रुद्ध होके अन्य कोदण्ड ग्रहण करके शरवर्षण करने लगे, उस समय छ महारथिसे धृष्टद्युम्न युद्ध करते थे, इतने सात्यकी धृष्टद्युम्नके रक्षार्थ उनके समीप उपस्थित होय शरवर्षण करने लगे, कर्णने सात्यकीको देखके दश वाणसे विद्ध किया, सात्यकी कर्णको दश वाणसे विद्ध करके पलायन मत करो यह कहके आस्फालन करने लगे, तब सात्यकी औ कर्णका घोर संग्राम होने लगा, तब कर्ण त्रिपाटी, नाराच, वत्सदन्त औ क्षुरप्रोसे सात्यकीको विद्ध करने लगे, सात्यकीभी विविध वाणोसे उनको विद्ध करने लगे, तब आपके पुत्रभी सात्यकीको विद्ध करने लगे, सात्यकीने सबके अस्त्र निवारण करके वृषसेनके वक्षःस्थलमे तीक्ष्ण शर निक्षेप किया, वृषसेन उस शराघातसे रथमे निपतित हो

गए, कर्ण स्वपुत्रको निहत जानके पुत्रशोकसे क्रुद्ध होय सात्यकीको निपीड़ित करने लगे, युयुधानभी वारंवार उनको पीड़ित करने लगे, अनन्तर दश वाणसे कर्णको औ सात वाणसे वृषसेनको विद्ध किया, औ दोनोका धनु औ शरमुष्टि छेदन कर दिया, तब कर्ण औ वृषसेन अन्य धनु लेके शर वर्षण करने लगे, उस समय भयङ्कर गाण्डीवका शब्द होने लगा, यह सुनके कर्ण दुर्य्योधनसे बोले, हे राजन्! धनञ्जय प्रधान प्रधान वीरोंका संहार करके गाण्डीव शब्द करते हैं, उनके शरोंसे कौरवसैन्य विदीर्ण हो रहा है, सात्यकी हम लोगोसे औ धृष्टद्युम्न द्रोणसे युद्ध कर रहे हैं, इन दोनोका संहार कर सकें तो अवश्य जयलाभ होगा, इस लिये सब एकत्र होके अभिमन्युके ऐसा इन दोनोका संहार करना चहिये, देखो अर्जुनभी इधर आवते हैं, इस लिये सात्यकीके ऊपर बहुसंख्यक रथिगण प्रेरण करो, सात्यकी असंख्य महा-रथिओसे वेष्टित होंगे तो धनञ्जय उनको जान सकेंगे नहीं, इस समय सात्यकीके ऊपर अनवरत शर वर्षण करो।

अनन्तर दुर्य्योधन कर्णका अभिप्राय जानके शकुनिसे बोले, हे मातुल! तुम दश सहस्र हस्ती औ दश सहस्र रथ लेके धनञ्जयके संमुख जाओ, दुःशासन, दुर्विषह, सुबाहु औ दुर्मर्ष असंख्य पदाति लेके तुम्हारे अनुगामी होंगे, तुम युधिष्ठिर, भीम, नकुल, सहदेव औ वासुदेवका संहार करो, शकुनि यह सुनके दुर्य्योधनके हितार्थ असंख्य सैन्य लेके पाण्डवोंके संहारार्थ प्रस्थित हुए, कर्ण असंख्य सैन्यके साथ अनवरत शर वर्षण करते हुए सात्यकीके ऊपर धावमान हुए, आपके पक्षीय अन्य अन्य वीरभी सात्यकीके ऊपर धाव-मान हुए, उस समय द्रोण धृष्टद्युम्नसे युद्धमे प्रवृत्त हुए।

इति १७१ अध्याय।

हे महाराज! महारथिगण सात्यकीके विनाशवासनासे तीक्ष्ण शर वर्षण करने लगे, सात्यकीभी उनके ऊपर विविध अस्त्र प्रक्षेप करने लगे, औ सन्नतपर्व वाणोंसे उन वीरोंके मस्तक, क्षुरप्रोंसे गजके शुण्ड, अश्वोंकी ग्रीवा औ योधोंके बाहु छेदन करने लगे, तब असंख्य क्षतदेहोंसे भूमण्डल व्याप्त हो गया।

तब राजा दुर्य्योधन सैन्यको विद्रावित देखके सात्यकीके ऊपर धावमान हुए, सात्यकी उनको देखके विद्ध करने लगे, दुर्य्योधन उससे पीड़ित होय क्रोधसे दश वाणसे उनको विद्ध करने लगे, सात्यकीने उनके वक्षःस्थलमें अशीति वाण प्रक्षेप करके उनको सारथि औ अश्वोंका संहार किया, तब दुर्य्योधन उस अश्वशून्य रथ परहीसे शर वर्षण करने लगे, सात्यकीने उनके शर निवारण करके उनका धनु औ मुष्टि छेदन कर दिया, तब दुर्य्योधन रथहीन औ धनुहीन होके कृतवर्माके रथ पर आरूढ़ हुए, इस प्रकार दुर्य्योधनको पराजित करके सात्यकी कौरवसैन्य विद्रावित करने लगे।

इधर शकुनि असंख्य सैन्यके सहित धनञ्जयके ऊपर धावमान हुए, धनञ्जय शकुनिको पराङ्मुख करनेके लिये सहस्र सहस्र रथी, हस्ती औ अश्वोंका संहार करने लगे, उस काल असंख्य छिन्नभुज औ मस्तक देहसे रणभूमि व्याप्त हो गई, अनन्तर धनञ्जयने पांचवाणोंसे शकुनिको विद्ध करके उनके समक्ष उनके पुत्र उलूकका देह विदार करके सिंहनाद पूर्वक उनका धनु औ अश्व नष्ट कर दिया, तब शकुनि स्वीय रथसे उतरके उलूकके रथ पर आरूढ़ हुए, तब पितापुत्र दोनो धनञ्जयके ऊपर शर वर्षण करने लगे, वायुसे मेघ जैसे छिन्न भिन्न हो जाते हैं तद्रूप कौरवसैन्य धनञ्जयके शराघातसे छिन्न

भिन्न होय शङ्कितचित्तसे पलायन करने लगे, हे महाराज! इस प्रकार आपके वीरोंका पराभव होनेसे वासुदेव औ अर्जुन प्रसन्न मनसे शङ्खनिनाद करने लगे।

उस समय धृष्टद्युम्नने तीन बाणसे आचार्य्यको बिद्ध करके उनके धनुकी ज्या छेदन कर दिया, तब द्रोणाचार्य्यने शीघ्र अन्य धनु लेके सात बाणसे धृष्टद्युम्न औ पांच बाणसे उनके सारथिको बिद्ध किया, महारथ धृष्टद्युम्नने आचार्य्यको निवारण करके आपके सैन्यका ध्वंस करने लगे, असंख्य सैन्य निहत होनेसे रुधिरकी महानदी बहने लगी, तब धृष्टद्युम्न प्रभृति महावीरगण शङ्खवादन करने लगे।

इति १७२ अध्याय।

अनन्तर दुर्य्योधन कर्ण औ द्रोणके समीप जाय क्रोधसे बोले, हे वीरद्वय! आप लोगोंने अर्जुनसे जयद्रथको निहत देखके समरानल प्रज्वलित किया, परंतु इस काल पाण्डवोंसे निहत सैन्य देखके समर्थ होकेभी अशक्तके समान उपेक्षा करते हो, हमारा त्यागही करना आपको था तब उस समय पाण्डवोंको पराजय करेंगे, ऐसा स्वीकार क्यौं किया, आप स्वीकार न करते तो हम कदापि युद्धमें प्रवृत्त न होते, जो होय, इस काल आपको हमारा त्याग न करना होय तो पराक्रम प्रकाश पूर्वक संग्राममें प्रवृत्त होइये।

हे महाराज! दुर्य्योधनका यह वचन सुनके द्रोण औ कर्ण क्रोध करके घोर युद्धमें प्रवृत्त होय सात्यकी प्रभृति वीरोंके ऊपर धावमान हुए, तब द्रोणने सात्यकीको दश बाणसे बिद्ध किया, तब कर्णने दश बाण, दुर्य्योधनने सात, वृषसेनने दश, शकुनिने सात, बाणसे सात्यकीको बिद्ध किया, तब सोमकगण द्रोणके ऊपर शर वर्षण करने लगे, तब द्रोणा-

चार्य्य क्रुद्ध होके वीरोंका संहार करने लगे, पाञ्चालगण आचार्य्यसे ताड़ित होय आर्तनाद करने लगे, धृष्टद्युम्नके सब जनही प्रदीप त्याग करके पलायन करने लगे, तब पुनः गाढ़ान्धकार व्याप्त हो गया, केवल कौरवसैन्यके दीपोंसे पला-यमान योद्धा दृष्ट होने लगे, तब द्रोण औ कर्ण उनको देखके शर वर्षण करते हुए उनके पीछे पीछे धावमान होने लगे, तब वासुदेव दीनमनसे अर्जुनसे बोले, देखो धृष्टद्युम्न औ सात्यकी द्रोण औ कर्णसे युद्ध कर रहे हैं, अपना सैन्य सब द्रोणके शरसे पलायमान औ छिन्नभिन्न हो गए हैं, इस लिये चलो उनका निवारण करें, यह सुनके धनञ्जय पलायमान सैन्यसे बोले, हे वीरगण! तुम लोग भीत होके पलायन मत करो, हम लोग व्यूहित होके द्रोण औ कर्णके संमुख हुए हैं, तब केशव भीमसेनको गमन करते देखके, बोले, देखो यह भीमसेन कर्णसे युद्ध करनेके लिये गमन करते हैं, इस लिये चलो शत्रुसैन्यका संहार करें, यह कहके दोनो द्रोण औ कर्णके संमुख उपस्थित हुए, तब वह सैन्य पुनः युद्धमें प्रवृत्त हुआ, तब उभय पक्षका घोर युद्ध होने लगा, तब कौरवपक्षीयभी दीप त्याग करके उन्मत्तके ऐसा पाण्डव-पक्षीयोंसे युद्ध करने लगे, तब धूलिपटल औ अन्धकारसे समाच्छन्न हो गया, तब वीरगण अपना अपना नामोच्चारण करके युद्ध करने लगे, उस समय जहां जहां दीप निपतित थे वहां वहां सब जाने लगे, इस प्रकार कौरव पाण्डवोंका भयङ्कर युद्ध होने लगा।

इति १७३ अध्याय।

अनन्तर कर्णने धृष्टद्युम्नकी वक्षस्थलमें दश बाण प्रक्षेप किया, धृष्टद्युम्नने तिष्ठ तिष्ठ कहके पांच बाणसे उनको विद्ध

किया, तब कर्णने धृष्टद्युम्नका सारथि औ अश्वोंका संहार करके कार्मुक छेदन कर दिया, तब धृष्टद्युम्न अश्व, सारथि औ धनुहीन होके गदा ग्रहण पूर्वक कर्णके अश्वोंका संहार किया, तदनन्तर धनञ्जयके रथ पर आरूढ़ हुए, तब कर्ण शङ्खनाद औ धनुष्टङ्कार करने लगे, पाञ्चालगण धृष्टद्युम्नको पराजित देखके क्रोधसे कर्णके ऊपर धावमान हुए, तब कर्णके सारथिने अन्य अश्व नियोजित किये, तब कर्ण वारि-धारातुल्य शरधारा निपात करने लगे, पाञ्चालगण कर्णसे अर्दित होय पलायन करने लगे, अनेक वीर अश्व, हस्ती औ रथसे निपतित होने लगे।

तब युधिष्ठिर स्वीयसैन्यको छिन्नभिन्न देखके अर्जुनसे बोले, हे अर्जुन! यह कर्ण इस रजनीयोगमे प्रखर भास्करके ऐसा अवस्थान करते हैं, औ उनसे आत्मपक्षीय सब आकु-लित हो रहे हैं, इस लिये समयोचित कार्य्यमें प्रवृत्त होय कर्णका वध करो, धनञ्जय यह सुनके कृष्णसे बोले, वासु-देव! धर्मराज कर्णके पराक्रमसे भीत हुए हैं, स्वीयगणभी आकुल हो रहे हैं इस लिये शीघ्र कर्णके समीप रथ ले चलो।

वासुदेव बोले, हे कौन्तेय! हम विक्रमशाली कर्णको इन्द्रके समान अवस्थान करते देखते हैं, इस समय घटोत्कच भिन्न कोई उनका प्रतिद्वंद्वी हो सकता नही; तुमको उनके संमुख होना उचित नही है, सूतपुत्रने तुम्हारे संहारार्थ इन्द्रदत्त शक्ति यत्नसे रखा है, इस लिये घटोत्कचको प्रेरण करो, इस समय वही उनको पराजय करेगा।

अर्जुनने यह सुनके घटोत्कचको आह्वान किया, तब घटोत्कच आयके अभिवादन पूर्वक बोले, हे महात्मन्! हम उपस्थित हैं आज्ञा कीजिये, तब वासुदेव हास्यमुखसे बोले

हे घटोत्कच! इस समय तुम्हारे पराक्रम प्रकाशका समय है, तुम्हारे विना और कोई कर सकता नहीं, तुम्हारे निकट राक्षसोंमाया अस्त्र हैं, इस लिये इस समय युद्धसागर निमग्न पाण्डवोंके नौकारूप हो, सूतपुत्र सेनामे प्रधान प्रधानोका नाश करते हैं, इस निशीथसमयमें सब विशीर्ण हो रहे हैं, इस रात्रिकालमे कर्णका निवारण करना तुम्हाराही साध्य है, लोकमे पुत्रसे सब कामना करते हैं, इस लिये पितरोका उद्धार करो, तब धनञ्जय बोले, हे वत्स! इन पाण्डवोमे तुम, सात्यकी भीमसेन यह तीनही प्रधान हो, इस लिये रात्रि-कालमे तुम कर्णसे युद्ध करो, सात्यकी तुम्हारे पृष्ठ रक्षक होगे।

घटोत्कच बोले, हे महात्मन्! क्या कर्ण क्या द्रोण हम सबहीका पराभव कर सकते हैं, आज हम ऐसा युद्ध करेंगे कि पृथिवी यावत विद्यमान है, तावत् इस संग्रामका कीर्तन करेंगे, घटोत्कच यह कहके कर्णके संमुख धावमान हुए, कर्णभी क्रुद्ध निशाचरको देखके संमुख हुए, तब इन्द्र प्रह्लादके समान कर्ण औ घटोत्कचका संग्राम होने लगा।

इति १७४ अध्याय।

तब दुर्योधन घटोत्कचको कर्णके ऊपर धावित देखके दुःशासनसे बोले, हे भ्रातः! यह देखो राक्षसेन्द्र कर्णके ऊपर धावमान हो रहे हैं, इस लिये तुम उनकी रक्षा करो जिस्से वह कर्णका नाश न कर सके, इतनेमे जटासुरपुत्र अल-म्बुस दुर्योधनके निकट जाय बोले, हे राजन्! हम आपके शत्रुओंका नाश करनेकी इच्छा करते हैं, आप आज्ञा दीजिये, कुन्तीपुत्रने हमारे पिता जटासुरका संहार किया है, इस लिये हम उनका वध करके पितृऋणसे मुक्त होंगे, दुर्य्योधन

यह सुनके प्रसन्न होय बोले, हे राक्षसेन्द्र! हम अनुमति देते हैं तुम शीघ्र घटोत्कचका नाश करो, तब जटासुरपुत्र घटोत्कचको आह्वान करके विविध शस्त्र प्रहार करने लगे, तब एकाकी घटोत्कच अलम्बस, कर्ण औ अनेकवीरोंको मथित करने लगे, अलंबुस घटोत्कचकी माया देखके नानाविध शस्त्र प्रहारसे पाण्डवसैन्य विद्रावित करने लगे, आपकाभी सैन्य घटोत्कचके प्रहारसे दीप त्याग पूर्वक अन्धकारमे पलायन करने लगे, तब अलंबुस क्रुद्ध होके घटोत्कचको विद्ध करने लगे, तब घटोत्कच अलंबुसके रथ, सारथी औ आयुधका खण्ड खण्ड करके अट्टाट्टहास करते शरधारा वर्षण करने लगे, तब रथ औ सारथिहीन जटासुरतनयोने क्रोधसे घटोत्कचको मुष्टि प्रहार किया, तब हिड़म्बानन्दनने उससे कम्पित होय अलंबुसको मुष्टिप्रहार किया, तदुत्तर उनको आकर्षण करके भूतलमे पातित करके निष्पेष करने लगे, कियत्क्षणोत्तर अलंबुस घटोत्कचके हस्तसे मुक्त होय घटोत्कचको भूतलमे पातित करके निष्पेष करने लगे, अनन्तर दोनो मायाजालसे घोर युद्ध करने लगे, तब वह दोनो क्षणमे गरुड़, क्षणमे हस्ती, क्षणमे नाग, क्षणमे पर्वत, क्षणमे मेघ, क्षणमे वायुका रूप धारण पूर्वक आश्चर्य्य युद्ध करने लगे, क्षणमे रथारोहण, क्षणमे पादचार औ क्षणमे विविधास्त्र प्रहार करने लगे। अनन्तर घटोत्कचने ऊर्द्ध्वस्थित होके अलंबुसको भूतलमे पातित करके खड्गसे मस्तक छेदन करके वह मस्तक दुर्य्योधनके रथ पर निक्षिप्त किया, औ गर्जन पूर्वक बोले, हे धृतराष्ट्रतनय! यह तुम्हारे बंधुका संहार किया, यावत् हम कर्णका नाश नही करेंगे तावत् प्रसन्न रहो, तदुत्तर कर्ण औ घटोत्कचसे युद्ध होने लगा।

इति १७५ अध्याय।

धृ०। उस निशीथकालमें कर्ण औ घटोत्कचका किस प्रकार युद्ध हुआ?

सं०। अनन्तर वह राक्षस घटोत्कच द्वादश अरत्नि विस्तृत, चारशतहस्त दीर्घ सुदृढ़ज्यायुक्त शरासन आकर्षण पूर्वक रथाक्ष परिमित शरनिकर वर्षण करते हुए कर्णके ऊपर धावमान हुए, वज्र निर्घोषके तुल्य उनके कोदण्डके शब्दसे आपका सैन्य कम्पित होने लगा, महावीर कर्ण उन भयङ्कर राक्षसेन्द्रको आवते देखके गर्वसे निवारण करने लगे, परस्पर शरनिकरसे क्षत विक्षत करने लगे, वह दोनो परस्पर इस प्रकार युद्ध करने लगे कि कब वह वाण सन्धान करते हैं औ शरप्रक्षेप करते हैं, सो कुछभी लक्षित न होता था, कर्ण उनका अतिक्रम करनेमें असमर्थ होय दिव्यास्त्र प्रयोग करने लगे, तब राक्षसी माया परिग्रह करके शूल, शैल औ मुद्गरधारी राक्षसोंसेनासे परिवृत हो गए, वीरगण दण्डधारी कृतान्तके तुल्य घटोत्कचको देखके व्यथित होने लगे।

अनन्तर राक्षस सब अर्धरात्रके योगसे अधिक बलवान् चतुर्दिक् शिलावृष्टि करने लगे, तब आपके पुत्र औ योधगण वह भयङ्कर युद्ध देखके इतस्ततः धावमान होने लगे, उस काल केवल महावीर कर्ण व्यथित न होके शरजालसे राक्षसी माया निवारण करने लगे, घटोत्कच स्वीय माया विफल जानके क्रोधसे सूतपुत्रके संहारार्थ शरजाल विस्तार करने लगे, राक्षसेन्द्र क्षिप्त शरजाल कर्णका देह भेद करके भूतलमें गए, तब कर्ण अति क्रुद्ध होके दश शरोंसे उनको बिद्ध ने लगे, तब घटोत्कचने कर्णके शरसे मर्ममे बिद्ध होय आरयुक्त चक्र प्रक्षेप किया, कर्णने तत्क्षणही उसको खण्ड खण्ड कर दिये, तब घटोत्कचने कर्णको शरोंसे आच्छन्न

कर दिया, तब कर्णनेभी उनको आच्छन्न कर दिया, तब घटोत्कचने गदा निक्षेप किया, कर्णने तत्क्षण उसको भूतलमे पातित कर दिया, तब घटोत्कच आकाशमे उत्थित होके वृक्षवृष्टि करने लगे, तब कर्णने वह वृक्षवृष्टि निवारण करके इस प्रकार बाणवर्षण किया कि घटोत्कचका देह एक अङ्गुलभी शरशून्य न रहा औ रथ अश्व कुछभी लक्षित न होने लगा, तब घटोत्कच आकाशमे अलक्षित होके बाणवर्षण करने लगे, तब घटोत्कच विकृताकार होके कर्णके दिव्यास्त्र ग्रास करने लगे, औ शतधा देह खण्ड करके भूतलमे निपतित हुए, तब कौरवगण उनको निहत बोध करने लगे, तब भीमतनय नूतन देह धारण करके रथारूढ़ होय कर्णसे बोले, हे सूतपुत्र! तुम जीवित हमसे रहोगे नही, आज तुम्हारी रणकण्डू निवारण करते हैं, यह कहके बाणवर्षण करने लगे, कर्ण तत्क्षण उनके शर निवारण पूर्वक सैन्य संहार करने लगे, तब घटोत्कचने शिवनिर्मित अष्टचक्र अशनि निक्षेप किया, तब कर्ण शीघ्र रथसे उतरके उस अशनिको लेके उन्हीके ऊपर निक्षेप किया, घटोत्कचभी रथसे अवतीर्ण हो गए, तब वह अशनि घटोत्कचका रथ सारथि ध्वज सहित भस्म करके भूतलमे प्रविष्ट हो गया, देवगण वह देखके विस्मित हो गए, अनन्तर घटोत्कचने असंख्य रूप धारण किया, सिंह, व्याघ्र, अग्निजिह्व भुजङ्ग, औ अयोमुख विहङ्गम, समराङ्गणमे आवने लगे, तब कर्णने निशित शरोसे उनका संहार कर दिया, तब घटोत्कच कर्णको "तुम्हारे नाश करते हैं" इह कहके अन्तर्हित हो गए।

इति १७६ अध्याय।

हे महाराज! इस प्रकार कर्ण औ घटोत्कचका युद्ध होता

है, इतनेमे राक्षसेन्द्र अलायुध दुर्य्योधनके पास आयके बोले, हे राजन्! भीमसेनने हमारे बंधु बक कि मारे औ हिडम्बका नाश किया है, उसी पूर्व वैरसे हम उनके नाशके इच्छासे आए हैं, सो आप आज्ञा दीजिये, दुर्य्योधन बोले, हे राक्षसेन्द्र हम लोग सबही वैरनिर्यातनमे समुत्सुक है। तुमको आगे करके पाण्डवोका नाश करेंगे, तब अलायुध घटोत्कचके तुल्य वृहत् ऋक्षचर्मवेष्टित रथ पर आरूढ़ होय राक्षसीसेना सहित घटोत्कचतुल्य धनु धारण करके पाण्डवीसेना विद्रावित करते धावमान हुए।

इति १७७ अध्याय।

हे महाराज! अलायुधको आगत देखके आपके पुत्र आह्लादित हुए, उस समय कर्ण औ घटोत्कचका महायुद्ध होता था, उसको देखके कौरवगण कर्णकी जीविताशा त्याग करके आर्तनाद करने लगे, तब दुर्य्योधन अलायुधसे बोले, हे अलायुध! कर्ण भीमपुत्रके साथ युद्धमे प्रवृत्त हैं औ बल पराक्रमानुरूप कार्य्यभी करते हैं, तथापि वह निशाचर घटोत्कच हमारे वीरोको निहत करते हैं, हे राक्षसेन्द्र! इस लियेही भार तुम्हारे ऊपर अर्पण किया है कि, तुम उसका नाश करो जिससे वह पापात्मा कर्णका संहार न कर सके, यह सुनके अलायुध स्वीकार करके घटोत्कचके ऊपर धावमान हुआ, तब भीमकुमार कर्णको छोड़के अलायुधके ऊपर धावमान हुए, तब दोनो राक्षसोंका युद्ध होने लगा, तब कर्ण घटोत्कचके हस्तसे मुक्त होय रथारूढ़ होय भीमसेनके ऊपर धावमान हुए, भीमसेन स्वपुत्रको अलायुधके शरसे पीड़ित देखके कर्णको उपेक्षा करके अलायुधहीके संमुख धावमान हुए, अलायुध भीमसेनको आवते देखके, घटोत्कचको छोड़के

उन्होंके ऊपर धावमान हुए, तब वृकोदर शरवर्षण करते हुए अलायुधको आकीर्ण करने लगे, अलायुधभी उनके ऊपर शरवर्षण करने लगे, तब भीमसेन प्रत्येक राक्षसको पांच पांच शरोंसे बिद्ध करने लगे, भीमके बाणसे राक्षस ताड़ित होय पलायन करने लगे, अलायुध भीमके शर छेदन करके उनको आच्छन्न करने लगे, तब भीमसेनने राक्षसेन्द्रके ऊपर गदा प्रक्षेप किया, अलायुधने स्वीय गदासे उस गदाको ताड़ित कर दिया, जितने शर भीमसेन प्रक्षेप करने लगे अलायुध वह सब व्यर्थ करने लगे, उसी समय अलायुधकी आज्ञासे राक्षसगण सैन्य विध्वंस करने लगे, उस भीषण संग्राममें पाञ्चाल, सृञ्जय औ हाथी सब नष्ट होने लगे।

हे महाराज! तब वासुदेव उस भयङ्कर संग्रामको देखके अर्जुनसे बोले, हे धनञ्जय! देखो महाबाहु भीमसेन राक्षसेन्द्रके वशीभूत हुए हैं, इस लिये उनका अनुसरण करो, धृष्टद्युम्न प्रभृति कर्णके ऊपर धावमान होय, नकुल, सहदेव औ सात्यकी राक्षसोंको निहत करें, तदनन्तर कृष्ण औ अर्जुनकी आज्ञासे वह लोग कर्ण औ निशाचरगण पर धावमान हुए।

अनन्तर अलायुधने तीक्ष्ण शरोंसे भीमसेनका धनु छेदन, सारथि औ अश्वोंका संहार किया, तब वृकोदर अश्व औ सारथिहीन होके रथसे उतरके गदा प्रक्षेप किया, राक्षसने स्वीय गदा प्रक्षेप करके उनके गदाको चूर्ण कर दिया, इस प्रकार परस्पर गदा प्रहार होने लगा, तदनन्तर भीमसेनने अलायुधको मुष्टि प्रहार किया, उन्होंनेभी मुष्टिप्रहार किया, तदनन्तर परस्पर आकर्षण करने लगे, इतनेमें वासुदेवने भीमसेनके उद्धारार्थ घटोत्कचको प्रेरण किया।

इति १७८ अध्याय।

वासुदेव बोले, हे घटोत्कच ! देखो यह अलायुध तुम्हारे समक्ष वृकोदरका पराभव करता है, तुम कर्णको छोड़के अलायुधके ऊपर जाओ, अलायुधका नाश करके कर्णका नाश करो, तब घटोत्कच अलायुधसे युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए, उन दोनो राक्षसोंका युद्ध अति भयानक उपस्थित हुआ, सात्यकी नकुल औ सहदेव निशाचरोंका संहार करने लगे, धनञ्जय क्षत्रियप्रधान वीरोंका संहार करने लगे, धृष्टद्युम्न औ शिखण्डी कर्णसे युद्धमें प्रवृत्त हुए, तब कर्ण पाञ्चाल औ सृञ्जयोंका संहार करने लगे, तब भीमसेन शर वर्षण करते हुए कर्णके ऊपर धावमान हुए, पाञ्चाल प्रधान औ द्रोणसे युद्ध होने लगा। इधर अलायुधने घटोत्कचके मस्तक पर परिघ प्रहार किया, उस परिघ प्रहारसे घटोत्कच मूर्छित हो गए, क्षणमात्रमें चेतन होय शीघ्र शतघण्टायुक्त एक गदा निक्षेप किया, उस गदाघातसे अलायुधके अश्व, सारथि औ रथ चूर्ण हो गया, तब अलायुध रथहीन होके ऊर्द्धोत्थान करके राक्षसीमायासे रुधिर वर्षण करने लगा, घटोत्कचने स्वीय मायासे उसकी माया नाश कर दिया, तब अलायुध घटोत्कचके ऊपर प्रस्तर वृष्टि करने लगे, घटोत्कचने प्रस्तरवृष्टि शीघ्र निवारण कर दिया, अनन्तर उन दोनोंको परस्पर लौहमय परिघ, शूल, गदा, मुषल औ मुद्गर प्रभृति विविध अस्त्र प्रहार पूर्वक युद्ध करने लगे, अनन्तर दोनो वीर करवारी ग्रहण पूर्वक प्रहार करने लगे, तदुत्तर दोनो राक्षस केशाकर्षण करने लगे, तब उन दोनोंके देहसे रुधिरधारा औ स्वेदधारा बहने लगी, अनन्तर घटोत्कचने अलायुधको उद्भ्रान्त करके उसका मस्तकच्छेदन करके मस्तक लेके दुर्य्योधनके समीप प्रक्षेप कर दिया, दुर्य्योधन देखके अतिशय विमनायमान हुए।

इति १७९. अध्याय।

इस प्रकार घटोत्कच अलायुधका संहार करके सेनामुखमें सिंहनाद करने लगे, तब आपके पक्षीय उस शब्दका श्रवण करके भयकम्पित होने लगे, उस समय कर्ण पाञ्चालोंके ऊपर धावमान होके धृष्टद्युम्न औ शिखण्डीको दश २ बाणसे बिद्ध करने लगे, तदनन्तर युधामन्यु उत्तमौजा औ सात्यकीको कम्पित करने लगे, तब उन लोगोंका अति भयङ्कर संग्राम होने लगा, वीरगण कर्णके शरप्रहारसे व्यथित होने लगे, घटोत्कच सैन्यको छिन्नभिन्न देखके क्रोधसे कर्णको बिद्ध करने लगे, तब कर्ण विविध अस्त्र प्रहारसे घटोत्कचको समाच्छन्न करने लगे, तब घटोत्कचने किसी प्रकार कर्णको अतिक्रम न कर सकनेसे क्रोध पूर्वक कर्णके सारथि औ अश्वोंका संहार करके अन्तर्हित हो गए।

धृ०। घटोत्कच जब अन्तर्हित हुए तब तुम लोगोंने क्या विवेचना किया?

सं०। जब वह राक्षस [illegible] मायासे [illegible] उच्चकंठसे कहने लगे कि घटोत्कच [illegible] संहार करेगे, यह सुनके कर्ण लघुहस्ततासे चतुर्दिक [illegible] आच्छन्न कर दिया, उससे सर्वत्र अन्धकार हो गया, [illegible] कब शर ग्रहण करते हैं, कब सन्धान करते हैं, कब [illegible] हैं सो इसको लक्षित न होता था, अनन्तर घटोत्कचने [illegible] आकाशसे असंख्य शूल, शक्ति, गदा, परिघ, परशु औ तोमर प्रभृति वर्षा करने लगे, उससे कौरवपक्षीय असंख्य गज, अश्व, रथ औ मनुष्य नष्ट होने लगे, कर्ण उन अस्त्रोंको उसको निवारण न कर सके, सब वीर पलायन करने लगे, एक कर्ण अतीत कोई वहां रह सका नहीं, इतनेमें घटोत्कचने चक्रयुक्त शतघ्नी निक्षेप करके कर्णके चारो अश्व नष्ट कर दिये, तब कर्ण हताश्व रथसे उतरके कौरवोंको पलायमान, और दिव्यास्त्रको

विफल देखके कर्त्तव्य विषयकी चिन्ता करने लगे, तब समस्त कौरवगण कर्णको कहने लगे हे सूतपुत्र ! घटोत्कचके मायासे समस्त कौरवोंका संहार होता है, इस लिये उस इन्द्रदत्त शक्तिसे उसका संहार करो, भीम और धनञ्जय हम लोगोंका क्या करेंगे, आज निशीथकालमें यह नष्ट होनेसे उनका पराभव कर सकोगे।

हे महाराज ! महावीर कर्ण इस प्रकार कौरवका आर्त्तनाद श्रवण करके घटोत्कचके संहारार्थ उस वासवदत्त शक्ति प्रक्षेप करनेमे अभिलाषी हुए, पहिले जब इन्द्रने कर्णके कुण्डल ग्रहण किये थे उस समय वह शक्ति उनको दिया था, कर्णने धनञ्जयके नाशार्थ यत्नसे रखा था, इस समय घटोत्कचका पराक्रम सहके उसको ग्रहण किया, भीमकुमार उस प्रज्वलित शक्तिको देखके भयसे पर्वतोपम देह धारण करके पलायन करने लगे, प्राणिगण वह भयङ्कर शक्ति देखके भयङ्कर शब्द करने लगे, प्रचण्डवायु औ वज्रपात होने लगे, तब महावीर सूतपुत्रके वह अति भयङ्कर शत्रुघातिनी शक्ति प्रक्षेप करतेही घटोत्कचकी माया नाश करती उनका देह भेद करके ऊर्द्ध्वमुख उज्वलित होय नक्षत्रमण्डलमे गई।

इस प्रकार भीमकुमार आश्चर्य युद्ध करके अन्तमे वासवदत्त शक्तिसे निहत हुए, वह निहत होके जिस स्थानमे निपतित हुए, वहां एक अक्षौहिणी सेना उनके देहसे विपोथित हो गई, वह निशाचरने हतजीव होनेभी अपने प्रकाण्ड देहसे आपका असंख्य सैन्य नाश करके पाण्डवोंका प्रियसाधन किया, कौरवगण घटोत्कचको निहत देखके आह्लादित हुए, औ गर्जन औ शङ्खनाद करने लगे, कर्ण घटोत्कचका नाश करके दुर्य्योधनके रथ पर आरूढ़ हुए, औ स्वीय सैन्यमे प्रविष्ट हुए।

इति १८० अध्याय।

इधर पाण्डवगण शोकसे व्याकुलनेत्र हुए, परंतु महा-त्मा बुद्धिमान् वासुदेव अतिशय हृष्ट होके, पाण्डवोंको दुःखित करते हुए सिंहनाद करने लगे, औ रथरज्जु संयत करके धनञ्जयको आलिङ्गन करके हर्षसे रथ पर नृत्य करने लगे, इस प्रकार वारंवार आलिङ्गन, वारंवार गर्जन औ वारंवार आस्फालन करने लगे ।

उस समय धनञ्जय कृष्णको अतिशय हृष्ट देखके बोले, हे वासुदेव ! हम लोगका प्रधानसैन्य औ प्रियतमपुत्र घटोत्कच निहत हुए, इससे हम लोग अतिशय शोकार्त्त हुए, परंतु तुमको इस अनुपयुक्त समयमें अत्यन्त हृष्ट देखके आश्चर्य्य होता है, कुछ विशेष कारण विना तुमको आह्लाद होगा नहीं, यदि कहने योग्य होय तो कहो ।

वासुदेव बोले, हे अर्जुन ! कर्णने आज घटोत्कचके ऊपर वासवदत्त शक्ति निक्षेप किया, इससे अतिशय तुम्हारा प्रिय-कार्य्य हुआ, अब तुम कर्णको निहत जानो, पृथिवीमें ऐसा कोई नहीं जो कर्णको पराभव करे, तुम्हारे भाग्यहीसे उनके कवच औ कुण्डल अपहृत हुए, इन्द्रने तुम्हारे उपकारार्थही उनके कवच कुण्डल हरण किये, यदि उनके कवच कुण्डल रहते तो इन्द्र देवगण वज्र लेके, वा तुम गाण्डीव लेके अथवा हमभी सुदर्शन लेके उनका पराभव कर सकते नहीं, कर्णने कवच कुण्डल देके इन्द्रसे वह अमोघ शक्ति लाभ किया था, उसी दिनसे तुम्हारे नाशके लिये रक्षण किया था, आज वह शक्तिशून्य होगए हैं, अब तुमको उनसे कुछभी भय नहीं है, अबभी तुम्हारे विना कोई उनका वध करेगा नहीं, कर्ण नियत ब्रह्मानुष्ठान तत्पर, सत्यवादी, तपस्वी औ शत्रुके ऊपरभी दया-वान् है इससे वृषनामसे ख्यात हैं, इस समय उनके वधका उपाय कहते हैं, जिस समय उनका चक्र निमग्न होगा उसी

समय उनका नाश करो, जब वह उद्यतास्त्र रहेगी तब किसी का साध्य नहीं है, हम तुम्हारे हितार्थही विविध उपायसे क्रम क्रमसे जरासंध, शिशुपाल, निषाद, एकलव्य, हिड़िम्ब, किर्मीर, बक, अलायुध और घटोत्कच प्रभृति राक्षसोंका वध-साधन किया।

इति १८१ अध्याय।

अर्जुन बोले, हे कृष्ण! तुमने हमारा हितसाधनार्थ किस प्रकार उपाय अवलंबन करके जरासंध प्रभृतिका वध साधन किया?

वासुदेव बोले, हे अर्जुन! जरासंधादि पहिले निहत न होते तो इस समय अतिशय भयङ्कर होता, वह जीवित रहते तो दुर्योधन अवश्य उनको युद्धमें वरण करते, वह सब अमरो-पम दत्तास्त्र युद्धदुर्मद और विरद्वेष्टा थे, वह अवश्य दुर्योधनके सहाय होते, इन सभोंको पराजय करे ऐसे वह एक एक थे, जरासंधको अति भयङ्कर गदा कौशलसे बलदेवके हस्तसे चूर्ण कराया, जब वह गदाहीन हुआ, तब भीमसेनसे निहत कर-वाया, एकलव्यको द्रोणाचार्य्यने छलहीसे अंगुष्ठहीन किया, चेदिराजको तुम्हारे हितार्थ हमने नष्ट किया, भीमसेनने एक-एकके जटासुर प्रभृतिका नाश किया, घटोत्कच उस शक्तिसे नष्ट न होता तो हम लोगोंका उसका वध करना पड़ता, तुम्हारे इसी कार्यके लिये उसको जीवित रक्खा था, वह निशा-चर, ब्राह्मद्वेषी, यज्ञनाशक, धर्मलोप्ता और पापात्मा था, इसी से उसको कौशलसे निपातित किया, इसी राक्षसके नाशसे कर्णकी शक्ति निष्फल हुई है, हे अर्जुन! हमने धर्मसंस्था-पनके लिये दृढ़प्रतिज्ञा किया है, जो धर्मनाशक है उनका अवश्य नाश करेंगे, हम शपथ करके कहते हैं, जहां ब्रह्म, सत्य,

दम, शौच, धर्म, श्री, लज्जा, क्षमा औ धैर्य है वहांही हम रहते हैं, हम जैसा उपदेश करेंगे वैसा करोगे तो अवश्य कर्ण का नाश करोगे, भीमसेनभी उसी प्रकार दुर्योधनका नाश करेंगे, जो होय इस समय शत्रुसैन्य तुमुल कोलाहल कर्ती है, तुम्हारी सेना दशदिक् पलायन कर्ती है, द्रोणाचार्यभी अमात् पञ्चोयोंका संहार कर्ते हैं।

इति १८२ अध्याय।

धृ०। कर्णने सबको छोड़के अर्जुनके ऊपर क्यों नही वह शक्ति निक्षेप किया? अर्जुनके निहत होनेसे जयश्री हमारे हस्तगत होती, पहिले अर्जुनने प्रतिज्ञा किया था, कि हमको कोई युद्धमे आह्वान करेगा तो हम परांमुख न होंगे, तब क्यों नही कर्णने उनको आह्वान किया? हमारा पुत्र दुर्योधन नितान्त निर्बोध औ सहायशून्य है, एवं शत्रुओंने उसको निरुपाय कर दिया, अब वह नराधम कैसा शत्रुसंहार करेगा, जिस शक्तिके ऊपर निर्भर था वह शक्ति राक्षसके ऊपर प्रयुक्त होनेसे निष्फल हुई, जैसा परस्पर युद्धप्रवृत्त वराह औ कुक्कुर इन दोनोमे एकका मृत्यु होनेसे चाण्डालको लाभ होता है, वैसही कर्ण औ घटोत्कच इन दोनोमेसे एकका मृत्यु होनेसे पाण्डवहीका उपकार हुआ, कर्ण निहत होते तो पाण्डवोंका प्रबलशत्रु नष्ट होता, घटोत्कच राक्षस निहत हुआ उसोभी शक्ति विफल होगई यहभी पाण्डवहीका उपकार हुआ, वासुदेवके बुद्धिबलहीसे यह कार्य्य हुआ संदेह नही।

सं०। कर्ण अर्जुनका वध उस शक्तिसे करेंगे यह जानहीके वासुदेवने उनकी रक्षा किया, वासुदेव उनकी रक्षा न कर्ते

तो हमलोग क्रतकार्य होजाते। ध०। हमारा पुत्र दुर्योधन नितान्त विरोधी, कुमन्त्रणा-परतन्त्र औ अज्ञाभिमानी है, इसीसे अर्जुनके बधका उपाय निष्फल हुआ, हे सञ्जय! तुम लोगोंने कर्णको अर्जुनके ऊपर शक्ति प्रयोगका आज पर्यन्त क्यों नहीं कहा?

सं०। दुर्योधन, शकुनि, दुःशासन औ हम नित्य रात्रिमें कर्णको कहते थे कि, हे कर्ण! तुम सब सैन्यको छोड़के अर्जुनहीका संहार करो, उससे पाञ्चाल औ पाण्डव किङ्कर होजाते, अथवा धनञ्जय निहत होनेसे कृष्ण अन्य पाण्डवको समरमें दीक्षित करेंगे, इस लिये कृष्णका संहार करो, कृष्ण ही पाण्डवोंके मूल हैं, अर्जुन स्कन्ध, भीम शाखा औ पांचाल पत्र रूप है, इस लिये मूलहीका नाश करनेसे अनायास वह वृक्ष नष्ट होगा, हे महाराज! प्रतिरात्रिमें हम लोग यही निश्चय करते थे, परंतु युद्धकालमें उसका विपर्य्यय होता था, घटोत्कचके बधके उत्तर सात्यकीने कृष्णसे पूछा था, कि कर्णने धनञ्जयको यह शक्तिसे बध करेंगे ऐसा निश्चय करके क्यों नहीं वह किया? तब वासुदेवने कहा कि दुःशासन, शकुनि औ जयद्रथ यह सब दुर्य्योधनके साथ परामर्ष करके कर्णको यही वारंवार कहते थे कि तुम धनञ्जय भिन्न और किसीके ऊपर इस शक्तिका प्रक्षेप मत करो, औ कर्णनेभी यही निश्चय कर रखा था, जब जब कर्णको स्मरण होता था तब तब हम उनको विमोहित करदेते थे, इसी से वह धनञ्जयके ऊपर शक्ति प्रयोग कर सके नहीं, यावत् वह शक्ति विफल नहीं हुई थी, तावत् हमको निद्रा न थी, अब वह शक्ति राक्षसके ऊपर प्रयुक्त होनेसे धनञ्जय कृतान्तके मुखसे रक्षित हुए, धनञ्जयसे अधिकप्रिय हमको कोई नहीं है, रात्रिकालमें घटोत्कच भिन्न कर्णको निवारण करे ऐसा कोई न था इसी

लिये हमने उसीको युद्धमें प्रेरण किया, हे महाराज! इस प्रकार वासुदेवने सात्यकीको कहा था।

इति १८२ अध्याय।

धृ०। तुम लोगोकी बुद्धि और दैव कोप्रयके प्रभावसे नष्ट हो गया, वह शक्ति टणतुल्य घटोत्कचका नाश करके व्यर्थ हो गई, तुम लोगोके नीति वहिर्भूत कार्य्य करनेहीसे नाश हो जायेगा, जो होय पुनः किस प्रकार युद्ध हुआ सो कहो।

सं०। उस रात्रिमें महावीर कर्णने घटोत्कचका बध करके कौरवपक्षीय वीरोंके सहित आह्लादसे सिंहनाद करते हुए, पाण्डवसैन्य नाश करने लगे, तब राजा युधिष्ठिर दीनभावसे भीमसेनसे बोले, हे भ्रातः! तुम शीघ्र कौरवसैन्यको निवारण करो, हम घटोत्कचके निधनसे विमोहित हुए हैं, यह कहके अश्रुपूर्णनेत्रसे कर्णका पराक्रम देखके मूर्छित हो गए, तब महात्मा वासुदेव युधिष्ठिरको अत्यन्त व्यथित देखके बोले, हे धर्मराज! प्राकृत लोगोंके ऐसा शोक करना आपको युक्त नही है, शोक संवरण करके समरभार वहन कीजिये, तब युधिष्ठिर नेत्रजलमार्जन करके बोले, वासुदेव! हिड़िंबातनयने हम लोगोकी अत्यन्त सहायता किया था, काम्यकवनमें हम लोगोकी बड़ी सुश्रूषा किया था, दुर्गम स्थानमें हम लोगोंको पृष्ठ पर वहन किया था, उसने हमारे अनेक दुष्कर कार्य्य किये थे, वह अत्यन्त हमारा प्रिय था, इसीसे हमको अत्यन्त शोक होता हैं, हे कृष्ण! देखो यह कौरवगण हमारे सेनाको विद्रावित करते हैं, हम लोग जीवित रहते भीमकुमार नष्ट हुआ, अभिमन्युके बधसे जयद्रथका तादृश अपराध नही था, उसे अर्जुनने जयद्रथका बध किया, सो हम अधिक आह्लादित न हुए, परन्तु इस समय शत्रु विनाश

सभी अवध्य हैं, इस लिये पहिले द्रोण औ कर्णहीका नाश करना चाहिये, यही दोनों दुःखकी प्राप्ति कारण हैं, अब पहिले कर्णका नाश करना चाहिये, इस लिये हम उससे युद्ध करनेको चले, भीमसेन द्रोणके अभिमुख हुए, यह कहके युधिष्ठिर शङ्ख वादन करते हुए कर्णके अभिमुख धावमान हुए, शिखण्डी सहस्र रथ, तीन शत हस्ती, पांच शत अश्व, औ तीन सहस्र भद्रक सैन्य लेके उनके अनुगामी हुए, तब वासुदेव अर्जुनसे बोले, हे अर्जुन! देखो राजा युधिष्ठिर क्रुद्ध हो कर्णके अभिमुख धावमान हुए, इनके ऊपर निर्भर रहके निश्चिन्त रहना उचित नहीं है, चलो उनके अनुगमनमें प्रवृत्त होय।

हे महाराज! इतनेमें वेदव्यास शोकाकुल संतप्त युधिष्ठिरको देखके उनके पास आयके बोले, हे राजन्! अर्जुन भाग्यहीसे कर्णके हस्तसे युद्धमें बचे, कर्णने अर्जुनहीके नाशके लिये वासवदत्त शक्ति रक्षा किया था, अर्जुन कर्णसे द्विरथ युद्धमें प्रवृत्त होते तब अर्जुन कर्णका दिव्यास्त्र छिन्न करते तब कर्ण अवश्य वह शक्ति प्रक्षेप करके निहत करते, उससे तुमको दुःख उपस्थित होता, दैवहीसे तुम्हारा मङ्गल हुआ, जो उस शक्तिसे राक्षस निहत हुआ, इस लिये तुम शोक दूर करो, आजके पांच वे दिन समस्त वसुंधरा तुम्हारे हस्तगत होगी, तुम प्रसन्नतासे युद्धमें प्रवृत्त हो, वेदव्यास यह कहके वहांही अन्तर्धान हुए।

इति १८४ अध्याय।

इति घटोत्कच वध पर्वाध्याय।

द्रोण वध पर्वाध्याय।

६०। धर्मराज वेदव्यासका यह वाक्य सुनके कर्णके युद्धसे निवृत्त औ घटोत्कचके वधसे दुःखित होय भीमसेनको कौरव सैन्य विदारित कर्ते देखके धृष्टद्युम्नसे बोले, हे द्रुपद-नन्दन! तुम द्रोणाचार्य्यको निवारण करो, तुम द्रोणके विनाशहीके लिये कवच, धनु औ शरधारण पूर्व्वक अग्निसे उत्पन्न हुए हो, तुम हृष्टचित्तसे युद्धमें धावमान हो, तुमको कुछ भय नहीं है, शिखण्डी प्रभृति समस्त सैन्य सहित द्रोणके वधमें प्रवृत्त हो, इस प्रकार धर्मराजको आज्ञा होतेही समस्त वीर द्रोणके ऊपर धावमान हुए, महावीर द्रोणभी उनके सम्मुख उपस्थित हुए, तब राजा दुर्य्योधन उनको धावमान देखके द्रोणके रक्षार्थ उनके ऊपर धावमान हुए, उस समय आन्तवाहन कौरव औ पाण्डव परस्पर तर्जन गर्जन कर्ते युद्धमें प्रवृत्त हुए, परन्तु अश्वारणगण निद्रान्ध औ परि-श्रान्त होके समरसे निश्चेष्ट होगए, वह रात्रि अति दीर्घ बोध होने लगी, उस अर्द्धरात्रिके समय उभय पक्षीय वीरगण क्षतविक्षत, दीनचित्त, उत्साहशून्य, शस्त्रहीन होके लज्जा औ स्वधर्मसे रक्षात्याग कर्के दूर हुए नहीं, निद्रान्ध होके कोई गज पर, कोई अश्व पर औ कोई रथ पर शयन करने लगे। तब अर्जुनने उनको तादृश चेष्टा देखके उच्चस्वरसे बोले, हे सेनागण! तुम लोग वाहनोंके सहित अन्धकार औ धूलिसे समावृत, नितान्त परिश्रान्त औ निद्रान्ध हुए हो, इस लिये यदि तुम लोगोंको सम्मत होय तो कुछकाल युद्धसे निवृत्त होय इसी रणस्थलीमें निद्रा लेओ, जब चन्द्रोदय होगा, तब विनिद्र होके स्वर्गलाभार्थ पुनः युद्धमें प्रवृत्त हो, तब कौरव पक्षीय धार्म्मिक वीरगण अर्जुनका वाक्य सुनके उस पर सम्मत होय दुर्य्योधनसे बोले, राजन्! पाण्डव पक्षीय युद्धमें

निवृत्त हुए हैं, तुमभी निवृत्त हो, इस प्रकार परस्पर उच्च-स्वरसे कहने लगे, तब सब कोई उस पर संमत होय आनन्दसे अर्जुनको आशीर्वाद देने लगे, तदुत्तर कोई गजपृष्ठ पर, कोई अश्वपृष्ठ पर, कोई रथ पर, कोई क्षितितलमें औ कोई अन्य अन्यस्थानमें निद्रित हुए, वाहन सबभी यथास्थानमें निद्रित हुए।

अनन्तर नयनप्रीतिवर्द्धन भगवान् कुमुदिनीनायक चन्द्रमा माहेन्द्री दिशा अलंकृत करके उदित हुए, अन्धकार नष्ट होय दिङ्मण्डल भासित होगए, तब वीरगण महासागरके तुल्य सहसा उद्धत होय उठे, पुनः लोक नाशके निमित्त परमगति लाभार्थी वीरपुरुष युद्धमें प्रवृत्त हुए।

इति १८५ अध्याय।

अनन्तर दुर्य्योधन द्रोणाचार्य्यके पास जायके बोले, हे आचार्य्य! दीनचित्त श्रम दूर करनेमें प्रवृत्त शत्रुके ऊपर क्षमा करनी लब्धलक्ष्य वीरोंका कार्य्य नहीं है, हम लोगोंने आपके प्रियकार्य्यार्थ पाण्डवोंको क्षमा किया, इतनेमें वह विगतश्रम होगए, जो होय, आप उनकी रक्षा करते हैं, इसीसे वारंवार उनका अभ्युदय होता है, हम लोग क्रम क्रमसे तेज, बल औ वीर्य्यसे शून्य होते हैं, आप ब्रह्मास्त्र औ दिव्यास्त्र सब जानते हैं, पाण्डवभी आपसे भीत हैं, परन्तु आप शिष्य जानके वा हमारे भाग्यदोषसे उनकी उपेक्षा करते हैं।

तब आचार्य्य दुर्य्योधनका तिरस्कार वाक्य सुनके क्रोधसे बोले, हे दुर्य्योधन! हम वृद्ध होकेभी साध्यानुसार युद्ध करते हैं, हम अस्त्र वेत्ता हैं, यह सबलोग तादृश अस्त्र विद्यामें निपुण हैं, परन्तु विजयाभिलाषसे इन सभोंका संहार करना, ब्रह्मनके तुल्य कार्य्य होता है, जो होय, तुम्हारे

कहनेसे हम कहते हैं, पाञ्चालोंका नाश किये विना कवच त्याग करेंगे नहीं, तुम अर्जुनको श्रान्त मत जानो, अर्जुन युद्धमे क्रुद्ध होंगे तो यक्ष राक्षसभी समर्थ न होंगे, देखो, घोषयात्रामे सब गंधर्वोंको पराजित करके तुमको मुक्त किया था, निवातकवच औ हिरण्यपुरवासी असंख्य दानवोंका पराभव किया, तुम क्या जानते नहीं हो, इस लिये किसका सामर्थ्य है धनञ्जयका पराभव करे, हम सैन्यका यत्नसे रक्षण कर्ते हैं तोभी वह नाश कर्ते हैं, तुम क्या देखते नहीं हो।

तब दुर्योधन क्रोधसे पुनः बोले, हे ब्रह्मन्! आज हम, दुःशासन, कर्ण औ शकुनि हमलोक सैन्यका दोभाग करके अर्जुनका नाश करेंगे।

तब आचार्य्य हास्यमुखसे बोले, हे दुर्योधन! कौन क्षत्रिय ऐसा है जो धनञ्जयका पराजय करेगा, तुमने जो कहा ऐसा मूर्ख लोगही कहते हैं, तुम अतिशय निष्ठुर औ पापी हो, जो तुम्हारा हित करते हैं उनका तिरस्कार कर्ते हो, जो होय, तुमभी सत्कुलीन क्षत्रिय औ समरप्रार्थी हो, तुमही स्वकार्य साधनार्थ अर्जुनसे युद्ध करो, तुमही शत्रुताके मूलकारण हो, यह तुम्हारे मातुल शकुनि अक्षक्रीड़ामे निपुण, प्रतारणाशील औ कुटिलहृदय, यही क्षत्रियधर्मसे अर्जुनसे युद्ध करें, तुम कर्णके साथ मोहाविष्ट, शून्यहृदय औ शुश्रूषापरवश धृतराष्ट्रके आगे सभामे वारंवार हम, कर्ण औ दुःशासन तीनो एकत्र होके पाण्डवोंका संहार करेंगे, ऐसी प्रतिज्ञा करते थे, सो अब प्रतिज्ञानुरूप कार्य्य करो, यह कहके आचार्य युद्धमे प्रवृत्त हुए, अनन्तर कौरवसैन्य द्विधा विभक्त होके एक भाग द्रोणके औ अपर भाग दुर्योधनादिके संगत होय युद्धमे प्रवृत्त हुए।

इति १८६ अध्याय।

ढालिका एक प्रहर अवशिष्ट है, ऐसे समयमे युद्ध होने लगा, अनन्तर सूर्यसारथि अरुण चन्द्रप्रभा मन्द औ गगन ताम्रवर्ण कर्के हुए उदित हुए, कियत्क्षणोत्तर सूर्यमण्डल पूर्वदिक्‌मे विराजित होने लगा, तब दोनो पक्षीय लोग अस्त्र औ वाहन त्याग कर्के दिवाकरके अभिमुख हो संध्योपासनके लिये कृताञ्जलिपुट होय खड़े हो गये, अनन्तर वह द्विधा सैन्य शत्रुओके ऊपर धावमान हुए, तब कृष्ण अर्जुनसे बोले, हे सव्यसाचिन्! तुम कौरवोको वाम भागमे औ आचार्य्यको दक्षिण भागमे रखके युद्ध करो, तब भीमसेन कृष्णका अभिप्राय जानके अर्जुनसे बोले, हे भ्रातः! क्षत्रियकामिनी जिस कार्यके लिये पुत्र प्रसव कर्ती है, वही कार्यका समय उपस्थित हुआ है, इस समय यदि स्ववीर्य पराक्रमानुरूप कार्य्य न करोगे तो तुम्हारा नृशंस कार्य्य होगा, इस लिये द्रोणसैन्यको दक्षिण भाग रखके शत्रुसंहार पूर्वक श्री, धर्म औ यश लाभ कर्के आनृण्य लाभ करो, महावीर अर्जुन कृष्ण औ भीमका वाक्य सुनके द्रोण औ कर्णका अतिक्रम कर्के चारो दिक् सैन्य निवारण करने लगे, कौरव पक्षीय वीरगणमे अभिलक्ष्य पार्थका कोई निवारण न कर सके, तब दुर्य्योधन, कर्ण औ शकुनि उनको शरजालसे समाच्छन्न करने लगे, अर्जुनने उनके शर निवारण कर्के दश२ बाणोसे उनको विद्ध किया, उस समय धूलि पटलसे दिङ्मण्डल आच्छन्न हो गया, सबही अन्धप्राय हो स्वनामोच्चारण पूर्वक युद्ध करने लगे, अनन्तर द्रोणाचार्य्य इस दलके मध्यमे उत्तर दिक् अवस्थान पूर्वक प्रज्वलित अग्निके समान शोभित होने लगे, पाण्डवसैन्यगण उनको देखके भयकम्पित होने लगे, तब द्रुपद औ विराट द्रोणाभिमुख होय शरवर्षण करने लगे, तब द्रोणाचार्य्यने तीन शरसे तीनो द्रुपदके पौत्रोका संहार किया, तब द्रुपद औ विराट

क्रोधसे उनके ऊपर शरवर्षण करने लगे, तब द्रोणने उनके शर निवारण करके तीक्ष्ण भल्लोंसे उन दोनोंके धनुः छेदन पूर्वक आच्छन्न कर दिया, तब विराटने द्रोणके ऊपर दश तोमर निक्षेप किया, औ द्रुपदने शक्ति निक्षेप किया, तब द्रोणने तीक्ष्ण शरोंसे वह तोमर औ शक्ति छेदन पूर्वक तीक्ष्ण भल्लद्वयसे विराट औ द्रुपदका संहार कर दिया।

तब धृष्टद्युम्न विराट, द्रुपद औ विराटके तीन पौत्रोंको औ केकय, चेदि, मत्स्य औ पांचालोंको निहत देखके क्रोध औ दुःखसे अधीर होय शपथ करके बोले, आज द्रोण हमारे हस्तसे छूट जाय वा हमको पराजय करें तो हमारा इष्टापूर्त्त विनष्ट हो जाय औ हम क्षत्रतेज औ ब्रह्मतेजसे भ्रष्ट हो जायेंगे, इस प्रकार शपथ करके द्रोणाभिमुख धावमान हुए, इधरसे पांचाल गण औ उधरसे अर्जुन द्रोणके ऊपर प्रहार करने लगे, तब दुर्य्योधन प्रभृति द्रोणकी रक्षा करने लगे, इस प्रकार महा-रथियोंसे रक्षित द्रोणाचार्य्यको कोई उनको निरीक्षणभी न कर सके, तब भीमसेन क्रोधसे धृष्टद्युम्नको कठोर वाक्यसे बोले, हे क्षत्रियसत्तम! कौन क्षत्रियाभिमानी द्रुपदकुलमें उत्पन्न होके पितृवध सहन करके संमुखस्थ शत्रुकी उपेक्षा करेगा, तुम शपथ करके उपेक्षा करते हो, यह द्रोण अग्निकी समान क्षत्रिय दग्ध कर रहे हैं, वह क्षणमात्रमें सब पाण्डवोंका संहार करेंगे, इस लिये हम चलें तुम इन्हीं अवस्थान करके हमारा अद्भुत कार्य्य देखो, महाघोर वृकोदर यह कहके क्रोधसे द्रोण सैन्यमें प्रवेश करके आकर्णपूर्ण शरोंसे उनको विद्रावित करने लगे, धृष्टद्युम्नभी सेनामें प्रवेश करके द्रोणसे युद्ध करने लगे।

हे महाराज! सूर्योदयके समय वह जैसा युद्ध हुए, वैसा कहीं न देखा न सुना, सैन्य सब व्याकुल हो गये, रथ सब

परस्पर संश्लिष्ट होगए, प्राणिगण निहत औ इतस्ततः विशीर्ण होगए।

इति १८७ अध्याय।

हे महाराज! सूर्योदयके पूर्वमें जो जिससे युद्ध करते थे वैसही सूर्योदयके उपरान्त युद्ध करने लगे, उस समय कोई २ आतपसे उत्तप्त औ क्षुत्पिपासासे आकुल औ श्रान्त होके विचेतन होगए, परस्पर संमिलित होके इस प्रकार संहार करने लगे उससे मृत हस्ती, अश्व औ मनुष्योंसे आकीर्ण, रुधिर नदी प्रवाह औ मांस कर्दम हो गया, उस समय द्रोण औ धनञ्जय भिन्न सबही भयसे व्याकुल होगए, धूलिपटलसे कौन कहां है यह विज्ञान न हुआ, तब दुर्योधनसे औ सहदेवसे, दुःशासनसे औ नकुलसे, कर्णसे औ भीमसेनसे औ धनञ्जय औ आचार्य्यसे घोर युद्ध होने लगा, परस्पर गतिप्रदर्शन पूर्वक शर वर्षणसे आच्छन्न करने लगे, अनन्तर नकुल औ दुर्योधन का घोर संग्राम होने लगा, तब माद्रीपुत्रने दुर्योधनको असंख्य बाणोंसे आच्छन्न करके उनको दक्षिणपार्श्वस्थ कर लिया, उस समय तुमुल कोलाहल होने लगा, दुर्योधन उनके दक्षिणपार्श्व में रहके उनको निवारण करने लगे, तब नकुलभी उनको निवारण करने लगे, दुर्योधनने उनको ताड़ित औ समरसे पराङ्मुख कर दिया, तदुत्तर नकुल दुर्योधनको तिष्ठ२ कहके पुनः युद्ध करने लगे।

इति १८८ अध्याय।

इधर दुःशासन वेगसे सहदेवके ऊपर धावमान हुए, सहदेवने उनको आगत देखके एक भल्लास्त्रसे उनके सारथिका मस्तकछेदन कर दिया, सो किसीने नहीं जाना, तब दुःशा-

उनका रथ स्वेच्छासे इधर उधर धावमान करने लगे, तब यह देखके औ सारथि निहत हुए जानके स्वयं रज्जुग्रहण करके युद्ध करने लगे, तब सहदेवने क्रोधसे अश्वोंको ताड़ित करने लगे, तब अश्वगण पुनः स्वेच्छागमन करने लगे, तब दुःशासन एकबार अश्वरश्मि ग्रहण, एकबार धनुर्ग्रहण औ एकबार शरत्याग करने लगे इसी सुयोगमे सहदेव शरसे उनको पीड़ित करने लगे, तब कर्ण दुःशासनको पीड़ित देखके सहायताके लिये सहदेवके ऊपर धावमान हुए, तब भीमसेनने तीन भल्लोंसे कर्णके बाहु औ वक्षस्थलको विद्ध किया, तब कर्ण क्रोधसे उन्होंके संमुख हुए, तब कर्ण औ भीमसेनसे घोर युद्ध होने लगा, युद्ध कर्ते दोनो अति सन्निकृष्ट हो गए, तब शर प्रक्षेपका असौकर्य्य होने लगा, तब भीमसेनने गदा-घातसे कर्णका रथ चूर्ण कर दिया, तब कर्णने भीमके ऊपर गदा प्रक्षेप किया, उससे भीमकी गदाचूर्ण होगई, तब भीम-सेनने पुनः अन्य गदा प्रक्षेप किया, तब कर्णने सायकसे उस गदाको प्रतिनिवृत्त कर दिया, उस गदाने प्रत्यागत होके भीमसेनका ध्वज च्छेदन कर दिया, तब भीमसेनने क्रोधसे आठ शर त्याग करके कर्णका शरासन, मुष्टि औ ध्वज छेदन कर दिया, तब कर्णने अन्य चाप ग्रहण करके भीमसेनका सारथि, अश्व औ पार्ष्णिद्वयका संहार किया, तब भीमसेन नकुलके रथ पर आरूढ़ हुए, उस समय द्रोण औ अर्जुनका विचित्र गति प्रदर्शन पूर्वक लघुहस्ततासे अद्भुत युद्ध होने लगा, तब अन्यान्य योद्धा सब गुरु शिष्यका आश्चर्य्य युद्ध देखके युद्धसे निवृत्त होय कम्पित होने लगे, तब वह दोनो विचित्र गतिसे परस्पर दक्षिण पार्श्वस्थ करनेकी चेष्टा करने लगे, तब द्रोणाचार्य्य अर्जुनको पराजित कर्नेके लिये जो जो कौशल करने लगे, अर्जुन स्वीय कौशलसे उनका कौशल निराकृत

करने लगे, द्रोणाचार्य्य किसी प्रकार अर्जुनका पराजय करनेमें समर्थ न हुए, तब ऐन्द्र, पाशुपत, त्वाष्ट्र, वायव्य औ वारुणास्त्र प्रयोग करने लगे, अर्जुनने स्वीय अस्त्रोंसे उनके समस्त अस्त्र छेदन करके उनको समाच्छन्न कर दिया, जब द्रोणके समस्त अस्त्र निराकृत हुए तब वह ब्रह्मास्त्रका प्रयोग करने लगे, तब भूकम्प औ प्रचण्ड वायु प्रचलित होने लगा, अर्जुनने स्वीयास्त्रसे उस ब्रह्मास्त्रकोभी निवारण करके सब शान्त कर दिया, द्रोणाचार्य्य तब अर्जुनकी मनमें प्रशंसा करने लगे, कोई किसीको पराजय कर सके नही, अन्तमें संकुल युद्ध उपस्थित होगया, चारोदिक् बाणोंसे आच्छन्न होगए।

इति १८९ अध्याय।

हे महाराज! इस प्रकार असंख्य अश्व, गज औ मनुष्य निहत होने लगे, तब दुःशासन औ धृष्टद्युम्नका युद्ध होने लगा, धृष्टद्युम्न दुःशासनके शरसे निपीड़ित हो क्रोधसे दुःशासनको आच्छन्न करने लगे, उनके शर समूहसे दुःशासन सारथि, ध्वज औ रथ अदृश्य हो गया, तब दुःशासन उनके शरसे अति पीड़ित होय उनके संमुख अवस्थान कर सके नही, इस प्रकार दुःशासनको पराङ्मुख करके द्रोणाभिमुख धावमान हुए, तीन भ्राताओंके सहित कृतवर्मा उनको निवारण करने लगे, तब नकुल औ सहदेव धृष्टद्युम्नको द्रोणाभि-मुख धावमान देखके उनके रक्षार्थ धावमान हुए, तीन भ्राता औ कृतवर्मा यह चार वीर औ नकुल, सहदेव औ धृष्टद्युम्न इनका घोरतर युद्ध होने लगा, वह लोग विशुद्ध मनसे स्वर्गलाभार्थ धर्म युद्ध करने लगे, तब कौरव पक्षीय चारो वीरोंको निवारण करते नकुल सहदेवको देखके आप मुख धावमान हुए, कौरव पक्षीय चारो वीर नकुल

औ सहदेवसे निवारित होके उनको आक्रमण करने लगे, तब यह दोनो दो दो वीरसे युद्ध करने लगे, धृष्टद्युम्न निर्भय द्रोणके ऊपर शरवर्षण करने लगे, तब दुर्य्योधन धृष्टद्युम्नका द्रोणसे औ माद्रीपुत्रोको उन चारोके साथ युद्ध कर्त्ते देखके मर्मभेदी शरवर्षण कर्त्ते हुए धृष्टद्युम्नके सम्मुख धावमान हुए तब सात्यकी दुर्य्योधनके अभिमुख हुए, तब दुर्य्योधन सात्यकीको देखके बाल्य वृत्तान्त स्मरण करके हास्य पूर्वक बोले, हे सखे! क्षत्रियगणका क्रोध, लोभ, मोह, पराक्रम औ आचारको धिक् हैं, हम लोग परस्पर आक्रमण कर्त्ते हैं, तुम हमारे प्राणसेभी प्रिय थे, हमभी तुम्हारे प्रिय थे, इस समय बाल्य वृत्तान्त स्मरण होता हैं, क्या आश्चर्य्य! समरभूमिमे अव-तीर्ण होनेसे वह सब तिरोहित होगया, क्रोधलोभसे तुमसे युद्धमे प्रवृत्त हुए, तब सात्यकी हास्य करके बोले, हे राजपुत्र! हम लोग जहां क्रीड़ा करते थे, वह यह सभा वा आचार्य्य निकेतन नही हैं, दुर्य्योधन बोले हे शैनेय! कालका क्या आश्चर्य्य हैं, हमलोग लोभसे मोहित होय युद्धमे प्रवृत्त हुए हैं, तब सात्यकी हंसते हंसते तीक्ष्णशर उद्यत करके बोले, हे दुर्य्यो-धन! क्षत्रियोका यही धर्म्म हैं, जो आचार्य्यसे युद्धमे प्रवृत्त हैं, हे राजन्! हम यदि तुम्हारे प्रिय होय तो शीघ्र हमारा नाश करो, तुम्हारे अनुग्रहसे हम स्वर्गमे गमन करें, औ आत्मी-योका दुःखभी दृष्ट न होगा, यह कहके सात्यकी आगे हुए, तब दुर्य्योधन उनके ऊपर शर निकर प्रक्षेप करने लगे, तब परस्पर वेधन पूर्वक घोर युद्ध करने लगे, सात्यकीने दुर्य्योधन पहिले पंचाशत बाण औ पीछे विंशति बाणसे विद्ध किया, दुर्य्योधनने तीस बाणसे उनको विद्ध करके क्षुरप्रसे उनका धनु-छिन्न कर दिया, तब सात्यकीने अन्य कोदण्ड ग्रहण करके शर समूह निक्षेप करने लगे, दुर्य्योधनने वह सब खण्ड खण्ड

कर दिये, तदुत्तर त्रिसप्तति शरोसे सात्यकीको विद्ध किया, तब सात्यकीने दुर्य्योधनका धनुश्छेदन करके उनको समाच्छन्न कर दिया, दुर्य्योधनने युयुधानके शरसे गाढ़ विद्धहोय सत्वर पलायन करके क्षणकालोत्तर श्रमापनोद पूर्वक पुनः उनके ऊपर सायक वर्षण करने लगे, तब सात्यकीभी उनका रथ पर शरवर्षण करने लगे, उन दोनोके चतुर्दिक् शर प्रक्षेपसे वसुधा समाच्छन्न औ गगनमार्ग रुद्ध होगया, तब कर्ण सात्यकीको दुर्य्योधनसे अधिक बलशाली देखके उनके ऊपर धावमान हुए, भीमसेन वह देखके असहमान होय कर्णके ऊपर शर-वर्षण करने लगे, कर्णने भीमसेनका सत्वर धनुश्छेदन पूर्वक अश्व औ सारथिका संहार किया, भीमसेनने क्रोधसे गदा लेके कर्णका धनु, रथका एकचक्र, ध्वज औ सारथिका चूर्ण कर दिया, तब कर्णके अश्व एकचक्र यष्टीका वहन करने लगे, उसी परसे कर्ण भीमसे युद्ध करने लगे, इतनेमे सहसा संकुल युद्ध होने लगा, तब युधिष्ठिर पांचाल औ मत्स्योको कहने लगे, हे वीरगण! जो हम लोगोके प्राण औ मस्तक स्वरूप हैं, वह सब प्रधान क्षत्रिय दुर्य्योधनादिसे युद्ध करते हैं, इस-लिये तुम लोग क्यों निश्चेष्ट हुए हो? जहां सोमकगण युद्ध करते हैं, शीघ्र वहां तुम लोग जाओ, क्षत्रिय धर्मसे युद्ध करनेसे जय लाभ वा प्राणनाश दोनो प्रकारसे सद्गतिलाभ होगा। जय लाभ करोगे तो विविध यज्ञ करोगे, निहत होगे तो स्वर्ग लाभ करोगे, यह सुनके वह लोग द्रोणाभिमुख धावमान हुए तब एक दिक्से पाञ्चालगण औ अन्य दिक्से भीमसेन प्रकृति वीरगणको आक्रमण करने लगे, तब भीमसेन, नकुल औ सहदेव अर्जुनको कहने लगे, हे अर्जुन! तुम शीघ्र द्रोण रक्षणमे नियुक्त वीरोको निपातित करो, आचार्य्य सहाय-हीन होगे तो पांचालोसे अनायास नष्ट होंगे, धनञ्जय यह

सुनके सहसा कौरवोंके अभिमुख हुए, द्रोणाचार्य्यभी उस पंचम दिन धृष्टद्युम्न प्रभृति पाञ्चालोंको मर्द्दित करने लगे।

इति १६० अध्याय।

हे महाराज! पूर्वकालमें देवराजने रोषाविष्ट होके दानवोंका संहार किया था, वैसही द्रोणाचार्य्य पाञ्चालोंका नाश करनेलगे, पाण्डव पक्षीय महारथगण द्रोणके अस्त्रसे निपीड़ित होय भीत होने लगे, पाञ्चाल औ सृञ्जय द्रोणके शर औ शक्ति प्रहारसे चतुर्द्दिक् आर्त्तनाद करने लगे, पाण्डवगणभी वीरोंको निहत देखके भीत होने लगे, औ कहने लगे, कि द्रोण हम लोगोंका नाश करेंगे, अर्जुन वा कोई उनको प्रतिद्वंद्वी न होंगे।

उस समय पाण्डवहितैषी बुद्धिमान् वासुदेव पाण्डवों को नितान्त पीड़ित औ भीत देखके अर्जुनसे बोले, हे अर्जुन! द्रोणाचार्य्य संग्राममें शरासन धारण करेंगे तो देवगणभी उनको निहत कर न सकेंगे, जब वह शस्त्रहीन होंगे उसी समय उनका नाश होगा, इसलिये तुमलोग धर्मत्याग करके कौशल से उनका पराजय करो, नहीं तो तुम सभों का वह नाश करेंगे, हमको निश्चय बोध होता है कि अश्वत्थामा निहत हुए ऐसा जाननेसे द्रोण युद्ध करेंगे नहीं, इसलिये कोई उनको जायके कहे कि अश्वत्थामा संग्राममे नष्ट हुए, अर्जुन यह सुनके किसी प्रकार उसे संमत हुए नहीं, अन्यान्य योद्धा संमत हुए, धर्मराजने अति कष्टसे संमत हुए, अनन्तर महाबाहु भीमसेनने गदाघातसे अवन्तिदेशी इन्द्रवर्माका अरातिघातन अश्वत्थामा नामक गजको निपातित करके सलज्जभावसे आचार्य्यके पास जाय अश्वत्थामा निहत हुए ऐसा कहने लगे, द्रोणाचार्य्य भीमसेनका दारुण अप्रिय वाक्य सुनके

नितान्त विषण्ण मन हुए, अंतमे स्वीय पुत्रको अमित पराक्रम औ शत्रुओंको असह्य जानके आश्वासयुक्त होके धैर्य्यसे स्वीय मृत्युस्वरूप धृष्टद्युम्नके अभिमुख धावमान हुए, औ उनके ऊपर तीक्ष्णशर निक्षेप करने लगे, तब पांचालदेशीय विंशति सहस्र महारथ, द्रोणाचार्य्यके ऊपर शरवर्षण करने लगे, आचार्य्य उनका शरोंसे अदृश हो गए, तदुत्तर उन्होंने उनके शर निवारण कर्के क्रोधसे ब्रह्मास्त्र प्रयोगमे प्रवृत्त हुए, तदुत्तर सोमकोंका नाश औ पांचालोंके मस्तक औ बाहु छेदन करने लगे, निपतित हस्ती, मनुष्य औ अश्वोंके मांस रुधिरसे कर्दम मय हो गया, उस समय द्रोणाचार्य्यके हस्तसे विंशति सहस्र महारथ निहत हुए, तदुत्तर क्रोधाविष्ट होके एक भल्लसे वसुदानका शिरश्छेद पूर्वक पंचाशत् मत्स्य, षट् सहस्र संजय, अयुत हस्ती औ अयुत अश्वोंका नाश किया, ।

उस समय विश्वामित्र, जमदग्नि, भरद्वाज, गौतम, वसिष्ठ, अत्रि, भृगु, अंगिरा, सिकत, पृश्नि, गर्ग, बालखिल्य, मरीचि प्रभृति ऋषिगण द्रोणाचार्य्यको निःक्षत्रिय करते देखके उनका ब्रह्मलोकमे लेजानेके इच्छासे वहां आयके बोले, हे द्रोण! तुम अधर्म युद्ध कर्ते हो, इसलिये तुम्हारा नाशका समय उपस्थित हुआ है, तुम आयुधत्याग कर्के एकवार हमलोगोंको देखो, यह क्रूरकार्य्य कर्ना तुमको उचित नही है, तुम वेदवेदाङ्गवेत्ता औ सत्यधर्मपरायण, विशेष करके ब्राह्मण हो इसलिये यह कार्य्य तुमको योग्य नही है, तुम आयुध त्याग कर्के शाश्वत पथमे अवस्थान करो, अब तुम्हारा मर्त्य लोक पर रहनेका काल पूर्ण हो गया है, हे विप्र! अस्त्रानभिज्ञोंको

अस्त्रसे निहत करना असत्कार्य्य है, शीघ्र क्रूरकर्म छोड़ो।

महाराज! यही भीमके मुखसे अश्वत्थामा निहत हुए यह सुनके विषण्ण हुए थे, उस समय ऋषिगणका वाक्य

श्रवण औ धृष्टद्युम्नको देखके अधिक विमनायमान हुए, तब वह अत्यन्त व्यथित होके युधिष्ठिरको स्वीय पुत्र नष्ट हुए कि नहीं यह पूछने लगे, युधिष्ठिर बाल्यावस्थासे सत्यवादी हैं यह वह जानते थे, इससे उनको निश्चय था कि युधिष्ठिर कदापि मिथ्या नहीं बोलेंगे, इस लिये उन्होने उन्हीको पूछा ।

अनन्तर वासुदेवने द्रोणाचार्य्य जीवित रहेंगे तो पृथिवी पाण्डवशून्य करेंगे यह स्थिर करके दुःखितचित्तसे धर्मराजसे कहा, हे राजन्! यदि द्रोणाचार्य्य और अर्द्धदिन युद्ध करेंगे तो तुम लोग सब नष्ट होगे, इस लिये आप मिथ्या कहके हमारा त्राण कीजिये, ऐसे अवसरमे मिथ्या बोलना श्रेष्ठ है, प्राणरक्षा, कामिनीके निकट, विवाहके विषयमे, गौ औ ब्राह्मणके रक्षार्थ मिथ्या बोलने का पातक नहीं है ।

तब भीमसेन बोले, हे धर्मराज! हमने द्रोणके बधका उपाय सुनके अवन्तीनाथ इन्द्रवर्माका अश्वत्थामा नामक हस्ती संहार करके आचार्यसे कहा है कि हे ब्रह्मन्! अश्वत्थामा नष्ट हुए, अब क्यों युद्ध करते हो, उस समय भारद्वाजने हमारे वाक्य पर अनास्था किया है, इस लिये आप विजयाभिलाषी गोविन्द के वचनसे आचार्य्यको अश्वत्थामाके नाशकी वार्त्ता कहिये, उससे वह कदापि युद्ध करेंगे नहीं, आप सत्यपरायण हैं ऐसा त्रिलोकमे ख्यात है, इससे वह आपके वाक्य पर विश्वास करेंगे, हे कुरुराज! धर्मराज भीमसेन का वाक्य सुनके औ वासुदेवसे प्रेरित होके अवश्यम्भावि कार्य्य के अनुल्लङ्घनीयता से मिथ्या कहने मे उद्यत हुए, वह मिथ्या औ जयाभिलाष इन दोनोसे युगपत् आक्रान्त होके द्रोणसे बोले, अश्वत्थामा हत हुए, यह स्पष्टरूप से कहके अव्यक्तरूप से कुञ्जर ऐसा कहा, हे महाराज! ऐसा कहनेके पहिले युधिष्ठि-

रका रथ भूमिसे चार अङ्गुल ऊंचा रहता था, तत्काल मिथ्या कहने से उनके वाहन धरातल का स्पर्श करने लगे, तब द्रोणाचार्य ने पुत्र शोक से जीविताशा त्याग किया, ऋषिगणका वाक्य स्मरण करके पाण्डवोंके निकट अपने को अपराधी जानके औ धृष्टद्युम्नको सम्मुख देखके विचेतन प्राय होय पूर्ववत् युद्ध करने से समर्थ न हुए।

इति १८१ अध्याय।

हे महाराज! उस समय धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य को विचेतन प्राय औ उद्विग्न देखके उनके ऊपर धावमान हुए औ उनके जिघांसु होके सुदृढ मौर्वीसम्पन्न जयशील धनुर्ग्रहण पूर्वक आशीविष तुल्य शर संयोजन करके प्रक्षेप करने लगे, सैनिकगण धृष्टद्युम्नसे आकृष्टधनु देखके अन्तकाल उपस्थित हुआ हो ऐसा बोध करने लगे, तब द्रोणाचार्यभी स्वय-आसन्नकाल समागत बोध करने लगे औ विशेषरूप से धृष्टद्युम्न निवारण करनेमें यत्न करने लगे, परन्तु तब उनका अस्त्रजाल प्रादुर्भूत हुआ नहीं, इन्होने चार दिन औ एकरात्रि निरन्तर वाणवर्षण करते थे, तथापि उनका शरक्षय न हुआ, परन्तु इस समय पंचम दिनके तृतीयांशके अतीत होनेसे उनके शर निकर निःशेष हो गए।

तब तेजःपुञ्ज कलेवर द्रोणाचार्य्य पुत्रशोक औ दिव्यास्त्रके अप्रसन्नतासे नितान्त विमनायमान होके ऋषिगणका वाक्य पालनके लिये अस्त्र परित्यागके वासनासे पूर्ववत युद्ध न करने लगे, तदुत्तर वह महर्षि अङ्गिरा प्रदत्त दिव्य शरासन ग्रहण करके धृष्टद्युम्नके ऊपर ब्रह्मदण्ड सदृश शरनिकर वर्षण करने लगे, धृष्टद्युम्न उनके शरवर्षणसे आच्छन्न औ क्षतविक्षत हो गए, तदुत्तर द्रोणने पुनः शरनिकर वर्षण करके द्रुपद-

नन्दनका शरासन, ध्वज, शरसमूह शतधा छेदन पूर्वक सारथिको निपातित कर दिया, तब धृष्टद्युम्नने अन्य चाप ग्रहण पूर्वक निशित शरोंसे उनका वक्षःस्थल विद्ध किया, तब द्रोणाचार्य्य उससे विद्ध होकेभी भल्लसे पुनः उनका चाप छेदन कर दिया, तदुत्तर उनकी गदा औ खड्ग भिन्न समस्त अस्त्र शस्त्र औ धनु छेदन कर दिया, औ नव शाणसे उनको विद्ध किया।

अनन्तर धृष्टद्युम्नने ब्राह्मअस्त्र मन्त्रपूत करते हुए स्वीय अश्वोंसे उनके अश्वसंमीलित कर दिये, तब द्रोणने धृष्टद्युम्नका ईषाबन्ध, चक्रबन्ध औ रथबन्ध छेदन कर दिया, इस प्रकार धृष्टद्युम्न द्रोणके शरसे छिन्नकार्मुक, विरथ, हताश्व, औ हतसारथि होके उस घोर विमर्दकालमें द्रोणके ऊपर गदा प्रहार करने लगे, द्रोणने उस गदाके खण्ड खण्ड कर दिये, धृष्टद्युम्न गदा निष्फल देखके द्रोणका बधही श्रेयःकल्प है ऐसी विवेचना करके खड्ग धारण पूर्वक स्वीय रथकी ईषा अवलम्बन करके द्रोणके रथ पर आरूढ़ होय उनका वक्षःस्थल विदारण करने उद्यत हुए, उस समय क्षणमें युगपर, क्षणमें युगसन्नहन पर औ क्षणमें अश्वोंके नितम्ब पर अवस्थान करने लगे, सैनिकगण यह देखके प्रशंसा करने लगे, उस काल द्रोणाचार्य्य किसी प्रकार उनके ऊपर प्रहार करनेका अवसर न पाय सके, यह देखके सबही विस्मयापन्न हुए, तदुत्तर द्रोणाचार्य्य क्रोधकर रथशक्तिसे उनके अश्व नाश किये, धृष्टद्युम्नके अश्व निहत होनेसे द्रोणके शरबन्धसे मुक्त हुए, खड्गहस्त धृष्टद्युम्न यह देखके पुनः उनके ऊपर धावमान हुए, भ्रान्त, उद्भ्रान्त औ आविद्ध प्रभृति एकविंश-गति प्रदर्शन पूर्वक द्रोणके नाशकी इच्छासे विचरण करने लगे, द्रोणने सहस्र शरसे उनका खड्ग औ चर्म छेदन कर

दिया, उस समय द्रोणाचार्य्यके पास वितस्तिमात्र वाण थे, इस प्रकार वाण केवल द्रोण, कृप, अर्जुन, कर्ण, प्रद्युम्न औ सात्यकीके पास हैं, अभिमन्युके पासभी थे।

तदुत्तर द्रोणाचार्य्यने एक दृढ़ वितस्तिमात्र वाण निक्षेप किया, तब सात्यकीने दश वाणसे उसके खण्ड खण्ड करके दुर्य्योधन औ कर्णके समक्ष धृष्टद्युम्नको आचार्य्यसे मुक्त किया, तब धनञ्जय प्रभृति वीरगण सात्यकीको प्रशंसा करने लगे।

इति १९२ अध्याय।

हे महाराज! तब दुर्य्योधन प्रभृति क्रुद्ध होके सात्यकीको निवारण करने लगे, कृप, कर्ण औ दुर्य्योधन सात्यकीको शरसे पीड़ित करने लगे, युधिष्ठिर, भीम, नकुल औ सहदेव सात्यकीके सहायार्थ उनको वेष्टन करने लगे, कृप कर्ण प्रभृति असंख्य शरवर्षण करने लगे, तब उनका औ सात्यकीका घोर शरवर्षण औ दिव्यास्त्र पूर्वक दारुण युद्ध होने लगा, असंख्य हस्ति, अश्व, रथ, चक्र प्रभृति निपतित होनेसे धरातल व्याप्त हो गया।

तब युधिष्ठिर बोले, हे वीरगण! तुम लोग द्रोणाभिमुख धावमान हो, महारथ धृष्टद्युम्न यथासाध्य द्रोणके बधका उपाय कर रहे हैं, धृष्टद्युम्नके कार्य्यसे ज्ञात होता है कि अवश्य वह आज द्रोणको निपातित करेंगे, इस लिये तुमलोग मिलित होके द्रोणसे युद्ध करो।

हे कुरुराज! युधिष्ठिरका यह वाक्य सुनके सृञ्जयगण द्रोणके ऊपर धावमान हुए, द्रोणभी मरणमें कृतनिश्चय होके उनके ऊपर धावमान हुए, तब द्रोणाचार्य्यके अस्त्र प्रज्वलित होय उठे, भकम्प औ प्रचण्डवायु प्रवाहित होने लगा, अश्वोंमें

अश्रुपात होने लगी, औ द्रोणाचार्य्य भी निस्तेज हो गए, उनका वामनेत्र औ वामवाहु स्पंदित होने लगा, तब वह सम्मुख धृष्टद्युम्नको देखके ऋषि वाक्य स्मरण करके धर्म युद्धसे प्राणत्याग करनेकी इच्छा करने लगे, तब वह पाञ्चाल सैन्यके साथ मिलित होके धर्म युद्धसे क्षत्रियोंको दग्ध करने लगे।

अनन्तर द्रोणाचार्यने शर निकरसे पहिले विंशति सहस्र औ पीछे दश अयुत क्षत्रियोंका संहार कर दिया, उस समय धृष्टद्युम्नको रथहीन औ आयुध हीन देखके भीम स्वीय रथ पर उनको आरूढ़ करायके द्रोणाचार्य्यके ऊपर धावमान होके बोले, हे पाञ्चालनन्दन! तुमसे भिन्न और कोई इनसे युद्ध कर सकते नहीं, आचार्य्यके बधका भार तुम्हारे उपरही है, इस लिये इनके बधमें सत्वर यत्न करो, महाबाहु धृष्टद्युम्न यह सुनके उनसे दृढ़ धनु लेके द्रोणके ऊपर शरवर्षण करने लगे, तब दोनो दिव्यास्त्र प्रयोग करने लगे, तब द्रुपद-नन्दनने शरोंसे द्रोणको आच्छन्न करके उनके रक्षक वशाति, शिवि, वाह्लीक औ कौरवगणके निपातित किया, द्रोणाचार्य ने उनका धनु छेदन कर दिया औ तीक्ष्ण शरोंसे विद्ध किया, धृष्टद्युम्न उनके शरोंसे अत्यन्त व्यथित होगए।

तब भीमसेनने द्रोणका रथ धारण करके कहा, हे ब्रह्मन्! यदि स्वकार्यमें असंतुष्ट शिक्षितास्त्र अधम ब्राह्मणगण समरमें न प्रवृत्त होते तो क्षत्रियोंका नाश न होता, पण्डित लोग ब्राह्मणोंको हिंसा न करना यही प्रधान धर्म कह गए हैं, आप ब्राह्मणश्रेष्ठ हैं, परन्तु चाण्डालके तुल्य अज्ञानान्ध होके पुत्र औ कलत्रके उपकारार्थ विविध म्लेच्छ औ अन्यान्य प्राणिगणका विनाश करते हैं, आप एक पुत्रके उपकारार्थ स्वधर्म त्याग पूर्वक स्वकार्य साधन प्रवृत्त असंख्य जीवोंका नाश करते हैं, इसमें लज्जित नहीं होते हैं, जो होय, जिनके लिये

अश्वत्थामा करके संग्राम करते हैं, औ जिनके लिये जीवित हैं, वह आपको न जानते रणमें शयान होगए, हे ब्रह्मन्! जिनके वाक्य पर आपको सन्देह नही है, उन्होने तुमको पहिले कहाभी है।

हे महाराज! भीमसेनका यह वाक्य सुनके आचार्य्यने धनुत्याग करके समस्त शस्त्रास्त्र त्यागके अभिलाषसे बोले, हे महाधनुर्द्धर कर्ण! हे कृपाचार्य्य! हे दुर्योधन! हम बारंबार कहते हैं, तुम लोग युद्धमे प्रवृत्त हो, तुम लोगोका मङ्गल होय, हमने अस्त्र शस्त्र त्याग किया, यह कहके अश्वत्थामाका नामोच्चार करके रथ पर समस्त अस्त्र शस्त्र स्थापन पूर्वक योगसे समस्त जीवको अभय दान किया, उस समय धृष्टद्युम्न अव· सर पायके धनुरखके खड्गधारण पूर्वक द्रोणाभिमुख धावमान हुए, उस समय समरांगणमे हाहाकार शब्द होने लगा, इधर ज्योतिर्मय महातपा द्रोणाचार्य्य शमभावसे योग द्वारा आदि-पुरुष विष्णुका ध्यान करते नेत्रनिमीलन औ शरीर अवष्टम्भ करके प्रणवोच्चारण पूर्वक दुर्लभ ब्रह्मलोक प्रस्थित हुए, उस समय बोध होने लगा माने आकाशमे दो सूर्य्य हैं, सर्वत्र तेज विस्तृत होय क्षणकालमे तिरोहित होगया, आचार्य्य ब्रह्मलोकमे गए, तब देवगण हर्षसे शब्द करने लगे।

हे महाराज! उसकाल मनुष्ययोनिमे केवल हम, धन-ञ्जय, अश्वत्थामा, वासुदेव औ युधिष्ठिर इन्ही पांच लोगोने द्रोणाचार्य्यको स्वर्गमे जाते देखा, और कोईभी उस महिमाको न देख सका, उसीसमय पांचालतनय धृष्टद्युम्नने मोहसे मौना-वलम्बी गतप्राण आचार्य्यको जीवित ज्ञान करके खड्गसे मस्तक छेदन कर दिया, औ आह्लादसे खड्ग विघूर्णित करते गर्जन करने लगे, तब सबही उनको धिक्कार करने लगे।

हे महाराज! केवल आपहीके अर्थ वह आकर्णपलित

श्यामांग पंचाशीतिवर्षवयस्क आचार्य्य षोड़श वर्षीय युवाकी तुल्य रणस्थलमे विचरण करते थे, हे कुरुराज! जिस समय धृष्टद्युम्न द्रोणवधार्थ उद्यत हुए, उस काल धनञ्जयने कहा कि, हे द्रुपदात्मज! आचार्य्यको नाश न कर्के जीवित लेआओ, जब शिरच्छेदमे प्रवृत्त हुए, तब अर्जुन, अन्यान्य सेनापति औ महीपालगण बध करो मत, बधकरो मत ऐसा वारंवार कहने लगे, अर्जुन अत्यन्त कृपापरतन्त्र होके धृष्टद्युम्नके निवारणार्थ धावमान हुए, परन्तु धृष्टद्युम्नने उनके वाक्य पर कर्णपातभी न कर्के भारद्वाजका संहार किया, उनके रुधिरसे लिप्त होय उनका मस्तक लेके कौरवोंके आगे निक्षेप किया, कौरवगण द्रोणाचार्य्यको छिन्न मस्तक देखके पलायनमे कृतनिश्चय हुए।

इस प्रकार द्रोण निहत हुए, तब कौरव, पाण्डव औ सृञ्जय निरुत्साह होके धावमान होने लगे, अनन्तर कौरवगण तात्कालिक पराभव औ भावी पराभवकी संभावनासे अपनेको विनष्ट ज्ञान करने लगे, नरपतिगण समराङ्गणमे आचार्य्यका देह अन्वेषण करने लगे, परन्तु किसी प्रकार उनको मिला नही, इधर पाण्डवगण जयलाभ औ भावी कीर्त्तिलाभके संभावनासे आह्लादित होय वाण शब्द, शङ्खध्वनि औ सिंहनाद करने लगे, उस समय भीम धृष्टद्युम्नको आलिङ्गन कर्के, हे द्रुपदात्मज! दुरात्मा कर्ण औ दुर्य्योधन निहत होंगे, तब पुनः तुमको ऐसही आलिङ्गन करेंगे, यह कहके आह्लादसे वाह्वास्फोटनसे धरातल कम्पित करने लगे, कौरव सैन्य उस शब्दसे भीत होय पलायन करने लगे।

इति १९२ अध्याय।

नारायणास्त्र मोक्ष पर्व्वाध्याय।

सं०। इस प्रकार महावीर द्रोण नष्ट हुए, तब कौरव-सैन्य निपीड़ित औ कातर होय शत्रुओंका जय देखके दीन वदन औ अश्रुपूर्ण नयनसे वारंवार कम्पित होने लगे, औ उनकी चेतना औ उत्साह नष्ट होगया, मोहसे तेज प्रतिहत होगया, आर्तनाद औ दशदिक् निरीक्षण करते हुए दुर्य्योधनको वेष्टन करने लगे, राजा दुर्योधन क्षुद्रमृगके तुल्य भीत औ कौरवोंसे परिवृत होके समर त्याग पूर्वक पलायन करने लगे, समुद्र शोषण औ सूर्य्यके पतन सदृश द्रोणाचार्य्यका निधन बोध करने लगे, गान्धारराज शकुनि भयसे विह्वल होय पलायित हुए, सूतपुत्र कर्णभी सेना सहित पलायन करने लगे, मद्रराज शल्य, सेना सहित कृपाचार्य्य वारंवार क्या कष्ट है, क्या कष्ट है यह कहते, कृतवर्मा अश्वोंके साथ, पलायन करने लगे।

हे महाराज! इस प्रकार सबही पलायन करने लगे, परन्तु एक अश्वत्थामा रणमें अवस्थित रहके सबको पलायन कर्ते देखके दुर्योधनसे बोले, हे राजन्! यह समस्त सैन्य किस कारण पलायन कर्ते हैं? सैन्यकी अवस्था ऐसी क्यों हुई? कर्ण प्रभृति रणमें अवस्थान नहीं करते हैं, क्या अनिष्ट हुआ है?

यह सुनके दुर्य्योधन उनके पितृवधका वृत्तान्त कहनेसे समर्थ हुए नहीं, उन्होंने रथारूढ़ अश्वत्थामाको देखके वाष्पाकुल लोचनसे भग्ननौकाके समान शोकसागरमें निमग्न होके लज्जावनत मुखसे कृपाचार्यसे कहा, हे शारद्वत! सैन्यगण जिस कारण पलायित होता है वह गुरुपुत्रको तुम विज्ञापित करो, तब कृपाचार्य अप्रिय संवाद कहना पड़ता है यह वारंवार

दुःखानुभव कर्के हुए अन्तमे बोले, हे आचार्यतनय । हमलोग अद्वितीय द्रोणाचार्यको अग्रसर कर्के पांचालोसे युद्ध करते थे उस समय कौरव औ सोमकगण परस्पर युद्ध करतेथे, तब द्रोणाचार्यने ब्रह्मास्त्र औ अस्त्रास्त्रसे अनेक मत्स्य, कैकय, पांचाल औ द्विसहस्र हस्ती नष्ट किये, तब पाण्डवपक्षीय सब व्यथित औ हतवीर्य औ निरुत्साह हो गए ।

उस समय विजयाभिलाषी वासुदेवने पाण्डवोसे कहा कि, अन्यकी कथा दूर है साक्षात् इन्द्रोभी आवे तो आचार्य पराजित न होंगे, इस लिये तुमलोग धर्मत्याग कर्के विजय लाभ कीजिये, जिस्से द्रोणाचार्य तुम लोगोको समूल नाश न करे, हम जानते हैं, अश्वत्थामा नष्ट हुए यह जाननेसे वह कदापि युद्ध न करेंगे, इस लिये कोई मिथ्यावाक्य कहके अश्वत्थामा नष्ट हुए यह उनके कर्णगोचर करदे, हे द्रोणनन्दन ! इसमे अर्जुन संमत न हुए, युधिष्ठिर अति कष्टसे हुए, तब भीमसेनने इन्द्रवर्माका अश्वत्थामा नामक गज निहत कर्के लज्जानम्रमुख होय द्रोणके पराजयके बोले, हे आचार्य ! अश्वत्थामा निहत हुए, आचार्यने वह सत्य न जानके युधिष्ठिरको सत्यवादी जानके उनके पूछा, तब उन्होने अश्वत्थामा हत हुए यह स्पष्ट कहके कुञ्जर यह अस्पष्टरूपसे कहा, तब आचार्यने शोकसे संतप्त होय अस्त्र त्याग किया, उस अवसरसे धृष्टद्युम्नने वामहस्तसे केश धारण कर्के शिरच्छेद कर दिया, उस समय सभोने निवारणभी किया । अर्जुनभी निवारणके लिये, धावमान हुए, परन्तु किसी का न मानते शिरच्छेद करही दिया, इसीसे सैन्यसब भीत होके पलायित होता है, हम लोगभी उत्साह शून्य हो गए हैं ।

हे महाराज ! इस प्रकार अश्वत्थामा पितृवध वृत्तान्त श्रवण कर्के क्रोधाग्निसे प्रज्वलित होय करसे कर पीड़न औ

हन्तोसे हन्त पीड़न करने लगी, औ भुजङ्गके तुल्य दीर्घ निश्वास त्याग करने लगे।

इति १९४ अध्याय।

धृ०। अश्वत्थामाने पितृबध सुनके क्या किया? द्रोणाचार्यने परशुरामसे दिव्यास्त्र शिक्षा पायके अश्वत्थामाको सब उपदेश किया है, वह अश्वत्थामा उनके तुल्य है, युद्धमे इन्द्र तुल्य, वीर्यमे कार्त्तवीर्य, बुद्धिमे बृहस्पति, धैर्यमे भूधर, तेजमे अग्नि, गाम्भीर्यमे समुद्र औ क्रोधमे सर्प विष तुल्य हैं, युद्धमे धनुर्ग्रहण करनेसे पृथ्वी कम्पित होती हैं, ऐसे महावीरने यह अधर्म सुनके क्या किया? धृष्टद्युम्न जैसे द्रोणके मृत्यु स्वरूप हैं, वैसही अश्वत्थामाभी धृष्टद्युम्नके अन्तक स्वरूप हैं।

इति १९५ अध्याय।

सं०। पुरुषप्रधान अश्वत्थामा दुरात्मा धृष्टद्युम्नने छलसे पिताका बध किया, यह सुनके बाष्पाकुल नेत्रसे निश्वास त्याग करके बोले, हे राजन्! पिताने अस्त्रत्याग करने पर नीचाशय धृष्टद्युम्नने जो अकार्य किया औ पाण्डवोने जो अनाचरण किया सो सुना, युद्धमे विनाश तो प्रशंसनीय है, न्याय युद्धसे हमारे पिताने देहत्याग किया है, इससे अवश्य उत्तम लोकगामी हुए, इस लिये उनके लिये, शोक करना योग्य नही है, परन्तु दुरात्मा धृष्टद्युम्नने केशाकर्षण किया वही दुःखजनक हुआ, उससे हमारा हृदय विदीर्ण होता है हम जीवित रहते हमारे पिताकी ऐसी दुरवस्था हुई यह दुरात्मा अवश्य उसका फल पावेगा, हे राजन्! हम इष्टापूर्तकी शपथ करके कहते हैं, पांचालोका नाश किये विना जीवधारण न करेंगे गण पुत्र द्वारा इहलोक औ परलोकमे त्राण पावेंगे इसी

लिये पुत्र कामना करते हैं, परन्तु हमारे पिता हम पुत्र औ विशेष करके शिष्य जीवित रहते वह बन्धुहीनके समान दुर-वस्थाग्रस्त हुए, इस लिये हमारे बाहुबल, पराक्रम औ दिव्या-स्त्रको धिक्, जो होय, अब हम जिस्से पितृ-हत्या सन्तुष्ट होय सोई करेंगे।

हे राजन्! स्वमुखसे अपने गुण कीर्तन करना साधुकृत्य नहीं है तथापि पितृवधसे असह्य होय कहते हैं, आज जना-र्दन औ पाण्डव हमारा पराक्रम देखें, उनका युगान्तकालकी समान मर्दन करेंगे, इस भूमण्डलमे हम औ अर्जुनके समान अस्त्रवेत्ता कोई नहीं है, आज दिव्यास्त्र प्रयोगही करेंगे, महावायु जैसा वृक्षको उन्मूलित कर्ता है वैसही हम शत्रु-गणको उन्मूलित करेंगे।

हे महाराज! पहिले एकदा नारायण ब्राह्मणवेश धारण करके हमारे पिताके निकट उपस्थित हुए थे, उन्होने उनकी यथाविधि पूजा करके उपहार दिया, तब भगवान् प्रसन्न होके वर देने लगे, तब हमारे पिताने उनसे नारायणास्त्र की प्रार्थना किया, तब भगवान्ने वह अस्त्र देके कहा, ब्रह्मन्! रणस्थलमे तुम्हारे तुल्य योद्धा कोई होगा नही, तुम सहसा इस अस्त्रका प्रयोग मत करो, यह शत्रुका नाश किये विना निवृत्त होगा नही, यह सबका नाश कर सकता है, अवध्यके वधसेभी निवृत्त न होगा, रणमे रथ औ अस्त्रत्यागी औ शर-णागत के ऊपर इसका निक्षेप करना योग्य नही है, जो इस्से अवध्योका नाश करेंगे तो यह अस्त्र उन्हीका नाश करेगा, भगवान् नारायण यह कहके हमकोभी देखके कहा, हे वत्स! तुमभी इस अस्त्रके प्रभावसे तेजःपुञ्ज होके नानाविध दिव्यास्त्र प्रयोग कर सकोगे, यह कहके भगवान् स्वर्गको सिधारे।

हे राजन्! इस प्रकार हमने नारायणास्त्र लाभ किया है, इस समय उसी अस्त्रसे हम पाण्डव, पाञ्चाल, मत्स्य औ कैकयोंका नाश करेंगे, हम जिसको जिसको वासना करेंगे वह वह इससे निहत होगा।

हे महाराज! कौरवगण अश्वत्थामाका यह वाक्य सुनके प्रतिनिवृत्त होय हर्षसे शंखध्वनि औ वाद्यवादन करते हुए धावमान होने लगे, पाण्डवगण वह कोलाहल सुनके मन्त्रणा करने लगे, इधर अश्वत्थामानेभी आचमन पूर्वक नारायणास्त्र प्रादुर्भूत किया।

इति १८६ अध्याय।

हे महाराज! इस प्रकार नारायणास्त्र प्रादुर्भूत हुआ, तब विना मेघ वज्राघात, वृष्टिपात औ महावेगसे वायुसञ्चार होने लगा, धरातल कम्पित, सागर संक्षुब्ध, नदी विपरीत वहा, गिरिशृंगविदीर्ण, दिङ्मण्डल तिमिराच्छन्न, सूर्य्यकी प्रभा मलिन हो गई, अश्वतथामाके अस्त्र उद्यत होनेसे सबही भीत हो गए।

धृ०। उस समय पाण्डवोंने क्या किया?

सं०। युधिष्ठिर कौरवोंको युद्धमे प्रवृत्त औ उत्पातको देखके अर्जुनसे बोले, हे धनञ्जय! द्रोणके निहत होने पर कौरवगण जयाशा त्याग करके पलायमान हुए थे औ अत्यन्त दुरवस्थाग्रस्त हुए थे, परंतु इस समय प्रतिनिवृत्त होके आगमन करते हैं, इसका कारण जानते हो तो कहो, क्या इन्द्र उनके हितसाधनके लिये रणमे समागत होते हैं, अर्जुन बोले, हे महाराज! जिस वीरके जन्मग्रहणमे द्रोणाचार्य्यने सहस्र गोदान किया था, जिसने जन्म लेतेही उच्चैश्रवाके तुल्य शब्द करके त्रैलोक्यको कम्पित किया था, इसीसे उनका नाम

अश्वत्थामा हुआ श्री देववाणी हुई थी, वह वीरवर रणमें उद्यत हुए हैं, धृष्टद्युम्नने गुरुके केशपाश ग्रहण किया इससे वह कदापि उनकी क्षमा न करेंगे।

हे धर्मराज! आपने धर्मज्ञ होके मिथ्यावाक्यरूप घोरतर अधर्मानुष्ठान किया, बालीके बधमें रामचन्द्रकी जैसी अकीर्त्ति हुई वैसही द्रोणके बधमें आपकी अकीर्त्ति हुई, हमने आपको वारंवार मिथ्यावाक्यका वारण करते थे, परंतु आपने स्वधर्म त्याग करके उनका संहार किया, अल्पकाल जीवित है इसके लिये राज्यलोभसे अधर्म हुआ, आचार्य्य मङ्गल होके हम लोगोका पुत्रवत् पालन करते थे, केवल आपहीके वाक्यसे निहत हुए, हा! हम लोगोने राज्य लोभसे गुरुका संहार किया, गुरुहत्या पापसे लिप्त हुए, इससे निश्चय नरक भोग होगा, अब जीवनेका कुछ प्रयोजन नहीं मरणही श्रेय है।

इति १८७ अध्याय।

हे महाराज! अर्जुनका यह वाक्य सुनके महारथगण कुछभी न बोले, तब भीमसेन क्रोधसे बोले, हे पार्थ! अरण्यगत मुनि जैसा धर्मोपदेश करते हैं वैसही तुम धर्मोपदेश करते हो, तुम क्षत्रियगुणसे अलंकृत होकेभी मूर्खके समान भाषण करते हो, तुम जो इस समय त्रयोदशवर्षसञ्चित क्रोधके ऊपर तिलाञ्जलि देके धर्मलाभकी इच्छा करते हो, किन्तु विपक्षोने तुम्हारा राज्य अधर्मसे हरण द्रौपदीका सभामें पराभव औ अजिन वल्कल धारण पूर्वक वनवास यह सब तुम सहन करते हो। हे धनञ्जय! ऐसेही स्थलमें क्रोध प्रकाश करना होता है, आज अधर्माचारी राज्यापहारी क्षुद्राशय विपक्षोका बंधुबान्धव सहित नाश करना चाहिये,

तुमने पहिले कहा था कि युद्ध आरम्भ होने पर यथासाध्य जयलाभकी चेष्टा करोगे, सो इस समय धर्मानुसंधानमें प्रवृत्त होके हम लोगों की निन्दा करते हो? क्षतके ऊपर क्षारके ऐसा वाक्य शल्यसे विद्ध करते हो, अथवा तुम अवस्थान करो हम गदाग्रहण पूर्वक अश्वत्थामाका पराजय करते हैं।

अनन्तर धृष्टद्युम्न वे अर्जुनसे बोले, हे धनञ्जय! यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान औ प्रतिग्रह यह छः कर्म ब्राह्मणोंके हैं, सो द्रोण कुछभी नहीं करते थे, स्वधर्म त्याग करके क्षत्रियधर्म करते थे, इसीसे हमने उनका वध किया, नीचकार्य्यपरतन्त्र होके अमानुष अस्त्रोंसे हम लोगोंका नाश करते थे, इस लिये उनका संहारही करना युक्त था, हमभी उन्हींके संहारार्थही अग्निसे उत्पन्न हैं, अश्वत्थामा गर्जन करते हैं तो उससे क्षति क्या है, वृथा गर्जन द्वारा कौरवोंको प्रवर्तित करके संहारके कारण होते हैं, तुम धर्मज्ञ होके हम लोगों की निन्दा करते हो सो हम द्रोणका वध करनेसे निन्दनीय नहीं हैं, हमने प्रशंसाका कार्य्य किया है, उनका मस्तक छेदनेसेभी हमारा क्षोभ नहीं गया कारणकी यह कपट युद्ध कर ब्रह्मास्त्रसे अनभिज्ञोंका नाश करना युक्त है? शत्रुका नाश न करे तो अधर्म होता है, हम संबंधसे तुमसे अवनत हैं, तुमको ऐसा वाक्य कहा उचित नहीं है, युधिष्ठिर मिथ्यावादी वा हम अधार्मिक नहीं हैं, आचार्य्य शिष्यद्रोही औ पापस्वभाव थे, इसी लिये उनका नाश किया, अब तुम युद्धमें प्रवृत्त हो जयलाभ होगा।

इति १९८ अध्याय।

सू०। जो महात्मा सांगवेदाध्येता, धनुर्वेदमें अद्वितीय, देवपूजक थे, जिनके प्रसादसे प्रधानपुरुष देवगणसेभी दुष्कर

कार्य्यकारी हुए ऐसे द्रोणाचार्य्य मिथ्या अश्वत्थामाका नाश सुनके रोरुद्यमान हुए, तब नीचप्रकृति धृष्टद्युम्नने उनका नाश किया, इसलिये क्षत्रियधर्म औ क्रोधको धिक्, हे सञ्जय! पाण्डव औ अन्यान्य महीपालोंने उनको क्या कहा?

सं०। धृष्टद्युम्नने अर्जुनसे यह कहा तब कोई कुछ न बोले, अर्जुन उनके ऊपर कटाक्ष निक्षेप करके अश्रुमोचन करने लगे, तब सात्यकी क्रोधसे बोले, इस परुष वाक्य प्रयोग-कारी नराधम पांचाल कुलाङ्गारका शीघ्र नाश करे ऐसा कोई नहीं हैं, हे धृष्टद्युम्न! ब्राह्मण जैसे चाण्डालकी निन्दा करते हैं, तद्रूप तुम्हारा पाप कर्म देखके तुम्हारी पाण्डव निन्दा करते हैं, तुम निन्दनीय कर्म करके जनसमाजमें बोलते हो, लज्जित नहीं होते? आचार्य्यके मरणोत्तरमें विद्वेष वाक्य बोलते हो? इस लिये तुम कुलकलङ्क हो औ वध्य हो, तुमसे भिन्न और ऐसा कोई नहीं है, जो साधु आचार्य्यका केश ग्रहण करके मस्तक छेदन करे, तुम्हारे गुरु यह अवस्थित है, इनके सम्मुख हमारी एक गदा सहन करो।

धृष्टद्युम्न यह सुनके बोले, हे युयुधान! तुम आप अनार्य्य औ नीचप्रकृति होके हमारा निरपराध तिरस्कार करते हो, सभोंका वाक्य सुनके हम क्षमा करते हैं, तुम क्षमावान्को पराजित बोध करते हो, तुम आप निन्द्य होके हमारी निन्दा करते हो, तुमने सभोंके वारण किये परभी प्रायोपविष्ट भूरिश्रवाका मस्तक छेदन क्यों किया? द्रोणाचार्य्य तो हमसे दिव्यास्त्र युद्ध करके निरस्त्र होय हमसे निहत हुए, तुमने तो अर्जुनसे पराजित मुनिव्रतका बध किया, जब तुम्हारे वक्षस्थल पर भूरिश्रवाने पदाघात किया तब तुमने पौरुष प्रकाश क्यों नहीं किया, अन्यने बाहुछेद किया तब तुमने समर त्याग करके उपविष्ट कि बध किया, ऐसे तुम दुष्कर्मी होके हमको

कहते लज्जित नहीं होते हो? रे मूर्ख! पुनः ऐसा हमको मत कहना, धर्म औ अधर्मका तत्त्व सूक्ष्म हैं, देखो कोरवोने अधर्मसे पाण्डवोका राज्य हरण, द्रौपदीका क्लेश, वनवास औ अभिमन्युका बध किया, पाण्डवोनेभी भीष्मका बध अधर्मसे किया, तुमनेभी भूरिश्रवाका बध अधर्महीसे किया, जयाभिलाषी वीरोका ऐसा आचरण होताही है।

यह सुनके सात्यकी क्रोधताम्राक्ष होके गदाग्रहण पूर्वक धृष्टद्युम्नके ऊपर धावमान हुए, तब वासुदेवने भीमसेनको निवारणार्थ प्रेरण किया, भीमसेन रथसे सत्वर उत्तीर्ण हो हस्त प्रसारण पूर्वक उनको निवारण करने लगे, इतनेमे सहदेव रथसे उत्तर कर्के सात्यकीसे बोले, हे युयुधान! तुम लोग जैसे हम लोगोंके मित्र हो हम लोगभी तुम लोगोंके वैसही मित्र हैं, इस लिये मित्र धर्म स्मरण कर्के कोप संवरण करो, क्षमासे अधिक गुण कुछ नहीं है।

हे महाराज! सहदेव इस प्रकार सात्यकीका सान्त्वन करते हैं, तब धृष्टद्युम्न हास्य कर्के बोले, हे भीमसेन! तुम इस युद्ध मदोन्मत्तको छोड़ो, हम क्षणमात्रमे इनकी युद्ध श्रद्धा निवारण करते हैं, पाण्डव कौरवोंका नाश करें, हम इनका नाश करते है, अथवा यह हमारा संहार करें, भीमसेनके भुजद्वयान्तर्गत सात्यको धृष्टद्युम्नका वाक्य सुनके दीर्घश्वास त्याग करते कम्पित होने लगे, तब वासुदेव औ युधिष्ठिरने दोनोको शान्त किया, तदुत्तर सब वीर युद्धार्थ धावमान हुए।

इति १९९ अध्याय।

अनन्तर अश्वत्थामा युगान्तकालीन अन्तकके तुल्य भल्लोसे संहार करने लगे, उसे रणस्थल पर्वतके समान हो गया, निहत अश्वादिसे आकीर्ण होगया, तब अश्वत्थामाने

पुन दुर्य्योधनको पुनः प्रतिज्ञा श्रवण करया, हम शपथ करके कहते हैं, कि पाण्डवोके सहित आज धृष्टद्युम्नका नाश करेंगे, यह कहके घोर संग्राम करने लगे, तदुत्तर नारायणास्त्र प्रादुर्भूत किया, उस अस्त्रसे भुजङ्ग तुल्य असंख्य शरजाल निर्गत होने लगा, वह शरजालने पाण्डवोको आक्रान्त करते दिङ्मण्डल नभोमण्डल औ सेनामण्डल आच्छन्न कर दिया, वज्रमुष्टि नभोमण्डलमे निपतित होने लगी। अनेक-विध आयुध उत्पन्न होय पतित होने लगे, तब पाण्डव औ पाञ्चाल उद्विग्न होगए, जहां युद्ध हो वहां नाराय-णास्त्र प्रादुर्भूत होने लगा, इसप्रकार सब सेना विनष्ट होने लगी।

हे महाराज! उस समय धर्मराज, अश्वत्थामाके अस्त्र प्रभावसे स्वीय सैन्यमे कितने हत, कितने ज्ञानशून्य औ कित-नेको धावमान औ अर्जुनको उदासीन देखके भीत होय बोले, हे धृष्टद्युम्न! तुम पाञ्चाल सेना सहित पलायन करो, हे सात्यके तुमभी अन्धक औ वृष्णिसेनाके सहित पलायन करो, कृष्ण सबके उपदेष्टा हैं, वह अपनी रक्षा कर लेंगे, हे सैन्यगण! तुम युद्ध करोमत, हम लोग सहोदर सहित निश्चय नष्ट होंगे, हा! हम भीष्म औ द्रोण महासागरसे उत्तीर्ण होके यह द्रोणपुत्र गोष्पदमे निमग्न हुए, हमने आचार्य्य नाश किया, इसे धनञ्जय क्षुब्ध हुए हैं, क्रूरकर्मा महारथियोने अनभिज्ञ बालकका नाश किया, तब आचार्य्यने उनकी रक्षा नही किया द्रौपदीने सभामे प्रश्न किया, तब उत्तर नही दिया, सैन्य हमारा श्रान्त हुआ था, तब अर्जुनके नाशार्थ दुर्य्योधनको कवचबन्धन किया, ब्रह्मास्त्रसे अनभिज्ञ पाञ्चालोका नाश किया, कौरवोने अधर्मसे हम लोगोंको राजसे निर्वासन किया, उनसे युद्ध करनेमे हम लोगोको निवारण किया ऐसा परम

सुहृद आचार्य्य निहत हुए, अब हम लोगभी सबांभव नष्ट होंगे।

हे महाराज! युधिष्ठिर ऐसा कहने लगे तब वासुदेवने बाहुसंकेतसे पाण्डव पक्षीय सेनागणको निवारण करते कहने लगे, हे योधगण! तुम लोग निरायुध औ भूतलमे अवतीर्ण हो इससे अस्त्र नाश नही करेगा, इस अस्त्रका प्रतिघात करनेको यही उपाय है, जहां जहां युद्धमे प्रवृत्त होंगे वहां२ भयङ्कर होगा, इस लिये वाहनसे निरायुध होके भूतलमे अवस्थित हो कुछ न होगा, युद्धकी वासना करनेसेभी यह अस्त्र घात करेगा, तब सभोने वासुदेवके कहने रथसे उतरके युद्ध चिन्ता औ अस्त्र त्याग किया।

तब भीमसेन वीरोको अस्त्रत्याग करते देखके आह्लादसे बोले, हे योधगण! तुम लोग अस्त्रत्याग मत करो, हम शरनिकरसे द्रौणिका अस्त्र निवारण करते हैं, इस भूमण्डलमे हमारे ऐसा योद्धा कोई नही है, हम इस गदासे नारायणास्त्र चूर्ण करेंगे, हमारा यह ऐरावतशुण्ड सदृश भुजदण्ड देखो, हम उस अस्त्रके प्रतिद्वंद्वी हैं, अर्जुन बोले, हे भीमसेन! हम गो, ब्राह्मण औ नारायणास्त्र इनके ऊपर गाण्डीवधारण नही करते यह हमारा नियम है, भीमसेन यह सुनके तेजःप्रज्वलित होके शरवर्षण करते हुए, अश्वत्थामा पर धावमान हो उनको आच्छन्न करने लगे, अश्वत्थामाभी शरवृष्टिसे उनको आच्छन्न करने लगे, इतनेमे पाण्डव सैन्य सब अस्त्र औ रथ त्याग करके भूतलमे अवस्थित होगए, वह अस्त्र प्रदीप्त होय भीमसेनहीके मस्तक पर गिरने लगा, तब सब वीर भीमसेनको अस्त्र तेजसे परिवृत देखके हाहाकार करने लगे।

इति २०० अध्याय।

हे महाराज ! अर्जुनने भीमसेनको नारायणास्त्रसे समाच्छन्न देखके वारुणास्त्रसे उनको वेष्टन कर दिया सो किसीने न जाना, परन्तु क्षणमात्रसे पुनः नारायणास्त्रकी तेजसे भीमसेन व्याप्त होगए, क्षण क्षणमे भीमसेनकी शरीरमे प्रवेश करने लगा, तब वासुदेव औ अर्जुन भीषण अस्त्रसे आकीर्ण, द्रोणपुत्रको प्रतिद्वंद्वीरहित औ पाण्डव प्रभृतिको निरायुध औ समर विमुख देखके शीघ्र मायाबलसे भीमसेनके पास जाय अस्त्र तेजमे प्रविष्ट हुए, वह नारायणास्त्र इन दोनो वीरोको अस्त्र परित्याग, वीर्य्यवत्ता औ वारुणास्त्रके प्रभावसे दग्ध कर सका नही, तब वह दोनो नर नारायण नारायणास्त्रकी शांत्यर्थ, भीमसेनको रथसे आकर्षण करने लगे, तब महावीर भीमसेन उनसे आकृष्ट होकेभी गर्जन करने लगे, तब वासुदेव बोले, हे भीमसेन ! तुम निवारित होकेभी क्यों नही निवृत्त होते हो, इस समय पराजय करनेकी संभावना रहती तो हम लोग युद्ध न करते ? देखो यह सब वीर न्यस्तशस्त्र औ रथसे अवतीर्ण हुए, इस लिये तुम शीघ्र रथसे अवतीर्ण हो, यह कहके वासुदेवने भीमसेनको रथसे भूतलमे आनयन किया, तब भीमसेनने दीर्घश्वास छोड़ते क्रोधसे अस्त्र त्याग किया, तब नारायणास्त्रभी प्रशान्त हो गया ।

हे महाराज ! दैवकी अलङ्घनीयतासे उस भीषण नारायणास्त्रका दुःसह तेज शान्त हुआ, दिशा सब निर्मल होगई, तब पाण्डवगण नारायणास्त्रको शान्त देख कर पुनः रथारोहण पूर्वक युद्धमे प्रवृत्त हुए, दुर्य्योधन उनको युद्धमे प्रवृत्त देखके बोले, हे अश्वत्थामन् ! पाञ्चालगण विजयवासनासे पुनः आगमन कर्ते हैं, इस लिये तुम पुनः इसी अस्त्रका प्रयोग करो, तब अश्वत्थामा दीर्घ निश्वास त्याग करके बोले, हे राजन् ! इसी अस्त्रका पुनः त्याग हो सकता नही, वह पुन प्रवर्तित

करने प्रयोगाका संहार करेगा- वासुदेवने कौशलसे उस अस्त्रका प्रतिघात किया, इसीसे शत्रु संहार हुआ नही, जो होय, पराभव औ मृत्यु दोनो समान हैं, वरं पराजयसे मृत्युही श्रेष्ठ है, यह देखो शत्रुगण पराजित होके कृतकार्य हुए हैं, दुर्य्योधन बोले, हे आचार्य्यकुमार! उस अस्त्रको पुनः प्रयोग करनेकी संभावना नही है, तो अन्य अस्त्रसे शत्रु संहार कीजिये, तुम्हारे पास तो अनेक दिव्यास्त्र हैं।

धृ०। नारायणास्त्र प्रतिहत हुआ, औ दुर्य्योधनने ऐसा कहा, तब अश्वत्थामाने क्या किया?

सं०। तब महावीर अश्वत्थामा पितृविनाश क्रोधसे भय परित्याग करके धृष्टद्युम्नके ऊपर धावमान हुए, औ पंचविंशति क्षुद्रक बाणसे उनको विद्ध करने लगे, तब महावीर धृष्टद्युम्न चतुःषष्टि शरोसे अश्वत्थामाको पंचविंशति शरोसे उनके सारथिको औ चार शरोसे उनके अश्वोको विद्ध करके गर्जन करने लगे, तदुत्तर उनके मस्तक पर शरधारा वर्षण करने लगे, अश्वत्थामाने क्रोधसे उनको आच्छन्न करके दश बाणोसे विद्ध किया, तदुत्तर क्षुरप्रसे उनका धनुच्छेदन करके सारथि औ अश्वोका संहार किया, उस समय धृष्टद्युम्नके अनुचरगणभी अश्वत्थामाके शरजालसे समाच्छन्न हो गए।

हे महाराज! उस समय महावीर सात्यकीने धृष्टद्युम्नको निपीड़ित देखके अश्वत्थामाके अभिमुख धावमान हुए, औ शीघ्र पहिले आठ बाणोसे पीछे बीस बाणोसे अश्वत्थामाको औ चार बाणोसे चारो अश्वोको विद्ध करके उनका धनु औ ध्वज छेदन कर दिया, तदुत्तर सारथिके नष्ट करके त्रिंशत् बाण उनके वक्षःस्थलमे प्रक्षिप्त किये, तब अश्वत्थामा इस प्रकार शरजालसे संवृत औ अत्यन्त पीड़ित किंकर्तव्यतामूढ़ हो गए, तब दुर्य्योधन आचार्य्यपुत्रको

तदवस्थ देखके कृप औ कर्ण प्रभृति वीरोंके सहित सात्यकीके ऊपर शरवर्षण करने लगे, तब दुर्योधनने विंशति, कृपाचार्य्यने तीन, कृतवर्मीने दश, कर्णने पंचाशत्, दुःशासनने शत औ वृषसेनने सात वाणोंसे सात्यकीको विद्ध किया, इस प्रकार सात्यकीने विद्ध होके क्रोधसे शीघ्र उनको रथहीन औ पराङ्मुख कर दिया, क्षणकालोत्तर अश्वत्थामा संज्ञालाभ करके अन्य रथारोहण पूर्वक पुनः सात्यकीके ऊपर शरवर्षण करने लगे, सात्यकीने पुनः उनको रथहीन औ पराङ्मुख कर दिया, पाण्डवगण सात्यकीका पराक्रम देखके शंखनाद औ गर्जन करने लगे, सत्यविक्रम सात्यकीने अश्वत्थामाको रथहीन औ विमुख करके वृषसेनके अनुगामी तीन सहस्र महारथ, कृपाचार्य्यके पंचदश सहस्र हस्ती औ शकुनिके पांच अयुत अश्व नष्ट किये।

अनन्तर अश्वत्थामा पुनः अन्य रथारूढ़ होय सात्यकीके ऊपर धावमान हुए, सात्यकीने उनको आगत देखके उपर्युपरि वाण क्षेप पूर्वक उनका हृदय विदीर्ण करने लगे, इस प्रकार अश्वत्थामा अतिमात्र विद्ध औ व्यथित होके क्रोधसे बोले, हे सात्यके! आचार्य्यघाती दुष्ट धृष्टद्युम्नका जो तुमको पक्षपात है, सो हमको विदित है परन्तु तुम हमारे हस्तसे उनकी अपनी रक्षा न कर सकोगे, हम सत्य औ तपस्यासे शपथ करते हैं, कि समस्त पाञ्चालोंका नाश किये विना शांतिलाभ न करेंगे, तुम, पाण्डव सैन्य, वृष्णि सैन्य औ सोमक सैन्य एकत्र करोगे, तोभी उन सभोंका नाश करेंगे।

हे महाराज! अश्वत्थामाने ऐसा कहके एक सूर्य्यरश्मि सदृश उत्कृष्ट शर निक्षेप किया, वह शर सात्यकीके कवचाच्छत देहमें प्रविष्ट होय निपतित हुआ, सात्यकी उस शराघातसे मूर्च्छित हो गए, सारथिने उनको वहांसे अपसृत किया,

उसी समय अश्वत्थामाने एक शर धृष्टद्युम्नके भ्रूमध्यमे निक्षेप किया, धृष्टद्युम्न पहिलेही अतिमात्र विद्ध हुए थे, अब पुनः शरसे ताड़ित होय ध्वज यष्टि अवलम्बन करके रथ पर अव-सन्न होरहे, तब अर्जुन, भीमसेन पुरुवंशीय वृद्धक्षत्र, चेदि-देशीय युवराज औ अवंतीनाथ सुदर्शन, यह पांच महारथ शरासन ग्रहण करके हाहाकार कर्ते हुए अश्वत्थामाके ऊपर धावमान हुए, सबही गुरुपुत्रको पांच पांच बाण निक्षेप करने लगे, अश्वत्थामाने पंचविंशति बाणसे एक बार उनके पंचविंशति बाण छेदन कर दिये, तदुत्तर वृद्धक्षत्रको सात, अवन्तीनाथको तीन, अर्जुनको एक औ वृको-दरको छः बाणसे पीड़ित करने लगे, तब यह महारथ सब क्षणमे युगपत्, क्षणमे पृथक् पृथक् बाणोसे अश्वत्थामा-को विद्ध करने लगे, अश्वत्थामाने निशितशरसे सुदर्शनके बाहुद्वय औ मस्तक छेदन पूर्वक वृद्धक्षत्रकेभी बाहु औ मस्तक छेदन कर दिया औ तत्क्षणही चेदि युवराजकाभी अश्वोके साथ संहार किया, तब भीमसेन वृद्धक्षत्र, सुदर्शन औ युव-राजको निहत देखके क्रुद्ध भुजङ्गके सदृश शरोसे अश्वत्थामा को आच्छादित कर दिया, अश्वत्थामाभी उनको शरवर्षणसे विद्ध करने लगे, भीमसेनने क्षुरप्रसे अश्वत्थामाका शरासन छेदन पूर्वक उनको क्षतविक्षत कर दिया, द्रोणपुत्रने सत्वर अन्य शरासन ग्रहण करके पांच बाणोसे भीमसेनको विद्ध किया इस प्रकार रोषताम्राक्ष वीरद्वय वर्षाकालीनमेघके समान शर वर्षण करके परस्पर समाच्छन्न करने लगे, उस समय उन दोनोका अद्भुत पराक्रम प्रकटित होने लगा, उन दोनोका शर ग्रहण, सन्धान औ प्रक्षेप किसीको लक्षित न होता था, केवल धनुर्मण्डलमात्र प्रकाशित होने लगा, अनन्तर अश्व-

भीमसेनका चाप छेदन कर दिया भीमसेनने उनको

ऊपर रथशक्ति प्रक्षेप किया, अश्वत्थामाने आकाशहीमें उसको खण्ड खण्ड कर दिये, इतनेमें भीमसेनने शरासन लेके अश्व-त्थामाको विद्ध किया, अश्वत्थामाने आनतपर्ववाणसे भीमके सारथिका ललाट विदीर्ण कर दिया, तब सारथि अत्यन्त विद्ध होके अश्व रज्जु त्याग करके विमोहित होगया, सारथि विमो-हित होनेसे अश्व सब पलायन करने लगे, भीमसेनका रथ पलायित देखके सैन्य सब पलायमान होने लगे।

इति २०१ अध्याय।

हे महाराज! उस समय धनञ्जय सैन्यको छिन्न भिन्न देखके अश्वत्थामासे बोले, हे गुरुपुत्र! तुम पुनः स्वीय वीर्य्य, तेज औ दिव्यास्त्र प्रकाश करो, धृष्टद्युम्नही तुम्हारा दर्प चूर्ण करेंगे, तुम युद्धमें प्रवृत्त हो हम सदाही तुम्हारा गर्व नष्ट करते रते हैं।

धृ०। अर्जुन अश्वत्थामाका अतिशय सम्मान करते थे, अर्जुनने प्रियसखा अश्वत्थामाको कदापि कठोर वाक्य नहीं कहा था, तब आज क्यों ऐसा कटु वाक्य बोले।

सं०। पहिले युधिष्ठिरके वाक्योंसे अर्जुन का हृदय व्यथित हुयाथा, इस समय युवराज, सुदर्शन औ दृढ़क्षेच का मरण, धृष्टद्युम्न, सात्यकी औ भीमसेन का पराजय देखके असहमान होय क्रोध से प्रदीप्त होगए, इसी से यह कटु वाक्य बोले, यह सुन के अश्वत्थामाने रोषाविष्ट होय आचमन पूर्वक आग्नेयास्त्र का प्रयोग किया, दृश्य, औ अदृश्यो को लक्ष्य करके मंत्रपूत करके आग्नेयास्त्र प्रक्षेप किया, इस अस्त्रके प्रभाव से नभोमण्डल मे ज्वालाकराल भीषण शरवृष्टि प्रादुर्भूत हुई, अर्जुन उससे वेष्टित होगए, गगन से ज्वाला पात होने लगा, चतुर्दिक अन्धकार होगया, पिशाच राक्षसो के भयंकर शब्द

प्रचण्ड वायु प्रवाहित औ भू कम्प होने लगा, समस्त सैन्य संतप्त होके अत्यन्त व्याकुल होने लगा, वासुदेव औ अर्जुन औ उनका रथ अदृश्य होगया, सब सैन्य जब अदृश्य होने लगा तब अश्वत्थामा औ कौरवगण सिंहनाद करने लगे, तब अर्जुन उस अस्त्रको प्रतिहत करने के लिये ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया, तब क्षणमात्र मे वह अन्धकार औ उपद्रव शान्त हो गया, गगनमण्डल औ दिशा निर्मल हो गई, शीतल वायु प्रवाहित होने लगा, तब वासुदेव औ अर्जुन को निराबाध हमलोगो ने देखा, पहिले अर्जुन औ वासुदेव को तेजसे आच्छन्न देख के उनका नाश हुआ ऐसा निश्चित किया था, परन्तु पुनः उनको अक्षत शरीर देख के पाण्डव हर्ष से शंखध्वनि औ कौरव व्यथित होय आर्तनाद करने लगे, अनन्तर अश्वत्थामा कृष्ण औ अर्जुन को तेज से विमुक्त औ अक्षत देख के दुःखित मन से क्षणमात्र चिन्ता करके अन्त मे शोकविह्वल, विषण्ण औ दीर्घश्वास त्याग करते कार्मुक त्याग पूर्वक रथ से उतर करके अहो धिक् समस्त ही मिथ्या है यह बारंबार कहते हुए रणस्थल से वेग से गमन करने लगे, उस समय मे घनश्याम, सरस्वती के आवास भूत, वेदविभागकर्त्ता वेदव्यास उनके सम्मुख उपस्थित हुए, अश्वत्थामाने उनको प्रणाम करके दीन भाव औ क्षीणकण्ठ होके पूछा, हे भगवन् ! हमारे अस्त्र सब क्यों निष्फल हुए ? किस माया से वा हमारे किस व्यतिक्रम से ऐसा हुआ ? कृष्ण धनञ्जय जीवित है क्या आश्चर्य्य ! कुछ भी जान सकते नही, आप इसका यथार्थ कथन कीजिये,

व्यास बोले, हे भारद्वाजतनय ! यह जो पूछा सो गुरुतर विषय है इस लिये सावधानता से सुनो, पूर्व्व काल मे पूर्व्वतन लोगो के भी पूर्वज, विश्वकर्त्ता भगवान् नारायण ने कार्य्य साधन के अर्थ धर्म के पुत्र होके उत्पन्न हुए, उन्ही भगवान्

ने हिमालय पर्वत पर पहिले षष्टि लक्ष औ षष्टि सहस्र वर्ष ऊर्द्धबाहु होके कठोर तपस्या से आत्मा को शुष्क किया, तदुत्तर उन्होंने पहिले अधिक द्विगुण काल और कठोर तपस्या किया, उन के तेजःप्रभावसे रोदसी पूर्ण होगई, उसी तप के प्रभाव से देवाधिदेव विश्वयोनि महादेव के दर्शन से कृत-कार्य्य हुए, भगवान् त्रिपुरसूदन महादेव सूक्ष्म से सूक्ष्म औ महत्से महत्तर हैं, वेदवेदाङ्ग उन्हो की स्तुति कर्ते हैं, वह सर्वायुधधारी औ सर्वरूप हैं, विशुद्धसत्त्व, विशोक औ निष्पाप ब्राह्मणगण उनका दर्शन कर सकते हैं, हे अश्वत्थामन्! भगवान् नारायण ने उन्ही पार्वतीपति का दर्शन कै साष्टाङ्ग प्रणाम पूर्वक भक्तिभाव से अनेक विध स्तव करने लगे, तदुत्तर उन से कहने लगे, हे देवप्रधान! आप सर्वज्ञ औ स्वधर्मवेद्य हो, हम आप के अर्चन के लिये स्तुति करने मे प्रवृत्त हुए हैं आप विकृत न होके हमारा अभिलषित वर दान कीजिये, हे द्रोणे! नारायण ने अचिंत्यात्मा भगवान् शूलपाणि से वर प्रार्थना किया, तब यह वरदान देनेमे प्रवृत्त होय बोले, हे नारायण! हम प्रसन्न होके कहते हैं कि मनुष्य, देव, दानव औ गन्धर्वगणमे कोई तुम्हारे तुल्य बल-शाली न होगा, देव, असुर, उरग, पिशाच, गन्धर्व, नर, राक्षस औ, सुपर्ण कोई तुम को परास्त न कर सकेगा, तुम संग्राम मे हम से अधिक बलशाली होगे, हमारे प्रसादसे कोई क्या वज्र, क्या अग्नि, क्या वायु, क्या आर्द्र, क्या शुष्क किसी पदार्थ से तुमको क्लेश न होगा, हे भारद्वाज! पूर्वकाल मे नारायण ने इस प्रकार वर लाभ किया है, इस समय वही वासुदेवरूपसे माया के प्रभाव से जगत् को विमुग्ध कर्के विचरण करते हैं, महात्मा अर्जुन भी उन से न्यून नही हैं, यह भी नारायणके अंश से नर नामा महर्षि हुए, यह दोनो

महात्मा देवगणसे भी श्रेष्ठ हैं, लोकयात्रा विधानार्थ युग युगमे जन्म ग्रहण करते हैं, हे महामते! तुमभी कहो कर्म औ तपोबलसे तेज औ क्रोधयुक्त होके रुद्रके अंशसे उत्पन्न हुए हो, तुमनेभी कठोर नियम, तपस्या, पूजा, जप औ होमसे महेश्वरको प्रसन्न किया है, भगवान् रुद्रनेभी तुमको वर दिये हैं, जैसे उन दोनोके जन्म, कर्म औ तपस्या असे हैं वैसही तुम्हारेभी हैं, जो महादेवको सर्वरूप जानके सर्वदा शिवलिङ्ग की अर्चना कर्ते हैं, यह वही रुद्रसम्भूत औ रुद्रभक्त केशव हैं, इन्होमे आत्मयोग औ शास्त्रयोग निरन्तर विद्यमान है, महर्षिगणभी सतत उत्कृष्ट स्थान लाभार्थ शिवलिङ्गार्चन करते हैं, वासुदेव शिवलिङ्गको सर्वभूतके कारण जानके अर्चन करते हैं, वृषभध्वजभी कृष्णके ऊपर विशेष प्रीति रखते हैं, इस लिये कृष्णका अर्चन करना चहिये।

हे महाराज! इस प्रकार अश्वत्थामा वेदव्यासका वचन सुनके रुद्रको नमस्कार कर्के केशवको महान् ऐसा ज्ञान करने लगे, तदुत्तर वेदव्यासको नमस्कार कर्के सेनामे प्रत्यागत होके उनका उपसंहार किया, तब पाण्डवगणभी युद्ध समाप्त जानके आपभी निवृत्त होने लगे, हे महाराज! इस प्रकार वेद-पारदर्शी ब्राह्मण द्रोणाचार्य्य पांच दिन युद्ध कर्के असङ्ख्य सैन्य नाश कर्के ब्रह्मलोकमे गए, आचार्य्यके निहत होनेसे कौरवोके दुःखकी सीमा न रही।

इति २०२ अध्याय।

धृ०। आचार्य्यके निहत होने पर पाण्डव औ कौरवोने क्या किया?

स०। द्रोणाचार्य्य निहत औ कौरव पराङ्मुख हुए, तब धनञ्जय स्वीय विजयकारक अद्भुत व्यापार देखके स्वेच्छासे

समागत वेदव्याससे पूछने लगे, हे भगवन्! जब हम संग्राममें शरनिकरसे शत्रुनाशमें प्रवृत्त होते थे, तब हमारे आगे अग्नि-सन्निभ कौन पुरुष दृष्ट होतेथे, वह शूल उत्तोलन करके जिधर जिधर धावमान होतेथे, उधर उधर शत्रु नष्ट होतेथे, तब सबको बोध होताथा कि हमहीसे नष्ट होते हैं, परंतु वस्तुतः हम केवल उन्हीके पीछे २ उनसे भग्नसैन्यका नाश करतेथे, हे महर्षे! वह सूर्य्यसन्निभ महापुरुष कौन थे? हम देखते थे वह भूतल में पदस्पर्श वा शूल निक्षेप नही करते थे, केवल उनके तेजसे शूलसे सहस्र सहस्र शूल निर्गत होते थे।

व्यास बोले हे अर्जुन! तुम ब्रह्मा, विष्णु औ रुद्र इनके कारण, सर्वशरीरशायी: त्रैलोक्य शरीर, सर्वलोकके नियन्ता, तेजोमय औ देवादिदेव महादेवको देखते थे, तुम उन्ही परमेश्वरके शरणापन्न हो, वह तुमसे पूजित होय प्रसन्नतासे तुम्हारे आगे आगे गमन करते थे, उनके भिन्न अश्वत्थामा कृप औ कर्णरक्षितसैन्यका पराभव कौन कर सकता है, औ त्रैलोक्यमे उनके समान कोई नही है, उनके गमनहीसे असंख्य सैन्य नष्ट होता है, स्वर्गमे सुरगण उनको नित्य नमस्कार करते हैं, उनके अर्चनहीसे सब गति लाभ होता है, हे अर्जुन! इसलिये तुम उन्हीको नमस्कार करो, औ उन्हीके शरणापन्न हो, हमभी उन्हीके शरणापन्न हुए हैं, उन्ही नीलकंठ भगवानको नमस्कार है।

हे धनञ्जय! हम अब अपने ज्ञानानुसार उनका दिव्य कर्म कहते है सुनो, वह कोपाविष्ट होते हैं तो सुर, असुर, गंधर्व यक्ष औ राक्षस पातालमे जायकेभी परित्राण पाय सकते नही, पूर्वकालमे दक्षराजने यज्ञारंभ किया था, उसमे महादेव कुपित होके यज्ञ ध्वंस करते बाणनिक्षेप पूर्वक गर्जन करने लगे, तब सुरगणमे कोई शांति लाभ न [illegible]

सुरगण निपतित औ महादेवके वशीभूत होगये, वसुन्धरा कम्पित औ पर्वत विशीर्ण होगए, ज्योतिः पदार्थकी प्रभा ध्वस्त होगई, उस यज्ञमे सूर्य्य पुरोडाशभक्षण करते थे इसी महेश्वरने उनके दंत उत्पाटन कियेथे, देवगण उनको प्रणाम करके पलायित हुए तथापि वह शान्त न हुए औ अग्निस्फु-लिंग सदृश शर संधान करने लगे तब सकल देवगणने अत्यंत प्रणत औ शरणागत होके उनका यज्ञ भाग कल्पना किया, तब शंकरने प्रसन्न हो यज्ञ पुनः स्थापन किया, उसी दिन से देवगण उनसे अद्यावधि भीत रहते है।

पूर्वकालमे स्वर्गमे महाबल पराक्रांत असुरगणके सुवर्ण, रौप्य औ लोहमयी तीनपुर थे, वह ब्रह्माके वरदानसे अभेद्य हो गए थे, तब देवगण शंभुके शरणागत हुए, तब उन्होने त्रिभुवन रूप रथ निर्माण पूर्वक उसपर आरूढ़ औ विष्णु, सोम, अग्निमय बाण संधान करके उस पुरत्रयका भेद किया, तब असुरगण उनके ऊपर दृष्टिपातभी न कर सके, जब उस बाणसे त्रिपुर दग्ध होने लगा, तब पार्वती बालकरूपी महा-देवको क्रोड़मे लेके उस मार्ग दर्शनार्थ समागत हुईं, तब उन्होने देवगणके मनका भाव जाननेके लिये पूछा, हे देव-गण! हमारे क्रोड़मे कौन हैं? तब देवराज इन्द्र दुर्दैव विपाकसे उन बालक पर असूया करके वज्र निक्षेप करनेमे उद्यत हुए, तब भूतनाथने देखके हास्य पूर्वक इन्द्रका वह वज्रयुक्त बाहु स्तम्भित कर दिया, तब इन्द्र स्तम्भित बाहु होके देवगण के साथ ब्रह्माके निकट गए औ बोले, हे ब्रह्मन्! हम लोगोने पार्वतीके क्रोड़मे एक बालकरूपधारी जीव देखा, उसको अभि-वादन किया नही इससे उन्होने क्रुद्ध होके विना युद्ध हम लोगो को इन्द्रके सहित पराजित किया, इस लिये उस बालकका वृत्तान्त कहिये।

तब ब्रह्मा योगबलसे उस बालकको त्रिलोचन जानके बोले, हे देवगण! वह बालक इस चराचरके प्रभु भगवान् महेश्वर हैं, उनसे श्रेष्ठ कोई नहीं है, उन्होने पार्वतीके निमित्त बालक रूप धारण किया है, इस लिये चलो हम सब उनके निकट जायें, वह सर्वजनके ईश्वर देवादिदेव महादेव हैं, तुम लोग उनको जान सकते नहीं, तब ब्रह्मा देवगणके सहित उनके निकट आय वन्दन करते हुए बोले, हे देव! तुम इस भुवनके यज्ञ, गति औ श्रेष्ठतर व्रतरूप हो, तुम भव, तुम भूमि, तुम महादेव, तुम धाम औ तुमही परमपद औ चराचरके व्यापक हो, हे भगवन्! हे भूतभव्येश! हे लोकनाथ! तुम क्रोधार्दित पुरन्दरके ऊपर कृपादृष्टि कीजिये।

हे अर्जुन! भगवान् ब्रह्माका यह वाक्य सुनके उन्मुख होय अट्टहास करने लगे, तब सुरगण पार्वती औ महेश्वरको प्रसन्न करने लगे, महादेव औ पार्वती प्रसन्न हुए औ इन्द्रका बाहु प्रकृतिस्थ होगया, यही शिव समस्त देवस्वरूप हैं, उन्ही काल स्वरूप हैं उनकी घोरा औ शिवा दो मूर्त्ति हैं, अग्नि, विष्णु औ भास्कर यह घोरा मूर्ति औ सलिल, चन्द्र औ सर्वज्योतिः पदार्थ शिवा मूर्ति हैं, वेद, वेदाङ्ग, उपनिषत् औ पुराण अध्यात्ममे जो गूढ है वही यह ईश्वर हैं।

हे अर्जुन! हम सहस्र वर्ष कहेंगे तोभी उनके गुण कीर्तित न होंगे, वह शरणागतवत्सल शरणागत पापियोंको भी मुक्ति देते हैं, इन्द्रादि देवोंमे उन्हीका ऐश्वर्य्य है, वह मनुष्योके शुभाशुभ कार्य्यमे व्याप्त रहते हैं, जो उनके लिङ्ग की पूजा करते हैं उनको वह नित्यलक्ष्मी देते हैं, तुमने संग्राम कालमे जो त्रिशूलधारी देखे थे, वह यही परमेश्वर महादेव है, तुमने जिनके दिये हुए अस्त्रसे दानवोंका नाश कीया उन्हीकी व्याख्या हमने कीर्तन किया, जो यह व्याख्या

श्रवण वा पठन करैगा उसको विजय लाभ होगा, अब तुम गमन पूर्वक संग्राममे प्रवृत्त हो, जनार्दन जिनके निकटस्थ, मन्त्री औ रक्षिता हैं उनका पराजय कदापि न होगा।

हे महाराज! इस प्रकार वेदव्यास कहके स्वस्थानमे प्रस्थित हुए, वेदाध्ययनसे जो फल प्राप्त होता है वह फल इस द्रोणपर्व अध्ययनसे लब्ध होता है, इस पर्वमे निर्भय क्षत्रियो का यश औ वासुदेव औ अर्जुनका विजय वर्णित है, इस पर्व का नित्य पाठ करनेसे महापाप नष्ट होते हैं, इसके श्रवण वा पठनसे ब्राह्मणोको यज्ञफल, क्षत्रियोको विजय, वैश्योको धन लाभ औ शूद्रोको सुख लाभ होता है सन्देह नही।

इति २०२ अध्याय।

इति नारायणास्त्रमोक्षपर्वाध्याय।

द्रोणपर्व संपूर्ण हुआ।

महाभारत।

भाषा।

कर्णपर्व।

नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीञ्चैव ततोजयमुदीरयेत्॥

वैशम्पायन बोले,- महाराज! महावीर द्रोणके निहत होनेसे दुर्य्योधन प्रभृति महीपालगण घोकार्त्त होय अश्व-त्थामाके निकट गये। उस समय मोह प्रभावसे उन्होंका तेज प्रतिहत हो गया था। वे लोग अश्वत्थामाको वेष्टन करके आश्वासित करने लगे। अनन्तर अपने अपने शिविरको गमन करने लगे। कर्ण दुःशासन और शकुनिने उस रात्रिको दुर्य्योधनके आवासमें व्यतीत किया और वे लोग अपने पूर्वके दुष्कर्मोंको स्मरण करके अति दुःखित होते थे। वह रात्रि उनको सौ वर्षकी जान पड़ी।

प्रातःकाल होतेही नित्यक्रिया समापन करके कौरव भाग्य पर भार देकर सैन्यगणको सज्जित होनेकी आज्ञा दी। और कर्णको सेनापति पदमें प्रतिष्ठित करके युद्धार्थ निर्गत हुए। इधर पाण्डवगणभी युद्धके लिये शिविरसे निर्गत हुए। और परस्पर तुमुल संग्राम आरम्भ हुआ। कर्णके सेनापति होने पर दो दिन महाघोर युद्ध हुआ था। इसमें कर्णने बहुसंख्यक शत्रुसैन्य विनाश करके धनञ्जयके शर द्वारा प्राण परित्याग किया। यह देख सञ्जयने श्रीहस्ती-

हस्तिनापुर जाय महाराज धृतराष्ट्रको कर्णका निधन वृत्तान्त जानाया।

इति १ अध्याय।

वै०। कर्णके मरने पर सञ्जय धृतराष्ट्रके निकट जाय पाईअन्हन पर्वश गोले, महाराज! हम सञ्जय आपको नमस्कार करते हैं। आप तो सुखी हैं? महाराज! आप आपहीके दोषसे महाविपदमें पड़े। भीष्म, विदुर प्रभृतिने आपकी सभामें हितोपदेश दिया पर उस समय आपने न सुना। तो अब भीष्म और द्रोणका मरण सुनके क्या आपका मन व्यथित नहीं होता है?

आपहीके अपराधसे कौरवगणकी ऐसी दुर्दशा हुई तो अब आपको व्यथित होना उचित नहीं है। पण्डित लोग दैव दुर्घटना पर अनुताप नहीं करते हैं।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! हम अपनी अशुभ घटना श्रवण करके अधिक व्यथित न होंगे दैवही हमारे अनिष्टका कारण है इससे अब तुम असन्दिग्ध मनसे कुरुकुलका समस्त वृत्तान्त कीर्तन करो।

इति २ अध्याय।

सञ्जय बोले, महाराज! द्रोणाचार्य्यके निधन होनेसे आपके पुत्रगण अति दुःखित हुए। सबही शोकान्ध और अधोमुख होय परस्पर अवलोकन करने लगे, कोई किसीसे कुछ बोल न सके।

यह देख राजा दुर्य्योधन बोले, हे वीरगण! हम आपही का बाहुबल आश्रय करके पाण्डवगणसे युद्ध करनेको ", इस समय द्रोणाचार्य्यके निहत होनेसे हम लोग

दुःखित हुए पर युद्धहीमें तो वीरगणोंका जय लाभ वा मृत्यु हुआ करती है? इसमें दुःख क्या है? अब आप लोग संग्राम में प्रवृत्त होइये। वह देखो महात्मा कर्ण दिव्यास्त्र धारण पूर्वक समराङ्गणमें विचरण करते हैं, जिनके भयसे धनञ्जय भीत हो रहे हैं, जिन्होंने अयुतनागबलधारी भीमसेनकी कैसी दुर्दशा कर दी थी? जिन्होंने अमोघ शक्ति द्वारा दिव्यास्त्र-वेत्ता मायावी घटोत्कचको निपातित किया, आज उन्हीं महावीर कर्णका अक्षय बाहुबल आप लोग दर्शन कीजिये। आज पाण्डवगणभी विष्णु और इन्द्रके समान कर्ण और अश्वत्थामाका पराक्रम दर्शन करें। आप लोग सबही वीर्य्य-वान् और कृतास्त्र हैं, आप लोगमें प्रत्येक वीर ससैन्य पाण्डव-गणको विनाश कर सकते हैं तब एकत्र होने पर तो बातही क्या है? हे महाराज! यह कहके आपके पुत्रोंने कर्णको सेनापति पदमें अभिषिक्त किया। रथकुलेन्द्र महारथ कर्ण सेनापति होय सिंहनाद परित्याग पूर्वक युद्धमें प्रवृत्त होय सृञ्जय, पाञ्चाल, कैकय और विदेहगणको निपीड़ित करने लगे। हे महाराज! महावीर सूतपुत्र इसी प्रकारसे सहस्र सहस्र शत्रुपक्षीय वीरगणको निपातित करके अन्तको धन-ञ्जयके हस्तसे निहत हुए।

इति २ अध्याय।

वै०। धृतराष्ट्र कर्णका मरण सुनतेही अपार शोकसाग-रमें निमग्न होय दुर्य्योधनको निहतज्ञान करके विह्वल और विचेतन होय धरातल पर निपतित हुए। राजाके अचेतन होने पर अन्तःपुरवासिनी स्त्रियोंके [illegible] आर्त्तनादसे पृथिवी परिपूर्ण हुई। गान्धारी और [illegible] महिलागण राजाके निकट आय संज्ञाशून्य हो कर

शोकमूर्च्छित वाष्पपरिपूर्ण कामिनीगणको सञ्जय आश्वास देने लगे। महिलागण सञ्जयके वाक्यसे आश्वस्त होके वायु-चालित कदल के समान वारंवार कम्पित होने लगी। महात्मा विदुर धृतराष्ट्रके मुख पर जलसेचन करके आश्वासप्रदान करने लगे। अनन्तर राजा संज्ञा लाभ करके शोकउन्मत्त रमणीगणको, देख कर तूष्णीभूत हो रहे। और बहुक्षण चिन्ता करके दीर्घनिश्वास परित्याग पूर्वक अपने पुत्रगणकी निन्दा और पाण्डवोंकी प्रशंसा करने लगे। अनन्तर धैर्य्या-वलम्बन पूर्वक स्थिरचित्त होय बोले, हे सञ्जय! हमारा पुत्र राज्यकामुक दुर्य्योधनने जयलाभसे निराश होय प्राण तो परित्याग नहीं किया? तुम पुनर्वार यथार्थ कीर्तन करो।

सञ्जय बोले महाराज! महारथ कर्ण अपने पुत्र और भ्रातृगणके सहित कालग्रस्त हुए और महाबली भीमसेनने युद्धमें दुःशासनको निपातित करके उनका रक्तपान किया।

इति ४ अध्याय।

वै०। धृतराष्ट्र सञ्जयका वचन श्रवण करके शोकसे सन्तप्त होय बोले, हे वत्स! हमारे अदूरदर्शी पुत्रके दुर्नीतिसे कर्ण निहत हुए। कर्णका मरण सुनके हमारा मर्मभेद होता है जो होय अब कौरव और संजयगणके बीच कौन कौन निहत और कौन कौन जीवित रहे सो कहो।

संजय बोले, महाराज! प्रतापवान् भीष्म, महाधनुर्धर द्रोणाचार्य्य, महावीर कर्ण, विविंशति, विन्द और अनुविन्द, आपके पुत्र विकर्ण, महावीर जयद्रथ, दुर्य्योधनपुत्र, दुःशा-सनतनय, भूरिश्रवा, दुःशासन, भगदत्त, अम्बष्ठराज श्रुतायु, सुदक्षिण, आपका पुत्र चित्रसेन, मद्रराजनन्दन, वृषसेन,

वृद्धराजा भगीरथ, केकयदेशीय वृहत्क्षत्र, मत्स्यपुत्र श्वेतरथ, भगदत्तपुत्र, वाह्लीक, जरासन्धकुमार जयत्सेन, आपके पुत्र दुर्मुख, दुःसह, दुर्मर्षण, दुर्विषह, दुर्जय, भ्रातृद्वय कलिङ्ग औ वृषक, वीर्य्यवान् वृषवर्मा, राजा पौरव, आपके स्यालक वृषक और अचल, द्विसहस्र वसाति, बहुसहस्र संसप्तक श्रेणि, महाबली शूरसेन, अभीषाह, शिवी, संग्रामनिपुण कलिङ्ग, अपाङ्गदेशक वीरगण, औघवान, वृहन्त, शाल्वराज, क्षेमधूर्ति, जलसन्ध, अलंबुष, सूतपुत्र कर्णके भ्रातृगण, केकय, मालव, मद्रक, द्राविड़, यौधेय, ललित्थ, क्षुद्रक, उशीनर, मावेल्लक, तुण्डिकेर, सावित्रीपुत्र, प्राच्य, उदीच्य, प्रतीच्य और दाक्षिणात्यगण महाघोर युद्ध और असंख्य शत्रुसैन्य संहार करके विनष्ट हैं। हे महाराज! इनसे अतिरिक्त औरभी बहुतर सैन्य विनष्ट हुआ है। कर्ण और धनञ्जयके संग्राममें बहुतर सेना नष्ट हुई है। जिसके ऊपर आपके पुत्रगणके जयकी आशा प्रतिष्ठित थी, जो इस कुरु-पाण्डवके युद्धके मूल, पाण्डवगण इस समय उसी कर्णका संहार करके निश्चिन्त हो गये। हे महाराज! पहिले आपने हितैषी बन्धुगणके हितवाक्यपर कर्णपात न किया इसीसे आपके पुत्रगण महासङ्कटमे पड़े। आपने जैसा पहिले हितैषीगणका अहिताचरण किया था अब उसीका फल भोगनेका समय आया।

इति ५ अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! पाण्डवपक्षीय जो वीरगण निहत हुए उनका नाम कीर्त्तन करो। सञ्जय बोले, हे महाराज! महावीर भीष्मने बंधुबांधव परिवृत कुन्तिगण, नारायण, बालभद्र प्रभृति शत शत शूरगणको निपातित किया।

अर्जुनतुल्य सत्यजित्, पुत्र समवेत वृद्ध विराट और द्रुपद और महाधनुर्द्धर पाञ्चालगणको द्रोणाचार्यने संहार किया। महाधनुर्द्धर अभिमन्यु असंख्य शत्रु संहार पूर्वक छः महारथोंसे परिवेष्टित और विरथ होकर दुःशासन तनयके हस्तसे विनष्ट हुए। अम्बष्ठतनय, दृढहस्त, दण्डधार, मणिमान, अंशुमान, सपुत्र चित्रसेन, नील, व्याघ्रदत्त, चित्रायुध, केकयराजभ्राता, जनमेजय, रोचमानभ्रातृद्वय, ये बीरगण असंख्य शत्रुसैन्य संहार करके प्राणपरित्याग कर गये हैं, अर्जुनके मातुल पुरुजित् और कुन्तिभोज और पाञ्चालदेशीय मित्रवर्मा और क्षत्रधर्मा, काशिराज अभिभू, युधामन्यु, उत्तमौजा, शिखण्डी तनय क्षत्रदेव, सेनाविंदुतनय सुचित्र, चित्रवर्मा, शिशुपाल-पुत्र सुकेतु, सत्यधृति, मदिराश्व, सूर्यदत्त, वसुदान, महाबली मगधराज, वार्द्धक्षेमि, धृष्टकेतु, सत्यधृति, सेनाविंदु, श्रेणि-मान, विराटपुत्र शङ्ख, उत्तर प्रभृति बीरगण पाण्डवोंके हित साधनार्थ समरमें महादुष्कर कार्यसाधन पूर्वक प्राणत्याग करके गये हैं। हे महाराज! इनसे अधिक औरभी असंख्य बीरगण निहत हुए हैं।

इति ६ अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! जो जो बीर निहत हुए सो तो श्रवण किया, अब कौन कौन जीवित बचे हैं? सो कीर्त्तन करो। सञ्जय बोले, महाराज! महारथ अश्वत्थामा, भोज-राज, कृतवर्मा, शल्यराज, महावीर गान्धारराज, कृपाचार्य्य, कैकयराजपुत्र सदश्व, आपका पुत्र पुरुमित्र और राजा दुर्यो-धन समराङ्गणमें विराजमान हैं। आपके पुत्र सुषेण, सत्यसेन, चित्रसेन, महावीर क्षणभोजो, सुदर्श, जरासन्धका प्रथम पुत्र नरदेव, चित्रायुध, जय, श्रुतिवर्मा, शल, सत्यव्रत, दुःशल,

कैतव्याधिपति, श्रुतायु, धृतायु, चित्राङ्गद, चित्रसेन, कर्णपुत्र सत्यसन्ध, कर्णके और दो पुत्र, महाराज दुर्योधन विजयवास-नासे ये सब वीरगण और अन्यान्य प्रभावशाली वीरपुरुषगण समवेत होकर सैन्यमे अवस्थान करते हैं।

वै०। राजा धृतराष्ट्र श्रेष्ठ वीरगणका विनाश और अल्पा-वशिष्ट सैन्यका वृत्तान्त श्रवण करके शोकसे अत्यन्त उद्भ्रान्त चित्त होगये।

इति ७ अध्याय।

जन्मेजय बोले, हे ब्रह्मन्! राजा धृतराष्ट्रने शोकाकुल होके क्या किया? सो कहिये।

वै०। राजा धृतराष्ट्र कर्ण विनाश श्रवण करके मनमे यह चिन्ता करने लगे कि अब तो सर्वनाश हुआ, अवशिष्ट सैन्यभी विनष्ट होगा, यह स्थिर करके शोकसे सन्तप्त, शिथिल कलेवर और दीनभावसे "हा हतोस्मि" कहके दीर्घनिश्वास परित्याग पूर्वक कर्णके निमित्त विलाप और परिताप करते करते बोले, हे सञ्जय! जब हम इतना दुःख पायकेभी विनष्ट न हुए तब हमने निश्चय जाना जो हमारा हृदय वज्रसेभी अधिक कठिन है अब हम यह दुःख सहन नही कर सकते हैं विस भक्षण, अग्निप्रवेश वा पर्वत शिखरसे पतन द्वारा प्राणत्याग करनेकी वासना करते हैं।

इति ८ अध्याय।

यह सुन सञ्जय बोले, महाराज! साधुगण आपको कुल, यश, श्री, तपस्या और विद्यामें ययातिके तुल्य जान्ते हैं इस कारण आप शोक परित्याग करके धैर्य्यावलम्बन कीजिये।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! जब कर्ण समरमें, निहत हुए,

तब दैवही बलवान् है, पुरुषकार को धिक् वह कुछभी कार्य-कारक नहीं है, जब कर्ण निहत हुए तो अब दुर्योधनका अभिलाष पंगुको गमनेच्छा, दरिद्रका मनोभिलाष अथवा तृषितको जलविन्दुकी समान वृथा है, हम लोगोंने जैसा निश्चित किया था उसका विपरीत होगया इसीसे दैवही बलवान् है।

हे सञ्जय! हमारा पुत्र दुःशासन क्या हीनपौरुषकी समान पलायन करते निहत हुआ? युधिष्ठिरने वारम्बार युद्ध करनेको निषेध किया था। महात्मा भीष्मने शरशय्या पर शयान होके पानीयको प्रार्थना किया था तब धनञ्जयने अवनी विदारण पूर्वक जलधारा उत्तोलित करदी थी, यह देख भीष्मदेवने दुर्य्योधनसे कहा था कि हे वत्स! अब संग्राम मत करो, हमारे निधन होनेहीसे युद्ध समाप्त होय अब सन्धिस्थापन और पाण्डवगणसे भ्रातृभाव धारण पूर्वक पृथिवी भोग करो। हे सञ्जय! दुष्ट दुर्य्योधनने उस समय यह वाक्य न माना, उसीका यह फल घटता है। जैसे बालकगण पक्षीका पक्ष छेदन पूर्वक परित्याग करके ताड़न करने लगते हैं और वह पक्षी पक्षहीन और गमन करने असमर्थ होय दारुण कष्ट सहता है वैसही हमभी ज्ञातिबंधुहीन, अर्थविहीन अति क्षीण और शत्रुगणके वशीभूत हो कर अति कष्ट भोग करते हैं, हाय! अब कहां जायंगे?

इति ८ अध्याय।

वै०। राजा धृतराष्ट्र इसी प्रकारसे विलाप और परिताप करके बोले, हे सञ्जय! दिव्यास्त्रधारी इन्द्रोपम महावीर कर्ण किस प्रकारसे मृत्युग्रस्त हुए? सो विस्तार करके कहो?

।य कर्णके नष्ट होने पर दुर्य्योधन, शकुनि कृतवर्मा,

अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य, शल्यराज औ अन्यान्य भूपतिगणने क्या कहा और क्या किया सो कहो? हे सञ्जय! महावीर द्रोणके निहत होने पर कौन कौन वीरने क्या क्या कार्य्य किया? मद्रराज शल्य क्यों कर्णके सारथी हुए? कर्णके युद्धमें कौन उनके रथचक्रादिके रक्षक थे? किसने उनको परित्याग न किया? और कौन पलायित हुए? हे सञ्जय! आद्योपान्त समस्त वृत्तान्त कीर्तन करो।

इति १० अध्याय।

सञ्जय बोले, हे कुरुराज! द्रोणाचार्य्यके निधन होनेके दिन द्रोणपुत्रकी प्रतिज्ञा व्यर्थ और कौरवसैन्य इधर उधर धावमान होने पर महावीर अर्जुन सैन्यगणसे परिवेष्ठित होय अपने सैन्यकी रक्षा करने लगे। उसी समय दुर्योधन अपने सैन्यको पलायन और शत्रुसैन्यको आक्रमण करते देखके पराक्रम प्रकाश पूर्वक शत्रुसैन्यको निवारण करने लगे। अन्त को संध्या समय उपस्थित देख समरसे विरत हुए। तब कौरवगण शिविरमें प्रवेश पूर्वक समवेत होकर मन्त्रणा करने लगे। उसी समय राजा दुर्योधन मधुरवाक्यसे बोले, हे महा-वीरगण! जो होता था सो होगया अब क्या कर्तव्य है? सो शीघ्र अपना अपना अभिप्राय व्यक्त कीजिये।

हे महाराज! राजा दुर्योधनका वाक्य श्रवण करतेही युद्धार्थी नरपतिगण विविध चेष्टा द्वारा समराभिलाष प्रकाश करने लगे, तब आचार्य्यपुत्र अश्वत्थामा वीरगणका भाव जान कर बोले, हे वीरगण! पण्डित लोगने स्वामिभक्ति, देश-कालादिसम्पत्ति, रणपटुता और नीतिको युद्धका साधन निर्दिष्ट किया है, परंतु इन उपायोंमेंभी दैवबलका प्रयोजन पड़ता हैं, हम लोगोंमें जो सब देवतुल्य लोकप्रवीर महारथ

गण नीतिज्ञ, रणदक्ष, अस्त्रपरायण और युद्धोत्साही थे वे निहत हुए, इस कारणसे जयाशा परित्याग करना उचित नहीं है। सुनीति प्रयोग करतेहीसे दैवभी अनुकूल होता है इस कारण आज हम लोग सर्वगुणान्वित नरश्रेष्ठ महावीर कर्णको सेनापति पदमे अभिषेक करके शत्रुगणको विनाश करेंगे। सूतपुत्र कर्ण अस्त्रविशारद, युद्धदुर्मद हैं वह अनानास समराङ्गणमे शत्रुगणको पराजय कर सकेंगे।

हे महाराज! अश्वत्थामाका यह प्रियवाक्य श्रवण करके भीष्म और द्रोणके मरने परभी आपके पुत्रके मनमे जयाशा सञ्जात हुई, और सूतपुत्रसे बोले, हे कर्ण! हम तुम्हारा बलवीर्य्य विशेष जान्ते हैं, तथापि यह हितकर वाक्य कहते हैं सो श्रवण करके जो तुम्हारी रुचि होय सो करो। तुम विज्ञतम, और तुम्हारे भिन्न हमारी गति नहीं है, महारथ भीष्म और द्रोणाचार्य्यसेभी तुम बलवान् हो इस लिये सेनापति हो। वे दोनो धनुर्धर वृद्ध और धनञ्जयके पक्षपाती थे। हम तुम्हारेही वाक्यानुसार उनको वीर समझते थे, महावीर भीष्मने पितामह सम्बन्धसे पाण्डवगणकी दश दिन रक्षा कोई, अन्तमे तुम्हारे अस्त्र परित्याग करनेहोसे धनञ्जय ने शिखण्डीको अग्रवर्ती करके महावीर भीष्मको निहत किया। अनन्तर तुम्हारे वाक्यानुसार द्रोणाचार्य्य सेनापति हुए तो उन्होनेभी शिष्य जानके पाण्डवगणकी रक्षा की, जो होय आज वहभी धृष्टद्युम्नके हाथसे निहत हुए, हे कर्ण! अब तुम्हारे तुल्य कोई योद्धा नही देखते, तुम्हारेहीसे हम लोगोंको जय लाभ होगा इसमे कुछ संदेह नही है, तुमहीने पर्व्वापर हम लोगोंका हितसाधन किया है, इससे तुम रणधुरंधर होके आपही अपनेको सेनापति कर लेओ और जैसे दिवाकर उदय होकर तेजप्रभावसे गाढ़ अन्धकारका उच्छेद

करते हैं वैसही तुम जल्दी सेना लेकर शत्रुगणको निपातित करो, अर्जुन कभी तुम्हारे संमुख युद्ध न कर सकेंगे।

दुर्योधनका वचन सुनके कर्ण बोले, हे कुरुराज! हमने तो पहिलेही कहा है कि पाण्डवगणको उनके पुत्रगण और जनार्दनके सहित पराजित करेंगे, जो होय अब हम तुम्हारे सेनापति हुए, अब तुम शान्तचित्त होकर पाण्डवगणको पराजित जानो। हे महाराज! कर्णका वाक्य श्रवण करके परम परितुष्ट होय आपके पुत्र दुर्योधनने यथाविधि महावीर कर्णको सेनापति पदमें अभिषिक्त करके अपनेको कृतार्थ ज्ञान किया।

इति ११ अध्याय।

सञ्जय बोले, महाराज! आपके पुत्रगणने कर्णका अभिप्राय जान वाद्यवादन पूर्वक सैन्यगणको सुसज्जित होनेकी आज्ञा दी। अनन्तर महावीर कर्ण श्वेतपताका परिशोभित नागकक्ष केतुसम्पन्न बलाकावर्ण अश्वसंयुक्त विमल आदित्य सदृश रथ पर आरूढ होय कनकमण्डित कोदण्डविधूर्णित करने लगे। उसी रथमें हेमपृष्ठ धनु, तूणीर, अङ्गद, शतघ्नी, किङ्किनी, शक्ति, शूल और तोमर आदि अस्त्र परिपूर्ण था। हे महाराज! उस समय कौरवगण महाधनुर्धर कर्णको ध्वान्तनाशक उदयोन्मुख भानुके समान रथ पर अवस्थित देखके भीष्म, द्रोण और अन्यान्य वीरगणके विनाशका दुःख विस्मृत होगए। अनन्तर कर्ण शङ्खशब्दसे वीरगणको त्वरान्वित करायके विपुल कौरवसैन्यके द्वारा मकरव्यूह निर्माण करके प्रत्युद्गमन करने लगे। उस मकरव्यूहके मुख पर कर्ण, दोनो नेत्र पर शकुनि और उलूक, मस्तक पर अश्वत्थामा, मध्यमें सैन्यपरिवेष्टित राजा दुर्योधन, ग्रीवा पर उनके भ्रातृ-

गण, वाम पद पर नारायणी सेनापरिवृत युद्धदुर्मद कृतवर्मा दक्षिण पादपर सैन्यपरिवृत कृपाचार्य्य, वाम पादके पश्चात् भाग पर ससैन्य मद्रराज शल्य, दक्षिण पदके पश्चात् भाग पर सुषेण, और पुच्छदेश पर राजा चित्र और चित्रसेन सहोदर भ्रातृद्वय अवस्थान करने लगे।

हे महाराज! इधर धर्मराज युधिष्ठिरने धनञ्जयसे कहा, हे भ्रात:! वह देखो महावीर कर्णने कौरवसैन्यगणको कैसा श्रेणीबद्ध किया है। हे अर्जुन! शत्रुसैन्यमें जो प्रधान वीर थे सो तो निहत हुए अब क्षुद्र लोगही रह गये हैं तो निश्चयही तुम्हारा जय होगा, सो अब तुम अपनी इच्छानुसार व्यूह निर्माण करो। हे महाराज! युधिष्ठिरका वाक्य श्रवण करके अर्जुनने अर्द्धचन्द्राकृति व्यूह निर्माण किया। उसके वाम भागमें भीमसेन, दक्षिण धृष्टद्युम्न, मध्यमें धर्मराज और धनञ्जय, युधिष्ठिरके पृष्ठदेशमें नकुल और सहदेव अवस्थान करने लगे। अर्जुनपालित चक्ररक्षक पाञ्चालदेशीय युधामन्यु और उत्तमौजा हुए, अवशिष्ट भूपालगण अपने अपने उत्साह और यत्नानुसार उसी व्यूहमें अवस्थान करने लगे। युधिष्ठिरनेभी अपने सैन्यगणको व्यूहित देख कर्ण समवेत दुर्य्योधन प्रभृति वीरगणको निहत ज्ञान करने लगे। अनन्तर उभयपक्षीय सैन्यमें वाद्यवादन होने लगा और उभयपक्षीय सैन्यगण परस्पर विनाशार्थ युद्ध करनेको कृतसङ्कल्प हुए। उसी समय कर्ण और अर्जुन परस्पर निरीक्षण करते हुए सैन्यमें विचरण करने लगे। इसी प्रकार सैन्यगण परस्पर मिलित होनेसे युद्धार्थी वीरगण व्यूहसे निर्गत होने लगे और परस्पर घोर संग्राम आरम्भ हुआ।

इति १२ अध्याय।

संजय बोले, महाराज! अनन्तर उभय पक्षीय सैन्यगण देवासुरसंग्रामसदृश परस्पर प्रहार करने लगे। उग्रविक्रम रथी, अश्वारोही, गजारोही और पदातिगण परस्पर प्राण-नाशार्थ आघात करने लगे। प्रधान प्रधान योधगणने अर्द्ध-चन्द्र, भल्ल, क्षुरप्र, असि, पट्टिश और परशु द्वारा पूर्णचन्द्र और सूर्य्यसदृश कान्ति और पद्मतुल्य गन्धयुक्त नरमस्तक छेदन पूर्वक पृथिवी परिव्याप्त कर दिया था। महाबाहु वीरगणके रक्ताङ्गुलि युक्त आयुध और बाहु, वीरगणके शरनिकरसे छिन्न और निपतित होके गरुडविध्वस्त भुजङ्गके समान शोभित होने लगे। पुण्यक्षय होनेसे स्वर्गवासीगण जैसे पतित होते हैं वैसही वीरगण निहत होके हस्ती रथ और अश्वसे धरातलमें निपतित होने लगे। उस भयङ्कर युद्धमें रथी रथीको, गजारोही गजारोहीको, अश्वारोही अश्वारोही को निपीड़ित करने लगे, बहुतेरे रथी पदातिका और पदाति रथीगणको शराघातसे निपतित करने लगे। इसी प्रकार परस्पर घोरतर संग्राम करने लगे। हे महाराज! महावीर वृकोदर, सैन्यपरिवृत धृष्टद्युम्न, द्रौपदीतनयगण, सात्यकी और चेकितानके सहित गजारूढ़ होय आपकी सेनाके ऊपर धावमान हुए। महावीर भीमसेन तोमर ग्रहण पूर्वक उस मत्तमातङ्ग पर मध्याह्नकालीन दिवाकरके समान तेजप्रभाव से रिपुगणको तापित करने लगे। उसी समय गजारूढ़ क्षेम-धूर्त्ति दूरसे गजारूढ़ भीमको अवलोकन करके उनके संमुख हुए। अनन्तर वही द्रुमवान् महापर्वतद्वयके समान महाकाय मातङ्गद्वयका महायुद्ध होने लगा। कुञ्जरद्वय युद्ध करने लगे तो गजारोही वीरद्वय तीक्ष्ण सूर्य्यरश्मिसदृश तोमर द्वारा पर-स्पर आहत करके सिंहनाद करने लगे, अनन्तर दोनोवीर हस्तीसे अवतीर्ण होय शरासन ग्रहण पूर्वक मण्डलाकार होय

परस्पर प्रहार करने लगे। सबही उन दोनोंके सिंहनाद और आस्फोटन और शर शब्दसे आह्लादित हुए। अनन्तर महाबली वीर द्वय वायु विकम्पित पताका युद्ध करने लगे। अन्तको परस्पर शरासन छेदन पूर्वक वर्षाकालीन वारिवर्षी जलधरद्वयकी समान शक्ति और तोमर वर्षण करते हुए गर्जन करने लगे। तब क्षेमधूर्तिने भीमसेनकी वक्षस्थलमें तोमराघात करके पुनर्वार अतिवेगसे छः तोमर द्वारा उनको विद्ध किया, तब क्रोधप्रदीप्त भीमसेन अङ्गस्थित सप्त तोमर द्वारा सप्ताश्व-युक्त दिवाकरकी समान शोभित होने लगे और यत्नपूर्वक एक भयङ्कर लौहमय तोमर उन पर निक्षेप किया। कुलूता-धिपति क्षेमधूर्त्तिने शरासन आकर्षण करके दश शरसे वह तोमर छेदन पूर्वक छः शरसे भीमको विद्ध किया, तब भीमसेन एक शरासन ग्रहण करके शरनिकर परित्याग पूर्वक उनके कुञ्जरको मर्द्दित करने लगे। हस्ती भीमशरसे निपीड़ित होय वायुसञ्चालित जलधरकी समान संग्रामस्थलमें अवस्थान करने को असमर्थ हुआ। यन्ता अशेषप्रकार यत्न करकेभी उसको स्थिर न कर सका। तब पवनपरिचालित पयोधर जैसे जलद का अनुगमन करता है वैसाही भीमसेनका मातङ्ग उस कुञ्जर का अनुगमन करने लगा। क्षेमधूर्ति यह देख अपने वारण को निवारण करके अभिमुखागत भीममातङ्गको बाण विद्ध किया। तब भीमसेनने क्षुरद्वारा क्षेमधूर्तिका शरासन छेदन करके। मातङ्गके सहित उसको अति निपीड़ित करने लगे। यह देख क्षेमधूर्ति क्रुद्ध होय भीमसेनको विद्ध करके नाराच द्वारा उनके मातङ्गका मर्मस्थल भेद करने लगे। गजराज उनके शराघातसे भूतलमें निपतित हुआ। भीमसेन गज-निपतनके पहिलेही भूतल पर अवतीर्ण हो गये थे। भीमने भी उसीसमय गदाघातसे क्षेमधूर्तिके हस्तीको शोधित कर

डाला। क्षेमधूर्त्ति उस निहत मातङ्ग परसे कूद कर आयुध उद्यत करके आगमन करने लगे। रणविशारद वृकोदरने उनपर भी गदाघात किया। खड्गधारी क्षेमधूर्त्ति उस गदा-घातहीसे गतासु और गजके निकट निपतित होय वज्रभग्न अचलके समीपस्थ वज्रहत सिंहके समान शोभमान हुए। हे महाराज! आपका सैन्य सब क्षेमधूर्त्तिको निहत देखके व्यथित हृदय होय इधर उधर पलायन करने लगे।

इति १२ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर महाधनुर्धर कर्ण शर द्वारा पाण्डव सेनाको निपीड़न करने लगे। पाण्डवगणभी कोपाविष्ट होय कर्णके संमुख कौरव सेना का संहार करने लगे। मातङ्गगण कर्णके नाराच प्रहारसे म्लान और अवसन्न हो कर भीषण शब्द करके चतुर्दिक् भ्रमण करने लगे। हे महाराज! कर्णसे पाण्डवसैन्य निपीड़ित होने पर महावीर नकुल कर्णके अभिमुख धावमान हुए। भीमसेनने अश्वत्थामाको सात्यकिने विन्द और अनुविन्दको निवारण किया। राजा चित्रसेन श्रुतकर्मा के, प्रतिविन्ध्य विचित्रके, दुर्य्योधन युधिष्ठिरके और धनञ्जय संसप्तकगणके ऊपर धावमान हुए। धृष्टद्युम्न कृपाचार्य्यसे, शिखण्डी कृतवर्मासे, श्रुतकीर्त्ति शल्यसे और सहदेव दुःशासन से मिलित होय घोर युद्ध करने लगे। विन्द और अनुविन्दने सात्यकि को और सात्यकिने उन दोनोको शर द्वारा समाच्छन्न कर दिया। वीरद्वयने शरोंसे उनके रथको आहत कर लिया। सात्यकिने दोनो वीरका शरासन छेदन पूर्वक निवा-रण किया। वे लोग अन्य शरासन लेकर सात्यकिको शर निकरसे आच्छन्न करने लगे। उन्होका स्वर्णमण्डित शर

जाल द्वारा दिक आलोकमय करके भूतलमें निपतित होने लगा, दोनो भ्राताओं के शरनिकरसे कोई क्षण समर भूमि तिमिराच्छन्न हो गई। अनन्तर दोनोंने दोनोंके शरासन छेदन किये। तब सात्यकि अन्य चाप को ज्यायुक्त करके तीक्ष्ण क्षुरप्रसे अनुविन्दका मस्तक छेदन कर दिया। कुण्डल-मण्डित अनुविन्दका मस्तक भूतल पर निपतित होते देख केकयगणके शोककी सीमा न रही। अनन्तर महारथ विन्द क्रुद्ध होय शीघ्रही शरासन पर ज्या रोपण पूर्वक सात्यकि को निवारण और षष्ठि शर द्वारा उनको विद्ध करके "तिष्ठ तिष्ठ" कहके तर्ज्जन करते हुए उनके बाहु और उरदेश पर बहु संख्यक शरनिक्षेप किया। सात्यकि विन्दके शराघातसे क्षतविक्षत कलेवर होय पुष्पित किंशुक वृक्षके समान शोभमान हुए। और हास्य करके पचीस बाणसे उनको विद्ध किया। अनन्तर दोनोंने दोनो का उत्कृष्ट कोदण्ड द्विखण्ड, अश्वगण और सारथीको निहत कर दिया। अन्तको रथ परित्याग पूर्वक शत चन्द्र भूषित असि और चर्म ग्रहण करके मण्डलाकार विचरण करते हुए असियुद्धमें प्रवृत्त होय परस्पर विनाश करने को अति यत्न करने लगे। कितने क्षण पर सात्यकिने खड्गाघातसे केकयराजका चर्म द्विधा छेदन कर दिया। विन्दनेभी उनका चर्म छेदन करके क्षणमें मण्डलाकार विचरण और क्षणमें गमन और क्षणमें प्रत्यागमन करने लगे। तब महावीर सात्यकिने शीघ्रही वक्र हस्तसे रणचारी केकयराज विन्दको द्विधा छेदन कर दिया। वर्मधारी महाधनुर्धर केकय छिन्नमस्तक हो कर वज्राहत अचलके समान धरातल पर निपतित हुए। अनन्तर सात्यकि रथारूढ़ हो कर तीक्ष्ण शर द्वारा केकय सैन्यगणको विदलित करने लगे सैन्यगण युयुधान के शराघात

से व्यथित होकर रणपरित्याग पूर्वक पलायन करने लगी।

इति १४ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर महावीर श्रुतकर्माने कोपाविष्ट होय पञ्चाशत शर द्वारा चित्रसेनको आहत किया। तब अभिसाराधिपति चित्रसेन नव बाणसे उनको और पांच बाणसे उनके सारथिको बिद्ध करके वीरत्व प्रकाश करने लगे तब श्रुतकर्माने चित्रसेनका शरासन छेदन पूर्वक तीन शत नाराचसे समाच्छन्न और शरनिकरसे निपीड़ित करके एक सुशाणित भल्ल द्वारा उनका शिरस्त्राणशोभित मस्तक छेदन कर दिया। चित्रसेनका मस्तक गगनमण्डलसे धरातलमें निपतित हुआ। सैनिकगण यह देख महावेगसे इधर उधर धावमान हुए। महाधनुर्धर श्रुतकर्मा क्रोधाविष्ट होय शर द्वारा सैन्यगणको विद्रावित करने लगे। उसी समय महावीर चित्रको राजा प्रतिविंध्यने पांच बाणसे बिद्ध करके एक बाणसे उनका ध्वज और तीन बाणसे उनके सारथिको बिद्ध किया। तब चित्रने प्रतिविंध्यके बाहु और उरुदेशमें कङ्कपत्रविराजित शाणिताग्र नव भल्लसे बिद्ध किया। तब महावीर प्रतिविंध्यने क्रोधाविष्टचित्तसे एक सुवर्णभूषित तोमर ग्रहण पूर्वक चित्रके ऊपर निक्षेप किया। तोमर चित्रका वर्म और हृदय विदीर्ण करके बिल प्रवेशोद्यत भीषण भुजङ्गके समान महावेगसे धरातल पर निपतित हुआ। महाराज चित्र प्रतिविंध्यके तोमरसे समाहत होय परिघाकार पीन बाहुयुगल प्रसारण पूर्वक रणशय्या पर शयान हुए। कौरवसैन्यगण चित्रराजको निहत देख महा-वेगसे प्रतिविंध्यके ऊपर धावमान होय शतघ्नी और विविध बाण विसर्जन पूर्वक मेघ जैसे सूर्य्यको आच्छादित करते हैं,

वैसही उनको आच्छन्न कर लिया। तब तो महाबाहु प्रति-विंध्यने असुरसैन्यनिसूदन वज्रधरकी समान शत्रुसैन्यको शरनिकर निक्षेप करके निपीड़ित और विद्रावित कर दिया। सैन्यगण प्रतिविंध्यके शरसे विद्ध हो कर वायुवेग सञ्चालित घनघटाकी समान छिन्नभिन्न हो गये। हे महा-राज! इस प्रकारसे कौरवसैन्य पलायन करने लगा तब अश्वत्थामाने भीमसेनको अभिमुख गमन किया और उन दोनो वीरसे महाघोर युद्ध होने लगा।

इति १५ अध्याय।

हे महाराज! पूर्वमें प्रजा संहारकी निमित्त जैसा ग्रह युद्ध हुआ था वैसही यह भीम और अश्वत्थामाका अस्त्रयुद्ध आरम्भ हुआ है। आकाशमण्डल शरजालसे आच्छन्न हो गया। उस समय ऐसा बोध होने लगा कि, गगनमण्डल प्रलयकालीन उल्कापातसे समाहत हो रहा है। दोनो वीरोंकी वाण घर्षणसे स्फुलिङ्गमय दीप्तशिखा समुत्थित होकी उभयपक्षीय सैन्यगणको दग्ध करने लगी।

हे महाराज! उसी समय सिद्धगण कहने लगे कि ऐसा युद्ध कहींभी नहीं देखा। देव, सिद्ध और महर्षिगण अश्व-त्थामा और भीमसेनको साधुवाद देने लगे।

अनन्तर क्रोधाविष्ट दोनो वीर नयन विस्फारण पूर्वक परस्पर दृष्टिपात करने लगे। वे लोग रोषारुणनेत्र और स्फुरिताधर होकर अधर दंशन पूर्वक वारिधारावर्षी सवि-द्युत् जलधरके समान शर और अस्त्रवर्षण करते हुए पर-स्पर आच्छन्न करने लगे। अनन्तर दोनो महावीर अति-शय क्रुद्ध होके भीषण वाणद्वय ग्रहण पूर्वक दोनोंने दोनो

पर निक्षेप किया। दोनो बाणने द्योतमान होकर दोनो महावीरोंको आहत किया, तब दोनो महावीर शराघात निपीड़ित होय रथ पर अवसन्न हो गये। उसी समय सारथी द्रोणतनयको अचेतन देख सर्वसैन्यके समक्ष रणस्थलसे अपसृत हुआ। भीम सारथीभी वृकोदरको वारंवार विह्वल होते देख कर रथ ले कर रणस्थलसे अपसृत हुआ।

इति १६ अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले; हे सञ्जय! अश्वत्थामा और संसप्तकगणसे धनञ्जयका और अन्यान्य महीपालगणसे पाण्डवगणका युद्ध किस प्रकारसे हुआ सो कहो।

सञ्जय बोले, महाराज! प्रचण्डवायु उत्थित होय जैसे समुद्रको क्षुब्ध करता है वैसही धनञ्जय संसप्तकगणके सैन्यमें प्रवेश पूर्वक विक्षोभित करके निशित भल्लद्वारा वीरगणका मनोहर नेत्र भ्रू और दशनयुक्त पूर्णचन्द्र सदृश मस्तक छेदन पूर्वक भूतलमें विकीर्ण करने लगे और सुशाणित क्षुरप्र वाण द्वारा वीरगणका अगुरुचन्दनाक्त, आयुध और तलत्राणसम्वलित, पञ्चास्य भुजग सदृश विशालबाहु निकृत्त, और भल्ल द्वारा असंख्य अश्व, अश्वारूढ़, सारथी, शरासन, शर और रत्नाभरणयुक्त हस्त छिन्न, और निशित शरनिकर द्वारा आरोही समवेत सहस्र सहस्र रथ, अश्व और गज खण्ड खण्ड हो कर धरातलमें निपतित हुए। तब वे प्रतिद्वन्द्वी वीरगण कोपाविष्टचित्तसे धनञ्जयके संमुख धावमान हुए। वृषभगण जैसे गो लाभार्थ गर्जन करके शृङ्गद्वारा प्रतिद्वन्द्वी वृषभको आघात करता है, तद्रूप वे लोग सिंहनाद करके शर द्वारा धनञ्जयको समाहत करने लगे।

विजय कालसे देवासुरका जैसा युद्ध हुआ था, अब वैसाही लोमहर्षण संग्राम उपस्थित हुआ। महावोर धनञ्जय विविध अस्त्रद्वारा शत्रुगणका अस्त्रजाल निवारण करके शर द्वारा उन लोगका प्राण संहार करने लगे। उसी समय यह देववाणी हुई कि कृष्ण और धनञ्जय सर्वभूतके अपराजेय हैं, ये दोनो सर्वभूतश्रेष्ठ नर और नारायण हैं।

हे महाराज! यह अद्भुत व्यापार देख अश्वत्थामा सुसज्जित कृष्ण और धनञ्जयके संमुखीन हुए। और हास्यमुखसे शरसम्बलित हस्त द्वारा धनञ्जयको आह्वान करके कहने लगे, हे वीर! यदि तुम हमको अपने योग्य अतिथि जानो तो विशेष प्रकारसे युद्धरूप आतिथ्य प्रदान करो। यह सुन धनञ्जय कृष्णसे बोले, हे वासुदेव! इस समय संसप्तकगणको बध करना है और अश्वत्थामाभी आह्वान करते हैं तो अब जो कर्त्तव्य होय सो कीजिये।

यह सुन वासुदेवने रथ चालना करके धनञ्जयको अश्वत्थामाके संमुख उपस्थित करके आमन्त्रण पूर्वक बोले, हे आचार्य्य पुत्र! आप इस समय स्थिर हो कर प्रहार करो। उपजीवीगणके लिये भर्तृपिण्ड परिशोध करनेका यही समय आया है। ब्राह्मणका विवाद सूक्ष्म है, परन्तु क्षत्रियोंका जय और पराजय स्थूल है, आपने मोह प्रयुक्त जो अर्जुनसे अतिथि सत्कारकी प्रार्थना किया सो अब उसके लाभके लिये स्थिर चित्तसे युद्ध करो। महावीर अश्वत्थामा वासुदेव वाक्य श्रवण करके "तथास्तु" कहके केशवको षष्टि और अर्जुनको तीन नाराचसे विद्ध करने लगे। तब अर्जुनने कोपाविष्ट होय तीन वाण द्वारा आचार्य्यपुत्रका शरासन छेदन कर दिया। अश्वत्थामाने अर्जुन शरसे छिन्नचाप हो कर तत्क्षणात् अन्य शरासन ग्रहण पूर्वक ज्यायुक्त करके एक निमेषमें

तीन शत बाणसे वासुदेव और सहस्र बाणसे अर्जुनको बिद्ध किया।

अनन्तर चरणद्वय स्तम्भित करके परमयत्नसे अर्जुन पर सहस्र सहस्र शर निक्षेप करने लगे। योग बल द्वारा उनके तूणीर, शरासन, ज्या, बाहु, वक्षस्थल, वदन, नासिका, नेत्र, कर्ण, मस्तक, लोमकूप और अन्यान्य अङ्ग और रथध्वजसे शर निकर निपतित होने लगे, उसी शरजालसे केशव और अर्जुन जड़ित होगये। तब आचार्य्यतनय अत्यन्त आह्लादित होय मेघ गम्भीर गर्जन द्वारा सिंहनाद परित्याग करने लगे। अश्वत्थामाका गर्जन श्रवण करके अर्जुन वासुदेवसे बोले, हे माधव! गुरुपुत्रका, अत्याचार अवलोकन कीजिये। हम लोग शर जालसे आच्छन्न होगये हैं, तो वह हम लोगको निहत ज्ञान करते हैं, सो हम अभी अपने शिक्षा बलसे उनका अभिलाष व्यर्थ कर देते हैं। यह कहके दिवाकर जैसे नीहार राशि विध्वस्त करते हैं, तद्रूप धनञ्जयने द्रोणपुत्र निक्षिप्त प्रत्येक शरको त्रिधा छेदन करके निपतित कर दिया। अनन्तर धनञ्जय पुनर्वार अश्व, सारथी, रथ, ध्वज, पदाति और कुञ्जरगणके सहित संसप्तकगणको उग्रशर निकरसे बिद्ध करने लगे। उस समय जो पुरुष जिस प्रकारसे समराङ्गणमे अवस्थित थे, सबही अपनेको शरजालसे आच्छन्न जानने लगे। गाण्डीवविमुक्त विविध शर निकर क्रोशस्थित और सम्मुख-स्थित समस्त हस्ती और नरगणको विनाश करने लगे। प्रलय-कालीन सूर्य्य जैसे किरण जालसे समुद्र परिशुष्क करते हैं, वैसही महावीर धनञ्जय तीक्ष्ण शरजालसे संसप्तकगणको निपीड़ित करके पुनर्वार पुरन्दर जैसे वज्र द्वारा पर्वत विदारण करें तद्रूप नाराच द्वारा शीघ्रही द्रोणपुत्रको विदीर्ण किया। तब तो द्रोणपुत्र अतिशय रोषाविष्ट होय अर्जुनके ऊपर

अस्त्र परित्याग करने लगे। तब अर्जुनने संसप्तकगणको परित्याग करके अश्वत्थामाके अभिमुख गमन किया।

इति १७ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर नभोमण्डलस्थ शुक्र और वृह-स्पतिके समान महावीर अश्वत्थामा और अर्जुनका घोर संग्राम होने लगा। लोकभीषण वीरद्वय परस्पर शर निकरसे सन्तापित करने लगे। उस समय द्रोणपुत्रने जितने शर परित्याग किये, धनञ्जय उससे द्विगुण वाण निक्षेप करके उनका शर निवारण पूर्वक उनको अश्व, सारथी और ध्वजके सहित आहत करके संसप्तक सैन्यमें प्रविष्ट हो कर शरजालसे निपीड़ित करने लगे। सुसज्जित रथ, नाग और अश्वारूढ़ वीरगण अर्जुन निक्षिप्त असंख्य शरसे बिद्ध हो कर सवाहन धरातलमें निपतित होने लगे। अनन्तर अङ्ग, वङ्ग, कलिङ्ग, और निषाद देशीय वीरगण धनञ्जयके अभिमुख धावमान हुए। महावीर धनञ्जयने वही वीरगणको छेदन करके वज्रा-हत गिरिशृङ्गके समान भूतल पर निपातित कर दिया। इन वीरोंके छिन्न भिन्न हो जाने पर महावीर धनञ्जय जैसे वायु महामेघ द्वारा दिवाकरको आच्छन्न करे, वैसही अश्वत्थामाको शर द्वारा आच्छन्न करने लगे। अश्वत्थामाने उनको निवारण करके शर द्वारा अर्जुनको आच्छादन कर दिया। तब अर्जुन महाकोपाविष्ट हो कर वाणाघातसे उनको क्षत विक्षत करके रथ रश्मिछेदन पूर्वक अश्वगणको विद्ध करने लगे। उनके अश्वगण अर्जुन शरसे निपीड़ित होय अश्वत्थामाको लेकर अतिदूर पलायित हुए। द्रोण तनय पहिलेही अर्जुनके शरसे व्यथित और हीनास्त्र हुए थे, अब

अश्वोंके दूर जानेसे कृष्ण और अर्जुनका जय निश्चय करके पुनः अर्जुनसे युद्ध करनेकी वासना त्याग किया। हे महाराज! पाण्डवगणके प्रबल शत्रु अश्वत्थामा रणस्थलसे अपसृत होगये, तब केशव और अर्जुन संसप्तकगणके ऊपर धावित हुए।

इति १८ अध्याय।

हे महाराज! उस समय महावीर दण्डधार उत्तर दिशामें पाण्डव सैन्यगणको निपीड़ित करने लगे, वह महाकोलाहल सुनके वासुदेवने अर्जुनसे कहा, हे अर्जुन! मगधराज दण्डधार शिक्षा और बलसे महाराज भगदत्तसे न्यून नहीं हैं, इससे पहिले इनको संहार करके तब संसप्तकगणको विनाश करो। यह कहके वासुदेवने अर्जुनको दण्डधारके निकट उपस्थित किया। उसी समय हस्तियुद्धनिपुण दण्डधार महामेघके समान गम्भीर गर्जन सम्पन्न सुसज्जित मातङ्ग पर अवस्थान करके शर निकर वर्षण पूर्वक रथ सब चूर्ण, असंख्य हस्ती, अश्व और मनुष्यको विनष्ट करने लगे। उनका हस्ती भी पद द्वारा अश्व सारथी समवेत रथ और मनुष्यगणको आक्रमण और मर्दन पूर्वक कालचक्रके समान प्रकाण्ड शुण्ड द्वारा अन्यान्य हस्तीगणको विनाश करने लगा, उस तेजस्वी गजवरके प्रभावसे असंख्य अश्वारोही और पदाति धरातल पर विप्रोथित हुए। अनन्तर महावीर अर्जुन रणस्थलमें उसी मातङ्गको लक्ष्य करके वहां उपस्थित हुए। तब गिरिव्रजेश्वर दण्डधारने द्वादश शरसे अर्जुन और षोड़श शरसे जनार्दन और तीन तीन शरसे अश्वगणको बिद्ध करके सिंहनाद पूर्वक हास्य करने लगे। यह देख महावीर अर्जुनने भल्लद्वारा उसका शर, शरासन और अलङ्कृत ध्वज दण्ड छेदन करके पादरक्षकगणके सहित महामात्रको विनाश किया। तब

दण्डधारने वही अनिल तुल्य तेजस्वी मदोत्कट मातङ्ग द्वारा धनञ्जयके प्रति तोमर प्रहार किया। तब अर्जुनने तीन क्षुर द्वारा उसका भुज दण्डद्वय और पूर्ण शशाङ्क तुल्य मस्तक छेदन करके असंख्य शरसे उस मातङ्गको बिद्ध किया। सुवर्ण-वर्मधारी करिवर अर्जुन शरसे आच्छन्न होय आर्तनाद परित्याग पूर्वक उद्भ्रान्त और स्खलित पदसे धावमान हो कर महामात्रके सहित वज्रविदारित शिखरोंके समान भूतलमें पतित हुआ।

अनन्तर महावीर दण्ड अपने भ्राता दण्डधारको निहत देखके एक हिमाचलसदृश मातङ्ग पर आरोहण करके धनञ्जयके निकटस्थ हो कर तीन तोमरसे जनार्दन और पांच तोमरसे अर्जुनको बिद्ध करके सिंहनाद करने लगे। महावीर अर्जुनने उसी समय क्षुरप्र द्वारा उनका भुजयुगल और अर्द्धचन्द्र वाणद्वारा उनका मस्तक छेदन कर दिया, अनन्तर उसका मत्त मातङ्गभी अर्जुन शर निपीड़ित होय आर्तनाद परित्याग पूर्वक भूतल पर निपतित हुआ। वह देख शत्रु सैन्य पलायन करने लगा। हे महाराज! महावीर अर्जुन पुनर्वार संसप्तकगणके संमुख धावमान होय उनका विनाश करने लगे।

इति १८ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर धनञ्जय संसप्तकगणको निहत करने लगे और कौरव पक्षीय सैन्यगणको वाहन और शस्त्रके सहित छेदन करने लगे। देवासुर युद्धके समान लोमहर्षण युद्ध उपस्थित हुआ। उस समय उग्रायुधतनय इन्द्रशत्रुकने तीन शरसे धनञ्जयको बिद्ध किया। धनञ्जयने क्रुद्ध हो कर शीघ्रही उनका मस्तक छेदन कर दिया।

वर्षाकालीन वायुप्रेरित मेघमण्डल जैसा हिमालयको आहत करे तद्रूप वीरगणने विविध अस्त्र द्वारा अर्जुनको आहत कर दिया तब अर्जुनने अस्त्र द्वारा उनका वेग निवारण करके विपक्षपक्षीय असंख्य वीरगणको निहत कर दिया।

अनन्तर वासुदेव बोले, हे धनञ्जय! तुम क्यों वृथा क्रीड़ा करके समयनष्ट करते हो? शीघ्र इन संसप्तकगणको निपातित करके कर्णबधकी चेष्टा करो। वासुदेवका वाक्य श्रवण करके धनञ्जय दानवहन्ता इन्द्रके समान बलप्रकाश पूर्वक अस्त्र द्वारा अवशिष्ट संसप्तकगणको निपातित करने लगे। उस समय स्थिरमनसे देखकेभी कोई नही जान सकता कि धनञ्जय कब शरग्रहण, कब सन्धान और कब निक्षेप करते हैं, केवल चक्राकार दृष्टिगोचर होता था। महात्मा वासुदेव धनञ्जयका हस्तलाघव देख कर चमत्कृत हुए। हंसगण जैसे सरोवरमें प्रविष्ट होय वैसही शरनिकर सैन्यमें प्रवेश करने लगे। इसी प्रकार महान् जनक्षय उपस्थित होनेसे समरभूमि दर्शन करके केशव बोले, हे पार्थ! एक दुर्य्योधनके अपराधसे यह भयङ्कर भरतकुलक्षय और पार्थिवगणका विनाश उपस्थित हुआ। यह देखो रणस्थलकी कैसी अवस्था हो रही है? हे अर्जुन! रणस्थलकी अवस्था देख कर निश्चय होता है कि तुमने जैसा युद्ध किया देवराज भिन्न किसीकाभी साध्य नहीं है। वासुदेव इतना कह रहे थे कि, इतनेमें महाकोलाहल शब्द श्रवण करके अश्व चालन पूर्वक देखा कि महाराज पाण्डु कौरवसैन्यको शराघातसे विकम्पित कर रहे हैं, उनके शरनिकरसे असंख्य वीर विनाश हो रहे हैं।

इति २० अध्याय।

सञ्जय बोले, महाराज! पाण्ड्यराजका अद्भुत व्यापार देख कर अश्वत्थामा उनके संमुखीन होय कटुमिश्रित मधुर वाक्यसे उनको आह्वान करने लगे। मलयध्वज पाण्ड्य अश्वत्थामाके वाक्यवाणसे ताड़ित होय शर द्वारा बिद्ध करने लगे। तब द्रोणपुत्र हास्य करके अग्निस्फुलिङ्ग सदृश उग्र मर्मभेदी शरसे उनको बिद्ध करने लगे। पाण्ड्यने नव शर द्वारा उसको खण्ड खण्ड कर दिया। और चार वाणसे द्रोणपुत्रके अश्वगणको निपीड़ित और निहत करके उनकी ज्या छेदन कर दिया। द्रोणनन्दनने अन्य ज्या रोपण करके देखा कि परिचारकगणने शीघ्रही दूसरे उत्कृष्ट अश्व संयोजित कर दिया है, तब सहस्र२ शर परित्याग पूर्वक आकाशमण्डल और दिङ्मण्डल आच्छन्न कर दिया। पाण्ड्यनेभी उनका समस्त वाण खण्ड२ करके चक्ररक्षकद्वयका विनाश कर दिया। अनन्तर महावीर अश्वत्थामा पाण्ड्यका हस्त लाघव निरीक्षण करके शरासन आकर्षण पूर्वक जलधरनिक्षिप्त जलधाराके समान शर वर्षण करने लगे। अर्धप्रहरमें आठ आठ वृषभसंयोजित अष्टशकटपूर्ण शरनिकर अश्वत्थामाने निःशेषित किया। उस समय उनको जिसने देखा सबही मोहित हुए थे। महाराज पाण्ड्यने वायव्यास्त्र द्वारा द्रोणपुत्र निर्मुक्त शरजाल निवारण करके सिंहनाद करने लगे। तब अश्वत्थामा क्रुद्ध हो कर उनका ध्वज और अश्वगणको निपातित करके एक सरसे सारथीको संहार पूर्वक उनके रथको चूर्ण कर दिया।

तब महाराज पाण्ड्यने एक मत्तमातङ्ग पर आरोहण करके एक प्रखर तोमरसे अश्वत्थामाका किरीट छेदन कर दिया। यह देख द्रोणपुत्र पदाहत भुजङ्गकी समान रोषानलसे प्रज्व-। होय पांच शरसे हस्तीका पादचतुष्टय और शुण्ड, तीन

शरसे पाण्ड्यका दोनो बाहु और मस्तक और छः शरसे उनके छः अनुचरको निपातित कर दिया। इसी प्रकारसे महाराज पाण्ड्यके निहत होनेसे दुर्य्योधनने आचार्य्यपुत्रका यथोचित उपचारसे सत्कार किया।

इति २१ अध्याय।

सञ्जय बोले, महाराज! पाण्ड्यराजके विनष्ट होने पर हृषीकेशने अर्जुनसे कहा कि राजा युधिष्ठिरको नही देखते हैं और अन्यान्य पाण्डवगणनेभी प्रस्थान किया है, वह देखो महावीर कर्ण सृञ्जयको निहत कर रहा है। धनञ्जय बोले, हे माधव! शीघ्र रथ चालन करो। यह सुनके वासुदेवके रथ चालन करतेही घोर संग्राम उपस्थित हुआ भीमसेन प्रभृति पाण्डवगण और सूतपुत्र प्रभृति कौरवगण मिलित हुए।

अनन्तर पाण्डवगणके सहित कर्णके युद्ध होने लगा। उभयपक्षीय धनुर्धर वीरपुरुषगण परस्पर विनाशवासनासे विविध अस्त्र शस्त्र ग्रहण करके निक्षेप करने लगे और परमाह्लादित हो कर वीरगणके सहित महा युद्ध करने लगे। उसी समय महावीर कर्णने बहुसंख्यक पाञ्चालगणको निहत कर दिया। तब पाण्डवपक्षीय वीरगण शरजालसे नभोमण्डल आच्छादन करके कर्णको परिवेष्टन करने लगे, यह देखके कर्ण शरवर्षण पूर्वक शत्रुसैन्यको क्षुब्ध करने लगे और शत्रुसैन्यमे अवतीर्ण होय शरासन आस्फालन पूर्वक शत्रुगणको निपातित करने लगे, उनके शराघातसे पाण्डव सृञ्जय और पाञ्चालगण महा व्यथित होने लगे। नकुल सहदेव प्रभृति वीरपुरुषगण कर्णके ऊपर धावित हुए सैन्यगण परस्पर महायुद्ध करने लगे। रथी रथीसे,

हस्ती हस्तीसे, पदाति पदातिसे और अश्वारोही अश्वारोहीगणसे युद्ध करके भूतलमें निपतित होने लगे। असंख्य मनुष्य, हस्ती रथ और समवेत अश्वगण विमर्दित हुए।

इति २२ अध्याय।

हे महाराज! दुर्य्योधन प्रेरित महामात्रगण करिसैन्य ले कर धावमान हुए। गजयुद्धविशारद प्राच्य दाक्षिणात्य प्रभृति मिलित हो कर पाञ्चालगणको निपीड़ित करने लगे। पाञ्चालराजकुमार धृष्टद्युम्न पर्वताकार नागगणको नाराचसे विद्ध करने लगे। उस समय पाण्डव और पाञ्चालपक्षीय योधगण द्रुपदतनयको मेघाच्छन्न दिवाकरके समान करिसैन्यसे समाच्छन्न देख कर अस्त्रधारण पूर्वक धावमान होय शरवर्षण करने लगे। मातङ्गगण वीरगणके प्रहारघातसे क्रुद्ध हो कर अश्व, मनुष्य और रथीगणको शुण्डसे उत्तोलन, पदसे मर्द्दन और दन्ताघातसे विदारण पूर्वक निक्षेप करने लगे। अनेक वीर हस्तीगणके दन्त लग्न हो कर भीषणवेगसे निपतित हुए।

उसी समय महावीर सात्यकिने नाराचसे वङ्गाधिपतिके मातङ्गका मर्म्मभेद करके गिराया। वङ्गराज निहत मातङ्गसे अवतीर्ण होते थे कि सात्यकिने उनकोभी नाराचसे धराशायि कर दिया। अनन्तर नकुलने तीन नाराचसे अङ्गराजतनयको और शत नाराचसे उनके हस्तीको निपीड़ित करके अर्द्धचन्द्र बाणसे उनका मस्तक छेदन कर डाला। अङ्गराजपुत्रके निहत होनेसे अङ्गदेशीय महामात्रगण क्रुद्ध हो कर पर्वताकार गजयूथके सहित नकुलके ऊपर धावमान हुए। अनन्तर पाण्डव पाञ्चाल और सोमकगण नकुलको मेघावृत

दिनकरकी समान अस्ताच्छन्न अवलोकन करके क्रुद्ध होय उनके रक्षार्थ वहां उपस्थित हुए। अनन्तर उन रथीगणसे घोर संग्राम होने लगा। रथीगणके बाणसे मातङ्गगणका कुम्भ, मर्म और दन्त विदीर्ण और भूषण विशीर्ण होने लगा। महावीर सहदेवने बाणसे आठ महागजका प्राण संहार करके आरोहीगणके सहित भूतलमें निपातित कर दिया। नकुलभी शरासनसे आकर्षण और शरवर्षणसे नागगणको निपीड़ित करने लगे और सात्यकी और सहदेव प्रभृति वीरगण शरवर्षण करने लगे, वह पर्वतप्रमाण हस्ती-गण शराघातसे निहत होय वज्राहत अचलके समान निप-तित होने लगे। इसी प्रकारसे वीरगण उन लोगको विलो-ड़ित करके पुनर्वार कर्णके संमुख धावमान हुए।

इति २२ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर दुःशासन सहदेवको रोषाविष्ट होय शत्रु संहार करते देख कर उनके निकट उपस्थित हुए। महारथगण इन दोनो महावीरोंको संग्राम करते देख कर सिंहनाद करने लगे। तब दुःशासनने तीन शरसे सहदेवका वक्षस्थल विद्ध किया। सहदेवने सप्तति नाराच द्वारा दुःशा-सनको प्रहार करके तीन शरसे उनके सारथीको विद्ध किया। दुःशासनने सहदेवका कार्मुक छेदन करके उनका बाहु और वक्ष विद्ध किया। तब सहदेव क्रुद्ध होय दुसरा शरासनको बलपूर्वक आकर्षण करके उनके प्रति अन्तकोपम भयङ्कर एक शर प्रयोग किया, वह महावेगसे उनका कवच भेद करके वल्मीकमध्यगामी पन्नगकी समान धरातलमें प्रविष्ट हुआ। दुःशासन उस शरसे विमोहित हुए, यह देख उनका सारथी भीत होय रणस्थलमें रथको अपसृत किया। हे महाराज!

महावीर सहदेव इसी प्रकारसे दुःशासनको पराजय करके शल्यसैन्यको विमथित करने लगे।

इति २४ अध्याय।

हे महाराज! इधर महावीर कर्ण नकुलको कौरव सैन्य विद्रावण करते देख क्रुद्ध होय उनका निवारण करने लगे। नकुल हास्यमुखसे कहने लगे। हे सूतनन्दन! तुमही इस अनर्थ कलहके मूल हौ, आज अनुकूल दैवहीके प्रभावसे नेत्रगोचर हुए हौ। सो आज तुम हमारा प्रभाव अवलोकन करो। कर्ण बोले, हे वीर! तुम हम पर प्रहार करो, आज हम तुम्हारा पौरुष देखेंगे। युद्धमें पहिले वीरजनोचित कार्य्यका अनुष्ठान करके वाग्जाल विस्तार करना कर्तव्य है। वीरगण वृथा वाग्व्यय न करके शक्ति अनुसार युद्ध करते हैं, अब तुम हमसे संग्राम करो। आज हम तुम्हारा दर्प चूर्ण करेंगे। कर्णने यह कहके तिसपति शरसे नकुलको विद्ध किया। नकुलने अशीति शरसे उनको विद्ध किया। इसी प्रकारसे दोनो वीर महाघोर युद्ध करने लगे, चतुर्दिक् शर निकरसे निरुद्ध होने पर कर्ण और नकुल उदितकाल सूर्य्यद्वयके समान शोभित होने लगे। पाण्डवसैन्य कर्णके शर-जालसे और कौरवसैन्यगण नकुलके शरजालसे आहत होय समीरण सञ्चालित अम्बुदके समान चतुर्दिक्से छिन्न भिन्न हो गये। तब उभयपक्षीय सैन्य उनके शरपात-पथको अतिक्रम करके उस घोर संग्रामको निरीक्षण करने लगे। इसी प्रकारसे दोनो वीर परस्पर बधाभिलाषी हो कर दिव्यास्त्रजाल विस्तार पूर्वक विद्ध करने लगे, इसी प्रकारसे वीरद्वय परस्पर शराच्छन्न होय जलदजालसमावृत चन्द्र समान सबके अदृश्य हो गये। अनन्तर महावीर

कर्ण क्रोधाविष्ट होय भीषण आकार धारण पूर्वक नकुलको शरसे आच्छन्न करने लगे, नकुल कुछभी व्यथित न हुए तब कर्ण ईषत् हास्य करके उन पर सहस्र सहस्र शर वर्षण करने लगे। अनवरत निक्षिप्त शरजालसे समराङ्गण मेघच्छायाके समान शरच्छायासे आच्छन्न हो गया। अनन्तर कर्णने नकुलका शरासन छेदन पूर्वक उनके सारथीको रथसे निपातित कर दिया और चार बाणसे उनके चारो अश्वको विनष्ट करके शरनिकर द्वारा दिव्य रथको चूर्ण, पताका, गदा, खड्ग, चर्म और अन्यान्य उपकरण और चक्र-रक्षकगणको छिन्न भिन्न कर दिया, तब महावीर नकुल रथ से अवतीर्ण होय परिघ उद्यत करके अवस्थान करते थे, इतनेमे तीक्ष्ण सायकसे उस भीषण परिघकोभी कर्णने छेदन पूर्वक नकुलको निरस्त्र करके अत्यन्त पीड़ित कर दिया। तबतो नकुल असमर्थ और व्याकुलचित्त होकर प्रस्थान करने लगे यह देख सूतपुत्रने हास्य करके उनके पश्चात् धावमान होय उनके गलदेशमे ज्यारोपित कार्मुक समर्पण किया। नकुल कर्णके शरासनसे रुद्धकण्ठ होय मण्डलमध्य-गत शशधरके समान शोभमान हुए अनन्तर कर्ण नकुलसे बोले, हे माद्रीतनय! तुमने पहिलेही वृथा वाक्यव्यय किया था, जो होय अब लज्जित मत हो। अब तुम प्रतापी कौरव-गणसे युद्ध करनेकी इच्छा मत करना अब अपने समान युद्ध अथवा गृहमे प्रतिगमन वा कृष्ण अर्जुनके निकट गमन करो। हे महाराज! महावीर कर्णने उस समय नकुलको इतनाही कहके परित्याग किया। वह उनको उस समय अनायासही विनष्ट कर सकते परन्तु कुन्तिवाक्य स्मरण करके उससे विरत भये। इसी प्रकारसे नकुल दुःखित होय कुम्भस्थित भुजङ्गके समान निश्वास परित्याग करते

लज्जावनत मुखसे गमन पूर्वक युधिष्ठिरके रथ पर आरूढ़ हुए। महावीर कर्णभी पाञ्चालगणके संमुख धावमान हुए। उसी मध्याह्न कालमे सेनापति कर्णको पाञ्चालगणके ऊपर धावमान देख पाण्डव सैन्यमे महाकोलाहल उत्थित हुआ। महावीर कर्ण चक्राकार परिभ्रमण करके पाञ्चालगणको मर्दित करने लगे। हे महाराज! उसी समय कोई कोई सारथी अवसन्न रथीगणको लेकर पलायन करने लगे, रथ औ कुञ्जर सब मानो दावानलसे दग्ध हो कर रणस्थलमे विचरण करने लगे। असंख्य करिगण विदीर्णकुम्भ, रुधिराक्त कलेवर, विरहित शुण्ड, औ निकृत्त हो कर विदलित अभ्रमण्डलके समान भूतलमे निपतित हुए। अनेक अश्वगण आरोहीविहीन हो कर इधर उधर भ्रमण करने लगे। अश्वारोहीगण कोई अङ्गहीन कोई कम्पित और कोई निहत होने लगे। रथीगणके निहत होनेसे खण्डित रथसंयुक्त अश्वगण इतस्ततः स्वेच्छाधीन भ्रमण करने लगे। असंख्य रथी निहत और अनेक अस्त्रहीन हो कर प्राणत्याग करने लगे। असंख्य मस्तक, ऊरुदेश, बाहु और अन्यान्य अवयव सब छिन्न हो कर निपतित होने लगे। हे महाराज! इस प्रकार कर्णके शरप्रभावसे पाण्डवसैन्यके दुर्दशाकी कुछ सीमा न रही। सृञ्जयगण अनलपतनोन्मुख पतङ्गके समान वारम्वार उनके सन्मुखीन होने लगे। अनन्तर हतावशिष्ट सैन्यगण कर्णको परित्याग करके पलायन करने लगा तब कर्ण उनका अनुगमन करके शर निक्षेप द्वारा मध्याह्नकालीन सूर्य्यके समान सन्तापित करने लगे।

इति २५ अध्याय।

हे महाराज! इधर आपके पुत्र युयुत्सु अरातिसैन्यको विद्रावित कर रहे थे यह देख महावीर उलूक उसपर धावमान हुए और दोनो वीर महाघोर युद्ध करने लगे, अन्तको उलूकने युयुत्सुके सारथीका मस्तक छेदन और अश्वगणको निहत करके उनको सात बाणसे विद्ध किया। तब युयुत्सु व्यथित होकर दूसरे रथको लक्ष्य करके धावमान हुए। उलूकनेभी उनको पराजित करके वहांसे प्रस्थान किया।

इधर आपके पुत्र श्रुतकर्मीने पाण्डवसैन्यको वित्रासित करते हुए एक क्षणमें शतानीकके अश्व और सारथीको छेदन कर दिया। उसी रथसे शतानीकने एक गदा प्रहार किया उससे श्रुतकर्मीका अश्व, सारथी और रथ चूर्ण हो गया। इस प्रकार दोनो वीर विरथ होकर परस्पर दृष्टिपात करके युद्धसे निवृत्त हुए। उसी समय शकुनि क्रुद्ध होय सुतसोमको शरसे विद्ध करने लगे। सुतसोमनेभी शकुनिको बहु सहस्र शरसे आच्छन्न कर दिया। अनन्तर शकुनिने तीन बाणसे उनका ध्वज सारथी और अश्वगणको छेदन कर दिया। सुतसोम विरथ होय शरासन ग्रहण पूर्वक रथसे अवतीर्ण होय शर द्वारा शकुनिका रथ आच्छन्न कर दिया। अनन्तर शकुनिने तीक्ष्ण भल्ल द्वारा सुतसोमका शरासन और तूणीर छेदन कर दिया, तब सुतसोम हस्तीदन्तनिर्मितमुष्टिदेशसम्पन्न खड्ग समुद्यत करके सिंहनाद करने लगे और शिक्षाबलसम्पन्न सुतसोम असिधारण पूर्वक भ्रान्त, उद्भ्रान्त, आह्रत, आप्लुत, सम्पात और समुदीर्ण प्रभृति चतुर्दश प्रकार मण्डल प्रदर्शन पूर्वक बारंबार समराङ्गणमें विचरण करने लगे। शकुनिभी सुतसोमके ऊपर शर वर्षण करने लगे। सुतसोमने अपने बल और शिक्षाप्रभावसे हस्तलाघव प्रदर्शन पूर्वक खड्ग द्वारा छेदन कर दिया।

तब शकुनिने तीक्ष्ण क्षुरप्र द्वारा उनका प्रभासम्पन्न असी छेदन कर दिया। वह महाखड्ग छिन्न होकर अर्द्धभाग भूतलमें निपतित और अर्ध सुतसोमकी हाथमें रहा। सुत-सोमने आपना खड्ग छिन्न देख छ: पद गमन पूर्वक शकुनिके अभिमुख वही हस्तस्थित खड्गार्ध निक्षिप्त किया। सुत-सोम निक्षिप्त अर्ध छिन्नखड्ग शकुनिका सगुण शरासन छेदन पूर्वक भूतल पर निपतित हुई। इस अवसरमें सुत-सोमने शीघ्रही श्रुतकीर्तिके रथ पर आरोहण किया। शकु-निभी अन्य कार्मुक ग्रहण करके पाण्डवसैन्यके ऊपर धावमान होकर शत्रुसैन्यका संहार करने लगे।

इति २६ अध्याय।

हे महाराज! इधर महात्मा कृपाचार्य्य और धृष्टद्युम्नसे घोर संग्राम होने लगा। कृपाचार्य्यने धृष्टद्युम्नको ऐसा विव्रासित कर दिया कि उभयपक्षीय सैन्यगण इस युद्धमें धृष्टद्युम्नका पराजय होना स्थिर करने लगे।

अनन्तर कृपाचार्य्यने क्रुद्ध होय निश्चेष्ट धृष्टद्युम्नके मर्म-देशमें एक शराघात किया, उससे वह अत्यन्त मोहित हो गये यह देख सारथी बोला, हे द्रुपदनन्दन! युद्धकालमें ऐसा विपद् तो हमने कभी नहीं देखा जिसने तुम्हारी ऐसी दशाकी है, वह ब्राह्मण अवध्य हैं, इस लिये आप आज्ञा कीजिये तो रथको प्रतिनिवृत्त करें। अनन्तर उनके वाक्यानुसार सारथीने अश्वपृष्ठ पर कशाघात करके भीमसेनके निकट गमन किया इस प्रकारसे कृपाचार्य्यने धृष्टद्युम्नको भीत कर दिया।

इस समय हार्दिक्य और शिखण्डीसे घोर युद्ध होने लगा, परस्पर वध करनेको अध्यवसायारूढ़ हो कर असंख्य

मण्डल प्रदर्शन पूर्वक सञ्चरण करने लगे, अनन्तर हृदिका-त्मज कृतवर्माने शिखण्डी पर एक जीवितान्तक भयङ्कर शर निक्षेप किया। महावीर शिखण्डी अत्यन्त पीड़ित हो कर ध्वज यष्टि अवलम्बन पूर्वक मोहसे अभिभूत हुए। सारथीने उनको अति कातर देख रणस्थलसे शीघ्रही अपसारित किया। हे महाराज! शिखण्डीको पराजित होते देख पाण्डव-सैन्य शरनिपीड़ित हो कर पलायन करने लगे।

इति २७ अध्याय।

हे महाराज! उसी समय अर्जुन वायु जैसे तूलराशिको विकीर्ण करे वैसही आपकी सैन्यको विद्रावित करने लगे। कौरव, त्रिगर्त, शिवी, शाल्व, संसप्तक और अन्यान्य नारा-यणीसेनागण और सत्यसेन, चन्द्रदेव, मित्रदेव, शत्रुञ्जय, सौश्रुति, चित्रसेन, मित्रवर्मा, सुशर्मा, वसुधर्मा, सुधर्मा प्रभृति वीरगण धनञ्जयके प्रति जलधाराके समान शरधारा वर्षण करने लगे। हे महाराज! गरुड़दर्शनसे पन्नगगण जैसे निश्चेष्ट होंय वैसही वे योधगण जड़ीभूत होवेभी उन्होंने अग्निपतनोन्मुख पतङ्गके समान उनको परित्याग नहीं किया।

अनन्तर निशित शर द्वारा अर्जुनने शत्रुञ्जय, सौश्रुति और चन्द्रवर्माको यमालय प्रेरण किया। तब महावीर सत्य-सेनने रोषाविष्ट होय कृष्णके ऊपर तोमर निक्षेप किया। वह लौहदण्ड सुवर्णमय तोमर महात्मा वासुदेवका बाहु विदीर्ण करके धरातल पर गिरा और वासुदेवके हाथसे प्रतोद और रथरश्मि स्खलित हो गया। अनन्तर धनञ्जयने सत्यसेनका कुण्डलालंकृत मस्तक भल्ल द्वारा छेदन कर दिया। तदनन्तर मित्रवर्मा और उसके सारथीको निपातित करके

शत शत बाण द्वारा असंख्य संसप्तकगणको भूतलशायी करने लगे। और क्षुरप्र द्वारा मित्रसेनका मस्तक छेदन करके सुशर्माको आहत किया। अनन्तर संसप्तकगण धनञ्जयको परिवेष्टन करके शर द्वारा निपीड़ित करने लगे। तब अर्जुनने अत्यन्त निपीड़ित होय इन्द्रास्त्रका आविर्भाव किया, उस अस्त्रसे सहस्र सहस्र शर प्रादुर्भूत हो गये, तब तो बहुतर सैन्य अस्त्रशस्त्र अलङ्कार और मस्तक छिन्न हो कर पतित होनेसे रणस्थलमें महाशब्द श्रुतिगोचर होने लगा, उस समय संग्रामस्थल महाघोर होय उठा। महाबली क्षत्रियगण और असंख्य हस्ती और अश्वगणके निपतित होनेसे रणभूमि पर्वताकीर्ण भूभागके सदृश अति दुर्गम हो गई। और धनञ्जयके रथचक्रकी गति रोध हो गई। हे महाराज! धनञ्जयके इस कार्य्यको देख प्राय सबही रणविमुख हो गये, तब धनञ्जय बहुसंख्यक संसप्तकगणको पराजित करके धूमविरहित प्रज्वलित पावकके समान शोभा धारण करने लगे।

इति २८ अध्याय।

हे महाराज! उस समय धर्मराज युधिष्ठिर कौरव सैन्य पर असंख्य शर निक्षेप करने लगे, यह देखके राजा दुर्य्योधन उनके निकट उपस्थित होय शरद्वारा संग्राम करने लगे। परस्पर दोनो वीर बाण विद्ध करने लगे, अनन्तर युधिष्ठिर चार बाणसे उनके चारो अश्व और एक एक शरसे उनके सारथीका मस्तक, ध्वज, कार्मुक और खड्ग छेदन करके बाण द्वारा उनको पीड़ित करने लगे। यह देख अश्वत्थामा, कर्ण और कृपाचार्य्य प्रभृति वीरगण दुर्य्योधनके रक्षार्थ उनके निकट उपस्थित हुए। और पाण्डुतनयगणनेभी साहाय्यार्थ

युधिष्ठिरको वेष्टन कर लिया। अनन्तर उभय पक्षसे तुमुल संग्राम आरम्भ हुआ।

हे महाराज! उस समय वहां महान् कोलाहल उपस्थित हुआ, मनुष्य मनुष्यसे, हाथी हाथीसे, रथी रथीसे, अश्वारोही अश्वारोहीसे घोर संग्राम होने लगा। वे लोग वीर जनोंके समरव्रतानुसार परस्पर संमुखीन होय विचित्र युद्ध करने लगे, किसीनेभी समर परित्याग न किया, इस प्रकारसे क्षणकाल तो युद्ध मधुर दर्शन हुआ, परन्तु शीघ्रही सब उन्मत्त हो कर मर्य्यादा रहित युद्ध करने लगे उस समय कुछ नियम और व्यवस्था नही रही। मुष्टियुद्ध, केशाकर्षन और बाहु-युद्ध होने लगा, कोई कोई अन्यसे युद्धमे प्रवृत्त लोगोंको संहार करने लगे: असंख्य कबन्ध उत्थित हुए। शस्त्र और कवच शोणित लिप्त हो कर धातुरागरञ्जित वस्त्रके समान दृष्टि-गोचर होने लगे। हाथी घोड़ोंकी कुछ व्यवस्था नही रही, आरोहीहीन अश्व औ गजोंके स्वेच्छा पूर्वक भ्रमण करते अनेक लोग विदलित हो कर भूतलशायी हुए, चतुर्दिकसे गङ्गाप्रपातके समान सेनागण भीषण कलकल ध्वनि उत्थित हुआ। सैन्यगणको आत्म और परका कुछ विवेक न रहा, जिसको संमुख देखते उसीको विनाश करते। उस समय वीरगणके शर प्रभावसे उभय पक्षीय सेनागण आकुल होगए असंख्य हस्ती, अश्व, रथ और मनुष्यगण निपातित होनेसे क्षणकालमे रणभूमि दुर्गम होगई। और समराङ्गणमे रुधिर धारा नदीके समान बहने लगी उस समय महावीर धनञ्जय त्रिगर्तगणको, कर्ण पाञ्चालगणको और भीमसेन कौरव और करिसैन्यगणको विनाश करने लगे, हे महाराज! इस प्रकारसे उस अपराह्न कालमे अति भयङ्कर लोकक्षय हुआ।

इति २८ अध्याय।

सञ्जय बोले, हे महाराज! इस प्रकारसे सैन्यगण संग्राममें मिलित और निहन्यमान होनेसे आपके पुत्र दुर्य्योधन अन्य रथ पर आरोहण करके विषपूर्ण भुजङ्गके समान क्रुद्ध होय धर्मराजको लक्ष्य करके उनके निकट उपस्थित हुए।

अनन्तर राजा दुर्य्योधन और युधिष्ठिर मिलित होकर बाण वर्षणद्वारा घोर युद्ध करने लगे। दुर्य्योधनने भल्लद्वारा युधिष्ठिरका शरासन छेदन कर दिया तब युधिष्ठिरने अति क्रुद्ध होय एक महाभीषण शरसे उनको विद्ध किया। वह दुर्य्योधनको मोहित करके भूतलमें गिरा। तब दुर्य्योधन गदा उद्यत करके महावेगसे युधिष्ठिरके ऊपर धावमान हुए। यह देख युधिष्ठिरने एक वेगशाली ज्योतिर्मय महाशक्ति परित्याग किया। दुर्य्योधन उस शक्तिके आघातसे मर्म विद्ध व्यथित और विमोहित होके रथ पर निपतित हुए। तब भीमसेन अपनी प्रतिज्ञा स्मरण करके धर्मराजसे बोले, महाराज! दुर्य्योधन आपका वध्य नहीं है, यह सुन युधिष्ठिर प्रतिनिवृत्त हुए। यह देख शीघ्रही कृतवर्मा राजा दुर्य्योधनके निकट उपस्थित हुए। उनको देख कर भीमसेन गदा ग्रहण पूर्वक धावमान हुए। हे महाराज! इस प्रकारसे उस अपराह्णके समय तुमुल संग्राम हुआ।

इति २० अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर कौरवपक्षीय वीरगण कर्णको पुरोवर्ती करके घोर युद्ध करने लगे। आपके पुत्र और सैनिकगण बहुत सैन्यके सहित सात्यकिसे युद्ध करने लगे। सुरराजसमविक्रम महावीर कर्ण दिनकर किरणके समान प्रखर शर निकर द्वारा सात्यकिको प्रहार करने लगे। सात्यकिनेभी शीघ्रही विविध शरद्वारा कर्णको आच्छन्न कर

दिया। हे महाराज! आपके सुहृद अतिरथगणने सात्यकि निक्षिप्त शरजालसे अति पीड़ित होय हस्ती, अश्व, रथ और पदातिगणके सहित शीघ्रही वसुसेनके निकट गमन किया। तब कौरव सैन्य समर परित्याग पूर्वक धावमान हुआ, और द्रुपद तनय प्रभृति उनका अनुसरण करने लगे उस समय बहुसंख्य मनुष्य, अश्व और हस्ती विनष्ट होगए।

इतनेमे अर्जुन और वासुदेव शत्रु संहार करनेको कृत-निश्चय होय सायंकालोचित कार्य्य समाधानानन्तर भगवान् भवानीपतिका यथाविधि अर्चना करके कौरव सैन्यके प्रति धावमान हुए। उनको आवते देखके कौरव सैन्यगण विमोहित होगये। अनन्तर अर्जुन शरासन विस्फारण पूर्वक वायु जैसे मेघमण्डलको छिन्न भिन्न करता है, तद्रूप शत्रु सैन्यको शर निकरसे निपीड़ित करने लगे। हे महाराज! राजा दुर्य्योधन उस समय एकाकी दुर्निवार अर्जुनको शरद्वारा आहत करने लगे। अर्जुन उनको आवते देखके सातसायकसे उनका कार्मुक, अश्व, ध्वज और सारथीको छेदन करके एक शरसे उनका छत्रदण्ड द्विखण्ड कर दिया और एक प्राण-नाशक शर निक्षेप करतेही अश्वत्थामाने उसको सात खण्ड कर दिया। तब अर्जुन शर वर्षण पूर्वक द्रोणपुत्रका धनु और अश्वगणको छेदन पूर्वक कृपाचार्य्यका कार्मुक खण्ड खण्ड कर डाला, अनन्तर कृतवर्माका शरासन, ध्वज और अश्वगण और दुःशासनका शरासन छेदन करके सूतपुत्रके अभिमुख धावमान हुए तब महावीर कर्ण सात्यकिको परित्याग करके शीघ्रही तीन शरसे अर्जुनको और वीस शरसे वासुदेवको विद्ध करके वारम्बार धनञ्जयको विद्ध करने लगे। अनन्तर सात्यकि वहां उपस्थित होय कर्णको शरद्वारा विद्ध करने लगे, अनन्तर युधामन्यु, शिखण्डी, द्रौपदीके पञ्च पुत्र,

उत्तमौजा, नकुल, सहदेव, धृष्टद्युम्न, चेकितान, धर्मराज और प्रभद्रक, चेदि, कारुष, मत्स्य और कैकेयगण असंख्य रथ अश्व हस्ती और पदातिगणके सहित कर्ण बधके लिये अध्यवसायारूढ़ होकर उनको परिवेष्टन और कटूक्ति भाषण पूर्वक विविध अस्त्र निक्षेप करने लगे। महारथ कर्ण शरद्वारा समस्त शस्त्र निवारित करके वायु जैसे महीरुहको भग्न करके अपवाहित करे वैसेही उन सबको वहांसे अपसारित कर दिया और क्रोधाविष्ट होय रथी, महामात्र समवेत गज, अश्व और पदातिगणको विनाश करने लगे। इस प्रकारसे पाण्डवसैन्यगण कर्णके अस्त्र प्रभावसे विशस्त, क्षतविक्षत और वध्यमान हो कर प्रायः सबही समरपरांमुख हुए। तब महावीर अर्जुनने अस्त्रजाल वर्षण पूर्वक कर्णनिक्षिप्त अस्त्र सब प्रतिहत करके शर द्वारा भूमण्डल और नभोमण्डल आच्छन्न कर दिया। अर्जुननिक्षिप्त शरजाल वज्र तुल्य निपतित होने लगे। कौरवसैन्यगण अर्जुनके अस्त्रसे निहन्यमान होय आर्तनाद करने लगे और असंख्य हस्ती अश्व और मनुष्य संग्राममें कलेवर त्याग करने लगे।

हे महाराज! अनन्तर भगवान् भानुने अस्ताचल शिखर पर गमन किया। गाढ़ अन्धकार और धूलिपटलसे कोई वस्तु निरीक्षित न हुई। तब कौरव पक्षीय महारथगण रात्रि युद्धसे भीत हो कर सैन्यगणके सहित रणस्थलसे अपगमन करने लगे। पाण्डवगणभी जयश्री लाभ करके विविध वाद्य वादन और सिंहनाद परित्याग पूर्वक शत्रुगणका उपहास कृष्ण और अर्जुनका स्तुतिवाद करते अपने शिविरमें गये।

इति २१ अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले, हे संजय ! अनन्तर पाण्डवगण और हमारे पुत्र दुर्योधनने क्या किया ? सो कहो ।

संजय बोले, महाराज ! महामानी कौरवगण इस प्रकार से वर्मायुधविवर्जित, वाहनहीन, हतसैन्य, आहत और निर्जित हो कर शिविर में अवस्थान पूर्वक भग्नदंष्ट्र विष-विहीन विषधरके समान दीनस्वरसे पुनर्वार मन्त्रणा करने लगे । कर्ण क्रुद्ध होय निश्वास परित्याग और करसे कर निष्पेषण पूर्वक दुर्योधनके प्रति कटाक्ष करके बोले, हे महा-राज ! अर्जुन दृढ़, कार्य्यदक्ष और धैर्य्यशाली है, विशेष करके समय पर वासुदेव उनको प्रतिबोधित करते हैं । धनञ्जयने आज तो शस्त्रवर्षण पूर्वक हम लोगको वंचित कर लिया परन्तु प्रातःकालही हम उनका समस्त संकल्प ध्वंस कर देंगे । यह सुन सब कौरगण अपने अपने आवासको गये । वे लोग रात्रि अतिवाहित करके प्रातःकालही युद्धार्थ निर्गत हुए और देखा कि धर्मराज यत्न पूर्वक दुर्जय व्यूह निर्माण कर रहे हैं । तब दुर्य्योधन सूतपुत्रको स्मरण करने लगे । उस समय समस्त सैन्य कर्णके ऊपर अनुरक्त होय प्राणसंकटमे एक उसीको सहाय ज्ञान करने लगे ।

अनन्तर प्रातःकाल होतेही महाबाहु कर्ण दुर्य्योधनके निकट जाय बोले, हे महाराज ! आज हम अर्जुनसे संग्राम करेंगे । आज हुआ तो हम उनको बध करेंगे अथवा वह हमको विनाश करेंगे । हे कुरुराज ! इस समय हम अपने बुद्धि और विवेकके अनुसार जो कहते हैं सो श्रवण करो । आज हम अर्जुनको विनाश न करके रणस्थलसे कदाच प्रति-निवृत्त न होंगे । आज धनञ्जय अवश्यही हमसे युद्ध करेंगे उस समय आप हमारा और उनका दिव्यास्त्र देखोगे । सव्य-साची अर्जुन प्रतियोद्धाका कार्य्य विनाश, ॥

पतित्व, कौशल, अस्त्रपातबल, शौर्य्य, विज्ञान, निमित्तज्ञान और विक्रमकी विषयमें कभी हमारे तुल्य नहीं हैं, हे महाराज! हमारा यह शरासनभी सामान्य नहीं है। पूर्वमें विजय नामक शरासन जो इन्द्रके लिये विश्वकर्म्माने बनाया था और इन्द्रने परशुरामको दिया था वही दिव्यचाप प्रसन्न होकर भगवान् परशुरामने हमको प्रदान किया है, इसीसे देवराजने असुरगणको विवासित किया था, इसीसे भार्गवने एकविंशति वार पृथिवी पराजय किया था। हमारा शरासन अर्जुनकी गाण्डीवसे श्रेष्ठ है, हे दुर्य्योधन! आज हम इसी शरासनसे अर्जुनको निपातित करके तुमको आनन्दित करेंगे। आज यह गिरिकानन-सुशोभिता ससागरा मेदिनी तुम्हारे पुत्रपौत्रादिककी भोगार्थ कल्पित होगी।

हे महाराज! जिन विषयोंमें हम अर्जुनसे न्यून हैं सोभी हमको स्वीकार करना उचित है। अर्जुनकी शरासन ज्या दिव्य, तूणीरद्वय अक्षय, सारथी वासुदेव, काञ्चनभूषण दिव्य रथ अग्निदत्त, और अच्छेद्य, अश्वगण मनतुल्य वेगशाली और ध्वज विस्मयकर और द्युतिमान् वानर द्वारा लाञ्छित है, हमको ऐसा एकभी नही है, केवल हमारा विजय कार्म्मुक धनञ्जयकी गाण्डीवसे श्रेष्ठ है। हे कुरुराज! इन विषयोंमें अर्जुनसे हम हीन हो करभी उनसे युद्ध करेंगे। परन्तु दुःसहवीर्य्य मद्रराजको मेरा सारथी होना पड़ेगा। वह कृष्णकी सदृश हैं, वह यदि सारथी होना स्वीकार करें तो निश्चयही तुम्हारा जय होगा इससे शल्य हमारे सारथी हो और उत्कृष्ट अश्वसंयोजित रथ सब औ वाणोंके शकट हमारे पश्चात् पश्चात् प्रस्तुत रहें तो धनञ्जयसे हम अधिक हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं है। सो अब शीघ्रही हमारा अभिलाष पूर्ण करो यह सब काम होनेसे हम निश्चयही

पाण्डवगणको पराजय करेंगे उस समय देव और असुरगणभी इससे परित्राण नहीं पा सकेंगे सामान्य मनुष्य पाण्डवगणकी कथा ही क्या है ?

हे महाराज ! कर्णका वाक्य श्रवण करके प्रसन्न होय राजा दुर्य्योधन बोले, हे राधेय ! तुमने जो कहा हम ठीक वैसही करेंगे ।

इति ३२ अध्याय ।

हे महाराज ! अनन्तर दुर्य्योधन मद्रराजके निकट जाय प्रणयपूर्वक विनयवाक्यसे बोले, हे मद्रराज ! आप सत्यव्रत, शत्रुतापन और अरातिसैन्यको भयङ्कर हैं। महावीर कर्ण ने प्रधान प्रधान भूपालगणके बीच आपको वरण किया है, सो आपको श्रुतिगोचर हुआ है। अब हम विनीत हो कर शत्रुनाशार्थ आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप हमारे प्रणय के आग्रहसे अर्जुन विनाश और हमारे हितसाधनके लिये कर्णका सारथ्य कार्य्य स्वीकार कीजिये, आप इसको स्वीकार करें तो कर्ण अनायास शत्रुगणको जयकर सकते हैं, हे महात्मन् ! आप वासुदेवके समान हैं इससे दूसरा कोईभी इस कार्य्यके उपयुक्त नहीं है, आज महावीर कर्णने अर्जुन से युद्ध करनेकी वासना किया है इसीसे हमारी जयाशा बलवती हुई है, परन्तु उनका अश्वरश्मि ग्रहण करे आप भिन्न पृथिवी पर दूसरा नहीं है उधर जैसा वासुदेवने अश्व-रश्मि ग्रहण किया है वैसही आप करके हमारा उद्धार कीजिये, हम निश्चय कहते हैं कि आप सारथी होंय तो पाण्डव क्या हैं ? देवगणभी कर्णको पराजित नहीं कर सकते हैं।

हे महाराज ! कुल, ऐश्वर्य, शास्त्रज्ञान और बल मदसे मत्त मद्रराज शल्य दुर्योधनका वाक्य श्रवण करके क्रोधान्ध होय

ललाट पर लिखिखा भ्रुकुटी विस्तार पूर्वक वारम्बार करयुगल विकम्पित और रोषारुणनेत्रद्वय परिवर्त्तित करके कहने लगे, हे कुरुराज! तुम निःशङ्कचित्तसे हमको सारथ्य कार्य स्वीकार करनेको कहते हो इससे स्पष्टही जाना जाता है कि तुम हमको हीनवीर्य ज्ञान करके अवमानना करते हो। तुम कर्णको हमसे अधिक बलशाली जानके उनकी प्रशंसा करते हो परन्तु हम तो उनको समान भी गणना नहीं करते हैं। अब तुम कर्णसे अधिक कार्य हमारे लिये निर्देश कर दो हम अनायास पराजय करके अपने स्थानको गमन करें अथवा हम एकाकीही युद्ध करके शत्रुको संहार कर देते हैं, तुम हमारा बाहुबल अवलोकन करो। हे महाराज! तुम निश्चय जानो कि माहश मनुष्य कभी अपमानित होकर संग्राम नहीं करेगा और युद्धमे हमारी अवमानना करनाभी तुमको उचित नहीं है। देखो! हम अपने तेजप्रभावसे समग्र महीमण्डल विदीर्ण, महीधर विच्छिन्न और समुद्र शुष्क करने कोभी असमर्थ नहीं है, हे महाराज! हम ऐसे बलवान् और शत्रुनिग्रह करनेको दक्ष हैं तथापि तुम हमको नीच-कुलोत्पन्न कर्णका सारथ्य कार्य करनेको क्यों नियोग करते हो? श्रेष्ठपुरुष नीचका दासत्व स्वीकार करके कदापि उत्सा-न्वित नहीं होते। प्रीतिपूर्वक समागत और वशीभूत महा-पुरुषको नीचके अधीन कर रखना गुरुतर पापकार्य है इस कारण सूतपुत्रका सारथ्यकार्य करना अकर्तव्य है, हे महाराज! आज हम उनका अपमान सहन करके कभी युद्ध नहीं करेंगे इस लिये अब हम अपने स्थानको प्रस्थान करते हैं, यह कहके क्रोधसे भरे महावीर शल्य उत्थित होय गमन करने लगे।

तब महाराज दुर्य्योधन शल्यकी प्रति प्रणय और बहुमान पूर्वक उनका हस्त ग्रहण करके शान्तभावसे सर्वार्थ साधन

मधुर वाक्य कहने लगे, हे मद्रराज! आपने जो कहा उसकी कुछभी संशय नही है, परन्तु हमने जिस अभिप्रायसे आपको सारथी होने कहा सो श्रवण कीजिये कर्ण आपसे अधिक बलशाली नहीं है, और हमभी आपको कभी हीन नहीं जानते हैं। हे मातुल! आप जो कहते हैं सो कभी मिथ्या नहीं हो सकता इसीसे आपका नाम ऋतायनीभी ख्यात है। शत्रुगणके लिये युद्धमे आप शल्य स्वरूप हैं, इसीसे आप का नाम शल्य पड़ा है। इससे आपने पूर्वमे जो कहा है हमारे हितार्थी, उसका अनुष्ठान कीजिये। हम वा कर्ण और कोईभी आपसे अधिक बलशाली नहीं है, हे महात्मन्! हम कर्णको धनञ्जयसे और आपको वासुदेवसे अधिक गुण-शाली जानते हैं, अस्त्र युद्धमे सूतपुत्र धनञ्जयसे उत्कृष्ट और आपभी वासुदेवसे द्विगुण अस्त्रविद्याभिज्ञ और अधिक बल-वीर्य्यसम्पन्न हैं इसी कारणसे हम आपको सारथ्य कार्य्यसे वरण करनेका अभिलाष करते हैं।

हे महाराज! महाराज शल्य दुर्य्योधनका वाक्य श्रवण करके बोले, कुरुराज! तुमने हमको वासुदेवसेभी उत्कृष्ट कहा उसीसे हम परम प्रीत हुए अब तुम्हारे वाक्यानुसार कर्णका सारथ्य कार्य्य स्वीकार करेंगे, परन्तु एक यह नियम निर्द्दिष्ट करना पड़ेगा कि हम कर्णके संमुख अपने इच्छानु-सार वाक्य प्रयोग करेंगे। हे महाराज! यह सुन दुर्य्योधन और कर्णने तत्क्षणात् उनका वाक्य स्वीकार कर लिया।

इति ३२ अध्याय।

अनन्तर दुर्य्योधनने शल्यसे कहा, हे मद्रराज! पूर्वकालमे देवासुरके युद्धमे जो घटना हुई थी सो महर्षि मार्कण्डेयने हमारे पितासे कहा था, अब हम वही आपको कहते हैं,

श्रवण कीजिये। पूर्व्वमे देव दानवगणका घोर संग्राम उप-स्थित हुआ था, उस समय दैत्यगण तारकासुरके अधीन थे, अनन्तर दैत्यगणके पराजित होनेसे तारकासुरके तीन पुत्र तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली कठोर तपोनुष्ठान करने लगे, अनन्तर उनके तपस्यासे प्रसन्न होय सर्व्वलोक पितामह ब्रह्मा वर देनेको वहां उपस्थित हुए। अनन्तर तारकपुत्र गणने सर्व्वभूतका अवध्य होनेका वर मांगा। पितामह कोई भी सबभूतका अवध्य नहीं है, सो दूसरा वर मांगो, तब तो वह तीनो असुर एकता करके बोले, हे देव! हम लोग यही वर मागते हैं, कि तीनो भ्राता तीन पुरमे अवस्थान पूर्व्वक जन समाजमे पूजित होय इस भूमण्डल पर विचरण करेंगे, और सहस्र वत्सर व्यतीत होने पर पुनः मिलेगें, और उस समय वह तीनो पुरभी एकाकार होगा, उस समय जो पुरुष एक बाणसे एकत्र समवेत पुरत्रयको संहार कर सके हम लोगभी उसोसे निहत होंय। यह प्रार्थना उन लोगको सुनके ब्रह्मा तथास्तु कहके स्वर्गको चले गये। अनन्तर तारकपुत्रगणने पुर निर्माणके लिये मयदानवको नियुक्त किया। मयने अपने तपके प्रभावसे स्वर्गमे काञ्चनमय, अन्तरीक्षमे रजतमय और मर्त्यलोकमे लौहमय पुर निर्माण कर दिया। वे पुर शत शत योजन आयत्त और विस्तीर्ण थे। वे तीन असुर तीन पुरके अधीश्वर हुए, तारकाक्षका सुवर्णमय, कमलाक्षका रजतमय और विद्युन्मालीको लौहमय पुर हुआ। अनन्तर वह तीनो अस्त्रबलसे त्रिलोक आक्रमण करके अवस्थान करने लगे। तब तो उन्होने प्रजापतिकोभी तृणतुल्य ज्ञान न किया। पूर्व्वमे जो सब दानव परास्त और दुर्बल हो गये थे, अब वह सब विपुल ऐश्वर्य्य पाय एकत्र समवेत और [illegible]र दुर्ग आश्रय करके निर्भय अवस्थान करने लगे।

त्रिपुरनिवासी दानवमें जिसने जो चाहा मायाबलसे मयदानव वही प्रदान करने लगे। अनन्तर तारकाक्ष पुत्र हरि दानवने कठोर तपोनुष्ठान करके ब्रह्माको प्रसन्न करके वर प्रार्थना किया कि हम अपने पुरमें एक वापी निर्माण करेंगे अस्त्र-निहत वीरगणको उस जलमें निक्षिप्त करनेसे आपके प्रसादसे वे पुनर्जीवित और अधिक बलशाली होंगे। दानवनन्दन वाक्य श्रवण करके पितामह तथास्तु कहके चले गये। तब तो वह प्रसन्न होय अपने पुरमें उसने एक मृतसञ्जीवनी वापी बनवाई। इसी प्रकारसे दैत्यगण निहत दानवगणको वर प्रभावसे पुनः प्राप्त हो कर त्रिलोकका क्षोभोत्पादन करने लगे। और दुष्कर तपोबलसे वे लोग अक्षय होगये। हे महाराज! निर्लज्ज दानवगण ब्रह्माके वरप्रभावसे दर्पित और लोभ मोहसे अभिभूत होय देवगणको विद्रावण पूर्वक रमणीय देवारण्य, तपस्वीगणका पवित्र आश्रम और सुरम्य जनपदमें विचरण करके सबको मर्यादा नष्ट करने लगे। तब तो देवगणके सहित देवराज इन्द्र पुरत्रयके प्रति वज्र निक्षेप करने लगे, परन्तु विधाताके वरप्रभावसे अभेद्य पुर भेद न कर सके, तब तो ब्रह्माके निकट जाय समस्त निवेदन किया, तब कमल-योनि ब्रह्मा बोले, देवगण! असुरगणका पुरत्रय एकही बाणसे भेद करना पड़ेगा इस कारण महादेव भिन्न इस कार्य्यको दूसरा नहीं कर सकता है। अनन्तर देवगणके सहित पिता-मह और देवराज इन्द्र महादेवके शरणापन्न होय तपो नियम अवलम्बन पूर्वक ब्रह्मा नाम उच्चारण करके स्तोत्र वाक्य द्वारा उनका स्तव करने लगे। तब भगवान् महादेव प्रसन्न हो कर बोले, हे देवगण! तुम्हारा भय दूर होय कहो, हम तुम लोगके लिये क्या कार्य्य करें?

इति ३४ अध्याय।

अनन्तर लोकपितामह ब्रह्मा उनको अभिवादन करके बोले, हे देवेश! हम आपके अनुग्रहसे प्राजापत्य पदमें अधिष्ठित होके दानवको महत् वर प्रदान किया। अब आप भिन्न उन मर्य्यादानाशक दानवगणका संहार करनेवाला कोई नहीं है। आपहीके अनुग्रहसे समस्त जगत् सुखी होगा, हे लोकेश! आप सबके शरण्य हैं इसीसे हम लोग आपके शरणापन्न हुए हैं। अनन्तर रुद्रदेव बोले, हे देवगण शत्रुविनाश करना अवश्य कर्तव्य हैं, परन्तु दानवगण अतिबल-दर्पित है, इस लिये हम एकाकी संग्राम करनेको उत्साही नही होते सो तुम लोग एकत्र होय हमारा अर्द्धबल ग्रहण करके शत्रु संहार करो। देवगण बोले, हे महेश्वर! आपका तेज ग्रहण करनेकी हम लोगको शक्ति नही है, इससे आपही हम लोगोंका अर्द्धबल ग्रहण करके शत्रु नाश कीजिये। अनन्तर महादेवने देवगणका बलार्द्ध ग्रहण किया तो सबसे अधिक बलशाली होगये। तभीसे उनका नाम महादेव हुआ। अनन्तर महादेव बोले, तुम लोग हमारा धनुर्वाण और रथ शीघ्र प्रस्तुत करो, तब देवगणने पर्वत, वन, द्वीप और भूतगण परिवृत वसुन्धराका रथ निर्माण किया। मन्दर पर्वत और समुद्रको उस रथका अक्ष, महानदी भागीरथी जंघा, नक्षत्रगण ईषा, सत्ययुग और स्वर्ग युगकाष्ठ, शेषनाग कूबर, हिमालय, विन्ध्याचल, सूर्य्य और चन्द्र चक्र, सप्तर्षि मण्डल चक्ररक्षक, गङ्गा, सरस्वती, सिन्धु और आकाश धुर्भाग, जल और नदी सब बन्धन सामग्री, धर्म, अर्थ और काम त्रिवेणु, रात्रि और दिवा पूर्व और अपर पक्ष, नागगण अश्वगणके केशरबन्धन, समुदय दिक् और धर्म, सत्य, तप और रथ अश्वरश्मि, नभोमण्डल वाह्यावरण, इन्द्र, यम, और कुवेर अश्व, विद्युत पताका, वषट्कार प्रतोप और गायत्री

शौर्य्यबंधन हुई। विष्णु, सोम और हुताशन महेश्वरके बाण कल्पित हुए। अग्नि उस बाणके काण्ड, सोम फलक और विष्णु तीक्ष्णधार स्वरूप हुए। सम्वत्सर शरासन और सावित्री मौर्वीरूप हुई। कालचक्रसे अभेद्य दिव्य वर्म बहिष्कृत हुआ। मैनाक और मेरुपर्वत ध्वजयष्टि और सौदामिनीसम्बलित मेघमाला पताका हो गया। इसी प्रकारसे वह अपूर्व रथ और शरासनादि निर्मित होनेसे महादेवने उसमें अपना प्रधान शस्त्र स्थापन पूर्वक आकाशको ध्वजयष्टि करके उस पर वृषभको सन्निवेशित कर दिया। ब्रह्मदण्ड, कालदण्ड, रुद्रदण्ड और ज्वर रथके पार्श्वरक्षक हुए। अथर्व और अङ्गिरस चक्ररक्षक, ऋग्वेद, सामवेद, और पुराण सब पुरःसर, इतिहास और यजुर्वेद पृष्ठरक्षक। स्तोत्रादि, दिव्यवाक्य, विद्या और वषट्कार पार्श्वचर हुए। ओंकार रथके संमुख शोभित होने लगा। तब महादेवने षड्ऋतु-सम्पन्न सम्वत्सरको विचित्र शरासन और अपने छायाको मौर्वी बनाया। रुद्र साक्षात्कालस्वरूप सम्वत्सर उनका शरासन इसीसे उनकी छायारूप कालरात्रि मौर्वी हुई। महादेवने अग्निसोम और विष्णुमय शरमें दुःसह क्रोधाग्नि निहित कर दिया। अनन्तर भगवान् महादेव धरातल कम्पित और देवगणको विलासित करते हुए रथारोहण करनेको उद्यत हुए तब सबही उनकी स्तुति करने लगे। उस समय भगवान् महादेव हास्यकरके कहने लगे, हे देवगण! कौन महात्मा हमारा सारथ्यकार्य्य करेंगे। जो हमसे श्रेष्ठ हो तुम लोग शीघ्र उनको सारथी करो। हे मद्रराज! देवगण पितामह ब्रह्माको प्रसन्न करके बोले, हे पितामह! समस्त कार्य्य प्रस्तुत हो गया है, जो सर्वदेवगणश्रेष्ठ होंगे उन्हीको सारथी करना उचित है, इससे आप विना कोईभी सारथी

होने योग्य नहीं है सो आप शीघ्र रथारोहण करके अश्व-गणको संयत कीजिये। अनन्तर भगवान् पितामहके स्वीकार करनेसे देवगणने उनको सारथ्यकार्य्यमें वरण किया। तब भगवान् प्रजापति उस लोकपूजित रथ पर आरोहण करके अश्वरश्मि ग्रहण पूर्वक महादेवसे बोले, हे भगवन्! रथारोहण करो। तब भगवान् भवानीपति वसुन्धराकम्पित करते हुए रथारोहण पूर्वक बोले, हे देवगण! हमारे इसी बाणसे असुरगणको निहत ज्ञान करो। यह सुन देवगणके आनन्दकी सीमा न रही तब तो देव और ऋषीगण नानाविध उनकी स्तुति करने लगे।

अनन्तर महादेवके वाक्यानुसार ब्रह्माने दानवरक्षित त्रिपुरके अभिमुख वेगवान् रथको परिचालित किया। उस रथके धावमान होनेसे उनका ध्वजाग्रस्थित वृषभ भीषण निनाद करने लगा। उस भयावह नादसे दैत्यगण प्राण-त्याग करने लगे और अनेक युद्धार्थ अभिमुखीन हुए। तब तो महादेव क्रोधसे अधीर हुए। उस समय समस्त प्राणी भीत, त्रैलोक्य विकम्पित और घोरनिमित्त सब लक्षित होने लगा। उस समय वह महादेवका रथ सोम, अग्नि, विष्णु, ब्रह्मा, रुद्र और वही शरासनके सञ्चालनसे अवसन्न हो गया, तब नारायणने शरभागसे निर्गत होय वृषरूप धारण पूर्वक उस महारथको उद्धृत कर दिया। उस समय रथ अवसन्न और शत्रुगणके गर्जमान होनेसे महादेव अश्वपृष्ठ और वृषभके मस्तक पर अवस्थान पूर्वक सिंहनाद करते हुए दानवपुरी निरीक्षण करने लगे। अश्वका स्तन छेदन और वृषका खुर द्विखण्ड कर डाला। तभीसे गौसमूहका खुर द्विखण्ड और अश्वगण स्तनहीन हो गये हैं। हे महाराज! अनन्तर महादेवने शरासन अधिज्य और उसी शरको पाशु-

पताकासे संयोजन पूर्वक कार्मुक पर रखके त्रिपुरकी अपेक्षा करने लगे। तब वह पुरत्रय एकत्र समवेत हो गया। और त्रिलोकेश्वर महेश्वरने वही दिव्य शरासन आकर्षण पूर्वक पुरत्रयको लक्ष्य करके वह त्रैलोक्यसारभूत शर परित्याग किया। शर परित्यक्त होतेही वह पुरत्रय भूतलमें निपतित हुआ। असुरगण घोर आर्तनाद करने लगे। भगवान् शङ्करने उन लोगको दग्ध करके पश्चिम सागरमें निक्षिप्त किया। अनन्तर समस्त देवऋषिगण उनका स्तव करते करते अपने अपने स्थानको गये। हे मद्रराज! पूर्वमें पितामह ब्रह्माने जैसे रुद्रदेवका सारथ्य स्वीकार किया था, वैसही आपभी अब सूतपुत्रका सारथ्य ग्रहण कीजिये। आप कृष्ण, अर्जुन और कर्णसेभी श्रेष्ठ हैं, इसमें कुछभी संदेह नहीं है। हे महाराज! आपहीसे हम लोगको राज्यलाभ प्रत्याशा जीविताशा और कर्णकी सहायतासे जयाशा विद्यमान है इससे अब आप अश्वरश्मि ग्रहण कीजिये, हे मद्रराज! और एक धर्मपरायण ब्राह्मणने हमारे पितासे जो इतिहास कहा था सो कहते हैं श्रवण करो।

महर्षि यमदग्निके पुत्र परशुरामने अस्त्रलाभार्थ अति कठोर तपोनुष्ठान पूर्वक रुद्रदेवकी आराधना की थी। महादेव उनके भक्तिभाव और शान्तिगुण पर प्रसन्न होय आविर्भूत हो कर बोले, हे राम! हम तुमसे अति सन्तुष्ट होके तुम्हारा अभिप्राय जाना है, तुम पहिले अपनेको पवित्र करो, तब हम तुमको अस्त्र सब प्रदान करेंगे। यह शस्त्रसब अपात्र और असमर्थको भस्मसात् करनेवाला है। यह सुन राम बोले, भगवन्! हम सर्वदा आपकी शुश्रूषा किया करते हैं, आप जब हमको अस्त्रधारणके उपयुक्तपात्र समझें उसी समय वह सब अस्त्र प्रदान कीजिये, यह कहके परशुराम

तपोनुष्ठान, इन्द्रियनिग्रह और नियम द्वारा बहुवत्सर शङ्करकी आराधना करते करते अन्तको महादेवके वाक्यानुसार देवशत्रु असुरगणको पराजय करके अभिलषित वर और दिव्यास्त्र लाभ किया।

हे मद्रराज! वही परशुरामने प्रसन्न होकर कर्णको दिव्य धनुर्वेदकी दीक्षा दी है। यदि कर्णमें कुछ दोष रहता तो महर्षि राम कदाच उनको दिव्यास्त्रजाल प्रदान नहीं करते। इसीसे हम कर्णको सूतकुलोत्पन्न विवेचना नहीं करते हैं, हमारे मतसे यह क्षत्रियकुलप्रसूत देवकुमार और महत्-गोत्रसम्पन्न हैं, यह कभी सूतकुलसंभूत नहीं हैं। जैसे मृगीके गर्भसे व्याघ्रकी उत्पत्ति असम्भव है वैसही सामान्य नारीके गर्भमें कुण्डलालंकृत कवचधारी दीर्घबाहु महारथ पुत्र होना असम्भव है, हे मद्रराज! कर्णका भुजयुगल करिकर सदृश अति पीन और वक्षस्थल अति विशाल है, इससे यह कदाच साधारण मनुष्य नहीं है, ये महाबली रामके शिष्य और कोई महात्मा हैं इसमें संदेह नहीं।

इति २५ अध्याय।

दुर्य्योधन बोले, हे मद्रराज! पितामह ब्रह्माने रुद्रदेवका सारथ्य स्वीकार किया था इसमें रथीसे सारथी अधिक बलशाली होना कर्तव्य है, कर्णसे आप अधिक बलशाली हैं इसीसे हम लोग आपको नियोग करते हैं सो अब आप कर्णके रथमें अश्वगणको संयत कीजिये।

मद्रराज बोले, हे महाराज! पितामह ब्रह्माने रुद्रदेवका सारथ्यकार्य्य किया था, यह उपाख्यान हमने अनेकवार श्रवण किया है, भूतभविष्यद्‌वेत्ता महात्मा हृषीकेशने वैसही धनञ्जयका सारथ्य स्वीकार किया है, यदि सतपुत्र धनञ्जयको

निहत कर सकें तो केशव स्वयं शङ्ख, चक्र और गदाधारण पूर्वक तुम्हारे सैन्यको उन्मूलित करेंगे उस समय किसीकी साध्य नहीं जो कौरव सैन्यमें अवस्थान कर सके। यह सुन दुर्योधन बोला, हे मातुल! आप सर्वशस्त्रविशारद कर्णकी अवज्ञा मत कीजिये, उनकी ज्यानिर्घोष शब्द श्रवण करतेही पाण्डवगण पलायन करेंगे। मायावी घटोत्कच जिसके प्रभाव से आपके संमुखही निहत हुआ। अर्जुनभी भीत होकर आज तक उनसे युद्ध करनेको प्रवृत्त न हुआ। जिसने भीम, नकुल और सहदेवको पराजय और भर्त्सना करके किसी गूढ़ कारणसे उनको विनाश नहीं किया। जिसने सात्यकिको पराजित और रथहीन कर डाला। जिसने धृष्टद्युम्न प्रभृति पाञ्चाल और सृञ्जयगणको बारंबार पराजित किया और जो समरमें रोषपरवश होय वज्रधर पुरन्दरकोभी संहार कर सकते हैं, पाण्डवगण किस प्रकारसे ऐसे महावीरको पराजय कर सकते हैं? हे मद्रराज! आप समस्त विद्या और अस्त्रमें पारदर्शी हैं, इस पृथिवी पर आपके तुल्य भुजवीर्य्यसम्पन्न दूसरा नहीं है, सात्वतगण आपहीके भुजबलसे पराजित हुए हैं। आपसे क्या वासुदेव अधिक बलशाली हैं? हे महाराज! धनञ्जयके निहत होनेसे वासुदेव जैसे पाण्डवसैन्य रक्षा करेंगे वैसही कर्णके निहत होनेसे आपहीको कौरवसैन्य रक्षा करना पड़ेगा। वासुदेव जो हमारी सैन्य निवारण करेंगे और आप शत्रुसैन्य निवारण नहीं कर सकेंगे, यह बात अत्यन्त असम्भव है, हे मद्रराज! हमभी आपके निमित्त शरीर त्याग करनेको प्रस्तुत हैं।

यह सुन शल्य बोले, महाराज! तुमने जो सैन्यगणके संमुख हमको वासुदेवसेभी उत्कृष्ट कहा इसीसे हम प्रसन्न हुए। अब हम तुम्हारे अभिलाषानुसार सूतपुत्रका सारथ्य

स्वीकार किया परन्तु कर्णसे हमारा एक यह नियम निर्दिष्ट हुआ कि हम उनके संमुख स्वेच्छानुसार वाक्य प्रयोग करेंगे। हम तुम्हारे हितवासनासे कर्णको प्रिय हो वा अप्रिय जो कुछ कहेंगे सो सब कर्णको वा तुमको क्षमा करना पड़ेगा। अनन्तर राजा दुर्य्योधन और कर्णने क्षत्रियगणके समक्ष शल्यवाक्य स्वीकार करके कर्ण बोले, हे महाराज! ब्रह्मा जैसे रुद्रका और वासुदेव धनञ्जयका शुभानुध्यान किया तद्रूप आपभी हमारी शुभचिन्ता कीजिये। शल्य बोले, हे कर्ण! आत्मनिन्दा और आत्मप्रशंसा, परनिन्दा और परप्रशंसा ये चार विषय साधुगणको अनभ्यस्त है, परन्तु हम तुम्हारे विश्वास उत्पादनके निमित्त जो आत्मप्रशंसा करते हैं सो श्रवण करो। हम अवधानता, अश्वचालन, भविष्यत् दोषका अवेक्षण, दोषपरिहार ज्ञान, और दोषपरिहार सामर्थ्य यह कई एक गुणमें मातलिके समान देवराज इन्द्रकेभी सारथ्यकार्य्यमें उपयुक्त हो सक्ते हैं, इससे अब तुम निश्चिन्त हो धनञ्जयके युद्धके समय हमही तुम्हारे अश्वको सञ्चालन करेंगे।

इति २६ अध्याय।

दुर्य्योधन बोले, हे कर्ण! मद्रराज शल्य अर्जुनसारथी कृष्णसेभी उत्कृष्ट हैं, तुम योद्धा और मद्रराज सारथी हुए तो शत्रुगण अवश्यही पराजय होंगे इसमें सन्देह नहीं। अनन्तर प्रातःकाल होनेसे पुनर्वार दुर्य्योधनने शल्यसे कहा, हे मद्रराज! आप कर्णके रथको सुसज्जित कीजिये आप रक्षक हुए तो कर्ण अवश्यही धनञ्जयको पराजय करेगा। तब मद्रराज तथास्तु कहके सिंह जैसा पर्वत पर आरोहण करे, वैसही रथपर आरूढ़ हुए। अनन्तर महारथ कर्ण

रथकी पूजा और प्रदक्षिणा करके भगवान् भास्करकी उपासना समाधान पूर्वक रथारोहण करके विद्युत् सम्वलित नीरद मध्यस्थ दिनकरके समान शोभित हुए। इसीप्रकारसे दोनोवीर एक रथपर अधिरूढ़ होय मेघसम्वलित सूर्य्य और अनलके समान दृष्टिगोचर होने लगे। और वन्दिगण उन वीरद्वयका स्तव करने लगे। यह देख दुर्य्योधन बोले, हे कर्ण! महावीर भीष्म और द्रोणाचार्य्यने जो कार्य्य नही किया था सो अब तुम समस्त धनुर्धर गणके संमुख सम्पादन करो। तुम्हारा जय होय तुम युद्धमें गमन पूर्वक पाण्डवसेनागणको भस्मीभूत करो। अनन्तर मेघगर्जनके समान वाद्य वादन होने लगा और रथारूढ़ कर्ण दुर्य्योधन वाक्य स्वीकार करके शल्यसे बोला, हे महाबाहो! शीघ्र रथ चालन करो, हम शीघ्रही धनञ्जय, भीमसेन, नकुल, सहदेव और राजा युधिष्ठिरको संहार करेंगे। अभी धनञ्जय हमारा बाहुबल देखे। आज हम पाण्डव विनाश और दुर्य्योधनके जय लाभके लिये तीक्ष्ण शरजाल वर्षण करेंगे।

शल्य बोले, हे सूतपुत्र! जिनके भयसे इन्द्रभी भीत हैं ऐसे पाण्डवकी अवज्ञा कौन साहस पर तुम करते हो? वह कभी प्रतिनिवृत्त वा पराजित न होंगे। जब तुम अशनिनिर्घोष सदृश अर्जुनके गाण्डीवका शब्द सुनोगे तब ऐसी बात न बोलोगे। हे महाराज! कर्णने मद्रराजकी बात पर अनादर प्रदर्शन करके रथ चालन करनेको कहा।

इति २७ अध्याय।

हे महाराज! उस समय कर्णको युद्धार्थ गमन करते देख कौरवगणके आनन्दकी सीमा नथी, उसी समय वसुन्धरा कम्पित होकर विकृत शब्द करने लगी, और नानाप्रकार दुर्नि-

भित्त दृष्टिगोचर होने लगी। हे महाराज! कौरव सैन्यगणकी विनाशकी निमित्त नानाप्रकार भयावह उत्पात उपस्थित हुआ। उस दैवदुर्विपाकवश मुग्ध होय किसीनेभी वह दुर्निमित्त लक्ष्य न किया। कौरवगण युद्धार्थ प्रस्थित कर्णको उत्साहित, और मन मनमें पाण्डवगणको पराजित ज्ञान करने लगे।

हे महाराज! प्रतापन कर्ण अर्जुनका कार्य्यातिशय चिन्ता करके अभिमान, दर्प और क्रोधसे प्रज्वलित होय शल्यसे बोले, हे मद्रराज! हम रथारोहण और आयुध धारण करके पुरन्दरसेभी भीत नही होते। भीष्म और द्रोण प्रभृतिको निहत देखकर कुछभी मेरा मन चंचल नही है महावीर द्रोण सकलगुणसम्पन्न होकरभी जब मृत्युमुखमे निपतित हुए तो हम आज सबहीको आसन्नमृत्यु विवेचना करते हैं कर्मसब दैवायत्त हैं, इससे पृथिवीके किसी वस्तुकाभी स्थिरता नही है जब कि आचार्य्य निहत हुए तो आज हम जीवित रहेंगे यह बात कौन कह सकता हैं? देखो सकलगुणनिधान द्रोणाचार्य्य दिव्यास्त्र प्रभृति कोई उपायसेभी रक्षा न पाये। इससे स्पष्ट निश्चय होता है, कि गुण सब मनुष्योंका सुखोत्पादक नही हैं। इस समय युद्ध करना केवल हमाराही कार्य्य है। इससे अब तुम शीघ्र हमको विपक्ष सैन्यमे ले चलो। आज हम होय तो शत्रुगणको संहार नही तो आपही द्रोणप्रदर्शित पदवीको लाभ करेंगे, हे मद्रराज। हमकोभी भीष्म प्रभृति वीरगणके समान मृत्युमुखमे निपतित होना पड़ेगा इसमे सन्देह नही हैं, परन्तु हम रणस्थलसे पलायन नहीं कर सकते हैं, देखो विद्वानही हो वा मूर्खही हो आयुक्षय होतेही मृत्युसे परित्राण नहीं है और जो अदृष्ट है उसको कोई अतिक्रम नही कर सकता इससे हम अवश्यही संग्राम करेंगे और दुर्य्योधनके

निमित्त जीवन विसर्जन करना हमारा कर्तव्य है, हे मद्रराज ! भगवान रामने हमको यह दिव्यरथ, शरासन, ध्वज, गदा, सायकनिकर, असि और शुभ्रशंख प्रदान किया है, हम इसके द्वारा बल प्रकाश पूर्वक धनञ्जयको संहार करेंगे।

हे महाराज! कर्णकी आत्मश्लाघा श्रवण करके मद्रराज उसके वाक्य पर उपहास और अश्रद्धा प्रदर्शन पूर्वक उनको प्रतिषेध करके कहने लगे। हे सूतपुत्र! तुम वारबार आत्मश्लाघा मत किया करो। तुम बलवान् हो ठीक; पर आपने सामर्थ्यसे अधिक वाक्य व्यय करते हो। धनञ्जय पुरुष-प्रधान और तुम पुरुषाधम हो। उनसे किसी प्रकारसेभी तुम्हारी तुलना नही हो सकती। देखो अर्जुन भिन्न कौन पुरुष कृष्णको भगिनी सुभद्राका हरण और भगवान् महा-देवको युद्धार्थ आह्वान कर सकता है, और देवगणको परा-जय करके कौन अग्निको हवि प्रदान कर सकता है?

हे कर्ण! गन्धर्वगणने धृतराष्ट्रपुत्रगणको हरण किया था, तब तुम सबके पहिले पलायित हुए, तब अर्जुनने गंधर्वगणको पराजय करके दुर्य्योधन प्रभृतिको मोचन किया। यह बात क्या तुमको स्मरण नही है? विराट नगरमे गोग्रह युद्धमे अर्जुनने तुम्हारे समस्त वीरको पराजय किया था, उस समय क्या तुम वहां नही थे। हे कर्ण! अब तुम्हारे बध साधनके लिये, यह युद्ध उपस्थित हुआ है, यदि आज तुम शत्रु भयसे पलायन न करके समरमे गमन करोगे, तो निःसन्देहही विनष्ट होगे।

मद्रराज शल्यका अर्जुनको स्तुति सहित अति कठोर वाक्य श्रवण करके अति क्रुद्ध होय कर्ण बोले, हे शल्य! तुम क्यों अर्जुनको श्लाघा करते हो, आज अर्जुनसे हमारा युद्ध होगा यदि वह हमको पराजय कर सकें तब तो

सफल होगी। यह सुनके शल्य बोले वही होय इतना कहके निरस्त हुए। तब कर्णने शल्यको युद्धार्थ अश्व चालन करनेको कहा, हे महाराज! शल्यके रथ परिचालित करनेसे दिवाकर जैसे अंधकार विनाश करें वैसही शत्रु संहार करते धावमान हुए।

इति ३८ अध्याय।

अनन्तर महावीर कर्ण कौरव सैन्यको आह्लादित करते हुए पाण्डवपक्षीय सैन्यगणसे एक एकसे पूछने लगे, हे वीरगण! आज तुम लोगोंमेसे जो कोई धनञ्जयको दिखा देगा वह जो प्रार्थना करेगा वही हम उसको प्रदान करेंगे। यदि वह उससे तृप्त न हों तो शकट पूर्ण रत्न प्रदान करेंगे। उससेभी तृप्त न हों तो एक शत ग्राम प्रदान करेंगे उससेभी सन्तुष्ट न होंय तो हमारे पुत्र, कलत्र और विहारसामग्रीके बीच जो प्रार्थना करें हम वही अर्पण करेंगे और अन्तमें कृष्ण और धनञ्जयको विनाश करके उनका जो सब अर्थ रहेगा सोभी उन्हीको प्रदान कर देंगे। महावीर कर्ण बारंबार ऐसही वाक्य उच्चारण करके शंखनाद करने लगे। दुर्य्योधन कर्णका यह सब वाक्य श्रवण करके प्रसन्न मनसे उनके अनुगामी हुए। तब आपके सैन्यमें सिंहनादमिश्रित दुंधुभि ध्वनि होने लगी। तब मद्रराज शल्य आत्मश्लाघा निरत सूतपुत्रको हास्य करके कहने लगे।

इति ३९ अध्याय।

हे सूतपुत्र! तुमको कुछभी प्रदान नहीं पड़ेगा। तुम बालकत्व प्रयुक्त कुवेरके समान धन दान करनेको प्रवृत्त होके हो आज अनायास धनञ्जयको देखोगे। तुम अति अज्ञा-

नकी समान प्रभूत धन दान करनेकी इच्छा करते हो, परन्तु अपात्रको दान करनेसे दोष होता है, सो मोहवश तुम नहीं बूझ सकते। जो धन तुम वृथा व्यय करने चाहते हो, उससे विविध यज्ञ सम्पन्न हो सकता है। तुम अज्ञानतासे कृष्ण और अर्जुनको विनाश करनेकी इच्छा करते हो, यह अति असम्भव बात है। शृगालने सिंहद्वयको संग्राममें निपातित कर सकता है? तुम्हारा कोई ऐसा बंधु नहीं क्या नहीं है? जो इस समय कृतान्त पतनोन्मुख देखकर निवारण करे। तुम कार्य्याकार्य्य विवेचना नहीं कर सकते इसीसे जाना जाता है कि तुम्हारा कालपूर्ण हो गया है। नहीं तो कौन पुरुष असम्बन्ध अश्रोतव्य वाक्य प्रयोग करता है। तुम जो वासना करते हो सो ऐसा है मानो कण्ठमें महाशीला बन्धन पूर्वक बाहुद्वय द्वारा समुद्र सन्तरण स्वरूप अनर्थकर है, अब जो तुम अपना मङ्गल इच्छा रखते हो तो व्यूहित योद्धा और सेनागणसे रक्षित होय धनञ्जयसे युद्ध करो, हम तुमसे द्वेष नहीं करते हैं दुर्य्योधनके हितार्थही कहते हैं, अब यदि तुम्हारी जीवित रहनेकी वासना हो तो हमारे वाक्य पर आस्था प्रदर्शन करो।

कर्ण बोले, हे शल्य! हम अपने बाहुबलके प्रभावसे युद्धकी वासना करते हैं, तुम मित्रता पूर्वक शत्रुता करके हमको भीत करने चाहते हो, जो होय मनुष्यकी तो गणना क्या है? इन्द्रभी हमको इस अभिप्रायसे निरत नहीं कर सकते हैं।

यह सुनके कर्णको प्रकोपित करनेके लिये पुनर्वार शल्य बोले, हे सूतपुत्र! सव्यसाची अर्जुन जब शरनिकरसे तुमको निपीड़ित करेगा, तब तुमको अनुताप करना पड़ेगा, बालक जैसे जननीके क्रोड़में शयान होय चन्द्रग्रहण करनेकी वासना

करे वैसही आज तुम धनञ्जयको पराजय करनेकी इच्छा करते हो।

हे मूढ़! क्षीणजीवी क्षुद्र मृगशावक जैसे रोषाविष्ट वृहत्-सिंहको युद्धार्थ आह्वान करे वैसही तुम अर्जुनको आह्वान करते हो। शृगालकी सदृश धनञ्जय सिंहको आह्वान करके विनष्ट मत हो। आत्मगृहस्थित कुक्कुर जैसे अरण्यचारी व्याघ्रके उद्देशमें घोरतर गर्जन करे वैसही तुम वृथा गर्जन करते हो। हे कर्ण! अरण्यमें शशकपरिवेष्टित शृगाल जब तक सिंहको परिदर्शन नहीं करता तावत्काल अपनेको सिंह-तुल्य ज्ञान करता है वैसही तुमभी यावत् धनञ्जयको नहीं देखे हो तावत् अपनेको योद्धा गण्य करते हो। जब तक गाण्डीवध्वनि तुम्हारे कर्णगोचर न हुई तावत् यथेच्छ गर्जन कर सकते हो, अन्तको तुमको शार्दूलदर्शी शृगालकी समान विमूढ़ होना पड़ेगा, हे मूढ़! धनञ्जय सिंहके सदृश और वीरजनका विद्वेष करके शृगालकी तुल्य लक्षित होते हो। हे सूतपुत्र! मूषिक और विड़ाल, कुक्कुर और व्याघ्र, शृगाल और सिंह, शशक और कुञ्जर, मिथ्या और सत्य और विष और अमृतमें जितना प्रभेद है, तुम्हारे और धनञ्जयकेभी उतनीही विभिन्नता है इसमें कुछ संदेह नहीं।

इति ४० अध्याय।

सञ्जय बोले, हे महाराज! शल्यकी तिरस्कार वाक्यसे महावीर कर्ण अति पीड़ित हो कर बोले, हे मद्रराज! गुण-ग्राही भिन्न गुणवानका गुणकी धारणा नहीं कर सकता तुम गुणविहीन हो इसीसे नहीं जान सकते हो, महावीर अर्जुन और महात्मा वासुदेवका गुण जैसा हम जानते हैं तुम कदाच नहीं जान सकते, हम अपना और अर्जुनका गुणागुण

विशेष प्रकारसे जान करकेही तो उनको युद्धार्थ आह्वान करते हैं, हे शल्य! हमारे निकट जो अस्त्रशस्त्र है उससे हम सुमेरुपर्वतको विदीर्ण कर सकते हैं, हम सत्य कहते हैं कि वह बाण कृष्ण और अर्जुन भिन्न किसीपरभी निक्षेप नहीं करेंगे। अर्जुन और कृष्णही पर जयप्रतिष्ठित है, इन दोनोसे कोई परित्राण नहीं पा सकता। परन्तु आज हम वही दोनो वीरसे युद्ध करेंगे तुम हमारा आज सामर्थ्य दर्शन करो। आज हम उन दोनो वीरको नाश करके सूत्रग्रन्थित मणिद्वयके समान समराङ्गणमें निपतित कर देंगे। तुम अति मूढ़ और महायुद्धमे अनभिज्ञ हौ, इससे भीत होय बहुविध असम्बन्ध प्रलाप और किसी कारणसे उनको स्तुति करते हौ, आज हम संग्राममें कृष्ण और धनञ्जयको विनाश करके तुमकोभी बंधुबान्धवके सहित निपातित करेंगे। रे दुर्बुद्धे! क्षुद्राशय! क्षत्रियकुलाङ्गार! तू सुहृद हो करभी शत्रुके समान क्यों हमको कृष्ण और धनञ्जयसे भीत कराता है? जो होय वे हमको विनाश करें अथवा हमही उनको विनाश करें, परन्तु कभी उन लोगसे भीत न होंगे। सहस्र वासुदेव और शत शत अर्जुन आगमन करें तौभी हम एकाकी उनको विनाश करेंगे तेरा कोई बात बोलना प्रयोजन नहीं है।

रे मूढ़! मद्रकगणका विषय जो लोग कीर्तन करते हैं और पूर्वमें राजसभामें ब्राह्मणगणने जो कहा था सो श्रवण करके तूष्णीम्भाव अवलम्बन अथवा उत्तर प्रदान कर। मद्रकगण मित्रद्रोही, नियतपरद्वेषी, उन लोगमे परस्पर एकता नहीं है। वे लोग नीचाशय, नराधम, दुरात्मा, मिथ्यावादी और उद्धतस्वभाव हैं, उन लोगसे प्रणय करना अकर्तव्य है। हमने सुना है कि मद्रकगण जन्मसे मरणपर्य्यन्त दुष्कर्मही किया करते हैं। मद्रदेशमें पिता, पुत्र, माता, श्वश्रु, श्वशुर,

मातुल, जामाता, दुहिता, भ्राता, नप्ता, अन्यान्य बंधुबान्धव, अभ्यागत और दासदासी सब एकत्र मिलित, और कामिनी-गण स्वेच्छानुसार पुरुषगणके सहित प्रवृत्त हो कर मद्यपान, मत्स्य और गोमांस प्रभृति भोजन करते हुए कभी रोदन कभी हास्य कभी गान और कभी असम्बन्ध प्रलाप किया करते हैं। मद्रकगण विरुद्धकर्मी और अहंकृत विख्यात हैं, कारण उनमें धर्मभी प्रवृत्ति कैसे हो सकती है? मद्रक-गणसे वैर वा सौहार्द करना कर्त्तव्य नहीं है। वे लोग मल स्वरूप हैं।

हे मद्रराज! जो कामिनीगण मदमत्त हो कर परिधान वस्त्र परित्याग पूर्वक नृत्य, जो लोग व्यभिचार दोषदूषित हो कर अभिमत पुरुषका संसर्ग और जो उद्धतस्वभाव हो कर उष्ट्र औ गर्दभकी समान मूत्र परित्याग करें तुम वैसही धर्म-भ्रष्ट निर्लज्ज स्त्रीके पुत्र हो कर किस प्रकारसे धर्मोपदेश प्रदान करनेका अभिलाष करते हो। हे मद्रराज! हमने औरभी सुना है कि मद्रदेशीय गोरीगण निर्लज्ज, कम्बलावृत, उदरपरायण और अशुचि होती हैं, मद्रक, सैन्धव और सौवीरगण पापदेशसम्भूत म्लेच्छ और अति अधर्मपरायण हैं वे कैसे धर्मकीर्तन कर सकते हैं। युद्धमे निहत होनाही क्षत्रि-यका धर्म है, हे शल्य! युद्धमें प्राणपरित्याग पूर्वक स्वर्गलाभ करनाही हमारा प्रधान उद्देश है विशेष करके दुर्योधन हमारे प्रियसखा इससे उनके निमित्त प्राण और धन परि-त्याग करना अवश्य कर्त्तव्य है। तुम पापदेशज और म्लेच्छ हो और हमसे शत्रुतुल्य व्यवहार करते हो इससे स्पष्टही जानाजाता है जो पाण्डवगणने भेदके निमित्त तुमको प्रेरण किया है। जो होय नास्तिक लोग जैसे धर्मज्ञको धर्मच्युत नहीं ... तैसेही तुम्हारे तुल्य एकशतजन हमको समर

पराङ्मुख वा भीत नहीं कर सकते हैं, तुम विलाप करो वा शुष्कहृदय हो हम कौरवगणका उद्धार वा शत्रुगणका संहार करनेको उद्यत हुए सो कदाच प्रतिनिवृत्त नहीं हो सकते हैं। इससे अब तुम तूष्णीम्भाव अवलम्बन करो भीत हो कर क्यों वृथा वागाड़म्बर करते हो, हे मद्रकाधम! हम तुमको अभि विनाश नहीं करेंगे मित्रकार्य्य साधन, दुर्य्योधनका आग्रह और तितिक्षा इसी तीन कारणसे तुमने इस वार परित्राण पाया। परन्तु पुनर्वार ऐसा वाक्य प्रयोग करोगे तो वज्रतुल्य गदा द्वारा तेरा मस्तक अधःपातित करेंगे, हे कुदेशज शल्य! आज वीरगण हमको कृष्ण वा अर्जुनके हाथसे विनष्ट अथवा उनको हमारे हाथसे विनष्ट दर्शन और श्रवण करेंगे, हे महाराज! इसी प्रकारसे कर्ण कहके वारंवार मद्रराजको अश्रुसम्भालके लिये कहने लगे।

इति ४१ अध्याय।

अनन्तर मद्रराज शल्य एकदृष्टान्त प्रदर्शन करके पुनर्वार कर्णसे कहने लगे। हे सूतपुत्र! हम धर्मपरायण, समरमें अपराङ्मुख, याग यज्ञ निरत, मूर्द्धाभिषिक्तगणके वंशमें जन्म लिया है इस समय तुम उन्मत्तके समान लक्षित होते हो इस कारण हम बन्धुता करके तुम्हारी चिकित्सा करेंगे।

हे कर्ण! हम जो एक काकका वृत्तान्त कहते हैं सो सुनो।

हे कुलपांशन! मेरा अणुमात्रभी दोष नहीं तुम क्यों विनापराधके हमको संहार करनेका अभिलाष करते हो? हम सारथ्यकार्य्यमें नियुक्त, विशेष दुर्य्योधनके प्रियानुष्ठानमें परतन्त्र है, इससे तुम्हारा हित और अनहित अवश्यही

जानाना कर्तव्य है, तुम वह सब बूझके कार्य्य करो हम इस रथके सारथी हैं इसे सम, विषम, भूभाग, रथीका बलाबल, रथ और अश्वगणका श्रम औ खेद, भार, अतिभार, शल्यका प्रतिकार, अस्त्रयोग, युद्ध और निमित्त इनको परिज्ञात होना कर्तव्य है। जो होय अब हम जो उपाख्यान कहते हैं सो सुनो।

समुद्रके पार एक धार्मिक वैश्य वास करता था, उसके कोई एक पुत्र थे। वैश्यपुत्रगण अपने उच्छिष्ट मांस अन्न प्रभृति द्वारा एक काकका पोषण करते वह काक उच्छिष्ट भोजन द्वारा क्रमसे अति बलिष्ठ और गर्वित हो गया और अपने सदृश और उत्कृष्ट पक्षिगणकी अवज्ञा करने लगा। एक दिन कोई एक वेगगामी हंस उसी समुद्रके तीर पर आ गये। तब वैश्यपुत्रगणने हंसको देख कर काकसे कहा। हे काक! तुम सब पक्षीसे श्रेष्ठ है। उच्छिष्टभोजी वायसने अल्पबुद्धि वैश्यकुमारगणके प्रतारणावाक्यसे आह्लादित होय मूर्खताप्रयुक्त उसकी बातको सत्यही मान लिया। तब तो उसने एक बलिष्ठ हंसको आह्वान करके कहा, हे हंसवर! आओ हम दोनो आकाशमण्डलमें उड्डीन होय। यह सुन हास्य करके एक हंस बोला, रे दुर्मति काक! हम लोग मानसरोवर वासी हंस हैं समस्त भूमण्डल अनायास सञ्चरण कर सकते हैं, इसीसे अन्यान्य पक्षीगण हमारा सत्कार करते हैं, तू काक हो कर कौन साहससे हंसको आह्वान करता है? अच्छा बोल तो तू कैसे हमारे साथ उड़ेगा। तब आत्मश्लाघापरवश वायस हंसवाक्यमें अनादर प्रदर्शन करके बोला, हे हंसगण! हम शत प्रकार विचित्र उड्डयन प्रदर्शन सकते हैं। हम प्रत्येक उड्डनमें शतयोजन ऊर्द्धमें उत्थित होंगे और तुमलोगके समक्ष उड्डीन, अवडीन, प्रडीन, डीन,

निडीन, संडीन, तिर्यक्डीन, बिडीन, परिडीन, पराडीन, सुडीन, अतिडीन, महाडीन, खडीन, डीनडीन, सम्पात, समुदीर्ण और अन्यान्य नाना प्रकार गतागति और काककी उचित विविध गति प्रदर्शन करावेंगे, तुम लोग अब हमारा बल अवलोकन करो अब आप लोग कहो, पहिले कौन गति अवलम्बन करेंगे? यह सुन हास्य करके एक हंस बोला कि हम तो समस्त पक्षियों कि एक गति जानते हैं हम तो वही अवलम्बन करेंगे तुम अपने अभिलाषानुसार गति अवलम्बन करो। हे कर्ण। वहां औरभी कोई एक काक आगये थे, वे आश्चर्य होने लगे, कि यह हंस एक गतिसे कैसे शत प्रकार की गतिवालेको पराजय करेगा? अनन्तर काक और हंस परस्पर स्पर्धा प्रकाश पूर्वक अन्तरीक्षमें उत्थित हुए और अपने कार्य्यका स्लाघा करते गमन करने लगे। अनन्तर काक परिश्रान्त होकर उस अगाध समुद्रमें द्वीप वा वृक्ष न देख कर भीत होय चिल्ला करने लगा। और हंस बहुदूर अति-क्रम करकेभी मुहूर्त काल उस काकको निरीक्षण करके उस के आगमनकी प्रतीक्षा करने लगा, तब तो काक अतिशय परिश्रान्त होय हंसके निकट उपस्थित हुआ, तब हंस काक को हीनगति और निमग्नोन्मुख देख कर बोला, हे काक! तुमने शत प्रकारकी उड्डयनगति वारंवार उल्लेख करके अपनी गुप्तविद्या प्रकाश की अब जिस गतिसे उड़ते हो इस का नाम क्या है? तुम चंचुपुट और दोनो पक्ष द्वारा वारंवार सलिल स्पर्श करते हो कहो तो यह कौन गति है? हे काक! हम तुम्हारी अपेक्षा कर रहे हैं तुम शीघ्र हमारे निकट आओ। हे कर्ण। तब तो दुष्ट स्वभाव वायस अतिश्रान्त होय आर्त्तस्वरसे बोला, हे हंस! हम काक हैं "का का" शब्द करते इधर उधर सञ्चरण करते हैं अब हम जीवन सम-

र्पणा पूर्वक तुम्हारे शरणापन्न हुए हैं, तुम हमको समुद्र पार ले जाओ। वायस यह कहके कातर होय दोनो पक्ष और चंचुपुट द्वारा सागर सलिल स्पर्श पूर्वक जलमें निपतित हुआ, तब हंस बोला, हे काक! तुमने आत्मश्लाघा किया था, सो स्मरण करो। तब काक बोला, हे हंस! हम उच्छिष्ट भोजनसे दर्पित होकर अन्यान्य पक्षिगणकी अवज्ञा की थी अब आपकी शरणापन्न हुए, तुम हमको द्वीपमें ले चलो यदि जीवित रहेंगे तो अब किसी की अवज्ञा नहीं करेंगे, तुम हमको इस विपदसे उद्धार करो। अनन्तर दयालु हंस उसकी कातरोक्ति श्रवण करके उसको अपने पृष्ठ पर संस्थापन पूर्वक पूर्वमें जिस द्वीपसे स्पर्द्धा करके उड्डीन हुए थे, वहां उत्तीर्ण हुआ और काककी आश्वासित करके अभिलषित स्थानमें प्रस्थान किया।

हे कर्ण! तुमभी वैसही उच्छिष्टभोजी काकके समान निःसन्देह दुर्योधनादिककी उच्छिष्टान्नसे प्रतिपालित होय क्या तुल्य क्या प्रधान सबहीकी अवज्ञा करते हो, हे सूतपुत्र! विराट नगरमें सिंह जैसे शृगालगणको पराजय करे वैसही अर्जुनने तुम लोगको पराजय किया था, उस द्रोण भीष्म अश्वत्थामा प्रभृति तुम्हारे रक्षक रहतेभी क्यों नहीं अर्जुनको पराजय किया? उस समय तुम्हारा बलविक्रम कहां था? सव्यसाचीने तुम्हारे भ्राताको निहत किया तब तुम सबके संमुख पहिलेही पलायित हुए। गन्धर्वगणके युद्धमेंभी सब कौरवों को विपदमें छोड़ कर सबके पहिलेही तुमने पलायन किया। परशुरामने राजसभामें अर्जुन और वासुदेवको अवध्य निर्देश किया, अभी तुम वही अर्जुन और वासुदेवको देखोगे सो वायसने जैसे बुद्धि पूर्वक हंसका आश्रय लिया था वैसही तुम भी बुद्धि पूर्वक वही वीर द्वयको आश्रय करो। हे कर्ण! जब

तुम उन वीरद्वयको देखोगे तब ऐसी बात न बोल सकोगे। जब अर्जुन शत शत बार तुम्हारा दर्प चूर्ण करेंगे तब तुम उनका और अपना प्रभेद जानोगे। हे मूढ़! अब तुम अपने को खद्योतस्वरूप, अर्जुन और वासुदेवको चन्द्र सूर्य्य स्वरूप विवेचना करके निरस्त हो अब उन लोगकी अवज्ञा वा आत्म-श्लाघा न करना।

इति ४२ अध्याय।

हे महाराज! मद्रराजका कठोर वाक्य श्रवण करके कर्ण बोले, हे मद्रराज! हम अर्जुन और वासुदेवको विशेष करकी जानते हैं तुम उतना नहीं जानते इसीसे हम उनसे युद्ध करनेको प्रवृत्त हुए हैं, परन्तु परशुरामके शापसे हमको अत्यन्त सन्ताप होता है। पूर्वमे हम दिव्यास्त्र शिक्षाके लिये ब्राह्मणवेशसे परशुरामके निकट हम अवस्थान करते थे। एक दिन गुरु हमारे उरुदेश पर मस्तक अर्पण करके निद्रित थे, उसी समय इन्द्रने धनञ्जयके हिताभिलाषसे कीटरूप धारण करके मेरे उरुदेशको विदीर्ण किया। उससे अत्यन्त शोणित निर्गत होने लगा तथापि गुरुनिद्राभङ्ग भयसे हम स्थिरही रह गये। परशुराम जागरित होय शोणित दर्शन करके हमारा दृढ़तर धैर्य्यगुण देख कर बोले, वत्स! तुम तो ब्राह्मण नहीं हो? यथार्थ परिचय प्रदान करो। तब हम भीत होय सूतकुल कहके आत्मपरिचय प्रदान किया। भार्गव हमारे वाक्यसे क्रुद्ध होय यह अभिशाप प्रदान किया, हे दुरात्मन्! तूं शठताचरण पूर्वक हमसे जो ब्रह्मास्त्र लाभ किया है सो तुम्हारे मृत्युकाल उपस्थित होनेसे तुमको स्मरण नहीं रहेगा। रे मूढ़! अब्राह्मण क्या कभी ब्राह्मण हो सकता है? हे मद्र-राज! आज इस तुमुल संग्राममे हम अस्त्र विस्मृत हुए तो

अर्जुन समस्त क्षत्रियगणको सन्तप्त करेगा, इसी कारणसे हम अति दुःखित हो रहे हैं, जो होय हमारे निकट जो सर्पमय शर है, उसोसे शत्रुगणको संहार कर डालेंगे। हे शल्य! आज तुम हमारा और धनञ्जयका घोर संग्राम दर्शन करो प्रदीप्त मार्त्तण्ड सदृश महावीर धनञ्जय महास्त्र ग्रहण पूर्वक युद्धार्थ समागत होगा तो हम मेघके समान शरजालसे उनको आच्छन्न करके अपने उत्तमास्त्रसे उनका अस्त्र छेदन करके उनको भूतलमें निपातित करेंगे।

हे शल्य! जिसके तुल्य दूसरा कोई नहीं है, आज हम उनहीसे संग्राम करेंगे। आज हम निशितशरद्वारा अभिमानी अर्जुनका शिरच्छेदन करेंगे। जिससे कोई युद्ध करनेको साहसी नहीं होता हमारा जय लाभ हो वा मृत्यु ही हो आज उसी धनञ्जयसे संग्राम करेंगे, इसमें सन्देह नहीं, हे मूर्ख! तूं क्यों हमारे निकट धनञ्जयका पौरुष प्रकाश करता है? हम आपही उसका पुरुषकार भूपालगणके समक्ष कीर्तन करेंगे। तूं अप्रियकारी, निष्ठुर, क्षुद्राशय, और अत्यन्त असहिष्णु है। हम तेरे सरीखे शत मनुष्यको विनाश कर सकते हैं, परन्तु अब असमय जानके क्षमा किया। तुम अति मूर्खके समान हमारी अवमानना करके धनञ्जयको प्रियवाक्य कहते हो देखो हमसे सरल व्यवहारही तुमको करना कर्तव्य है सो न करके कुटिलता करते हो इससे तुम मित्रद्रोही और पाषण्ड हो, हे मूढ़! इस समय स्वयं राजा दुर्य्योधन युद्ध करनेको आये हैं, यह अति भयङ्कर समय है, हम उनके प्रियकार्य्य साधनार्थ यत्न करते हैं, परन्तु तुम जिससे मित्रता नहीं उसीका हितानुष्ठान करते हो, हे शल्य! जो स्नेहप्रदर्शन, हर्षवर्द्धन, प्रीतसम्पादन, रक्षा-विधान और हिताभिलाष करें वही मित्र हैं, हमारे ये गुण

राजा दुर्य्योधनको अविदित नही हैं और जो पुरुष विनाश साधन, हिंसा, शासन, हीनता और अवसादसम्पादन और बलप्रकाश करे वही शत्रु है। तुमने प्राय ये सबही दोष विद्यमान हैं, वही सब तुम हमको प्रदर्शन करते हो। जो होय! हे शल्य! आज हम राजा दुर्य्योधनका हितसाधन, तुम्हारा प्रीतसम्पादन और अपना जयलाभ, यशोलाभ और धर्मलाभके निमित्त परम यत्न द्वारा धनञ्जय और वासुदेवसे युद्ध करेंगे। तुम हमारा दिव्यास्त्र सब अवलोकन करो, आज यदि हमारा रथचक्र विषम प्रदेशमें निपतित न होय तो धनञ्जयसे युद्ध करके दुर्निवार ब्राह्म अस्त्र निक्षेप करेंगे, उस अस्त्रसे कोईभी परित्राण नहीं पा सकता है, हे शल्य! तुम निश्चय जानो कि हम यम, कुवेर, वरुण और इन्द्र प्रभृति किसी आततायी शत्रुसे भीत नहीं है, इसीसे धनञ्जयसेभी हमारे अन्तःकरणमे कुछ भय नहीं होता है, आज हम अवश्यही उनसे युद्ध करेंगे।

हे मद्रराज! एक समय हम अस्त्राभ्यासके लिये अटवीमे पर्य्यटन करके अज्ञानतासे एक ब्राह्मणकी होमधेनु संहार किया था। इसीसे ब्राह्मणने कहा, तुमने प्रमत्त होकर हमारी होमधेनु विनाश किया, इससे तुम युद्धके समय जब तुम अति भीत होगे उस समय तुम्हारा रथचक्र विलमे निपतित होगा, हे शल्य! हम केवल उसी ब्राह्मणके शाप भयसे भीत हैं। हे शल्य! हम तुमसे तिरस्कृत हो करभी बंधुताके कारण तुमसे यह बात कही अब तुम तूष्णीम्भाव अवलम्बन पूर्वक और जो कहते हैं सो श्रवण करो।

इति ४२ अध्याय।

कर्ण बोले, हे शल्य! तुमने निदर्शन प्रदर्शनके लिये जो

उपाख्यान कहा सो हम कभी समर करनेसे भीत न होंगे। तुम वाक्यद्वारा हमको कदाच शङ्कित न कर सकोगे। तुम वारं-वार कटुक्ति करते हो। परंतु नीचलोकही कटु प्रयोग पूर्वक बलप्रकाश करते हैं, हे दुर्मते। तुम हमारे गुणवर्णनसे अशक्त होकर केवल विविध कुवाक्य प्रयोग करते हो, परन्तु निश्चय जानो कि कर्णने भीत होनेको इस संसारमे जन्म नहीं लिया है, अपने विक्रम प्रकाश और यशोलाभके निमि-त्तही उद्भूत हुआ है, हे शल्य! इस समय हमारे सहि-ष्णुता, सौहार्द और मित्रका इष्टसाधन इसी तीन कारणसे तुम जीवित हो, दुर्य्योधनका गुरुतर कार्य्य उपस्थित है और उसका भार हम पर दिया है और हमने तुम्हारी कटुक्ति क्षमा करनेकी प्रतिज्ञाकी है, विशेष करके मित्रद्रोह अत्यन्त पाप कर्म है इसी कारणोंसे तुम जीवित हो, हे मद्रराज! हम सहस्र शल्यके सदृश हैं, सहाय न रहनेसेभी हम अनायास शत्रुगणको जय कर सकते हैं।

इति ४४ अध्याय।

शल्य बोले, हे राधेय! तुमने जो कहा सो प्रलापमात्र तुम्हारे सदृश सहस्र कर्णभी उनको पराजय करनेको समर्थ नहीं हैं।

यह सुन कर्ण अति क्रुद्ध होय उससे द्विगुण निष्ठुर वाक्य प्रयोग करके कहने लगे। हे मद्रराज! हमने धृतराष्ट्रके निकट ब्राह्मणके मुखसे जो सुना है सो कीर्तन करते हैं, श्रवण करो। धृतराष्ट्रकी सभामे एक दिन एक वृद्ध ब्राह्मण बाह्लीक और मद्रदेशोद्भव लोगोंकी निन्दा करके कहने लगे, हे राजन्! जो लोग हिमालय, गङ्गा, सरस्वती, यमुना और [illegible]के बहिर्भागमे और जो लोग सिंधुनदी और उसके

पांच शाखासे दूर प्रदेशमे अवस्थित हैं, वह समस्त धर्मवर्जित, अशुचि वाहिकगणको परित्याग करना कर्तव्य है। गोवर्द्धन वट और सुभद्र नाम चत्तर बाल्यकालसे हमको स्मरण है कोई निगूढ़कार्य्यवश होय हम वाहिकगणकी सहित वास किया था उसीसे उनका व्यवहार जाना है।

शाकलनाम नगर और आपका नामकी नदी है वहां वाहीकगणको व्यवहार अति निन्दनीय है, वहां आचारभ्रष्ट लोग गौड़ी सुरापान, लशुनकी सहित भृष्टयव, अपूप और गोमांस भक्षण करते हैं। कामिनीगण मत्त, विवस्त्र और माल्यचन्दनरहित हो कर नगरकी गृहप्राचीरकी समीप नृत्य, गर्दभ और उष्ट्रकी समान चीत्कार करके अश्लील संगीत किया करती हैं। वे लोग, स्व परपुरुष विवेक विहीन हो कर स्वेच्छानुसार विहार करती उच्चस्वरसे पुरुषगणके प्रति आह्लादजनक वाक्य प्रयोग करती हैं। एक दिन एक वाहीक जो कुरु जाङ्गलमे अवस्थित था, प्रफुल्लमनसे कह रहा था, आहा! वह सूक्ष्म कम्बलवासिनी गौरी हमको स्मरण करके शयन करती है, हाय! हम कितने दिनमें शतद्रु और इरावती नदी उत्तीर्ण होय स्वदेशमें गमन पूर्वक कम्बलाजिनसंवीत, स्थूल ललाटास्थि गौरीगणका उज्ज्वल अपाङ्गदेश, ललाट, कपोल और गर्दभ उष्ट्र शब्दतुल्य मृदङ्ग, आनक और शङ्खके संयुक्त केलिप्रसङ्ग अवलोकन करेंगे। हाय! कितने दिनमें शमी, पोलु और करीके अरण्यमें अपूप और शक्तुपिण्ड भोजन करके सुखी होंगे और महावेगसे गमन पूर्वक पथमें पथिकगणका वस्त्रापहरण करके वारंवार उनको ताड़न करेंगे। हे महाराज! दुरात्मा वाहीकगण ऐसे दुश्चरित्र हैं।

हे शल्य! तुम जो वाहिकगणके

भोग करती हो उन्होंका ऐसा व्यवहार है। पुनर्वार ब्राह्मणने जो कहा था सो श्रवण करो। वाह्लिकदेशमें शाकल नाम एक नगर है। वहां एक राक्षसी प्रति कृष्णाचतुर्दशीके रात्रिको दुन्दुभिध्वनि करके यह सङ्गीत करती है, “आहा! हम कितने दिनमें पुनर्वार इस शाकल नगरमें सुसज्जित होय गौरीगणके सहित गौड़ी सुरापान, गोमांस पलाण्डु-युक्त मेषमांस भोजन करके वाहेयिक सङ्गीत करेंगे जो लोग वराह, कुक्कुट, गौ, गर्दभ, उष्ट्र और मेषमांस भोजन न करें उनका जन्म निरर्थक है”। हे शल्य! शाकलदेशमे आबाल-वृद्ध सुरापान करके मत्त होय ऐसही सङ्गीत किया करती हैं, उनको धर्मज्ञान कैसे हो सके?

हे मद्रराज! और एक ब्राह्मणने कुरुसभामें जो कहा था सो श्रवण करो। हिमाचलके वहिर्भागमें जहां पीलुवन है और सिंधु और उसकी शाखा शतद्रु, विपाशा, ईरावती, चन्द्रभागा और वितस्ता नदी प्रवाहित होती है वही अरट्ट देश अति धर्महीन है। वहां गमन करना अविधेय है, ब्राह्मण, देवता और पितृगण धर्मभ्रष्ट अरट्टदेशीय वाहीक-गणकी पूजा ग्रहण नहीं करते। वे ह्रीशून्य मूर्ख लोग शक्तु और मद्यविलिप्त कुक्कुरावलीढ़ काष्ठमय और मृण्मय पात्रमें उष्ट्र, गर्दभ और मेषका दुग्ध और दधि प्रभृति भक्षण करते हैं। उनमें किसीकेभी पिताका निर्णय नहीं पण्डितगण कदाच उनका संसर्ग नही करते। हे शल्य! उस ब्राह्मणने औरभी कहा था सो सुनो। पञ्चनदी पर्वतसे निसृत होय जहां प्रवाहित होती है उसी स्थानका नाम आरट्ट है साधुलोगको कदाच वहां दो दिन स्थान करना उचित नहीं है। विपाशा नदीमे वाह और वहीक नामके दो पिशाच हैं, वाहीक लोग उनहीके सन्तान हैं। वे प्रजापतिके

स्पष्ट नहीं है तो होनयोनी हो कर कैसे शास्त्रधर्म ज्ञात होगी? धर्म विवर्जित कारस्कार, माहिषक, कालिङ्ग, केरल, कर्कोटक और वोरकगणको परित्याग करना कर्तव्य है हे मद्रराज! वही आरट्टदेश वाहीकगणका वासस्थान है वहां जो ब्राह्मण वास करते हैं उनका वेदाध्ययन यज्ञानुष्ठान कुछभी नहीं है आरट्ट देशके समान प्रस्थल, मद्र, गान्धार, खस, वसाति, सिन्धु और सौवीर देशमेंभी यह सब कुत्सित व्यवहार प्रचलित है।

इति ४५ अध्याय।

हे शल्य! एक उपाख्यान हम और कहते हैं श्रवण करो। थोड़े दिन हुए हमारे भवनमें अतिथि हुआ था वहांका सदाचार देखकर सन्तुष्ट होय बोले हमने बहुकाल एकाकी हिमालय शृङ्गपर वास और बहुतर देश दर्शन किया, परन्तु कहींभी समस्त प्रजाको धर्मके विरुद्ध आचरण करते न देखा। सबही वेदोक्त धर्मको यथार्थ धर्म कहते हैं। जब हम वाहीक देशमें गये तो वहां सुना कि यहां लोग सब पहिले ब्राह्मण होके क्रम क्रमसे क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, वाहीक और नापित हो जाते हैं, अनन्तर पुनर्वार ब्राह्मण होकर फिर दास हो जाते हैं। गान्धार, मद्रक और वाहीकगण सबही कामचारी, लघुचेता और संकीर्ण हैं, हम समस्त पृथिवी भ्रमण करके वाहीक देशमें ऐसा धर्म-संकर कारक आचार विपर्य्यय श्रवण किया।

हे मद्रराज! और सुनो, पूर्वमें आरट्ट देशीय दस्युगणने एक पतिव्रताको अपहरण पूर्वक उसका सतित्व भंग किया था, इससे उसने यह शाप प्रदान किया कि हे नराधम! तुम-

लोगोंने अधर्माचरणसे हमारा सतित्व भंग किया इससे तुम-लोगको कुलकामिनीगण सबही व्यभिचारिणी होंगी और तुमलोग कभी इस घोर पापसे मुक्त न होगे, हे शल्य! इसी-कारणसे आरट्ट लोगोंमें पुत्रधनाधिकारी नही होके भागि-नेयगणही धनाधिकारी होते हैं। कुरु, पांचाल, शाल्व, मत्स्य, नैमिष, कोशल, काशपौण्ड्र, कलिङ्ग, मगध और चेदी-देशीय महात्मालोग सबही पुरातन धर्मविशेष जानते हैं और वैसही कार्य्यभी करते हैं, अधिक क्या कहे? वाह्नीक, शूद्रक और कुटिलहृदय पाञ्चनद भिन्न और सबही देशके असाधु लोगभी धर्म जान्ते हैं।

हे मद्रराज! तुम यह सब वृत्तान्त जान कर तूष्णीम्भाव अवलम्बन करो, तुम उन सबकी रक्षा करता और पुण्य पापमे षड्भाग हर्त्ता हो अथवा राजा प्रजा रक्षा करनेहो से उनके पुण्यका भागी होता है, तुम तो उनकी रक्षार्थ कुछ यत्न नही करते इससे तुम उनके पुण्यके अधिकारी नही, केवल पाप-हीके भागी हो। पूर्व सत्ययुगमे पितामह ब्रह्माने समस्त देशमे सनातन धर्मपूजित और सब वर्णको अपने धर्ममे अवस्थित देखके तुष्ट हुए थे परंतु पञ्चनद देशीय धर्म अत्यन्त कुत्सित देख कर धिक्कार प्रदान किया था, हे शल्य! सत्य युगमे जब वाह्नीकगणकी निन्दा होती थी तब तुम्हारा जनसमाजमे वाक्य-व्यय करना अनुचित है। हे मद्रराज! हम और कहते हैं सो सुनो, क्षत्रियगणकी भिक्षावृत्ति, ब्राह्मणगणका अव्रत मल-स्वरूप, वाह्नीकगण पृथिवीके मलस्वरूप और मद्रदेशीय कामिनीगण अन्यान्य स्त्रीगणकी मलस्वरूप हैं। पूर्वमे कल्माष-पाद नाम निशाचर यही बात कहता कहता सरोवरमे निमग्न होता था इतनेमे एक भूपतिने उसको उस सरोवरसे उद्धार करके उससे राक्षस विद्रावक मन्त्र पक्षा तो वह बोला हे

महाराज! कोई राक्षससे उपद्रुत होय तो इसी मन्त्रसे उसकी चिकित्सा करनी होती है।

म्लेच्छगण मनुष्योंके, तैलिकागण म्लेच्छगणके,
षण्डगण तैलकगणके और ऋत्विक भूपतिगण
षण्डगणके मलस्वरूप हैं, अभी उभयही इसको
परित्याग नही करो तो ऋत्विक भूपति औ मद्रकगण
के समान पाप भाजन होगे।

पाञ्चालगण ब्राह्मधर्म, कौरवगण सत्यधर्म और मत्स्य औ शूरसेनदेशवासीगण याग यज्ञादिका अनुष्ठान किया करते हैं। पूर्वदेशीयगण शूद्रधर्मावलम्बी, दाक्षिणात्यगण, धर्मद्रोही, वाहीकगण तस्कर और सौराष्ट्रीयगण संकर हैं। कृतघ्नता, परवित्तापहरण, मद्यपान, गुरुपत्नीगमन, वाक्पारुष्य, गोबध, पारदारिकता और परवस्तु उपभोग जिनका धर्म है तो वही आरट्टगणको और क्या अधर्म होगा? इस कारण पञ्चनद-देशको धिक्! हे मद्रराज! पाञ्चाल, कुरु, नैमिष और मत्स्यदेशीयगण धर्मतत्व जानते हैं और उत्तरदिकस्थ अङ्ग और मगधदेशीय वृद्धगण धर्मका स्वरूप न जाने, परन्तु, शिष्टाचारका अनुसरण करते हैं। देख वाहीकगणके प्रति कोई विशेष देवताकी अनुग्रह नही है और देखो मागध-गण इङ्गितज्ञ और कोशलदेशवासीगण प्रेक्षितज्ञ कौरव और पाञ्चालगण वाक्य अर्द्ध उच्चारित होते ही और शाल्व-गण समस्त वाक्य होने परभी हृदयङ्गम नही कर सकते हैं। पार्वतीयगण शिविगणके सदृश अति निर्बोध। म्लेच्छ और यवनगण सर्वज्ञ और महाबली होकेभी मनःकल्पित धर्मका अनुष्ठान करते हैं और अन्यान्य जातिगण हितवाक्य उप-दिष्ट होने पर अवधारण नहो कर सकते। वाहीकगण ताड़ित होनेसे हितवाक्य बूझ सकते हैं। परंतु मद्रदेशीयगण

किसी प्रकारसेभी हिताविधारण नहीं कर सकते। हे शल्य! तुम वही मद्रदेशी हो इससे अब हमारे वाक्यका प्रत्युत्तर मत करो। इस भूमण्डल पर जितने देश हैं मद्रदेश सबका मल-स्वरूप है। देखो मद्यपान, गुरुतल्पगमन, भ्रूणहत्या, और परवित्तापहरण जिनका परम धर्म है उनके लिये तो कोई कार्य्यही अधर्म नहीं है, इसी कारण आरट्ट और पाञ्चनद गणको धिक्! हे शल्य! हमने जो कहा सो तुम जान कर चुप हो रहो, हमसे दुष्टाचरण करना तुम्हारा कर्तव्य नहीं है, देखो जिसमें ऐसा न होय कि पहिले तुमको विनाश करके पश्चात् केशव और अर्जुनको विनाश करना पड़े!

अनन्तर शल्य बोले, हे सूतपुत्र! आतुरको परित्याग और पुत्र कलत्रको विक्रय करना अङ्गदेशमें प्रचलित हैं, तुम उसी अङ्गदेशके अधिपति हो। महावीर भीष्मने रथातिरथ संख्याके समय तुम्हारा दोष सब कीर्तन किया था, सो अब स्मरण करके क्रोध सम्वरण करो। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और पतिपरायण रमणीगण सर्वत्रही विद्यमान हैं। सर्वत्रही लोग परस्पर परिहास किया करते हैं, और इन्द्रिय-परायण जनभी सर्वत्रही अवस्थान करते हैं। हे कर्ण! सबही परदोष कीर्तन कर सकते हैं, परन्तु आत्मदोष पर किसीकोभी दृष्टि नहीं रहती, मनुष्य अपना दोष जानकेभी भूल जाते हैं। धर्मपरायण भूपालगण सर्वत्रही दुष्टको दमन करते हैं, धार्मिक लोग सर्वत्रही वास करते हैं एक देशको सबही अधार्मिक हैं, यह अति असम्भव है, अनेक स्थानमें अनेक लोगोंने अपने अपने चरित्रसे देवगणकोभी अतिक्रम कर दिया है। हे महाराज! उसी समय राजा दुर्य्योधन, मद्रराज और सूतपुत्रका परस्पर विवाद देख मित्रभावसे कर्णको और कृताञ्जलिपुट होय शल्यको निवारण करने लगे।

तब कर्णने कुछ प्रत्युत्तर न किया और शल्यभी शत्रु संहारके अभिलाषी हुए। अनन्तर महावीर कर्ण हास्य करके बोले, हे मद्रराज! अब रथ संचालन करो।

इति ४६ अध्याय।

संजय बोले, महाराज! अनन्तर महावीर कर्ण शत्रु सैन्यको व्यूहित देखके अपने सैन्यकोभी व्यूहित करके शत्रु-गणके प्रति धावमान हुए और इन्द्रने जैसे असुरगणको विनाश किया था, वैसेही कर्णने पाण्डव सैन्य संहार और युधिष्ठिरको निपीड़ित करके उनके वामभागसे गमन किया।

धृतराष्ट्र बोले हे संजय! किस प्रकारसे उभय पक्षमें व्यूह रचित हुआ था? और किस प्रकारसे वह दारुण संग्राम उपस्थित हुआ? युधिष्ठिरको कर्णने आक्रमण किया तब धनञ्जय कहां थे? सो सब विस्तार करके कहो।

संजय बोले, हे महाराज! कृपाचार्य्य, कृतवर्मा और मागधगणने दक्षिण पक्ष आश्रय किया। शकुनि, उलूक और सादिगणने गान्धार सैन्यगण और पार्वतीयगणके सहित समवेत होय वीरगणके प्रपक्षमें अवस्थित होय कौरव सैन्यको रक्षा करने लगे। संसप्तकगण चतुर्विंशति सहस्र रथके सहित व्यूहका वाम पार्श्व रक्षा करने लगे। शक, काम्बोज और यवनगण उनके प्रपक्षमें अवस्थान करने लगे। विचित्र वर्मधारी महावीर कर्ण मध्यभागमें अवस्थान करने लगे। दुःशासन व्यूहके पृष्ठभागमें, महाराज दुर्य्योधन मद्रक, कैकय और द्रोण पुत्रके सहित दुःशासनके अनुगामी हुए। इसी प्रकार कर्णके प्रयत्नसे महाव्यूह अश्वारोही गजारोही और रथीगणसे परिपूर्ण होय शोभित होने लगा।

तब राजा युधिष्ठिर सेनामुख पर कर्णको अवलोकन करके

धनञ्जयसे बोले, वह देखो महावीर कर्णने संग्रामार्थ पञ्च प्रपञ्च युक्त महाव्यूह निर्माण किया है, सो शत्रुगण जिसमें हम लोगको पराभूत न करे, सो उपाय करो। हे अर्जुन तुम आज कर्णसे, हम कृपसे, भीम दुर्य्योधनसे, नकुल वृषसेनसे, सहदेव शकुनिसे, शतानीक दुःशासनसे सात्यकि कृतवर्मासे पाण्ड्य अश्वत्थामासे और द्रौपदी तनयगण शिखण्डीके सहित अन्यान्य धार्तराष्ट्रगणसे युद्ध करें।

अनन्तर धर्मराजकी आज्ञानुसार धनञ्जय स्वयं सेनाके मुख पर अवस्थान करके शत्रुगणके प्रति धावमान हुए। मद्रराज शल्यने वह अद्भुतदर्शन अर्जुनका रथ अवलोकन करके कर्णसे बोले, हे कर्ण! तुम जिनको अन्वेषण करते थे, वही महावीर धनञ्जय दुर्निवार्य्य महारथ पर आरोहण पूर्वक शत्रु सैन्य निपीड़ित करते हुए, आगमन करते हैं। वह देखो पार्थिव धूलिपटल उत्थित होय आकाशको आच्छन्न कर दिया है। तुम्हारे सैन्यमें प्रचण्ड वायु प्रवाहित होता है क्रव्यादगण घोर चीत्कार कर रहे हैं, हे राधेय! जब यह सब दुर्निमित्त उपस्थित होता है, तो निश्चयही सहस्र सहस्र भूपाल समरशय्या पर शयन करेंगे। वह देखो महावीर धनञ्जयने कौरव सेनागणको सिंह निपीड़ित मृगयूथके समान व्याकुलित कर दिया है। वह देखो पाण्डवगण समराङ्गणमें धावमान होय कौरव पक्षीय हस्ती, अश्व, रथी और पदाति-गणको निपीड़ित और भूपतिगणको निहत कर रहे हैं। हे कर्ण! तुम जिनको अन्वेषण करते थे, वही कृष्णसारथी धनञ्जय मेघाच्छन्न दिवाकरके समान अदृश्य हो गये है, इस समय केवल उनका ध्वजाग्र लक्षित और ज्या शब्द श्रुति गोचर होता है, अब शीघ्रही अर्जुनको अवलोकन करोगे, हे सूतपुत्र! वासुदेव जिनके सारथि और गाण्डीव जिनका शरासन

है उसी धनञ्जयको तुम निपातित कर सको तो तुमही हम लोगोंके राजा होगे, अभी तो अर्जुन संसप्तकगण आहूत होय उनको निपीड़ित कर रहे हैं।

हे महाराज! कर्ण क्रुद्ध होय बोले, हे शल्य! वह देखो संसप्तकगणके धावमान होनेसे अर्जुन मेघाच्छन्न हो कर लक्षित नहो होते हैं, अब उनको उसी योध सागरमे निमग्न हो कर निहत होना पड़ेगा। शल्य बोले, हे कर्ण! वायु अवरोध, समुद्र पान, जलसे वह्णका विनाश और इन्धनद्वारा अग्नि उपशमन करना जैसा असाध्य है धनञ्जयको समरमे निपीड़ित करनाभी तद्रूप है। जो होय तुम अर्जुनको पराजय करेगे, यह बात मुखसे बोलके तुष्ट होओ परन्तु वास्तविक सो न कर सकोगे। इससे अर्जुनके पराजय भिन्न कोई दुसरा मनोरथ करनाही तुमको उचित है।

हे कर्ण! वह देखो महाबाहु भीमसेन चिरवैर स्मरण पूर्वक समराङ्गणमे अपर सुमेरुके समान अवस्थान करते हैं। अरातिकुलघातन युधिष्ठिर, पुरुषव्याघ्र नकुल, और सहदेव संग्रामार्थ प्रस्तुत हुए हैं। अर्जुन तुल्य संग्रामनिपुण द्रौपदी तनयगण युद्धाभिलाषी होय पांच पर्वतके समान अवस्थान करते हैं, महावीर धृष्टद्युम्न, सात्यकि संग्रामार्थी होय यमके समान कौरव सैन्य पर गमन करते हैं। हे महाराज! वह दोनो वीर कथोपकथन करते थे कि इतनेमे उभय पक्षीय सैन्यगण गङ्गा और यमुनाके समान परस्पर मिलित हुई।

इति ४७ अध्याय।

संजय बोले, महाराज! महावीर अर्जुनने शत्रु सैन्यको व्यूहित देख अपनी सेनाभी व्यूहित किया। उस महा व्यूहके मुख पर महावीर धृष्टद्युम्न अवस्थान करने लगे और द्रौपदी

पञ्च पुत्र धृष्टद्युम्नकी रक्षा करने लगे। अनन्तर महावीर अर्जुन संसप्तकगणके प्रति धावमान हुए। तब संसप्तकगणभी अर्जुनको शर द्वारा निपीड़ित करने लगे। उस समय निवात-कवचगणके सदृश घोर संग्राम होने लगा। महावीर अर्जुन शत्रुगणका रथ, अश्व, हस्ती, ध्वज, पदाति, शर, शरासन, खड्ग, चक्र, परशु, और आयुधयुक्त उद्यत बाहु, विविध अस्त्र और मस्तक छेदन करने लगे।

उसी समय पाञ्चाल, चेदी और सृञ्जयगणके सहित कौरवगणका तुमुल युद्ध होने लगा। महाराज दुर्य्योधन महारथ कर्णकी रक्षा करने लगे, महावीर कर्ण निशित शर-निकरसे पाण्डवपक्षीय सैन्य विनष्ट और महारथगणको विमर्दित करके धर्मराज युधिष्ठिरको निपीड़ित करने लगे, हे महाराज! इसी प्रकारसे देवासुरके सदृश घोर संग्राम होने लगा।

इति ४८ अध्याय।

संजय बोले महाराज! महावीर कर्ण धृष्टद्युम्नको संमुख देख पाञ्चालगण पर धावमान हुए। पाञ्चालगणभी उनके संमुख हुए। अनन्तर उभय पक्षसे असंख्य शङ्खध्वनि, भयङ्कर भेरी शब्द, शरनिपात शब्द और वीरगणका सिंहनाद शब्द होने लगा। यावतीय जीवजन्तुगण वह भीषण शब्द श्रवण करके अद्रिद्रुमपरिपूर्ण अवनीमण्डल, समीरणसमीरित अम्बुदपरिशोभित आकाश और चन्द्र, सूर्य्य, ग्रह, नक्षत्र परिव्याप्त स्वर्ग विकम्पित जानके अत्यन्त व्यथित हुए।

अनन्तर महावीर कर्ण अत्यन्त क्रोधाविष्ट होय शर-निकर परित्याग पूर्वक पाण्डव सैन्यको विनाश करने लगे।

वह पाण्डव सैन्यमें प्रविष्ट होय अनेकानेक प्रभद्रकगण, पांचाल और चेदीदेशीय वीरगणको विनाश करने लगे। तब पांचालगणने कर्णको परिवेष्टन किया, तब कर्णने पांच वाणसे भानुदेव, चित्रसेन, सेनाविन्दु, तपन और शूरसेनको विनाश किया। यह देख पांचालगण हाहाकार करने लगे। अनन्तर दश जन पांचालने कर्णको वेष्टन किया तो उनकोभी कर्णने निहत कर दिया। उसी समय उनका पुत्र और चक्ररक्षक सुषेण और सत्यसेन प्राणपण करके युद्ध करने लगे और उनका ज्येष्ठ पुत्र और पृष्ठरक्षक वृषसेन यत्नपूर्वक पृष्ठ रक्षा करने लगे। अनन्तर महावीर धृष्टद्युम्न, सात्यकि, वृकोदर, जनमेजय, शिखण्डी, नकुल, सहदेव, द्रौपदीके पांच पुत्र और प्रवीर, प्रभद्रक चेदी, कैकेय, पांचाल और मत्स्यगण सूतपुत्रके विनाश करनेके लिये उन पर धावमान होय वर्षाकालमें जलदजाल जैसे महीधर पर वारि वर्षण करता है तद्रूप कर्ण पर विविध अस्त्रशस्त्र निक्षेप करने लगे। तब कर्णके पुत्र, रक्षक और अन्यान्य वीरगण पाण्डव पक्षीय सैन्यगणको निवारण करने लगे। सुषेणने भल्लास्त्रसे भीमका शरासन छेदन करके सात नाराचसे उनका वक्ष विद्ध करके सिंहनाद करने लगे। भीमने दूसरे शरासन पर ज्या रोपण करके सुषेणका मुकुट छेदन और दश शरसे उनको और त्रिसप्तति शरसे कर्णको विद्ध किया। अनन्तर दश शरसे कर्णपुत्र भानुसेनको विद्ध करके क्षुर द्वारा अश्व, सारथी, आयुध और ध्वजके सहित उसका मस्तक छेदन कर डाला। भानुसेनका छिन्न मस्तक मृणालभ्रष्ट कमलके समान शोभा पाने लगा। अनन्तर भीमसेनने कृपाचार्य्य और कृतवर्माका कार्मुक छेदन करके उनको और अन्यान्य वीरगणको शरनिकरसे पीड़ित

शरसे दुःशासन और छः शरसे शकुनिको विद्ध करके उलूक और उनके भ्राता पतत्रिको रथहीन कर दिया। अनन्तर सुषेणको लक्ष्य करके "हा सुषेण! तुम निहत हुए" यह कहके एक सायक ग्रहण करतेही कर्णने शीघ्र छेदन पूर्वक तीन शरसे उसको ताड़ित किया। तब भीम दूसरा शर सुषेण पर क्षेपण किया उसकोभी कर्णने छेदन कर डाला। अनन्तर कर्णने भीम पर त्रिसप्तति बाण निक्षेप किया। तब सुषेण पांच बाणसे नकुलको विद्ध किया। नकुलने असंख्य शर निक्षेप करके नभोमण्डल आच्छन्न कर डाला। इसी-प्रकारसे महा घोर युद्ध होने लगा।

अनन्तर सात्यकिने वृषसेनको शर द्वारा विरथ करदिया तब उसने असिचर्म ग्रहण करके धावमान हुआ तब सात्य-किने क्षुराहकर्ण अस्त्रद्वारा उनका असिचर्म खण्ड खण्ड करडाला। अनन्तर दुःशासने वृषसेनको रथशून्य देख अपने रथपर आरोपित कर लिया। अनन्तर वृषसेन घोर युद्ध करके कर्णका पृष्ठ रक्षा करनेको प्रवृत्त हुआ। अनन्तर पाण्डव पक्षीय वीरगण एकत्र होय कर्णको निपीड़ित करने लगे, कर्णनेभी प्रत्येक वीरगणको दश दश शरसे विद्ध करके समराङ्गणमें विचरण करने लगे। पाण्डवपक्षीय वीर-गण कर्णके शरसे अश्व रथके सहित आच्छन्न होय तत्क्ष-णात् अवकाश प्रदान पूर्वक अपसृत हो गये। अनन्तर कर्ण पाण्डवगणके करिसैन्यमें प्रवेश पूर्वक चेदी देशीय त्रिंशत रथीको विनाश करके युधिष्ठिरको निपीड़ित करने लगे। तब तो भीमसेन प्रभृति वीरगण युधिष्ठिरको रक्षा करनेको लिये उनको परिवेष्टन कर लिया। कौरवगणभी कर्णको परम यत्नसे रक्षा करने लगे। उस समय संग्राममें नानाविध वाद्यध्वनि और वीरगणका सिंहनाद होने लगा।

अनन्तर उभय पक्षीय सैन्यगण पुनर्वार संग्राम करनेको प्रवृत्त हुए।

इति ४८ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर महावीर कर्ण सहस्र सहस्र हस्ती, अश्व, रथ और पदातिगणसे परिवेष्टित होय पाण्डव सैन्य को भेद करके उन लोगोंका मस्तक बाहु और उरुदेश छेदन करने लगे, सूतपुत्रके भीषण शराघातसे असंख्य वीर निहत होय भूतलमें निपतित हुवे और कितने विकलाङ्ग होकर समर परित्याग पूर्वक पलायन करने लगे। उसी समय द्राविड़ और निषाद देशीय पदातिगण कर्णके प्रति धावमान हुए, महावीर कर्णने उनकोभी निगतासु करके छिन्नमूल शालवनके समान भूतल पर निपतित कर डाला। अनन्तर पाण्डव और पाञ्चालगणने कर्णको अवरोध किया। तब तो कर्ण उन लोगको विमर्दित करके युधिष्ठिर अनति-दूरही उपस्थित हुए, परन्तु पाण्डव और पाञ्चालगणको अति-क्रम न कर सके। अनन्तर रोषारुणलोचन युधिष्ठिरने कर्णको कहा हे सूतपुत्र! हम जो कहते हैं सो श्रवण करो। तुम सर्वदा धनञ्जयसे संग्राम करनेकी स्पर्धा करते हो और दुर्य्यो-धनके मतानुसार सदा हम लोगोंको पीड़न करते हो, अब तुम्हारा जितना बलवीर्य्य और हमलोग पर जितनी विद्वेष बुद्धि हो पौरुष अवलम्बन करके प्रकाश करो। हम आज तुम्हारी रणवासना निःशेषित करेंगे, यह कहके धर्मराजने दश बाणसे कर्णको विद्ध किया। कर्णनेभी हास्य करके दश-बाणसे उनको विद्ध किया। धर्मराज विद्ध होकर उसकी अवज्ञा प्रदर्शन पूर्वक हुताशनके समान क्रोधसे अधीर हो गए तब तो धर्मराजने सूतपुत्रके विनाश वासनासे सुवर्ण-

भूषित महा कोदण्ड विस्फारित करके उसपर पर्वतविदारण-क्षम शाणित यमदण्ड सदृश शरसंयोग और आकर्ण आकर्षण पूर्वक कर्णके प्रति निक्षेप किया। वह शर कर्णके वाम पार्श्वमे प्रविष्ट होनेसे वह अति कातर और विकलाङ्ग होकर रथ पर शरासन परित्याग पूर्वक मूर्छित हुए। यह देख कौरव सैन्यमें महा हाहाकार उत्थित हुआ। पाण्डवगण सिंहनाद परित्याग और किलकिला शब्द करने लगे। तब शीघ्रही महावीर कर्ण संज्ञालाभ करके धर्मराजके निधनार्थ कृतसंकल्प हुए और कनकमय शरासन विस्फारित करके युधिष्ठिर पर निशित शर परित्याग करने लगे। उस समय धर्मराजके चक्ररक्षक चन्द्रदेव और दण्डधार शशधरको क्षुर द्वारा कर्णने निहत किया। अनन्तर धर्मराजके रक्षार्थ समस्त वीरगण कर्णके प्रति धावमान होय अनवरत शरवर्षण करने लगे।

महावीर कर्ण पाण्डवपक्षीय वीरगणसे परिवेष्टित होय ब्रह्मास्त्रका आविर्भाव करके शर वर्षण करने लगे। और शररूप अग्निशिखा द्वारा पाण्डवसैन्यरूप वन दग्ध करके चतुर्दिक् भ्रमण करने लगे। अन्तको महास्त्र सन्धान पूर्वक ईषद् हास्य करके धर्मराजका कोदण्ड द्वि खण्ड कर डाला। और नतपर्व नवति बाण सन्धान पूर्वक उनका कनकमय कवच भेद किया। तब तो युधिष्ठिर कवचहीन और रुधिराक्त कलेवर होय क्रुद्ध होय सूतपुत्रके प्रति एक लौहमय शक्ति निक्षेप किया। कर्णने सात शरसे उसको छेदन कर डाला। तब युधिष्ठिरने कर्णके वक्षसे चार तोमर निक्षेप किया। कर्ण तोमराघातसे पीड़ित होय निश्वास परित्याग पूर्वक एक भल्लसे उनका ध्वज छेदन और तीन भल्लसे उनका देह विदारण पूर्वक उनकी तूणीर द्वय और रथ चूर्ण कर डाला। तब धर्म

नन्दन दूसरे रथ पर आरोहण पूर्वक समर परित्याग करके प्रस्थान करने लगे। तब कर्णने अच्छा वेगसे गमन पूर्वक कर द्वारा पाण्डुनन्दनका स्कन्धदेश स्पर्श करके बल पूर्वक ग्रहण करनेकी इच्छा किया, उस समय कुन्तीका वाक्य स्मरण हुआ।

हे महाराज! मद्रराज शल्यने कर्णको निषेध करके कहा, हे कर्ण! तुम इन प्रधानतम नरपतिको ग्रहण न करना। उनको ग्रहण करनेसे ही वह तुमको विनाश करके हमको भी भस्म सात् करेंगे। तब कर्ण हास्य पूर्वक युधिष्ठिरको निन्दा करके कहा, हे युधिष्ठिर! तुम क्षत्रिय कुलमें जन्म और क्षात्र धर्म अवलम्बन करके कैसे प्राणभयसे समर परित्याग करके पलायन करते हो? हम जानते हैं, कि तुम क्षात्रधर्म नहीं जानते हो? तुम नियतन वेदपाठ और यज्ञकर्मानुष्ठान करते हो, इससे तुमको युद्ध करना कर्तव्य नहीं है, अब संग्रामेच्छा परित्याग करो। अब वीरगणके निकट गमन करके अप्रिय वाक्य मत बोलना। अनन्तर कर्ण धर्मराजको यह कहके उनको परित्याग पूर्वक वज्रहस्त पुरन्दरके समान पाण्डव सैन्यको विनाश करने लगे। नरनाथ युधिष्ठिरभी लज्जितभावसे पलायन करने लगे। पाण्डव, पाञ्चाल, सात्यकि प्रभृति युधिष्ठिरको अपसृत देख कर सबही उनका अनुगमन करने लगे।

तब कर्णने पाण्डव सैन्यगणको समरपराङ्मुख अवलोकन करके कौरवगणके सहित उनके पश्चात् गमन करने लगे। कौरव सैन्यमें भयङ्कर सिंहनाद भेरी और शङ्खध्वनि होने लगी। तब राजा युधिष्ठिर कर्णका विक्रम अवलोकन करके अपनी सैन्यको विमर्दित देखकर क्रुद्ध होय योधगणसे बोले, हे वीरगण! तुम लोग क्यों निश्चिन्त हो? शीघ्र शत्रुगणको विनाश करो। यह सुन वीरगण कौरव सैन्य पर धावमान

हुए तब तो महाघोर युद्ध होने लगा। अन्तको सैन्यगण केशाकेशी, दन्तादन्ती, मुष्टामुष्टि, नखानखी और बाहुयुद्धमें प्रवृत्त हुए। उस समय भीमसेन सात्यकि प्रभृति वीरगण बारंबार धावमान होने लगे, उस समय आपके पुत्रगण वह धावमान वीरगणका पराक्रम सहन न कर सके अन्तको चर्म, कवच और आयुध विहीन हो कर चतुर्दिक् पलायन करने लगे।

इति ५० अध्याय।

हे महाराज! उसी समय राजा दुर्य्योधन अपनी सैन्यको विद्रावित देख प्रयत्नसे चीत्कार करके उनको निवारित करने लगे। परन्तु वे लोग निवारित न हुए। अनन्तर कौरवगण अस्त्र शस्त्र धारण पूर्वक भीमके प्रति धावमान हुए। कर्णने दुर्य्योधन सहित कौरवगणको धावमान देख कर शल्यसे कहा हे मद्रराज! हमको तुम भीमके निकट उपस्थित करो। अनन्तर वे लोग भीमके निकट उपस्थित हुए। कर्णको आगत देख भीमने सात्यकि और धृष्टद्युम्नसे कहा। हे वीरद्वय! आप लोग धर्मराजको रक्षा करो। दुरात्मा सूतपुत्रने उनका परिच्छद छिन्न भिन्न कर दिया था, भाग्यहीसे हमने देख तो किञ्चित् परित्राण प्राप्त हुए। इससे आज हमको एकही वार इस लोभको शेष करना होगा, हे वीरगण! आज हम धर्मराजको आप लोगके हाथ समर्पण किया, आप लोग सावधान होय इनकी रक्षा करो, महावीर भीम यह कहके सिंहनादसे दशदिक् प्रतिध्वनित करके सूतपुत्रके प्रति धावमान हुए।

मद्रराज भीमसेनको आते देख बोले, हे सूतपुत्र! वह देखो भीमसेन क्रोध भरे महावेगसे चले आते हैं। ये आज

निःसन्देह तुम पर चिरसंचित क्रोधाग्नि निक्षेप करेंगे। इस समय इनका रूप कृतान्तके समान भयंकर देख पड़ता है, अभिमन्यु और घटोत्कचके निहत होनेसेभी इनका ऐसा भयंकार न देखा था इनके रोषाविष्ट होनेसे त्रिलोकस्थ समस्त लोग निवारण हो सकते हैं।

इतना कहते ही भीमसेन वहां आय हुवे। समरलोलुप भीमको आते देख कर्ण बोले हे मद्रराज! तुमने भीमसेनकी जो बाते कही सो सब सत्य है, हे शल्य! अर्जुन हमको अथवा हम अर्जुनको संहार करें यही हमारी चिर प्रार्थना है, आज क्या भीमके समागमसे हमारी वही मनोरथ सफल होगा? भीमके निहत वा विरथ होनेसे धनञ्जय हमसे युद्धको आवे तो हमारा मनोरथ पूर्ण होय। हे मद्रराज! अब जो कर्तव्य होय सो अवधारण करो।

शल्य बोले हे कर्ण! तुम अभी भीमसे युद्ध करो, पहिले भीमको पराजय करोगेतो अर्जुनको प्राप्त होगे, हम निश्चय कहते है कि तुम्हारा मनोरथ आज पूर्ण हो जागा। अनन्तर कर्णके आज्ञानुसार शल्यने भीमसेनके निकट जहां वह कौरव सैन्यको विद्रावित कर रहे थे रथको शीघ्रही वहां लेगये। और भीमसेन और कर्णसे महाघोर संग्राम होने लगा। सूतपुत्रने क्रोधभरे नाराच द्वारा उनका वक्ष आहत करके शरनिक्षेप करने लगे। भीमसेन विद्ध हो कर नव बाणसे कर्णको विद्ध किया। कर्णने शराघातसे भीमका शरासन छेदन करके तीक्ष्ण नाराचसे उनका वक्ष विद्ध किया। तब भीमसेनने अन्य कार्मुक ग्रहण करके निशित शरसे कर्णका मर्मस्थल विद्ध किया। तब कर्णने अरण्यमे मदोत्कट, गर्वित कुञ्जरको जैसे उल्काद्वारा आहत करे, उद्रूप पचीस नाराच भीमसेनको आहत किया। भीमसेन कर्णके

क्रोध रोषभरे कर्णके संहारवासनासे शरासन आकर्षण करके उन पर एक पर्वत-विदारणक्षम सायक सन्धान करके परित्याग किया। तब तो वज्रवेग जैसे पर्वतको विदीर्ण करे तद्रूप वह भीषण बाणने कर्णको विदीर्ण कर लगा। तब कर्ण गाढ़तर विद्ध और विमोहित हो कर रथ पर संज्ञाहीन हो गये, यह देख मद्रराजने उनको शीघ्रही रणस्थलसे अपसारित किया। महाराज! इसी प्रकारसे कर्णको पराजय करके भीमसेनने कौरव सैन्यको पूर्वमें जैसा विद्रावित किया था तद्रूप विद्रावित करने लगे।

इति ५१ अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले, हे संजय! दुर्य्योधनने कर्णको पराजित देख क्या किया? सो कहो।

सञ्जय बोले, महाराज! दुर्य्योधनने कर्णको समरविमुख देख सहोदरगणसे बोले, हे भ्रातृगण! तुमलोग शीघ्र गमन करके राधेयकी रक्षा करो। राजाज्ञा पाय आपके पुत्रगण पतङ्गगण जैसे पावकके प्रति आगमन करे तद्रूप भीमसेनके प्रति धावमान होय उनको वेष्टन करके शरद्वारा निपीड़ित करने लगे।

तब भीमसेनने आपके पुत्रगणसे निपीड़ित होय शीघ्रही पञ्चदश रथी और पञ्चाशत रथ विनष्ट करके भल्ल द्वारा विवित्सूका कुण्डलमण्डित पूर्णचन्द्र सन्निभ मस्तक छेदन कर डाला। यह देख अन्यान्य पुत्रगण भीमके प्रति धावमान हुए। तब भीमसेनने दय भल्लद्वारा विकट और समये दोनो आपके पुत्रोंका प्राणसंहार कर डाला। वे देवपुत्र सदृश वीर-द्वय वायुभग्न वृक्षके समान धराशायी हुए।

अनन्तर महाबाहु भीमसेनने शीघ्रही तीक्ष्ण नाराच द्वारा

क्राथको निहत करके भूतलमे पातित किया। हे महाराज इसी प्रकारसे आपके धनुर्धर पुत्रगणके निहत होनेसे समराङ्गणमे महान् हाहाकार शब्द होने लगा। अनन्तर वृकोदरने नन्द और उपनन्दको निपातित किया। यह देख आपके पुत्रगण भीमसेनको कालान्तक यमके समान देख कर अति भीत और विह्वल होय पलायन करने लगे।

हे महाराज! उस समय कर्ण आपके पुत्रगणको निहत देख अति दुर्मना होय पुनर्वार भीमसेनके निकट रथ चालना करनेको आज्ञा दी। मद्रराजने रथ चालन करके शीघ्रही भीमके निकट उपस्थित किया। अनन्तर कर्ण और भीमसे भयंकर युद्ध होने लगा। हे महाराज! हम उस समय कर्ण और भीमका युद्ध देख कर मनमे चिन्ता करने लगे। न जाने आज ये दोनो वीरसे कैसा युद्ध होगा? अनन्तर भीमसेन आपके पुत्रगणके समक्ष कर्णको शरनिकरसे आच्छन्न करने लगे। कर्ण भीमके शराघातसे क्रोधन्वित होय भल्ल द्वारा भीमका शरासन छेदन कर लगा। तब भीमसेनने यमदण्डसदृश परिघ ग्रहण करके निक्षेप किया। कर्णने तत्क्षणात् शरद्वारा परिघको खण्ड खण्ड कर डाला। तब भीमसेनने दृढ़ शरासन ग्रहण पूर्वक कर्णको विशिख जालसे समाच्छन्न कर डाला। अनन्तर कर्ण रोषाविष्ट होय शर द्वारा भीमसेनको विद्ध करके एक वाणसे उनका ध्वज छेदन और भल्ल द्वारा सारथीको यमालय प्रेरण किया। और एक मुहूर्तमे उनका शरासन छिन्न और रथ भग्न करके हास्य करने लगे। तब भीमसेन गदाग्रहण पूर्वक भग्न रथसे अवतीर्ण होय गदा प्रकारसे कौरव सैन्यको विद्रावित कर डाला। और सप्त शत मातङ्गगणको विद्रावित करके उनका दन्तवेष्टन, नेत्र, कुम्भ, गण्ड और मर्ममे अतिशय आघात करके

वही सप्तशत मातङ्गको निहत कर डाला। अनन्तर भीमसेन शकुनिका छिपंचाशत् हस्ती विपोथित करके कौरवपक्षीय एकशत रथ और शत शत पदातिको संहार पूर्वक सैन्यगणको निपीड़ित करने लगे। हे महाराज! आपको सेनागण इसी प्रकारसे भीमके प्रभावसे और सूर्य्यके प्रतापसे अति सन्तप्त होय भीमभयसे समर परित्याग पूर्वक पलायन करने लगे। अनन्तर पञ्चशत रथी शर निक्षेप द्वारा भीमसेनको बिद्ध करने लगे। तब महावीर वृकोदरने गदाघातसे उन वीरगणको निपातित कर डाला। अनन्तर शकुनिके आदेशसे तीन सहस्र आश्वारोही वृकोदरके प्रति धावमान हुए। यह देख भीमसेनने महावेगसे उनके अभिमुखीन होय विविध मार्गसे विचरण पूर्वक गदा प्रहारसे उन लोगको विमर्द्दित कर डाला। आपके सैन्यमे महा आर्त्तनाद होने लगा। हे महाराज! अनन्तर भीमसेन अन्यरथ पर आरोहण करके महावेगसे कर्णके प्रति धावमान हुए।

उसी समय कर्णने युधिष्ठिरको शरनिकरसे आच्छन्न और उनके सारथीको निपातित किया। तब युधिष्ठिर कर्णका रथ अवलोकन करके पलायन करने लगे। कर्णभी वाणवर्षण करते उनके पश्चात् पश्चात् धावमान हुए। यह देख भीमसेन कर्णको शरनिकरसे समाच्छन्न करने लगे। तब कर्ण तत्क्षणात् प्रतिनिवृत्त होय शाणित शरजालसे भीमको आच्छन्न कर दिया। अनन्तर महारथ सात्यकि कर्णको शरद्वारा बिद्ध करने लगे। कर्ण शरनिपीड़ित होकर भीमसे युद्ध करने लगे। उसी समय कौरवगण, शकुनि, क्रतवर्मा, अश्वत्थामा, और कृपाचार्य्य, कर्णको पाण्डवगणसे युद्ध करते देख पुनर्वार संग्रामार्थ आगमन करने लगे। उस समय महावृष्टिसमुद्भूत सागरके समान तुमुल कोलाहल होने लगा। उभयपक्षीय सेना-

गण परस्पर मिलित होने लगी। हे राजन्! उस अध्याह्न के समय उभयपक्षमें जैसा संग्राम हुआ था तद्रूप कभी हम लोगके दृष्टि वा श्रवणगोचर हुआ नहीं। वेगवान् जलराशि जैसे सागरमे मिलित होय वैसाही कौरवसेना पाण्डवसैन्यसे मिलित हुई, इसी प्रकारसे उभयपक्षीय सेना नदीद्वय एकत्र समवेत होने पर परस्पर निक्षिप्त शरजालसे तुमुल शब्द होने लगा।

अनन्तर यशलोलुप कौरव और पाण्डवगणमे तुमुल युद्ध आरम्भ हुआ। उभयपक्षीय वीरगण परस्पर नामोच्चारण पूर्वक अविश्रान्त विविध वाक्य प्रयोग करने लगे। जिस मनुष्यका पितृगत, मातृगत, कर्मगत वा स्वभावगत जो कुछ दोष था प्रतिपक्षगण वह सब श्रवण कराने लगे। हे महाराज! हम उस समय वीरगणको परस्पर गर्जन करते देख उन लोगोंको हतजीवित ज्ञान करने लगे, और वही अमित तेजा वीरगणका शरीर सन्दर्शन पूर्वक भीत होय चिन्ता करने लगे। न जाने आज क्या काण्ड उपस्थित होगा। अनन्तर महारथ पाण्डव और कौरवगण निशित शरनिकरसे परस्पर निपीड़ित और क्षतविक्षत करने लगे।

इति ५२ अध्याय।

हे महाराज! जयाभिलाषी क्षत्रियगणके परस्पर युद्ध और विनाश करनेसे संग्रामस्थल पशुविनाशस्थलके समान दृष्टिगोचर होने लगा। उस समय चतुर्दिक् रुधिराक्त होनेसे वसुन्धरा कुसुम्भरागरञ्जित वसनधारिणी युवती कामिनीके समान शोभित होने लगी। मातङ्गगण परस्पर दन्ताघातसे विदीर्ण और रुधिराक्त कलेवर होय धातुधारास्रावी गैरिक पर्वतके समान शोभमान हुए। कोई कोई हस्ती नाराचास्त्रसे

छिन्नवर्म होय छिन्नागजमे मेघ निर्मुक्त महीधरकी समान और सुवर्ण पुंख शरनिकरसे चित्रित होय उसका प्रदीप्त पर्वतशृङ्गकी समान शोभा धारण करने लगे। सुवर्णभूषण-विभूषित अश्वगण शरनिकर द्वारा निपीड़ित होय अवसन्न, म्लान और उद्भ्रान्त हो गये। कितने अश्वगण शर और तोमराघातसे भूतलमें निपतित होय नानाप्रकार अङ्गभङ्गि करने लगे। शस्त्राघातसे मानवगण भूतलमें निपतित होय कोई कोई पिता, पितामह और बंधुगणको और कोई कोई धावमान आरातिगणको अवलोकन करके परस्पर विख्यात नाम और गोत्र पूछने लगे। उनका सुवर्णभूषणालंकृत छिन्न बाहु सब कभी उद्भ्रान्त, कभी विचेष्टित, कभी पतित, कभी उत्थित और कभी कम्पित होने लगा और कितने पञ्चमुख पन्नगकी समान वेगसे विलुण्ठित हुए।

हे महाराज! इसी प्रकार घोरसंग्राम उपस्थित होनेसे धूलिपटल और शरनिकरसे चतुर्दिक् आच्छन्न हो गया किसी कोभी आत्म और पर विवेचना न रही, उस घोर संग्राममें वारंवार शोणितनदी प्रवाहित होने लगी। मस्तक सब पाषाण, केशकलाप शैवाल, अस्थि मीन, शर शरासन भेला, और मांस सङ्कस्वरूप हुए। अनेकानेक धीर वह भीरुजन विलासक और शूरजन हर्षवर्द्धन नदीमें निमग्न होय प्राण-त्याग करए लगे। चतुर्दिक्से क्रव्यादगण घोर निनाद करने लगे। रणस्थल यमालयकी समान भयानक हो गया, चतुर्दिक्से असंख्य कबन्ध उत्थित हुए। हे महाराज! इसी प्रकारसे वह घोर युद्ध होने पर कौरवसेना समुद्रस्थ भग्न तरीकी समान अवसन्न हो गई।

इति ५२ अध्याय।

हे महाराज ! वही क्षत्रियक्षयकारक भीषण युद्धके समय जहां धनञ्जय संसप्तक, कोशल और नारायणीसेनाको विनाश कर रहे थे, वहां गाण्डीव निर्घोष श्रवणगोचर हुआ। तब संसप्तक रोषाविष्ट और जयाभिलाषी होय चतुर्दिकसे धनञ्जय पर शर वर्षण करने लगे। तब धनञ्जयने उनका शरधारा निवारित करके शरनिकर द्वारा सैन्यगणको मर्द्दित करते महावीर सुशर्माको आक्रमण किया। महारथ सुशर्मा और संसप्तकगण धनञ्जय पर वाण वर्षण करने लगे, अनन्तर सुशर्माने जनार्दनकी दक्षिण भूजपर तीन वाण निक्षेप करके एक भल्ल द्वारा धनञ्जयका रथकेतु विद्ध किया। धनञ्जयके ध्वजस्थित वानर आहत होय महागर्जन करने लगे, उस भीषण रवसे आपकी सैन्यगण भयविह्वल और निश्चेष्ट हो गये। अनन्तर योधगणने संज्ञा लाभ करके जलदावली जैसे पर्वत पर वारिवर्षण करे तद्रूप धनञ्जय पर वाण वर्षण करके उनके विपुल रथको परिवेष्टन कर लिया। अनन्तर वे लोग धनञ्जयके शरनिकरसे निपीड़ित और रोषाविष्ट होय चतुर्दिकसे धनञ्जयका अश्व, रथचक्र, और रथ आक्रमण करके सिंहनाद करने लगे। उसी समय अनेक वीरगणने केशवका भुजद्वय और किसी किसीने महा आह्लादसे रथस्थित धनञ्जयको धारण कर लिया। तब महात्मा हृषिकेश महावेगसे बाहु विकम्पित करके वीरगणको भूतलमें पातित कर दिया। महावीर अर्जुननेभी वे महारथगणसे अपनेको परिवृत, रथ निगृहीत और केशवको उपद्रुत अवलोकन करके रोषाविष्ट होय रथारूढ़ बहुसंख्यक पदातिगणको अधःपातित औ शर द्वारा आच्छन्न करके कृष्णसे बोले हे वासुदेव ! दुष्कर कार्य्यमे प्रवृत्त असंख्य संसप्तक विनष्ट हुए। यह कहके अर्जुन देवदत्त शंख वादित करने लगे। शंखध्वनि श्रवण करके संसप्-

कगण भीत होय पलायन करने लगे। तब अर्जुनने नागास्त्र निक्षेप करके संसप्तकगणका गति रोध करदिया। वे लोग अचलकी समान निश्चल हो गये। तब तो अर्जुनने निश्चेष्ट योधगणको यमालय प्रेरण करने लगे। हतावशिष्ट योधगण अति पीड़ित होय अस्त्रशस्त्र परित्याग करके पलायन करनेकी चेष्टा करने लगे, परन्तु नागास्त्रकी प्रभावसे आसक्त हो गये। अनन्तर महारथ सुशर्मीने हतावशिष्ट सैन्यगणको निगृहीत देखकर गरुड़ास्त्र द्वारा उनको नागास्त्रसे विमुक्त कर दिया। तब तो अर्जुन वाणद्वारा सुशर्मा और सैन्यगणको निपीड़ित करने लगे। यह देख सुशर्मा क्रुद्ध होय एक आनतपर्व शर द्वारा धनञ्जयका वक्ष बिद्ध करके पुनर्वार तीन वाणसे बिद्ध किया। सुशर्मीके वाणाघातसे धनञ्जय अति व्यथित होय रथ पर मूर्च्छित हो गये। उस समय कौरवपक्षीय योधगण "अर्जुन निहत हुए" यह कहके चीत्कार और सिंहनाद करने लगे। अनन्तर महावीर धनञ्जयने संज्ञा लाभ करके शीघ्रही ऐन्द्रास्त्र आविर्भूत किया। उसके प्रभावसे सहस्र सहस्र सैन्यगणको विनाश करने लगा। तब तो संसप्तक और गोपालगण अति भीत होय कोई धनञ्जय पर शरक्षेप न कर सके। अर्जुन वीरगणके संमुखही सैन्यगणको विना करने लगे। हे महाराज! महावीर धनञ्जयने उस युद्धमें अयुत रथी, चतुर्दश सहस्र सैन्य और तिन सहस्र कुञ्जरको निहत करके धूमहीन प्रज्वलित पावकके समान शोभित होने लगे।

इति ६४ अध्याय।

हे महाराज! उसी समय कृतवर्मा, कृप, अश्वत्थामा, कर्ण, उलूक, सौवल और भ्रातृगण परिवेष्टित राजा दुर्य्योधन

समुद्रमध्यस्थ भग्ननौकाके समान स्वपक्षीय सैन्यगणको पाण्डव भयसे व्याकुल देख उनकी रक्षा करनेको धावमान हुए। अनन्तर क्षणकालहीमें महाभयङ्कर युद्ध होने लगा, कृपाचार्य्य सृञ्जयगणको शर वर्षण करके निपीड़ित करने लगे। यह देख शिखण्डी उनको निवारण करने लगे। अनन्तर कृपाचार्य्य और शिखण्डीसे महायुद्ध होने लगा। अनन्तर शिखण्डीको कृपशरसे आच्छन्न देख धृष्टद्युम्न कृपाचार्य्य पर धावमान हुए। राजा युधिष्ठिरको अश्वत्थामा निवारण करने लगे, दुर्य्योधनने नकुल और सहदेवको आक्रमण किया। कर्ण भीमसेनको निवारण करने लगे। अनन्तर शिखण्डीको क्लिष्ट देख चित्रकेतु पुत्र सुकेतु कृपाचार्य्यके प्रति बाणवर्षण करने लगे, उसी अवसरमें शिखण्डी पलायित हुए। तब कृपाचार्य्यने त्रिंशत बाण द्वारा सुकेतुका मर्म्मभेद करके उनका कुण्डलशोभित मस्तक छेदन कर डाला। अनन्तर सुकेतुका कलेवर भी रथसे धरातल पर गिरा। सुकेतुके निहत होनेसे उनके सैन्यगण पलायन करने लगे। इधर कृतवर्मा धृष्टद्युम्नसे महा घोरयुद्ध करने लगे, अनन्तर धृष्टद्युम्नने एक भल्ल द्वारा उनके सारथीको निपातित किया। हे महाराज! इसी प्रकारसे धृष्टद्युम्न अरातिगणको पराजित करके कौरवगणको निवारण करने लगे। कौरवगणभी सिंहनाद करते धावमान होय पुनर्व्वार युद्ध करने लगे।

इति ५५ अध्याय।

हे महाराज! अश्वत्थामा राजा युधिष्ठिरको अस्त्र द्वारा आच्छन्न और पाण्डवसैन्यको निपीड़ित करने लगे। अनन्तर

सात्यकि, युधिष्ठिर पाञ्चाल और द्रौपदीतनयगण अश्वत्थामा शरसे अपने सैन्यगणको बध्यमान देख उनको चतुर्दिक्से वेष्टन करके शर द्वारा बिद्ध करने लगे। अनन्तर अश्वत्थामा जैसे तृणराशिको भस्म करे तद्रूप पाण्डवसैन्यको दग्ध करने लगे। उस समय सबही द्रोणपुत्रका पराक्रम देखके पाण्डवको निहत ज्ञान करने लगे।

अनन्तर धर्मराज युधिष्ठिर रोषाविष्ट होय बोले, हे गुरुपुत्र! आज तुम हम लोगोंको संहार करनेका अभिलाष करते हो तो निश्चय होता है कि तुम्हारे अन्तःकरणमें प्रीत और कृतज्ञताका लेशभी नहीं है। देखो तपोनुष्ठान, दान और अध्ययनही ब्राह्मणका कार्य्य है और धनुर्द्धारण क्षत्रियका, इससे तुम ब्राह्मणकुलमें उत्पन्न होय धनुर्द्धारण करते हो तुम नाममात्रके ब्राह्मण हो जो होय हे ब्राह्मणाधम! आज हम तुम्हारे संमुख कौरवगणको पराजय करेंगे तुम अब संग्राममें प्रवृत्त हो।

हे महाराज! यह सुन अश्वत्थामा हास्य करके प्रकृत तत्त्वज्ञानमें कुछ उत्तर न दे कर अनवरत शरनिकरसे शत्रु संहार करने लगे। अनन्तर धर्मराजने कौरवसैन्य संहारार्थ वहांसे प्रस्थान किया, अश्वत्थामानेभी युधिष्ठिरको प्रतिनिवृत्त देख वहांसे गमन किया

इति ५६ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर महारथ कर्णने भीम और धृष्टद्युम्नको स्वयं अवरोध करके शरनिकर द्वारा निवारण किया। और उनके संमुख सैन्यगणका विनाश करने लगे। तब भीमने कर्णको परित्याग करके कौरवसैन्यको संहार करने

लगे। उसी समय महावीर धनञ्जय संसप्तकगणको विनाश करने लगे। हे महाराज! इसी प्रकारसे वह तीनो महारथ सैन्यगणको विनष्ट करने लगे। अनन्तर राजा दुर्य्योधन और नकुल सहदेवसे महा घोर युद्ध होने लगा। अनन्तर धृष्टद्युम्न नकुल सहदेवको अतिक्रम करके राजा दुर्य्योधनसे युद्ध करने लगे, अनन्तर धृष्टद्युम्नने दुर्य्योधनको जर्जर और विरथ कर दिया यह देख उनके भ्रातृगण उनकी रक्षा करने लगे, अनन्तर राजा दण्डधार दुर्य्योधनको अपने रथ पर आरोपित करके वहांसे अपसृत हुए।

इधर महावीर कर्ण सात्यकीको पराजय करके द्रोणघाती धृष्टद्युम्नके प्रति धावमान हुए। और सात्यकीभी सूतपुत्रके पश्चाद्भाग पर निक्षेप करते उनका अनुगमन करने लगे। तब और धृष्टद्युम्नसे घोर संग्राम होने लगा। कौरव और पाण्डव पक्षीय कोई वीरभी उस समय समरपरांमुख न हुए। अनन्तर महावीर कर्णने शीघ्रही पांचालगणके प्रति धावमान हुए। और शराघात द्वारा व्याघ्रकेतु, सुशर्म्मा, चित्र, उग्रायुध, जय, शुक्ल, रोचमान और सिंहसेनको निहत किया। तदनन्तर जिष्णु, जिष्णुकर्म्मा, देवापि, भद्र, दण्ड, चित्रायुध, चित्र, हरि, सिंहकेतु, रोचमान और शलभ और चेदीदेशीय बहुसंख्यक महारथका विनाश किया। और बहुतर हस्तीगण कर्ण शर निहत होय वज्रविदलित अचलके समान धरातल पर निपतित होने लगे। निहत हस्ती, अश्व और मनुष्यगणके देहसे कर्णका गमनपथ समाकीर्ण हो गया था। महावीर कर्णने उस समय जो कार्य्य किया भीष्म द्रोणनेभी वैसे कार्य्यका अनुष्ठान किया था। मनुष्यगण जैसे अग्निउत्तापसे दग्ध हों वैसेही पाण्डवसैन्य कर्णके शरानलसे दग्ध होने लगे।

यह देख धृष्टद्युम्न प्रभृति समस्त वीरगण कर्ण प्रति धावमान होय उनको वेष्टन करके शर प्रहार करने लगे, गरुड़ जैसे सर्पको आक्रमण करे तद्रूप कर्णने एकाकी समस्त चेदी पाञ्चाल और पाण्डवगणको आक्रमण किया। अनन्तर देवासुर सदृश घोर संग्राम उपस्थित हुआ। दिवाकर जैसे अन्धकारको निरास करते हैं, तद्रूप महावीर कर्ण एकच समवेत शरवर्षी वीरगणको पराभूत करने लगे। उसी समय महाबली भीमसेन कर्णको युद्ध करते देख क्रोधभरे शरजाल द्वारा कौरवसैन्यको संहार करने लगे, असंख्य रथी भीमभयसे भीत और पतितायुध होय प्राणपरित्याग पूर्वक भूतलमे निपतित हुए। दुर्योधनकी सेना भीमभयसे भीत, प्रभाहीन, उत्साहशून्य और दीनभावापन्न होय महासागरके समान स्तम्भित और निश्चेष्ट हो गई। हे महाराज! इसी प्रकारसे सूतपुत्र पाण्डवसैन्य और भीमसेन कौरवसैन्यगणको विद्रावित करने लगे।

हे महाराज! उसी समय अर्जुन बहुसंख्यक संसप्तकगणको निहत करके वासुदेवसे बोले, हे जनार्दन! अब यह बल तो छिन्नभिन्न हो गया। संसप्तकगण हमारा शर सहन करनेसे असमर्थ होय पलायन करते हैं और इधर सृञ्जयसैन्यगण कर्ण शर विदलित हुए हैं। वह देखो सूतपुत्र रणस्थलमे निर्भय विचरण करते हैं। कोईभी उनको निवारण करनेको समर्थ नही है, सो अन्यान्य वीरगणको परित्याग करके सूतपुत्रके निकट गमन करना कर्तव्य है अथवा आपको जो अभिरुचि हो सोई करो।

यह सुन वासुदेव हास्य करके बोले, हे अर्जुन! शीघ्रही कौरवसैन्यको विनाश करो। यह कहके वासुदेवने रथचालना करके आपके सैन्यमे प्रवेश किया। तब तो अर्जुन

रथ और अश्वगणको मर्दित करके पाशधारी यमके समान विक्रम प्रकाश करने लगे। यह देख दुर्य्योधनने पुनर्वार संस-प्तकगणहीको उनके अभिमुखीन होनेकी आज्ञा दी, तब तो संसप्तकगणने अर्जुनको वेष्टन करके बाणवर्षण करना आरम्भ किया। तब अर्जुनने अपनी उग्रता प्रदर्शन पूर्वक उन लोगोंको विनाश करने लगे।

हे महाराज! इसी प्रकारसे अर्जुनने दशसहस्र नरपा-लको निपातित करके शीघ्रही संसप्तकगणके प्रपक्षमें गमन गमन किया। संसप्तकगणका प्रपक्ष काम्बोजगण रक्षा करते थे। धनञ्जय वहां उपस्थित होय सैन्यगणको प्रमथित करने लगे। भल्लद्वारा आततायी अरातिगणका बाहु और मस्तक छेदन कर डाला। वे लोग अर्जुनबाणसे अङ्ग प्रत्यङ्ग विहीन औ आयुधशून्य होय भूतलमें निपतित हुए। उसी समय काम्बोजराज सुदक्षिणका कनिष्ठ भ्राता उन पर बाण वर्षण करने लगा। अर्जुनने तत्क्षणात् दोनो अर्द्धचन्द्र बाणसे उनकी दोनो भुजा और क्षुरद्वारा मस्तक छेदन कर डाला। अनन्तर महा अद्भुत घोर युद्ध होने लगा। अर्जुनके एक एक बाणसे अनेकानेक अश्व निहत हो कर रुधिराक्त कलेवर होनेसे सबही लोहितवर्ण हो गये, उसी समय अश्व सारथी विहीन रथी, आरोहीशून्य अश्व, महामात्रहीन हस्ती और हस्तिविहीन महामात्रगण परस्पर संहार करनेको प्रवृत्त होनेसे घोरतर जनक्षय हो गया।

इसी प्रकारसे संसप्तकगणका पक्ष और प्रपक्ष विनष्ट होने पर महावीर अश्वत्थामा शीघ्रही धनञ्जयके अभिमु-खीन हुए। पाण्डवसैन्य उनके बाणसे आहत होय चतु-र्दिक् धावमान हुए। अनन्तर अश्वत्थामा धनञ्जय पर अन-वरत शरधारा वर्षण करने लगे। उस समय प्रबलप्रताप

द्रोणतनयने तीक्ष्ण शरनिकरसे जगतरक्षक केशव और धनञ्जयको निश्चेष्ट कर दिया। यह देख सबही हाहाकार करने लगे। हे महाराज! उस युद्धमे अश्वत्थामाने जैसा पराक्रम प्रकाश किया वैसा पूर्वमे कभी नयनगोचर न हुआ था। उनकी शरासन ज्या मेघमध्यस्थित सौदामनीके समान शोभित होती थी। महावीर अर्जुन मुग्धके समान उस समय अपनेको पराक्रमहीन ज्ञान करने लगे। उस समय अश्व-त्थामाका मुखमण्डल और कलेवर अति दुर्निरीक्ष्य हो उठा था।

हे महाराज! उस समय वासुदेव रोषाविष्ट होय दीर्घ-निश्वास परित्याग और वारंवार अश्वत्थामा और धनञ्जय पर दृष्टिपात करके प्रणयवाक्य द्वारा धनञ्जयसे बोले, हे भ्रात! आज द्रोणपुत्रने तुमको अतिक्रम किया यह अति आश्चर्य है, आज क्या तुम्हारा बलवीर्य्य अवसन्न हो गया है? तुम्हारे हस्त वा रथमें क्या गाण्डीव विद्यमान नही है? तुम्हारे मुष्टि और बाहुद्वयमें क्या कुछ आघात हुआ है? आज क्यों द्रोणतनयको उद्दाम देखते हो? हे धनञ्जय! गुरुपुत्र जानके उसकी उपेक्षा न करना। यह उपेक्षाकी समय नहीं है।

हे महाराज! वासुदेव वाक्य श्रवण करके धनञ्जयने चतुर्दश शस्त्र ग्रहण पूर्वक द्रोणतनयका ध्वज, छत्र, पताका, रथ, शक्ति, गदा और शरासन छेदन कर डाला। और शीघ्रही शर द्वारा उनको विद्ध किया, महावीर अश्वत्थामा उसी प्रहारसे मूर्छित होय ध्वज यष्टि अवलम्बन करके रह गये। उनका सारथी उनको विसंज्ञ देख रथ लेकर अपसृत हुआ, उसी अवसरमें धनञ्जयने दुर्य्योधनके समक्ष आपकी असंख्य सेना विनाश किया। हे महाराज! आपहीके कुमन्त्रणासे यह घोर जनक्षय उपस्थित हुआ है। उसी समय क्षणकालमें महा-

वीर अर्जुनने संसप्तकगणको वृकोदरने कौरवगणको और कर्णने पाञ्चालगणको विमर्दित कर डाला। इसी प्रकारसे जनक्षयकारक घोर संग्राम उपस्थित होनेसे समराङ्गणमें चतुर्दिक् असंख्य कबन्ध उत्थित हुए। उस समय राजा युधिष्ठिर समरवेदनासे अति कातर होय समरस्थलसे एक क्रोश दूर पर गमन करके अवस्थिति करने लगे।

इति ५७ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर दुर्य्योधन कर्णके निकट जाय शल्य और अन्यान्य महारथगणको लक्ष्य करके बोले, हे कर्ण! आत्म सदृश वीरसे युद्ध करना क्षत्रियगणका प्रार्थनीय हैं, और इस समय वही उपस्थित है, ऐसे युद्धमें उनका स्वर्गद्वार स्वेच्छासे उद्घाटित होता इससे अब वीरगण पाण्डवगणको निपातित करके विशाल पृथिवी प्राप्त हों अथवा निहत हो कर वीरलोकको गमन करें।

यह सुन क्षत्रियगण आनन्दित होय सिंहनाद करने लगे, और अश्वत्थामा वीरगणको आह्लादित करके बोले, हे क्षत्रिय गण! हमारे पिता तुम लोगके समक्ष अस्त्र परित्याग पूर्वक धृष्टद्युम्नसे निहत हुए। हम उसी क्रोधसे और मित्रके हितसाधनार्थ प्रतिज्ञा करते हैं कि हम धृष्टद्युम्नको निपातित न करके कदाच वर्म परित्याग न करेंगे यदि हमारी यह प्रतिज्ञा मिथ्या होय तो हमको स्वर्ग लाभ न होगा। आज क्या भीम क्या अर्जुन जो कोई धृष्टद्युम्नकी रक्षा करेंगे उनको भी शरद्वारा निहत करेंगे। अनन्तर उभय पक्षीय वीरगण युद्धार्थ धावमान हुए। और महाघोर संग्राम उपस्थित हुआ।

इति ५८ अध्याय।

हे महाराज! उसी समय महावीर अर्जुन, कर्ण और भीमसेनके रोषान्वित होनेसे महासंग्राम उपस्थित हुआ। धनञ्जयने द्रोणपुत्रको परित्याग पूर्वक अन्यान्य महारथगणको पराजय करके वासुदेवसे बोले, हे कृष्ण! वह देखो पाण्डव सेना पलायन करती हैं। महावीर कर्ण हमारी सेनाको निपीड़ित कर रहे हैं। धर्मराज युधिष्ठिर वा उनका रथ दण्ड नेत्रगोचर नहीं होता हैं, दिवसका भागद्वय गत हुआ। अब एक भाग अवशिष्ट रह गया है। विशेष करके कौरव सैन्यमे कोईभी हमसे युद्ध करनेको प्रवृत्त नही होता। इस कारण अब आप हमारे प्रियसाधनार्थ युधिष्ठिरके निकट यात्रा करो। हम धर्मराजको कुशली देख कर पुनर्वार शत्रु-गणसे युद्ध करेंगे। यह सुन वासुदेवने तत्क्षणात् धर्मराजके अभिमुख रथ चालन किया।

उस समय महाराज युधिष्ठिरने सृंजयगणके सहित प्राण-पण करके कौरवगणसे युद्ध किया था। वासुदेव उसी संग्राम स्थलमे असंख्य वीरको निहत देख बोले, हे अर्जुन! वह देखो दुर्य्योधनहीके कारण यह महान् जनक्षय हुआ।

इति ५८ अध्याय।

हे महाराज! उस समय महावीर कर्ण और धृष्टद्युम्नसे महाघोर युद्ध होने लगा। अनन्तर महावीर सात्यकी अग्रवर्ती होय कर्णसे युद्ध करने लगे। इसी अवसरमे महावीर अश्व-त्थामा धृष्टद्युम्नके निकट उपस्थित होय बोले, रे ब्रह्मघातक! तुम क्षण काल यहां अवस्थान करो आज जीवितावस्थामे तू हमसे परित्राण न पावेगा। यह कहके अश्वत्थामाने प्राणपण करके धृष्टद्युम्नको शर निकरसे आच्छन्न कर दिया। पूर्वमे जैसे द्रोणाचार्य्यने धृष्टद्युम्नको अपना मृत्युस्वरूप जाना था, वैसाही

आज धृष्टद्युम्न अश्वत्थामाको देखने लगे। अनन्तर धृष्टद्युम्न आपनेको शस्त्रसे अवध्य विवेचना करके निर्भय अश्वत्थामाके अभिमुखीन हुए। अश्वत्थामाभी क्रोधभरे घनघन निश्वास परित्याग पूर्वक उन पर धावमान हुए। उस समय वही

दोनो वीर परस्पर निरीक्षण करते हुए क्रोधसे अधीर होगये। अनन्तर अश्वत्थामाने धृष्टद्युम्नसे कहा, हे पांचाल-तनय! आज हम तुमको निश्चयही यमालय प्रेरण करेंगे, पूर्वमे तुमने हमारे पिताको संहार करके जो पाप सञ्चय किया है, आज तुमको वही पापसन्ताप करेगा। रे मूढ़! यदि तुम आज पलायन न करो तो अवश्यही तुमको संहार करेंगे। यह सुन धृष्टद्युम्न बोले, हे द्रोणात्मज! हमारो असिने तुम्हारे पिताके वाक्यका जो उत्तर प्रदान किया था, तुम्हारे वाक्यकाभी वही प्रत्युत्तर प्रदान करेगा। हमने जब ब्राह्मणाधम द्रोणको विनाश किया तो तुमको क्यों नही विनाश करेंगे। यह कहके शरद्वारा अश्वत्थामाको विद्ध करने लगे। अश्वत्थामाभी क्रोधाविष्ट होय धृष्टद्युम्नको आच्छन्न कर डाला। अनन्तर दोनो महावीरसे महाघोर युद्ध होने लगा। अनन्तर महावीर अश्व-त्थामाने धृष्टद्युम्नको शस्त्र और रथहीन कर डाला। धृष्टद्युम्न असिचर्म ग्रहण करके रथसे अवतीर्ण होते थे कि इतनेमे भल्ल-द्वारा उसका असि दण्ड खण्ड खण्ड कर डाला। हे महाराज! इसी प्रकार धृष्टद्युम्न रथहीन और शस्त्रहीन होकेभी अश्व-त्थामा उनको किसी क्रमसेभी वाणद्वारा उनको निहत न कर सके। तब अश्वत्थामाने कार्मुक परित्याग पूर्वक भुजग लोलुप गरुड़के समान महावेगसे उनके प्रति धावमान हुए। यह देख वासुदेव अर्जुनसे बोले, हे सखे! वह देखो अश्वत्थामा धृष्टद्युम्नको संहार करनेके लिये प्राणपणसे यत्न करते हैं, सो इस समय तुम धृष्टद्युम्नको अश्वत्थामासे मोचन करो। नही

तो अवश्यही अश्वत्थामा उनको संहार करेंगे। यह कहके वासुदेवने शीघ्रही अश्वत्थामाके निकट रथ चालन किया। धनञ्जयको आवते देख अश्वत्थामा धृष्टद्युम्नके बध करनेको दृढ़तर यत्न करने लगे। अनन्तर अश्वत्थामा धृष्टद्युम्नको आकर्षण करते थे धनञ्जय यह देख उन पर शर निकर निक्षेप करने लगे गाण्डीवनिर्मुक्त शरनिकर वल्मीकान्तरगामी पन्नगके समान अश्वत्थामाके देहमे प्रविष्ट होने लगा। द्रोणतनय अर्जुनके शरसे गाढ़ बिद्ध होय धृष्टद्युम्नको परित्याग पूर्वक रथारोहण और कार्मुक ग्रहण करके धनञ्जयको शर द्वारा बिद्ध करने लगे। उसी अवसरमे सहदेवने धृष्टद्युम्नको अपने रथ पर आरोपित करके रणस्थलसे अपहृत ज़ुए।

अनन्तर द्रोणतनय और अर्जुनसे महाघोर युद्ध होने लगा। अनन्तर अर्जुनने काल सदृश एक नाराच द्वारा अश्वत्थामाको बिद्ध किया। अश्वत्थामा उससे बिद्ध और विह्वल होय रथ पर मूर्छित होगये। यह देख उनके सारथीने उनको रणस्थलसे अपसारित किया। तब सूतपुत्र क्रोधाविष्ट होय विजय शरासन आकर्षण और धनञ्जयको बारम्बार निरीक्षण करके उनसे वारंवार द्वैरथ युद्ध करनेकी वासना करने लगे। पांचालगण धृष्टद्युम्नको विमोचित और अश्वत्थामाको निपीड़ित देख वारंवार आनन्द चीत्कार और सिंहनाद परित्याग करने लगे। तब अर्जुन वासुदेवसे बोले, सखे! अब आप संसप्तकगणके निकट अश्व संचालन करो उन लोगका विनाश करनाही हमारा प्रधान कार्य्य है। यह सुन वासुदेव रथ संचालन करने लगे।

इति ६० अध्याय।

हे महाराज! उसी समय वासुदेव रथ चालन पूर्वक

बोले, हे धनञ्जय ! वह देखो महाधनुर्द्धरगण राजा युधिष्ठिरका विनाशार्थ उनका अनुगमन कर रहे हैं। युद्धदुर्म्मद पाञ्चाल-गण धर्मराजके रक्षार्थ उनके पश्चात् धावमान होते हैं। भ्रातृ-गणके सहित राजा दुर्य्योधनभी राजा युधिष्ठिरका अनुगमन करता है। वह देखो, अनल और पुरन्दर जैसे अस्तत हरणो-द्यत दैत्यगणको रोध करे तद्रूप महावीर सात्यकी और भीम-सेन धर्मराजविनाशार्थ गमनोद्यत कौरवसैन्यगणकी गति रोध करते हैं, परन्तु शत्रुगणकी संख्या अधिक है, इससे वीर द्वयको अतिक्रम करके समुद्र गमनोद्यत वर्षाकालीन जल-राशिके समान युधिष्ठिरके प्रतिगमन करते हैं। अब युधि-ष्ठिर दुर्य्योधनके आयत्त होनेसे वह कालग्रासमे पतित होते देख पड़ते हैं। इस समय कौरवगणके सैन्यको जैसा देखते हैं इससे निश्चय होता है कि, इन्द्रभी उनसे मुक्तिलाभ न कर सकते हैं। महाराज दुर्य्योधन, अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य और कर्ण इन लोग एक एकके वाणाघातसे पर्वतभी विदीर्ण हो जाता है। हे पार्थ ! राजा युधिष्ठिर आज एकवार कर्णसे पराभूत हो चुके हैं। इससे पुनर्वार वे लोग उनको निपीड़ित कर सकते हैं, इसमे सन्देह नहीं है। युधिष्ठिरने कर्णसे युद्ध किया था उस समय अन्यान्य वीरगणनेभी उनको प्रहार किया था, उपवासव्रतधारी युधिष्ठिर नियत क्षमा-गुणसे भूषित हैं, क्षत्रियजनोचित निष्ठुराचरण करनेको असमर्थ हैं, अब कर्णसे युद्ध करके उनके जीवन संशयारूढ़ हुआ है, हे धनञ्जय ! जब भीमसेन वारम्बार कौरवगणका सिंहनाद सहन कर रहे हैं, तो अवश्यही युधिष्ठिर पर कोई अमङ्गल घटना हुई है, इसमे सन्देह नहीं। वह देखो कर्ण युधिष्ठिरको निहत करो यह कहके कौरवगणको प्रेरण कर रहा है। महारथगण महास्त्र द्वारा आच्छन्न कर रहे हैं,

अब तो उनका रथकेतुभी नयनगोचर नहीं होता। निश्चयही वह कर्णशरसे छिन्न हुआ है। वह देखो मातङ्ग जैसे नलिनीवनको विदलित करे तद्रूप महावीर कर्ण नकुल, सहदेव, सात्यकि, शिखण्डी, धृष्टद्युम्न, भीमसेन, शतानीक और पाञ्चाल और चेदीगणकी समक्षही पाण्डवसेना विनाश कर रहा है। वह देखो तुम्हारे महारथगण रथ लेकर कैसे वेगसे धावमान हैं। मातङ्गगण कर्णशरसे निपीड़ित होय आर्तनाद करते पलायन कर रहे हैं। वह देखो पाञ्चालगण कर्णशरसे विद्रावित होय पुरन्दरविदलित दैत्यगणके समान चारदिक्में पलायन करते हैं। वह देखो कौरवगण राधेयका विक्रम दर्शन करके सिंहनाद परित्याग पूर्वक पाण्डव और सृञ्जयगणको विचासित कर रहे हैं, वह देखो चन्द्रोदयसे उदयाचल जैसा शोभे वैसाही आज महावीर कर्ण शोभमान हैं। वह शरासन विकम्पित करके तुम पर कटाक्ष करता है। निश्चयही कर्ण इधर आगमन करेगा, हे धनञ्जय! वह देखो कर्णको एकाकी देख दुर्योधन रथसैन्यके सहित आगमन करते हैं। इस समय तुम राज्य, यश और सुखलाभार्थी होय यत्न पूर्वक उनके सहित दुरात्मा कर्णको विनाश करो। इससे तुम इस समय अपनी पवित्रता और युधिष्ठिरके प्रति सूतपुत्रका क्रोध अनुधावन करके इस समय समुचित कार्य्यका अनुष्ठान करो। युद्ध करनेको कृतनिश्चय होय कर्णके प्रति गमन करो वह देखो वीरगण एकत्र मिलित हो कर तुम पर धावमान होते हैं, इससे अब तुम सूतपुत्रके निकट उपस्थित हो। हे धनञ्जय! इस समय तुमको एक मङ्गल समाचार करते हैं। वह देखो राजा युधिष्ठिर निरापद अवस्थिति करते हैं, भीमसेन और सात्यकि सेनामुख पर अवस्थित हैं, वह देखो भीमसेन और पाञ्चालगण शरवर्षण पूर्वक कौरव-

गणको विनाश कर रहे हैं। दुर्य्योधनके सेनागण भीम शरसे निपीड़ित होय समर परित्याग पूर्वक धावमान हो रही है, रथीगण पाञ्चालगणके विविध बाणसे निहत हो कर रथसे निपतित हो रहे हैं। पांचालगण भीमकी सहायतासे शत्रुबल विमर्दित करके सिंहनाद और शङ्खध्वनि कर रहे हैं, वह देखो कौरव सैन्य अधिकांश अवसन्न होगये हैं, रथीगण भयसे पलायन करते हैं। वह देखो भीमसेन शत्रु पराजय करके परितुष्ट होय सिंहनाद कर रहे हैं। हे अर्जुन! इस समय महावीर वृकोदर क्रुद्ध हो कर संग्राम कर रहे हैं, तो अब कौरवगणका सिंहनाद श्रुतिगोचर नहीं होता। दुर्य्यो-धनकी तीन अक्षौहिणी सेना भीमसेनके सम्मुख हुई थी, भीमसेनने रोषाविष्ट होय सबहीको निवारण किया। हे महाराज! अनन्तर महावीर अर्जुन भीमसेनका दुष्करकार्य्य अवलोकन करके निशित शरनिकर द्वारा अवशिष्ट सैन्यगणको विमर्दित करने लगे। संसप्तकगण अर्जुन शरसे निहन्यमान होय समर परित्याग पूर्वक दशदिक् पलायन करने लगे और बहुतेरे प्राण परित्याग पूर्वक शोक शून्य होगये।

इति ६१ अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! अनन्तर क्या हुआ? सो कहो, संजय बोले, महाराज! अनन्तर सूतनन्दन भीमसेनके प्रति धावमान हुए। और दुर्य्योधनने अपनी सैन्य पलायित देख यथोचित यत्नद्वारा उनलोगको सन्निवेशित करके पाण्डव-गणके प्रति यात्रा किया। अनन्तर पाण्डव पक्षीय वीरगण भी शत्रु सैन्य पर धावमान हुए। अनन्तर, पुनर्वार उभयपक्षीय वीरगणमे महाघोर युद्ध होने लगा। अनन्तर शिखण्डी कर्णसे

घोर युद्ध करने लगे, अन्तको कर्णने शिखण्डीको रथ और शस्त्रहीन कर डाला, तब तो शिखण्डी कर्ण शरसे निपीड़ित और भयसे विह्वल होय पलायन करने लगे, अनन्तर कर्ण पाण्डव सैन्यको निपातित करने लगे। अनन्तर धृष्टद्युम्न दुःशासनको निवारित किया, तब तो दोनो वीरसे महायुद्ध होने लगा। वृषसेन नकुलसे युद्ध करने लगे उसी समय अन्यान्य सैन्यगण समर परित्याग पूर्वक पलायन करने लगे। महावीर कर्ण दुर्य्योधन सैन्यको पलायित देख उनका अनुसरण करके बल पूर्वक निवारण करने लगे। यह देख नकुल कौरव गणके प्रति धावमान हुए, वृषसेनभी नकुलको परित्याग करके कर्णका रथचक्र रक्षा करने लगे। उसी समय सहदेव रोषाविष्ट उलूकको निवारण करके उनके चारो अश्व और सारथीको निपातित कर दिया, तब उलूक शीघ्रही रथसे अवतीर्ण होय त्रिगर्तसैन्यमे प्रविष्ट हुए। अनन्तर सात्यकि और शकुनिसे युद्ध होने लगा। सात्यकिने क्रुद्ध होय उनके सारथी और अश्वगणको निपातित करके उनको बाणसे विद्ध किया। तब तो शकुनि शीघ्रही उलूकके रथ पर आरोहण करके रण परित्याग पूर्वक पलायित हुआ। तब सात्यकि महावेगसे कौरवसैन्य पर धावमान हुए। कौरव पक्षीय सैन्यगण युयुधानके शरसे पीड़ित होय समर परित्याग पूर्वक पलायन करने लगे।

उसी समय दुर्य्योधन भीमसेनको निवारण करने लगे। भीमसेनने क्रुद्ध होय, एक मुहूर्तमे उनका रथ, ध्वज, अश्व और सारथीको ध्वंस कर दिया। यह देख पाण्डवसैन्यगण सिंहनाद करने लगे। कुरुराजने भीत होय पलायन किया। यह देख कौरव वीरगण भीमसेन पर धावमान हुए। इधर महावीर युधामन्युने कृपाचार्य्यको विद्ध करके उनका

शरासन छेदन कर डाला। तब कृपाचार्य्यने क्रुद्ध होय अन्य शरासन ग्रहण करके युधामन्युको ध्वज छत्र और सारथीको निपातित कर दिया, तब युधामन्यु भीत होय स्वयं रथचालन पूर्वक पलायित हुए। इधर उत्तमौजा कृतवर्माको विद्ध करने लगे। अनन्तर कृतवर्माने उत्तमौजाका हृदय विद्ध किया तो वह रथसे मूर्छित हो गये यह देख सारथीने उनका रथ अपहृत किया। अनन्तर समस्त कौरवसैन्य भीमसेनके प्रति धावमान हुए। अनन्तर भीमपराक्रम भीमसेन समस्त वीरगणको निवारित करके गजसैन्यको विद्रावित कर डाला। उस समय अनेक मातङ्गगण शरविद्ध और भयार्त होय रुधिर वमन पूर्वक पलायन करके धातुधारार्द्रधराधरकी समान शोभमान हुए। हे महाराज! उस समय हम लोगने देखा कि महावीर भीमसेन भीषण भुजङ्गसदृश भुजद्वय द्वारा शरासन आकर्षण करते हैं तो मातङ्गगण अशनिसदृश ज्या निर्घोष और तलध्वनि श्रवण करके मलमूत्र परित्याग करते पलायन करते थे। हे महाराज! उस समय भीमसेन एकाकी वह अद्भुत कार्य्यसम्पादन करके सर्वभूतनिहन्ता रुद्रकी समान शोभा पाने लगे।

इति ६२ अध्याय।

हे महाराज! महावीर धनञ्जय नारायणसञ्चालित रथ पर आरोहण करके समीरण जैसे महासागरको क्षुभित करे वैसही कौरवसैन्यको आलोड़ित करने लगे। उसी समय दुर्य्योधन धनञ्जयको युधिष्ठिरकी रक्षा करते देख अपना अर्द्धांश सैन्य ले कर धर्मराजके निकट गमन करके उनसे युद्ध करने लगा। तब राजा युधिष्ठिरने क्रोधाविष्ट होय दुर्य्योधन पर भल्लास्त्र परित्याग किया। उसी समय कौरवगण धर्मराजको

ग्रहण करनेके अभिप्रायसे धावमान हुए। नकुल, सहदेव और धृष्टद्युम्न शत्रुगण का दुष्ट अभिप्राय जानके युधिष्ठिरकी रक्षाके लिये अक्षौहिणी सेनाके सहित और भीमसेनभी शत्रुसैन्य विमर्दित करते हुए युधिष्ठिरके निकट गमन करने लगे। महारथ कर्ण उनको आगमन करते देख शर द्वारा निवारण करने लगे, वे लोगभी अनवरत शरजाल प्रयोग करने लगे, परन्तु सूतपुत्रको निवारित न कर सके। तब तो पुनर्वार महाघोर युद्ध होने लगा। अनन्तर कर्ण शर-द्वारा पाञ्चाल और पाण्डवसैन्यको निपीड़ित करके महास्त्र प्रदर्शन करने लगे। हे महाराज! इसी प्रकारसे सूतपुत्र शर द्वारा समस्त सैन्यको विमोहित करके धर्मराज युधिष्ठिरको निपीड़ित करने लगे। और धर्मराजभी शर द्वारा कर्णको विद्ध करने लगे। अनन्तर धर्मराज युधिष्ठिर सूतपुत्र निक्षिप्त भल्ल द्वारा अति निपीड़ित होय रथमें उपवेशन पूर्वक शीघ्रही सारथीको अपसारित करनेकी आज्ञा दिया, तब कौरवगण "धर्मराजको ग्रहण करो" वारंवार चीत्कार करके उनके प्रति धावमान हुए। तब तो पाञ्चाल औ कैकेयगण उनको निवारण करने लगे। अनन्तर दुर्य्योधन और भीमसेन पर-स्पर युद्ध करने लगे।

इति ६२ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर सूतपुत्र कैकेयगणको विनाश करने लगे। वे लोग कर्णशरसे पीड़ित होय आत्मरक्षार्थ भीमके निकट गमन करने लगे। कर्ण एकाकी उन लोगको भेद करके युधिष्ठिरके प्रति धावमान हुए, उसी समय राजा युधिष्ठिर क्षतविक्षत और विचेतन होय नकुल और सहदेवको समा-रक्षक करके धीरे धीरे शिविरमें गमन करते थे, सूतपुत्रने

तीन वाणसे उनको विद्ध किया, तब युधिष्ठिरभी कर्णके प्रति शर निक्षेप करने लगे। अनन्तर उनके चक्ररक्षक नकुल और सहदेव उनको अभयदान पूर्वक कर्णके प्रति धावमान होय अति यत्नसे कर्ण पर शरवर्षण करने लगे। कर्णने भल्ल द्वय द्वारा महात्मा नकुल और सहदेवको विद्ध करके युधिष्ठिरके अश्वगणको संहार पूर्वक एक भल्लसे उनका शिरस्त्राण पातित कर दिया। और शीघ्रही नकुलके अश्वगणको संहार पूर्वक शरासन छेदन कर डाला, इसी प्रकारसे युधिष्ठिर और नकुल रथाश्वविहीन होय शरनिपीड़ित होकर सहदेव रथके पर आरूढ़ हुए।

पाण्डवगणके मातुल मद्रराज कृपापरतन्त्र होय कर्णसे बोले, हे राधेय! आज तुमको अर्जुनसे युद्ध करना होगा, तब क्यों अति क्रुद्ध होय युधिष्ठिरसे युद्ध करते हो। धर्मराजसे संग्राम करके तुम्हारा अस्त्र शस्त्र अल्प अवशिष्ट, कवच छिन्नभिन्न, सारथी और वाहनगण परिश्रान्त होनेसे तुम शत्रुशरसे आच्छन्न होय यदि अर्जुनसे युद्ध करो तो निश्चयही उपहासास्पद होगे। अनन्तर कर्णने मद्रराज वाक्य श्रवण करकेभी धर्मराज और नकुल सहदेवको शर द्वारा विद्ध करके समरविमुख कर दिया। पुनर्वार शल्य बोले, हे कर्ण! युधिष्ठिरके विनाश करनेसे तुमको क्या फल होगा? जिसके बधके लिये दुर्य्योधन तुम्हारा सम्मान करता है, तुम वही धनञ्जयको पहिले विनाश करो, यह देखो वर्षाकालीन गर्जित मेघके समान गाण्डीव निर्घोष श्रवणगोचर होता है। वह देखो धनञ्जय महा अहङ्कार करके हम लोगकी समस्त सेनाको विनाश कर रहा है। वह देखो वृकोदर राजा दुर्य्योधनको निपीड़ित कर रहा है सो हम लोगके, संमुख वृकोदर दुर्य्योधनको विनाश न कर सके सो उपाय करो। वह

देखो दुर्य्योधन भीमसेनके आघातसे आक्रान्त हो गये हैं, आज तुम उनको मुक्त कर सको तो सबही चमत्कृत होंगे। सो शीघ्रही गमन करके संशयापन्न राजाका परित्राण करो। युधिष्ठिर और माद्रीतनयको विनाश करके तुमको क्या लाभ होगा?

हे महाराज! कर्णने दुर्य्योधनको भीमसे निपीड़ित देख धर्मराज, नकुल और सहदेवको परित्याग करके कुरुराजके परित्राणार्थ गमन किया, अनन्तर राजा युधिष्ठिर अति लज्जित होय भ्रातृद्वयके सहित शिविरमें गमन पूर्वक शीघ्रही शयान हुए। समरवेदना अपनीत होनेसे युधिष्ठिर नकुल और सहदेवसे बोले, हे भ्रातृद्वय! वृकोदर युद्ध कर रहे हैं, तुम शीघ्र उनके सैन्यमें गमन करो। अनन्तर महावीरद्वय रथारोहण पूर्वक भीमके निकट उपस्थित होय वहां विविध योधगणको निपातित देख कर शत्रुसैन्यको शर द्वारा निपीड़ित करने लगे।

इति ६४ अध्याय।

हे महाराज! महावीर अश्वत्थामा धनञ्जयके प्रति धावमान होय धनञ्जय और वासुदेवको शरजालसे आच्छन्न कर डाला। धनञ्जयनेभी उनको निवारण करके समस्त कौरव-सैन्यगणको निपीड़ित करने लगे, अनन्तर अश्वत्थामा और धनञ्जयसे महायुद्ध होने लगा। परस्पर दिव्यास्त्र परित्याग पूर्वक रणस्थलको कम्पित करने लगे। अनन्तर धनञ्जयने अश्वत्थामाके सारथीको शर द्वारा भूतलमें पातित किया। तब आचार्य्यपुत्र स्वयं अश्वरश्मि ग्रहण पूर्वक कृष्ण औ धनञ्जयको शर द्वारा आच्छन्न करने लगे, यह अद्भुत व्यापार देख कर सबही चमत्कृत होय उनकी प्रशंसा करने लगे।

अनन्तर धनञ्जयने अश्वत्थामाकी अश्वरश्मि छेदन करके कौरवसैन्यको शरप्रहारसे निपीड़ित करने लगे। अनन्तर कौरवसैन्यमें महाकोलाहल उपस्थित हुआ, पाण्डवगण जयलाभसे सन्तुष्ट होय शरवर्षण करते कौरवसैन्य पर धावमान हुए। कौरवसैन्यगण अति पीड़ित होय दुर्य्योधन, कर्णके सम्मुखही पलायन करने लगे। अनन्तर दुर्य्योधन विनय पूर्वक कर्णसे बोले, हे राधेय! वह देखो तुम्हारे वर्तमान रहते सैन्यगण शत्रुशरसे पीड़ित होय पलायन करते हैं, और सहस्र सहस्र योद्धागण शत्रु द्वारा विद्रावित होय तुमही को आह्वान करते हैं। हे महाराज! यह सुन कर्ण मद्रराजसे बोले, हे शल्य! तुम अश्व परिचालन करो, आज हम समस्त पाण्डव और पाञ्चालगणको संहार करके तुमको अपना भुजबल प्रदर्शन करावेंगे। यह कहके कर्णने विजय शरासन पर ज्यारोपण और वारंवार आकर्षण करके सत्य शपथ द्वारा भार्गवदत्त अस्त्रग्रहण किया। उस अस्त्रसे सहस्र सहस्र, कोटि कोटि प्रज्वलित शर निर्गत होय पाण्डव सैन्यगणको आच्छन्न कर डाला। तब तो पाञ्चालगण निपीड़ित हो कर हाहाकार करने लगे। सहस्र सहस्र हस्ती अश्व रथो और पदातिगणके निहत होनेसे पृथिवी विकम्पित होने लगी। समस्त पाण्डव सैन्यगण व्याकुल हो उठे। पांचाल और चेदीगण कर्ण शराघातसे वनदहन दग्ध मातङ्ग यूथके समान विमोहित होय व्याघ्रके समान भीषण चीत्कार करने लगे। संग्राम भीत पाण्डव सैन्यगण आर्तनाद परित्याग पूर्वक वारंवार अर्जुन और वासुदेवको आह्वान करने लगे।

उस समय अर्जुन कर्ण निक्षिप्त भीषण भार्गवास्त्र दर्शन करके वासुदेवसे बोले, हे कृष्ण! भार्गवास्त्रका पराक्रम अवलोकन करो। उसको निवारण करना अति दुःसाध्य है।

वह देखो सूतनन्दन क्रुद्ध होय बारंबार हम पर कटाक्ष निक्षेप करता हैं, सो उसकी संमुख रथ संचालन करो। इस समय कर्णको परित्याग करकी पलायन करना अकर्तव्य है।

वासुदेव बोले, हे पार्थ! राजा युधिष्ठिर कर्णबाणसे पीड़ित हुए हैं, पहिले उनको दर्शन और आश्वासन करके पश्चात कर्णसे युद्ध करो। हे महाराज! उस समय वासुदेव यही स्थिर किया था, कि कर्ण अन्यान्य वीरगणसे बहुक्षण युद्ध करकी परिश्रान्त होय तो अर्जुन उनको अनायास संहार कर सकेंगे। अनन्तर वासुदेवने युधिष्ठिर दर्शनार्थ रथ-चालन किया।

इति ६५ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर धनञ्जयने पराजित द्रोणनन्दनको परित्याग करकी स्वीय सैन्यगणको अति पुलकित किया और जो जो वीर निपीड़ित होकेभी संग्राम स्थलमे अवस्थित थे उनकी विशेष प्रशंसा करने लगे। और युधिष्ठिरको वहां न देख भीमसेनसे पूछा, हे महात्मन्! धर्मराज कहां है? भीम बोले, भ्रात! धर्मराज सूतपुत्रके शरसे अति संतप्त होय इहांसे प्रस्थान कर गये है वह अब जीवित है वा नही? सन्देह है, अर्जुन बोले, हे महात्मन्! तुम धर्मराजकी अनु-सन्धानको यहांसे शीघ्र प्रस्थान करो, हमको निश्चय होता है, कि वह अति निपीड़ित और सन्तप्त होय शिविरमे प्रविष्ट हुए है। सो आप शीघ्र उनका वृतान्त जाननेको गमन कीजिये। हम यहां शत्रुगणको अवरोध कर यहांही अवस्थान करते हैं, यह सुन भीम बोले, हे अर्जुन! धर्मराजकी वृतान्त जाननेको जाना तुम्हाराही कर्तव्य है, हमारे गमन करनेसे शत्रुगण हमको भीत कहेंगे। अर्जुन बोले, इस समय संसप्तक-

गण हमारे प्रतिद्वंद्वी हुए हैं, उनको परित्याग कर्के गमन करनी हमारा कर्तव्य नहीं है। भीम बोले, हम एकाकी संसप्तक-गणसे युद्ध करेंगे, तुम युधिष्ठिरके निकट गमन करो। तब अर्जुनने युधिष्ठिरके निकट गमन करनेके लिये वासुदेवसे कहा, वासुदेव रथ संचालन पूर्वक युधिष्ठिरके निकट उपस्थित हुए, और दोनो वीर रथसे अवतीर्ण होय एकाकी शयान युधिष्ठिर का पादवन्दन पूर्वक उनको प्रकृतिस्थ देख कर अति आह्लादित हुए। राजा युधिष्ठिरने अति आह्लादित होय दोनो महावीरका यथोचित अभिनन्दन प्रदान किया। और सूतपुत्र अर्जुन शरसे निहत हुआ है, यह स्थिर करके अति प्रीत मन और हर्ष गद्‌गद वचनसे विशालशोणित क्षतविक्षताङ्ग रुधिरलिप्तकलेवर महावीर कीशव और धनञ्जयको अवलोकन करके सान्त्वाद प्रयोग पूर्वक हास्य मुखसे कहने लगे।

इति ६६ अध्याय।

हे देवकीपुत्र! हे धनञ्जय! आप लोगका तो सब मङ्गल हैं? आज हम आप लोगके दर्शनसे अति प्रीत और प्रसन्न हुए। तुमने आहतशरीर और निरुपद्रव महारथ कर्णको निहत किया। पुरन्दरके सहित देवगणभी जिसको पराजय नहीं कर सकते भाग्यहीसे आज आप लोग उनको विनाश करके अमर द्वयके समान हमारे निकट उपस्थित हुए। आज वही कृतान्तसदृश सूतपुत्रने हमसे घोर युद्ध किया था। सात्यकि, धृष्टद्युम्न, नकुल, सहदेव प्रभृति वीर-गणको पराजय पूर्वक उनके समक्ष हमारा रथध्वज छिन्न, सारथी अश्व निहत और हमको पराजित करके समराङ्गणमे हमारा अनुसरण करते हुए, अनेक परुष वाक्य प्रयोग किया, और अधिक क्या कहें, आज केवल भीमसेनहीके प्रभावसे

जीवित रहे। कर्णकृत अपमान हमको अति असह्य हुआ। जिसके भयसे हमको त्रयोदश वर्ष दिवा रात्रि निद्रा न हुई। अब उस पर विद्वेष बुद्धि होनेसे अति संतप्त होते हैं, हमने अपना मरण समय जानके पलायन किया। कैसे कर्णको विनाश करेंगे इसी चिन्तामें हमारा बहुकाल अतिवाहित हुआ है, स्वप्नमेभी हम कर्णहीको देखते। जहां कर्णहीको अवलोकन करते वही महावीर कर्णने आज हमकोभी जीवितावस्थामें परित्याग किया तो अब हमारे जीवन वा राज्यका प्रयोजन क्या हैं? पूर्वमें भीष्म द्रोणसे हमारी जो अवस्था न हुई सो आज कर्णने किया, हे धनञ्जय! हमारा हृदय में अपमानसमीरण संधुक्षित रोषानल निरन्तर प्रज्वलित होता है, कर्ण हमारे शरसे निहत हुआ। यह वात कहके उसको निर्वाण करो। हे वीर! वृत्रासुरके निहत होनेसे भगवान् विष्णुने जैसे पुरन्दरकी आगमन प्रतीक्षा कर रहे थे।

इति ६७ अध्याय।

संजय बोले, महाराज! अनन्तर महावीर अर्जुन धर्मराजको निकट कर्ण और अश्वत्थामाकी युद्धका आद्योपान्त समस्त वृत्तान्त वर्णन करके कहा, हे महाराज! महावीर अश्वत्थामाने आपको क्षतविक्षत किया, तदनन्तर महावीर कर्ण आपका युद्ध हुआ, हम यह वात श्रवण करके निश्चय किया, कि आप कर्णको परित्याग करके शिबिरमें गये हैं। हे महाराज! कर्णका बलवीर्य्य जैसा हमने देखा उसका सहन करने वाला सृञ्जयगणमें कोई नहीं है। इस कारण महावीर सात्यकि और धृष्टद्युम्न हमारे चक्ररक्षक और महाबली युधामन्यु और उत्तमौजा पृष्ठरक्षक होतो महावीर कर्णसे घोर युद्ध कर सकते हैं। हे महाराज! आप चलके हम दोनोंका

युद्ध दर्शन कीजिये, आज यदि हम बन्धु, बान्धवगणके सहित कर्णको नाश न करें तो अङ्गीकृत पालन पराङ्मुख पुरुषकी जो गति वही हमारी गति होगी, हे महाराज! अब आप युद्धमें हमारा जय प्रार्थना कीजिये, वह देखिये शत्रुगण भीमसेनको निपीड़ित करते हैं, इससे हमको शीघ्रही रणस्थलमें जाना उचित है। आज हम समस्त सैन्य, शत्रुगण, और सूतपुत्रको संहार करेंगे इसमें संदेह नहीं है।

इति ६८ अध्याय।

हे महाराज! धर्मराज कर्णके शराघातसे अति सन्तप्त हुए थे, अब कर्णको जीवित श्रवण करके क्रोधभरे अर्जुनसे कहने लगे, हे अर्जुन! तुम्हारे सैन्य निपीड़ित और पलायित होते हैं और तुम कर्णको संहार करनेको असमर्थ और भीत होय भीमको परित्याग करके यहां उपस्थित हुए। अब हमने बूझा कि आर्य्या कुन्तीके गर्भमें तुम्हारा जन्म लेना अनुचित हुआ है। तुमने द्वैतवनमें हमसे प्रतिज्ञा कीथी, कि हम एकाकी कर्णको विनाश करेंगे सो इस समय तुम्हारी वह प्रतिज्ञा कहां रही। तुम पहिले कहते कि हम कर्णको विनाश न कर सकेंगे तो हम इतिकर्तव्यता अवधारण करते। तो अब किस कारण हमलोगको शत्रुगणमें आनयन कठिन संकटमें निक्षिप्त किया।

हे अर्जुन! हम राज्यलाभ करनेको अति लोलुप हैं, परन्तु इस समय तुम्हारे कारण हम आमिषखण्ड समाच्छादित बड़िशके समान, भक्ष्यद्रव्य समाच्छन्न गरलके समान राज्यव्यपदेशसे विनाश लाभ किया। हे धनञ्जय! बीजवपन जैसे मेघके भरोसे होय वैसही हमलोग राज्य लाभाशा यह त्रयोदश वत्सर तुम्हारे भरोसेही पर था। परन्तु इस समय तुम्हें ... लोगको

घोर दुःखमें निपातित किया। हे निर्बोध ! तुम्हारे जन्महोने पर देववाणी हुई थी कि "यह पुत्र सकलगुणयुक्त समस्त शत्रुगणको पराजित करेगा" परन्तु इस समय निश्चय हुआ कि देवगणभी मिथ्यावादी हैं। हे वीर ! तुम जो कर्णसे भीत होगे यह कभी हमारे मनमेंभी नहीं था। हे अर्जुन ! गाण्डीव तुम्हारा धनुष और वासुदेव तुम्हारा सारथी है तोभी तुम कर्णसे भीत होय रणस्थलसे प्रत्यागमन कर आये, तुम वासुदेवको गाण्डीव शरासन प्रदान करो। तुम जो कृष्णके सारथी होते तो यह शीघ्रही कर्णको विनाश करते। हे अर्जुन ! यदि तुम आज कर्णको निवारण न कर सको तो अन्य एक निपुण भूपालको यह गाण्डीव प्रदान करो। तुम्हारा समर परित्याग करके पलायन करनेसे पञ्चम मासमें गर्भस्राव होना अथवा जन्म नहीं लेना श्रेय था। हे दुरात्मन् ! इस समय तुम्हारे गाण्डीवको धिक ! बाहुवीर्य्य और असंख्य शरनिकरमें धिक ! वानरध्वज और पावकप्रदत्त दिव्यरथ कोभी धिक् !

इति ६८ अध्याय।

हे महाराज ! यह सुनके महावीर अर्जुनने रोषाविष्ट होय युधिष्ठिरके विनाश वासनासे शीघ्रही असि ग्रहण किया अन्तर्यामी हृषीकेश अर्जुनको क्रुद्ध देखकर बोले, हे पार्थ ! तुमने क्यों खड्ग ग्रहण किया ? यहां तो कोई तुम्हारा शत्रु उपस्थित नहीं है, धीमान भीमसेनने कौरवगणको आक्रमण किया है। तुम महाराजके दर्शनार्थ रणभूमिसे यहां आये हो अब तुम महाराज युधिष्ठिरका कुशली देखके आह्लादके समय क्यों विमोहित होते हो ! इस समयतो तुम्हारा वधार्ह कोई उपस्थित नहीं है तो क्यों तुम प्रहार करनेको उद्यत होते हो ? अथवा तुम्हारे चित्तमें बिभ्रम हुआ होगा।

यह सुन धनञ्जय युधिष्ठिर पर दृष्टिपात करके क्रुद्ध सर्पके समान निश्वास त्याग करके केशवसे बोले, हे जनार्दन! तुम अन्यको गाण्डीव शरासन समर्पण करो यह बात जो हमको कहेगा उसका हम मस्तक छेदन करेंगे, यही हमारा उपांशु व्रत है। इस समय आपके समक्षही महाराजने यही बात हमको कही है इससे हम ये धर्मभीरु नरपतिको निहत करके प्रतिज्ञा प्रतिपालन करके निश्चिन्त होंगे, हमारे खड्ग ग्रहण करनेका यही कारण है। आपके मतसे अब क्या कर्तव्य है? आप इस जगतके समस्त वृत्तान्तको जानते हो इस समय विवेचना पूर्वक जो आप कहेंगे सोई करेंगे।

हे महाराज! केशव अर्जुनकी बात श्रवण करके उनको बारंबार धिक्कार प्रदान पूर्वक कहने लगे, हे धनञ्जय! इस समय तुमको क्रोध परवश देखके निश्चय जाना जो तुमने ज्ञानवृद्ध लोगोंका उपदेश ग्रहण न किया। तुम धर्मभीरु हो परन्तु धर्मका प्रकृत तत्त्व सम्यक नहीं जानते हो। धर्मज्ञ लोग कभी ऐसा कर्म नहीं कर सकते। आज तुमको ऐसे अकार्य्यमे प्रवृत्त देख कर मूर्ख निश्चय किया। जो पुरुष कर्तव्य कार्य्यको अकर्तव्य और अकर्तव्य कार्य्य कर्त्तव्य स्थिर करे वह नराधम हैं। बहुदर्शी पण्डित लोग धर्मानुसार जो उपदेश प्रदान करते हैं, सो तुम कुछभी नहीं जानते हो। अनिश्चयज्ञ लोग कार्य्याकार्य्य अवधारणके समय तुम सरीखा अति अवश और मुग्ध हो जाता है। कार्य्याकार्य्यका यथार्थ निर्णय करना अनायाससाध्य नहीं है। शास्त्रद्वाराही समस्त ज्ञान होता है। तुम जब मोह वश होय धर्मरक्षाके लिये प्राणी बधरूप महापाप पङ्कमे निमग्न होनेको उद्यत हुए हो, तो निश्चयही तुमको कुछभी शास्त्रज्ञान नहीं है, हमारे मतसे अहिंसाही परम धर्म है, वरं कभी मिथ्याभी प्रयोग हो सक्ता, परन्तु

प्राणीहिंसा कभी कर्तव्य नहीं है। तुम कैसे प्राकृत पुरुषके समान पुरुषप्रधान धर्मकोविद ज्येष्ठ भ्राताका प्राण संहार करनेको उद्यत हुए। सज्जन लोग समर करने अप्रवृत्त, शरणागत, विपद्ग्रस्त, प्रमत्त और रणपरांमुख, शत्रुकोभी विनाश करना निन्दनीय कहते हैं। परन्तु तुम युद्ध करनेको अप्रवृत्त गुरुके प्राण संहार करनेको उद्यत हुए हो, पूर्वमें तुमने बालकत्व प्रयुक्त यह व्रत अवलम्बन किया। और इस समय मूर्खतावश होय अधर्म्म कार्य्यका अनुष्ठान करनेको उद्यत हुए। तुम अति दुर्ज्ञेय सूक्ष्मतर धर्म पथ न जानकेही गुरुके विनाशमें अभिलाष करते हैं। हे धनञ्जय! कुरुपितामह भीष्म, धर्मराज युधिष्ठिर, विदुर और कुन्तीने जो धर्म रहस्य कहा है, हम ठीक वही कीर्तन करते हैं, श्रवण करो।

साधुगणही सत्य बोलते हैं। सत्यसे अधिक श्रेष्ठ कुछभी नहो है। सत्यतत्त्व अति दुर्ज्ञेय। सत्य वाक्य प्रयोग करनाही अवश्य कर्तव्य है। परन्तु जिस स्थानमें मिथ्या सत्य स्वरूप और सत्य मिथ्या स्वरूप होता है वहां मिथ्या वाक्य प्रयोग करना दोषावह नहीं है। विवाह, रतिक्रीड़ा, प्राणवियोग और सर्वस्वापहरणकालमें और ब्राह्मणके लिये मिथ्या प्रयोग करनेसेभी पातक नहो होता। जो पुरुष सत्य और असत्यका विशेष मर्म न जानके सत्यानुष्ठान करनेको उद्यत होय वह अति बालक है, और जो सत्यासत्यका यथार्थ निर्णय कर सकते हैं, वही यथार्थ धर्मज्ञ हैं। प्राज्ञ लोग अन्ध बधकारी बलाक व्याधके समान दारुण कर्मानुष्ठान करकेभी विपुल पुण्य लाभ कर सकते हैं और अकृतप्रज्ञ लोग धर्माभिलाषी होकेभी कौशिकके समान महापापमें निमग्न होते हैं।

अर्जुन बोले हे जनार्दन! यह कैसी कथा है? सो कहिये वासुदेव बोले हे अर्जुन! पूर्वकालमें बलाक नाम एक सत्य

वादी असूयाशून्य था। वह केवल वृद्धपिता, माता, पुत्र, कलत्र प्रभृति आश्रित लोगो की जीविका निर्वाह के लिये मृग विनाश करता। एकदा वही व्याध मृगया को जाके कहींभी मृग न पाया। अन्तको एक अपूर्व नेत्रविहीन खापद उसके नयन गोचर हुआ, वह खापद घ्राण द्वारा दूरस्थ वस्तु जान सकता। व्याधने उसको एकाग्र चित्तसे जलपान करते देख कर तत्क्षणात् विनाश किया। उस अन्ध खापदके विनाश होते ही आकाशसे पुष्पवृष्टि होने लगी, अप्सरागणका अति मनोरम वाद्य आरम्भ हुआ। और उसी व्याधको सर्गमे ले जानेको विमान उपस्थित हुआ, हे अर्जुन! वह खापद प्राणी गण विनाशके कारण विधाताने उसको अन्ध किया था। बलाक, वही भूतगणनाशक मृगको विनाश करके अनायास स्वर्गा-रोहण कर गया। इसीसे कहते हैं कि धर्मका मर्म अति दुर्ज्ञेय हैं। और देखो कौशिक नाम एक तपस्विश्रेष्ठ ब्राह्मण थे वही ब्राह्मण सर्वदा सत्यवाक्य भाषण करते, उस कालमे सत्यवादी विख्यात थे। एकदा कितने लोग दस्यु भयसे भीत होय वनमे प्रविष्ट हुए। तब दस्युगण भी उनका अनुसरण करते उसी सत्यवादी कौशिकके निकट उपस्थित होय बोले, हे भगवन्! कई एक मनुष्य इधर आये थे वे लोग कौन पथसे किधर गये हैं। जो आप जान्ते हों तो सत्य कहिये। कौशिकने सत्य-पालनार्थ कहादिया, कि लोग इसी वृक्ष लता और गुल्म परिवेष्टित अटवीमे प्रविष्ट हुए हैं। यह श्रवण करके क्रूरकर्मा दस्युगण उन लोगोंको आक्रमण करके विनाश किया। सूक्ष्म-धर्मानभिज्ञ सत्यवादी कौशिक उसी सत्यवाक्यके पापसे लिप्त होय घोर नरकमें निपतित हुए।

हे धनञ्जय! धर्मनिर्णयानभिज्ञ अल्पविद्य जन ज्ञानवृद्ध गणके निकट सन्देह भञ्जन न करके घोर नरकमें निपतित

होती हैं। धर्म और अधर्मका तत्त्व निर्णय करनेका विशेष लक्षण निर्दिष्ट है। कहीं कहीं अनुमान द्वाराभी अति दुर्ज्ञेय धर्मका निर्णय करना पड़ता है। अनेक लोग श्रुतिको धर्मका प्रमाण निर्देश करते हैं, हम उसमें दोषारोप नहीं करते परन्तु श्रुतिमें समस्त धर्मतत्त्व निर्दिष्ट नही है। इसी कारण अनुमान द्वारा अनेकस्थलमें धर्म निर्दिष्ट करना होता है। अहिंसायुक्त कार्य्य करनेही से धर्मानुष्ठान होजाता है। प्राणिगणके उत्पत्तिके लियेही धर्म निर्दिष्ट हुआ हैं। हिंस्रगण की हिंसा निवारणार्थही धर्मकी सृष्टि हुई है। प्राणिगण को धारण अर्थात् रक्षा करता है इसीसे धर्मनाम निर्दिष्ट हुआ है इस लिये जिससे प्राणिगणकी रक्षा होय वही धर्म है। जो लोग दूसरेके संतोष उत्पादन करनेही को धर्म स्थिर करके अन्यायतासे परदारापहरणादि कार्य्यमे प्रवृत्त हो उनसे आलाप करनाभी कर्तव्य नही है। यदि कोइ किसीके विनाश करनेको किसीसे उसका अनुसन्धान करे तो उस समय जिज्ञासित मनुष्यको मौनावलम्बन करना उचित है। यदि कहनाही पड़े तो मिथ्या प्रयोग करना कर्तव्य है, ऐसे स्थलमें मिथ्या सत्यस्वरूप होता है। प्राणविनाश, विवाह, समस्त ज्ञाति नष्ट और उपहास यह कई एक स्थलमें भी मिथ्या कहना दोष नहीं है। मिथ्या शपथ करके चौर संसर्गसे मुक्तिलाभ हो तो मिथ्या प्रयोग करना श्रेय है। चौरादि पापात्मागण को धन दान करा अविधेय है। ऐसा अधर्माचरण करनेसे दाताको कष्टभोगना होता है, हे अर्जुन! हमने तुम्हारे हितार्थ शास्त्र और धर्मानुसार अपने बुद्धिके साध्यानुरूप धर्म लक्षण कीर्तन किया। धर्मार्थ मिथ्या प्रयोग करनेसे भी पापभागी होना नहीं होता है इसमे कुछभी सन्देह नही है। अब तुम विवेचना करके कहो कि धर्मराज तुम्हारे बधाई हैं कि नही?

अर्जुन बोले, हे वासुदेव! आपने हमारे हितार्थ जो कहा सो निश्चय सत्य है। आप हमारे पिता माताके सदृश और आपही हम लोगके गति और आश्रय हैं, इस त्रिलोक तुमसे अविदित कुछभी नहीं है। धर्मराज हमारे अवध्य हैं, हमने जाना। अब आप हमारा अभिप्राय जानके उसका उपाय करो, आप जानते हैं कि यह हमारा व्रत है कि बलवान् पुरुषको गाण्डीव समर्पण करनेको जो हमको कहेगा हम तत्क्षणात् उसका संहार करेंगे। भीमसेनकी भी यह प्रतिज्ञा है कि यदि उनको कोई "तूवरक" कहे वह उसको विनाश करेंगे। धर्मराजने वारंवार वही कहा। इनको बध करके हम चणकाल भी जीवलोकमें अवस्था नहीं कर सकते। हे केशव! हम विमोहित होय धर्मराजको बध चिन्ता करके पापासक्त हुए इसमें संदेह नहीं है, अब जिसमें हमारी प्रतिज्ञा न होय और हमारी और धर्मराजकी जीवन रक्षा होय सो करो।

वासुदेव बोले, सखे! युधिष्ठिर सूतपुत्रके शर द्वारा ताड़ित और क्षतविक्षत कलेवर होय अति दुःखित होगये थे। तुम क्रुद्ध होकर शीघ्र कर्णको बध करोगे इसी कारणसे; युधिष्ठिरने क्रोधसे विचलित होय ऐसा असंगत वाक्य तुमपर प्रयोग किया। इस कारण पर उनका विनाश करना तुमको उचित नहीं है, परन्तु प्रतिज्ञा प्रतिपालन करनाभी कर्तव्य है सो अब युधिष्ठिर जीवित रहकेभी मृतस्वरूप निर्दिष्ट होय ऐसा एक उपाय कहते हैं श्रवणकरो। हे पार्थ! इस जीव-लोकमें माननीय पुरुष जितने दिन सम्मान लाभ करें तबतक उनको जीवित जानना। उनके अपमानित होने हीसे उनको जीवनमृत कहना चाहिये। देखो तुमलोग सबही धर्मराजका सम्मान किया करते हो आज तुम उनको अनु-

मानित करो। हे अर्जुन! गुरुको "तू" ऐह तुच्छ शब्द कहने होसे वध करना जानो। हमने जो कहा अथर्ववेदमें यही निर्हिष्ट हुआ है और महर्षि अङ्गिराने भी यही कहा है इसीसे मंगल लाभार्थी पुरुष आवश्यक होनेपर अविचारित चित्तसे इसीका अनुष्ठान करते हैं। हे अर्जुन! अब तुम हमारे वाक्यानुसार धर्मनन्दनको "तू" कहके निर्देश करो तब वह अपमानित होके अपनेको तुम्हारे हाथसे निहत ज्ञान करेंगे। तदनन्तर तुम इनके चरणमें प्रणत होय सान्त्वना करना। ऐसा करनेसे धर्मार्थ पर्य्यालोचना करके धर्मराज कभी रोषाविष्ट न होंगे, हे अर्जुन! इसी वातसे तुम अपना सत्य प्रतिपालन और भ्राताका प्राण रक्षा करके सूतपुत्रको विनाश करो।

इति ७० अध्याय।

हे महाराज! वासुदेव वाक्य श्रवण करके धर्मराजको कटुवाक्य कहने लगे। हे राजन्! तुम रणस्थलसे एकक्रोश दूर अवस्थान करते हो इससे हमको तिरस्कार करना कर्तव्य नहीं है। महावीर भीमसेन जो वीरगणसे युद्ध कर रहे हैं वही हमारा तिरस्कार कर सकते हैं, तुमको सर्वदा सुहृद्गण रक्षा कर रहे हैं तो तुमको हमारी निन्दा करना उचित नहीं है। हे राजन! ब्राह्मणगणका वाक्य बल और क्षत्रियोंका बाहुबल पण्डितोंने निर्दिष्ट किया है। तुम क्षत्रिय होके निष्ठुर वाक्य प्रकाशपूर्वक हमको बलहीन कहते हैं भीष्मसे युद्ध होनेके समय शिखण्डीकी हमने सहायता की थी नहीं तो शिखण्डी कदाच उनको संहार न कर सकते। हम स्त्री, पुत्र, शरीर और जीवन पर्य्यन्त पण करके तुम्हारे हितार्थ यत्नवान् हैं तथापि तुम वाक्यवाणसे हमको निर्पीड़ित करते हो। हम तुम्हारे

निमित्त महारथ गणसे युद्ध करते। परन्तु तुम निःशङ्क चित्तसे द्रौपदीके शय्यापर शयन करके हमारी अवमानना करते है। तुम अति निष्ठुर हो। तुम्हारे निकट रहके किसी प्रकारसे भी सुखी नही हो सकते हैं। हे राजन। द्यूतक्रीड़ामे आसक्त हो स्वयं असाधु व्यवहृत घोरतर अधर्मानुष्ठान करके अब हमलोगके प्रभावसे शत्रुगणको पराजय करनेका अभिलाष करते हो, इससे हम तुम्हारे राज्यलाभसे सन्तुष्ट नही हैं। सहदेवने द्यूतक्रीड़ाके समय बहुतर निषेध किया था तथापि तुमने श्रवण न किया। उसीसे हम लोग पापग्रस्त हुए। तुम आपही द्यूतक्रीड़ामे मत्त होय स्वयं दुःखोत्पादन पूर्वक आज हमारे प्रति निष्ठुर वाक्य प्रयोग करते हो! सो अब हमने जाना तुमसे हम लोगको कुछभी सुखलाभ की आशा नही हैं तुम्हारे ही दोषसे यह, महा घोर जनक्षय हुआ है, हे राजन्। तुम द्यूतक्रीड़ामें प्रवृत्त हुए इसीसे हम लोगका राज्यनाश और अति दुःख उपस्थित हुआ। सो अब पुनर्वार क्रूर वाक्य द्वारा हमको व्यथित न करना।

हे कुरुराज! धर्मभीरु दृढ़प्रतिज्ञ अर्जुनने ऐसे परुष वाक्य धर्मराजको श्रवण कराय अल्पपापके अनुष्ठानसे अति विमनायमान होय अनुताप करने लगे, और शीघ्रही दीर्घ निश्वास परित्याग पूर्वक कोषसे असि निष्काशन किया। तब वासुदेव बोले, हे अर्जुन! पुनर्वार तुमने क्यों असि निष्काशन किया? शीघ्र अपना अभिप्राय प्रकाश करो। तुम्हारे प्रयोजन सिद्धिका सहज उपाय बताय देंगे। अर्जुन बोले, हे कृष्ण! हम ज्येष्ठ भ्राताकी अवमानना करके महापापका कार्य्य किया, इसीसे अब आत्मविनाश करेंगे। यह सुन वासुदेव बोले, हे पार्थ! आत्महत्या सर्व प्रकारसे निन्दनीय है, देखो यदि तुम आज राजा युधिष्ठिरको विनाश करते तो

तुम्हारी यह धर्मभीरुता कहां जाती? सूक्ष्मधर्म अति दुरव-गाह है, अज्ञान मनुष्य उसको नहीं जान सकते। हे अर्जुन! तुम आत्मघाती होय भ्रातृ बधसेभी घोरतर नरकमें निपतित होगे। इस कारण अब तुम आप अपना गुण कीर्तन करो, उसीसे आत्मविनाश करनेका फल होगा।

हे महाराज! वासुदेव वाक्य श्रवण करके अर्जुन धर्म-राजसे बोले, हे राजन्! पिनाकपाणि महादेव भिन्न हमारे तुल्य कोईभी दूसरा धनुर्धर नहीं है। हम उनके अनुगृहीत और महात्मा हैं। हमहीने समस्त वीरगणको जय करके आपके वशीभूत किया हैं, हमारेही पराक्रमसे दिव्य सभा निर्मित और राजसूय यज्ञ सम्पन्न हुआ था। हमारे करमे शर और ज्यायुक्त सशर शरासन और दोनो पदमे रथ और ध्वजका चिह्न वर्तमान है, हम अस्त्रगणको विनष्ट कर सकते हैं, इसीसे समस्त लोकको भस्मसात् नहीं करते हैं, अब कृष्ण और हम कर्णके विनाशार्थ गमन करते हैं, आप स्थिर होइये हम अवश्यही कर्णको विनष्ट करेंगे। आज कर्णकी माता पुत्रहीना अथवा हमारी जननी कुन्ती दुःखित होगी है। धर्मराज! हम प्रतिज्ञा करते हैं, कि आज कर्णको निपातित न करके कदाच कवच परित्याग न करेंगे।

हे कुरुराज! अर्जुन यह कहके शरासन और शस्त्र परि-त्याग और असि कोषमे संस्थापन पूर्वक लज्जासे अधोमुख होय कृताञ्जलिपुटसे बोले, हे महाराज! हम आपको नम-स्कार करते हैं, आप प्रसन्न होय हमको क्षमा कीजिये, हमने ऐसी बात किस कारनसे आपको कही सो आप जान जांगे। हे महाराज! सूतपुत्र हमसे संग्राम करनेको आगमन करता है, हम शीघ्रही उसका संहार करेंगे हमने केवल आपके हितसाधनार्थ जीवन धारण किया है। अब भीमसेनको समरसे

मुक्त और कर्णको विनष्ट करनेको जाते हैं। धनञ्जय इसी प्रकारसे ज्येष्ठ भ्राताका पादवन्दन करके रणस्थलमें गमन करनेको उद्यत हुए। हे कुरुराज! उसी समय धर्मराज युधिष्ठिर अर्जुनके पूर्वोक्त वाक्यसे अवमानित होय गात्रोत्थान पूर्वक दुःखित होय कहने लगे। हे अर्जुन! हमने अति असत्कार्य्य किया था, उसीसे तुम लोग विषम दुःखमें गिरे। हम अति व्यसनासक्त, मूढ़, अलस, भीरु और परुष हैं, हमरेही कारण कुल विनष्ट हुआ। सो तुम शीघ्रही हमारा मस्तक छेदन करो। कौन सुखसे अब हमारे अधीन रहोगे? अथवा हम वनगमन करते हैं, तुम सुखी हो। महात्मा भीमसेन राज्यके उपयुक्त है। हम निष्कर्म्म हैं, हमारा राज्यग्रहणमें प्रयोजन क्या है? अब हम तुम्हारा परुष वाक्य सहन नहीं कर सकते भीमसेनही राजा होय। अपमानित होकर जीवन धारण हम नहीं कर सकते हैं यह कहके युधिष्ठिर उत्थित होय वन गमन करनेको उद्यत हुए।

अनन्तर वासुदेव बोले, हे महाराज! अर्जुनको गाण्डीव विषयमें जो प्रतिज्ञा है सो तो आपको अविदित नहीं है कि उनको अन्यके हस्तमें गाण्डीव समर्पण करनेको जो कहेगा उसको वह विनाश करेंगे सो आपने अन्यको गाण्डीव समर्पण करनेको कहा, इसीसे अपनी प्रतिज्ञा पालनार्थ हमारे वाक्यानुसार अर्जुनने आपका अपमान किया। गुरुजनका अपमानही मृत्यु स्वरूप है। हे महाराज! अब हम दोनोही आपके शरणापन्न हुए। अर्जुनकी प्रतिज्ञा रक्षार्थ हमने जो अपराध किया है सो क्षमा कीजिये हम आपके निकट प्रतिज्ञा करते हैं, कि आज पृथिवी कर्णका शोणित पान करेगी। धर्मराज युधिष्ठिर वासुदेवका वाक्य श्रवण और उनको उत्थापित करके कृताञ्जलिपुटसे बोले, हे कृष्ण!

तुमने जो कहा सबही यथार्थ है, हमने अर्जुनका गाण्डीव अन्यको समर्पण करनेको कहके अति मूढ़ताका काम किया, अबतो तुम्हारे वाक्यसे प्रबोधित हुए। आज तुमने हम लोगको घोर नरकसे मुक्त किया आज हम और अर्जुन दोनो अज्ञान प्रभावसे मोहित होगये थे, तुमहीने आज हम लोगको दुःखसागरसे उद्धार किया।

इति ७१ अध्याय।

हे महाराज! धर्मपरायण वासुदेव धर्मराजका प्रीति युक्त वाक्य श्रवण करके अर्जुनसे बोले, हे पार्थ! यदि तुम खड्गसे युधिष्ठिरकी विनाश करते तो तुम्हारी कैसी अवस्था होती? तुम राजाको दुर्वाक्य कहके तो ऐसे दुर्मनायमान हुए हो और उनको विनाश करते तो न जाने तुम्हारी क्या अवस्था होती। धर्म अति दुर्ज्ञेय है विशेष करके अज्ञानी उसको सहज नही जान सकता। जो होय अब तुम हमारे वाक्यानुसार परम धार्मिक धर्मराजको प्रसन्न करो। युधि-ष्ठिरके प्रसन्न होनेसे हम लोग दोनो शीघ्रही कर्णके ऊपर धावमान होय उसको संहार करके धर्मराजका विपुल प्रीति साधन करें।

हे महाराज! यह श्रवण करके अर्जुन लज्जित भावसे धर्मराजके चरण पर निपतित होय वारंवार कहने लगे, हे महाराज! हमने धर्मरक्षार्थ आपको जो दुर्वाक्य कहा सो आप प्रसन्न होय क्षमा कीजिये। धर्मराज अर्जुनको पदतल पर निपतित और रोदयमान देखके उनको उत्थान पूर्वक आलिङ्गन करके स्नेहनेत्रसे रोदन करने लगे। इसी प्रकार भ्रातृद्वय बहुक्षण रोदन करके अन्तको परम प्रीतियुक्त हुए। युधिष्ठिर बोले, हे अर्जुन! संग्रामनिपुण कर्णके शर द्वारा

हम अति पीड़ित हुए है, यदि तुम आज उसको निपातित न कर सको तो निश्चयही हम प्राणत्याग करेंगे।

अर्जुन बोले, हे महाराज! हम सत्य, आप, भीम, नकुल और सहदेवका शपथ करके कहते है कि आज समरमे कर्णको निपातित करेंगे। अथवा आपही उसके हाथसे निहत होंगे, यही प्रतिज्ञा करके यह अस्त्र हमने ग्रहण किया, यह कहके वासुदेवसे बोले, हे कृष्ण! आज आपके बुद्धिबलसे कर्णको निश्चयही संहार करेंगे। वासुदेव बोले, हे अर्जुन! तुम कर्णके विनाश करने मे योग्य पात्र हो। अनन्तर वासुदेव बोले, हे धर्मराज! अब आप कर्णके विनाश करने लिये आज्ञा दीजिये, हम लोगोंने आपको कर्णशर पीड़ित श्रवण करके आपके दर्शनके निमित्त यहां आयेथे भाग्यहीसे आज आप जीवित हैं अब आप प्रसन्न होय विजय लाभार्थ अर्जुनको आशीर्वाद कीजिये।

अनन्तर राजा युधिष्ठिर अर्जुनसे बोले, हे अर्जुन! तुमने हमको अवश्य कर्तव्य हितकर विषय कहा इस कारण कटु होनेसेभी हमने क्षमाकी। अब आज्ञा करते है तुम कर्णको जय करो। हमने तुमको जो दुर्वाक्य कहा उससे क्रुद्ध मत होना। यह श्रवण करके धनञ्जयने प्रणत होय उनका चरण धारण करलिया। तब धर्मराजने अर्जुनको उत्तोलन और आलिङ्गन करके कहा, भ्रात! तुमने हमको विशेष करके सम्मानित किया सो अब आशीर्वाद करते हैं कि तुम शीघ्रही जय और माहात्म्य लाभ करो। अर्जुन बोले, हे महाराज! आज बलगर्वित पापात्मा कर्णको शरनिकरसे यमनसदनमें प्रेरण करेंगे आपको जो उसने पीड़ित किया है शीघ्रही उसका फल प्राप्त होगा। हे महाराज! हम आपका चरण स्पर्श करके सत्य करते हैं कि आज कर्णको संहार न करके

कदाच रणस्थलसे प्रत्यागत न होंगे। युधिष्ठिर बोले, हे धनञ्जय! तुम्हारा शोकक्षय, अरातिविनाश, आयुर्वृद्धि और जय लाभ होय।

इति ७२ अध्याय।

हे महाराज! धनञ्जयके वाक्यानुसार वासुदेवने रथ सुसज्जित करना रथारोहण पूर्वक दोनो वीर कर्णके अभिमुख गमन करने लगे। हे महाराज! अर्जुन संग्रामस्थलमें गमन करके किस प्रकार कर्णबधरूप दुष्कर कार्य्यका साधन करेंगे, मनमें यही चिन्ता करने लगे। वह देव वासुदेव बोले, हे सखे! गाण्डीव प्रभावसे तुमने जिनको पराजय किया, तुम्हारे भिन्न दूसरेकी समर्थ न था। तुम्हारा दिव्य अस्त्र, हस्तलाघव, बाहुबल, युद्धमें असंमोह, विज्ञान, दृढ़भेदिता, लक्ष्य अस्खलन औ प्रहारका विशेष निपुणता है औ पृथिवी पर तुम्हारे तुल्य दूसरा योद्धा नहीं है। जो होय तुम्हारी हितकर बात हामको अवश्य कहना चाहिये, हे महाबाहु! तुम कर्णकी अवज्ञा मत करना। सूतपुत्र महाबली, अतिगर्वित, सुशिक्षित,कार्य्य कुशल, विचित्रयोद्धा और देशकालकोविद है। हम उसका गुण संक्षेपमें कहते हैं, हमारे मतमें वह वीर तुम्हारे तुल्य वा तुमको अधिक बलशाली होगा इसमें परम यत्नसे उसको संहार करना कर्त्तव्य है।

इति ७३ अध्याय।

हे महाराज! कर्ण विनाशमें क्रतसंकल्प अर्जुनसे वासुदेव बोले, हे सखे! आज सप्तदशदिन हुआ अनवरत सैन्य विनष्ट होता है। पाण्डव सैन्यभी अल्पावशिष्ट रहगई है, यावतीय पाण्डव सैन्यगण तुमकोही आश्रय करके अवस्थान करती हैं।

तुम्हारे भिन्न कोई दूसरा नही है कि कौरव सैन्यको निवारण कर सके, हे अर्जुन! कौरवसैन्य भीमसेन और तुम्हारेही सहित युद्ध करके कौरवसेना अल्पावशिष्ट रहगयी है। महात्मा भीष्म और द्रोण तुम्हारेही यत्नसे निहत हुए, नहीं तो शिखण्डी और धृष्टद्युम्नको क्या सामर्थ्यथी। जब कि भीष्म द्रोण निहत हुए तो अब कौरवसैन्यको वीरशून्य कहना उचित है, अब कौरवपक्षमे केवल अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य, कृतवर्म्मा, मद्रराज और कर्ण यही पंचजन अवशिष्ट रहगये हैं। सो तुम उनको विनाश करके महाराज युधिष्ठिरको यह पृथिवी प्रदान करो। यदि तुम गुरुपुत्र जानके अश्वत्थामा, आचार्य्य जानके कृपाचार्य्य, मातृबान्धवतासे कृतवर्म्मा, और मातुल ज्ञान करके शल्यराज पर दयाकरो तो उससे कुछ चिन्ता नहीं, परन्तु पापात्मा कर्णको शीघ्रही विनष्ट करना कर्तव्य है। दुर्य्योधनने तुम्हारा जितना अनिष्ट किया और इसको जो निग्रह करनेको उद्यत हुआ था उसका मूल कर्णही है इससे तुम आज उसको संहार करो। हे धनञ्जय! पूर्वमे कर्णहीने सभामे द्रौपदीसे कहाथा कि हे कृष्णा! पाण्डवगण विनष्ट हुए अब तुम दूसरा पति करो, तुम्हारे पूर्वपतिगण अब वर्त्तमान नही हैं, अब तुम दासीभावसे कुरुराजसदनमे प्रवेश करो, हे पार्थ! तुम्हारे सम्मुखही कर्णने यह कटुवाक्य प्रयोग किया था। सो आज तुम शरद्वारा उसको निहत करके उसके पापाचरणका शान्ति विधान करो, वह देखो महावीर कर्ण पाण्डवसैन्यको निपीड़ित कर रहा है इस समय तुम यदि उपेक्षा करो तो वह वीर प्रबल होके पाण्डवसैन्यको निःशेषित करडालेगा। हे वीर! युधिष्ठिरके पक्षमे तुम्हारे भिन्न ऐसा कोई योद्धा नही है जो सूतपुत्रको पराजय कर सके, इससे आज तुम कर्णको विनाशरूप मङ्गलकार्य्यका अनुष्ठान

करके अपनी प्रतिज्ञा पालन, कीर्त्तिलाभ और अस्त्रविद्या की सार्थकता सम्पादन करके सुखी हो।

इति ७४ अध्याय।

हे महाराज! अर्जुन वासुदेव वाक्य श्रवण करके शोक-शून्य और सन्तुष्ट होय कर्णविनाशार्थ गाण्डीव ग्रहण और ज्यापरिमार्जन करके केशवसे बोले, हे केशव! आप भूत और भविष्यत्‌के ज्ञाता हो और आप हम पर प्रसन्न हो कर सहाय हुए है, तो निश्चयही हमारा जयलाभ होगा। हे कृष्ण! हम आपकी सहायता पाकर एकत्र मिलित त्रिलोकस्थ समस्त पुरुषको विनाश कर सकते हैं,कर्णकी तो बातही क्या है? इस समय देवराजनिर्मुक्त वज्रकी समान सूतपुत्रका मार्गवास्त्र प्रज्वलित हो रहा है, आज सूतपुत्रको निहत करनेसे जितने दिन यह पृथिवी विद्यमान रहेगी इतने दिन हमारी यह कीर्ति रहजागी। आज हमारे अस्त्र सब गाण्डीवसे निर्मुक्त होके कर्णको यमालय प्रेरण करेंगे। राजा धृतराष्ट्र आज राज्यहीन, सुखहीन, श्रीहीन और पुत्रविहीन होंगे, इससे कुछ संदेह नहीं है। आज हम निश्चित शरजालसे सूतपुत्रको समरशायी करके धर्मराजको रजनी जागरण दुःख अपनीत करेंगे। आज हम निश्चयही एक दुःसह शर परित्याग करके कर्णको समरशायी करेंगे। आज विद्युत्‌के समान अति उज्ज्वल नाराच निकर हमारे भुजदण्ड समाकृष्ट गाण्डीवसे विनिर्गत होय सूतनन्दनको उत्कृष्ट गति प्रदान करेगा। पूर्वमें सभाके बीच कर्णने जो जो निष्ठुरवाक्य प्रयोग किया था आज निश्चयही उसकी निमित्त अनुताप करेगा। आज महा-वीर कर्ण बंधुबान्धवगणकी सहित हमारे शर द्वारा निहत होनेसे धृतराष्ट्रतनयगण सिंहदर्शनभीत मृगयुथकी समान

भयाकुलितचित्त होय चतुर्दिक् पलायन करेंगे और दुरात्मा दुर्य्योधन अपने दुष्कर्मका अनुताप और हमको धनुर्द्धरोंमे अग्रगण्य ज्ञान करेगा। आज राजा युधिष्ठिर चिरसंचित मनस्ताप और महाकष्टसे मुक्त होंगे। आज हम पृथिवी धृत-राष्ट्रतनयशून्य करके ज्येष्ठ भ्राताको समर्पण करेंगे अथवा आप अर्जुनविहीन होके इसपर विचरण करोगे। हे कृष्ण! आज हम कर्णको विनाश करके त्रयोदशवर्षसंचित दुःखसे मुक्त होंगे। आज हम कर्णको विनष्ट करके बन्धुगणके ऋणसे मुक्त होंगे।

हे माधव! हम पुनर्वार आपसे अपना गुणकीर्त्तन करते हैं श्रवण कीजिये। इस भूमण्डलपर धनुर्विद्यापरायण, पराक्रम-शाली, क्रोधपरायण अथवा क्षमागुणसम्पन्न दूसरा कोई नहीं है, इस कारण हमारे युद्धमे गमन करनेसे कोईभी पराजय नही कर सकता। हे महाराज! लोहितलोचन अद्वितीयवीर अर्जुन केशवको यह कहके भीमसेनका परित्राण और कर्णका मस्तक छेदनकी वासना करके युद्ध करनेको अग्रसर हुए।

इति ७५ अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले, हे संजय! अर्जुन रणस्थलमे जाके कर्णसे किस प्रकारसे युद्ध किया? सो कहो। संजय बोले, हे महा-राज! उस समय रणस्थलमे प्रजाविनाशकर महायुद्ध उप-स्थित हुआ। रुधिरप्रवाह प्रवाहित होने लगा, असंख्य क्षत्रिय विनाश हुए। उसी समय महावीर धनञ्जय शर निकर वर्षण पूर्वक शत्रुपक्षीय असंख्य पदाति, मातङ्ग अश्व सारथी समवेत रथको शमनसदनको प्रेरण करने लगे। उस समय कृपाचार्य्य शिखण्डीसे, दुर्य्योधन सात्यकिसे, श्रुत-श्रवा अश्वत्थामासे, युधामन्यु चित्रसेनसे और उत्तमौजा कर्ण

पुत्र सुषेणसे सहदेव शकुनिसे, नकुलनन्दन शतानीक कर्ण-पुत्र वृषसेनसे महायुद्ध करने लगा। महावीर नकुल कृत-वर्माको औ धृष्टद्युम्नने कर्णको शरसे आच्छन्न कर डाला। दुःशासन और संसप्तकगण भीमसे युद्ध करने लगे। अनन्तर महावीर उत्तमौजाने शाणित शरद्वारा कर्णात्मज सुषेणका मस्तक छेदन कर दिया। कर्ण सुषेणका मृत्यु देख अति कातर होय क्रोध भरे हुए शर निकरसे उत्तमौजाका अश्व, रथ और ध्वज खण्ड खण्ड कर दिया। तब उत्तमौजाने कृपाचार्य्यके रथरक्षकगणको शरद्वारा विनष्टकरके शिखण्डीके रथ पर आरूढ़ हुए। उसी समय हिरण्मयवर्मधारी भीमसेन ग्रीष्मकालीन मध्याह्नगत सूर्य्यके समान प्रखर तेज प्रकाश पूर्वक शर द्वारा आपके पुत्रगणकी सेना निपातित करने लगे।

इति ७६ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर महावीर भीमसेन शत्रु सैन्यको विदलित करने लगे, कौरवसैन्य भीमसेनके शर निकरसे अति पीड़ित होय चतुर्दिक धावमान होने लगे। तब भीम-सेनने अपने सारथीसे पूछा, हे विशोक! हम इस समय युद्ध करनेको अति आसन्न हुए है, आगत रथ समूह स्वकीय वा परकीय हैं, कुछ नही जान सकते हैं, तुम इसको देखते रहो जिससे अपनी सैन्यको समराच्छन्न न करें। चतुर्दिकसे असंख्य शत्रु दृष्टिगोचर होते हैं, विशेष करके महाराज युधिष्ठिर आज अति निपीड़ित हुए है, और अर्जुनभी अब-तक प्रत्यागत न हुए, वह दोनो जीवित हैं, कि नहीं? कुछ नही जानके अति दुःखित हैं, जो होय आज हम इस सम-राङ्गणमे समवेतशत्रुगणकी विनाश करके आनन्दानुभव करेंगे।

हे सारथे! वह देखो कौरवसैन्यगण पलायन करते हैं,

इसका कारण क्या हैं? निश्चय होता है कि अर्जुनने शर-द्वारा कौरवसैन्यको आच्छन्न कर दिया है, वह देखो कौरव-गण दावाग्निदहनभीत मातङ्गगणके समान विसुग्ध होकर पलायन करते हैं और अन्यान्य भूपालगण हाहाकार कर रहे हैं।

विशोक बोला, हे महात्मन्! महावीर अर्जुनका घोर गाण्डीव शब्द आपके कर्णगोचर नहीं हुआ? धनञ्जयके धनुष्टङ्कारसे क्या आपकी श्रवणेन्द्रिय विनष्ट होगई है? हे पाण्डव! आज आपका समस्त मनोरथ पूर्ण हुआ। वह देखिये धनञ्जय शत्रुसैन्यको विव्रासित कर रहे हैं, उनको देखके तो आज हमभी भीत होते हैं, वह देखिये महावीर धनञ्जय कौरवसैन्य संहार करते हुए, आपके निकट आगमन करते है, हे भीमसेन! अब आपके शत्रु विनष्ट और मनो-रथ पूर्ण हुए, आपकी आयु और बल वृद्धि होय। भीमसेन बोले, हे विशोक! तुमने अर्जुनकी आगमन वार्ता श्रवण कराई इस कारण हम प्रसन्न होके तुमको चतुर्दश ग्राम एक शत दासी और विंशति रथ प्रदान करेंगे।

इति ७७ अध्याय।

हे महाराज! इधर धनञ्जय वासुदेवसे बोले, हे कृष्ण! तुम शीघ्र भीमके निकट गमन करो, अनन्तर वासुदेवके रथ संचालित करनेसे कौरवगण ससैन्य उनके प्रति धावमान हुए। अनन्तर देवासुर संग्रामके सदृश कौरवगण, और अर्जुनसे युद्ध होने लगा, वीरगण अर्जुनके शराघातसे भूतलमे निपातित होके प्राणत्याग करने लगे।

हे महाराज! इसी प्रकारसे महावीर धनञ्जय वज्रसदृश शर निकरसे असंख्य हस्ती अश्व और रथ विदीर्ण करके

बलासुर संहारार्थ प्रस्थित सुरराजकी समान सूतपुत्रके विनाशार्थ शीघ्र गमन करके मकर जैसे सागरमें प्रविष्ट होय तद्रूप विपक्ष सैन्यमें प्रविष्ट हुए। और प्रबल वायु जैसे जलदजालको आहत करै तद्रूप शत्रुसैन्यको निपीड़ित करने लगे। तब कौरवसैन्यगण मिलित होय अर्जुनको शरद्वारा बिद्ध करने लगे। धनञ्जय महाक्रुद्ध होय शर वर्षण द्वारा सहस्र सहस्र हस्ती अश्व और रथीगणको ध्वंस करने लगे। अनन्तर अर्जुनने संग्रामनिपुण चार शत महारथगणका प्राण नष्ट कर दिया तब तो हतावशिष्ट योधगण अर्जुनको परित्याग करके पलायन करने लगे। अर्जुन उन लोगको बिद्ध और विदारित करते सूतपुत्रकी सेना प्रति धावमान हुए।

हे महाराज! उसी समय राजा दुर्य्योधन भीमसेनका शरसे सैन्यगणको निपीड़ित देखके महाधनुर्द्धर सैनिकगणसे बोले, हे वीरगण! आप लोग शीघ्रही भीमसेनको विनष्ट करो उनके निहत होनेहीसे पाण्डवसैन्य शोषित होगा। यह सुनतेही भूपालगण भीमसेनको शरद्वारा बिद्ध करने लगे, असंख्य हस्ती रथी और पदातिगणने वृकोदरको परिवेष्टित कर लिया। उस समय भीमसेन नक्षत्रपरिवेष्टित पूर्ण चन्द्रकी समान शोभा पाने लगे। तब भीमसेन शर द्वारा वह प्रभूत सैन्यको विदारण करके महाजालविनिर्गत मत्स्यके समान बहिर्गत होय असंख्य शत्रु सैन्य विनाश करके शोणित नदी प्रवाहित करने लगे। हे महाराज! उस समय अर्जुन जहां जहां प्रविष्ट हुए वहां असंख्य योधगण विनष्ट हुए। अनन्तर दुर्य्योधनके वाक्यानुसार शकुनि रणस्थलमें अवतीर्ण होय भीमसेनको निवारित करने लगे। उस समय भीमसेन और शकुनिसे महायुद्ध होने लगा। अन-

न्तर भीमसेनने शर द्वारा उनके रथ और ध्वजको छेदन कर दिया, अनन्तर शकुनि रथसे अवतीर्ण होय भीमसेन पर शरवर्षण करने लगे, तब तो भीमसेनने एक भल्लद्वारा शकुनीका शरासन छेदन करके बाण द्वारा उनको बिद्ध किया। तब शकुनि बिद्ध होय मृतके समान भूतल पर गिरे, दुर्य्योधनने शकुनिको विह्वल देख अपने रथ पर आरोपित किया, यह देख कौरवसैन्य भीत होय पलायित होने लगी, हे महाराज! दुर्य्योधनभी भयाविष्ट होय शकुनिको लेकर अपसृत हुए। कौरवसैन्य दुर्य्योधनको रणपराङ्मुख देखके द्वैरथ युद्ध परित्याग करके पलायन करने लगे। उनको पलायित देख भीमसेन शरवर्षण करते उस पर धावमान हुए, उस समय कौरवसैन्यगणने अति निपीड़ित होय सूतपुत्रके निकट जाय आश्रय ग्रहण किया। भग्ननौकास्थ नाविकगण जैसे द्वीप प्राप्त होके आश्वासित होते हैं, तद्रूप कौरवसैन्यगण आश्वासित होय पुनर्वार प्राणपण करके युद्ध करने लगे।

इति ७८ अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! वृकोदरके प्रभावसे कौरवसैन्य भग्न होने पर कर्ण और समस्त योद्धागणने क्या किया? सो कहो। संजय बोले, महाराज! उसी अपराह्न कालमें महावीर कर्ण भीमसेनके समक्ष सोमकगणको निपीड़ित करने लगे। भीमसेनभी कौरवसैन्यगणको ध्वंस करने लगे, अनन्तर महावीर कर्ण पाञ्चाल सैन्यमें प्रविष्ट होय आकर्ण पूर्ण तीक्ष्ण शरसे सहस्र सहस्र पाण्डवसैन्यको निपीड़ित करने लगे। अनन्तर महावीर भीमसेन धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, सात्यकि प्रभृति वीरगणने कर्णको परिवेष्टन करके शर वर्षण करने लगे, तब महावीर कर्ण शरासनमें टंकार प्रदान करके

निशित शरनिकरसे उन लोगोंको बिद्ध करके एक निमेषमें सात्यकिका ध्वज और शरासन छेदन कर दिया, नव बाणसे उनका वक्षस्थल आहत और बीस बाणसे भीमसेनको बिद्ध करके भल्लद्वारा सहदेवका ध्वज छेदन और तीन बाणसे उनके सारथीको निपीड़न करके द्रौपदीके पञ्चपुत्रगणको रथहीन कर दिया। यह देख सबही चमत्कृत हुए। इसी प्रकारसे कर्णने पांचाल और चेदीगणको निपीड़ित किया। हे महाराज! उस समय कर्णका चमत्कार देख कर सबही उनकी प्रशंसा करने लगे। उनके बाणसे पाण्डवसेना निपीड़ित होय आर्तनाद करके पलायन करने लगी, यह देख पाण्डवगण कर्णको अद्वितीय योद्धा जानके शंकित होगये। कौरवपक्षीय वीरगण पाण्डवसैन्यको पलायित देख महावेगसे सिंहनाद करने लगे। तब तो पाञ्चालगणभी महावेगसे कर्णके सहित युद्ध करने लगे। वे लोग निपीड़ित होकेभी कर्णको परित्याग करके पलायित न हुए। उसी समय राजा दुर्य्योधन, दुःशासन, कृप, अश्वत्थामा, कृतवर्मा और शकुनि ये लोगभी असंख्य पाण्डवसैन्य निहत करने लगे। कर्णके बलशाली पुत्रद्वयभी पाण्डवसैन्यको निपीड़ित करने लगे। इधर पाण्डवपक्षीय महावीर धृष्टद्युम्न, शिखण्डी और द्रौपदीके पुत्रगण कोपाविष्ट होय कौरवसैन्यको संहार करने लगे। हे महाराज! इसी प्रकारसे वह भीषण युद्ध होने लगा और उभयपक्षीय सैन्यगण कालग्रस्त होने लगे।

इति ७६ अध्याय।

हे महाराज! उसी समय अरातिघातन अर्जुनने कौरवपक्षीय चतुरङ्गिणी सेना निपातित किया। उनके बाणाघातसे अति दुस्तर शोणित नदी प्रवाहित हुई।

अनन्तर कर्णको ओधान्ध देख अर्जुन बोले, हे वासुदेव! वह देखो कर्णका ध्वज लक्षित होता है, भीमसेन प्रभृति वीरगण उनसे युद्ध कर रहे हैं, पाञ्चालगण भीत हो कर धावमान होते हैं। दुर्य्योधन, कृप, कृतवर्मा, और अश्वत्थामा कर्णसे रक्षित होय सोमकगणको निपीड़ित कर रहे हैं, वह देखो मद्रराज शल्य कर्णका रथ सञ्चालन कर रहे हैं। सो अब शीघ्र कर्णके संमुख रथको परिचालन कीजिये। आज हम कर्णको संहार न करके रणस्थलसे प्रतिनिवृत्त न होंगे। इस समय यदि हम कर्णके अभिमुखीन न होंगे तो निश्चयही पाण्डवसैन्य निःशेषित होगी। हे महाराज! यह श्रवण करतेही वासुदेव कर्णके निकट रथसञ्चालित करने लगे। यह देख पाण्डवसैन्यगण आश्वासयुक्त हुए। धनञ्जयको आवते देख कर मद्रराज कर्णसे बोले, हे राधेय! तुम जिसका अनुसन्धान करते थे, वही कृष्णसारथी अर्जुन गाण्डीवधारण पूर्वक शत्रुगणको निपीड़ित करते आगमन करते हैं, यदि तुम आज उनको निपातित कर सको तो हम लोग का मङ्गल होय। वह देखो कौरवपक्षीय भूपालगण धनञ्जयके भयसे भीत होय पलायन कर रहे हैं, इस समय तुम्हारे विना उनका भय निवारण करनेवाला कोई नहीं है, सो अब तुम धैर्य्यधारण पूर्वक धनञ्जय और वासुदेवके प्रति गमन करो।

हे महाराज! शल्यवाक्य श्रवण करके महावीर कर्ण बोले, हे मद्रराज! तुम अब प्रकृतिस्थ और हमारे अभिमत हुए हो, धनञ्जयका कुछभी भय मत करो, आज तुम हमारा भुजबल और अस्त्रशिक्षा अवलोकन करो। आज हम एकाकी समस्त शत्रुसैन्य संहार करेंगे। आज कृष्ण और धनञ्जयको विनाश किये विना कदाच रणस्थलसे प्रतिनिवृत्त न होंगे। युद्धमें जयलाभ की स्थिरता नहीं है इस कारण होय तो कृष्ण और

धनञ्जयको विनाश करेंगे नहो तो स्वयं विनाश हो कर निश्चिन्त होंगे। यह सुन मद्रराज बोले, हे कर्ण क महावीरगण अर्जुनको दुर्जय कहा करते हैं, एकाकी उनको आक्रमण करना सहज नहीं है, तिस पर इस समय वह वासुदेवसे रक्षित हैं तो उनको पराजय करनेवाला कौन है? कर्ण बोले, हे शल्य! हमभी जानते हैं कि धनञ्जयसे उत्कृष्ट दूसरा रथी नहीं है तथापि हम उनसे युद्ध करेंगे तब तुम हमारा पौरुष देखोगे।

हे मद्रराज! धनञ्जयका भुजयुगल दीर्घ, व्रणांकित है, उस से स्वेदजल निर्गत वा कदाच विकम्पित नहीं होता है, दृढ़ायुध महावीर अर्जुन अद्वितीय कृती और क्षिप्रहस्त पृथिवी पर ऐसा दूसरा वीर नहीं है, वही महावीर एक बाणके समान एक समय बहुसंख्यक वाण ग्रहण और अति शीघ्र सन्धान पूर्वक एक क्रोश अनन्तर निक्षेप करते हैं। उनके तुल्य और दूसरा कौन है? विशेष करके समस्त जगत् समवेत होके अयुतवत्सर पर्य्यन्त जिसका गुण जान करकेभी शेष न कर सके, वही महात्मा वासुदेव जिसकी सतत रक्षा किया करते हैं। हे मद्रराज! इस समय हम वही अशेषगुणसम्पन्न कृष्णसहाय अर्जुनको संग्राममें आह्वान करके अपनेको सबसे अधिक साहसी ज्ञान करते हैं, जो होय धनञ्जयसे युद्ध करनेका हमारा जो अभिलाष है सो आज शीघ्रही पूर्ण होगा। हे महाराज! यह कहके कर्ण जलधरके समान गभीरगर्जन करने लगा। अनन्तर कर्ण राजा दुर्य्योधनके निकट उपस्थित होय अश्वत्थामा कृपाचार्य्य प्रभृति वीरगणसे बोला, हे वीरगण! आप लोग बलप्रकाश पूर्वक धावमान होय धनञ्जयको अवरुद्ध और परिश्रान्त करो तो हम उनको अनायास संहार कर सकेंगे। यह सुन समस्त वीरगण धावमान होय अर्जुन पर

वाणवर्षण करने लगे, अर्जुनभी उन लोगको निवारित करके उन पर वर्षण करने लगे। महाघोर युद्ध होने लगा असंख्य सैन्य विनष्ट होने लगे। हे महाराज! उस समय वीरगणके परस्पर वाणनिक्षेपसे सूर्य्यकी प्रभा तिरोहित हो गई।

इति ८० अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर धनञ्जयने भीमसेन पर प्रधान प्रधान शत्रुगणको आक्रमण करते देखके उनके उद्धारार्थ कौरवसैन्यको यमराजके राजधानीमे प्रेरण करने लगे। उस समय धनञ्जयके वाणजालसे आकाशमण्डल आच्छन्न हो गया। महावीर धनञ्जय शत्रुगणका मस्तक वाण द्वारा छेदन करने लगे। उस समय समरभूमि छिन्नगात्र, छिन्नमस्तक कवचशून्य योधगणके कलेवरसे आहत और छिन्नभिन्न विकलाङ्ग हस्ती, अश्व और रथ समूहके निपात होनेसे भीषणाकार वैतरणी नदीके समान अति दुर्गम और दुर्निरीक्ष्य हो गई। उसी समय जिन वीरगणने भीमसेनको आक्रमण किया था, वे लोगभी भीत होय चतुर्दिक् पलायन करने लगे। हे महाराज! कौरवगणके छिन्नभिन्न होनेसे धनञ्जय भीमसेनके निकट उपस्थित होय क्षणकाल उनसे मन्त्रणा करके युधिष्ठिरका निरापदवार्त्ता विज्ञापित किया। और उनकी आज्ञा लेकर पुनर्वार रणस्थलमे उपस्थित हुए। उसी समय दुःशासनके अनुज दश महावीर अर्जुन पर शरवर्षण करने लगे, अर्जुनने नाराच और अर्द्धचन्द्र वाण द्वारा वे वीरगणका रथकेतु, अश्व, चाप और सायक खण्ड खण्ड करके दश भल्लसे उन लोगोका मस्तक छेदन करके गमन करने लगे।

इति ८१ अध्याय।

हे महाराज! उस समय वासुदेव अर्जुनके रथको कर्णके रथके सम्मुखीन ले जाने लगे, तब कौरवपक्षीय नवति संख्यक संसप्तकगण घोरतर पारलौकिक सपथ पूर्वक अर्जुनको परिवेष्टन करके घोर युद्ध करने लगे। महावीर अर्जुनने शरजालसे शीघ्रही उन वीरोंको संहार कर दिया। अनन्तर असंख्य कौरवसैन्य एकत्र होय अर्जुनको परिवेष्टित करके घोर युद्ध करने लगे। और त्रयोदश शत मत्त गजारूढ़ म्लेच्छगण अर्जुनको आघात करने लगे। अर्जुनने उन लोगकोभी निशित शरद्वारा निहत कर दिया। सुवर्णमालावृत मातङ्गगण अर्जुनके शरसे निहत होय वज्र विदारित पर्वतके समान भूतलमे पतित हुए। असंख्य कुञ्जर और आरोहि विहीन अश्वगण शरसे पीड़ित होय दशदिक धावमान हुए। बहुतर अश्वारोहीगण दूधर धावमान होय अर्जुन वाणसे निहत हुए, हे महाराज! अर्जुनका क्याही अद्भुतबल हैं, कि उन्होंने एकाकी इतने सैन्यको पराजय किया।

उसी समय महावीर भीमसेन अर्जुनको विविध सैन्यसे परिवृत देख कर कौरवपक्षीय हतावशिष्ट कितने रथीको परित्याग करके अर्जुनके निकट धावमान हुए। लौहवर्मधारी अश्व और अश्वारोहीगण भीमके प्रचण्ड गदाघातसे भग्नमस्तक भग्नास्थि और भग्नचरण और शोणिताक्त कलेवर होके धरातलमे निपतित होने लगे। अनन्तर भीमसेनने जैसे मकर सागरमे प्रविष्ट होय तद्रूप गजसैन्यमे प्रविष्ट होकर क्षणकालमे उन लोगको निपातित कर डाला, वर्माच्छादित मत्त मातङ्गगण पक्षयुक्त पर्वतके समान भूतलमें पतित होने लगे। इधर अर्जुनके शराघातसे कौरवसैन्यगण विदीर्ण होकर आर्तनाद करके पलायन करते सूतपुत्रको आह्वान करने लगे। हे महाराज! उस समय आपके पुत्रगण अर्जुन शरसे

व्यथित होके कर्णके समीप गमन करने लगे उस समय विपद् सागरमे निमग्न प्राय वीरगणको कर्ण द्वीपस्वरूप ज्ञान हुए। तब शस्त्रधराग्रगण्य महावीर कर्ण वीरगणको अभय दान करके पाञ्चालगणके प्रति धावमान हुए। कर्णको आगमन करते देख पाण्डव पक्षीय भूपालगण उन पर शर दृष्टि करने लगे, अनन्तर महावीर कर्ण सहस्र सहस्र शर निक्षेप करके पाञ्चालगणका प्राण संहार करने लगे।

इति ८२ अध्याय।

हे महाराज। जैसे वायु, जलदजालको छिन्न भिन्न करे, वैसही कर्ण पाञ्चाल तनयगणको निपीड़ित करने लगे। जनमेजय, शतानीक और सुतसोमको शरद्वारा बिद्ध करते उन्होका कार्मुक छेदन कर दिया। धृष्टद्युम्नको बिद्ध और सात्यकिके अश्वगणको विनष्ट करके कैकेयपुत्र विशोकका प्राण नष्ट कर दिया। अनन्तर सात्यकिने क्रोधाविष्ट होय शाणित शरद्वारा कर्णात्मज प्रसेनका प्राण संहार कर दिया। तब कर्ण रोषाविष्ट होय सात्यकि पर एक भीषणवाण निक्षिप्त करतेही शिखण्डीने उसको छेदन कर डाला, तब कर्ण महा-क्रुद्ध होय शिखण्डीका शरासन छेदन पूर्वक शाणित शरसे धृष्टद्युम्नके पुत्रका शिरच्छेदन कर दिया।

हे महाराज! धृष्टद्युम्नके पुत्रके निहत होनेसे वासुदेव बोले, हे अर्जुन! वह देखो कर्णने प्राय समस्त पाञ्चालगणको निहत कर डाला, अब तुम शीघ्र उनको संहार करो। यह सुन अर्जुन शीघ्रही कर्णके प्रति गमन करने लगे। और भीमसेन उनके पृष्ठ रक्षक होके उनका अनुसरण करने लगे।

इधर सूतपुत्रने सोमकगणके साथ युद्ध करके असंख्य सैन्यको विनाश कर दिया। अनन्तर शिखण्डी, युधामन्यु,

उत्तमौजा, जनमेजय और धृष्टद्युम्न पांचो पाञ्चालगण परा-जित और निश्चेष्ट होगये, तब द्रौपदीके पुत्रगणने उन लोगको अपने रथ पर आरोपित करके उद्धार किया। अनन्तर महा-रथ सात्यकि महाराज दुर्य्योधन, कृप, कृतवर्मा और कर्णसे महाघोर युद्ध करने लगे, इसी अवसरमें महारथ पाञ्चालगण एकत्र होय सात्यकिको रक्षा करने लगे। हे महाराज! उस समय देवासुरके समान महाघोर युद्ध होने लगा। इधर महावीर दुःशासन शरवर्षण करते हुए, भीमसेनके प्रति धावमान हुए। भीमसेनभी उन पर महावेगसे धावमान हुए। तब तो दोनो वीरसे महाघोर युद्ध होने लगा दोनो वीर मत्त मातङ्गके समान देह विदारणक्षम तीक्ष्ण शर द्वारा परस्पर प्रहार करने लगे। भीमसेनने क्षुर द्वय द्वारा दुःशासनका कार्मुक और ध्वजदण्ड खण्ड खण्ड करके उनके ललाटमें एक शर निक्षेप पूर्वक सारथीका मस्तक छेदन कर दिया। तब दुःशासनने अन्य एक शरासन ग्रहण करके द्वादश शरसे भीम-सेनको विद्ध किया, और अश्व रश्मि स्वयं ग्रहण करके भीम पर शरवर्षण करने लगे। और सुवर्णजड़ित अशनि सदृश अति दुःसह भीषण शर भीमपर परित्याग किया। भीमसेन उस शरसे अति व्यथित और स्खलित देह होके बाहु प्रसारण पूर्वक रथमें निपतित हुए, और शीघ्रही संज्ञालाभ करके भीषण स्वरसे सिंहनाद करने लगे।

इति ८३ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर आपके पुत्र दुःशासन महायुद्ध करते हुए, एक वाणसे भीमका शरासन छेदन पूर्वक षष्ठि वाणसे उनके सारथी और नव वाणसे उनको विद्ध करके पुनर्वार असंख्य वाणवर्षण करने लगे। तब भीमसेनने क्रोधा-

विष्ट होय दुःशासन पर एक तीक्ष्ण शक्ति प्रयोग कियो। आपके पुत्रने उसको एक शरसे छेदन कर डाला और पुनर्वार भीमसेनको विद्ध करने लगे। महावीर भीमसेन आपके पुत्रके वाणाघात द्वारा क्रोधसे प्रज्वलित होय बोले, हे वीर! तुमने तो हमको विद्ध किया, अब हम गदा प्रहार करते हैं सह्य करो, भीमसेन यह कहके क्रोध भरे दुःशासनके विनाश वासनासे दारुण गदा ग्रहण किये हुए पुनर्वार बोले, हे दुरात्मन्! आज हम रणस्थलमें तुम्हारा शोणित पान करेंगे। इतनेमें महावीर दुःशासनने मृत्यु स्वरूप एक शक्ति भीमसेन पर निक्षेप कियो। तब भीमसेनने भी क्रोधाविष्ट होय भीषण गदा परित्याग किया। दुःशासनकी शक्तिको भग्न करता हुआ मस्तक पर निपतित होय उनको रथसे दश धनु अन्तर निपातित करके उनके रथ, अश्व और सारथीको उस गदाने चूर्ण कर दिया। तब दुःशासन कम्पित और पीड़ासे कातर होय भूतल पर विलुण्ठित होने लगा। यह देख पाण्डव और पाञ्चालगण आह्लादित होय सिंहनाद करने लगे। अनन्तर भीमसेन रथसे अवतीर्ण होय महावेगसे दुःशासन पर धावमान हुए। उस समय वह वीर घोर संग्राम स्थलमें दुःशासनको निरीक्षण करतेही आपके पुत्रगणने जिस जिस प्रकारसे पाण्डवगणकी शत्रुता की थी, वह सब और ऋतुमती द्रौपदीका केशाकर्षण, वस्त्रापहरण और अन्यान्य दुःख सब उनको स्मरण हो आया, अनन्तर क्रोधसे हुताशनके समान प्रज्वलित होय कर्ण, दुर्य्योधन, कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा और कृतवर्मासे बोले, हे वीरगण! आज हम पापात्मा दुःशासनको यमालय प्रेरण करेंगे, आप लोगका साध्य होय तो इसकी रक्षा कीजिये। यह कहते हुए, दुर्य्योधन और कर्णके समक्ष लम्फ प्रदान पूर्वक रथसे भूतलमें अवतीर्ण

होय अपनी प्रतिज्ञा प्रतिपालनार्थ शितधार असि उद्यत करके क्रोधसे कम्पित कलेवर होय दुःशासनके ऊपर पदार्पण पूर्वक वक्षस्थल विदीर्ण करके उष्ण शोणित पान किया और शीघ्रही उनका मस्तक छेदन करके पुनर्वार रक्तपान पूर्वक बोले, कि मातृस्तन्य, घृत, सुरा, उत्कृष्ट जल, दधि और दुग्ध प्रभृति जो अमृत रस तुल्य सुस्वाद पानीय हैं, आज यह शत्रु शोणित सबोंसे हमको सुस्वादु ज्ञान हुआ। हे महाराज! क्रूरकर्मा क्रोधाविष्ट भीमसेन यह कहके हास्य पूर्वक बोले, हे दुःशासन! इस समय मृत्युने तुम्हारी रक्षा की है, अब हम तुम्हारा कुछभी नहीं कर सकेंगे, हे महाराज! उस समय जिसने जिसने भीमसेनको अवलोकन किया था उसमें कोई कोई भयार्त होय भूतलमें निपतित होने लगे। और किसी किसीके हस्तसे अस्त्र परिभ्रष्ट होगये थे। और सैन्यगण भीमसेनको रक्तपान करते देख चित्रसेनके सहित भयसे पलायन करने लगे। उसी समय युधामन्यु पलायमान चित्रसेन पर धावमान होय शरद्वारा उनको विद्ध करने लगे। अनन्तर चित्रसेन विद्ध होय क्रुद्ध भुजङ्गके समान प्रतिनिवृत्त होय युधामन्यु पर शर वर्षण करने लगे, तब युधामन्युने शाणित शरद्वारा चित्रसेनका मस्तक छेदन कर डाला। चित्रसेनके निहत होनेसे कर्ण अपना पुरुषत्व प्रदर्शन पूर्वक पाण्डव सैन्यको विद्रावित करने लगे। यह देख महावीर नकुल उन पर धावमान हुए।

इधर भीमसेन निधनदुःशासनका रुधिर अञ्जलिमें परिपूर्ण करके वीरगणके समक्ष कहने लगे, रे पुरुषाधम दुःशासन! यह हम तेरे कण्ठका रुधिर पान करते हैं, अब तुम गौ गौ वाक्य कहके उपहास करो। उस समय कठोर वाक्य द्वारा उपहास करके जो लोग नृत्य करते थे, अब हम

लोग वैसही नृत्य करेंगे। रे दुःशासन! जितना कष्ट हम लोगोंने सह्य किया उन सबका तूंही मूल है। हे महाराज! रक्ताक्तकलेवर लोहिताक्ष क्रोधपरायण भीमसेन ये बातें कहते, और हास्य करते हुए, केशव और अर्जुनसे बोले, हे वीरद्वय! हमने दुःशासनके निधनार्थ जो प्रतिज्ञा की थी वह आज सफल होगई, अब शीघ्रही इसी संग्राम रूप यज्ञ-स्थले द्वितीय पशुको संहार करेंगे, हम निश्चयही कौरवगणके समक्ष गदाघातसे उस दुरात्माका मस्तक विमर्द्दन पूर्वक उसको विनाश करके शान्ति लाभ करेंगे। हे महाराज! भीमसेन यह कहके सिंहनाद परित्याग करने लगा।

इति ८४ अध्याय।

हे महाराज! दुःशासनके निहत होने पर निषङ्गी, कवची, पाशी, दण्डधार, अनुग्रह, अलुलोप, सह, षण्ड, वातवेग और सुवर्चा आपके ये दशो पुत्र भ्रातृशोकसे कातर होय शर द्वारा भीमसेनको आच्छन्न करने लगे। वीरवराग्रगण्य वृकोदरने क्रोधसे लोहितनेत्र क्रुद्ध कालान्तक यमके समान वेगवान् दश भल्ल द्वारा उन दशोंको निपातित किया। कौरव सैन्यगण यह देख भीमभयसे भीत होय सूतपुत्रके समक्षही पलायन करने लगे।

उसी समय महावीर कर्ण भीमसेनका पराक्रम देख अत्यन्त भीत हुए तब मद्रराज शल्य बोले, हे कर्ण! वह देखो भूपति-गण भीमभयसे पलायन करते हैं, राजा दुर्य्योधन भ्रातृशोकसे अति कातर हुए हैं, उनके हतावशिष्ट सहोदरगण और कृपाचार्य्य उनकी शुश्रूषा कर रहे हैं। धनञ्जय प्रभृति पाण्डव-गण अन्यान्य वीरगणको पराजय करके तुम्हारेही अभिमुख आगमन करते हैं; इससे अब तुमको व्यथित होना उचित नहीं

है। अब तुम क्षत्रधर्मानुसार पौरुष प्रकाश करके शीघ्र धनञ्जयके निकट गमन करो। दुर्य्योधनने समस्त भार तुम पर दिया है, तुम साध्यानुसार यही भार वहन करो। संग्राममे जय लाभ करने विपुल कीर्ति और पराजित होके निहत होनेसे स्वर्ग लाभ होगा इसमे सन्देह नही हैं, वह देखो तुम्हारे विमोहित होने तुम्हारा पुत्र वृषसेन कोपाविष्ट होय पाण्डवगणके प्रति धावमान हुआ है। हे महाराज! यह श्रवण करके कर्णने मनमे युद्ध अवश्यकर्तव्य स्थिर किया। अनन्तर कर्णात्मज वृषसेन और महावीर नकुलसे महायुद्ध होने लगा, उस समय नकुलने असिद्वारा बहु संख्यक वीरगणको निपातित किया, महावीर नकुल भीमसेनसे रक्षित होय अति भयङ्कर कार्य्यका अनुष्ठान करने लगे। अनन्तर वृषसेनने उनको शर द्वारा बिद्ध करके विरथ और शस्त्रहीन कर दिया, तब नकुल भीमसेनके रथ पर आरोहण कर गये। यह देख वृषसेन और अन्यान्य कौरवगण समवेत होय उन दोनो वीरके ऊपर शर वर्षण करने लगे, अनन्तर धनञ्जयने नकुल को वृषसेनसे पीड़ित देख उनके अभिमुख गमन करनेको कृष्णसे कहा।

इति ८५ अध्याय।

हे महाराज! इसी प्रकारसे उभय पक्षीय समस्त वीरगण एकत्र होय घोर युद्ध करने लगे। महावीर कृपाचार्य्य कुलिन्दराजको तीक्ष्ण शरद्वारा मातङ्गके सहित भूतलमे निपातित किया, यह देख उनके अनुज लौहमय तोमर द्वारा कृपाचार्य्यका रथ आलोड़ित करने लगे तब महावीर शकुनिने शीघ्रही उनका मस्तक छेदन कर डाला। अनन्तर भोजराज कृतवर्माने वाणनिकरसे शतानीकका असंख्य मातङ्ग, अश्व, रथ और पदातिगणको निहत और निपातित किया।

अनन्तर कुलिन्द राजके तृतीय भ्राता राजा दुर्य्योधनके ऊपर वाणवर्षण करने लगे, यह देख महावीर शकुनि शाणितशरसे कुलिन्द राजके सहोदरको विद्ध किया।
अनन्तर महावीर शाख कुलिन्दराजसहोदरके शरसे निहत होय वायु विपाटित वनस्पति के समान भूतलमें निपतित हुए। अनन्तर कुलिन्दराजसहोदरने महावीर वृकको निहत किया तब वभ्रुनन्दनने उन पर धावमान हुए। इतनेमें सहदेवनन्दनने वभ्रुनन्दनको शर द्वारा निपातित किया और महावीर शकुनिने कुलिन्दराजसहोदरका मस्तक छेदन कर डाला। हे महाराज! उस समय पाण्डव और कौरव-गणमें महाघोर युद्ध होने लगा। नकुलपुत्र शतानीकके वाणसे बहुतर सैन्य विनष्ट हुई, अनन्तर कर्णात्मज वृषसेनने समस्त पाण्डव पक्षीय वीरगणको निपीड़ित कर दिया तब तो सबही उसकी प्रशंसा करने लगे, और वृषसेन अर्जुनके दक्षिणभुजमूलमें वाण निक्षेप पूर्वक कृष्णको नव वाणसे विद्ध करके सिंहनाद करने लगा। तब अर्जुन रोषाविष्ट होय गर्व प्रकाश पूर्वक बोले, हे कर्ण! हमारा पुत्र अभिमन्यु एकाकी रथमें अवस्थित था, तब तुम लोगने समवेत होके उसको संहार किया, परन्तु आज हम तुम लोगके समक्ष वृष-सेनको विनाश करेंगे। यह कहके शरासन परिमार्जित और वाणजाल विस्तार पूर्वक वृषसेनको लक्ष्य करके दश वाणसे उसका मर्मदेश विद्ध किया और चार क्षुर निक्षेप पूर्वक उनका शरासन, बाहुयुगल और मस्तक छेदन कर दिया। तब कर्ण अपने पुत्रको वाणसे निहत और भूतलमें निपतित निरीक्षण करके अति कातर और रोषान्वित होय तत्क्षणात् कृष्ण और धनञ्जयके ऊपर धावमान हुए।

इति ८६ अध्याय।

हे महाराज! कर्णको महावेगसे धावमान देख वासुदेव बोले, हे अर्जुन! जिससे तुमको युद्ध करना पड़ेगा वही महा-वीर कर्ण आगमन करते हैं, सो अब तुम स्थिर हो और संपूर्ण यत्न करके सूतपुत्रको निपातित करो, तुम्हारे भिन्न कर्ण वाण सहन करनेवाला दूसरा नहीं है, हम विशेष करके जान्ते है, कि तुम त्रिलोक को जय कर सकते हो। देखो महादेवका दर्शन तो दुर्लभ है उनसे युद्ध करे ऐसा कौन है? सो तुमने उनसे संग्राम करके उनको संतुष्ट किया, और अन्यान्य देवगणसे वर लाभ किया है, अब तुम वही शूलपाणिके प्रसादसे सूतपुत्रका संहार करो, तुम्हारा सर्वदा मङ्गल और जय लाभ होय। यह सुन अर्जुन बोले, हे सखे! आप सर्वलोगके गुरु हैं, और आप जब हम पर तुष्ट हैं तो अवश्यही हमारा जयलाभ होगा, सो अब आप रथ संचालन करो, अर्जुन कर्णको विनाश न करके कदाच प्रति निवृत्त न होगा। आप आज हमारे वाणसे कर्णको अथवा कर्नके वाणसे हमको निहत दर्शन करेंगे, जितने दिन यह पृथिवी वर्तमान रहेगी उतने दिन तक जगत् इस भयङ्कर युद्धको कीर्तन करेंगे। हे महाराज! यह कहके कर्णके अभिमुखीन धाव-मान हुए और शीघ्रही कर्णके समीपस्थ हुए।

इति ८७ अध्याय।

हे महाराज! उसी समय महावीर कर्ण वृषसेनका विनाश दर्शन करके पुत्रशोकसे सन्तप्त होय वाष्पवारि परित्याग कर रहेथे कि अर्जुनको समीप अवलोकन करके कोपाविष्ट होय उनको युद्धार्थ आह्वान करते हुए धावमान हुए। उस समय दोनो वीरका रथ मिलित होय उदित सूर्य्यद्वयकी समान शोभा पाने लगी। सहस्र सहस्र वीरपुरुषगण दोनो वीरको देख

युद्ध करनेको उद्यत देख बाहास्फोटन और वस्त्र कम्पन करने लगे, उभय पक्षसे वाद्य वादित होने लगे। हे महाराज! कौरवगण अर्जुन और कर्णको सम्मुखीन निरीक्षण करके अति हृष्ट हुए। उस समय आपके पुत्रगणने महात्मा कर्णको परिवेष्टन किया। धृष्टद्युम्न प्रभृति पाण्डवगणभी अर्जुनके चतुर्दिक् अवस्थान करने लगे। उस समरमें महावीर कर्ण कौरवगणके और अर्जुन पाण्डवगणके पणस्वरूप हुए। और समस्त देवगन्धर्व और असुरगण अन्तरीक्षमें उनका जय पराजय दर्शनार्थ अवस्थान करने लगे।

अनन्तर कर्ण और अर्जुनके निमित्त अन्तरीक्षस्थित प्राणिगणमें परस्पर महाविवाद उपस्थित हुआ। कोई कर्ण और कोई अर्जुनका पक्ष अवलम्बन करने लगे, इन्द्रादि देवगणने अर्जुनका और आदित्य और असुर, राक्षस प्रभृतिने कर्णका पक्ष अवलम्बन किया। इन्द्र अर्जुनका और सूर्य्य कर्णका जय होगा यह कहके परस्पर विवाद करने लगे। अनन्तर देवगणने सर्वलोकपितामह ब्रह्मासे पूछा कि इन दोनोमें किसका जय होगा? हम लोगोंके मतसे दोनोहीका जयलाभ होना उचित है, इस कारण इन दोनोका युद्ध शान्त होनाही उचित है। यह श्रवण करके भगवान् ब्रह्मा बोले, हे देवगण! अर्जुनने देवगणका कार्य्य साधन किया है और कर्ण दानवगणका पक्ष है, इससे अर्जुनका जय और कर्णका पराजय होनाही उचित है। अर्जुन कर्णको पराजय करे तो देवगणका दानवजयरूप कार्य्य साधन होगा इसमें कुछ सन्देह नहीं है। इसी कारणसे हम लोग अर्जुनका जय प्रार्थना करते हैं, आत्म कार्य्य साधन ही सबके लिये गुरुतर कार्य्य है। धनञ्जय और वासुदेव रोषपरवश होके समराङ्गणमें मर्य्यादा अतिक्रम किया करते हैं, ये नर और नारा-

यण हैं, यही जगत्‌की सृष्टिकर्त्ता हैं, यही सबका शासन किया करते हैं, इनका नियन्ता कोई नहीं है, क्या स्वर्ग क्या मर्त्य कहींभी इनके तुल्य मनुष्य नहीं है, इनहीके प्रभावसे समस्त विश्व विद्यमान है, इससे जयश्री इनहीको लाभ होगी। यह श्रवण करके सबकोइ विस्मयाविष्ट होय उनको प्रशंसा करने लगे। देवगण अतिहृष्ट होय पुष्पवृष्टि करने लगे, सुरासुर और गन्धर्वगण दोनो वीरका द्वैरथ युद्ध अवलोकन करनेको अवस्थान करने लगे। अनन्तर महावीर अर्जुन, वासुदेव, कर्ण और शल्य ये लोग शंखनाद करने लगे। अनन्तर उन दोनो वीरका भयंकर संग्राम उपस्थित हुआ। उस समय दोनोवीरके रथका दोनो ध्वज नभोमण्डलमे उदित राहु और केतु ग्रहके समान शोभित होने लगा। महावीर अर्जुनके ध्वजस्थित कपिवर, मानो संग्रामार्थी होके कर्णके हस्तिकक्षाध्वज पर धावमान हुए इसी प्रकारसे दोनो वीरके द्वैरथ युद्धमे पहिलेही दोनो ध्वजका तुमुल संग्राम होने लगा। अनन्तर वासुदेव शल्य और अर्जुन कर्ण पर कटाक्षपात करने लगे। तब मद्रराज और कर्णभी वारंवार कृष्ण और अर्जुन पर कटाक्षपात करने लगे। अनन्तर कर्णने हास्यमुखसे शल्यको कहा, हे मद्रराज! यदि धनञ्जय आज हमको विनाश करे तो तुम क्या करोगे। सो सत्य कहो? शल्य बोले, यदि आज अर्जुन तुमको निहत करे तो हम सत्य कहते हैं, कि हम एकाकी कृष्ण और अर्जुनको विनाश करेंगे। हे महाराज! उसी समय अर्जुननेभी कृष्णको यही बात पूछी तो कृष्ण हास्य करके बोले, हे धनञ्जय! यदि सूर्य्य अपने स्थानसे निपतित होय, यदि महोदधि शुष्क होय, अथवा हुताशन शीतलगुण अवलम्बन करे तथापि कर्ण तुमको विनाश नहीं कर सकता है; यद्यपि ऐसी घटना होय तो निश्चयही प्रलय

काल उपस्थित होगा, तब हम कर्ण और शल्यको केवल भुज द्वारा विनष्ट करेंगे।

अर्जुन यह वाक्य श्रवण करके हास्य करते बोले, हे जनार्दन! कर्ण और शल्य दोनो एकत्र होय तौभी हम उनको अपने समान ज्ञान नहीं करते हैं, आज आप कर्णको निश्चय ही शरशय्या पर शयान देखेंगे।

इति ८८ अध्याय।

'हे महाराज' उस समय नभोमण्डल देव, नाग, असुर, सिद्ध, यक्ष, गन्धर्व, राक्षस, अप्सरा, ब्रह्मर्षि और राजर्षिगणसे समाकीर्ण होय अति शोभित हुआ था। अनन्तर कौरव और पाण्डवगण विविध वाद्य वादन पूर्वक शत्रु पीड़न करने लगे। वीरगणको शोणित धारासे समराङ्गण लोहित वर्ण होगया, अनन्तर देवासुरयुद्धके समान पाण्डव और कौरवगणका युद्ध होने लगा। उस समय धनञ्जय और कर्णके शरनिकरसे उभय पक्षीय सैन्य और दशो दिशा आच्छन्न हो गया, किसीको कुछभी दृष्टिगोचर न हुआ। अन्यान्य वीरगणने समाकुलित होय अर्जुन और कर्णका आश्रय ग्रहण किया। दोनो महावीर परस्पर अस्त्र द्वारा अस्त्र निवारण करके अन्धकारापहारी उदित चन्द्र सूर्य्यके समान शोभित होने लगे। और शरासन मण्डलाकार करके अनवरत शर निक्षेप करके परस्पर निपीड़ित और उभय पक्षीय असंख्य हस्ती, अश्व और मनुष्यको निपातित करने लगे, उभय पक्षीय चतुरङ्गिणी सेना वीरद्वयसे निपीड़ित होय सिंह ताड़ित मृग यूथके समान पलायन करने लगी। अनन्तर दुर्य्योधन, कृतवर्मा, शकुनि, कृप और अश्वत्थामा ये पांचो महारथ वासुदेव और धनञ्जयको शर द्वारा विद्रावित करने लगे। महावीर अर्जुन

शत शरसे आहत होय शर निकरसे उन लोगोंका शरासन, तूणीर, ध्वज, अश्व, रथ और सारथीको एकही कालमें ध्वंस करके द्वादश बाणसे कर्णको बिद्ध किया, अनन्तर एकशत रथी, एक शत गजारोही और अश्वारोही शक, जवन और काम्बोज गण शीघ्रही अर्जुनके ऊपर धावमान हुए। अर्जुनने शीघ्र शर और क्षुर द्वारा वे अश्व, हस्ती और रथारोही वीरगणका अस्त्र शस्त्र और मस्तक छेदन करके वाहनगणके सहित उन लोगको रणशायि कर दिया। यह देख अन्तरिक्षसे देवगण सन्तुष्ट होय अर्जुन पर पुष्पवृष्टि करने लगे। हे महाराज! उस समय यह अद्भुत व्यापार देखके सबही विस्मयापन्न हुए। परन्तु एकमतावलम्बी दुर्य्योधन और सूतपुत्र कर्ण कुछभी व्यथित अथवा विस्मित न हुए।

अनन्तर द्रोणपुत्र अश्वत्थामा दुर्य्योधनका हस्त धारण पूर्वक सान्त्वना वाक्यसे बोले, हे महाराज! अब शान्त हो, पाण्डवगणसे विरोध करनेका कुछ प्रयोजन नहीं है, युद्धको धिक्। इस संग्राममें हमारे पिता अस्त्रविद्याविशारद ब्रह्मा सदृश द्रोणाचार्य्य और भीष्म प्रभृति महारथगण निहत हुए हैं। हम और कृपाचार्य्य दोनोही अवध्य हैं, इसीसे आज जीवित बचे हैं, सो अब आप पाण्डवगणके साथ सन्धिस्थापन करके परम सुखसे चिरकाल राज्य शासन करो। हमारे निवारण करनेसे अर्जुन शान्त हो जांगे। वासुदेवको विरोध बढ़ानेकी वासना नहीं है। युधिष्ठिर नियत प्राणिगणके हित साधनमें तत्पर रहते हैं, और वृकोदर नकुल और सहदेव धर्मराजके अनुगत है, इसीसे पाण्डवगणको अनायास शान्त करायाजा सकता है, अब आप इच्छा पूर्वक पाण्डवगणसे सन्धिस्थापन करे तो प्रजा सुखी होय। हे कुरुराज! यदि तुम हमारा वाक्य श्रवण न करोगे तो निश्चय कहते हैं कि आप इसी

युद्धमें निहत होंगे। इस समय आपने क्या नहीं देखा? कि इन्द्र प्रभृति देवगण जो कार्य्य साधन करनेको असमर्थ हैं, सो एकाकी अर्जुनने साधन किया। अर्जुन ऐसे गुणशाली होकेभी कदाच हमारा वचन लङ्घन नहीं करेंगे, वह सर्वदा तुम्हारे अनुगत होके काल यापन करेंगे, इससे अब आप शान्ति अवलम्बन करो, इस समय तुम पाण्डवगणसे मिलना कर सको तो तुमसे जगत्का अति हितसाधन हो सकता है। हे महाराज! अश्वत्थामाका वाक्य श्रवण करके दुर्य्योधन क्षणकाल चिन्ता और दीर्घ निश्वास परित्याग पूर्वक विमनायमान हो कर बोला, हे सखे! जो आपने कहा सो सत्य है, परन्तु दुरात्मा वृकोदरने दुःशासनको निहत करके आपके सम्मुखही जो वाक्य प्रयोग किया सो हमारे हृदयमें ग्रथित है, सो अब किस प्रकारसे सन्धिस्थापन करेंगे। और देखिये हम लोगने वारम्बार पाण्डवगणसे वैराचरण किया है, वे लोग वह सब स्मरण करके कदाच सन्धिस्थापन नहीं करेंगे, विशेष करके इस समय कर्णको युद्धसे निवृत्त करना आपका कर्तव्य नहीं है, क्यों कि महावीर अर्जुनभी कदाच कर्णको निपातित नहीं कर सकता है, हे गुरुपुत्र! आज अर्जुन अतिशय श्रान्त हुआ है, सूतपुत्र अभी उसको विनाश करेंगे। हे महाराज! आपका पुत्र दुर्य्योधन विनयपूर्वक वारंवार यही अश्वत्थामाको कहके सैनिकगणसे बोला, हे वीरगण! तुम लोग निश्चिन्त क्यों बैठे हो? शीघ्र वाणवर्षण पूर्वक शत्रुगण पर धावमान हो।

इति ८८ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर अर्जुन और कर्ण परस्पर वाण वर्षण पूर्वक महाघोर युद्ध करने लगे। दोनोंके वाणाघातसे

द्रोणीपक्षके घोड़े और सारथीगणका अङ्ग चतविक्षत होनेसे अनवरत शोणित धारा निपतित होने लगी। अनन्तर कर्णने दश बाणसे अर्जुनको विद्ध किया, और धनञ्जयनेभी दश बाण कर्णके वक्षमें विद्ध किया। और धनञ्जय बारंवार कर्णके ऊपर विविध बाण निक्षेप करने लगे, कर्णने वह सब निराकृत कर डाला। तब धनञ्जयने कर्ण पर आग्नेय अस्त्र परित्याग किया उस अस्त्रसे भूमण्डल आकाशमण्डल आच्छन्न और प्रज्वलित हो गया, सैन्यगण उस अस्त्रके प्रभावसे दग्ध-वसन होय पलायन करने लगे। उस समय वेणुवन दग्ध होनेसे जैसा शब्द होता है, वैसही घोर शब्द रणस्थलमें होने लगा। यह देख सूतपुत्रने वारुणास्त्र निक्षेप किया, उसके प्रभावसे आकाशमण्डल मेघमण्डलसे आच्छन्न होगया, और अनवरत वारिधारा निपतित होके धनञ्जयके आग्नेयास्त्र की अग्नि निर्वापित हो गई, आकाशमण्डल मेघसे व्यापित होय महा अन्धकारसे कुछभी दृष्टिगोचर न होता था। यह देख धनञ्जयने शीघ्रही वायव्यास्त्र द्वारा कर्णका वारुणास्त्र निवारित कर दिया।

अनन्तर महावीर अर्जुन ने देवराज इन्द्र प्रदत्त एक अस्त्र मंत्रपूत करके प्रादुर्भूत किया। तब अर्जुनके गाण्डीवसे विविध शस्त्र निर्गत होय सूतपुत्रका देह, अश्व, शरासन और ध्वजदण्ड भेद करके गरुड़भीत भुजङ्गके समान भूतलमें प्रविष्ट हुआ। सूतपुत्रने आच्छन्न और रुधिरलिप्तकलेवर होय शरासन आनत करके भार्गवास्त्र प्रादुर्भूत किया। उस अस्त्रके प्रभावसे धनञ्जयका अस्त्रजाल विनष्ट और पाण्डव पक्षीय असंख्य सैन्य विनष्ट हुई। और कर्ण शरद्वारा पांचालदेशीय प्रधान प्रधान योद्धा और सोमक गणको विनष्ट करने लगे। वे लोग कर्णके शरजालसे प्राणत्याग करके भूतलमें निपतित

होने लगे। हे महाराज! कौरवपक्षीय वीरगण यह देख सिंहनाद करने लगे। और वे लोग अनुमान करने लगे कि कर्णने वासुदेव और अर्जुनको अत्यन्त आघात किया। उसी समय भीमसेन और वासुदेव कर्णका पराक्रम दुर्विषह और धनञ्जयका अस्त्र प्रतिहत देख क्रोधभरे दीर्घनिश्वास परित्याग पूर्वक अर्जुनको नाना प्रकार अर्थसंयुक्त वाक्यसे उत्तेजित करने लगे। तब अर्जुन सूतपुत्रके संहार करनेको अभिलाषी होय बोले, हे वासुदेव! हम सूतपुत्रके बध और लोगके उप-कारार्थ अति भयंकर अस्त्र प्रादुर्भूत करते हैं आप आज्ञा दीजिये। यह कहके प्रजापति ब्रह्माका स्मरण करके ब्रह्म-अस्त्रका प्रादुर्भूत किया। तब महारथ कर्णने शरनिकर वर्षण पूर्वक अर्जुनके ब्रह्मास्त्रको निराकृत कर दिया। अनन्तर भी-मसेनके वाक्यानुसार अर्जुनने पुनर्वार ब्रह्मास्त्र प्रादुर्भूत करके असंख्यशर परित्याग पूर्वक कर्णका रथ आच्छन्न कर दिया। और अर्जुनके शरसे असंख्य कौरवसैन्य निहत होने लगे। हे महाराज! इसी प्रकारसे अर्जुनके शरसे दुर्य्योधनके प्रधान प्रधान बहुतर योधगण विनष्ट हुए। उसी समय कर्णभी अर्जुनपर वारिधाराके समान शर वर्षण करने लगे। अनन्तर कृष्ण अर्जुन और भीमसेनको तीन तीन शरसे आघात करके सिंहनाद करने लगे। अनन्तर अर्जुनने तीन शरसे कर्ण और चारशरसे मद्रराजको बिद्ध करके दश शरद्वारा सभापति का मस्तक छेदन करके भूतलशायी करदिया। इसी प्रकारसे परस्पर महाघोर युद्ध होने लगा, और कर्ण और अर्जुनके शरद्वारा उभय पक्षीय बहुतरसैन्य विनष्ट हुए। इसी अव-सरमें धर्मराज युधिष्ठिर युद्ध दर्शनार्थ रणस्थलमें उपस्थित हुए। यहदेख सबही अति सन्तुष्ट हुए। अनन्तर कर्णने वासुदेवपर पांचशर निक्षेप किया, वे पांचो शर तक्षकपुत्र

अश्वसेन पच्चीय पांच महासर्प थे। सो वासुदेवका मर्मभेद करके पातालमें प्रविष्ट होय पुनर्वार कर्णके निकट आगमन करने लगे। यह देख धनञ्जयने प्रत्येकको तीन तीन खण्ड कर-दिया। और एकाकी पार्थने चणकालमें दुर्य्योधनप्रेरित द्विसहस्र चक्ररचक, पादरचक और पृष्ठरचकको अश्व रथ और सारथीके सहित यमनसदनको प्रेरित किया। अन-न्तर आपके पुत्रगण और हतावशिष्ट कौरवगण चतविचत आत्मीय गणको परित्याग करके पलायन करने लगे। हे महाराज! कर्ण अपने सैन्यको पलायित देखके भी कुछ भीत न हुए और हृष्ट होय अर्जुनके प्रति धावमान हुए।

इति ९० अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर कर्णने परशुरामशिचित महास्त्र-जाल वर्षण करके धनञ्जयके अस्त्रको निवारित करदिया। अनन्तर परस्पर तुमुल संग्राम होने लगा। दोनो वीरके अनवरत शर वर्षणसे आकाश आच्छन्न होगया। बल, वीर्य्य, पौरुष और अस्त्रमायाके प्रभावमें कभी सूतपुत्र और कभी अर्जुन प्रबल ज्ञान होते थे। कोई साधु कर्ण! कोई साधु अर्जुन! कह उठते थे।

हे महाराज! पूर्वमें अश्वसेन नामक सर्प जो खाण्डव-दाहसे मुक्त पाके पातालको चला गया था और उसकी माता दग्ध होगई थी, वह पूर्ववैर स्मरण करके वैरनिर्य्यातनका यह अवसर जान कर्णके तूणीरशायी एकशरमें प्रविष्ट हुआ। अनन्तर युद्ध करते करते दोनोवीर श्रान्त हुए तो अप्सरागण चामर, वीजन और चंदन सिचन करने लगीं, और पुरन्दर और दिवाकर करतल द्वारा उन लोगोंका मुखकमल मार्जन करने लगे। सूतपुत्र किसी प्रकारसेभी अर्जुनको अतिक्रम

नकर सका, तब एक तणीरशायी शर उनको स्मरण हो आया, वह शर ऐरावत नागवंशसम्भूत था। कर्णने धनञ्जयके बधार्थ उस शरको सुवर्ण तुणीरमें चन्दनचूर्ण पर अति यत्नसे रक्खा किया था। वही ज्वालाकराल सर्पमुख शर अर्जुनके मस्तक छेदनार्थ शरासनपर सन्धान और आकर्ण आकर्षण किया। हे महाराज! उसी शरमें महानाग अश्वसेन योग-बलसे प्रविष्ट हुआ था। कर्ण यह कुछभी नहीं जानते थे। इस शरसे अवश्यही अर्जुन विनष्ट होंगे यह विचार देवराज इन्द्र अति भीत हुए तब पितामह ब्रह्मा बोले, हे इन्द्र! तुम कुछ व्यथित मत हो। अर्जुनहीका जय होगा। उसी समय शल्यने वह शर सन्धान करते देख कर्णसे कहा, हे कर्ण! इस शरसे अर्जुनका ग्रीवा छेदन न होगा सो जिससे अर्जुन नष्ट होय ऐसा एक दूसरा शर परित्याग करो। कर्ण बोले, हे शल्य! कर्ण एकशर सन्धान करके उसको परित्याग न करके दूसरा शर सन्धान नहीं करते हैं, और हमारे सदृश मनुष्य कदाच कूट युद्ध नहीं करते। कर्ण यह कहके विजय लाभार्थ उद्यत होय तत्क्षणात् वह बहुवर्ष परिपूजित शर परित्याग पूर्वक अर्जुनसे कहा, हे धनञ्जय! इसवार तुम विनष्ट हुए। तब वह प्रदीप्त शर अन्तरिक्षमें उत्थित होय सूर्य्यके समान प्रज्व-लित होने लगा। उसी समय महात्मा वासुदेवने शीघ्रही पदद्वारा रथको आक्रमण करके भूतलमें किञ्चित् प्रवेशित किया और अश्वगणभी जानु आकुञ्चित करके भूतलमें अव-स्थान करने लगे। तब तो आकाश मण्डलमें वासुदेवकी प्रशंसाका शब्द और पुष्पकी वृष्टि होने लगी। इसी प्रकार वासुदेवके प्रयत्नसे अर्जुनका रथ भूतलमें निमग्न हो जानेसे कर्णके नागास्त्रने अर्जुनके इन्द्रदत्त किरीटपर निपतित होय उसको चूर्ण करदिया। वह किरीट भगवान् स्वयम्भूने इन्द्रके

लिये अपने तपोबलसे निर्माण किया था। शत्रुगण उसको निरीक्षण करतेही भीत होजाते थे। इन्द्रने वही किरीट अर्जुनको प्रदान कियाथा। वह किरीट किसी प्रकारसेभी नष्ट होनेका न था, सो इस समय दुष्टस्वभाव अश्वसेनकी प्रभावसे नष्ट हो गया। उस समय एक घोरशब्द उत्थित हुआ, उसको श्रवण करके सबही व्यथित हो गये। इसी प्रकारसे वह नाग धनञ्जयको नष्ट करनेसे असमर्थ होय कर्णके निकट उपस्थित होके कर्णसे बोला, हे कर्ण! तुमने हमको विना देखे शर परित्याग किया इसीसे हम अर्जुनका मस्तक छेदन न कर सके, सो अब तुम हमको देखके वही शर परित्याग करो तो निश्चयही हम तुम्हारे और हमारे शत्रुको संहार करेंगे। कर्ण बोले, हे भद्र! तुम्हारा आकार अति भयंकर देखते हैं सो तुम कौन हो सो कहो? नागने यह सुन अपना समस्त विवरण वर्णन किया। कर्ण बोले, हे नाग! कर्ण कभी दूसरेका बलवीर्य्य अवलम्बन करके विजयी न होगा। एकशत अर्जुनसे युद्ध करना होय तोभी एक शर दुय वार सन्धान नहीं करते हैं सो हम विविध उत्कृष्ट शरसे अर्जुनका विनाश कर लेंगे, तुम अपने स्थानमें गमन करो। हे महाराज! नागराज कर्णवाक्यको असह्य ज्ञान करके शस्त्ररूप धारण पूर्वक रोषाविष्ट होय धनञ्जयके विनाशार्थ गमन करने लगा। उसी समय वासुदेव बोले, हे धनञ्जय! तुम शीघ्र उस दुष्ट सर्पराजको विनष्ट करो। यह वही भुजङ्गम हैं, जिसकी माताको खाण्डवारण्यके दाहनके समय तुमने विनाश किया था, और यह पलायित हो गया था वही पूर्व-वैर स्मरण करके अर्जुनने छः निशित शरसे नागराजको निहत कर दिया। नागराजके निहत होनेसे हृषीकेशने स्वयं बाहु-युगल द्वारा अर्जुनके रथको पृथिवीसे उत्तोलन किया।

अनन्तर कर्णने दश शरसे धनञ्जयको बिद्ध किया। अर्जुननेभी क्षुरप्र वराहकर्ण बाण निक्षिप्त किया। अनन्तर अर्जुनने असंख्य शरसे कर्णका मर्मभेद करके पुनर्वार यमदण्डसदृश नवति बाण परित्याग किया। महावीर कर्ण धनञ्जयके शराघातसे वज्राहत पर्वतके समान अति व्यथित हुए, अनन्तर शिरोभूषण और कुण्डलद्वय धनञ्जयके शराघातसे भूतलमें निपतित हुआ, और कर्णका वर्मभी धनञ्जयने क्षणकालमें बहुधा विदीर्ण कर दिया, अनन्तर क्रोध भरे अर्जुनने निशित चार शरसे बिद्ध किया तब तो सूतपुत्र सान्निपातिकज्वराक्रान्त आतुरके समान अत्यन्त व्यथित हुए, धनञ्जय शरसे उनका अङ्ग क्षतविक्षत और मर्म बिद्ध करने लगे। महावीर कर्ण अति व्यथित होय रुधिराक्तकलेवर मानो गैरिकधातुधारा-वर्षी पर्वतके समान शोभापाने लगे। अनन्तर अर्जुनने पुन-र्वार यमदण्डसदृश बाणद्वारा कर्णका वक्षस्थल भेद किया। तब सूतपुत्र व्यथित और शिथिलमुष्टि होय शरासन और तूणीर परित्याग पूर्वक रथ पर मूर्च्छित हो गए तब आतुरको पीड़ित करना अकर्तव्य जानके धनञ्जयने सूतपुत्रके विनाश करनेको अभिलाषी न हुए, तब वासुदेव बोले, हे धनञ्जय! तुम क्यों प्रमत्त हुए हो? बुद्धिमान् लोग दुर्बल शत्रुके विनाश करनेमेभी कालकी प्रतीक्षा नही करते, वे लोग व्यसन निमग्न शत्रुकोभी निपातित करके धर्म और कीर्ति लाभ करते हैं, इस लिये तुम प्रबल शत्रु कर्णके विनाश करनेमें सचेष्ट हो नहीं तो वह शीघ्रही पूर्ववत् पराक्रम प्रकाश करके तुम्हारे सम्मुख होगा। अनन्तर वासुदेव वाक्य शिरोधार्य्य करके धनञ्जय कर्णको बाणद्वारा निपीड़ित करने लगे।

हे महाराज! इतनेमे कर्णभी अर्जुनको लक्ष्य करके असंख्य शर वर्षण करने लगा, धनञ्जयने उन सबको छेदन कर दिया,

अनन्तर पार्थने कर्ण पर भीषण रौद्र वाण क्षेपण करनेका अभि-लाष किया। हे महाराज ! उस समय कर्णका विनाश काल उपस्थित होनेसे कालने अदृश्य भावसे उनको ब्राह्मणके शापका वृत्तान्त ज्ञात कराके कहा, हे सूतपुत्र ! वसुन्धरा तुम्हारा रथचक्र ग्रास करती है। कालके यह कहतेही कर्ण परशुराम प्रदत्त अस्त्र विस्मृत होगये, और पृथिवी उनके रथका वाम चक्र ग्रास करने लगी, उसी समय ब्राह्मणके शापसे कर्णका रथ विघूर्णित होने लगा और भूतलमें निमग्न हो गया।

हे महाराज ! इसी प्रकारसे कर्णका सर्पमुख वाण विनष्ट, रथ घूर्णित और परशुरामप्रदत्त अस्त्र विस्मृत होनेसे वह अत्यन्त विषण्ण और विह्वल होगये, और वह क्लेश सहन न कर सके इससे हस्त विधूनन पूर्वक आक्षेप प्रकाश करके कहने लगे, कि धर्मज्ञ लोग कहते हैं, कि धर्म धार्मिककी सदा रक्षा करता है, तथापि धर्म हम लोगका विनाश कर रहा है इसीसे निश्चय होता है, कि अब धर्म धार्मिककी रक्षा नहीं करते हैं। हे महाराज ! यही कहते कहते सूतपुत्र धनञ्जयके वाणसे विचलित हुए। उनके अश्व और सारथि स्खलित होगये। वहभी अपने कार्य्यसे शिथिलप्रयत्न होय वारंवार धर्मकी निन्दा करने लगे। और तीन वाणसे वासुदेवको और सात वाणसे धनञ्जयको विद्ध किया, अर्जुननेभी वज्र-तुल्य सप्तदश शर परित्याग किया, वह वाण महावेगसे कर्णके शरीरको भेद करके भूतलमें पतित हुआ, तब सूतपुत्रने कम्पित होय वलपूर्वक ब्रह्मास्त्र मन्त्रपूत करके परित्याग किया, तब धनञ्जयनेभी ऐन्द्र अस्त्र मन्त्रपूत किया, और गाण्डीवमें ज्या और अन्यान्य वाण मन्त्रपूत करके वारिवर्षी पुरन्दरके समान वाणवर्षण करने लगे, तब कर्णने उसको व्यर्थ कर दिया। यह देख वासुदेव बोले, हे धनञ्जय ! कर्ण तुम्हारा

सब अस्त्र विनष्ट करता है सो तुम उत्कृष्ट अस्त्र परित्याग करो। तब धनञ्जयने ब्रह्मास्त्र मन्त्रपूत और शरासन पर योजित करके परित्याग किया, अनन्तर सूतपुत्रने निशित वाण निकरसे क्रम क्रम एकादश वार धनञ्जयके शरासनको मौर्वी छेदन कर दिया। धनञ्जयको एक शत ज्या थी सो कर्णको न जान पड़ा। अनन्तर धनञ्जयने गाण्डीवमे ज्या संयोजित और मन्त्रपूत करके वाण निकरसे कर्णको आच्छन्न कर दिया। ज्या छिन्न होतेही धनञ्जय कौन समय अन्य ज्या योजन कर लेते थे, कर्ण कुछभी न जान करते और महा चमत्कृत होते थे, अनन्तर कर्ण अस्त्रजालसे अस्त्र छेदन करके असाधारण पराक्रम प्रदर्शन पूर्वक उनसेभी अधिक प्रबल होगये।

तब वासुदेवने धनञ्जयको कर्णके अस्त्रसे पीड़ित देखके कहा, हे धनञ्जय! प्रधान अस्त्र ग्रहण पूर्वक कर्णके समीपवर्ती हो। यह सुनके धनञ्जयने दिव्य रौद्रास्त्र क्षेपण करनेकी वासना किया। उसी समय सूतपुत्रका रथचक्र वसुमतीने दृढ़तासे ग्रास किया। यह देख कर्ण रथसे अवतीर्ण होय भुजद्वय द्वारा चक्रके उद्धार करनेकी चेष्टा करने लगे। उस समय पृथिवी कर्णके बाहुबलसे आकृष्ट होय चार अङ्गुलि पर्य्यन्त उत्क्षिप्त हो गई। परन्तु कर्णका रथचक्र उद्धृत न हुआ। तब वह क्रोधसे अश्रु परित्याग पूर्वक धनञ्जयसे बोले, हे पार्थ! तुम मुहूर्तकाल निवृत्त हो, हम महीतलसे रथचक्र उद्धार करते हैं, दैववश हमारा दक्षिण चक्र पृथिवीमे पोथित हुआ, इस समय तुम कापुरुषोचित दुरभिसन्धि परित्याग करो, तुम रणपण्डित कहलाते हो, इस समय अभद्रके समान कार्य्य करना तुम्हारा कर्तव्य नहीं है, हे धनञ्जय! साधुव्रतावलम्बी सुरगण मुक्तकेश, विमुक्त, बद्धाञ्जली, शरणागत, याचमान, न्यस्तशस्त्र, वाणविहीन, कवचहीन और भग्नायुध

पुरुष और ब्राह्मण पर वाण परित्याग नहीं करते हैं, इहलोक में तुम शूर और धार्मिक विख्यात हो, विशेष करके हम इस समय भूतलगत और विकलाङ्ग हैं, तुम रथपर अवस्थान करते हो इससे जब तक हम रथचक्रको उद्धार न करें तब तक हमको विनाश करना उचित नही है, हम वासुदेव अथवा तुमसे कुछभी भीत न हुए हैं, तुमने क्षत्रियोंके बड़े कुलमें जन्म लिया है, इसीसे हम कहते हैं, कि मुहूर्तकाल हमको क्षमा करो।

इति ९१ अध्याय।

हे महाराज! उसी समय वासुदेव कर्णवाक्य श्रवण करके बोले, हे सूतपुत्र! तुम्हारे बड़े भाग्य जो इस समय धर्मको स्मरण करते हो नीचाशय लोग दुःखमें निमग्न होके प्रायही दैवकी निन्दा करने लगते हैं, अपने दुष्कर्मपर कुछभी दृष्टि-पात नहीं करते। देखो तुम्हारे मतानुसार एकवस्त्रा द्रौपदी सभामें आनीत हुई, तब तुम्हारा धर्म कहां था? तुम्हारे मतानुसार भीमसेनको विषान्न भक्षण करवाया तब तुम्हारा धर्म कहां था? जब तुमने जतुगृहमें पाण्डवगणको दग्ध कर-नेको अग्नि प्रदान किया तब तुम्हारा धर्म कहां था? जब तुमने सभामें द्रौपदीको यह कहके उपहास किया था कि "हे कृष्णे पाण्डवगण विनष्ट हुए अब तुम अन्य पति वरण करो" तब तुम्हारा धर्म कहां था? जब तुम महारथगणके सहित समवेत होय बालक अभिमन्युको विनाश किया तब तुम्हारा धर्म कहां था? हे कर्ण! तुमने जब उन समयोंमें अधर्मानुष्ठान किया था तो अब धर्म कहके तालु शुष्क करनेसे क्या होगा? तुम अब धर्मपरायणभी हो तो अब जीवन रहते मुक्तिलाभ कर सकोगे ऐसा कदाच मनमें मत लाइयो, पूर्वमें जैसे नलराजाने

पुष्करसे द्यूतक्रीड़ामें पराजित होय पुनर्वार राज्यलाभ किया था, वैसेही पाण्डवगण भुजबलसे शत्रुगणको विनाश करके राज्यलाभ करेंगे।

हे महाराज! यह श्रवण करके कर्ण लज्जासे अधोमुख हो गये, उनके मुखसे वाक्य स्फूर्त्ति न हुई। अनन्तर वह क्रोधसे प्रस्फुरिताधर होय शरासन उद्यत करके अर्जुनसे घोर युद्ध करने लगे, तब वासुदेव बोले, हे अर्जुन! तुम दिव्यास्त्रसे सूतपुत्रको विनाश करो। तब अर्जुनको पूर्वका सब क्लेश स्मरण हो आया, क्रोधसे अधीर हो गये। उनके लोमकूपसे तेज विनिर्गत होने लगा। यह देख सबही आश्चर्य्य हो गये। अनन्तर कर्ण ब्रह्मास्त्रका प्रादुर्भाव करके धनञ्जयपर असंख्य शर वर्षण करने लगे। धनञ्जयभी ब्रह्मास्त्रके प्रभावसे उनका अस्त्र निवारण करके प्रहार करने लगे। अनन्तर अर्जुनने आग्नेयास्त्र परित्याग किया, कर्णने वारुणास्त्र परित्याग करके उसको निर्वाण कर दिया। उस समय कर्णके शरसे चतुर्दिक् आच्छन्न और गाढ़ अन्धकारसे परिपूर्ण हो गया तब अर्जुनने वायव्यास्त्र द्वारा उसको अपसारित कर दिया।

अनन्तर कर्णने अर्जुनके विनाशार्थ एक भयंकर शर ग्रहण और शरासनपर योजन किया वह शर संयोजित होतेही अवनी विचलित हुई, देवगण देवलोकमें हाहाकार करने लगे और पाण्डवगण विषाद सागरमें निमग्न हुए। अनन्तर कर्णनिक्षिप्त वह बाण अर्जुनके वक्षस्थलमें प्रविष्ट हुआ। तब अर्जुन कर्णके बाणसे विद्ध होके व्यथित हुए और हस्तस्थित गाण्डीव शिथिल हो गया और भूमिकम्पकालीन पर्वतके समान कांपित होने लगे। उसी अवसरमें महावीर कर्ण रथसे भूतलमें अवतीर्ण होय बाहुयुगलद्वारा रथचक्र ग्रहण करके आकर्षण करने लगे। परन्तु दैवप्रभावसे रथका

उद्धार न हुआ। अनन्तर अर्जुनने संज्ञालाभ करके अञ्ज- लीक नामक बाण ग्रहण किया, उसी समय वासुदेव बोले, हे अर्जुन! कर्णके रथपर आरोहण न करते करतेही उसका मस्तक छेदन करो। वासुदेववाक्यानुसार अर्जुनने तीक्ष्ण- शर द्वारा कर्णके रथका हस्तिकक्षा और ध्वजदण्ड छेदन करके इन्द्रवज्रतुल्य अञ्जलीक नामक एक बाण ग्रहण और शरा- सनमें योजित करके गाण्डीव आकर्षण पूर्वक बोले, कि जो हम तपोनुष्ठान, गुरुजनका संतोषसाधन, और सुहृद्गणकी हितकथा श्रवण करतेहों तो यह महास्त्र शीघ्र प्रबलशत्रु सूतपुत्रका प्राणसंहार करके हमलोगको जयश्री प्रदान करे। अर्जुन यह कहके वह अञ्जलीक शरको सूतपुत्रपर निक्षेप किया। अर्जुननिक्षिप्त वह मंत्रपूत बाणने उस अपराह्न कालमें नभोमण्डल उद्भासित करके सूतपुत्रका मस्तक छेदन किया। कर्णका छिन्न मस्तक जैसे गृहस्थ धनरत्न परिपूर्ण गृह अतिक्लेशसे त्याग करे तद्रूप उनका अति सुरूप और सुखोपभोगपरिवर्द्धित देह अति कष्टसे परित्याग पूर्वक नभो- मण्डलसे निपतित दिवाकरके समान भूतलमें निपतित हुआ। हे महाराज! उसी समय कर्णके देहसे एक तेज विनिर्गत होय नभोमण्डलको आच्छन्न करते सूर्य्यमण्डलमें प्रविष्ट हुआ, यह देख सबकोई अति विस्मित हुए। पाण्डवगण अति आह्लादित होय शंखध्वनि करने लगे और अर्जुनके निकट उपस्थित होय उसकी प्रशंसा करने लगे।

हे महाराज। इसीप्रकारसे सूतपुत्र शरनिकरसे पाण्डव- सैन्यको सन्तप्त करके दिवावसानके समय अर्जुनके प्रभावसे विनष्ट हुए। कौरवगण शत्रुशरसे गाढ़तर बिद्ध और भय- विह्वल होके ईधर उधर धावमान हुए।

इति ९२ अध्याय।

हे महाराज! सूतपुत्रके निहत होनेसे महाराज शल्य रथ लेकर धावमान हुए। राजा दुर्य्योधन सूतपुत्रको निहत देखके अश्रुपूर्ण नयन और दीनभाव होय वारंवार दीर्घनिश्वास परित्याग करने लगे। कौरवसैन्यगण कर्णको निहत देखकर भीत होय पलायन करने लगे। उसी समय महावीर भीमसेन भीषण सिंहनाद और बाहु स्फोटन करके आपके पुत्रगणको विवासित करके नृत्य करने लगे। सोमक और सृञ्जयगण महा आह्लादसे शंखध्वनि और परस्पर आलिङ्गन करने लगे। हे महाराज! इसी प्रकारसे अर्जुन कर्णको विनाश करके वैरभाव और प्रतिज्ञासे उत्तीर्ण हुए, अनन्तर मद्रराज छिन्नध्वज रथ लेके दुर्य्योधनके निकट गमन पूर्वक गद्‌गद वचनसे कहने लगे, हे महाराज! कर्णार्जुनके सदृश कभी कोई युद्ध न हुआ। कर्णने पहिले तो कृष्ण अर्जुन प्रभृति आपके शत्रुगणको निपीड़ित किया था, परन्तु दैव पाण्डवगणहीके अनुकूल है इसीसे वे जीवित रहे और हमलोग विनष्ट हुए। हे महाराज! देवसदृश अवध्य भूपालगण तुम्हारे कार्य्यसाधन करनेको उद्यत होय पाण्डवगणके बाहुबलसे निहत हुए हैं। इससे अब तुम शोकाकुल मत हो, अदृष्ट जो है सो अतिक्रम नहीं हो सकता। सब समय कार्य्यसिद्ध होना सम्भव नहीं है। हे महाराज! मद्रराजका वाक्य श्रवण करके राजा दुर्य्योधन अपनी दुर्नीति सोचके अचेतन होय दीनमनसे वारम्वार दीर्घनिश्वास परित्याग करने लगे।

इति ९२ अध्याय।

हे महाराज! उसी दिन महावीर युद्ध और लोकक्षय उपस्थित होनेसे आपकी सेना पलायन करने लगी, तब महाराज दुर्य्योधनने सैन्यगणको अति भीत देखकर सारथीको

शत्रु सैन्यमें रथ संचालन करनेकी आज्ञा देकर कहा कि आज हम धनञ्जय वासुदेव, महामानी वृकोदर और अन्यान्य शत्रुगणको निपातित करके कर्णका ऋण परिशोध करेंगे। अनन्तर गज, अश्व और रथविहीन पंचविंशति सहस्र पदाति युद्धार्थ उपस्थित हुए। यह देख भीमसेन और धृष्टद्युम्न चतुरङ्गिणी सेनाके सहित उन लोगको परि- वेष्टन करके शरनिकरसे निपीड़ित करने लगे। भीमसेन गदा ग्रहण पूर्वक रथसे अवतीर्ण होय उन लोगको ताड़ित करने लगे, उस समय पदातिगणभी जीविताशा परित्याग पूर्वक महाघोर युद्ध करने लगे। महावीर भीमसेनने जीवसंहर्ता अन्तकके समान उन लोगको विनाश करके समराङ्गणमें विचरण करने लगे। अनन्तर धनञ्जय कौरवगणके रथीगण पर धावमान हुए। नकुल, सहदेव और सात्यकि दुर्योधनके सैन्यको निपीड़ित करते शकुनि पर धावमान होय उसके अश्वारोही गणको निपातित करने लगे। कौरवसैन्य अर्जुनको आगमन करते देख भयसे पलायन करने लगे। ईधर भीम और धृष्टद्युम्न पंचविंशति सहस्र पदाति गणको विनष्ट करके अन्यान्य कौरव सैन्यपर धावमान हुए। उनको देख आपकी सेना पलायन करने लगी। चेकितान शिखण्डी और द्रौपदेयगण शकुनिकी असंख्य सेना विनष्ट करके सिंहनाद करने लगे। इसी प्रकारसे कौरवसैन्यको पराजित और समर परांमुख करके उन पर धावमान हुए। अनन्तर धनञ्जयके शर द्वारा प्रपीड़ित होय अवशिष्ट कौरव सैन्यगण भयसे पलायन करने लगे।

हे महाराज! इसी प्रकारसे सैनिकगणको पलायन करते देख महाराज दुर्योधन शत्रुगणके प्रति धावमान हुए और महावेगसे बल प्रकाश पूर्वक शत्रुगणको शर द्वारा निपीड़ित

करने लगे। हे महाराज! उस समय आपके पुत्रका अद्भुत पौरुष लक्षित होने लगा, वह एकाकी एकत्र समवेत असंख्य शत्रुगणसे अनायास युद्ध करने लगे। अनन्तर महाराज दुर्य्योधन अपने सैन्यगणको अति दुःखित और पलायित देखके नानाप्रकार उत्तेजित वाक्यसे उत्साहित करने लगे, परन्तु वे लोग अराति शरसे अत्यन्त क्षतविक्षत हुए थे, इसीसे उनके वाक्य पर उपेक्षा करके नानादिक् धावमान हुए।

इति ९४ अध्याय।

हे महाराज! उसी समय मद्रराज भीत और विमोहित चित्तसे बोले, हे दुर्य्योधन! वह देखो निहत हस्ती अश्व और मनुष्यगणसे समराङ्गण परिपूर्ण होगया है। इस समय कर्ण, अर्जुनके शर निकर और निहत गज अश्व और मनुष्यगणसे रणस्थल दुरभिगम्य होगया है। भूपतिगण विविध भोग, मनोज्ञ सुख और परिच्छद परित्याग पूर्वक लोकमें यश विस्तार और धर्मलाभ करके लोकान्तर प्रस्थान कर गये हैं, हे महाराज! इस समय सैन्यगणको स्वेच्छानुसार गमन करनेकी आज्ञा दीजिये, और आपभी प्रतिनिवृत्त हो कर अपने शिविरमे गमन करो। वह देखो, भगवान् दिवाकर अस्ताचल-चूड़ावलम्बी हुए।

हे महाराज! शल्यराज शोकाकुल मनसे यह कहके मौनावलम्बन कर गये। और दुर्य्योधनको दुःखित मनसे हा कर्ण! हा कर्ण! कहके परिताप करते देख कर अश्वत्थामा प्रभृति भूपालगण उनको आश्वासित करके गमन करने लगे। उस भयंकर कालमे कौरवगण हस्ती अश्व और मनुष्यगणके देह निःसृत रुधिर प्रवाहसे आच्छन्न समर भूमि रक्ताम्बर-धारिणी रमणीके समान सुवर्णालङ्कारसम्पन्न देखके वहां अव-

स्थान न कर सके। और कर्ण वधसे अति दुःखित होय बार-बार हा कर्ण! हा कर्ण! विलाप करते दिवाकरको संध्या-रागलोहित निरीक्षण पूर्वक शीघ्रही शिविरके अभिमुख धावमान हुए। हे महाराज! सूतपुत्र मृत्युमुखमें निपतित होकेभी मार्तण्डमण्डलके समान निरीक्षित होने लगे। अनन्तर भक्तानुकम्पी भगवान् भास्कर करजालसे कर्णका रुधिरसिक्त कलेवर स्पर्श करके आरक्त कलेवर होय मानो स्नान करनेहीके लिये अपर समुद्रको गमन करते हैं। अभ्यागत लोग कर्णार्जुन का भीषण युद्ध दर्शन करके विस्मित होय अपने अपने स्थानको गमन करने लगे।

हे महाराज! उस समय महावीर कर्ण गतासु होकेभी शोभाविहीन न हुए थे, उनको देखनेसे यही निश्चय होता था मानो वह अभी जीवित हैं, हे महाराज! इसी प्रकारसे कर्ण अपनी कीर्ति सञ्चय करके प्रज्वलित हुताशन जैसे सलिल स्पर्श करके निर्वापित होय तद्रूप पुत्र और वाहनगणके सहित अर्जुन शरसे निहत हुए। वह अर्थिगणके कल्पवृक्षस्वरूप थे, वह याचकगणको कभी प्रत्याख्यान नहीं करते। साधुगण उनको सत्पुरुषोंमें गणना करते। जो ब्राह्मणके निमित्त जीवन दान करनेकोभी उद्यत रहते। जो कामिनीगणके प्रियपात्रथे। जिनके आश्रयसे आपके पुत्रगणने पाण्डवगणसे वैराचरण किया था, कौरवकुलके वर्मस्वरूप वही महारथ कर्ण अर्जुनसे द्वैरथ युद्ध करके आपके पुत्रगणकी जयाशाके सहित निहत और परमगतिको प्राप्त हुए।

हे महाराज! इसी प्रकारसे कर्णके निहत होनेसे नदी-योंका वेग रुद्ध हुआ और दिवाकर अस्त हुए। दिग्विदिक् धूमाकीर्ण और प्रज्वलित होगया और आकाशमण्डल मानो भूतल पर निपतित हुआ। वसुन्धरा कम्पित होने लगी।

वायु प्रचण्डवेगसे प्रवाहित होने लगी। जीव सब व्यथित हो गये। आकाशमण्डल अन्धकारसे आच्छन्न हो गया। अनल-सदृश उल्कापात होने लगा। महात्मा केशव और अर्जुन रथारोहण पूर्वक एकही समय पांचजन्य और देवदत्त शंख-ध्वनि करने लगे। उस भीषण शंखध्वनिसे कौरवगण विचा-सित और पाण्डवगण अति आह्लादित हुए। और कौरव-पक्षीय सैन्यगण शल्य और दुर्य्योधनको परित्याग करके द्रुत वेगसे पलायन करने लगे।

इति ९५ अध्याय।

हे महाराज! इसी प्रकारसे कर्णके निहत होनेसे कौरव गण क्षतविक्षत और भीत हो कर गमन करने लगे। राजा दुर्य्योधन प्रभृति कौरववीरगण वारंवार दीर्घनिश्वास परि-त्याग पूर्वक शिविराभिमुख धावमान हुए। महाराज शल्यभी कर्णका छिन्नध्वज रथ लेके दशदिक् अवलोकन करते शिवि-रको प्रस्थित हुए। हे महाराज! उस समय वह असंख्य योद्धागणमें किसीकोभी युद्ध करनेकी वासना न रही। कर्णके निधन होतेही कौरवगणने जीवन, राज्य और धनकी आशा परित्याग कर दियी। तब राजा दुर्य्योधनने शोकदुःखसे आकुल होय उनको प्रतिनिवृत्त करके शिविरमें गमन कर-नेकी आज्ञा दियी। वे लोग उनकी आज्ञा शिरोधार्य्य करके अपने अपने शिविरको गमन करने लगे।

इति ९६ अध्याय।

हे महाराज! इधर महात्मा वासुदेव धनञ्जयको आलि-ङ्गन करके कहने लगे, हे अर्जुन! देवराजने जैसे वज्र द्वारा

वृत्रासुरको वध किया था वैसही तुमने कर्णको निपातित किया सतत मनुष्यगण इस वधोपाख्यानको कीर्त्तन करेंगे। अब तुम कर्णवध वृत्तान्त धर्मराजको विज्ञापित करके उनका ऋण परिशोध करो। राजा युधिष्ठिरने यहां आगमन किया था, परन्तु वह अत्यन्त शरसे विद्ध हो गये थे इस कारण समराङ्गणसे अपने शिविरको प्रस्थान कर गये हैं।

अनन्तर वासुदेवने सैनिकगणसे कहा, हे योधगण! तुम लोगका मङ्गल होय। तुम लोग अभी सज्जीभूत होय शत्रुगणके संमुख अवस्थान करो। अनन्तर धृष्टद्युम्न, युधामन्यु, वृकोदर, सात्यकि और माद्रितनयगणसे कहा, हे वीरगण! हम लोग कर्ण निहत वृत्तान्त प्रदान करनेको युधिष्ठिरके निकट गमन करते हैं, यावत् प्रत्यागत न होय आप लोग सबही सुसज्जित होय यत्नसे इसी स्थान पर अवस्थान कीजिये। हे महाराज! वीरगणने यह श्रवण करके उनका वाक्य स्वीकार किया, तब वासुदेव अर्जुनके सहित शिविरमें गमन पूर्वक युधिष्ठिरको शय्या पर शयान देख उनका युगल चरण ग्रहण किया। युधिष्ठिर कृष्ण और अर्जुनका हर्षचिह्न देख कर कर्णका निहत होना स्थिर करके आनन्दाश्रु परित्याग और गात्रोत्थान पूर्वक बारंबार उन लोगोंको आलिङ्गन करके कर्णका निधनवृत्तान्त पूछने लगे। तब वासुदेव और अर्जुनने कर्णका निधनवृत्तान्त आद्योपान्त कीर्त्तन किया। अनन्तर वासुदेव ईषद् हास्य करके कृताञ्जलिपुट होय बोले, हे महाराज! आज सौभाग्यहीसे आप लोग इस भयङ्कर युद्धसे परित्राण पाके कुशलसे हैं। अब समयोचित कार्य्यका अनुष्ठान कीजिये। आज सौभाग्यहीसे कर्ण निपातित और आप य प्राप्त हुए। जिसने सभामें द्रौपदीका उपहास किया कर्ण आज शरशय्या पर शयन करता है, आप सम

रणभूमिमें गमन पूर्वक उसकी दुर्दशा दर्शन कीजिये अब आपका राज्य निष्कण्टक हो गया।

हृषीकेशका वाक्य श्रवण करके युधिष्ठिर आह्लादित होय बोले, हे वासुदेव! आज हमारा परमसौभाग्य जो कर्ण निहत हुआ यह केवल आपहीके बुद्धिबलसे हुआ है, इस कारण कुछ आश्चर्य नहीं है। राजा युधिष्ठिर यह कहके केशवका दक्षिणहस्त धारण पूर्वक बोले, हे वीरवर! हमने नारदमुनिसे श्रवण किया है और महर्षि वेदव्यासनेभी वारं-वार कहा है कि, तुम लोग महात्मा नर और नारायण हो हे कृष्ण! केवल तुम्हारेही अनुग्रहसे अर्जुनने कर्णको निहत किया, जब आपने सारथ्यकार्य्य स्वीकार किया तब निश्चयही हमारा जय होगा इसमें कुछ सन्देह नहीं है। हे महाराज! अनन्तर राजा युधिष्ठिरने रथारोहण करके समरभूमि दर्शनार्थ यात्रा किया। और वहां जाय देखा कि महावीर कर्ण निहत होय रणशय्या पर शयान हैं, और उनके पुत्रगणभी निहत होय भूतलमें निपतित हो रहे हैं, यह देख कृष्ण और अर्जुनकी प्रशंसा करते हुए बोले, हे गोविन्द! तुम्हारे सहाय और रक्षक होनेसे आज हम भ्रातृ-गणके सहित राज्यपद पर प्रतिष्ठित हुए। आज सूतपुत्रके निहत होनेसे दुर्य्योधन राज्य और जीवनसे निराश होगा। आज हम केवल तुम्हारेही अनुग्रहसे कृतकार्य्य हुए। हम लोगने त्रयोदश वर्ष अति कष्टसे अतिवाहित किया था। एकदिनभी निद्रा न हुई थी, आज तुम्हारे अनुग्रहसे निद्रासुख जानेगे। अनन्तर पाण्डव और पाञ्चालगण कृष्ण और अर्जुनकी प्रसंशा और धर्मराजकी सम्वर्धना करके बड़े आह्लादसे अपने अपने शिविरमें प्रविष्ट हुए।

हे महाराज! केवल आपहीके दुर्मन्त्रणासे यह लोक-

क्षय, युद्ध उपस्थित हुआ अब आप क्यों वृथा अनुताप करते हैं।

वैशम्पायन बोले, हे जन्मेजय! धृतराष्ट्र संजयसे यह अमङ्गलवार्ता श्रवण करके ज्ञानशून्य होय भूतलमें निपतित हुए। गान्धारीभी भूतलमें निपतित होय कर्णके निमित्त विलाप करने लगी, तब विदुर और सञ्जय उनको आश्वास-प्रदान करने लगे, तब धृतराष्ट्र भवितव्यको बलवान् मान मौनावलम्बन कर रहे। हे भूपाल! जो मनुष्य धनञ्जय और कर्णके समरका वृत्तान्त पाठ वा श्रवण करें वह सुखी, श्रेष्ठ, धनधान्यसम्पन्न, यशस्वी होके ब्राह्मण वेदलाभ और क्षत्रिय बल और जयलाभ प्राप्त होते हैं।

इति ९७ अध्याय।

कर्णपर्व सम्पूर्ण हुआ।

महाभारत।

भाषा

शल्यपर्व

नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत्॥

जनमेजय बोले, हे महर्षे! महावीर कर्णके विनष्ट होने पर अल्पावशिष्ट कौरवगणने क्या किया? सो कहिये।

वैशम्पायन बोले, महाराज! राजा दुर्य्योधनको अति दुःखित देखके भूपालगण उनको आश्वासित करने लगे।

अनन्तर महावीर शल्यको सेनापति नियुक्त करके हतावशिष्ट भूपालगणके सहित युद्ध करनेको उपस्थित हुए। उस समय सुरासुरसंग्रामके सदृश घोर युद्ध उपस्थित हुआ, उसी युद्धमें महावीर शल्य भयङ्कर समरकार्य्य समाधान और असंख्य शत्रुसैन्य क्षय करके अन्तको हतसैन्य होके मध्याह्नके समय धर्मराजके हाथसे निहत हुए। तब राजा दुर्य्योधन शत्रुभयसे भीत और समराङ्गणसे अपसृत होके एक भयङ्कर ह्रदके मध्यमें प्रविष्ट हुए।

भीमसेन यह वृत्तान्त ज्ञात होके उसी दिन अपराह्नके समय दुर्य्योधनको आह्वान पूर्वक ह्रदसे उत्थापित और बल प्रकाश करके निपातित किया। अनन्तर हतावशिष्ट कौरव-पक्षीय तीन जन महारथने उसी दिन रात्रिके समय पाञ्चाल

सैन्यगणकोभी निपातित किया। अनन्तर पर दिन पूर्वाह्नमें सञ्जय शिविरसे आगमन करके शोकाकुलित और दुःखित मनसे महाराज धृतराष्ट्रके निकट जाय बोला महाराज! हम सञ्जय हैं आपको नमस्कार करते हैं। मद्रराज शल्य, शकुनि, प्रभृति समस्त राजा और राजपुत्रगण सब निहत हुए। भीमसेनने अपनी प्रतिज्ञानुसार राजा दुर्य्योधनको बध किया। कुरुराज अब भग्नोरु और शोणितरागरञ्जित होके धूलि पर शयन किये हैं। पाण्डव पक्षीय धृष्टद्युम्न और शिखण्डी प्रभृति समस्त सैन्य निहत हुई, द्रौपदीके पञ्चपुत्र और कर्णात्मज वृषसेन शमनसदनको सिधारे। हे महाराज! कौरव औ पाण्डवगणके परस्पर युद्धमें समस्त जगत् कालवश विमोहित होके प्राय स्त्रीगणही अवशिष्ट रह गई। उभय पक्षीय अष्टादश अक्षौहिणीके बीच पाण्डवके पक्षमें पञ्च-पाण्डव, वासुदेव और सात्यकी और आपके पक्षमें कृप, कृतवर्मा और अश्वत्थामा अवशिष्ट रह गए हैं, हे महाराज! कालने दुर्य्योधनको उपलक्ष करके समरानल प्रज्वलित पूर्वक समस्त जगत्को विनष्ट किया।

वै॰। राजा धृतराष्ट्र, विदुर, गान्धारी और और अन्यान्य कौरवमहिलागण सञ्जयसे यह बात सुन्तेही विचेतन होके भूतलमें निपतित हुईं। और हा हतोस्मि कहते हुए विलाप और परिताप करने लगे। अनन्तर पुत्रशोकसे दुःखित धृतराष्ट्र संज्ञा लाभ करके विदुरसे बोले, हे विदुर! हम पुत्र-हीन और अनाथ हुए, अब तुमही एक मेरे आश्रय हो यह कहके पुनर्वार अचेतन हो गए। अनन्तर बंधुबान्धवगणने शीतल सलिल सेचन और तालवृन्त सञ्चालन द्वारा शुश्रूषा करके उनको चैतन्य किया। तब राजा धृतराष्ट्रने रोरुद्यमाना महिलागण और दुःखार्त्त बान्धवगणके विलापसे मुहुर्मुहु

मोहसे अभिभूत होनेके कारण उन लोगको प्रस्थान करनेकी आज्ञा दिया, तब सञ्जय दुःखित मनसे कृताञ्जलिपुट होय, मधुर वाक्यसे राजाको आश्वास प्रदान करने लगे ।

इति १ अध्याय ।

वै० । कामिनीगणके प्रस्थान करनेसे राजा धृतराष्ट्र अति विलाप और परिताप करके बोले, हे सञ्जय ! दुर्य्योधनने अपने पक्षका बल जो कहा था उससे हमको निश्चय हुआ था कि पाण्डवगण हम लोगके बलप्रभावसे युद्धमें निहत होंगे, परंतु इस समय हमारेही पुत्रगण विनष्ट हुए, तब हमारे दुर्भाग्य भिन्न और क्या कारण हो सकता है? शृगाल जैसे सिंहको निहत करे तद्रूप शिखण्डीने भीष्मको निहत किया तो भाग्य-हीको प्रबल कहना चाहिये, निश्चयही मनुष्यगण भाग्ययोग्यसे जन्मग्रहण करते हैं, जिसका सौभाग्य होता है वही शुभफल पाता है। हम अति हतभाग्य हैं इसीसे पुत्रहीन हुए, हाय ! हम शत्रुके वशवर्त्ती होके कैसे कालयापन करेंगे, अब वन-वास भिन्न मेरा उपायान्तर नहीं है। हाय ! दुर्य्योधन प्रभृति समस्त वीरगण निहत हुए। एकाकी भीमने मेरे सौ पुत्रको नाश किया। अब हम उस भीमका कठोरशब्द किस प्रकारसे श्रवण करेंगे? पूर्व्वमें महात्मा विदुरने जो कहा था सोई सत्य हुआ।

वै० । धृतराष्ट्र इस प्रकारसे बहुतसा विलाप करके सञ्जयसे पूछने लगे हे सञ्जय ! भीष्म द्रोण और कर्णके निहत होनेसे कौन पुरुष सेनापति हुआ था ? और मद्रराज शल्य और दुर्य्यो-धन किस प्रकारसे निहत हुआ? अनुचरवर्ग समवेत पांचालगण और द्रौपदीके पञ्चपुत्र किस प्रकारसे निहत हुए ? पञ्च-

पाण्डव, वासुदेव, सात्यकी और कृप, कृतवर्मा और अश्वत्थामा कैसे मृत्युमुखसे मुक्त हुए? सो सविस्तार वर्णन करो।

इति २ अध्याय।

सञ्जय बोले, महाराज! कर्णके निहत होनेसे आपकी सैन्य, अर्जुन और भीमके भयसे इधर उधर भागने लगी तब महाराज दुर्य्योधन अपने सारथीसे बोले, हे सूत! हम धनुर्धारण पूर्वक पश्चाद्भागमें अवस्थान करते हैं, समुद्र जैसे तीरभूमिको अतिक्रम नहीं कर सकता तद्रूप अर्जुन हमको अतिक्रम न कर सकेगा इससे तुम शीघ्र अश्व चालन करो। आज हम अभिमानी शत्रुगणको निहत करके सूतपुत्र कर्णके ऋणसे मुक्त होंगे। अनन्तर पञ्चविंशति सहस्र पदातिगणके सहित राजा दुर्य्योधनने पाण्डवगणको आक्रमण किया। तब भीम प्रभृति वीरगण गदा ग्रहण पूर्वक रथसे उतर कौरव पक्षीय सैन्यगणका संहार करने लगे, उस समय कौरवसैन्यगण भयसे भीत होय चतुर्दिक् पलायन करने लगे। राजा दुर्य्योधन अपनी सैन्य छिन्नभिन्न देखके नीतिपूर्ण, सतेज उत्तेजित वाक्यसे सैन्यगणको तेजवान किया तब पुनर्वार सैन्य युद्ध करनेको उपस्थित हुई और घोर संग्राम होने लगा।

इति ३ अध्याय।

वै०। उसी समय महावीर कृपाचार्य्य कौरवसैन्यकी दुर्दशा देखके कुरुराजसे बोले हे दुर्य्योधन! हम जो कहते हैं, सो श्रवण करके तुम्हारी इच्छा होय तो वैसा अनुष्ठान करो। युद्ध विना क्षत्रियगणका उत्तम पथ दूसरा नहीं है युद्धमें मृत्यु होनेसे परमधर्म और युद्धसे पलायन करना महाअधर्म है। अब हम जो कुछ हितकर वाक्य कहते हैं सो श्रवण करो,

भीष्म प्रभृति महावीरगणके निहत होनेसे अब हम लोग क्या करेंगे उन लोगके जीवित रहतेभी महावीर धनञ्जय पराजित न हुए तो देवगणभी उनको पराजित नहीं कर सकते हैं, उनके गाण्डीव निर्घोषसे हम लोगका बल, सिंहगर्जन-भीत मृगयूथके समान वारंवार विवासित होता है। आज सप्तदश दिवस हुआ यह भयङ्कर युद्ध उपस्थित होनेसे असंख्य लोक क्षय होता है। हे महाराज! जब सिंधुराज जयद्रथ अर्जुनके वाणसे निपतित हुआ था तब तुम्हारे सूतपुत्र, अनु-चरगणके सहित द्रोण, और भ्रातृगणसे परिवृत दुःशासन कहां थे, हम कहां थे और आपही कहां थे, महावीर धनञ्जयने तुम्हारे सम्बन्धि, भ्राता और सहाय रहते हुए सबके देखते देखते जयद्रथको निहत किया तो अब हम लोग क्या करेंगे? अर्जुनको पराजय करे ऐसा कोई नहीं है, अर्जु-नके पराक्रमसे हम लोगकी सैन्य शुष्कतोया तटिनीके समान आकुलित हो गई है इस कारण हुताशन जैसे तृणराशिमें प्रज्वलित होता है तद्रूप धनञ्जय हमारी सेनापतिशून्य सैन्यमें विचरण करेंगे इसमे सन्देह नही है। भीमसेनने जो जो प्रतिज्ञा की थी सो सफलकी अब जो अवशिष्ट है सोभी पूरा करेगा। हे दुर्य्योधन! जो कार्य्य साधगणका अवश्य परिहार्य्य है तुम अकारण उसीका अनुष्ठान करते हो, अब उन्हो दुष्क-र्मोंका फल उपस्थित हुआ है, तुमने आत्मकार्य्य साधनके लिये जो सैन्य आहरण किया सो उलटा अब उनके सहित प्राण सङ्कटमें पड़े हो इससे अब तुम आत्म रक्षाका यत्न करो, आत्माही सबका मूल है उसके न रहनेसे कोई वशीभूत न रहेगा हे महाराज! सुरगुरु वृहस्पतिने यह नीति विधानकी है जो शत्रुसे हीन वा उसके समान होय तो सन्धिस्थापन करनी। इस समय हम लोग शत्रुसे न्यून हैं इस कारण सन्धि

करनाही कर्तव्य है, हे महाराज! हम दीनता वा प्राण रक्षाके लिये यह नहीं कहते परंतु तुम्हारे हितके लियेही कहते हैं। कृपाचार्य्य यह कहके दीर्घनिश्वास परित्याग पूर्वक विमोहित हो गए।

इति ४ अध्याय।

हे महाराज! दुर्य्योधन कृपाचार्य्यकी बातें सुनके दीर्घ-निश्वास परित्याग और क्षणकाल तूष्णीम्भाव अवलम्बन करके बोला, हे आचार्य्य! आप जो कहते हैं सो उत्कृष्ट और हित-कर है, परंतु जैसे मुमूर्षु पुरुषको औषधमें रुचि न होती वैसही आपके इस वाक्यमें मेरी रुचि नहीं होती है, देखिये जिसके प्रति हमने महा महा गर्हित व्यवहार किया वह कैसे हमारा विश्वास करेगा? पाण्डवोंसे जैसा व्यवहार हम करके अपराधी हुए हैं वह कैसे क्षमा करेंगे? भीमका अति उग्र-स्वभाव है, उसने महाघोर प्रतिज्ञा की है, वह स्वयं विनष्ट होगा तथापि प्रतिज्ञा लङ्घन करके शान्ति लाभ न करेगा इस कारण आप उनको युद्धसे निवृत्त न कर सकेंगे। और देखिये हम ससागरा पृथ्वी भोग करके अब कैसे पाण्डवगणके अनुग्रहसे राज्यभोग करेंगे, और कैसे दासके समान युधि-ष्ठिरका अनुगमन करेंगे? हे आचार्य्य! हम आपके हितकर वाक्यमें असूया प्रदर्शन नहीं करते हैं, परन्तु इस समय सन्धि स्थापन करनी उचित नहीं है युद्ध करनाही श्रेयस्कर है देखिये हमको समस्त अभिलषित पदार्थही लाभ हो चुका है और विविधद्रव्य उपभोग्य और अर्थ धर्म और कामको यथेष्ट सेवा कर चुके हैं। क्षत्रियधर्म और पितृगणकी ऋणजालसे मुक्तिलाभ किया है, इस पृथिवी पर कुछभी सुख नहीं है केवल कीर्ति स्थापन करनीही कर्तव्य है, परन्तु वह कीर्ति युद्ध

विना किसी प्रकारसे लाभ नहीं हो सकती। क्षत्रियगणका गृहमें मृत्यु अति निन्दनीय, जो क्षत्रिय अरण्य वा संग्राममें प्राणत्याग कर्ते हैं, वही महिमा लाभ कर्ते हैं, इस कारण अब हम विविध विषयोपभोग परित्याग पूर्व्वक युद्ध द्वारा देवलोक लाभ कर्नेका अभिलाष कर्ते हैं। जो सब वीरपुरुषगण हमारे निमित्त प्राणत्यागने गए हैं उन लोगोंसे कृतज्ञता प्रदर्शन और उनके ऋणजालसे मुक्ति लाभ कर्नेकी मेरी संपूर्ण इच्छा है। राज्यमें अब मनोनिवेश नहीं होता है। ऐसे ऐसे महावीरगणको मृत्युके मुखमें पातित कर्के अपना प्राण रक्षा करें तो निश्चयही लोकमें मेरी निन्दा होगी हे आचार्य्य! अब अधर्म्मकी अनुसार समरकार्य्य समाधान पूर्व्वक स्वर्ग लाभही हमारे लिये श्रेय है राज्यलाभमें मेरी अभिरुचि नहीं होती।

वै०। दुर्य्योधनकी यह बात सुनके क्षत्रियगण साधु साधु कहके वारंवार प्रशंसा कर्ने लगे, उस समय किसीकोभी पराजय होनेका कुछभी अनुताप नहीं था प्रत्युत विक्रम प्रकाश कर्नेको दृढ़प्रतिज्ञ होके युद्धार्थ प्रस्तुत हुए। अनन्तर कौरवगणने संग्रामस्थलसे इस दून द्वि योजन अन्तर सरस्वतीके तीर अवस्थान किया। हे महाराज! इसी प्रकारसे क्षत्रियगणने दुर्य्योधन वाक्यसे उत्तेजित और कालप्रेरित होके वहां अवस्थान किया।

इति ५ अध्याय।

हे महाराज! कर्णके निहत होनेसे आपके पुत्रगणने अत्यन्त भीत होय हिमालय प्रस्थमें वह रात्रि अतिवाहित किया। उस समय वे सब एकत्र होके शल्यके समक्ष दुर्य्यो-

धनसे बोले, हे महाराज! आप एकजनको सेनापति नियुक्त कर्के शत्रुगणसे युद्ध कर्नेको प्रवृत्त हो।

अनन्तर राजा दुर्य्योधनने महावीर अश्वत्थामाको अभिप्रायानुसार महाराज शल्यको सेनापति पदमें अभिषिक्त कर्नेको कृतनिश्चय होके उनसे निवेदन किया और मद्रराज शल्यभी अति उत्साहसे स्वीकृत हुए।

इति ६ अध्याय।

हे महाराज! प्रबलप्रतापशाली मद्रराज राजा दुर्य्योधनसे बोले, हे महाराज! हम जो कहते हैं सो श्रवण करो। तुम धनञ्जय वा वासुदेवको प्रधान रथी ज्ञान करते हो परंतु वे हमारे तुल्य कदापि नहीं हैं। पाण्डवगणकी बातही क्या है? सुरासुर मनुष्य समवेत समस्त जगत् युद्धार्थ उद्यत होनेसेभी हम क्रोधाविष्ट होके उनसे अनायास युद्ध कर सक्ते हैं, अब हम तुम्हारे सेनापति होके समस्त सोमक और पाण्डवगणको पराजय करेंगे इसमें कुछ सन्देह मत मानो।

हे महाराज! दुर्य्योधनने शल्यवाक्य श्रवण कर्के हृष्ट होय शास्त्रविधिसे उनको अभिषिक्त कर्के सेनापति किया। तब कौरवसैन्यगणमे जैजैकार और विविध वादित्र वादन होने लगा।

अनन्तर मद्रराज शल्य बोले, हे महाराज दुर्य्योधन? आज हम पाण्डव और पांचालगणका विनाश करेंगे अथवा आपही उनसे विनष्ट होके देवलोकमे गमन करेंगे, आज हमारा बल विक्रम आपलोग रणस्थलमें प्रत्यक्ष देखोगे। आज हम तुम्हारे प्रियकार्य्य साधनार्थ भीष्म, द्रोण और कर्णसे अधिक बलवीर्य्य प्रदर्शन कराके रणस्थलमें सञ्चरण करेंगे।

हे महाराज! मद्रराजके सेनापति होनेसे कर्णका दुःख

सबके हृदयसे दूर हो गया और सैन्यगण पुलकित होके आनन्दसे रजनी व्यतीत किया।

हे महाराज! इधर पाण्डवगण कृष्णसे बोले, हे माधव! शत्रुपक्षमें मद्रराज शल्य सेनापति हुए हैं। हमारे तो तुम्ही सेनापति और तुम्ही रक्षा करता हो। इस समय जो कर्तव्य होय सो कीजिये। वासुदेव बोले, हे महाराज! हम मद्रराजको सविशेष जानते हैं, वह वीर विपुलबलशाली, महातेजस्वी, विचित्रयोद्धा और क्षिप्रहस्त है, उनके तुल्य योद्धा दूसरा नहीं देखते हैं। हे महाराज! आज इस त्रिलोकमें आप छोड़के उनसे युद्ध अथवा उनका विनाश करनेवाला दूसरा नहीं देखते हैं। दुर्य्योधनने उसको अजेय जानके सेनापति किया है। उनके विनाश होनेहीसे निश्चय कौरवसैन्य विनाश और आपका जयलाभ होगा, हे महाराज! मातुल जानके मद्रराज पर दया करना प्रयोजन नहीं क्षात्रधर्मानुसार उनको विनाश करो। भीष्म, द्रोण और कर्णरूप महासमुद्र उत्तीर्ण होके अब शल्यरूप गढ़ेमें मत डूबना, आपका जो तपोबल और क्षात्रवीर्य्य है इस समय समराङ्गणमें वह सब दिखलाईये। अनन्तर सब कोइ सूतपुत्रके निधनसे जय लाभ करके वह रात्रि सुखसे अतिवाहित करने गए।

इति ७ अध्याय।

हे महाराज! प्रातःकालही सैन्यगणको सुसज्ज करके समराङ्गणमे उपस्थित होनेकी आज्ञा राजा दुर्य्योननने दी। उसी समय सैन्यमें समरोत्साह उद्दीपनार्थ नानाविध वाद्यध्वनि होने लगी। सेनापति शल्यने सैन्यको विभक्त और पृथक् पृथक् स्थापित करके महाभयङ्कर सर्वतोभद्र व्यूह स्थापित किया और समस्त वीरपुरुषगणने समवेत होके यह नियम

स्थापन किया कि एक पुरुष कदाच पाण्डवगणसे युद्ध न करे। और जो एकाकी युद्ध करेगा और जो कोई पाण्डवको युद्ध करते देखके परित्याग करेगा उसको पञ्च महापातक और उपपातकमें लिप्त होना पड़ेगा। और हम लोग सब कोई मिलित होके परस्पर रक्षाके विषयमें सविशेष यत्न पूर्वक युद्ध करेंगे। हे महाराज! कौरवपक्षीय वीरगण यही नियम स्थापन पूर्वक विपक्षगणके प्रति धावमान हुए। तब पाण्डवगणभी व्यूह रचना करके सैन्यगणके सहित आगमन करने लगे।

सञ्जय बोले, महाराज! द्रोण, भीष्म और कर्णके मरनेपरभी आपके पुत्रके मनमें यह आशा हुई थी कि शल्यराज पाण्डवगणको पराजय करेगा उसी आशा पर अपनेको सनाथ ज्ञान करते थे। मद्रराज व्यूहके मुख पर, दुर्य्योधन मध्यभागमें, वामपार्श्वमें कृतवर्म्मा, दक्षिण पार्श्वमे कृपाचार्य्य और अश्वत्थामा उसके पृष्ठदेशमें अवस्थित हुए, महाराज शकुनि और कैतव्य अश्वसैन्य परिवृत होके पाण्डवगणके अभिमुख हुए। और पाण्डवगणभी व्यूह रचना करके तीन भाग होके धावमान हुए। धृष्टद्युम्न, शिखण्डी और सात्यकि शल्यके सैन्य पर, युधिष्ठिर शल्य पर, अर्जुन कृतवर्म्मा और संसप्तकगण पर, भीमसेन और सोमकगण कृपाचार्य्य पर और नकुल, सहदेव, शकुनि और उलूकके प्रति धावमान हुए।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! भीष्म, द्रोण और कर्णके मरण होने पर उभय पक्षमें कितनी परिमाण सैन्य अवशिष्ट थी?

सञ्जय बोला महाराज! कौरवसैन्यमें एकादश सहस्र रथ, दश सहस्र सप्तशत हस्ती, द्विलक्ष अश्व, और तीन कोटि पदाति रह गए थे। पाण्डव सैन्यमें छः सहस्र रथ, छः सहस्र हस्ती, दश सहस्र अश्व, और एक कोटि पदाति बच गए थे, हे महाराज! इसी प्रकारसे यही सैन्यगण उसी

प्रभात कालमें परस्पर वधार्थी होके घोरतर युद्ध करने लगे।

इति ८ अध्याय।

हे महाराज! इसी प्रकारसे उभय पक्षमें देवासुर संग्राम तुल्य भयानक युद्ध उपस्थित हुआ, सहस्र सहस्र हस्ती, अश्व और पदाति मिलित होके संग्राम करने लगे, कोई कोई रथी धावमान मदोन्मत्त कुञ्जरगणके आघातसे रथ सहित भूतलमें निपतित होके पलायन करने लगे। सुशिक्षित अश्वारोहीगण महारथगणको परिवेष्टन करके यमालय प्रेरण करने लगे, महारथगणने धावमान मातङ्गको परिवेष्टन करके विनाश किया, हस्त्यारोही हस्त्यारोहीको, रथी रथीको और पदाति पदातिको आक्रमण पूर्वक शक्ति, तोमर और नाराच द्वारा निहत करने लगे। उस समय शूरगणको हर्षदायक और भीरुगणको भयकारिणी शोणित तरङ्गिणी समराङ्गणमें प्रवाहित हुई।

उसी समय महावीर धनञ्जय और भीमसेनने अपने बलसे शत्रुगणको विमोहित करना आरम्भ किया, तब कौरव सैन्यगण हतज्ञान होने लगे। अनन्तर धृष्टद्युम्न और शिखण्डी राजा युधिष्ठिरके सहित मद्रराज पर धावमान हुए। हे महाराज! वीरगणने शल्यके सम्मुख जैसा युद्ध किया वह देखके सबही विस्मय हो गये। अनन्तर आपके सैन्यगण छिन्नभिन्न और युद्धसे निवृत्त होके पलायन करने लगे।

इति ९ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर एकाकी महाराज मद्रराजने राजा युधिष्ठिरके निकटवर्ती होय महाभयङ्कर बाणवृष्टि करके

पाण्डवोंकी गति अवरोध कर डाली, और युद्धदुर्मद महा-
वीर नकुल कर्णपुत्र चित्रसेनसे घोरतर संग्राम करने लगे।
अनन्तर चित्रसेनने नकुलके अश्व, ध्वज और सारथीको तीन
बाणसे विद्ध करके निपातित किया, तब नकुलने रोषाविष्ट
होय रथसे उतर असिचर्म ग्रहण करके महायुद्ध करते हुए
सबके सम्मुख चित्रसेनके रथ पर आरोहण करके मुकुटकुण्डल
भूषित उसका मस्तक छेदन कर डाला। यह देखके पाण्डव-
पक्षीय महारथगण नकुलको साधुवाद प्रदान और सिंहनाद
करने लगे।

हे महाराज! उसी समय कर्णपुत्र महारथ सुषेन और
सत्यसेन अपने भ्राताको निहत देखके विविध शर परित्याग
करके नकुलके प्रति धावमान हुए और मेघद्वय जैसे सलिल-
धारा वर्षण करें वैसही नकुल पर शरवर्षण करने लगे। नकु-
लने चार बाणसे सत्यसेनका चार अश्व निपातित और
शरासन छेदन कर दिया, अनन्तर और एक दूसरे रथ पर
आरोहण और शरासन ग्रहण पूर्वक सुषेणके साथ धावमान
हुआ और क्षुरप्रास्त्रसे नकुलका शरासन छेदन कर डाला,
अनन्तर नकुलने अति भीषण एक रथ शक्ति ग्रहण पूर्वक
सत्यसेनके प्रति निक्षेप किया, उससे सत्यसेनका हृदय शतधा
विदीर्ण और वह अचेतन होके रथसे निपतित हुआ।

अनन्तर सुषेण भ्राता सत्यसेनको निहत देखके क्रुद्ध होय
नकुलके प्रति बाणवर्षण करने लगे और चार बाणसे उनका
चारो अश्व और पांच शरोंसे ध्वज और तीन शरसे सारथीको
छेदन करके सिंहनाद करने लगा। तब नकुलने द्रौपदीपुत्र
सुतसोमके रथ पर आरोहण करके एक तीक्ष्ण अर्द्धचन्द्र बाण
बड़े वेगसे निक्षेप करके कर्णपुत्रका मस्तक छेदन कर डाला,
महावीर सुषेण निहत होके नदीवेग भग्न जीर्ण तीरस्थ

वृक्षकी समान भूतलमें निपतित हुआ। कौरवसैन्य सुषेणको वध और नकुलका विक्रम देख भीत होकी धावमान हुई। यह देख सेनापति शल्य उन्होंको निवृत्त करके आप निर्भय रणस्थलमें अवस्थान करने लगे, ईधर महावीर सात्यकि प्रभृति राजा युधिष्ठिरको पुरोवर्त्ती करके सिंहनाद और वाण शब्द करने लगे, अनन्तर महाघोर युद्ध आरम्भ हुआ और महावीर धनञ्जय संसप्तकगणको संहार करके कौरवसैन्यकी प्रति धावमान हुए। अन्यान्य पाण्डव और धृष्टद्युम्न प्रभृति वीरगणने शरवर्षण करके बहुसंख्यक वीरगणको निहत किया।

इति ११ अध्याय।

—०—

हे महाराज! उस दिन प्रातःकालही उभय पक्षीय वीरगण वधसाधनमें उद्यत होकी निशितशरनिकर द्वारा निपीड़ित करनेसे सैन्यगण अति श्रान्त हुई। अनन्तर महावीर शल्य उत्कृष्ट शरासन ग्रहण पूर्वक पाण्डवगणकी प्रति धावमान हुए, तब पाण्डवगणभी मद्रराज पर वाणवृष्टि करने लगे।

हे महाराज। उस समय समराङ्गणमें विविध दुर्निमित्त प्रादुर्भूत हुआ। वसुन्धरा शब्दायमान हो कर कम्पित होने लगी। उल्कापात होने लगा। अनन्तर परस्पर तुमुल संग्राम होने लगा। कौरवगण समस्त सैन्यकी सहित पाण्डवसैन्यकी प्रति धावमान हुए। मद्रराज शल्य धर्मराज युधिष्ठिरकी प्रति अनवरत शरवर्षण करने लगे। भीमसेन, नकुल, सहदेव, धृष्टद्युम्न सात्यकि और शिखण्डीने दश दश वाणसे विद्ध करकी शर निकरसे समराङ्गणको आच्छन्न कर डाला। सहस्र सहस्र सोमक और प्रभद्रकगणने शल्यकी शरजालसे समाहत होकी कलेवर परित्याग किया। महावीर शल्य की शर निकर भ्रमरावली, शलभश्रेणी और जलद निर्गत वज्रकी समान अनवरत

निपतित होने लगा। असंख्य सैन्य मद्रराजके शराघातसे नष्ट हुई। अनन्तर काल प्रेरित मद्रराजने पुरुषकार प्रकाश पूर्वक गभीर गर्जन करके शत्रुगणको शरजालसे आच्छन्न कर दिया।

अनन्तर पाण्डव सैन्य आत्मरक्षाके लिये युधिष्ठिरके निकट धावमान हुई। शल्यराज शरजाल विस्तार करके धर्मराजको निपीड़ित करने लगे। धर्मराज युधिष्ठिरने मद्रराजको धाव-मान देखके निशित शर निकरसे निवारित किया। शल्यकी एक वाण धर्मराजका देहभेद करके भूतल में निपतित हुआ तब वृकोदर सात, सहदेव पांच, और नकुलने १० शरसे मद्र-राजको विद्ध किया और द्रौपदीके पंचपुत्र, जैसे जलद जाल महीधर पर वारिधारा वर्षण करें तद्रूप शल्यराजपर शर निकर वर्षण करने लगे। उसी समय शल्यको क्षतविक्षत देखके कृतवर्म्मा और कृप धावमान हुए। महाबल उलूक, शकुनि, अश्वत्थामा और आपके पुत्रगण मद्रराजके निकट जाय उनको रक्षा करने लगे। इसी प्रकार से घोर युद्ध होने लगा। कृतवर्म्माने भीमके अश्वगणको विनाश किया। तब भीम गदा लेकर रथसे अवतीर्ण होय युद्ध करने लगे। उसी समय शल्यने सहदेवके अश्वगणका विनाश किया। सहदेवने भी क्रुद्ध होय असि द्वारा शल्यपुत्रका मस्तक छेदन कर डाला, कृपाचार्य्य धृष्टद्युम्नसे युद्ध करने लगे। महाराज शल्य पुनर्वार युधिष्ठिरको वाणाघातसे निपीड़ित करने लगे। तब भीमसेन क्रुद्ध होय अधर दंशन पूर्वक शल्यके विनाशकी वासनासे अपनी विख्यात लौहमय गदा उद्यत करके शीघ्रही शल्यके अश्वगणको विनाश किया। अनन्तर शल्य निक्षिप्त तोमर भीमसेनका वर्मभेद करके वक्षस्थलमें विद्ध हुए। भीमसेनने तोमर उत्तोलन करके उनके सारथीको बध किया। अनन्तर

महाराज शल्य रथसे अवतीर्ण होय गदा ग्रहण पूर्वक वृकोदरकी प्रति दृष्टिपात करने लगे।

इति ११ अध्याय।

हे महाराज! भीमसेन और मद्रराज शल्यका गदा युद्ध दर्शनकी निमित्त महाकोलाहल उपस्थित हुआ। वह दोनो महावीर वृषभद्वयकी समान गरजन करते हुए, मण्डलाकार गति प्रदर्शन और गदा सञ्चालन करकी गदा युद्ध करने लगे। भीमसेनके गदापर मद्रराजकी गदाघात करनेसे अग्निकणा निर्गत हुई, और शल्यकी गदा पर भीमकी गदाघातसे अङ्गार वृष्टि होने लगी। यह देख सबही चमत्कृत होगये। अनन्तर महावीर द्वय गदाघातसे क्षणकालमें रुधिराक्त कलेवर होके पुष्पित किंशुकद्वयके समान शोभित होने लगे। अनन्तर उभय वीर परस्पर गदा प्रहारसे क्षतविक्षत और मर्म पीड़ित होके इन्द्र ध्वजके समान दोनो भूतलमें पतित और विमोहित हुए। यह देख कृपाचार्य्य मद्रराजको अपने रथ पर आरोपित करके समराङ्गणसे अपसृत हुए। और भीमसेन एक क्षणमें उत्थित होय मद्रराजको आह्वान करने लगे।

अनन्तर महाराज दुर्य्योधन ससैन्य शत्रु सैन्य पर धावमान हुए, और शाण द्वारा चेकितानका हृदय देश विद्ध किया। चेकितानने रुधिरसे अभिषिक्त होके प्राण परित्याग किया। पाण्डवगण यह देख रोषाविष्ट होय कौरव सैन्य पर धावमान हुए। तब मद्रराज शल्य युधिष्ठिरके विनाश वासनासे उनपर असंख्य वाण वृष्टि करने लगे। धर्मराज युधिष्ठिर शल्य निर्मुक्त शर जालसे अत्यन्त पीड़ित होके पुरन्दर विदलित जम्भासुरके समान हत पराक्रम हुए।

इति १२ अध्याय।

हे महाराज! मद्रराजको शरजालसे धर्मराजको निपीड़ित होते देख कर महावीर सात्यकि, भीमसेन, नकुल और सह-देव एकत्र होकर शल्यको निपीड़ित करने लगे। महावीर शल्य एकाकी समस्त वीरगणको निपीड़ित करने लगे। यह देख चतुर्दिकसे महान् साधुवाद होने लगा। इसी प्रकार से मद्रराज महारथगणसे निपीड़ित होके गैरिक धातुधारा स्रावी अचलके समान शोणित धाराक्षरण करने लगे। और पांच पांच वाणसे वही महाधनुर्धर वीरगणको विद्ध किया यह देख सबही चमत्कृत हुए। अनन्तर शल्यने अन्य एक भल्ल द्वारा धर्मराजको ज्यासंयुक्त शरासन छेदन कर डाली। अनन्तर सात्यकी प्रभृति समस्त वीरगण वाणवर्षण करने लगे, परन्तु शल्यराज एकाको उसको छेदन करके समस्त पाण्डव-सैन्यको निपीड़ित कर डाला। उस समय महारथगण शल्यशरसे निवारित होके किसीप्रकारसेभी समराङ्गणमें अवस्थान करनेको समर्थ न हुए। उसी समय राजा दुर्य्योधनने शल्यका पराक्रम देखके पाण्डव पाञ्चाल और सृञ्जयगणको निहत ज्ञान किया।

अनन्तर धर्मराज युधिष्ठिर सैनिकगणको शल्य शरसे परिवृत देखकर चिन्ता करने लगे कि अब किस प्रकार वासु-देवका महावाक्य सत्य होगा? और कैसे क्रुद्ध मद्रराजके हाथसे हमारी सैन्य परित्राण पावेगी? अनन्तर पाण्डवपक्षीय वीर-गण ससैन्य परिवृत होके चतुर्दिकसे शल्य सम्मुखीन हुए। तब मद्रराजने पवन जैसे मेघको छिन्नभिन्न करता है वैसही उनके अस्त्रजालको निराकृत कर डाला। उस समय आकाशमें शलभश्रेणी अथवा विहगावलीके समान शल्यनिक्षिप्त शर-जाल दृश्यमान था। शल्य चापयुक्त शरनिकरसे गगनमार्ग परिव्याप्त और समरभूमि तिमिर व्याप्त होनेसे क्या पाण्डव

था; कौरवपक्षीय कोई पुरुषभी दृष्टिगोचर न होता था। इसी प्रकारसे शल्यराज पाण्डवसैन्य निपीड़ित करके सिंहनाद करने लगे। तब तो पाण्डवपक्षीय महारथगण शल्यके सम्मुखीन होनेको समर्थ न हुए। परन्तु समर निपुण महावीरगणने मद्रराजको परित्याग करके स्थानान्तरमें गमन न किया।

इति १३ अध्याय।

—०—

हे महाराज! इधर महावीर अर्जुनसे और अश्वत्थामा और त्रिगर्त्तदेशीय महारथगणसे घोर युद्ध होने लगा। कौरवपक्षीय वीरगण अविरत निक्षिप्त शरजालसे कण्टकित कलेवर होकेभी धनञ्जयको परित्याग न किया। वरं उनको परिवेष्टन पूर्वक घोर युद्ध करने लगे, उस समय अर्जुनका रथ उन वीरगणके सुवर्ण गठित शरजालसे आच्छन्न होय उल्कापात शोभित भूतलस्थित विमानकी समान शोभमान हुआ। महारथगण वासुदेव और अर्जुनको क्षतविक्षत देखके अति हृष्ट हुए। उस समय अर्जुनका रथकूवर, रथचक्र, ईषा, योक्त्र, युग और अनुकर्ष सबही शरमय दिखाता थी। अनन्तर अर्जुन हुताशनकी समान शरजालसे आपके सैन्यगणको दग्ध करने लगे और वीरत्व प्रकाश पूर्वक द्वि सहस्र रथी संहार करके क्रोधसे विश्वदाहक धूमशून्य अग्निकी समान प्रज्वलित होने लगे। और दोनो पक्षसे वर्षाकालीन मेघनिर्मुक्त वारिधाराकी समान अनवरत शरधारा निपतित होने लगी। अश्वत्थामा और धनञ्जय परस्पर स्पर्धा प्रकाश पूर्वक क्षतविक्षत करने लगे। अनन्तर धनञ्जयने उनके घोड़ोंको निहत किया तब अश्वत्थामाने रथसे अवतीर्ण होय मूसल और परिघ निक्षेप किया, अर्जुनने उसको शरसे खण्ड खण्ड

कर डाला। अनन्तर अश्वत्थामाने महाक्रुद्ध होय दण्डोपम तीक्ष्ण नाराच पाञ्चालदेशीय महाराज सुरथके प्रति निक्षेप किया। द्रोणात्मजनिक्षिप्त नाराच सुरथका हृदय भेद करके वज्रके समान महावेगसे धरणीमें प्रवेश कर गई और सुरथभी भूतल पर निपतित हुए। अनन्तर अश्वत्थामा सुरथके रथ पर आरोहण करके संसप्तकगणके सहित धनञ्जयसे युद्ध करने लगे। उस समय भगवान् भास्कर गगनमण्डलके मध्य स्थानमें अवस्थित थे। उसी समय धनञ्जयसे महाघोर युद्ध होने लगा।

इति १४ अध्याय।

हे महाराज! उसीसमय महाराज दुर्य्योधन और धृष्टद्युम्नसे तुमुल युद्ध होने लगा। इधर महावीर शिखण्डी कृतवर्मा और कृपाचार्य्यसे संग्राम होने लगा। महावीर मद्रराज, सात्यकि, वृकोदर, नकुल और सहदेवसे महाघोर युद्ध करने लगे। उस समय कोई वीरभी शल्य शरविद्ध पाण्डवपक्षीय सैन्यकी रक्षा करनेको समर्थ न हुआ। महावीर शल्यने एकाकी असंख्य वीरगणसे संग्राम करके सबको आश्चर्य्यान्वित कर दिया। और शल्य भुजनिर्मुक्त भीषण शरजालसे मेदिनी समाकीर्ण हुई।

इति १५ अध्याय।

हे महाराज! उसी समय युद्ध दुर्मद असंख्य कौरव-सैन्यने मद्रराजको अग्रवर्ती करके महावेगसे पाण्डवसैन्य पर धावमान होय आलोड़ित और विवासित कर दिया। तब महावीर धनञ्जय क्रोधाविष्ट होके शरवर्षण करने लगे और अन्यान्य वीरगण परस्पर युद्ध करने लगे। अनन्तर पाण्डव-

सैन्यगण शल्य शरसे पीड़ित होय समर परित्याग पूर्वक पलायन करनेको प्रवृत्त हुए। यह देख युधिष्ठिर रोषाविष्ट होय मनमें स्थिर करने लगे कि आज होय तो जयलाभ करेंगे, अथवा विनष्ट होंगे यह विचार करके बोले, हे वीरगण! भीष्म, द्रोण, कर्ण प्रभृतिको विनष्ट करके तो आप लोगने अपना पुरुषकार प्रकाश किया अब हमारे लिये एक शल्यराज अवशिष्ट हैं, और आज हम उनको पराजित करनेको उद्यत हैं। हमारा अभिप्राय है सो कहते हैं श्रवण कीजिये। आज हमारा जय होय वा पराजय होय क्षत्रिय धर्मानुसार मातुलके साथ घोर युद्ध करेंगे। उनका और हमारा अस्त्र शस्त्र और अन्यान्य उपकरण समानही है। अब रथ योजकगण हमारा उपकरण सब संस्थापित करें सात्यकि दक्षिण और धृष्टद्युम्न वामचक्र रक्षा करें, धनञ्जय पृष्ठरक्षा और भीमसेन अग्रावस्थान करें। ऐसा होनेसे हम मद्रराजके अपेक्षा अधिक बलशाली होंगे। हे महाराज! युधिष्ठिरके वाक्यानुसार उनकी हितैषी वीरगणने वैसही सम्पादन किया यह देख समस्त पाण्डवसैन्य अतिहर्षयुक्त हुई।

अनन्तर धर्मराज युधिष्ठिर और मद्रराज विविध शरजाल विस्तार पूर्वक आमिष लोलुप शार्दूलद्वयकी समान परस्पर घोर युद्ध करने लगे। नकुल और सहदेव शकुनिसे युद्ध करने लगे। और अन्यान्य वीरगण परस्पर महायुद्ध करने लगे। अनन्तर भीमसेनने रथशक्ति द्वारा दुर्य्योधनको वक्षस्थल विद्ध किया कुरुराज मोहित होय रथमें निपतित हुए। तब भीमने उनके सारथीका मस्तक छेदन कर दिया। दुर्य्योधनके अश्वगण सारथीहीन होके स्वेच्छाधीन रथ ले कर भ्रमण करने लगे। यह देख अश्वत्थामा, कृप और कृतवर्मा राजाकी रक्षा करनेको धावमान हुए, उस समय कौरवपक्षीय

वीरगण अपने सैन्यको अति विश्रृंखल देखके अत्यन्त भीत हुए। महावीर धनञ्जय उसी अवसरमें गाण्डीव शरासन आकर्षण करके उन लोगका विनाश करने लगे। धर्मराज युधिष्ठिर मनोवेगगामी श्वेतवर्ण अश्वगणको सञ्चालन करके क्रुद्ध होय मद्रराजके प्रति धावमान हुए। वह मृदुभावापन्न और जितेन्द्रिय होकेभी उस समय अति दारुण कार्य्यका अनुष्ठान करने लगे। यह देखके सबही विस्मित हुए, रोषावेशसे विस्फारित लोचन और कम्पितकलेवर होके निशित अस्त्र द्वारा असंख्य योधगणको विनाश करने लगे। इसी प्रकारसे धर्मराज शरवर्षण पूर्वक रणस्थल शून्य करते मद्रराजके प्रति धावमान हुए। उस समय उनका पराक्रम देखके कौरव सैन्य अति भीत हुई थी।

अनन्तर वही क्रुद्ध वीरद्वय शंखध्वनि करके परस्पर आह्वान और भर्त्सना करते हुए संग्राममें प्रवृत्त हुए, उस समय दोनोके कलेवरसे अनवरत रुधिरधारा क्षरित होनेसे वे वसन्त कालके कुसुमित किंशुक वृक्षद्वयके समान शोभित होने लगे। मद्रराजने एक शरद्वारा धर्मराजका कार्मुक छेदन किया, तब धर्मराजने शीघ्रही दूसरा शरासन ग्रहण करके उनका शरासन और ध्वज और अश्वगण और सारथीको छेदन कर दिया, यह देख कौरवसैन्य छिन्नभिन्न हो गई उसी समय अश्वत्थामा शल्यको अपने रथ पर आरोपित करके गमन करने लगे। अनन्तर मद्रराजने धर्मराजको सिंहनाद करते देखके सुसज्जित एक दूसरे रथ पर आरोहण किया।

इति १६ अध्याय।

हे महाराज! महारथ शल्य शरासन ग्रहण पूर्वक युद्ध करने लगे। उनके शरनिकरसे बहुतर सैन्यगण पीड़ित और

पञ्चत्वको प्राप्त हुई। अनन्तर उभय पक्षीय योधागण सिंह-नाद परित्याग पूर्वक घोर संग्राम करने लगे। अनन्तर राजा युधिष्ठिरने महावेगसे वाण निक्षेप करके शल्य राजको मूर्च्छित कर दिया। मद्रराजने क्षुरास्त्रसे युधिष्ठिरका कार्मुक छेदन कर दिया। धर्मराज दूसरा शरासन ग्रहण करके शल्यको विद्ध करने लगे। अनन्तर मद्रराजने युधिष्ठिरका सारथी और अश्वगणको विनष्ट कर दिया। यह देख भीमसेनने मद्र-राजके सारथी और अश्वगण को निहत किया। और शर प्रयोग पूर्वक उनका वर्म छेदन कर डाला। तब मद्रराज असि चर्म ग्रहण पूर्वक रथसे अवतीर्ण होय युधिष्ठिरके प्रति धावमान हुए। अनन्तर वृकोदरने नौ तरसे मद्रराजका चर्म और भल्लसे खड्गके मुष्टिदेश छेदन करके सिंहनाद करने लगे। मद्रराज शरदृष्टिसे आच्छन्न होकर मृगका विनाशार्थी सिंहके समान महावेगसे युधिष्ठिरके सम्मुख गमन करने लगे। धर्मराज उनको आवते देखके रोष प्रभावसे हुताशनके समान प्रदीप्त होय वासुदेववाक्य स्मरण पूर्वक उनके विनाश करनेको कृतनिश्चय हुए। उस समय वह शल्यका अद्भुत कार्य्य निरीक्षण करके वही अश्वसारथीशून्य रथपर बैठे हुए युधिष्ठिरने एक सुवर्णदण्डसम्पन्न शक्ति ग्रहण किया और क्रोधप्रदीप्तनेत्रयुगल विस्फारित करके मद्रराजको अव-लोकन करने लगे।

हे महाराज! धर्मराजने मद्रराज पर निक्षेप कर्ने को जो शक्ति ग्रहण किया था पाण्डवगण गन्ध, माल्य, पान और भोजन द्वारा निरन्तर उस शक्तिकी अर्चना किया कर्ते थे। पूर्वमें देवशिल्पी विश्वकर्माने भगवान् शङ्करके लिये वह शक्ति निर्माण की थी और समस्त प्राणीके विनाश कर्नेको समर्थ थी। धर्मराज युधिष्ठिरने मद्रराज शल्यके विनाशार्थ वह अव्यर्थ शक्ति

मन्त्रपूत करके महावेगसे निक्षेप किया। तब मद्रराज युधिष्ठिरप्रेरित दुर्निवार शक्ति ग्रहण करनेको उत्थित होकर सिंहनाद करने लगे। अनन्तर वह शक्ति मद्रराजका अति विशाल शुभ्रवक्षस्थल और समस्त मर्म भेद पूर्वक धर्मराजका यश विस्तार करती हुई सलिलके समान महावेगसे पृथिवीमें प्रविष्ट हुई। मद्रराज रुधिरधारासे संसिक्त कलेवर और मूर्च्छित होय रथसे पृथिवी पर पतित हुए तो ऐसा निश्चय हुआ मानो वसुन्धरा प्रियतमा पत्नीके समान प्रणय पूर्वक उनका प्रत्युद्गमन वा आलिङ्गन करती है अथवा वसुन्धराको प्रियतम पत्नीके समान बहु काल उपभोग करके गाढ़ आलिङ्गन पूर्वक मानो सुसुप्ति लाभ किया है।

हे महाराज! इस प्रकारसे महावीर शल्य धर्म युद्धमें धर्मनन्दनके हाथसे निहत होय होमावसानमें प्रशान्त हुताशनके समान शोभित होने लगे। अनन्तर धर्मराज युधिष्ठिर शरासन ग्रहण करके खगराज जैसे पन्नगगणको विमर्द्दित करता है वैसे ही कौरवसैन्यगणको विदलित करने लगे। उनके निशित भल्लसे क्षणकालमें असंख्य कौरवसेना विनष्ट हुई।

अनन्तर मद्रराजके अनुज भ्राता क्रोधान्वित होय युधिष्ठिरके प्रति धावमान हुए। वहभी मद्रराजके तुल्य सर्वगुण सम्पन्न थे। भ्रातृहन्ता परिशोधके लिये असंख्य वाण द्वारा धर्मराजको विद्ध करने लगे। अनन्तर राजा युधिष्ठिरने शीघ्र ही छः शरसे उसको विद्ध करके द्वय क्षुरास्त्रसे उसका शरासन औ रथध्वज छेदन पूर्वक एक दृढ़ भल्लसे उसका शिरश्छेदन कर डाला। उसका कुण्डलालङ्कृत मस्तक रथसे निपतित होनेसे निश्चय हुआ मानो कोई स्वर्गवासी पुण्यावसान होने पर स्वर्गसे निपतित हुआ।

हे महाराज! शल्यानुजके निहत होनेसे कौरवगण पाण्डवभयसे भीत होय जीविताशा परित्याग पूर्वक हाहाकार करके पलायन करने लगे। उसी समय महावीर सात्यकी भय-पलायित कौरव गणके प्रति अनवरत शरवर्षण करते धावमान हुए। यह देख कृतवर्माने क्रुद्ध होय युयुधानको आक्रमण किया। अनन्तर सात्यकीने शर द्वारा कृतवर्माके अश्वगण और सारथीको विनष्ट कर दिया तब कृपाचार्य्य कृतवर्माको अपने रथपर आरोपित करके वहां से अपसृत हुए।

हे महाराज! दुर्य्योधनकी सैन्य मद्रराजके बध होनेसे पहिलेही भीत हो गई थी अब कृतवर्माको रथहीन देख अधिक शङ्कित होय पलायन करने लगी। उस समय समराङ्गन रजराशिसे ऐसा आच्छन्न हो गया कि कुछभी दृष्टिगोचर न हुआ। आपकी बहुत सैन्य विनष्ट हो गई। अनन्तर दुर्य्योधन अपनी सैन्यको पराङ्मुख और शत्रुगणको आक्रमण करते देख एकाकीही वाणवृष्टि द्वारा शत्रुगणको निवारित करने लगे परन्तु किसी प्रकारसेभी निवारण न कर सके।

हे महाराज! इसी प्रकारसे आपके वा आपके पुत्रके दुर्मन्त्रणासे असंख्य सैन्य विनष्ट हुई। पाण्डवगण महा आह्लादसे एकत्र समवेत होकर युधिष्ठिर को अगण्य धन्यवाद देने लगे। चतुर्दिक्से शङ्खध्वनि और विविध वादित्र वादन पूर्वक वसुन्धरा प्रतिध्वनित करने लगे।

इति १७ अध्याय।

हे महाराज! मद्रराजके निहत होनेसे उनके अनुचर सप्तशत रथीगण संग्रामके निमित्त धावमान हुए। छत्र चामर परिशोभित राजा दुर्य्योधनने बारंबार निषेध किया

परंतु वे लोग उनके वाक्यमे अनास्था करके शरासन ग्रहण पूर्वक पाण्डवसैन्य पर धावमान हुए। अनन्तर धनञ्जय और भीमसेन प्रभृति शरग्रहण पूर्वक युद्ध करने लगे। तब बहुतर मद्रकगणने वाणाघातसे विमथित होय प्राण परित्याग किया, अवशिष्ट मद्रकगणको पुनर्वार शत्रु सैन्य पर धावमान होते देख दुर्य्योधनने वारंवार निवारण किया परंतु वे लोगने उनका शासन न माना।

अनन्तर शकुनि बोला हे कुरुराज! तुम्हारे रहते हुए मद्रकगण विनष्ट होते हैं यह बात युक्तिसिद्ध नहीं है। तुमने पूर्वमें नियम किया था कि सबही समवेत होकर युद्ध करेंगे तो अब क्यों निश्चिन्त बैठे हो। दुर्य्योधन बोला हे मातुल! हमने वारंवार निषेध किया परतु ये अग्राह्य कर गये इसीसे ये लोग निहत होते हैं इसमें हमारा अपराध क्या?

शकुनि बोला हे कुरुराज! प्राय क्रुद्ध वीरगण शासन नहीं मानते इसे तुम कोप सम्बरण करो। उपेक्षा करने को यह समय नही है। चलो हम लोग एकत्र होय मद्रकगणका परित्राण करें।

अनन्तर दुर्य्योधन प्रभृति समस्त सैन्यगण धावमान हुए। और पाण्डवगण मध्यम व्यूहमें अवस्थान करके मुहूर्त कालमें बाहुयुद्ध करके मद्रकगणको निहत कर डाला। हे महाराज! पाण्डवगण मद्रराजके अनुचरगणको निहत करके कौरवसैन्यके सम्मुखीन होय सिंहनाद करने लगे। तब दुर्य्योधनकी सैन्य मद्रकगणको निहत देख कर पुनर्वार पराङ्मुख और जयशील पाण्डवगणके दृढ़ शरसे निपीड़ित होय प्राणभयसे दशदिक पलायन करने लगी।

इति १८ अध्याय।

हे महाराज! मद्रराजके मरनेसे आपके पक्षीय वीरगण और आपके पुत्रगण प्राय सबही समर पराङ्मुख हुए। जैसे अगाध सागरमें नौका मग्न होनेसे वणिक् लोग पार जानेकी आशा करते हैं वैसेही वे लोग आश्रय लाभकी आशा करने लगे। अनन्तर सबही उस मध्याह्नकालमें शरनिकरसे क्षत-विक्षत होके अत्यन्त भीत और पराजित होके सिंह निपी-ड़ित मृगयूथके समान, भग्नशृङ्ग वृषभके समान, शीर्णदन्त मातङ्गके समान प्रतिनिवृत्त हुए। वे लोग जयलाभसे निराश और क्षतविक्षत कलेवरसे भीत हो कर कोई अश्व, कोई गज, कोई रथ पर और कोई पादचारी होय महावेगसे पलायन करने लगे और बहुतेरे शत्रुशरसे आहत होके समर शय्या-पर शयन कर गए। कौरवसैन्यकी ऐसी अवस्था देख पाण्ड-वसैन्यगण सिंहनाद पूर्वक परस्पर कहने लगे। आज राजा युधिष्ठिर शत्रुहीन हुए। और दुर्य्योधन राजश्रीविहीन हुआ। आज राजा धृतराष्ट्र यह समाचार श्रवण करके भूतलमें निप-तित होंगे। आज वह पाण्डवगणको धनुर्धराग्रगण्य और अपनेको मन्दबुद्धि समझेंगे। आज उनको विदुर वाक्य सत्य जान पड़ेगा।

हे महाराज! पाण्डवपक्षीय वीरगण प्रसन्न मनसे परस्पर यह सब कहते कहते उन लोगोंका अनुसरण करने लगे। अन-न्तर धनञ्जय, नकुल, सहदेव और सात्यकि शकुनिकी प्रति धावमान हुए। अनन्तर राजा दुर्य्योधन पाण्डवगणको आक्र-मण करते देखके हस्ती अश्व और रथविहीन एकविंशति सहस्र पदातिके सहित प्राण पर्य्यन्त पण करके युद्धार्थ प्रस्तुत हो गये। और शत्रुगणके सहित घोर युद्ध उपस्थित हुआ। भीमसेनने एक सुवर्णमण्डित भीषण गदा ग्रहण करके रथसे भूतलमें अवतीर्ण होय वही एकविंशति सहस्र पदातिगणको

निहत कर दिया । अनन्तर अवशिष्ट कौरवपक्षीय सैन्यगणको समरपराङ्मुख अवलोकन करके ससैन्य आपका पुत्र दुर्य्योधनके प्रति धावमान हुए । उस समय दुर्य्योधनका अद्भुत पराक्रम दृष्टिगोचर हुआ । पाण्डवगण एकत्र समवेत हो करभी उनको अतिक्रम न कर सके । अनन्तर दुर्य्योधन अपने पलायित सैन्यगणको सतेज वाक्यसे बोले हे वीरगण ! तुम लोग पृथिवी पर्वत वा जहां जाओगे पाण्डवोंसे परित्राण न पा सकोगे । तब वृथा पलायन करनेसे प्रयोजन क्या ? देखो पाण्डवोंकी सैन्य अति अल्पही बच रही है । कृष्ण और धनञ्जयभी अत्यन्त क्षतविक्षत हो रहे हैं, इस समय हम लोग साहस पूर्वक युद्ध करें तो निश्चयही जय होय, हे वीरगण ! सबहीको एक दिन मृत्यु ग्रास करेगी इससे क्षत्रियको युद्ध करनाही श्रेयस्कर है । युद्धमें जय लाभ होनेसे इस लोकमें जश और सुख, मृत्यु होनेसे पर लोकमें स्वर्ग लाभ होता है । क्षत्रियको युद्धकी अपेक्षा स्वर्ग लाभका दूसरा कोई उत्तम उपाय नही है ।

हे महाराज ! दुर्य्योधन वाक्य श्रवण करके कौरवसैन्य उत्साहित होय पुनर्वार पाण्डवोंके प्रति धावमान हुई । और नकुल और सहदेव शकुनिके प्रति धावमान हुए ।

इति १८ अध्याय ।

हे महाराज ! म्लेच्छाधिपति शाल्व पर्वताकार महागजके ऊपर आरोहण करके पाण्डवसैन्य पर धावमान हुआ । महावीर शाल्व महागज पर आरूढ़ होके निशावसानके उदयाचलस्थित दिवाकरकी समान शोभा पाने लगा । और पाण्डवगणके प्रति धावमान होय शरनिकरसे सैन्यगणको यमालयमें

प्रेरण करने लगा। पाण्डवपक्षीय सैन्यगण महागजकी प्रभावसे विद्रावित और भीत होय समर परित्याग करके महावेगसे धावमान ऊई। यह देख सेनापति महावीर धृष्टद्युम्न शाल्वराज पर धावमान ऊआ। शाल्वने उसपर अपना मत्तमातङ्ग परिचालित किया। धृष्टद्युम्नने पञ्चशर निक्षेप करनेसे गज पलायन करने लगा। शाल्वराजने उसको अंकुश द्वारा प्रतिनिवृत्त करके धृष्टद्युम्न पर सञ्चालन किया। वह महावेगसे नागराजको आवते देख गदा ले कर रथसे अवतीर्ण ऊए। गजराजने तत्क्षणात् उनके रथ, अश्व और सारथीको उत्क्षेपण करके धरातल पर विमोथित कर डाला। धृष्टद्युम्नको निपीड़ित देख कर अन्यान्य वीरगण एकत्र होय शाल्व पर शरवृष्टि करने लगे, तब कौरवसैन्यनिसूदन महावीर धृष्टद्युम्न अचल शृङ्ग सदृश गदा ग्रहण पूर्वक महावेगसे धावमान होय जलद सदृश पर्वताकार मदस्रावी मातङ्गको आहत करने लगे। गजराज गदाघातसे गभीर गर्जन और रुधिर वमन करते२ भूकम्प चालित भूधरके समान भूतलमें निपतित ऊआ। अनन्तर सात्यकिने निशित भल्ल द्वारा शाल्वराजका मस्तक छेदन कर डाला। शाल्वभी छिन्नमस्तक होय वज्रदलित विशाल गिरिशृङ्गके समान नागराजके सहित भूतलमें निपतित ऊए।

इति २० अध्याय।

हे महाराज! महावीर शाल्वके निहत होनेसे आपकी सैन्य पलायन करने लगी। यह देख महावीर कृतवर्माने शत्रुसैन्यको आक्रमण किया। उस समय परस्पर घोर संग्राम होने लगा, उस समय कृतवर्माने आश्चर्य पराक्रम प्रकाश किया। एकाकी समस्त शत्रुसैन्यको निवारित कर डाला।

यह देख कौरवगण सिंहनाद करने लगे। तब महाबाहु सात्यकि महावेगसे आगमन पूर्वक सात बाणसे महाराज क्षेम-कीर्तिको निपातित किया। कृतवर्म्मा युयुधान पर धावमान हुए।

अनन्तर सात्यकिने दश बाणसे कृतवर्माका ध्वज छेदन पूर्वक अश्व और सारथीका प्राणसंहार कर दिया, तब कृत-वर्माने शूल निक्षेप किया। सात्यकिने उसको छेदन करके उनका हृदय भेद किया। कृपाचार्य्यने कृतवर्माको रथहीन देख उनको अपने रथ पर आरोपित करके अपसृत हुए। उस समय महाराज दुर्य्योधन एकाकी समराङ्गणमें युद्ध करते थे, अनन्तर कृतवर्मा अन्यरथ पर आरोहण करके संग्रामस्थलमें उपस्थित हुए।

इति २१ अध्याय।

हे महाराज! उस समय दुर्य्योधनके शरसे शत्रुपक्षीय कोईभी अक्षत न रहा। समस्त पृथिवी शरमय दिखाती थी। उस समय उभय पक्षीय सैन्यसे दुर्य्योधनही अद्वितीय वीर ज्ञात होते थे। पाण्डवगण एकत्र समवेत होकेभी उनको अति-क्रम न कर सके यह देख सबही विस्मयाविष्ट हो गये। उस समय पलायित कौरवसैन्य पुनर्वार दुर्य्योधनके निकट उप-स्थित हुई। अनन्तर अश्वत्थामा और भीमसेनसे घोर युद्ध होने लगा। शकुनिने राजा युधिष्ठिरको शराघातसे रथहीन कर डाला। तब सहदेव उनको अपने रथ पर आरोपित करके वहांसे अपसृत हुए। पुनर्वार अन्य रथारोहण करके राजा युधिष्ठिर शकुनिसे युद्ध करने लगे।

अनन्तर शकुनिपुत्र महावीर उलूक महाधनुर्धर नकुलसे

युद्ध करने लगे, सात्यकि कृतवर्मासे, राजा दुर्य्योधन धृष्टद्युम्नसे और महावीर कृपाचार्य्यपुत्र द्रौपदीतनयगणसे, पदातिगण पदातिगणसे, गजयूथ गजयूथसे अश्वारोही अश्वारोहीगणसे और रथी रथीगणसे महायुद्ध होने लगा, उस समय धूलि-पटलसे भूमण्डल और अन्तरिक्ष आच्छन्न होय नभोमण्डल संध्यारागरञ्जित दृष्टि होने लगा। दिवाकरकी प्रतिभा ति-रोहित होनेसे सैन्यगण अदृश्य हो गई। अनन्तर परस्पर प्रहारपरायण वीरगणकी गात्रसे शोणितधारा निःसृत होती थी उससे अल्प क्षणमें प्रभूत रजोराशि प्रशमित हो गई। योद्धागणका वर्म मध्याह्नकालीन दिवाकरका करजाल निप-तित होनेसे अधिक उज्ज्वल हो उठा। उस समय हम लोग वीरगणका द्वंद्वयुद्ध पुनर्वार अवलोकन करने लगे, उन लोगका शर पतन शब्द पर्वत पर दह्यमान वेणुवनके शब्दके समान श्रवण होने लगा।

इति २२ अध्याय।

हे महाराज! उस समय सुरासुर संग्रामकी सदृश घोर युद्ध उपस्थित हुआ। उस समय उभय पक्षसे कोईभी समर-पराङ्मुख न हुआ। सबही प्राण पण करके युद्ध करने लगे। उस समय रणस्थलमें असंख्य सैन्य विनष्ट हुई। अनन्तर धर्मराज युधिष्ठिर सहदेवसे बोले, हे सहदेव! वह देखो दुर्मति सुबलनन्दन शकुनि सैन्यगणका विनाश कर रहा है, इस कारण तुम शीघ्रही उसको संहार करो द्रौपदीके पञ्च-पुत्र, तीनसहस्र पदाति हस्ती और अश्वगणको सङ्ग लै जाओ, अनन्तर राजाके वाक्यानुसार सहदेव शकुनिकी प्रति धावमान होकर उनकी सैन्यका विनाश करने लगे। परस्पर सैन्य-गणमें घोर युद्ध आरम्भ हुआ। उस युद्धमें बहुतर सैन्य विनष्ट

हुई। तब शकुनिने मुहूर्त्तकाल युद्ध करके हतावशिष्ट छः सहस्र अश्व सैन्य लेके वहांसे प्रस्थान किया।

इति २३ अध्याय।

हे महाराज ! शकुनि पुनर्वार संग्राममें गमन करके धृष्टद्युम्नके सैन्य पर धावमान हुआ। उस समय उभयपक्षीय वीरगण प्राण पण करके तुमुल युद्ध करने लगे। उस समय कौरवपक्षीय सैन्यगण श्रान्त, पिपासार्त्त और क्षतविक्षत होने लगे। वीरगण रुधिरगन्धसे मत्त होय स्वकीय वा परकीय सैन्यके योधगणको प्रातिही निहत करने लगे। बहुतेरे प्राण परित्याग पूर्वक भूतलमें निपतित हुए। हे महाराज ! आपके पुत्रके संमुख यह घोर सैन्यक्षय होने लगा। गृध्र और शृगालगणके आह्लादका परिसीमा न था। उभय पक्षीय वीरगण अत्यन्त क्षतविक्षत होकरभी युद्धसे निवृत्त न हुए। उस समय सैन्यगण अपने भ्राता बन्धु और पुत्रगणको विनाश करनेसे संग्राम अति अव्यवस्थित होने लगा।

इति २४ अध्याय।

हे महाराज ! अनन्तर शकुनिके उत्साहित करनेसे ससैन्य दुर्य्योधन पाण्डवगणके प्रति धावमान होय महावेगसे युद्ध करने लगे। उस समय धनञ्जय कौरवसैन्यको महा वेगसे आगमन करते देखके वासुदेवसे बोले, हे सखे ! तुम शीघ्र अश्व चालन पूर्वक सैन्यमें प्रविष्ट होय आज हम शत्रुगणको निःशेषित करेंगे। आज अष्टादश दिन हुए कि घोर युद्ध होता है। इसीमें सागर समान कौरवसैन्य हम लोगके विक्रम प्रभावसे अब गोष्पदके समान हो गई है। दैवका भी क्याही प्रभाव है? भीष्मके मरनेहीसे दुर्य्योधनको सन्धि करना

उचित था, परंतु पितामहकी कहने परभी लोभ और मोह-वश होय न किया। धृतराष्ट्रकी पुत्रगण सबही महामूर्ख हैं। देखो द्रोण, कर्ण, शल्यप्रभृति वीरगणकी मरने परभी यह घोर हत्याकाण्ड उपशमित न हुआ। हाय! मूढ़मति दुर्य्योधन भिन्न कौन राजा निरर्थक वैराचरण करता है? हिता-हितज्ञानसम्पन्न प्राज्ञ पुरुष शत्रुको गुण और बलवीर्य्यमें अधिक जानके कदाच उनसे युद्ध नहीं करते। हे कृष्ण! दुर्य्योधनके कार्य्य देखनेसे निश्चय होता है कि कौरवकुल समूल निर्मूल होगा। महात्मा विदुरने हमसे कहा था कि वह दुष्ट विना युद्धके कदाच तुम लोगको राज्यांश न देगा। हे माधव! यह सब देखनेसे यही निश्चय होता है कि वह कुलाङ्गार दुरात्माका निश्चयही विनाशकाल उपस्थित हुआ है। अब तुम शीघ्र कौरवसैन्यमें रथ सञ्चालन करो आज निशित शरनिकरसे दुर्य्योधन और उसके दुर्बल सैन्यका विनाश करके युधिष्ठिरका प्रियानुष्ठान करेंगे।

अनन्तर वासुदेवने अर्जुनके वाक्यानुसार अश्वगणको चालित करके कौरवसैन्यमे प्रवेश किया। तब प्रबल प्रताप-शाली धनञ्जयने दुर्य्योधनके सैन्यगणको शरानलसे दग्ध कर डाला। जैसे प्रज्वलितपावक शुष्कलताप्रतिपूर्ण पादप-सम्पन्न महावनको दग्ध करता हो एवंमें वज्रपाणी इन्द्रके प्रभावसे दैत्यगण जैसे विनष्ट हुए थे तैसेही अब एक वीर धनञ्जयके शरनिकरसे कौरवसैन्य निहत होने लगी।

इति २५ अध्याय।

हे महाराज! कौरव सैन्यगण धनञ्जय शर निकर प्रहार-से असह्यमान हो कर पलायन करने लगीं। और पुनर्वार शिविर स्थापन पूर्वक युद्ध करने को प्रवृत्त हुई। अनन्तर

धृष्टद्युम्नने राजा दुर्य्योधन पर शरवर्षण करके उनको रथहीन कर दिया। तब राजा दुर्य्योधन अश्वारोहण पूर्वक शकुनिके निकट उपस्थित हुए।

अनन्तर त्रिसहस्र गजारोही सैन्यने चतुर्दिकसे पाण्डवोंको परिवेष्टित कर लिया। उस समय पाण्डव करिसैन्य परिवृत होनेसे मेघाच्छादित ग्रहगणके समान शोभा पाने लगे। अर्जुनके एक एक शरसे कुञ्जरगण निहत हो कर पतित होने लगे, उनके पतनसे असंख्य सैन्यका प्राण विनष्ट हुआ। उसी समय महावीर भीमसेन गदा ग्रहण पूर्वक रथसे अवतीर्ण होय उन लोगके संमुख उपस्थित हुए। कौरव सैन्यगण यह देख अति भीत होकर विष्ठा मूत्र परित्याग करने लगे। पर्वताकार हस्तीगण वृकोदरके गदाघातसे विदीर्णकुम्भ और रुधिराक्तकलेवर हो कर चीत्कार करते करते कितने दूर चलकर छिन्नपक्ष पर्वतके समान भूतलमें निपतित हुई। इधर आपके पुत्रने धृष्टद्युम्न के शरसे पराजित होय अश्वारोहण पूर्वक वहांसे शकुनिके निकट प्रस्थान किया था। महावीर अश्वत्थामा कृप औ कृतवर्मा, रथिगण में दुर्य्योधनको न देखके उनका अनुसन्धान करते उद्विग्न मनसे शकुनिके निकट उपस्थित हुए।

इति २६ अध्याय।

अनन्तर महावीर दुर्मर्षण, श्रुतान्त, जैत्र, भूरिबल रवि, जयत्सेन, सुजात, दुर्विषह, अरिहा, दुर्विमोचन, दुष्प्रधर्ष, और श्रुतवीर्य आपके हतावशिष्ट युद्ध विशारद पुत्रगणने भीमसेनके प्रति धावमान होय उनको चतुर्दिकसे अवरोध किया तब भीमसेन पुनर्वार रथारूढ़ होय आपके पुत्रगण के मर्मदेशमें निशित शाणिकर निक्षेप करने लगे। और क्रम

क्रमसे आपके समस्त पुत्रगणको यमालय प्रेरण किया। अनन्तर क्षणमात्रमें कौरवपक्षीय पञ्चशत महारथ, सात सौ कुञ्जर, एक लक्ष पदाति और आठ शत अश्व निपातित करके भीमसेन समराङ्गणमें विचरण करने लगे। आपके पुत्रगणको वध करके भीम अपनेको कृतार्थ और जन्मसार्थक मानने लगे। उस समय आपकी सैन्य उनको दृष्टि करनेकोभी असमर्थ हो गई। और अल्पावशिष्ट कौरवसैन्य दीनभावापन्न हो गई।

इति २७ अध्याय।

—०—

हे महाराज! उस समय आपके पुत्रोंमें केवल दुर्य्योधन और दुर्धर्ष अवशिष्ट थे। अनन्तर वासुदेव बोले, हे अर्जुन! अवशिष्ट कौरवसैन्य तुमको आगत देख कर जब तक पलायित न होने पावे तुम शीघ्रही उनको संहार करो। धनञ्जय बोले, हे माधव! अब केवल शकुनिके पंचशत अश्व, छय शत रथ, एक शत मातङ्ग और तीन सहस्र पदाति, अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य, त्रिगर्त्ताधिपति, उलूक, शकुनी और कृतवर्म्मा अवशिष्ट रह गए हैं। कृतान्तसे कोईभी परित्राण नही पा सकता है। आज निश्चय महाराज युधिष्ठिर शत्रुहीन होंगे, आज हम लोगोंका समस्त कार्य्य सम्पन्न होगा, अब आप शीघ्र रथ चालन करो, शीघ्रही शत्रुगणको निहत करते हैं। अनन्तर वासुदेव दुर्य्योधनके सैन्यके प्रति रथ चालित किया। तब भीमसेन और सहदेवभी धनञ्जयके सहित धावमान हुए। पाण्डवगणको समागत देखके शकुनि अग्रसर हुआ। अनन्तर आपके पुत्र सुदर्शन भीमसे, सुशर्मा और शकुनि धनञ्जयसे और दुर्य्योधन सहदेवसे युद्ध करने

लगे, समरपराक्रान्त धनञ्जय अश्वारोही वीरगणका मस्तक छेदन करके त्रिगर्त्ताधिपतिके प्रति धावमान हुए। अनन्तर धनञ्जयने एक बाणसे सत्यकर्माका कुण्डलमण्डित मस्तक छेदन कर डाला, और सत्येषुको संहार करके तीन बाणसे सुशर्माको बिद्ध किया। अनन्तर धनञ्जय निक्षिप्त यमदण्ड सदृश शरसे सुशर्मा प्राण परित्याग पूर्वक धरातलमें पतित हुआ। अनन्तर धनञ्जयने सुशर्माके पैतालिस पुत्र और समस्त सैन्यगणको निहत करके हतावशिष्ट कौरवसैन्यके प्रति धावमान हुए।

अनन्तर भीमसेनने शरनिकरसे सुदर्शनका मस्तक छेदन कर डाला।

इति २८ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर सुबलनन्दन शकुनि सहदेवके प्रति धावमान हुआ। उलूक भीमसेनसे युद्ध करने लगा। उन लोगके जलधारा सदृश शरधारासे दश दिक आच्छन्न हो गया। भीमसेन और सहदेव कौरवसैन्य विनाश करते रणस्थलमें विचरण करने लगे।

हे महाराज! उस समय कौरवसैन्य अल्प रह गई थी, इससे पाण्डवगण अति हर्षसे उन लोगको यमराजकी राजधानीमें प्रेरण करने लगे। अनन्तर शकुनिने सहदेवके मस्तकमें प्रास प्रहार किया, माद्रीनन्दन विह्वल हो कर अचेतन हो गये। यह देख भीमसेन क्रुद्ध होय असंख्य कौरवगणको निहत करने लगे। अनन्तर सहदेव संज्ञालाभ करके बाणाघातसे शकुनिका शरासन छेदन कर डाला। शकुनि अन्य शरासन लेके नकुलको षष्ठि और भीमको सात बाणसे

विद्ध किया। अनन्तर उलूकभी पिताके परित्राणार्थ भीम-सेनको सात और सहदेवको सप्ततिबाणसे विद्ध किया। वीर-गण सहदेवके शरसे आहत होके क्रुद्ध होय विद्युद्विराजित जलदावली जैसे पर्वत पर वारिधारा वर्षण करती है, वैसही सहदेव पर शरधारा वर्षण करने लगे। उसी समय महा-प्रतापशाली सहदेवने एक शरसे उलूकका मस्तक छेदन कर डाला। तब उलूक छिन्नमस्तक होय पाण्डवोंका आनन्द-वर्द्धन पूर्वक भूतलमें निपतित हुआ। शकुनिपुत्रको निहत देख वाष्पाकुल नयनसे क्षणकाल विदुर वाक्य स्मरण और दीर्घनिश्वास परित्याग पूर्वक सहदेवके सम्मुखीन होय युद्ध करने लगा। उस समय आपकी सैन्य शकुनिको भीत देख कर पलायन करने लगी। तब शकुनिभी पलायन परायण हुए। अनन्तर महावीर सहदेवको पलायित शकुनिका अपना पथ ज्ञान करके उस पर धावमान हुए, और निशितशरसे उसको विद्ध करके बोले, हे सुबलनन्दन! क्षात्रधर्मानुसार स्थिर हो कर युद्ध करो। द्यूतक्रीड़ाके समय सभामें जो आह्लाद प्रकाश किया था आज उसका फल भोग करो, पूर्वमें जो जो दुरा-त्माने हम लोगका उपहास किया था, सबही निहत हो गये। केवल कुलाङ्गार दुर्य्योधन और तुम अवशिष्ट रह गये हो। लगुड़ प्रहारसे वृक्ष फल जैसे पातित करती हैं वैसही क्षुरप्रहारसे तुम्हारा मस्तक उन्माथित करेंगे। यह कहके सहदेव शकुनि पर शरजाल वर्षण करने लगे। अन-न्तर एक प्रास ग्रहण पूर्वक शकुनि धावमान हुआ, तब सहदेवने तीन भल्ल निक्षेप पूर्वक उसका प्रास और भुजद्वय छेदन और एक लौहमय भल्ल द्वारा उसका मस्तक छेदन कर डाला। शकुनि छिन्न मस्तक होके धरा शय्या पर शयान हुए। यह देख कौरवपक्षीय योधगण शंकित मनसे दश दिक्

प्रस्थान करने लगे। पाण्डवगण परमाह्लादित होय शंखवादन करके सहदेवकी यथोचित प्रशंसा करने लगे।

इति २९ अध्याय।

ह्रदप्रवेश पर्वाध्याय।

हे महाराज! शकुनिके निहत होनेसे उनके अनुचरगण सहदेवके वधार्थ युद्ध करनेको धावित हुए। अनन्तर पार्थ और भीमने उन लोगोंको आक्रमण किया इससे उनका सङ्कल्प व्यर्थ हो गया।

उस समय महावीर अर्जुन अभिमुख समागत योधगणका मस्तक छेदन पूर्वक निपातित करने लगे। हे महाराज! पाण्डवगणने इसी प्रकारसे आपकी एकादश अक्षौहिणी सेना प्राय निःशेषित कर दी। कौरवपक्षीय सहस्र सहस्र भूपालोंमें केवल एक दुर्य्योधन अवशिष्ट रह गये। तब वह दशदिक शून्य देखने लगे और पाण्डवोंका सिंहनाद और वाण शब्द श्रवण करके मूर्छित प्राय होके वहांसे प्रस्थान करनाही श्रेयस्कर ज्ञान करने लगे।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! हमारी सैन्य विनष्ट और शिविरशून्य होने पर पाण्डवसैन्य कितनी अवशिष्ट रह गई? और दुर्य्योधनने क्या किया? सो कहो। सञ्जय बोला महाराज! उस समय पाण्डवसैन्यमें द्विसहस्र रथी, सप्तशत हस्त्यारोही, पञ्चसहस्र अश्वारोही, और दश सहस्र पदाति अवशिष्ट रह गये थे, धृष्टद्युम्न यह सैन्य लेकर रणस्थलमें अवस्थान करते थे, उसी समय राजा

दुर्य्योधन रणस्थलमें अपना कोई सहाय न देखके विषण्ण और अपनी सैन्यक्षय देख कर शङ्कित होय अपना अश्व परित्याग और गदाधारण पूर्वक पादचारी होय पर्व दिशामें ह्रदप्रवेशाभिलाषसे ह्रदाभिमुख गमन करने लगे। वह कितने दूर जा कर विदुर वाक्य स्मरण करने लगे।

इधर पाण्डवगण कौरवसैन्यके प्रति धावमान हुए, और कौरवसैन्यगणका समस्त सङ्कल्प निष्फल करके उन लोगको बंधुबान्धवके सहित संहार पूर्वक अपूर्व शोभा धारण करने लगे। हे महाराज! सुबलनन्दन शकुनिके निहत होनेसे आपकी सैन्य छिन्नभिन्न अरण्यके समान दृष्टि होने लगी। उस समय अश्वत्थामा, कृतवर्मा, कृपाचार्य्य और दुर्य्योधन भिन्न और कोईभी आपके सैन्यमें जीवित न रहा। अनन्तर महावीर धृष्टद्युम्नने हमको सात्यकिके निकट अवलोकन करके कहा कि हे वीर! सञ्जयको जीवित रखनेका प्रयोजन क्या है? शीघ्र संहार करो।

यह सुन सात्यकि निशित असि द्वारा हमकी विनाश करनेको उद्यत हुए इतने में महर्षि कृष्णद्वैपायन वहां उपस्थित होय सात्यकिसे बोले, हे युयुधान! तुम सञ्जयको परित्याग करो इसको विनाश करना कर्तव्य नहीं हैं। व्यास वाक्य शिरोधार्य्य करके सात्यकिने हमको परित्याग करके गमन करनेकी आज्ञा दिया। तब हम वर्म और आयुध परित्याग पूर्वक शोणितलिप्त कलेवर से नगराभिमुख गमन करने लगे। रणस्थलसे एक क्रोश अन्तर क्षतविक्षतदेह गदाधारी राजा दुर्य्योधन को अवलोकन किया। वाष्पाकुल-लोचन दुर्य्योधन हमको देख न सके और उनको असहाय और शोकाकुल देखकर हमाराभी अनेक क्षण वाक्य स्फुरित

न हुआ। अनन्तर हम जिस प्रकारसे आक्रान्त और महर्षि व्यासके प्रसादसे मुक्त हुए थे, सो सब आद्योपान्त कीर्तन किया। तब राजा चैतन्य होय अपनी सैन्य और भ्रातृगणका संवाद पूछने लगे। हमने कहा कि हम अपने आंखसे देखा है आपकी समस्त सैन्य और भ्रातृगण विनष्ट हुए। रण-स्थलसे आगमनके समय व्यासदेवने कहा कि अब कौरव पक्षीय केवल तीन जन जीवित हैं।

हे महाराज! कुरुराज दीर्घ निश्वास परित्याग पूर्वक बोले, हे सञ्जय! अब हमारे पक्षमें तुम्हारे भिन्न किसीकोभी जीवित नहीं देखते हैं।

परन्तु पाण्डवगण सबही सहाय सम्पन्न हैं। जो होय तुम राजा धृतराष्ट्र से कहियो कि, दुर्य्योधन समर से किंचित् विमुक्त हो कर ह्रद में प्रवेश पूर्वक आत्मरक्षा करता है। हाय! हम पुत्रहीन भ्रातृहीन, बन्धु बान्धवविहीन और राज्यभ्रष्ट होके कैसे जीवन धारण करेंगे? हे महाराज! यह बोलके कुरुराज ह्रद में प्रवेश करके माया प्रभाव से जलको स्तम्भित कर रखा।

हे महाराज! वहां से अनतिदूर हो क्षतविक्षतकलेवर महावीर अश्वत्थामा, कृप और कृतवर्मा अश्व चालन पूर्वक हमारे निकट उपस्थित हो कर बोले, हे सञ्जय! आज सौभाग्य होसे तुमको जीवित देखा। हमारे दुर्य्योधन तो जीवित है? तब हमने समस्त वृत्तान्त निवेदन करके वह ह्रद भी उनको दिखला दिया। तब द्रोणपुत्र विलाप करके कहने लगे। हाय! क्या दुःख! जो राजा यह नहीं जानते कि हम लोग जीवित हैं। नहीं तो उनसे मिलके अनायास हो शत्रुगणसे युद्ध करते हैं। अनन्तर वे लोग हमको कृपा-चार्य्यके रथ पर आरोपित करके शिबिर में उपनीत हुए।

उस समय दिनकर अस्ताचल चूड़ा अवलम्बन कर गये थे। शिविरस्थ यावतीय लोक कुमारगण की निधन दशा श्रवण करके अत्यन्त दुःखित होय विलाप और परिताप करने लगे। तब अन्तःपुर रक्षक वृद्धगण राज वनितागणको लेकर नगराभिमुख धावमान हुए। दुर्य्योधन के अमात्यगण भयातुर होय रोदन करते करते राजवनितागणको लेकर नगर मे प्रस्थान करने लगे। हे महाराज! पूर्व में दिवाकर भी जिन को नहीं देख सकते थे, ऐसी कुलकामिनीगणको अब सामान्य लोग भी दर्शन करने लगे।

हे महाराज! उस समय आपका वैश्यापुत्र युयुत्सु शोक सन्तप्त होके मन में चिन्ता करने लगा कि इस समय कौरव वंश में सबही निहत हुए, भाग्य से हमही रहगये हैं, राजा दुर्य्योधन भी अज्ञान हो गये हैं। दुर्य्योधन के अनुचर गण राजवनितागणको लेकर नगराभिमुख गमन करते हैं, इस समय उनके रक्षार्थ हमको भी गमन करना कर्तव्य है यह सोचविचार राजा युधिष्ठिर से यह वृत्तान्त निवेदन करके विदा होय रथारोहण पूर्वक हस्तिनाभिमुखी रमणीगणके सहित मिलित होय सन्ध्या के समय हस्तिनापुर प्रवेश पूर्वक विदुरको अवलोकन किया और प्रणाम करके समस्त वृत्तान्त कीर्त्तन किया, सर्वधर्मवेत्ता विदुर युयुत्सु की बात सुन कर साधु साधु कह कर बोले, वत्स! तुमने समयोचित कार्य्य और अपने कुलधर्मकी रक्षा किया। तुम अन्धराज धृतराष्ट्रके यष्टि स्वरूप रहगये आज तुम यहां ही विश्राम करो प्रातःकालही युधिष्ठिरके निकट गमन करना। धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! हतावशिष्ट अश्वत्थामा, कृप, कृतवर्मा और मन्दबुद्धि दुर्य्योधन ने क्या किया?

सञ्जय बोले, महाराज! उस समय शिविर शून्य होनेसे

वे तीनो महारथ ह्रदाभिमुख गमन करने लगे। और इधर पाण्डवगण दुर्य्योधनके विनाश वासना से यत्न पूर्वक कुरुराजका अनुसन्धान करने लगे, परन्तु कुछ पता न लगा। अनन्तर अश्वत्थामा, कृतवर्मा और कृपाचार्य्य ह्रदके निकट जाय सलिल-निमग्न राजा दुर्य्योधनको पुकार बोले, महाराज! तुम ह्रदसे उत्थित होय हमारे निकट आओ, और हम लोग से मिलित होय युद्ध करके शत्रुगणको विनाश करके पृथिवी भोग करो, अथवा युद्धमे देहत्याग करके स्वर्ग लाभ करो। पाण्डवगण की सैन्य अति अल्प और क्षतविक्षत रहगई हैं। अब हम लोग तुम्हारी रक्षा करते हैं, तो पाण्डवगण तुम्हारा वेग किसी प्रकारसे सहन न कर सकेंगे। अनन्तर राजा दुर्य्योधन बोले, हे महारथगण! भाग्यबलसे हमने आप लोगको भयङ्कर समरसे मुक्त पाया! अतःपर श्रमापनोदन पूर्वक एकत्र हो कर, पाण्डवगणको पराजय करेंगे। इस समय आप लोग सबही परिश्रान्त और हमभी क्लान्त होरहे हैं। और पाण्डवगणकी सैन्य अभीभी अधिक बचरही है, इस से अभी युद्ध करनेकी हमारी रुचि नहीं है। इस समय पराक्रम प्रकाश करना अकर्तव्य है, आज की रात विश्राम करके प्रातःकालही आप लोगके सहित शत्रुगण से युद्ध करेंगे, इसमे कुछ सन्देह नहीं है। अनन्तर अश्वत्थामा बोले, हे महाराज! अब आप ह्रदमें से उत्थित हो हमही लोग तुम्हारे शत्रुगणका विनाश करेंगे, हे वीर! हम इष्टापूर्त दान, सत्य और जप द्वारा शपथ करके कहते हैं, कि आज निश्चयही पाण्डवगणको विनाश करेंगे, अगर रजनी प्रभात न होते तुम्हारे शत्रु गण को विनाश न कर सकें तो हमारा सज्जनोचित यज्ञकृत प्रीति कदाच अनुभूत न होय। हम निश्चय ही कहते हैं, कि पाञ्चाल-गणको विनष्ट किये विना कदापि कवच परित्याग न करेंगे।

हे महाराज! वे लोग यही कथोपकथन करते थे, इतनेमें कोई एक व्याध उस ह्रदके निकट आगये। वे व्याधगण भीमकी आहारार्थ प्रतिदिन मांस आहरण करते, वे ह्रदकूलमें उपवेशन पूर्वक निर्जनमें दुर्य्योधन और वे महारथगणका कथोपकथन श्रवण करने लगे। समरश्लाघान्य राजा दुर्य्योधनको वे लोग युद्धकी निमित्त निर्बन्धातिशय प्रकाश करके आग्रह कर रहे थे, व्याधगणने यह देख दुर्य्योधनका ह्रदमें रहना निश्चय ठहरा लिया। हे महाराज! इधर युधिष्ठिरने कलहका मूल उच्छेद करनेकी लिये दुर्य्योधनकी अनुसन्धानमे चतुर्दिक् दूत प्रेरण किया, परंतु कुछभी अनुसन्धान न पा कर चिन्ताकुल होय बैठे थे। इतनेमें व्याधगण भीमसेनकी निकट उपस्थित होय आद्योपान्त समस्त वृत्तान्त निवेदन कर दिया। तब भीमने राजा युधिष्ठिरसे समस्त निवेदन किया। अनन्तर दुर्य्योधन जलस्तम्भ करके ह्रदमें प्रवेश कर गया है, यह बात सुनतेही पाण्डवगण हृष्टचित्तसे सिंहनाद करते हुए द्वैपायनह्रदकी निकट धावमान हुए। वेगगामी रथोंगणका घोरतर शब्द आकाशमार्गमें उत्थित हुआ। महारथ अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, उत्तमौजा, युधामन्यु, सात्यकि, द्रौपदीका पञ्चपुत्र और हतावशिष्ट पाञ्चालगण चतुरङ्गबलकी सहित द्वैपायन ह्रदकी निकट गमन करने लगे। उस समय अश्वत्थामा, कृतवर्म्मा, और कृपाचार्य्य सैन्यगणका तुमुल शब्द श्रवण करके दुर्य्योधनसे आज्ञा लेकर प्रस्थान करके बहुदूर गमन पूर्वक एक वटवृक्षकी तलमें उपवेशन करके अश्वगणको रथसे मुक्त करके वहां अवस्थान करने लगे, परन्तु उनकी मनमें यह चिन्ता लग रही थी कि पाण्डवगण ह्रदकी समीप आ पहुंचे अब किस प्रकारसे युद्ध होगा? और पाण्डवगण दुर्य्योधनका अनु-

सन्धानही कैसे पावेंगे? और अनुसन्धान पानेसे राजा दुर्य्योधन कैसे परित्राण पावेंगे?

इति २२ अध्याय।

हे महाराज! इतनेमें पाण्डवगण उस ह्रदके कूल पर उपस्थित हुए। तब युधिष्ठिर द्वैपायनह्रदको दुर्य्योधनकी माया प्रभावसे स्तम्भित देखके वासुदेवसे बोले, हे कृष्ण! वह देखो दुर्य्योधन ह्रदमें अवस्थान करता है, मनुष्यसे उसको इस घड़ी कुछभी भय नहीं है। जो होय हम इस मायावीको कदाच जीवित परित्याग न करेंगे। इन्द्रभी उनकी सहायता करें तौभी इनको संग्राममें निहत अवलोकन करना।

वासुदेव बोले, महाराज! आप मायाबलसे उस मायावीकी माया विनष्ट कीजिये। उपायकी द्वारा कार्य्यसाधन कीजिये। उपायही सबसे बलवान है, पूर्वमें उपाय द्वाराही लोग कृतकार्य्य होते गये हैं। अनन्तर युधिष्ठिर ईषद् हास्य करके बोले, हे कुरुराज! तुम अपना और समस्त क्षत्रियोंका वंश विनष्ट करके अपना जीवन रक्षाके लिये क्यों जलमें प्रविष्ट हो? आज तुम्हारा वह दर्प और अभिमान कहां गया? सबही तुमको वीर कहते पर आज वह वृथा हुआ। क्षत्रियविशेष कौरवकुलमें जन्म ले कर युद्धसे भीत होय पलायन करना अति अकर्तव्य। असाधु लोगही युद्धसे पलायन करते हैं, क्षत्रियका यह धर्म नहीं है। तुम समरसागर उत्तीर्ण हुए विना जीविताशा करके क्यों कुलकलङ्क कहलाते हो? भ्राता, पुत्र, वयस्य, गुरुजन और बंधुबान्धवका नाश कराके अब ह्रदमें वास करना क्या कर्तव्य है? हे दुर्बुद्धे! तुम अपनेको वीर बताते थे, सो निरर्थक, प्राणान्त होनेपरभी

वीरपुरुष शत्रुदर्शनसे पलायन नहीं करते। हे मूढ़! तुमने क्या विचारा है? सो कहो, और शङ्का परित्याग पूर्व्वक जलसे उत्थित होय युद्ध करो। तुम मोहवश होय जो पाप किया उसका अब फल भोग करो। अब तुम्हारा वह पौरुष, वह क्षत्रियाभिमान, वह विक्रम, वह तर्जन गर्जन और वह अस्त्रशिक्षा कहां गई? अब तुम शीघ्र गात्रोत्थान पूर्व्वक युद्ध करके जय लाभ पूर्व्वक पृथिवी भोग करो, अथवा हम लोगके हाथसे निहत होके भूतलशायी हो।

हे महाराज! अनन्तर दुर्य्योधन जलके भीतरसे युधिष्ठिरको कहने लगा, महाराज! प्राणीगणके अन्तःकरणमें भयसञ्चार होना आश्चर्य्य नहीं है, परंतु हमने प्राणभयसे पलायन नहीं किया है। संग्रामस्थलमें हमारा रथ और तूणीर विनष्ट और समस्त सैन्य औ पृष्ठरक्षकके निहत होनेसे हम एकाकी अत्यन्त परिश्रान्त हो कर विश्रामार्थ ह्रदमें प्रविष्ट हुए थे। प्राणभय अथवा दुःखसे यह कार्य्य नहीं किया है। हे कुन्तीनन्दन! तुम कोई क्षण विश्राम करो हम शीघ्रही तुम लोगोंसे संग्राम करेंगे।

युधिष्ठिर बोले, हे कुरुराज! हम लोगने श्रमापनोदन किया है, अब तुम ह्रदसे उत्थित होय युद्ध द्वारा जय लाभ करके राज्यभोग करो, अथवा हम लोगके हाथसे निहत होय, स्वर्गगमन करो। दुर्य्योधन बोला, हे धर्मराज! हम जिनके लिये राज्याभिलाष करते थे, हमारे वे सब भ्राता परलोक गये और पृथिवी क्षत्रियहीन हुई तो अब विधवाके समान पृथिवी भोगनेका अभिलाष हमको नहीं है, हम अभीभी तुमको पराजय कर सकते हैं, परंतु भीष्म द्रोण और कर्णके निहत होनेसे अब युद्ध करनेकी मेरी इच्छा नहीं है इस लिये हस्त्यश्वशून्य और बंधुबान्धवविहीन, पृथिवी तुम्हो

भोग करो। कौन राजा सहायहीन होके राज्य शासनकी वासना करता है? हमको तो जीवनधारणकी अभिलाषभी नहीं है। हम मृगचर्म परिधान पूर्वक वनमें गमन करेंगे, अब राज्यलाभकी हमको स्पृहाभी नहीं है। दुर्य्योधनका करुण वाक्य सुन कर युधिष्ठिर बोले, हे दुर्य्योधन! तुम परिताप मत करो। तुम्हारे ऐसे आर्त्तप्रलाप पर मेरे मनमें कुछभी दया न होती है। अब तुम कितनाभी राज्यदानमें सम्मत हो परंतु हम तुम्हारा प्रदत्त राज्य शासन करनेको असम्मत हैं क्षत्रियोंको प्रतिग्रह करना अधर्म है इससे तुम समस्त पृथिवी दान करो तौभी अधर्माचरण पूर्वक ग्रहण नहीं करेंगे। हम तुमको युद्धमें पराजय करके इस पृथिवीको भोग करेंगे, हे दुर्य्योधन! पूर्वमें हमने कुलरक्षाके लिये धर्मकी राहसे राज्यके प्रार्थनाकी थी, उस समय क्यों नहीं प्रदान किया? तुम पहिले वासुदेवका प्रत्याख्यान करके अब क्यों राज्य दान करनेको अभिलाषी हो? हा! तुम क्याही मूर्ख हो! कौन राजा शत्रुसे आक्रान्त होके राज्य दानकी इच्छा करता है? विशेष अब इस राज्यको बलपूर्वक ग्रहण अथवा प्रदान करनेकी तुम्हारी क्षमता नहीं है, तब तुम कैसे हमको दान करोगे? हे दुर्य्योधन! पहिले तुम सूचीके अग्र परिमित भूमी प्रदान करनेको सम्मत न थे, अब कैसे समस्त पृथिवी दान करते हो? हे कुलपांशन! अब तुम राज्य प्रदान करनेको अभिलाषी होगे तौभी हम तुम्हारे प्राणकी रक्षा नहीं करेंगे क्यों कि तुम और हम दोनो जनके जीवित रहनेहीसे जयपराजयका लोग सन्देह करेंगे हे दुर्बुद्धे! अब तुम्हारा जीवन हमारे अधीन है, पूर्वमें तुमने गृहदाह, विषप्रयोग, द्रौपदीका केशाकर्षण, राज्यापहरण और कटुवाक्य प्रयोग पूर्वक बारंबार हम लोगोंको कष्ट दिया था

उसी कारणोंसे अब तुम निश्चयही विनष्ट होगे, अब तुम जलसे उत्थित होय संग्राम करो। हे महाराज! अनन्तर अन्यान्य पाण्डवगणभी दुर्य्योधनके प्रति वैसही वाक्य प्रयोग करने लगे।

इति २१ अध्याय।

गदायुद्ध पर्व्वाध्याय।

धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय! क्रोधपरायण दुर्य्योधनने उस समय शत्रुगणसे तिरस्कृत होय क्या किया? सो कहो।

सञ्जय बोले, महाराज! दुर्य्योधन पाण्डवगणका तिरस्कार वाक्य श्रवण करके बारंबार दीर्घनिश्वास परित्याग और बाहुद्वय कम्पन करते जलसे बहिर्गत हुए और युद्ध करनेका निश्चय करके बोले, हे युधिष्ठिर! तुम्हारे बंधुबान्धव, रथ और बाहन सबही विद्यमान हैं परंतु हम एकाकी रथवाहन विहीन अनेक रथीगणके परिवेष्टन करनेसे कैसे युद्ध करेंगे? इससे तुम लोग एक एक करके युद्ध करो। क्यों कि रथवाहन और वर्मविहीन, विपन्न, क्षतविक्षत और परिश्रान्त एक पुरुषसे बहु वीरको युद्ध करना उचित नहीं है। हे धर्म-राज! इस समय तुम लोगमें किसीको देखकरभी हमको भय नहीं होता है। हम एकाकी तुम सबहीको निवारण करेंगे, हे पाण्डवगण! क्षण भर सुस्थिर हो हम विरथ और शस्त्रहीन हो करभी प्रभात सूर्य्यके सदृश किरणजाल विस्तार करके जैसे नक्षत्रगणको विनाश करते हैं, वैसही तुम लोग सबहीको विनाश करेङ्गे। आज समस्त बंधुबान्धवगणको ऋण परिशोध करेंगे। यह कहके दुर्य्योधन निरस्त हुए।

अनन्तर युधिष्ठिर बोले, हे दुर्य्योधन! बड़े भाग्य जो तुम क्षत्रियधर्म जान्यो और युद्धकी वासना कियो। इष्ट अभीष्ट आयुध ग्रहण पूर्वक हम लोगोंमें जिस वीरसे इच्छा होय युद्ध करो। हम कहते हैं कि हम लोगोंमें तुम एक जनको विनाश कर सको तो समस्त राज्य तुम्हारा होगा।

यह सुनके दुर्य्योधन बोला, यदि हमको एक एक जनसे युद्ध करना होय तो तुम लोगोंमें जो सबसे अधिक बलशाली होगा उसीसे युद्ध करेंगे। और आयुध गदाही मनोनीत किया, अब तुम लोगोंमे जिसकी इच्छा हो वही हमारे संमुख हो, गदा प्रभावसे हम तुमको भ्रातृ और सैन्यगणकी सहित पराजय करेंगे। यह कहते हुए, सलिलराशि विक्षोभित करते प्रचण्ड मारतण्डकी समान ह्रदसे उत्थित होय राजा दुर्य्योधन बोले, हे पाण्डवगण! तुम लोग जो उपहास करते हो, शीघ्रही इसका फल लाभ करोगे। हम तुम लोगोंके सहित पाञ्चालगणको यमालय प्रेरण करेंगे। हे महाराज! सलिलसिक्तकलेवर दुर्य्योधन यह कहके गदा हस्तमें लिये ह्रदकी कूल पर खड़े हो गये।

अनन्तर युधिष्ठिर बोले, हे दुर्य्योधन! तुम कहते हो कि एक जनसे बहुतर वीरका युद्ध होना अन्याय है, तो जब बहु संख्यक महारथने एकत्र होय अभिमन्युको बध किया था तब तुम्हारा यह ज्ञान कहां था? क्षत्रियधर्म अति क्रूर है, इस में दयाका लेशभी नहीं है नहीं तो तुम लोग सबही धर्मज्ञ और वीरपुरुष हो कर किस प्रकारसे अभिमन्युका बध किया? विपत्कालमें सबही धर्मचिन्ता करते हैं, परंतु सम्पद्में स्वर्गद्वार रुद्ध दिखलाई देता है। जो होय अब तुमको जो वस्तुका अभाव होय सो ग्रहण करो। पञ्चपाण्डवमें जिससे तुम्हारी रुचि होय युद्ध करो, अब जीवन रक्षा

भिन्न और तुम्हारा हितसाधन करना होगा? सो निर्देश करो!

हे महाराज! दुर्य्योधन राजा युधिष्ठिरसे सुवर्णमय और कनकमण्डित शिरस्त्राण ग्रहण और धारण करके गदा ग्रहण पूर्वक बोले, हे वीरगण अब तुम लोगोंसे एक जन जिसकी इच्छा हो हमसे युद्ध करो, आज हम क्रम क्रमसे तुम लोग सबहीको विनाश करके वैरानल निर्वाण करेंगे।

इति ३२ अध्याय।

हे महाराज! दुर्य्योधनका तर्जन गर्जन देख महाबाहु वासुदेव क्रोधाविष्ट होय युधिष्ठिरसे बोले, महाराज! आप कौन साहस पर दुर्य्योधनसे बोला कि पञ्चपाण्डवमें जिससे अभिरुचि है युद्ध करो। वह दुरात्मा आप, नकुल, सहदेव अथवा अर्जुनको युद्धार्थ वरण करे तो आपको क्या दुर्दशा होगी? आपलोग कोईभी उससे गदायुद्ध करनेको समर्थ नही हैं। दुर्य्योधनने भीमसेनके बधार्थ त्रयोदश वर्ष लौहमय पुरुषसे व्यायाम किया है तो अब कैसे हम लोगका कार्य्य सम्पन्न होगा? आप कृपापरवश हो कर अति साहसका कार्य्य कर गये हैं।

हम लोगोंमें भीम छोड़के उससे कोई युद्ध करनेवाला नही है। भीमनेभी उसके तुल्य गदायुद्धका अभ्यास नही किया है, इससे निश्चय होता है कि पूर्वमें शकुनिसे जैसा हुआ था अब पुनर्वार द्यूतक्रीड़ा आरम्भ हुआ। भीमसेन बलवान और पराक्रमशाली हैं और दुर्य्योधन गदा युद्धमें कृती है। बलवान् और कृतीके बीच कृतीही श्रेष्ठ है। आप ऐसे शत्रुको हम लोगके मङ्गल पथमें निवेशित करके विषम

सङ्कटमें पड़े। और हम लोगोंकोभी विपत्सागरमें निपातित किया। दुर्य्योधनको गदायुद्धमें पराजय करनेवाला कोई नहीं है। इस कारण उससे न्यायानुसार युद्ध करनेमें क्या भीम और क्या दूसरा कोईभी उसको पराजय नहीं कर सकेगा। जबकि भीमहीकी जैलाभमें संशय है तो आपने ऐसी बात कौन साहसपर कहा? इससे निश्चय होता है कि पाण्डवगणको कभी राज्यभोग न होगा। विधाताने उनके लिये चिरकाल वनवास वा भिक्षाव्रत निर्माण किया है।

हे महाराज! अनन्तर भीम बोले, हे मधुसूदन! तुम कुछ विषाद मत करो आज हम निश्चयही दुर्य्योधनको विनाश करके वैरानल निर्वाण करेंगे। दुर्य्योधनके गदासे हमारा गदा साढ़ेगुण गुरुतर है। हम शीघ्रही उससे युद्ध करेंगे। यह सुन वासुदेव पुलकित होय भीमकी प्रशंसा करके बोले, हे महावीर। धर्मराज तुम्हाराही बाहुबलसे शत्रुविहीन होकर अपनी राजलक्ष्मी लाभ करेंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं है। पापपरायण दुर्य्योधन तुम्हारेही हाथसे विनष्ट होगा। तुम शीघ्रही उसका ऊरुद्वय भग्न करके आत्मप्रतिज्ञा प्रतिपालन करना। परंतु वह दुरात्मा अति बलवान् और बुद्धिमान् है अति यत्नसे युद्ध करना। अनन्तर समस्त वीरगण वारंवार भीमकी प्रशंसा करने लगे, यह सुन भीमसेन महाआस्फालन करने लगे। अनन्तर भीमसेन गदा उत्तोलन पूर्वक दुर्य्योधनको युद्धार्थ आह्वान करने लगे। महाबाहु दुर्य्योधनभी सिंहके समान समरक्षेत्रमें उपस्थित हुए। दुर्य्योधनको गदा उत्तोलन करते देख भीमसेन बोले, हे दुर्य्योधन! राजा धृतराष्ट्र और तुम लोगोंने हस्तिनापुरमें हम लोगोंसे जो सब असद्व्यवहार किया था सो अब स्मरण करो, इस समय निश्चयही वही सब पापका फल भोगोगे। हे कुलनाशक

तुम्हारेही निमित्त पितामह भीष्मदेव निहत होय शरशय्या पर शयान हैं और तुम्हारेही कारण द्रोण कर्ण और शल्य प्रभृति निहत हुए, अब तुम एकाकी अवशिष्ट रह गये हो सो आज गदा प्रहारसे निश्चयही तुमको यमालय प्रेरण करेंगे, आज पाण्डवगणका क्लेश, तुम्हारा दर्प और विपुल राज्यलालसा दूरीभूत हो जागो।

कुरुराज बोले, हे भीम! अधिक वागाडम्बरका प्रयोजन नहीं, शीघ्र हमसे संग्राम करो। न्यायानुसारसे इन्द्रभी हमको गदायुद्धमें पराजय नहीं कर सकते हैं। तुम सलिलविहीन शरत्कालीन मेघके समान वृथा गर्जन मत करो।

इति ३४ अध्याय।

हे महाराज! उसी समय तालध्वज बलदेव शिष्यद्वयका संग्रामवृत्तान्त जान कर वहां उपस्थित हुए। पाण्डवगण उनको देख कर अति प्रीतिसे केशवके सहित उनका प्रत्युद्गमन पूर्वक यथाविधिसे अर्चना करके बोले, महाबाहो! शिष्य-द्वयका युद्धकौशल अवलोकन कीजिये, तब बलदेव बोले, हे वीरगण आज व्यालीस दिन हुए हम तीर्थयात्राके लिये निर्गत हुए, यहां शिष्यद्वयके गदायुद्धका वृत्तान्त श्रवण करके वह दर्शनके लिये यहां आ निकले, अनन्तर दुर्य्योधन प्रभृति समस्त क्षत्रियगणका यथाविध पूजा ग्रहण और उनके आग्रहसे नीलाम्बरधारी धवलकाय बलदेव परमप्रीतिमनसे भूपाल-गणके मध्यमे उपवेशन पूर्वक नभोमण्डलमें नक्षत्रगणपरि-वृत निशाकरके समान शोभित होने लगे। उसी समय दुर्य्यो-धन और भीमसेनका घोर गदायुद्ध आरम्भ हुआ।

इति ३५ अध्याय।

जनमेजय बोले, हे ब्रह्मन्! पूर्वमें बलदेवने कहा था, कि हम पाण्डव अथवा कौरवगणोंमें किसीकोभी सहायता नहीं करेंगे, तो अब क्यों वहां उपस्थित हुए? और किस प्रकारसे युद्ध दर्शन किया? सो कहिये।

वैशम्पायन बोले, महाराज! पाण्डवगणने विराट नगरसे वासुदेवको सन्धिस्थापनके लिये हस्तिनापुर प्रेरण किया था, परंतु धृतराष्ट्रकी असम्मति होनेसे पाण्डवगणने युद्धार्थ यात्रा किया, उस समय बलरामने कौरवगणकी सहायताके लिये कृष्णको कहा परंतु कृष्णने न माना तब बलरामने रोषपरवश होय यादवगणके सहित सरस्वती तीर्थको प्रस्थान किया, इधर कृतवर्मा दुर्य्योधनका और वासुदेव और सात्यकिने पाण्डवगणका पक्ष अवलम्बन किया। इधर रोहिणीनन्दन बलराम सारस्वततीर्थ पर्य्यटन और भूरि भूरि दान करते कुरुक्षेत्रमें आ गये।

जनमेजय बोले, हे तपोधन! आप सारस्वततीर्थोंका गुण, उत्पत्ति और कर्म कीर्तन कीजिये। वैशम्पायन बोले, महाराज! पूर्वमें भगवान् तारापति चन्द्रने यक्ष्मारोगसे आक्रान्त होय जिस तीर्थमें अवगाहन करके मुक्ति लाभ किया था, बलरामने पहिले उसी प्रभास तीर्थमें गमन किया। चन्द्रको प्रभासित किया, इस कारण उसका नाम प्रभास तीर्थ हुआ।

ज०। शशाङ्कको कैसे यक्ष्मारोग हुआ। और कैसे शापमुक्त हुए। सो कहिये।

वै०। पूर्वमें दक्षप्रजापतिने अपनी सताइस कन्या चन्द्रमाको दानकी थी। वे सताइसो नक्षत्र हैं। उनमें रोहणी सर्वाङ्ग सुन्दरी थी, चन्द्रमा उसी पर अनुरक्त थे, यह देख अन्यान्य दक्षकन्यागण दुःखित होय दक्षके निकट जाय बोलीं हे

पितः! हम लोग पर चन्द्रका कुछभी अनुराग नहीं है, वह निरन्तर रोहिणीके साथ सुखसम्भोग करते हैं, इस लिये अब हम लोग तपोनुष्ठान करेङ्गे। यह सुन महाराज दक्ष चन्द्रके निकट जाय बोले वत्स! तुम पत्नीगणके प्रति तुल्य प्रीति प्रदर्शन करो नही तो महा अधर्म होगा। इसी प्रकार अनेक वार दक्षने चन्द्रको उपदेश दिया, परंतु चन्द्रने उस पर कुछ ध्यान न दिया तब दक्षप्रजापति क्रोधाविष्ट होय यक्ष्माकी सृष्टि करने लगे। अनन्तर वह यक्ष्मा चन्द्रके शरीरमें प्रविष्ट हुआ, तब तो चन्द्र दिन दिन क्षीण होने लगा। अनन्तर चन्द्रने उस रोगसे मुक्ति लाभके लिये विविध यज्ञानुष्ठान किया। परंतु रोग मुक्त न हुए। हे महाराज! इसी प्रकारसे चन्द्रके दिन दिन क्षीण होनेसे औषधी सब निस्तेज, आस्वाद-शून्य, और उच्छिन्न होने लगी। इस कारण लोक सब क्षश और संशयापन्न हो गये।

अनन्तर देवतागण चन्द्रका क्षय वृत्तान्त श्रवण करके प्रजापति दक्षके निकट जाय बोले, हे भगवन्! आप प्रसन्न होके चन्द्रको शापसे मुक्त करो। यह सुन दक्ष बोले, हमने जो कहा है सो अन्यथा न होगा, परंतु एक उपाय ठहरा देते हैं कि चन्द्र सारस्वत तीर्थमें अवगाहन करके पत्नीगणके प्रतिनियत तुल्यस्नेह प्रदर्शन करें तो चन्द्र पुनर्वार परि-वर्द्धित होंगे। इसी प्रकारसे प्रतिमासमें १५ दिन नित्य नित्य क्षय और १५ दिन नित्य नित्य वृद्धि हुआ करेगी सो अब चन्द्र, पश्चिम समुद्रमें गमन पूर्वक सरस्वती और सागरके संगम पर महादेवकी आराधना करें तो पूर्वरूपको प्राप्त होंगे। अनन्तर चन्द्रमा दक्षाज्ञा प्रतिपालन पूर्वक पूर्वरूप हो गये हे महाराज! इसीसे प्रभासतीर्थ सर्वश्रेष्ठ ख्यात हुआ सो आद्योपान्त कीर्तन किया। अनन्तर महाबल बलरामने चम-

शोङ्गेद तीर्थको गमन किया। वहां स्नान, दान और रात्रि अतिवाहित करके वहांसे उदपानतीर्थमें गये, हे महाराज! सरस्वती इसी स्थानमें अन्तःसलिला होकेभी सिद्धगण महान् श्रेयोलाभ करते हैं और औषधि और भूमिकी स्निग्धता अवलोकन करनेसे सरस्वती मानो प्रवाहित दिखाती है।

इति ३६ अध्याय।

—०—

हे महाराज! महायुध बलदेव महर्षि त्रितके उदपान तीर्थमें स्नान और विविध दान करके अत्यन्त परितुष्ट हुए। हे महाराज! पूर्वयुगमें महातपा एकत, द्वित और त्रित नामके तीन सहोदर थे। वे तीनो प्रजापति थे। वे वेदा-ध्ययन और तपोबलसे ब्रह्मलोक जय किये थे। उनके पिता भगवान् गौतम पुत्रगणके गुणसे परमप्रीत हुए थे। गौतमके परलोक गमन करनेसे उनके यजमानगण उनके पुत्रकी पूजा करने लगे। उनमे महात्मा त्रित सबसे श्रेष्ठ थे। महर्षि-गण गौतमके समान त्रितको पूजा करने लगे। अनन्तर एक समय तीनोंभ्राता किसी यजमानका यज्ञ समाधान कराके असंख्य पशु प्रतिग्रह पूर्वक गमन करने लगे।

हे महाराज! गौतमतनयगण पथमें गमन करते थे, इसमें रजनी उपस्थित हुई उसी समय एक वृक उनके समीप उपस्थित हुआ। उस पथमें थोड़े दूर सरस्वतीके तट पर एक वृहत् कूप था, महात्मा त्रित वृकको देख भीत होय पला-यन करते उस भयङ्कर कूपमें निपतित हुए। इधर उभय भ्राता प्रभूत पशु अवलोकन करके लोभसे परवश होय त्रित का आर्तनाद श्रवण करकेभी उनको परित्याग पूर्वक वहांसे प्रस्थित

हुए। महात्मा त्रित भ्रातृगणसे परित्यक्त और तृणलता परिवेष्टित धूलिसमाच्छन्न, निर्जल कूपमें निपतित होय चिन्ता करने लगे कि हम इस कूपमें रहके कैसे सोमरस पान करेङ्गे। यह चिन्ता करते करते देखा कि उस कूपमें एक लता लम्बमान है। अनन्तर कूप खनन पूर्वक जल उत्तोलन और अग्नि स्थापन किया और अपनेको होता और उस लम्बमान लताको सोमलता और प्रस्तरखण्डको शर्करा और जलको आज्य कल्पना करके वेदविधिसे यज्ञानुष्ठान करनेको प्रवृत्त हुए। अनन्तर देवगणका भागकल्पना करके उनको तुमुल शब्दसे आह्वान करने लगे। उनका शब्द स्वर्गमें प्रविष्ट हुआ। यह सुन गुरु वृहस्पतिने देवतागणसे कहा कि महातपा त्रितने यज्ञ आरम्भ किया है। वह क्रुद्ध होके अन्यान्य देवगणको सृष्टि कर सकते हैं, इससे हम लोगको शीघ्र गमन करना चाहिये।

अनन्तर देवगण वहां उपस्थित होय यज्ञभाग ग्रहण पूर्वक अभिलाषानुरूप वरदान करनेको उपस्थित हुए। तब त्रित बोले, हे देवगण! हमको इस कूपसे उद्धार करो और जो कोई यह कूपोदक स्पर्श करेङ्गे वे आप लोगके वरसे सोमरसपायीकी सद्गति लाभ करें। देवगणने तथास्तु कहके वर प्रदान किया। तत्क्षणात् कूपसे तरङ्गमाला संकुल सरस्वती नदीका आविर्भाव हुआ। महात्मा त्रितने उसी नदीके प्रभावसे उत्थित होके देवगणको अभिवादन किया। तब देवगणने प्रस्थान किया। और त्रित रोषाविष्ट गृहमें उपस्थित होय भ्रातृद्वयसे बोले कि तुमलोग पशुलोभसे हमको परित्याग करके पलायित हुए थे, इस कारण हमारे शापसे वृकरूप धारण करो और तुम्हारे सन्तान भल्लूक और वानर होंगे वे तापसद्वय तत्क्षणात् वृकरूपी हो गये। हे महाराज! अमित

पराक्रम बलरामने उसी पुण्यतीर्थमें कूपदर्शन और सलिल-स्पर्श करके विविध दान दिया।

इति ३७ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर महात्मा बलदेव विनशन तीर्थमें उपस्थित हुए। वहां सरस्वती शूद्र और आभीरगणके प्रति विद्वेष बुद्धिके कारण अन्तर्हित हुई है इसीसे उस तीर्थको विनशन कहते हैं। वहां स्नान करके सुभूमिक तीर्थको गये।

बलदेवने वहां स्नान, दान और अप्सरागणका विविध गीतवाद्य श्रवण और देव, गन्धर्व और राक्षसगणकी छाया दर्शन करके गन्धर्व तीर्थको गमन किया वहांसे गर्गस्रोत तीर्थको प्रस्थान किया। इसी स्थानमें आत्मतत्त्वज्ञ वृद्ध गर्गको ज्ञान, कालकी गति औ ज्योतिःपदार्थ सबका व्यतिक्रम और शुभाशुभ निमित्तका ज्ञान हुआ था, यहां तीर्थविधि सम्पन्न करके शङ्खतीर्थको गये, वहां सरस्वतीके तीर सुमेरुके समान उन्नत महाश्वेत नाम एक वृक्ष है उसको निरीक्षण करके वहांसे पवित्र द्वैतवनमें उपस्थित हुए। वहां स्नान दान करके सरस्वतीके दक्षिण तीरमें गमन करने लगे। अनन्तर नागधन्वा नामक तीर्थमें उपस्थित हुए। यहांही नागराज वासुकीका स्थान है, वहां असंख्य सर्पसे समाकीर्ण हो करभी कुछ सर्पभय नहीं है। यहां स्नानदान करके पूर्वदिशाको गमन करने लगे। वहां विख्यात शत सहस्र तीर्थ स्नान और धन दान करके बलदेव गमन करने लगे और महानदी सरस्वतीको वहांसे पूर्वाभिमुख गमन करते देखके आश्चर्य हो गये।

ज०। सरस्वती नदी वहांसे पूर्वाभिमुखीन क्यों हुई,

और महात्मा बलदेव आश्चर्य्य क्यों हुए सो कहिये।

वै०। सत्ययुगमें नैमिषारण्यमें द्वादश वर्ष व्यापी महा-यज्ञ आरम्भ करके असंख्य महर्षिगण यज्ञ समापन करके तीर्थ दर्शनार्थ सरस्वतीके दक्षिण कूल पर उपस्थित हुए। इतने ऋषिगण थे, कि दक्षिण तीरके तीर्थ सब नगर सदृश होगये। ब्राह्मणगणने तीर्थवासाभिलाषसे समन्तपंचक की शेष सीमा पर्य्यन्त आश्रय किया। उस समय सरस्वती की अति चमत्कार शोभा हुईथी। असंख्य ऋषिगण के आगमन से वास स्थानका अभाव हुआ तब तो मुनिगण यज्ञोपवीत परिमाण भूमि लेकर तीर्थ निर्माण पूर्वक होमादि विविध कार्य्यानुष्ठान करने लगे इस अल्प प्रमाण स्थानमें कैसे समस्त कार्य्यका अनुष्ठान हो सकेगा? यह चिन्ता करने लगे। हे महाराज! उसी समय सरस्वतीने मुनिगणको चिन्ता-कुलित देख उनके कार्य्यसाधनार्थ वहां गमन और दर्शनप्रदान किया। इसी प्रकारसे सरस्वती ऋषिगणका आगमन चरितार्थ करके पुनर्वार पश्चिमाभिमुख निर्गत हो गई। सरस्वतीके आगमनसे वह स्थान असंख्य जलस्थान हुआ।

हे महाराज! वहां बहुतर जलस्थान और सरस्वतीका पूर्वाभिमुख गमन देख कर बलराम विस्मयान्वित हुए थे। उसी तीर्थमें बलदेवने यथाविधि स्नान और दान करके वहांसे सप्तसारस्वत तीर्थकी यात्रा किया। मङ्कणक नाम करके एक सिद्धने यहां तपोनुष्ठान किया था।

इति ३८ अध्याय।

हे महाराज! सरस्वतीने सप्तशाखा होके जगत्को परिव्याप्त कर लिया है। तेजस्विगणने, जहां सरस्वतीको आह्वान किया है वह वहांही आविर्भूत होगई हैं। इस

लिये उनका सात नाम विख्यात है। पुष्कर तीर्थमें पितामह ब्रह्माने महायज्ञ करके प्रीत मनसे सरस्वतीको स्मरण किया तो वह वहां प्रगट होके सुप्रभा नामसे ख्यात हुई। नैमिषारण्यमें महर्षिगणने यज्ञकालमें सरस्वतीको स्मरण किया तो वहां प्रगट होय काञ्चनाक्षी नामसे ख्यात हुई। गयनाम भूपतिके गयतीर्थमें सरस्वतीको मुनिगणने आह्वान किया तो वहां विशाला नाम हुआ। महर्षि औद्दाल-किने कोशलाके उत्तरभागमें यज्ञ किया था, वहां सरस्वती आहूत होके मनोरमा नाम धारण किया। कुरुराजने कुरु-क्षेत्रमें यज्ञ किया था वहां वशिष्ठने सरस्वतीको आह्वान किया था वहां ओघवती नाम पड़ा। यज्ञनिरत दक्षकर्तृक आमीत होके गङ्गाद्वारमें सुरेणुनामसे ख्यात हुई और हिमालयमें विरिञ्चिके कार्य्यसाधनार्थ विमलोदा नाम ख्यात हुआ और जहां वह सात नदी एकत्र मिलित हुई हैं, उसका नाम सप्तसारस्वततीर्थ पड़ा। हे महाराज! अब महात्मा मङ्कणकका वृत्तान्त श्रवण कीजिये।

एक समय महर्षि मङ्कणक सरस्वती जलमें अवगाहन करते थे, उसी समय एक सर्वाङ्गसुन्दरी नारी दिगम्बरी होके सरस्वतीमें स्नान करती थी, उसको देखतेही महर्षिका रेत-स्खलित हुआ। उस रेतको महर्षिने एक कुम्भमें स्थापन किया। तब वह रेत सप्तधा विभक्त हुआ। वायुबल, वायुवेग, वायुहा, वायुमण्डल, वायुज्वाल, वायुरेता और वायुचक्र नामके सप्तऋषिने उस रेतके प्रभावसे उस कलशमें जन्म लिया।

हे महाराज! मङ्कणकका एक विचित्र वृत्तान्त और श्रवण करो कि एक समय कुशाग्रद्वारा महर्षिका हस्त क्षत हुआ था। महर्षिने उस क्षत स्थानसे शाकरस निःसृत होते देखके

महा आह्लादसे नृत्य करने लगे। उनके नृत्यसे स्थावरजङ्गमा-
त्मक समस्त वस्तु विमोहित हो उठी। यह देख महादेव
उनके निकट जाय बोले, हे महर्षे! तुम शाकरस निकल
नेसे विस्मित क्यों होते हो? भगवान शूलपाणिने गर्व
कहके नख द्वारा अपने अङ्गुष्ठ पर आघात किया, तो तुषार
धवल भस्म निर्गत होने लगा। महर्षि यह देख लज्जित
होके उनकी स्तुति करने लगे। अनन्तर महादेव उनका वाक्य
श्रवण करके प्रसन्न होय बोले, हे ब्रह्मन्! हमारे प्रसादसे
तुम्हारी तपस्या सहस्रगुण परिवर्द्धित होगी। हम अब
तुम्हारे साथ निरन्तर इस आश्रममें अवस्थान करेंगे। जो
कोई इस सप्तसार सरस्वतीमें मेरी अर्चना करेगा उसको
उभय लोकमें कोई वस्तुभी दुर्लभ न रहेगी। हे महाराज!
पवनके औरससे सुकन्याके गर्भमें उत्पन्न महर्षि मङ्कणक का
चरित्र आद्योपान्त कीर्तन किया।

इति ३८ अध्याय।

हे महाराज! महात्मा बलरामने सप्तसारस्वत तीर्थमें
स्नान, दान और एकरात्रि वास करके औशनस तीर्थको
गमन किया। उस तीर्थको कपालमोचनभी कहते हैं। पहले
रामने एक राक्षसका मस्तक छेदन कर डाला था, वही छिन्न
मस्तक महर्षि महोदरकी जंघासे संलग्न हो गया था। इसी
तीर्थमें छिन्नमस्तक मुक्त हुआ था। इसी तीर्थमें दैत्यगुरु
शुक्रने तपोनुष्ठान किया था। इसी स्थानमें दानवगणका
संग्राम विषय चिन्ता करके समस्त नीति प्रादुर्भूत हुई थी।
उसी औशनस तीर्थमें बलदेवने विधिपूर्वक स्नानदान किया।
हे महाराज! इसी तीर्थमें कहा भगवान् ब्रह्माने लोकालोक

पर्वत निर्माण, और उग्रतपा आर्ष्टिषेणने सिद्धि लाभ और सिंधुद्वीप राजर्षि देवापि और विश्वामित्रने ब्राह्मणत्व लाभ किया था, वहां बलराम उपस्थित हुए।

इति ४० अध्याय।

वै०। सत्ययुगमें आर्ष्टिषेण नाम एक ब्राह्मणने गुरुकुलमें अवस्थान पूर्वक विद्याभ्यास किया। परंतु पारदर्शी न हुए, इससे दुःखी होय उसी सरस्वतीके तीर पर तपस्या करके तपोबलसे विद्वान्, वेदज्ञ और सिद्ध हो कर इस तीर्थमें यह तीन वर दे कर स्वर्गारोहण किया। इस तीर्थके अवगाहन करनेवालेको सम्पूर्ण अश्वमेधयज्ञका फल मिलेगा। दूसरा आजसे इस तीर्थमें हिंस्रजन्तुका भय न रहेगा और तीसरे आजसे इस स्थानमें लोग अल्पकालहीमें अधिक फल लाभ करेंगे।

हे महाराज! प्रतापशाली सिंधुद्वीप, राजर्षि देवापि और विश्वामित्रने तपोबल प्रभावसे इसी स्थानमें ब्राह्मणत्व लाभ किया था। पूर्वमें महाराज गाधिके पुत्र विश्वामित्र राज्यप्राप्त हो कर ससैन्य भगवान् वशिष्ठके आश्रमके निकट उपस्थित हुए। सैन्यगणसे वन भग्न होने लगा तब वशिष्ठ क्रोधाविष्ट होय अपनी होमधेनुसे असंख्य घोरदर्शन शबर-गणकी सृष्टिकी। शबरगणने विश्वामित्रके सैन्यको पराजय कर दिया, तब विश्वामित्रने चिन्ता करके यही निश्चय किया कि तपस्याही परमधन है। यह सोच विचार सरस्वतीके तीर नियमद्वारा शरीर क्षीण करके घोर तपस्या करने लगे। अनन्तर उनके तपःप्रभावसे पितामह ब्रह्मा वहां उपस्थित होय वरदेनेको उद्यत हुए। तब विश्वामित्र बोले, भगवान्! यदि प्रसन्न हैं तो हमको ब्राह्मणत्व प्रदान कीजिये। ब्रह्माने

तथास्तु कहके उनका मनोरथ पूर्ण किया। अनन्तर बलदेवने वहांसे बकके आश्रममें प्रस्थान किया।

इति ४१ अध्याय।

हे महाराज! पूर्वमें नैमिषारण्य में यज्ञानुष्ठानके समय मुनिगणको पशुका अभाव देखके महात्मा बकने अपना पशु उनको दे कर आप राजा धृतराष्ट्रके निकट जाय पशुकी प्रार्थना कियी। धृतराष्ट्र रोषाविष्ट हो कर कई एक गैयाओंके मरनेका समाचार पाय बोले, हे ब्राह्मणाधम! तुम वही पशु ले कर प्रस्थान करो। धर्मपरायण बक धृतराष्ट्र सभामें अपमानित होय धृतराष्ट्रके विनाशार्थ सरस्वती पर अग्निप्रज्वालित करके वही मृत पशुका मांस ले कर धृतराष्ट्रकी राज्यक्षयके निमित्त होम करने लगे। हे महाराज! तब तो क्रम क्रमसे धृतराष्ट्रका राज्यक्षय होने लगा। अनन्तर राजा धृतराष्ट्रने अमात्यगणके सहित मुनिचरणतलमें जाय निपतित होके क्षमा प्रार्थना कियी। तब तो महर्षि बकने राजाको शोकार्त देख कर क्रोध सम्बरण पूर्वक प्रसन्न होके उत्पात शान्तिके निमित्त हुताशनमें आहुति प्रदान करके उससे विविध पशु ग्रहण पूर्वक नैमिषारण्यको गमन किया। राजाभी प्रसन्न होय अपने नगरमें गये।

हे महाराज! सुरगुरु बृहस्पतिने असुरगणके विनाश और सुरगणके मङ्गलसाधनार्थ यज्ञानुष्ठान पूर्वक इसी तीर्थमें मांसका होम किया था, उसी तीर्थमें बलदेवने स्नान दान किया। वहांसे यायात तीर्थको गमन किया। नहुषतनय राजा ययातिने इसी स्थानमें यज्ञ किया था। हे महाराज! महावीर बलदेव वहांसे वशिष्ठापवाह तीर्थमें गये।

इति ४२ अध्याय।

हे महाराज ! महर्षि वशिष्ठ और विश्वामित्रसे तपस्याकी लिये अत्यन्त वैरभाव उपस्थित हुआ। स्थाणुतीर्थके पूर्व स्थानमें वशिष्ठदेवका आश्रम था और उसीके पश्चिमकूल पर महर्षि विश्वामित्र अवस्थान करते थे। भूतभावन भगवान् भवानीपतिने कठोर तपोनुष्ठान पूर्वक सरस्वतीकी पूजा करके इस तीर्थको स्थापन किया था। इसीसे उसका नाम स्थाणु-तीर्थ पड़ा। देवगणने उसी तीर्थमें कार्त्तिकेयको सेनापति किया था। उसी स्थानमें एक समय विश्वामित्रने वशिष्ठका तेजःप्रभाव दर्शन करके सन्तप्त हो कर सरस्वतीको स्मरण किया। सरस्वती विश्वामित्रको उग्रस्वभाव जानके पतिपुत्र विहीना कामिनीके समान उपस्थित हुई। यह देख विश्वा-मित्र बोले, हे सरस्वति ! तुम शीघ्रही वशिष्ठको इस स्थानमें आनयन करो, हम आज उनको विनाश करेंगे। अनन्तर सर-स्वती अत्यन्त भीत और व्यथित होय वाताहत लताके समान कम्पित होने लगी। वशिष्ठकी स्वभाव और प्रभावसे उनका हितसाधन कर्तव्य जानके अपने कूलमें विश्वामित्रको जप करते देख उत्तम अवसर पाके वशिष्ठके निकट जाय सर-स्वतीने समस्त वृत्तान्त निवेदन किया। वशिष्ठ बोले, तुम कुछ चिन्ता मत करो। शीघ्रही हमको विश्वामित्रके निकट उप-नीत करो नहीं तो तुमको वह शाप प्रदान करेगा। अनन्तर सरस्वती अपने वेग प्रभावसे वशिष्ठको ले चली, तब तो वशिष्ठ सरस्वतीका स्तव करने लगे। अनन्तर सरस्वती वशिष्ठको लेजा कर बारम्बार विश्वामित्रको वशिष्ठागमन समाचार कहने लगी तब विश्वामित्र उनको उपनीत देखके उनके विनाशके लिये अस्त्र अन्वेषण करने लगे। तब सरस्वती ब्रह्महत्या भयसे भीत होय चिन्ता करने लगी कि विश्वामित्रका वाक्य रक्षा तो हो चुका। अब इसी अवसरमें वशिष्ठको ले कर प्रस्थान

करें। यह सोच विचार वशिष्ठको स्रोत प्रभावसे प्रवाहित करके पूर्वकूलमें उपनीत कर दिया। तब तो विश्वामित्रने वशिष्ठको अपवाहित और अपनेको वञ्चित देख कर क्रुद्ध होय सरस्वतीसे कहा हे सरस्वति! तूने प्रवञ्चना किया सो तुम आजसे राक्षसगणका आह्लादकर शोणित प्रवाह वहन करो। तब तो सरस्वती अभिशप्त हो कर शोणितमिश्र सलिल वहन करने लगी। उसकी यह दशा देख सबही दुःखी हुए। एक वर्षके पर सरस्वती पुनर्वार आत्मरूपको प्राप्त हुई। हे महाराज! इसी कारणसे उस तीर्थका नाम वशिष्ठापवाह हुआ।

इति ४२ अध्याय।

हे महाराज! उस तीर्थमें शोणित होनेसे राक्षसगण परमसुखसे रुधिर पान करके तृप्त होय नृत्य करने लगे। कितने काल व्यतीत होने पर कई एक तापस तीर्थ पर्य्यटन करते शोणितधारा प्रवाही सरस्वती तीर पर उपस्थित हुए। अनन्तर समस्त वृत्तान्त जान कर मुनिगणने कठोर तपोऽनुष्ठान पूर्वक पशुपतिको प्रसन्न करके सरस्वतीके शापकी शान्ती कर दिया। तब राक्षसगण सरस्वतीको पूर्ववत् प्रसन्नसलिलमय देखके मुनिगणके शरणापन्न होके कहने लगे। हे तापसगण! हम लोग धर्मसे भ्रष्ट हुए परंतु इच्छा पूर्वक पापानुष्ठान नहीं करते, जैसे कामिनीगण स्वभावसिद्ध कामपरतन्त्र होय योनिदोषकृतपापसे लिप्त होती हैं, वैसही हम लोग स्वाभाविक क्षुधासे कातर होके विविध पापानुष्ठान करते हैं।

हे द्विजगण! आप लोग उद्धार करनेको समर्थ हैं, इस लिये हम लोगका परित्राण करो। अनन्तर तापसगण

प्रसन्न हो कर उनकी मुक्ति करनेको सरस्वतीसे कहा, तब सरस्वतीने अपनी शाखा अरुणा नदीको प्रवाहित किया। राक्षस लोग उसमें स्नान और देहत्याग करके स्वर्गको गये। कितने दिन पीछे देवराज इन्द्रभी यह बात सुनके उस तीर्थमें अवगाहन पूर्वक ब्रह्महत्या पापसे मुक्त हुए थे।

ज०। देवराज इन्द्रको कैसे ब्रह्महत्या लगी थी ? सो कहिये।

वै०। एकदा दानवराज नमुचि इन्द्रभयसे भीत होय सूर्य्यकिरणमें प्रविष्ट हुआ। तब इन्द्रने उससे सख्यभाव स्थापन पूर्वक कहा। हे सखे! हम सत्य कहते हैं, दिवस अथवा रात्रि आर्द्र वा शुष्क वस्तुसे तुम्हारा प्राणसंहार नहीं करेंगे। अनन्तर एकदा नीहारसे चतुर्दिक आच्छन्न हो गया था, उसी समय देवराजने सलिलफेनसे नमुचिका शिरच्छेद कर डाला। अनन्तर वही छिन्नमस्तक देवराजके पश्चात् पश्चात् धावमान हो कर वारम्वार यही कहने लगा रे पापात्मन्! तुमने मित्रका विनाश किया। अनन्तर देवराज सन्तप्त हो कर ब्रह्माके निकट गये। ब्रह्माने कहा, हे पुरन्दर! अरुणा तीर्थ में यज्ञानुष्ठान पूर्वक स्नान करो, तब तुम्हारा समस्त पाप ध्वंस होगा। अरुणा सरस्वतीसङ्गम अति पवित्र तीर्थ है। अनन्तर देवराज इन्द्र अरुणातीर्थमें उपस्थित हुए और वहां स्नान करके ब्रह्महत्यासे मुक्त हुए, और दानवराज नमुचिका छिन्नमस्तकभी उस तीर्थमें स्नान करके उसको अक्षय लोक लाभ हुआ।

हे महाराज! बलदेवने वहां स्नानदान करके वहांसे सोमतीर्थको गमन किया। पूर्वमे यहां चन्द्रमाने यज्ञ किया था। महर्षि अत्रि उनके होता थे। उसी यज्ञके अन्तमे देवगण और असुरगणसे घोर युद्ध हुआ था। और यहांही

कार्त्तिकेय देवगणके सेनापति होके तारकासुरका संहार किया था। उस तीर्थमें जहां वटवृक्ष विराजित है वहां सेनापति कार्त्तिकेय निरन्तर अवस्थान करते हैं।

इति ४४ अध्याय।

ज०। भगवान् कार्त्तिकेयका समस्त वृत्तान्त विस्तार करके कहिये।

वै०। पूर्वकालमें अग्निमें महादेवका रेतःपात हुआ था। उसीके प्रभावसे अग्नि तेजस्वी हुए, वह अक्षयवीर्य्य धारण करनेको असमर्थ होय गङ्गाजलमें निक्षिप्त किया। भागीरथीभी तेजोमय वीर्य्य धारण करनेको असमर्थ होय सुरम्य हिमालय शरस्तम्ब पर निक्षेप कर दिया। वहां रेतःप्रभावसे कुमार उत्पन्न हुआ। कुमारके तेजसे त्रिलोक समावृत हुआ। उस समय पुत्राभिलाषिणी छः कृत्तिकागण अपूर्व कुमारको निरीक्षण करके हमारा पुत्र हमारा पुत्र कहके चीत्कार करने लगीं। तब कुमार उनका आग्रह देख के षड़ानन होकर एकही समय छओ जनका स्तन पान करने लगे। अनन्तर सुरगुरु वृहस्पतिने उनका जातकर्म्म आदि निर्वाह करके चार वेद, चतुष्पाद धनुर्वेद समस्त अस्त्र शिक्षा करा दिया और सरस्वती मूर्त्तिमती होकर उनके निकट उपस्थित रहती थी।

एकदा कार्त्तिकेय महादेवके निकट गमन करने लगे तो भगवान् त्रिलोचन, पार्वती, गङ्गा और हुताशन उनको आगमन करते देख सबही मनमे चिन्ता करने लगे, कि यह बालक पहिले हमारेही निकट आवेगा। कार्त्तिकेयने उन सबका अभिप्राय जान योगबलसे अपनी मूर्त्ति चतुर्धा विभक्त किया। तब उनका नाम कार्त्तिकेय, विशाख, शाख

और नैगमेय हुआ। उनमे चारोका रूप समान था, अनन्तर कार्तिकेय रुद्रके निकट, विशाख पार्वतीके, शाख अग्निके और नैगमेय गङ्गाके निकट गये। यह व्यापार देख सबही विस्मयापन्न हुए। अनन्तर महादेवने ब्रह्मासे कहा कि इस बालकको उपयुक्त आधिपत्य प्रदान कीजिये। अनन्तर ब्रह्माने चिन्ता करके कार्तिकेयको सेनापति पद प्रदान पूर्वक देवतानमे उनका आधिपत्य संस्थापन किया। अनन्तर ब्रह्मादि समस्त देवगण कार्तिकेयको ग्रहण करके अभिषेकार्थ हिमालयके जिस स्थानमे परम पवित्र सरस्वती प्रवाहित होती है वहां उपस्थित हुए।

इति ४५ अध्याय।

अनन्तर सुरगुरु बृहस्पति शास्त्रानुसार से उनको अभिषेक करने लगे। त्रिलोकपितामह भगवान् ब्रह्माने अति प्रीत हो कर कार्त्तिकेय को वायुवेगगामी अमितवीर्य्य नन्दिसेन लोहिताक्ष, घण्टाकर्ण और कुमुदमाली ये चार पारिषद प्रदान किया। महेश्वर ने एक पारिषद प्रदान किया और देवगण ने अजेय सैन्यगण को कार्त्तिकेय को समर्पण किया। अनन्तर समस्त देवतागण अनुचर और अस्त्र प्रदान करते गये। हे महाराज सहस्र वीर ने देवतागण की आदेशानुसार कार्तिकेयके अनुचर हो कर उन को परिवेष्टन किया।

इति ४६ अध्याय।

हे महाराज। कार्तिकेयकी अनुचरी कल्याणदायिनी मातृकागण इस चराचर त्रिलोक में परिव्याप्त हैं। वे इन्द्रके आदेशानुसार कुमार कार्त्तिकेयके निकट उपस्थित हुईं।

इसी प्रकारसे कार्त्तिकेय सेनापतिपद प्राप्त हो कर पारि-षद और मातृगणके सहित दैत्यविनाशार्थ निर्गत हुए। उनके सैन्यगण ध्वज और विविध आयुध उच्छ्रित करके ज्योतिर्मण्डलभूषित शरत्कालीन रजनीके समान शोभापाने लगी और विविध वाद्य बाजने लगी। देवगण स्तवपाठ, गन्धर्व-गणा गान और अप्सरागणाने नृत्य आरम्भ किया। अनन्तर कार्त्तिकेयने प्रसन्न हो कर देवगणको इह वर दान किया कि तुम्हारे शत्रु दानवगणको हम वध करेंगे। यह सुन देवगण अति प्रसन्न हुए। अनन्तर कार्त्तिकेय सेनासमूहसे परिवेष्टित होय देवगणके परित्राण और दैत्यगणके विनाशके लिये धाव-मान हुए। अनन्तर कार्त्तिकेय महापराक्रम प्रकाश पूर्वक अनेकानेक दैत्यगणके सहित तारकासुर और बाण दैत्यको वध करके अति आह्लादित हुए। अनन्तर दैत्यगणके निहित होनेसे सुरगण प्रसन्न होय उनकी पूजा करने लगे। दुन्दुभि और शंखध्वनि होने लगी। देवमहिलागण कुमार पर पुष्प-वृष्टि करने लगीं। हे महाराज! इसी प्रकारसे कार्त्तिकेयका अभिषेक हुआ था, सो कीर्त्तन किया। अनन्तर कार्त्तिकेयने दैत्यगणको निपातित किया इससे वह तीर्थ द्वितीय स्वर्गके समान हो गया। तब षड़ानन उस तीर्थमें अवस्थान पूर्वक देवगणको पृथक् पृथक् अधिकार प्रदान करने लगे। उस तीर्थका तैजस नाम ख्यात है। देवगणने वरुणकोभी वहांही अभिषेक किया था। महात्मा बलदेव उसी तीर्थमें अवगाहन करके अति तुष्ट हुए।

इति ४७ अध्याय।

ज०। वरुणको किस प्रकारसे सुरगणने अभिषिक्त किया। सो कहिये।

वै०। सत्ययुगके प्रारम्भमें देवगण वरुणके निकट जाय बोले, हे महात्मन्! इन्द्र जैसे हम लोगको भयसे परित्राण करते हैं वैसही आपभी समस्त नदनदीके अधिपति होय उनकी रक्षा कीजिये। आपको समुद्रमें रहना पड़ेगा समुद्र आपके वशवर्ती होंगे। चन्द्रमाके ह्रास वृद्धिके समान आपकोभी ह्रास वृद्धि हुआ करेगी। वरुणने देवगणका वाक्य श्रवण करके तथास्तु, कहके स्वीकार कर लिया। तब देवगणने उसी तैजस तीर्थमें उनका अभिषेक और उनको समस्त नदनदीका अधिपति करके अपने अपने स्थानको प्रस्थान किया। अनन्तर महात्मा बलदेव वहांसे अग्नितीर्थको गये। हे महाराज! एक समय महर्षि भृगुने हुताशनको शाप दिया कि तुम सर्वभक्ष्य हो। तब हुताशन भयसे पलायित हो गये। इन्द्रादि देवगण अग्निके अदर्शनसे दुःखित होय उनका अन्वेषण करने लगे। अनन्तर सरस्वती तीर उसी तीर्थमें देखा कि भगवान् हुताशन शमीगर्भमें लुक्कायित हैं। देवगण उनका दर्शन करके प्रसन्न होय यथास्थानको गये। अग्निभी तबसे सर्वभक्ष्य हो रहे।

बलदेव उस तीर्थमें स्नान दान करके ब्रह्मयोनि तीर्थमें गए। वहांसे कौवेर तीर्थमें उपस्थित हुए। यक्षराज कुवेरने यहां कठोर तपोनुष्ठान करके नलकूवर नाम पुत्र और धनाधिपत्य, अमरत्व, लोकपालत्व और महादेवसे सख्यभाव लाभ किया। देवगणने उसी स्थानमें उनका अभिषेक और हंससंयुक्त पुष्पक विमान और समस्त ऐश्वर्य्य प्रदान किया था। महात्मा बलदेव उसी तीर्थमें स्नान दान करके वदरपाचन तीर्थको गये, उस तीर्थमें सर्वदा षड् ऋतुका फल विराजमान है।

इति ४८ अध्याय।

हे महाराज! पूर्वमें वदरपाचन तीर्थमें श्रुवावती नाम भारद्वाजकी महारूपवती कौमारी कन्या थी, वह देवराज इन्द्रकी पत्नी होनेके अभिलाषसे कठिन तपोनुष्ठान करने लगी। अनन्तर भगवान् पाकशासन वशिष्ठरूप धारण करके वहां उपस्थित हुए। भारद्वाजतनया उनकी यथोचित पूजा करके बोली, भगवन्! आज्ञा कीजिये। हम प्रतिपालन करेंगे। केवल इंद्रके प्रति भक्तिके कारण पाणिप्रदान तो नहीं कर सकती हैं। वशिष्ठरूपधारी इन्द्र बोले, कि तुम्हारे तपस्याका विषय हम जानते हैं। तपोबलसे शीघ्रही लाभ होगा यह कहके पांच वदर प्रदान करके बोले, तुम इसको पाक करो। यह कहके वहांसे प्रस्थान पूर्वक उसके भक्तिकी परिक्षाके लिये वदरपाकका व्याघात करनेको जप करने लगे। इधर श्रुवावती पांचो वदरको पाक करने लगी। समस्त दिवा अवसान हुआ तथापि वदर सुपक्व न हुआ इसी प्रकारसे वदर पाक करते बहुदिन अतिवाहित हो गया। उसने जो काष्ठसञ्चय किया था, सबही भस्म हो गया और अग्नि काष्ठशून्य देख कर महर्षिके प्रियसाधनार्थ पहिले हुताशनमें पादद्वय निक्षेप करके दग्ध करने लगी। हे महाराज! उस समय उसका चित्त कुछभी विकृत वा मुख विवर्ण न हुआ, वरं जल अवगाहनके समान आह्लादित थी, अङ्ग दग्ध होनेसे उसको कुछभी दुःख न हुआ। अनन्तर देवराज श्रुवावतीका असाधारण कार्य्य अवलोकन करके परितुष्ट होय उसको अपना रूप दर्शन पूर्वक कहा, हे ब्रह्मचारिणी! हम तुम्हारी भक्ति देख तुष्ट हुए। तुम्हारा अभिलाष परिपूर्ण होगा, तुम देह परित्याग करके स्वर्गमें हमारे साथ एकत्र वास करोगी। और यह स्थान वदरपाचन तीर्थके नामसे त्रिलोकमें ख्यात होगा।

हे महाभागे! पूर्वमें सप्तर्षिगणने अरुन्धतीको इसी तीर्थमें

परित्याग करके हिमालय गमन किया था, उसी समय द्वादश-वार्षिकी अनावृष्टि उत्पन्न हुई। अरुन्धतीभी तपोनुष्ठानमें तत्पर हुई। अनन्तर भगवान् विश्वनाथ अरुन्धतीके तप-स्यासे प्रसन्न होय ब्राह्मणवेशसे वहां आ कर बोले, कल्याणि! भिक्षाप्रदान करो। अरुन्धती बोली, ब्रह्मन्! हमारा सञ्चित भक्ष्यद्रव्य समस्त निःशेषित हो गया, अब यह वदर भक्षण कीजिये। अनन्तर महादेवने उसको वह वदर फल पाक कर-नेको कहा। अरुन्धती प्रज्वलित हुताशनमें उसको पाक करने लगी। उसी समय महादेवनेभी अति मनोहर दिव्य पवित्र उपाख्यान कीर्तन करना आरम्भ किया। अरुन्धती उनकी सुखकी कथा श्रवण और वदर पाक करती करती द्वादशवार्षिकी अनावृष्टि अतिक्रम कर गयी। वह द्वादशवर्ष उसको एक दिनके समान ज्ञान पड़ा था, उस बीच कुछभी आहार नहीं किया। अनन्तर सप्तर्षिगण हिमालयसे प्रत्यागत हुए। तब महादेवने अरुन्धतीसे कहा, हे धर्मज्ञे! तुम ऋषि-गणके निकट गमन करो। हम तुम्हारा नियम और तप देख सन्तुष्ट हुए हैं। यह कहके आत्मरूप प्रकाश पूर्वक सप्तर्षिगणको कहा, हे तापसगण! आप लोगने हिमालयमें जैसा तप किया सो अरुन्धतीकी तपस्याके तुल्य नहीं है, अनाहार पाक करते इनको द्वादशवर्ष व्यतीत हो गया है। अनन्तर अरुन्धती को वर प्रार्थना करनेको कहा तब अरुणलोचना अरुन्धती बोली भगवन्! आप यही वर दीजिये कि यह तीर्थ वदर-पाचन नामसे प्रसिद्ध हो और जो कोई तीन रात्रि यह उप-वास करेंगे वे द्वादश वार्षिक उपवासका फल पावेंगे। यह सुन महादेव तथास्तु कहके स्वर्गको गये, अनन्तर ऋषिगण क्षुत्पिपासायुक्त अरुन्धतीको अविश्रान्त और पूर्ववत् रूप-लावण्यसम्पन्न देख कर विस्मयाविष्ट हुए।

अनन्तर ब्राह्मणरूपधारी इन्द्र बोले, हे श्रुवावति! पूर्व्वमें अरुन्धतीनेभी इसी प्रकारसे सिद्धि लाभ किया था। हम तुम्हारा नियम देख अत्यन्त तुष्ट हुए, अब हम और एक वर दान करते हैं, जो कोई इस तीर्थमें अवगाहन करेंगे वे स्वर्ग लोक वास करेंगे। यह कहके देवलोक गमन किया। और श्रुवावतीभी कलेवर परित्याग पूर्व्वक देवराजकी सहधर्म्मिणी होय स्वर्ग भोग करने लगी। हे महाराज! एक समय घृताची अप्सराको देखके महर्षि भारद्वाजका रेतःपात हुआ, तब महर्षिने रेतको पत्रपुटमें स्थापन किया उसीसे श्रुवावतीका जन्म हुआ था। हे महाराज! बलदेवने बदरपाचन तीर्थमें सलिल स्पर्श करके इन्द्र तीर्थकी यात्रा किया।

इति ४८ अध्याय।

हे महाराज! इसी तीर्थमें इन्द्रने शत अश्वमेध यज्ञ करके शतक्रतु नाम पाया था। बलदेवने उसी तीर्थमें स्नान और दान करके वहांसे राम तीर्थको गमन किया। यहां परशुरामने एकइस वार पृथिवीको निःक्षत्रिय करके शत अश्वमेध किया था। अनन्तर बलदेव वहांसे यमुना तीर्थमें गये। यहां वरुणने राजसूय यज्ञ किया था। हे महाराज! इस यज्ञके आरम्भमें देवदानवका और अन्तमें क्षत्रियगणका घोर युद्ध उपस्थित हुआ था। बलदेव वहांसे आदित्य तीर्थमें गये। भगवान् भास्करने यज्ञानुष्ठान करके यहांही ज्योतिका आधिपत्य और माहात्म्य पाया था। इसी तीर्थमें वेदव्यास, शुकदेव, वासुदेव और इन्द्रादि देवता निरन्तर विद्यमान हैं। विष्णुने मधुकैटभको वध करके इसी तीर्थमें अवगाहन किया

था, वेदव्यास इसी तीर्थमें सिद्ध हुए थे और महातपा असित देवलनेभी इसी तीर्थमें परमयोग लाभ किया था।

इति ५० अध्याय।

हे महाराज! तपोधन असितदेवल गार्हस्थ्य धर्म आश्रय करके इसी तीर्थमें अवस्थान करते थे। निन्दा, स्तुति, प्रिय, अप्रिय, कांचन और लोष्ट्र प्रभृतिमें उनका समभाव था। वह नियत देवाराधना, अतिथिसेवा और सकल प्राणीको तुल्य ज्ञान करते थे। कितने दिन परे महर्षि जैगीषव्य उसी तीर्थमें सिद्ध हुए। देवलने यह देख उनका अभिवादन करके कहा, भगवन्! हम मोक्षधर्म ग्रहण करनेकी वाञ्छा करते हैं। यह सुन जैगीषव्यने देवलको शास्त्रानुसार, योगविधि और कर्तव्याकर्तव्यका उपदेश देके क्रियाकलापका समाधान किया। अनन्तर पितृगण और अन्यान्य प्राणिगण देवलको मोक्षधर्म लेते देख कर हम लोगको कौन अन्न देगा, यह कह कर रोदन करने लगे। तब तो देवल प्राणिगणकी कातरोक्ति श्रवण करके मोक्षधर्म परित्याग करनेकी इच्छा करने लगे, और इधर पवित्र फल मूल और ओषधि सब, देवलको मोक्षधर्म परित्याग करते उद्यत देख यह कहके रोदन करने लगीं कि दुर्बुद्धि देवल पुनर्वार हम लोगको छेदन करेगा। मोक्षधर्म ग्रहण करनेसे समस्त प्राणिके अभयदानका फल होता है। यह वह नहीं जानते, अनन्तर देवल उनकी रोदनध्वनि श्रवण करके मनमें चिन्ता करने लगे, कि क्या करें? गार्हस्थ्य और मोक्षधर्मके मध्यमें कौन धर्म श्रेयस्कर है? अनन्तर गार्हस्थ्य त्याग और मोक्षधर्महीं अवलम्बन किया। और अपने चित्तकी एकाग्रताके प्रभावसे शीघ्रही परमयोग और सिद्धि लाभ किया। हे

महाराज! महर्षि जैगीषव्य और देवल, आदित्य तीर्थमें योगानुष्ठान करके ऐसे प्रभावशाली हुए थे। इसी तीर्थमें स्नान और दान करके बलदेवने सोमतीर्थको प्रस्थान किया।

इति ५१ अध्याय।

हे महाराज! इसी सोमतीर्थमें चन्द्रने राजसूय यज्ञ किया था और तारकासुरका घोर संग्राम यहांही हुआ था। यहां स्नान दान करके बलदेव सारस्वतमुनीके तीर्थको गये।

हे महाराज! पूर्वमें दधीच नाम एक मुनि थे, उनकी तपस्याभङ्ग करनेको इन्द्रने अलम्बूषा नाम एक अप्सराको प्रेरण किया। दधीच सरस्वतीमें देवगणका तर्पण करते थे। वह वहां उपस्थित हुई। उसको देख महर्षिका रेतःपात हुआ। उस वीर्यको सरस्वतीने धारण किया और यथा समयमें पुत्र प्रसव करके महर्षिके समीप उपस्थित होय बोली, यह आपका पुत्र है, इसको ग्रहण करो। अनन्तर महर्षिने पुत्रको ग्रहण और आघ्राण पूर्वक सरस्वतीका स्तव करके कहा कि, यह पुत्र तुम्हारे नामसे सारस्वत कहलाएगा और तुम हमारे प्रभावद्वारा समस्त नदीयोंसे पवित्र होगी। यह सुन प्रसन्न होय सरस्वती, पुत्र ग्रहण करके वहांसे अपसृत हुई। अनन्तर देवराज इन्द्र दानवगणके बधार्थ अस्त्र अन्वेषण करते थे, परन्तु प्राप्त न हुए। तब समस्त देवगण एकत्र होय दधीचमुनिके निकट जाय उनकी अस्थि प्रार्थना किया। मुनिने अति सन्तोषसे शीघ्रही शरीर परित्याग किया। पुरन्दरने उनके अस्थिसे वज्र, चक्र, गदा प्रभृति विविध अस्त्र प्रस्तुत करके असंख्य दैत्योंका प्राणसंहार किया।

अनन्तर द्वादशवार्षिकी अनावृष्टि उपस्थित हुई तब जीविका लाभार्थ मुनिगण चतुर्दिक् गमन करने लगे। उस

समय सारस्वत मुनिको सरस्वतीने कहा, कि तुम यहांही अव-स्थान करो। हम तुमको आहारके लिये सतत दृहत्‌मत्स्य प्रदान किया करेंगी। तब सारस्वत वहांही अवस्थान करके मत्स्या-हारसे प्राणधारण करके वेदपाठ करते रहे। अनन्तर अनावृष्टि व्यतीत होनेसे मुनिगण अपने अपने आश्रममें मिलित हुए। वे लोग क्षुत्पिपासासे कातर होय इधर उधर पर्य्यटन करते सबही वेदपाठ विस्मृत हो गये थे। अनन्तर सारस्वतको अनर्गल वेदपाठ करते देख सबही समवेत होय बोले, महर्षे! हम लोगको वेदाध्ययन कराओ। सारस्वत बोले हे तपोधन! तुम लोग यथानियम शिष्यत्व स्वीकार करो। मुनिगण बोले, वत्स! तुम अति बालक, हम लोग कैसे शिष्य होंगे? सारस्वत बोले, हे तापसगण! धर्म रक्षा करना कर्त्तव्य है। अधर्मानुसार अध्यापन और अध्ययन करनेसे दोनो पापग्रस्त वा वैरभाव प्राप्त होते हैं। विशेष करके हम लोगोंमें जो षड़ङ्ग वेदाध्ययनमें निपुण हैं, वही बड़े गिने जाते हैं, वयोवृद्धता, वित्त अथवा बान्धवतासे ऋषिगणकी महत्त्वता नहीं होती। यह सुन षष्टिसहस्र महर्षिगण सारस्वतका शिष्यत्व स्वीकार करके वेदाध्ययन पूर्वक धर्मानुष्ठान करने लगे। हे महाराज! बलदेवने वहां स्नान दान करके प्रसिद्ध वृद्ध कन्यक तीर्थमें गमन किया। उसी तीर्थमें एक कुमारी वृद्धावस्था पर्य्यन्त तपस्या करती रही थी।

इति ५२ अध्याय।

वै०। पूर्व कालमें कुनी गर्गमुनिने अपने तपोबलसे एक मानसी कन्या सृष्टि किया। अनन्तर मुनिके कलेवर त्याग करनेसे वह दुहिता तपोनुष्ठान करने लगी। इसी प्रकारसे तपोनुष्ठान करते उसकी वृद्धावस्था प्राप्त हुई और पद्‌सञ्चा-

लनका समर्थी न रहा तब उसने परलोक गमन करनाही श्रेयस्कर ज्ञान किया। उसी समय महर्षि नारद वहां आय बोले, हे कल्याणि! अनूढ़ा कन्याको किसी लोकमें भी गम-नका अधिकार नहीं है; तुमने केवल तपही सञ्चय किया, सो कैसे परलोक गमन करोगी? यह सुन तापसी ऋषिसमा-जमें जाकर बोली, हे तपोधनगण! आप लोगोंमें जो हमारा पाणिग्रहण करेंगे, हम उनको अपने तपस्याका अर्द्धांश प्रदान करेंगे। यह सुन गालवकुमार महर्षि शृङ्गवान बोले, सुन्दरि! हम तुम्हारा पाणिग्रहण करेंगे। अनन्तर गालवपुत्रने विधिपूर्वक उसका पाणिग्रहण किया। और तपस्याका अर्द्धांश ग्रहण किया। अनन्तर विवाहकी द्वितीय दिन तापस-दुहिताने कलेवर परित्याग किया। और गालवकुमारनेभी प्राणपरित्याग करके उसका अनुगमन किया। हे महाराज! उसी स्थानमें बलदेव मद्रराज शल्यका निधन वृत्तान्त श्रवण करके शोकसन्तप्त हुए। अनन्तर समन्तपञ्चकमें उपस्थित होय मुनिगणसे कुरुक्षेत्रका फल पूछने लगे।

इति ५३ अध्याय।

महर्षिगण बोले, हे हलायुध! यह समन्तपञ्चक तीर्थ प्रजापतिकी उत्तरवेदीभी कहलाता है। पूर्वमें देवताओंने यहां यज्ञानुष्ठान किया था। कुरुराजने इस स्थानको कर्षण किया था, इसीसे इसका नाम कुरुक्षेत्र पड़ा।

हे रोहिणीनन्दन! कुरुराज यह प्रतिज्ञा करके क्षेत्र कर्षण करने लगे कि जो कोई इस क्षेत्रमें कलेवर त्याग करेगा, वे स्वर्गलोक गमन कर सकें। अनन्तर इन्द्रादि देवगण उनकी दृढ़ प्रतिज्ञा देख मनमें भीत हुए, कि यदि मानवगण यहां कलेवर त्याग करके स्वर्ग जा सकें तो कोई यज्ञानुष्ठान न करेगा,

तब हम लोग यज्ञभाग लाभसे वञ्चित होंगे। यह सोच विचार कुरुराजको वरप्रदान पूर्वक निरस्त करावना स्थिर करके देवतागण उनके निकट जाय बोले, हे राजर्षे! अब तुम कष्ट मत करो। हम लोग वर देते हैं जो कोई आलस्यशून्य होय अनाहार यहां प्राणत्याग करे अथवा युद्ध करके निहत होय, वे निश्चयही स्वर्ग गमन करेंगे। यह सुन राजा निरस्त हुए और देवगण अपने स्थानको गये।

हे बलदेव! इन्द्र और ब्रह्मादि देवगणने कहा है कि इससे पवित्र और दूसरा स्थानही नहीं है। कुरुक्षेत्रकी धूलि पवनपरिचालित होके जिसका अङ्ग स्पर्श करे, वे परमपद प्राप्त होंगे। अनेकानेक देवता, ब्राह्मण और नृग प्रभृति नरपतिगण यहां देहपरित्याग करके परमपदको प्राप्त हुए हैं। तरन्तुक, आरन्तुक, रामह्रद और मचक्रुक। इसी प्रदेशका मध्यवर्ती स्थानही कुरुक्षेत्र है। इसको समन्त-पञ्चक और प्रजापतिकी उत्तरवेदीभी कहते हैं।

इति ५४ अध्याय।

वै०। अनन्तर बलदेवने दिव्याश्रमको गमन किया। भगवान् विष्णुने इसी आश्रममें तपोनुष्ठान किया था और कौमार शाण्डिल्य दुहिताने इसी स्थानमें तपोनुष्ठान पूर्वक सिद्ध होय स्वर्गारोहण किया था। अनन्तर बलदेव सन्ध्या कार्य्य समाधान पूर्वक हिमालय पर आरोहण और सर-स्वतीका प्रभाव और प्लक्ष प्रस्रवण तीर्थ दर्शन करके कारपवन नामक तीर्थमें उपस्थित हुए। वहां स्नान, देवपितृतर्पण करके यति और ब्राह्मणगणके सहित यमुनाकूल मित्रावरुणके पवित्र आश्रमको गये। वहां यमुनामें अवगाहन करके ऋषि समाजमें उपविष्ट होय पवित्रकथा श्रवण करते थे। इतनेमें

देवब्राह्मणपूजित कलहप्रिय तपोधन नारद उपस्थित हुए। उनको देख बलदेव व्यस्त होय गात्रोत्थान पूर्वक यथाविधि पूजा करके कौरवगणका वृत्तान्त पूछने लगे।

नारद बोले, हे बलदेव! भीष्म, द्रोण, जयद्रथ, कर्ण और शल्य प्रभृति असंख्य भूपालगण तो पहिलेही प्राणत्याग कर गये, अब कौरवोंमें केवल कृप, कृतवर्मा और अश्वत्थामा अवशिष्ट रह गये। ये लोगभी पाण्डवोंके भयसे पलायित हुए हैं। यह दशा देख दुर्योधन द्वैपायन ह्रदमें प्रविष्ट हुआ था। अब वासुदेव और पाण्डवगणके विविध कटुवाक्य प्रयोग करने पर ह्रदसे उत्थित होय भीषण गदा धारण पूर्वक भीमसे युद्ध करनेको प्रस्तुत हुआ है। यदि आपको शिष्य-द्वयका युद्ध दर्शन करनेकी इच्छा होय तो शीघ्रही वहां गमन कीजीये।

हे महाराज! यह सुन बलदेवने अनुयात्रिकगणको द्वारका गमन करनेकी आज्ञा दे कर रथारोहण पूर्वक शिष्यद्वयका युद्ध दर्शनार्थ शीघ्रही उनके समीप उपस्थित हुए।

इति ५५ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर राजा धृतराष्ट्र दुःखित होय बोले, हे सञ्जय! बलदेवके संमुख हमारे पुत्रने किस प्रकारसे युद्ध किया था? सो कहो।

सञ्जय बोले, महाराज! बलदेवके आगमन करनेसे धर्म-राजने गात्रोत्थान पूर्वक आसन प्रदान और यथाविधि अर्चना करके अनामय प्रश्न किया।

रोहिणीनन्दन बोले, महाराज! हमने तापसगणसे श्रवण किया है कि कुरुक्षेत्र परमपवित्र और स्वर्गतुल्य स्थान है।

वीरगण वहां युद्ध करके देहत्याग करें तो स्वर्ग गमन करते हैं। इस कारण चलो हम लोग यहांसे समन्तपञ्चकको गमन करें।

यह सुन राजा युधिष्ठिरने समन्तपञ्चकाभिमुख यात्रा किया। कुरुराज पाण्डवगणसे परिवेष्टित होय मत्तवारणके समान गमन करने लगे। अनन्तर कुरुक्षेत्रमें उपस्थित होय आपके पुत्रके निर्देशानुसार सरस्वतीके दक्षिण प्रदेशमें युद्धस्थल निर्दिष्ट हुआ। वर्मधारी भीमसेन गदा ग्रहण करके गरुड़के समान और आपका पुत्र सुवर्ण वर्म धारन करके दोनो सुमेरुपर्वतके समान शोभा पाने लगे। तब वे दोनो वीर समराङ्गणमें आगत और क्रुद्धमातङ्गद्वयके समान वधार्थी होय परस्पर निरीक्षण करने लगे। तब दुर्य्योधन गदा ग्रहण करके सृक्वणी अवलेहन पूर्वक रोषारुण नयनसे भीम पर दृष्टि निक्षेप करके आह्वान करने लगे। भीमसेनभी कुरुराजको आह्वान करने लगे। अनन्तर परस्पर मदस्रावी मत्तमातङ्गके समान जिगीषापरवश होय अत्यावेगसे धावमान होने लगे। ये दोनोही बलदेवके शिष्य, महाबली और गदायुद्ध विशारद थे। उस समय समस्त वीरगणके मध्यमें युद्ध दर्शनार्थ बलदेव उपविष्ट होके नभोमण्डलस्थ उदित सूर्य्यके समान शोभा पाने लगे। अनन्तर भीमसेन और दुर्य्योधन परस्पर दृष्टिपात करते हुए अति कठोर वाक्य प्रयोग करने लगे।

इति ५६ अध्याय।

वै०। उस समय अनेक दुर्निमित्त घटना होने लगी, वायु प्रचण्ड वेगसे वहने लगा। घोर अन्धकार से आकाश आच्छन्न हो गया। शत शत उल्कापात से गगनमण्डल उद्भासित हो गया। जन्तुगण अमङ्गलसूचक शब्द करने

लगे। चतुर्द्दिग, से तुमुल शब्द श्रवण होने लगा। परन्तु कौन शब्दकरता है? सो कुछ न जाना गया।

अनन्तर क्रुद्ध भीमसेन ने गदा ग्रहण पूर्वक दुर्य्योधन को आह्वान करके कहा। हे दुर्बुद्धे! तुम लोग पिता पुत्रने वारणा-वत नगर में हमलोगोंके निधनके लिये जो दुष्कर्म किया था सो स्मरण करो। सभा में रजस्वला द्रौपदीको क्लेश प्रदान, द्यूतक्रीड़ा में जो प्रवञ्चना, किया सो स्मरण करो। हम लोगों ने तुम्हारे निमित्त वनवास और जो सब क्लेश सहन किया है और तुम्हारे ही निमित्त भीष्म द्रोण कर्ण और शल्य प्रभृति वीरगण निहत हुए। आज उनही दुःखों का मूल च्छेद होगा। आज भाग्यही से तुम्हारा दर्शन पाया। अभी तुमको गदाघातसे निहत करेंगे। यह सुन दुर्य्योधन निर्भय होय बोला, हे भीम! वृथा वाग्जाल विस्तार क्यों करते हौ? युद्ध करो। आज निश्चय तुम्हारो रणकण्डु अपनोदन कर देंगे। हे कुलाधम! तुम सरीखे सामान्य मनुष्यके वाक्य पर दुर्य्योधन भीत न होगा। बहुत दिन से हमारी गदायुद्ध करनेकी वासना थी सो आज दैवने पूर्ण किया। अब वृथा वाक्यव्यय और आत्मश्लाघा मत करो मुखसे जो कहते हौ सो करके दिखलाओ।

इति ५७ अध्याय।

अनन्तर दुर्य्योधन भीमसेन को आवते देख सिंहनाद परित्याग करते महावेग से भीम पर धावमान हुए। और परस्पर आक्रमण करके तुमुल युद्ध करने लगे। उस समय रणस्थल में घोर प्रहार शब्द होने लगा। रुधिरोक्षित कलेवर वीरद्वयको कुसुमित किंशुक वृक्षके समान दर्शकगण देखने लगे। उनके गदानिष्पेषसे हुताशन स्फुलिङ्ग समुत्थित

होनेसे नभोमण्डल मानो खद्योतसमाकीर्ण होगया। अनन्तर दोनो वीर युद्ध श्रमसे परिश्रान्त होय मुहूर्तकाल विश्राम करके पुनः घोर युद्ध करने लगे, और परस्पर रन्ध्रान्वेषण करने लगे। भीमसेनकी गदा विघूर्णित करनेसे रणस्थल में घोर शब्द होने लगा। अनन्तर भीम विविध कौशल और मण्डल प्रदर्शन पूर्वक रणस्थल में विचरण करने लगे। और आत्मरक्षाके लिये, बलवान् होय विचित्र मण्डल, गति, प्रत्यागति, अस्त्र, यन्त्र, विविध अवस्थान, परिमोक्ष, प्रहारवञ्चन, परिवारण, अभिद्रावण, आक्षेप, विग्रह, परावर्तन, संवर्तन, अवप्लुत, उपप्लुत, उपन्यस्त और अपन्यस्त प्रभृति विविध कौशल प्रदर्शन पूर्वक परस्पर प्रहार करने लगे। अनन्तर दुर्य्योधन दक्षिण और भीमसेन वाममण्डल अवलम्बन पूर्वक भ्रमण करने लगे, और दुर्य्योधनने भीमको गदाविघूर्णित करते देख उनकी गदा पर गदाघात किया। उस शब्दसे रणस्थल में भयङ्कर शब्द उत्थित और तेज प्रादुर्भूत हुआ। उस समय दुर्य्यो-धनका विविध कौशल देखके लोगोंने भीमसे उनको अधिक युद्ध निपुण ज्ञान किया। अनन्तर उभय वीर महाघोर युद्ध करने लगे। और भीमसेनने दुर्य्योधनकी गदापर ऐसा आघात किया कि दुर्य्योधनका गदाको प्रतिहत होके भूतल में निपतित हुआ।

दुर्य्योधनने अपना गदा प्रतिहत देख क्रोधसे अधीर होय वाममण्डल प्रदर्शन पूर्वक भीमके मस्तक पर गदाघात किया। तब भीमसेनने दुर्य्योधन पर गदा निक्षेप किया। उसको दुर्य्योधनने निस्फल कर डाला। और वह गदा भूमिपर निपतित हुआ। तब कुरुराजने भीमके वक्षस्थल पर एक गदाघात किया, उससे भीम मोहित होगये। यह देख पाण्डव पक्षीयगण भग्नोत्साह होगये। अनन्तर भीमसेनने क्रोधा-

विष्ट होय महावेगसे दुर्य्योधनके पार्श्वदेश में गदाघात किया। दुर्य्योधनने मूर्च्छित होय जानुद्वयसे धरातल स्पर्श किया, तब तो सृञ्जयगण आह्लादित होगये। अनन्तर कुरुराजने गात्रोत्थान पूर्वक दीर्घनिश्वास परित्याग करके महावेगसे धावमान होय भीमका ललाट देश में गदाघात किया। भीमसेन उस प्रहारसे कुछभो विचलित न हुए, परन्तु उनके ललाटसे रुधिर धारा प्रवाहित हुई, तो मदस्रावी मातङ्गके समान शोभा-पाने लगे। अनन्तर भीमसेनने लोहमय गदा ग्रहण करके दुर्य्योधनको प्रहार किया तो कुरुराज वायुवेगविपाटित पुष्पित वृक्षके समान घूर्णित होके भूतल में निपतित हुए। यह देख पाण्डवगण सिंहनाद परित्याग करने लगे। अनन्तर दुर्य्योधन संज्ञा लाभ करके दण्डायमान हुआ और क्रुद्ध होय भीमसेन पर महावेगसे गदाघात किया। भीमसेन गदाघातसे विह्वल होय भूतल में निपतित हुए। और कुरुराजने गदाघातसे भीमका कवच भेद कर डाला। तब तो पाण्डवगणको महाभय हुआ, अन्तको भीम चैतन्य होय अङ्ग परिमार्जन और अति कष्टसे धैर्य्यावलम्बन करके विस्तृत नयनसे संग्राम में अवस्थिति करने लगे।

इति ५८ अध्याय।

हे महाराज! उसी समय अर्जुन घोर संग्राम अवलोकन करके वासुदेवसे बोले, सखे! इन दोनोमें कौन युद्ध कुशल? और किसमें कौन गुण अधिक हैं? सो कहो। वासुदेव बोले, भ्रातः! ये दोनो वीरने समान उपदेश पाया हैं, भीमसेन दुर्य्योधनसे अधिक बलवान् हैं, परन्तु भीमसे कुरुराजको यत्न और निपुणता अधिक है इस कारण भीमसेन न्याय युद्ध करके कदाच दुर्य्योधनको पराजित न कर

सकोंगे। अन्याय युद्ध करनेहीसे वह दुरात्मा विनष्ट होगा। हमने सुना है देवगणने मायाबलहीसे असुरगणको विनाश किया। इन्द्रने मायाप्रभावहीसे विरोचनको पराजय और वृत्रासुरका तेज ह्रास किया था। अब वृकोदरभी मायामय पराक्रम प्रकाश पूर्वक दुर्य्योधनको विनाश करें। उनने द्यूतक्रीडाके समय दुर्य्योधनका उरुभङ्ग करनेकी जो प्रतिज्ञाकी थी सो अब सफल हो। मायावी दुर्य्योधनको मायाबलहीसे निपात करना कर्तव्य है। यदि भीमसेन न्याय युद्ध करेंगे तो युधि- ष्ठिर विषम सङ्कटमें पड़ेंगे। हे अर्जुन! और देखो अब धर्मराजहीके अपराधसे फेर हम लोगोंको महत् भय उप- स्थित हुआ। भीष्म प्रभृति वीरगणके निहत होनेहीसे हम लोगका जयलाभ, कीर्तिलाभ और वैरनिर्य्यातन हो गया था। परंतु धर्मराजके कारण इस समय हम लोगको जय- लाभका महान् संशय उपस्थित हुआ है। ज्येष्ठपाण्डव क्याहो निर्बोध हैं। उन्होने क्या समोभके दुर्य्योधनको यह कहा? कि तुम पाण्डवोंसे किसी एकको पराजय कर सकोगे तो तुमको राज्यलाभ होगा। दुर्य्योधन एकभी युद्धनिपुण तिस पर एकाग्रचित्त होय युद्धमें प्रवर्त हुआ तब उसको पराजय करना महा दुःसाध्य होगा। दैत्यगुरु शुक्राचार्य्य यह सारनीत कह गये हैं, कि जो शत्रु पहिले प्राणभयसे पलायित होके पुनर्वार शत्रुगणके संमुखीन होय तो उसको उस समय जीवित निरपेक्ष और एकाग्रचित्त कहना चाहिये इसमें कुछ सन्देह नही है इस कारण ऐसे शत्रुसे भय करना अवश्य कर्तव्य जानना। हे अर्जुन! वीरगण जीविताशा निर- पेक्ष और एकाग्र होके साहससे संग्राममें प्रवर्त होय तो इन्द्रभी उसके संमुख होनेको समर्थ नहीं हैं। देख दुर्य्योधन हतसैन्य और पराजित हो कर राज्यलाभकी आशा परित्याग

पूर्वक अरण्यवास निश्चय करके हृदयमें प्रविष्ट हुआ था। उसको पुनर्वार युद्धार्थ आह्वान करना अत्यन्त असुलताका कार्य्य हुआ। दुर्य्योधनने त्रयोदशवर्ष गदायुद्ध शिक्षा किया है, अब भीमको निधन वासनासे नानाप्रकार युद्धकौशल प्रदर्शन करता है, इससे यदि भीम अन्याय युद्धमें उसका संहार न करें तो निश्चयही वह हम लोगोंको पराजय करके भूपति होगा।

हे महाराज! महावीर धनञ्जय वासुदेववाक्य श्रवण करके अपने वामजानुमें कराघात करके भीमसेनको संकेत कर दिया। वृकोदर अर्जुनका संकेत देख उसका अभिप्राय जान गदा लेकर सव्य मण्डल, दक्षिण मण्डल, यमक और गोमूत्रक प्रभृति विविध गति प्रदर्शन पूर्वक समराङ्गणमें परिभ्रमण करके दुर्य्योधनको चमत्कृत करने लगे। दुर्य्योधन भी चमत्कार रणकौशल प्रदर्शन करने लगे। इसी प्रकार उभय वीर परस्पर घोर युद्ध करने लगे। अनन्तर उस दारुण युद्धमें दोनोंही परिश्रान्त हुए। और क्षणकाल विश्राम करके पुनः युद्ध करने लगे। उसी समय महावीर वृकोदर इच्छा पूर्वक रंध्रप्रदर्शन करनेसे दुर्य्योधन ईषद् गर्वित होय उन पर धावमान हुए। महावीर वृकोदरनेभी गदाघात किया तब दुर्य्योधन वहांसे अपसृत हुए और भीमको गदा व्यर्थ होय भूतलपर गिरा। इसी प्रकारसे दुर्य्योधनने उस प्रहारसे परित्राण पा कर भीमके शरीर पर गदाघात किया। महावीर वृकोदर उस गदाघातसे शोणित कलेवर औ मूर्छित प्राय हुए। परन्तु उस समय भीम ऐसे धैर्य्य हो कर ठहर गये कि दुर्य्योधनने उसको अविचलित प्रतिप्रहारोद्यत विवेचना करके पुनर्वार प्रहार न किया। अनन्तर भीमसेन मुहूर्त काल विश्राम करके दुर्य्योधनके प्रति महावेगसे धावमान हुए। कुरुराज उनको महावेगसे आवते देख उनका प्रहार व्यर्थ

करनेकी इच्छासे ऊर्द्ध उत्थित होनेकी चेष्टा करने लगे। वृकोदर दुर्य्योधनको अभिप्राय जान सिंहनाद परित्याग पूर्वक उसकी अभिमुखीन हुए। कुरुराज कूदकर ऊर्द्धमें उत्थित होतेही उनका जानुद्वय पर लक्ष्य करके महावेगसे गदा निक्षेप किया। भीमसेनका वज्रतुल्य भीषणगदाने दुर्य्योधनकी जानुद्वय भग्न करके भूतलमें निपातित किया। हे महाराज! इसी प्रकारसे महावीर दुर्य्योधनके भग्नोरु और धराशायी होनेसे, पृथिवी विचलित होने लगी और उल्का-पात प्रभृति बहुतर उत्पात होने लगा। हे महाराज! पाण्डव और पाञ्चालगण यह सब दुर्निमित्त देखके उद्विग्न हुए।

इति ५९ अध्याय।

हे महाराज! इसी प्रकार दुर्य्योधनके निहत होनेसे पाण्डव और सोमकगण आह्लादसे रोमाञ्चितकलेवर होके उनको निरीक्षण करने लगे। उसी समय महावीर वृकोदर दुर्य्योधनके निकट उपस्थित होके बोले, हे दुरात्मन्! पूर्वमें तुमने जो जो अत्याचार हम लोगोंसे किया था, आज उसका फल भोग करो। यह कहके वृकोदर दुर्य्योधनके मस्तक पर वाम-पदाघात पूर्वक क्रुद्ध होय पुनर्वार कहने लगे, हे दुरात्मन्! पूर्वमें तुमने जैसा कटुवाक्य प्रयोग करके हास्य किया था वैसेही आज हम करेंगे। अनन्तर भीमसेन युधिष्ठिर और वासुदेव प्रभृतिसे बोले, देखो जो दुरात्माने द्रौपदीको त्रास दिया था, वह आज निहत हुआ है अब हम लोगको नरक होय वा स्वर्ग मिलेगी असन्तुष्ट नहीं हैं। यह कहके भीमसेन पुनर्वार पदतलाघातसे दुर्य्योधनको पदाघात करने लगे। भीमसेनका यह नीच व्यवहार देखके धर्मात्मा सोमक-

गया कुछभी सन्तुष्ट न हुए। तब युधिष्ठिरने भीमसे कहा, हे भीम! तुम वैरकृत्यसे मुक्त हुए। सत्कार्य्य द्वारा हो वा असत्कार्य्य द्वारा प्रतिज्ञा परिपूर्ण किया, तो अब शान्त हो। दुर्य्योधन हम लोगका ज्ञाति और एकादश अक्षौहिणी सैन्यका अधिपति था, इसके मस्तक पर पदाघात करके अधर्म सञ्चय मत करो। हे वृकोदर! प्राचीनगण सबही तुमको धार्म्मिक जानते हैं तब तुम क्यों राजाको पाद द्वारा स्पर्श करते हो? यह कह कर युधिष्ठिरने अश्रुपूर्णनयनसे शोकभाव होय दुर्य्योधनसे कहा, भ्रातः! तुमको दुःख वा शोक करना कर्त्तव्य नहीं है। तुम पूर्वकृत कर्म्मका फल भोग करते हो। हे कुरुसत्तम! हमारा तुम्हारा विरोध विधाताहीने निर्द्दिष्ट कर दिया था। जो होय तुम अपने बालकाल स्वभावके दोष-हीसे ऐसे विपद्ग्रस्त हुए। हम लोगने केवल तुम्हारेही दोषसे ससैन्य तुमको निहत किया। जो होय अब तुमको शोक करना कर्त्तव्य नहीं है। अब मृत्युही तुम्हारे लिये श्रेय है। हम लोग अत्यन्त हतभाग्य हैं जो बन्धुगणके विच्छेदसे दुःखी होके रहना पड़ेगा। तुम तो यहांसे गमन करतेही स्वर्ग भोग करोगे। परंतु हम लोग नरकतुल्य दारुण दुःख भोग करते रहेंगे। यह कहके धर्म्मनन्दन दीर्घनिश्वास परित्याग पूर्वक विलाप और परिताप करने लगे।

इति ६० अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! अधर्मयुद्धमें दुर्य्योधनको निहत होते देख कर बलदेवने क्या कहा? सो कहो।

सञ्जय बोले, महाराज! महाबल बलदेव भीमसेनको दुर्य्योधनका ऊरुदेश भग्न करते देख कर अत्यन्त क्रोधाविष्ट हुए। और भूपालगणके बीच बाहु उत्तोलन करके भीषण

आर्तनाद परित्याग और भीमसेनको वारंवार धिक्कार प्रदान करके बोले कि, धर्मयुद्धमें नाभिके अधस्थलमें गदाघात करना अति अन्याय हुआ। ऐसा कुकार्य्य कहींभी दृष्टिगोचर न हुआ। हे महाराज! हलधारी बलदेव इसी प्रकार कहते कहते क्रोधसे अधीर होय लाङ्गल उद्यत करके महावेगसे भीमसेन पर धावमान हुए। उसी समय हलधरके हस्त-उद्यत करनेसे उनका रूप रागरञ्जित श्वेतपर्वतके समान लक्षित होने लगा। उसी समय विनयी वासुदेवने बलदेवको भीमके प्रति धावमान देख स्थूलवर्तुल बाहुयुगल द्वारा उनको धारण कर लिया। धवल और कृष्ण यदुवंशी वीरद्वयके एकत्र होनेसे अपराह्णकालीन नभोमण्डलगत चन्द्र सूर्य्यके समान उनकी अपूर्व शोभा हो गई। तब यदुप्रवीर वासुदेव बलदेवकी क्रोधशान्तिके निमित्त बोले, हे महात्मन्! शास्त्रमें छः प्रकारकी उन्नति निर्दिष्ट हुई है, अपनी उन्नति, अपने मित्रगणकी उन्नति, और उनके बन्धु बान्धवगणकी उन्नति। और शत्रुगणकी अवनति और शत्रुके मित्रगणकी अवनति और उनके बन्धुबान्धवकी अवनति। प्राज्ञ लोगको अपनी और अपने मित्रगणकी अवनतिसे अपना क्षय उपस्थित होता जानके शीघ्रही उसका प्रतिविधान करना उचित है। समर-विशारद पाण्डवगण हम लोगोंके पितृस्वसाके पुत्र हैं इस कारण वे हम लोगके मित्र हुए, इस समय शत्रुगणने इनको अत्यन्त पराभूत किया था। और देखो प्रतिज्ञा पालन करनाही क्षत्रियका परमधर्म है। भीमसेनने सभामें गदासे दुर्य्योधनका ऊरुभङ्ग करनेकी प्रतिज्ञाकी थी। और पर्व्वमें महर्षि मैत्रेयनेभी दुर्य्योधनको "भीमके गदाघातसे तुम्हारा ऊरुभङ्ग होगा" यह शाप प्रदान किया था। इस कारणसे भीमसेनका तो अनसामभी दोष लक्षित

नहीं होता है। हे रेवतीरमण! आप क्रोध सम्बरण कीजिये। पाण्डवगणसे हम लोगका यौनिसम्बन्ध और अतिशय प्रीति है, इस कारण इनकी उन्नतिसे हम लोगकी उन्नति होगी इसमें सन्देह नहीं। यह सुन धर्मपरायण हलधर, वासुदेव वाक्य श्रवण करके बोले, कृष्ण! साधुलोगही धर्मका अनुष्ठान करते हैं, परंतु वही धर्म, अर्थ और काम द्वारा क्षत हो जाता है। देखो अतिलोभी अर्थ लोभसे और अत्यासक्त कामप्रभावसे धर्महीन हो जाता है इस कारण जो मनुष्य धर्म, अर्थ और कामके प्रति समदृष्टि रखके कालयापन करे वही यथार्थ सुखभोग कर सक्ता है। हे हृषीकेश! अब तुम कितनीभी चेष्टा करो, परंतु भीमसेनने जो अधर्माचरण किया यह बात हमारे मनसे दूर न होगा।

वासुदेव बोले, हे राम! आपको सब कोई अत्यन्त शान्तप्रकृति और धर्मवत्सल कहते हैं इससे अब क्रोध सम्बरण और शान्ति अवलम्बन कीजिये। देखिये अब कलियुग उपस्थित हुआ। विशेष करके भीमसेनने जो प्रतिज्ञा कीथी उसके पूर्ण करनेका यह उपयुक्त समय था इस कारण अब इनको निर्विघ्न वैर और प्रतिज्ञा पाशसे मुक्त होने दोजिये।

हे महाराज! महावीर बलदेव कृष्णके मुखसे कूटधर्म श्रवण करकेभी अप्रसन्न मनसे बोले, हे वासुदेव! धार्मिक दुर्य्योधनको अधर्मसे निहत किया इस कारण भीम कूटयोद्धा कहलावेगा और दुर्य्योधन धर्म युद्धमें निहत हुआ इस कारण उसको उत्तमगति और इह लोकमें यशोलाभ होगा। यह कह कर बलरामने रथारोहण पूर्वक द्वारकाभिमुख प्रस्थान किया। अनन्तर भीमसेन युधिष्ठिरके निकट जाय बोले, महा-

राज ! आज आपको पृथिवी निष्कण्टक हुई । अब राजधर्मा-नुसार राज्य शासन कीजिये । युधिष्ठिर बोले, हे वृकोदर ! आज कृष्णके प्रसादसे दुर्य्योधन निहत, वैरानल प्रशमित और वसुन्धरा हम लोगके अधिगत हुई ।

इति ६१ अध्याय ।

धृतराष्ट्र बोले, सञ्जय ! दुर्य्योधनके निपातित होनेसे पाण्ड-वोंने क्या किया ? सो कहो । सञ्जय बोले, महाराज ! पाण्डवगण दुर्य्योधनको निपातित देख आह्लादित होय सिंह-नाद करने लगे और कोई कोई शंखध्वनि और नाना प्रकार आनन्दजनक वादन वाद्य करने लगे । कोई दुर्य्योधनके प्रति कटूक्ति करके भीमसेनकी प्रशंसा करने लगे । अनन्तर वासु-देव पाञ्चालगणके मुखसे भीमसेनकी असङ्गत प्रशंसा श्रवण करके बोले, हे भूपतिगण ! म्रृततुल्य शत्रुके प्रति कटुवाक्य प्रयोग करना उचित नही है, पापसहाय निर्लज्ज दुर्य्योधन जब विदुर भीष्म प्रभृति सुहृद्गणका वाक्य लङ्घन करके राज्य प्रदान करनेको असम्मत हुआ था । तबहीसे हम उसको निहत जानते थे । अब वह अधम मित्र अथवा शत्रुओंमें गणना योग्य नहीं काष्ठके तुल्य जड़ होकर पड़ा है उस पर कटु वाक्य प्रयोग करना अति अकर्तव्य है । चलो अब हम लोग रथारोहण करके यहांसे प्रस्थान करें ।

हे महाराज ! दुर्य्योधन वासुदेवका तिरस्कार वाक्य श्रवण और शाउड्डयसे पृथिवीको धारण करके उपविष्ट हुआ । सरोषनयनसे कृष्णको देखके अति पीड़ासे कातर हो करके बोला, हे कंसदासतनय ! धनञ्जयने तुम्हारे वाक्यानुसार भीमको संकेत किया, तब भीमने अधर्मयुद्धसे हमको निपातित किया । इससे क्या तुमको लज्जा नही होती ? तुम्हारेही

अन्याय उपायसे प्रतिदिन धर्मयुद्धमें सहस्र सहस्र नरपति-गण निहत हुए। तुम्हीने शिखण्डीको अग्रसर करके पिता-महको निपातित किया। अश्वत्थामा नाम गजके निहत होनेसे तुमने कौशल करके आचार्य्य का अस्त्र परित्याग कर-वाया उसी अवसरमे पापी धृष्टद्युम्नने उनको निहत किया। कर्णने अर्जुनके लिये जो शक्ति रखी थी सो तुमहीने कौशल करके घटोत्कच पर निक्षेप करवाया था। सात्यकि तुम्हा-रेही प्रवर्तनासे छिन्नहस्त प्रायोपविष्ट भूरिश्रवाको विनष्ट किया। कर्णका रथचक्र भूगर्भमे प्रविष्ट होनेसे कर्ण उसके उद्धार करनेको व्यस्त थे, उस समय तुमहीने कौशल करके उसको बध करवाया। इस कारण तुम्हारे तुल्य पापात्मा निर्दय और निर्लज्ज दूसरा कौन है? देखो यदि तुम हम लोगसे न्याययुद्ध करते तो कभी तुम लोगको जयलाभ नहीं होता। तुम्हारे अनार्य उपायके प्रभावहीसे धर्मयुद्धमें हमलोग निहत हुए।

यह सुन वासुदेव बोले, हे गान्धारिनन्दन! तुम असत-पथही अवलम्बन पूर्वक भ्राता पुत्र बंधु बांधव और अनुचर वर्गको सहित निहत हुए। तुम्हारा पापही इसका कारण है। पूर्वमें हमने तुमसे बारंबार प्रार्थना किया, परन्तु तुमने कर्ण और शकुनिके वश होय पैतृक राज्य पाण्डवगण को प्रदान न किया। तुमने भीमको विष खिलाया, पाण्डवोंके भस्म करनेको यतुगृहमें अग्निसंयोग किया, हे दुरात्मन्! तुमने जब सभामें रजस्वला द्रौपदीको क्लेश दिया था उसी समय तुम्हारा बध करना उचित था। कपट द्यूतसे अन-भिज्ञ युधिष्ठिरको पराजय किया था। तुम्हारेही मतानुसार वनमें जयद्रथने द्रौपदीको कष्ट दिया था। तुम्हारेही दोषसे अनेक रथीने बालक अभिमन्युको बध किया। इनही कार-

योंसे तुम निहत हुए। हे निर्लज्ज! तुम जो जो कुकर्म हम लोग पर आरोपित करते हो तुम स्वयं वही सब कुकार्य्य करते गये हो। तुमने सुरगुरु बृहस्पतिके वाक्यानुसार कभी वृद्धगणको सेवा और उनके वाक्यमें कर्णपात न किया। लोभ और मोहवश होय कार्य्यानुष्ठान किया तो अब उसीका फल भोग करो। अनन्तर दुर्य्योधन बोला, हे कृष्ण! हम अध्ययन, विधि पूर्वक दान, ससागरा वसुन्धरा शासन, विपक्षगणके मस्तक पर अवस्थान जैसा कर लिया अन्य भूपालगणको अति दुर्लभ है। और देवभोग सुखसम्भोग और अति उत्कृष्ट ऐश्वर्य्य लाभ कर लिया है अब अन्तको धर्मपरायण क्षत्रिय-गणका प्रार्थनीय समरमृत्यु प्राप्त हुए। इस कारण हमारे तुल्य सौभाग्यशाली दूसरा कौन है? अब हम भ्रातृवर्ग और बन्धु-बान्धवके सहित स्वर्गको चले। तुम लोग शोकाकुलितचित्तसे मृतवत् इस पृथिवी पर अवस्थान करो। हे महाराज! दुर्य्यो-धनके यह कहतेही आकाशसे सुगन्धिपुष्पकी वृष्टि होने लगी और गन्धर्वगण मधुर वादित्र वादन और अप्सरागण राजा दुर्य्योधनका यश गान करने लगीं, सिद्धगण उनको साधुवाद करने लगे, सुगन्ध मन्द मन्द पवन सञ्चालित होने लगा गगनमण्डल निर्मल हो गया।

हे महाराज! पाण्डवगण दुर्य्योधनका सम्मानसूचक दैव व्यापार देखके लज्जित हुए और भीष्म प्रभृतिको अधर्म-युद्धसे बध किया सो स्मरण करके शोक प्रकाश करने लगे। अन्तको महात्मा वासुदेव पाण्डवगणको चिन्ताकुल देख कहने लगे, हे पाण्डवगण! भीष्मके रहते तुम लोग कदाच दुर्य्योधनको धर्मयुद्धसे पराजय न कर सकते। हम केवल तुम लोगोंके हितके लिये अनेक उपाय और मायावल प्रकाश करके उन लोगको निपातित किया है। यदि हम ये कुटिल

व्यवहार न करते तो तुम लोगका जय न होता। देखो देवतागणने कूटयुद्धहीसे असुरगणको पराजित किया तो उनका अनुकरण करनाही कर्तव्य है। यह नियम प्रसिद्ध है कि शत्रुकी अधिकसंख्या होय तो उन लोगको कूटयुद्धसे विनाश करना। अब हमलोग कृतकार्य्य हुए और सायं-कालभी उपस्थित हुआ, सो अब चलो स्वस्थ हृदयसे जाकर विश्राम करें। अनन्तर पाण्डवपक्षीयगण प्रफुल्लचित्तसे शंख-ध्वनि करने लगे।

इति ६२ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर पाण्डवपक्षीय वीरगण अपने अपने शिविरमें प्रविष्ट हुए और पाण्डवगण दुर्य्योधनके शिविरमें उपस्थित हुए तो वह शिविर जनशून्य अरण्यके समान शोभाविहीन दृष्टि हुई। केवल वृद्ध अमात्यगण, स्त्री और क्लीवगणके सहित वहां अवस्थान करते थे, उन्हीं वृद्ध अमात्य-गणके रक्षाके लिये तत्पर होय वासुदेव अर्जुनसे बोले, हे अर्जुन! तुम गाण्डीवशरासन और अक्षयतूणीरद्वय ले कर पहिले अवरोहण करो, तब हम पीछे उतरेंगे। अनन्तर धनञ्जय गाण्डीव और तूणीर लेकर रथसे उतरे पीछे धीमान् वासुदेव अश्वरश्मि परित्याग पूर्वक अवतीर्ण हुए। जगत्पति हृषीकेशके अवतीर्ण होतेही ध्वजस्थित कपिवर अन्तर्हित हो गये। और अकस्मात् रथ, तूणीर, रश्मि, अश्व और युग-बन्ध, काष्ठके सहित भस्मीभूत हो गया। धनञ्जयका रथ भस्मावशिष्ट देख पाण्डवगण विस्मयापन्न हो गये। यह देख अर्जुन कृताञ्जलिपुटसे बोले, गोविन्द! हमारा रथ क्यों भस्मा-वशेष हुआ। यदि कुछ प्रतिबन्धक न होय तो यह आश्चर्य्य घटना कीर्तन कीजिये। यह सुन वासुदेव बोले, सखे! विविध

अस्त्रोंकी प्रभावसे पहिलेही यह रथ अग्निसंवलित हुआ था, केवल हम उस पर अधिष्ठित थे, इस कारण अबतक दग्ध न हुआ था, अब हमारे अवतीर्ण होतेही भस्मीभूत हो गया। भगवान् केशव अर्जुनसे यह कहके ईषद् गर्वितभावसे युधिष्ठिरको कहा, महाराज! आप आज भाग्यबलसे जय लाभ किया। आपके शत्रु सब निहत हुए। अब समयोचित कार्य्यका अनुष्ठान कीजिये। हे महाराज! आपने विराट नगरमें अनुपक करके हमको कहा था कि, हे कृष्ण! धनञ्जय तुम्हारा भ्राता और सखा है। तुमको सब विपत्से इसका उद्धार करना होगा, यह कहके अर्जुनको हमारे हस्तमें अर्पण किया था, हमनेभी उस समय आपका वाक्य स्वीकार किया था। अब वही धनञ्जय हमसे रक्षित हो कर जयलाभ पूर्वक भ्रातृगणकी सहित यह लोमहर्षण संग्रामसे विमुक्त हुए हैं। हे महाराज! यह सुन युधिष्ठिर रोमाञ्चितकलेवर होय बोले, हे जनार्दन! महावीर द्रोणाचार्य्य और कर्णने जो अस्त्रास्त्र परित्याग किया था, तुम्हारे बिना और कौन दूसरा सह्य कर सक्ता है, तुम्हारेही अनुग्रहसे जयलाभ हुआ। विराट-नगरमें हमको महर्षि द्वैपायनने कहा था कि जहां धर्म वहांही कृष्ण और जिधर कृष्ण उधरही जय है इसमें सन्देह नहीं।

हे महाराज! अनन्तर पाण्डवपक्षीय वीरगण शिविरमें प्रवेश करके आपका असंख्य दास, दासी, सुवर्ण, रजत, मणि, मुक्ता, विविध आभरण प्रभृति प्रभूत नानाप्रकार धन प्राप्त हो कर तुमुल कोलाहल करने लगे। अनन्तर वासुदेव बोले, हे वीरगण! मङ्गलानुष्ठानकी लिये आजकी रात्रि शिविरके बहिर्भागही रहना हम लोगको कर्तव्य है। तब महावीर सात्यकि और पाण्डवगण कृष्णके सहित शिविरसे

निर्गत होय नदीके समीप उपस्थित होय वहां अवस्थान करने लगी। उसी रात्रिमें राजा युधिष्ठिर ब्राह्मणोंके अभि-प्रायसे हतपुत्रा गान्धारीके आश्वास प्रदानार्थ वासुदेवको हस्तिनानगर प्रेरण किया। इससे महात्मा वासुदेव रथा-रोहण पूर्वक गान्धारीके निकट उपस्थित हुए।

इति ६२ अध्याय।

ज०। महाराज युधिष्ठिर जयलाभ करके कृष्णको किस कारण गान्धारीके निकट प्रेरण किया सो कहिये।

वै०। राजा युधिष्ठिरने अन्याय युद्धसे दुर्य्योधनको निहत किया इससे उनको यह संशय हुआ कि पतिव्रता गान्धारी क्रुद्ध होनेसे त्रैलोक्य दग्ध कर सकती है, इससे पहिलेही उनका क्रोधशान्ति कराना कर्तव्य है। यह सोच विचार युधिष्ठिरने गांधारीके क्रोधशान्तिके निमित्त कृष्णको हस्तिनापुर प्रेरण किया महात्मा मधुसूदनने रथारोहण पूर्वक हस्तिनापुर प्रवेश किया। राजा धृतराष्ट्रभी कृष्णका आगमन समाचार जान गये। महात्मा कृष्णने धृतराष्ट्रके भवनमें उपस्थित होय महर्षि कृष्ण द्वैपायनको वहां उपविष्ट देख उनका पादवन्दन पूर्वक धृतराष्ट्र और गांधारीको अभिवादन किया। तब कृष्ण धृतराष्ट्रका हस्तधारण पूर्वक करुण स्वरसे रोदन करने लगे और कितने क्षण पीछे सलिल द्वारा नेत्र प्रक्षालन करके बोले, महाराज! आप कालकी गति सबही जानते हैं। पाण्डवगण आपके अत्यन्त अनुवर्त्ती हैं और कौरवकुल जिससे क्षय न होय इसका बहुतेरा उपाय उन्होंने किया, परन्तु कुछ फल न हुआ। पाण्डवगणने कपट द्यूतमें पराजित होय नाना देशसे विविध क्लेश सहन करते वनवास और अज्ञात-

वास किया था। युद्धकी समय हम स्वयं आपकी निकट आय केवल पञ्चग्राममात्र प्रार्थना कियी थी, परन्तु आप लोभके प्रभावसे उस समय सम्मत न हुए, इस कारण आपहीकी अपराधसे समस्त क्षत्रियकुल निर्मूल हुआ। महात्मा भीष्म द्रोण विदुर प्रभृति आपकी सुहृद्गण सबहीने संधिकी मन्त्रणा दी थी, पर आप उसमें संमत न हुए। हाय ! कालप्रभावसे सबही विमोहित हो जाते हैं। आप ज्ञानवान् हो करभी संधिका विषय उत्थापित होने पर मोहसे अभिभूत हो गये थे, इस कारण काल और भविष्य सबसे बलवान् है। हे महाराज ! आप पाण्डवगणके प्रति दोषारोप मत कीजिये। इस विषयमें धर्म न्याय और स्नेहसे उन लोगोका अणुमात्रभी व्यतिक्रम नही दृष्टि होता है। यह कुलक्षय आपहीके दोषसे उत्पन्न हुआ है। यही विवेचना करके आप पाण्डवगणके प्रति असूयाशून्य होइये। अब कुलरक्षा और पिण्डप्रदानादि समस्तक्रियाकलापका भार पाण्डवोंही पर है, इस कारण आप और पतिव्रता गांधारी शोकावेग सम्वरण और पाण्डव-गणके प्रति रोष परित्याग पूर्वक उन लोगको प्रतिपालन कीजिये। आपके ऊपर धर्मराजकी जैसी भक्ति और स्नेह है सो आप जानते हैं। वह समस्त शत्रुगणको विनाश कर-केभी दिवारात्रि दुःखानलसे दग्ध होते हैं। आप और गांधारीका शोक स्मरण करके उनको लेशमात्रभी सुख नही है। आप पुत्रशोकसे सन्तप्त हुए इस कारण लज्जासे वह आपके संमुख आवने नहीं सकते हैं। यह कहके वासुदेव गांधारीसे बोले, हे सुबलनन्दिनि ! इस लोकमें तुम्हारे तुल्य दूसरी स्त्री नहीं है, आपने सभामें हमारे संमुखही अपने पुत्रको उभयपक्षको हितकर, धर्मार्थसङ्गत वाक्य कहा था, परंतु आपके पुत्रगणने उसका प्रतिपालन

नहीं किया। आपने उस समय तिरस्कार पूर्वक दुर्य्योधनको कहा था, रे मूढ़! हम कहते हैं "कि जहां धर्म वहांही जय" अब वही आपका वाक्य प्रत्यक्ष हुआ। इस कारण आप आद्योपान्त समस्त चिन्ता करके शोक परित्याग कीजिये। हे महाभागे! आप मनमें करें तो अपने तपोबलसे समस्त चराचर संसारको दग्ध कर सकती हैं, परंतु अनुग्रह करके पाण्डवगणकी विनाशवासना मत कीजिये।

यह सुन गांधारी बोलीं, हे केशव! तुम जो कहते हो सो सत्य है। दारुण शोकावेगसे मेरा मन विचलित हुआ था, परंतु तुम्हारी बात श्रवण करके हमने अब शान्तभाव अवलम्बन किया। जो होय वृद्ध राजा एक तो अंध उस परभी पुत्रविहीन हो गये, अब तुम पाण्डवगणके सहित उनके अवलम्बन हुए। यह कहके गांधारी अंगवस्त्रसे मुखाच्छादन करके रोने लगीं। तब वासुदेवने हेतुगर्भ वाक्यसे उनको विविध आश्वास प्रदान करने लगे।

इसी प्रकारसे वासुदेव उनका शोकापनोदन कर रहे थे कि इतनेमें उनको अश्वत्थामाकी दुरभिसंधि जान पड़ी तो शीघ्रही गात्रोत्थान पूर्वक व्यासदेवके चरणमें प्रणिपात करके उनके समक्ष धृतराष्ट्रसे कहा, महात्मन्! अब आप शोक मत कीजिये। हम जाते हैं। अश्वत्थामाने आज रात्रिहीको पाण्डवगणके विनाशार्थ अभिसंधि किया है। यह कारण होनेसे हम व्यस्त हो कर उठे हैं। तब धृतराष्ट्र और गांधारी बोले, तुम शीघ्र वहां गमन करके पाण्डवगणकी रक्षा करो। अनन्तर वासुदेव दारुकसारथीसञ्चालित रथ पर आरोहण करके रात्रिहीको हस्तिनासे शिविरके निकट उपस्थित होय पाण्डवगणके निकट गमन पूर्वक समस्त वृत्तान्त जनाके सावधानतासे अवस्थान करने लगे। इधर जगत्पूज्य महर्षि

कृष्णद्वैपायन नरपति धृतराष्ट्रको आश्वास प्रदान करने लगे।

इति ६४ अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! अतिक्रोधी दुर्य्योधनका उरुद्वय भग्न होनेसे और भीमसेनके वारम्बार पदाघात करनेसे उसने क्या कहा? सो कहो।

सञ्जय बोले, महाराज! राजा दुर्य्योधन भग्नोरु और धूलिविलुण्ठितकलेवर होय क्रुद्धभुजङ्गके समान दीर्घनिश्वास परित्याग पूर्वक वाष्पाकुललोचनसे वारंवार हमको निरीक्षण, धरणीतलमें बाहु निष्पेषण, और दशनिपीड़न करने लगे। अनन्तर युधिष्ठिरको निन्दा करके कहने लगे, हाय! महावीर भीष्म, द्रोण, कर्ण प्रभृति वीरगण हमारी रक्षा करते तौभी हम ऐसे दुरवस्थाग्रस्त हुए। अब हमलोगोंमें कोई जीवित होंय तो हमारे आज्ञानुसार कहना की भीमने नियम लङ्घन करके हमको विनष्ट किया और पाण्डवगणने भूरिश्रवा, भीष्म, द्रोण और कर्णके प्रति अति नृशंस व्यवहार किया है। पापात्मा वृकोदर अधर्मयुद्धमें जय लाभ करके जैसा संतुष्ट हुआ है और कौन पुरुष ऐसा करके आनन्दित होगा? इस समय हमारा उरु भग्न हुआ, तो भीम हमारे मस्तक पर पदाघात करे इसका आश्चर्य्यही क्या है? जो पुरुष बन्धुबान्धव और प्रतापशाली पुरुषका अवमानना करे वह क्या सम्मानके योग्य है?

हे संजय! हमारे पितामाता युद्धधर्म विलक्षण जानते हैं, तुम हमारे वाक्यानुसार उनसे कहना कि हमने जगत्‌के समस्त कार्य्य, सुखभोग और जीवित शत्रुगणके मस्तकपर अवस्थान कर लिया है और अब इस समय धर्मयुद्ध करके उत्कृष्ट लोक

लाभ किया। सो हमारे सदृश सौभाग्यशाली और दूसरा कौन है? क्षत्रियगण जैसी मृत्युइच्छा करते हैं वैसही हमको प्राप्तहुई।

बड़े सौभाग्यहीसे हमको शत्रुगणसे पराजित होय मृत्युके समान उनका आश्रय लेना न पड़ा। निद्रित वा प्रमत्त शत्रुको विनाश करनेसे जैसा पाप होता है अधार्मिक वृकोदरने नियम लङ्घन पूर्वक हमको निपातित करके वैसही पापानुष्ठान किया। हे सञ्जय! तुम हमारे वाक्यानुसार अश्वत्थामा, कृतवर्मा और कृपाचार्य्यसे कहना कि पाण्डवगण नियमलङ्घन करके अधर्मानुष्ठान करते गये हैं, इस कारण किसी प्रकार-सेभी उनका विश्वास मत करना। हे महाराज! कुरुराजने हमसे इतना कहके वार्त्तावहगणको आह्वान करके कहा। देखो भीमसेनने अधर्मयुद्धसे हमको विनाश किया। अब हम द्रोण प्रभृति वीरगणका अनुगमन करेंगे। हाय! हमारी भगिनी दुःशला भ्रातृगण और भर्त्ताकी निधनवार्त्ता श्रवण करके दुःखित होय कैसे जीवनधारण करेगी। हमारे वृद्ध पिता, जननी गांधारी, पुत्रवधु, और पौत्रवधुगण अति शोकाकुल होंगी। हमारी भार्य्या हमारा औ आत्मज लक्ष्म-णका निधन वृत्तान्त श्रवण करके निश्चयही प्राण परित्याग करेगी। इस समय यदि वाग्विशारद परिव्राजक चार्वाक यह वृत्तान्त जान पावे तो निश्चयही वैरनिर्यातन करनेको प्रवृत्त होंगे। जो होय आज हमने इस पवित्र त्रिलोक विश्रुत समन्तपञ्चक तीर्थमें कलेवर परित्याग करके श्रेष्ठगति लाभ किया।

हे महाराज! दुर्य्योधनके विलाप और परितापसे वहां सबही अश्रुजल विसर्जन करने लगे, अनन्तर वही वार्त्तावह-गणने अश्वत्थामाके निकट जाय गदायुद्ध और दुर्य्योधनका

निपात वृत्तान्त निवेदन करके अपने अपने स्थानको प्रस्थान किया।

इति ६५ अध्याय।

हे महाराज! शस्त्राघातसे जर्जरित कलेवर हतावशिष्ट महावीर अश्वत्थामा, कृप और कृतवर्म्माने दुर्य्योधनका ऊरु-भङ्ग वृत्तान्त श्रवण करके रथारोहणपूर्वक शीघ्र संग्रामस्थलमें उपस्थित हो कर देखा कि रुधिराक्तकलेवर महाराज दुर्य्योधन वायुवेगविपाटित महावृक्षके समान भूतल पर निपतित हैं और उनका सर्वाङ्ग धूलिजालसे धूसरित है। धनलोलुप भृत्यगण जैसे नरपतिको चतुर्दिक्‌मे वेष्टन करते हैं, वैसेही भूत और राक्षसगण उनको परिवेष्टित किये हैं। क्रोधसे उनका दोनो नयन उद्धृत और ललाट भ्रुकुटिकुटिल हो रही है। अश्वत्थामा कुरुराजकी ऐसी अवस्था देख कर शोकसे अति सन्तप्त हुए और तीनोजन अपने अपने रथसे अवतीर्ण होय उनके निकट गमन करके भूतलमे उपविष्ट हुए। तब अश्वत्थामा वाष्पाकुललोचन, दीर्घनिश्वास परित्याग पूर्वक दुर्य्योधनसे बोले, हे सर्व्वलोकेश्वर! जब आपकी यह दशा है तो जगत्‌की समस्त पदार्थही व्यर्थ हो। हाय! पहिले आपने ससागरा धरा शासन किया तो आज कैसे एकाकी इस निर्जन स्थानमे अवस्थान करते हो? कालकी क्याहो आश्चर्य्य महिमा है, हे महाराज! आपका वह श्वेतछत्र और वह निर्म्मल-व्यजन और वह एकादश अक्षौहिणी सेना कहां गयी! कार्य्यकारणकी गति अति दुर्ज्ञेय है अब तुम्हारा दुःख देखके निश्चय होता है कि लक्ष्मी चिरदिन किसीके पास स्थिर नहीं रहती।

हे महाराज! उस समय दुर्योधन नयनद्वयपरिमार्जन

और वाष्पवारिविसर्जन पूर्वक बोले, हे वीरगण! पण्डित लोग कहते हैं कि कालक्रमसे समस्त भूतोंका विनाश होता है। लोकस्रष्टा विधाताने यही नियम लगा दिया है। इस आपलोगके देखतेही विनाशको प्राप्त हुए। हम पूर्वमें समस्त पृथिवी पालन करके अब ऐसे दुरवस्थामें पड़े हैं। जो होय भाग्यबलहीसे किसी विपदमेंभी समरपराङ्मुख न हुए। भाग्यहीसे पापात्माने छलपूर्वक हमको विनाश किया। और आज जो आप लोगोंको भीषणसंग्रामसे विमुक्त देखा यहभी हमारा परम सौभाग्य है और लोग हमारे निधन होनेसे कुछभी अनुताप मत कीजिये। यदि वेदवाक्य यथार्थ होय तो हम निश्चयही स्वर्ग लाभ करेंगे। हम अमिततेजा वासुदेवका माहात्म्य विलक्षण जानते हैं, उन्होंने हमको क्षत्रियधर्मसे परिभ्रष्ट नहीं किया इस कारण, हमारे लिये शोक करनेका प्रयोजन क्या? आप लोगनेभी अपने अपने उत्साह और पराक्रमके अनुसार कार्य्यानुष्ठान और जय लाभ करनेको यत्न किया। परन्तु अन्तको शत्रु पराजय न कर सके तो क्या करोगे? दैवका अतिक्रम करनेका किसीकाभी साध्य नहीं।

हे महाराज! दुर्य्योधन यह कहके वाष्पाकुल नयन और व्यथासे विह्वल होय चुप हो रहा। तब महावीर अश्वत्थामा प्रलयकालीन हुताशनके समान क्रोधसे प्रज्वलित होय हाथसे हाथ निपीड़न करके वाष्पगद्गद स्वरसे बोले, महाराज! नीचाशय पाण्डवगणने अति नृशंस व्यवहार द्वारा हमारे पिताको निहत किया। परंतु आज तुम्हारे लिये जैसा अनुताप होता है वैसा उनके निमित्त न हुआ था, जो होय अब हम इष्टापूर्त्त, दान, धर्म, सुकृत और सत्य द्वारा शपथ करके कहते हैं कि जिस प्रकारसे हो आज वासुदेवके समक्षही

समस्त पाञ्चालगणको यमालय प्रेरण करेंगे। आप अब आज्ञाप्रदान कीजिये।

हे महाराज! दुर्य्योधन यह श्रवण करके परमप्रीत होय कृपाचार्य्यसे बोला, हे आचार्य्य! शीघ्र जलपूर्णकलश आनयन कीजिये।

कौरवहितैषी कृपाचार्य्य आपके पुत्रकी आज्ञा पातेही जलपूर्ण कलश लेआये। तब दुर्य्योधन बोले, हे द्विजश्रेष्ठ! जो आप हमारे हिताकांक्षी हैं तो शीघ्रही द्रोणतनयको सेनापति पदमें अभिषिक्त करो। धर्मज्ञ पुरुष कहा करते हैं कि राजाकी आज्ञा करतेही क्षत्रियधर्मावलम्बी ब्राह्मणको युद्ध करना दोष नहीं है। महावीर कृपाचार्य्यने तत्क्षणात् अश्व-त्थामाको सेनापति पदमें अभिषिक्त किया।

तब महावीर अश्वत्थामाने दुर्य्योधनको आलिङ्गन पूर्वक सिंहनादसे दशदिक प्रतिध्वनित करते हुए कृपाचार्य्य और कृतवर्माके सहित वहांसे प्रस्थान किया। और रुधिराक्तकलेवर राजा दुर्य्योधन उसी भयावह स्थानमें रजनी अतिवाहित करने लगे।

इति ६६ अध्याय।

शल्यपर्व सम्पूर्ण हुआ।

श्रीमहाभारत

भाषा।

सौप्तिक पर्व्व।

नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत्॥

सञ्जय बोले, महाराज! इसीप्रकारसे अश्वत्थामा कृतवर्मा और कृपाचार्य्य शङ्कित होके गुप्त भावसे पाण्डवगणके बल-वीर्य्यकी चिन्ता करने लगे, और राजा दुर्य्योधनकी दुर्दशा देखके क्रोधसे सन्तप्त और पिपासार्त्त होके मुहूर्त्तकाल विश्राम किया।

धृतराष्ट्र बोले, सञ्जय! भीमने ऐसे बलवान् दुर्य्योधनको विनष्ट करके बड़े आश्चर्य्य कामका अनुष्ठान किया, हाय! हमारे ऐसे पुत्रको पाण्डवगणने निपातित किया! और हम ऐसे पाषाणहृदय है, जो सौ पुत्रोंका निधनदशा सुनकेभी अभीतक जीते हैं, हमारे शतपुत्रघाती भीमके आज्ञानुवर्त्ती होय दासके समान अब हम किस प्रकारसे वास करेंगे। विदु-रका बात हमने नहीं सुना अब यही फल घटा है, हे सञ्जय! भीमने अधर्मयुद्ध करके दुर्य्योधनको मारा तब अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य औ कृतवर्माने क्या किया? सो कहो।

सञ्जय बोले, महाराज! अनन्तर रात्रिके समय वह तीनो वीर एक महा भारी बटवृक्षके तले उपविष्ट होके दुःखित मनसे कथोपकथन करते करते निद्रित हुए, परन्तु अश्वत्थामा पाण्डवों पर अत्यन्त क्रुद्ध था उसको निद्रा न हुई। चतुर्दिक्

दृष्टिपात किया करते थे, उसी वनमें एक वटवृक्ष पर अनेक वायसगण अपने अपने आवास गृहमें सुखसे निद्रा करते थे, उसी समय एक महाबलवान् उल्लू पक्षी उस वृक्षपर आके धीरे धीरे काकगणके निकट जाय किसीका पक्षच्छेद किसीका मस्तकच्छेदन और किसीका पदभङ्ग करके वहांके कौवोंको निःशेषित कर दिया। वायसान्तक उलूक इसी प्रकारसे वैरनिर्य्यातन करके परमाह्लादित हुआ।

यह देखके अश्वत्थामा मनमें कहने लगे कि इस उलूकने हमको वैरनिर्य्यातनका उपदेश दिया इस घड़ि शत्रु विनाशका उपयुक्त समयभी उपस्थित हुआ, आज हमने दुर्य्योधनसे पाण्डवगणको विनाश करनेकी प्रतिज्ञाभी किया है, परन्तु सम्मुखसंग्राममें हम पाण्डवगणको पराजय नही कर सक्ते हैं, इस कारण छलभाव अवलम्बन करनेसे निश्चयही कार्य्यसिद्ध होगा।

इसी प्रकारसे अश्वत्थामा छलसे अर्द्ध रात्रके समय प्रसुप्त पाण्डवगणको विनाश करनेका निश्चय करके मातुल कृपाचार्य्य और भोजराज कृतवर्माको जागरित किया, वह दोनो वीर ऐसी मन्त्रणा श्रवण करके लज्जित होय कुछभी न बोले। अनन्तर द्रोणपुत्र मुहूर्तकाल चिन्ता करके दुःखी होकर बोले, मातुल! देखिये पाण्डवगणने समस्त कौरव सैन्यको विनाश किया। देखिये भीमसेनने महाराज दुर्य्योधनको निहत और उनके मस्तक पर पदार्पण करके अति निठुरता किया है, सब-कोई विनाश होगए केवल हमलोग तीनजन अवशिष्ट रह गए अब जो मोहवश होय आपकी बुद्धिभ्रंश न हुई हो तो आप कहिये कि, अब हमलोगको क्या करना चाहिये।

इति १ अध्याय।

कृपाचार्य्य बोले, हे वीर! हमने तुम्हारी बात सुना हम जो कहते हैं सो श्रवण करो। मनुष्य लोग दैव और पुरुष-कार साध्य कर्मसे बद्ध हुए हैं, दैव और पुरुषकारसे और कोई बलवान नही है, एक दैवहीसे अथवा केवल पुरुषकार-हीसे कोई कार्य्यभी सिद्ध नही हो सक्ता है, इन दोनोका एकत्र समावेश न होनेसे सिद्धि लाभ होना कठिन है। उत्कृष्ट अथवा अपकृष्ट हो समस्त कार्य्यही दैव और पुरुषकार दोनोके अधीन है और दोनोकी अपेक्षा रखता है। पर्वत पर जो वर्षा होती है वह कुछ फल नही देती, परन्तु कृषि-क्षेत्रमे जल बरसनेसे प्रचुर अन्न होता है। दैवहीन पुरुष-कार और पुरुषकारहीन दैव दोनोही निष्फल है, दैव और पुरुषकार दोनोकी अनुकूलता रहनेसे मनुष्य अवश्यही फल लाभ कर्ते हैं, क्षेत्र सम्यक् कर्षित और वारिधारासंसिक्त होनेसे उसमे प्रचुर शस्य उत्पन्न होता है, अनेक स्थानमे दैव पुरुषकारका अपेक्षा न कर्के स्वयं फल प्रदान कर्ते हैं, परन्तु विवेचक लोग दैवबल अवलम्बन पूर्वक पुरुषकारहीमे मनो-निवेश कर्ते हैं। जो होय मनुष्यका समस्त कार्य्य दैव और पुरुषकार दोनोहीका सापेक्ष है इसमे कुछ सन्देह नही है।

पुरुषकारसे कार्य्यमे प्रवृत्त होनेसे वह कार्य्य दैवबलसे सिद्ध होता है, और उसी दैवबलके प्रभावसे कर्मकर्त्ता फल लाभ करता है। मनुष्य दैवबलशून्य पुरुषकार प्रकाश कर्नेसे वह निष्फल होता है। अलस और निर्बोध जन पुरुषकारमे अश्रद्धा दिखलाते हैं, परन्तु बुद्धिमान् जनके मतमे यह युक्ति संगत नही है। कार्य्यका अनुष्ठान कर्नेसे प्राय निष्फल नही होता है, जो होय यदि कोई पुरुष कार्य्यानुष्ठान विना किये, इच्छाफल प्राप्त हो अथवा कोई पुरुष कार्य्यानुष्ठान कर्केभी फल भोगनेसे वञ्चित होय तो इन दोनोप्रकारके मनुष्योको

दुर्दशापन्न होना पड़ता है। कार्य्यदक्ष लोग अक्लेश काल-यापन कर सक्ते हैं, परन्तु आलसी किसी प्रकारसेभी सुख लाभ करनेको समर्थ नही होता है। इस लोकमें निपुण लोगही हितैषी होते हैं। कार्य्यदक्ष जन अनुष्ठित कार्य्यके फल भोगनेको समर्थ हो वा न हो किसी बातसेभी वह निन्दनीय नही होते हैं, परन्तु जो पुरुष कोई कार्य्यानुष्ठान विना किये फल लाभ करे वह अत्यन्त निन्दनीय और सबके विद्वेषभाजन होंगे, इसी कारणसे बुद्धिमान लोग कहा करते हैं कि, जो पुरुष पुरुषकारका अनादर करता है वह अपना अनिष्टसाधन करता है।

दैव और पुरुषकार विना कोई कामही सिद्ध नही होता है, यदि पुरुषकारसम्पन्न लोग दैव बल आश्रय करके कोई कार्य्यानुष्ठान करे तो उसका कार्य्य अवश्यही सफल होगा। सबहीको वृद्ध लोगोंसे सहवास और उन लोगोका उपदेश ग्रहण और उसी उपदिष्ट कार्य्यका अनुष्ठान करना अवश्य कर्तव्य है।

अभ्युदय कालमें सर्वदा बूढ़ोंसे मन्त्रणा पूछना चाहिये अलभ्य वस्तुके लाभ और कार्य्य सिद्धिके वृद्ध लोगही मूल कारण है, जो जन वृद्धवाक्य श्रवण करके पुरुषकार प्रदर्शन करते हैं, वह शीघ्रही फल लाभ करते हैं, जो लोग क्रोध, भय और लोभ परतन्त्र होके किसीसे मन्त्रणा न करके कार्य्यानुष्ठान करें, वह शीघ्रही श्रीभ्रष्ट होंगे देखिये अदूरदर्शी लुब्धप्रकृति दुर्य्योधन हितबुद्धिसम्पन्न लोगोका अनादर औ असाधु लोगोका मन्त्रणा ग्रहण करके हम लोगने वारंवार निवारित किया तौभी गुणशाली पाण्डवगणसे वैराचरणमें प्रवृत्त हुआ था, उसीसे अब परितापित होता है, हम लोग उसी पापात्माके अभिप्रायानुसार कार्य्या-

नुष्ठान करते हैं, इसीसे हम लोगको ऐसी भयङ्कर दुर्द्दशा उपस्थित हुवी, हम उसी दुरात्माके कारण दुःखसागरमे डुबे हैं, अब उसी दुःखके प्रभावसे हमारी बुद्धि अत्यन्त व्याकुल हो गई है, इसीसे किसी प्रकारसेभी सद्विवेचना करनेको असमर्थ है।

यह नियम है कि मनुष्य मोहान्ध न होय तो सुहृद लोगसे मन्त्रणा पुछे उस समय केवल वही सुहृद्‌गणही उसके बुद्धि विनय और श्रेयोलाभके कारण है, इसे उनके वाक्यानुरूप कार्य्य करनाही सर्वप्रकारसे कर्तव्य है, इससे चलो हम लोग राजा धृतराष्ट्र, गान्धारी और विदुरके निकट जाके इस विषयका मन्त्रणा पूछे वह लोग विवेचना करके जो बात हितकर कहेंगे हम लोग वही करेंगे, कार्य्य आरम्भ न करनेसे कदाच फल नही मिलता और पौरुष प्रकाश पूर्वक कार्य्यारम्भ करनेसेभी निष्फल होय तब दैवहीको उसका प्रतिबन्धक कहना होगा इसमे कुछ सन्देह नही है।

इति २ अध्याय।

सञ्जय बोले, महाराज! अश्वत्थामाने कृपाचार्य्यका वाक्य श्रवण करके शोकानलसे दग्ध होके क्रूर भावसे कहने लगा। हे वीरद्वय! मनुष्यमात्रकी बुद्धिवृत्ति पृथक् पृथक् है सबही दूसरेसे अपनेको अधिक बुद्धिमान् ज्ञान करके अपनी प्रशंसा और दूसरेकि निन्दा किया करते हैं, एक एक विषयमे जिनसे बुद्धि मिलती है पुनः दूसरे विषयमे विपरीत हो जाती है, मनुष्यके चित्तकी विचित्रताही बुद्धिके विचित्रता कारण है जैसे विज्ञ वैद्य रोग निर्णय करके बुद्धि प्रभावसे औषध निर्णय करते हैं, वैसही मनुष्य लोगभी अपने कार्य्यसिद्धिके लिये बुद्धि द्वारा उपाय निर्द्धारण करते हैं, बहुतेरोंके बुद्धिकी

एकता होनी दूर रहे, एक मनुष्यकी बुद्धिभी सदा समान नहीं रहती है, देखिये मनुष्य यौवन कालमे जैसा बुद्धि प्रभावसे विमोहित रहता है, प्रौढ़ावस्थामे वैसी नहीं रहती और प्रौढ़ावस्थाकी बुद्धि वृद्धावस्थामे नहीं रहती, हे वीर! विषम दुःख अथवा अधिक सम्पदके समय मनुष्यकी बुद्धि विकृत हो जाती है सब मनुष्यही अपने बुद्धिसे कार्य्यका निश्चय करके उसमे प्रवृत्त होते हैं, इससे बुद्धिकोही कार्य्यका उद्योगकारिणी कहना चाहिये। कारण आदि कार्य्यकी उत्कृष्ट विवेचना करके मनुष्य लोग प्रसन्नचित्तसे ऐसे निन्दनीय कार्य्यका अनुष्ठान किया करते हैं, फलतः सबही अपनी अपनी बुद्धि प्रभावसे निर्णय करके कार्य्यका अनुष्ठान किया करते हैं। विषम दुःखके प्रभावसे आज हमारी जैसी बुद्धि हुई है, सो व्यक्त कर दिया, हमने स्थिर किया है, कि ऐसाही करनेसे हमारा शोक दूर होगा। देखिये प्रजापति ब्रह्माने सृष्टि रचना करके ब्राह्मणको वेद, क्षत्रियको तेज, वैश्यको दक्षता और शूद्रको सकल वर्णकी अनुकूलता प्रदान किया है, जो पुरुष अपना धर्मत्याग करेंगे, वह निन्दनीय होते हैं, हमने ब्राह्मण कुलमे जन्मभी लिये तौभी भाग्यदोषसे क्षत्रिय धर्मका आश्रय किया है, इस समय हम ब्राह्मणधर्मका आश्रय करके शान्तिभाव धारण करें तो अवश्यही निन्दनीय होना पड़ेगा, हमने दिव्य शरासन ग्रहण किया, और पितृबधका प्रतिकार न किया तो किस प्रकारसे जनसमाजमे हमारा वाक्य स्फूर्त्ति हो सकेगा इस कारण हम आज निश्चयही क्षत्रधर्मानुसार तेज प्रकाश करेंगे। व्यायाम-परिश्रान्त पाञ्चालगण जय लाभसे प्रफुल्ल होके कवच परित्याग पूर्वक विश्वस्त होके निद्रागत होंगे, उसी समय रात्रिमे शिविराभ्यन्तर गमन पूर्वक उन लोगको

संहार करेंगे, आज धृष्टद्युम्न प्रभृति वीरगणको अनलदग्ध अरण्यके समान विनष्ट और पाण्डवगणका प्राण संहार करके शान्ति लाभ करेंगे। आज हम पाञ्चालगणको विनाश करके पिताका ऋण परिशोध करेंगे, आज हम पशुहन्ता शिवके समान रात्रिके समय धृष्टद्युम्नको निपातित करके निशित खड्गाघातसे पाञ्चालगण, पाण्डवगण और निद्रित सन्तानगणके सहित तत्पक्षीय समस्त सैन्यका प्राणसंहार पूर्वक कृतकार्य्य और सुखी होंगे।

इति ३ अध्याय।

कृपाचार्य्य बोले, वत्स! आज बड़े सौभाग्यहीसे वैरनिर्य्यातनको तुम्हारी बुद्धि हुई है, स्वयं इन्द्रभी तुमको निवारण करनेको समर्थ नही हैं, हमारी इच्छा है, कि तुम आजकी रात्रि विश्राम करो प्रातःकालही युद्ध यात्रा करेंगे, हम और कृतवर्माभी तुम्हारा अनुगमन करेंगे, ऐसा होनेसे तुम अवश्यही जय लाभ कर सकोगे अनेक दिनसे जागरण होता है सो आज तुम निद्रासुख अनुभव करो विश्रान्त औ स्थिरचित्त होनेसे अवश्यही शत्रुदल संहार कर सकोगे हम और कृतवर्मा पाण्डवगणको पराजय न करके कभी समरसे पराङ्मुख न होंगे होय तो हम लोग शत्रुसंहार करेंगे नही तो शत्रुसे निहत हो कर स्वर्ग प्राप्त होंगे, हम सत्य कहते हैं, कल प्रातःकालही हम कृतवर्माके सहित सर्वप्रकारसे तुम्हारी सहायता करेंगे।

हे महाराज! यह सुन अश्वत्थामा रोषारुण नेत्रसे दृष्टिपात करके बोला, हे मातुल! आतुर, अमर्षित, चिन्ताव्याप्त और कामुक जन कभी निद्रासुख अनुभव नही कर सक्ता है। आज अमर्ष प्रभावसे हमारी निद्रा विच्छेद

हो गई है। देखिये इस लोकमे पितृवधसे अधिक और दुःख क्या है? पापात्माने, जैसे हमारे पिताको निहत किया है आप जानते हैं, तादृश पितृवध वृत्तान्त श्रवण करते कौन पुरुष जीवन धारण कर सक्ता है? अब धृष्टद्युम्नको विनाश किये बिना जीवन धारणको वासना हम नही करते हैं, और भग्नोरू राजा दुर्य्योधनने जैसा विलाप किया सो सुनके कौन पाषाणहृदय विदीर्ण न होगा, अब हम शत्रु विनाश करनेको एकाग्रचित्त हो चके हैं, निद्रा अथवा सुखानुभवका सम्भावना क्या है? हम ठीक जानते हैं कि अर्जुन और वासुदेव जिस्के रक्षक हैं, उस्का कोई कुछ नही कर सक्ता तथापि हम क्रोध-वेग किसी प्रकारसे सम्बरण नही कर सक्ते हैं, इस समय इस क्रोधसे हमको रक्षा करे ऐसा कोइ नेत्रगोचर नही होता, इससे हमने जो स्थिर किया है, वही श्रेयस्कर है, हम आज रात्रिहीमे निद्रित शत्रुगणको विनाश करके स्वस्थचित्तसे विश्राम और निद्रासुख अनुभव करेंगे।

इति ४ अध्याय।

कृपाचार्य्य बोले, बुद्धिहीन मनुष्य जितेन्द्रिय होने परभी धर्मार्थ नही जान सक्ता है, और बुद्धिमान् पुरुष विनय शिक्षा न करे तो धर्मार्थनिर्णय करनेको असमर्थ रहेगा, जिस प्रकारसे दर्वी नियत रन्धनपात्रमे निमग्न रहकेभी उसके रसास्वादनसे वञ्चित रहती है, वसही जड़ पुरुष सर्वदा पण्डितकी उपासना करकेभी धर्मज्ञ नही होता है।

परन्तु जिह्वास्पर्श करतेही भक्ष्यद्रव्यका आस्वादन ग्रहण कर लेती है, वैसही बुद्धिमान पुरुष अति अल्पक्षण पण्डि-तकी उपासना करके धर्ममर्म ग्रहण कर सक्ते हैं। गुरु-शुश्रूषातत्पर बुद्धिमान जितेन्द्रिय लोग शीघ्रही सर्वशास्त्रज्ञ

होते हैं। वह लोग कदाच सर्व सम्मत विषय पर विवाद नही करते हैं। दुर्विनीत पापात्मा जन सज्जनका कल्याणकर उपदेश उल्लङ्घन करके महापापमें लिप्त होते हैं। सुहृद्गण पापसे निवृत्त करानेकी चेष्टा करनेसे जो कोई पापानुष्ठानसे विरत होते हैं वह लोग सम्पद्भाजन हो सक्ते हैं, और जो लोग सुहृद्वाक्यका उपेक्षा करके पाप कार्य्यसे विरत नही होते हैं, वह लोग निश्चयही भ्रष्ट होजाते हैं हे द्रोण तनय! तुम कल्याणकर विषयमें मनोनिवेश और आत्मदमन करके हमारा वाक्य रक्षा करो नहो तो अवश्यही तुमको अनुताप करना पड़ेगा। प्रसुप्त, न्यस्तशस्त्र, रथहीन, वाहन-हीन, शरणागत और मुक्तकेश मनुष्यगणको बध करना धर्मविरुद्ध है और जो कोई ऐसा धर्मविरुद्ध कार्य्य करते हैं, वह अगाध नरकमें मग्न होते हैं। तुम वीरगणमें अग्रगण्य और विख्यात हो, अगमाखनेभी तुमको कधि स्पर्श नही किया इस्से तुम सूर्य्य उदय होतेही प्रकाश्य युद्ध करके शत्रु जय करो, ऐसा पापानुष्ठान करोगे तो शुक्लवस्त्र पर शोणित पातके तुल्य अप्रीतिकर होगा।

अश्वत्थामा बोले, मातुल! आपने कहा सो ठीक है, परन्तु पहिलेही धर्मसे तुमको पाण्डवगण सौ टुकड़े कर डाला है, देखिये हमारे पिताके अस्त्र त्याग करने पर धृष्टद्युम्नने उनका प्राण संहार किया। कर्णका रथचक्र पृथिवीमें प्रोथित होनेसे अर्ज्जुनने उसी विपत्कालमें उस्का संहार किया और शिखण्डीको अग्रसर करके न्यस्तशस्त्र निरायुध भीष्मको विनाश किया। सात्यकिने प्रायोपविष्ट भूरिश्रवाको और भीमसेनने अन्याय गदायुद्धमें दुर्य्योधनको विनाश किया, हे मातुल! इसी प्रकारसे दुरात्मागणने वारम्वार धर्मसेतु भग्न किया आपक्यों उन लोगकि निन्दा नही करते हैं, आजही

रातमें पिटहन्तागणको सुप्तावस्थामें हम निपातित करेंगे, दूसरे यदि हमको कीट अथवा पतङ्ग योनिमें जन्मग्रहण करना पड़े सोभी श्रेय है, आज हम अभिप्रेतसाधनमें अत्यन्त तत्पर हुए हैं, आज हमको इस अध्यवसायसे निरस्त कर सकै ऐसा कोई नहीं है और न होगा।

सञ्जय बोले, महाराज! अश्वत्थामा यह कहकै रथारोहण पूर्वक शिविराभिमुख यात्रा किया, तब कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मा बोले, हे महावीर! हमलोग तुम्हारे दुःखसे दुःखी औ सुखसे सुखी हैं, इसमें तुम कुछ आशङ्का हमलोगसे मत करो यह कहकर उनके पश्चात् धावमान हुए।

अनन्तर वह लोग प्रसुप्त जनपूर्ण शिविरके निकट उपस्थित हुए। महारथ अश्वत्थामाने कृपाचार्य्य और कृतवर्म्माको आमन्त्रण पूर्वक शिविरद्वार पर गमन करके रथवेग सम्वरण किया।

इति ५ अध्याय।

सञ्जय बोले, महाराज! इसी प्रकारसे महारथ अश्वत्थामा क्रोधभरे शिविरद्वारदेशमें आगमन करके वहां चन्द्र और सूर्य्यके समान प्रभासम्पन्न एक महाकाय पुरुषको अवलोकन करके कुछभी भीत न होके उनके ऊपर दिव्यास्त्रजाल निक्षेप करने लगे। और वह महाकाय पुरुष जैसे बड़वानल समुद्रके सलिलप्रवाहको ग्रास करता है, तद्रूप द्रोणपुत्रनिक्षिप्त शरनिकर ग्रास करने लगे। तब अश्वत्थामा क्रुद्ध होकर एक एक करके समस्त अस्त्रको निक्षेप करकेभी क्षय होते देखकर इधर उधर दृष्टिपात करके देखा कि वही महापुरुषके तेजराशि-विनिर्गत, असंख्य शंखचक्रधारी हृषिकेशसे आकाशमण्डल समाच्छन्न हो गया है। यह

अद्भुत व्यापार देख कर कृपाचार्य्य वाक्य स्मरण पूर्वक सन्ताप होय चिन्ता करने लगे कि जो पुरुष सुहृद का हितकर वाक्य अप्रिय जानके अनादर करता है, उसको हमारे तुल्य विपद्-सागरमे निमग्न होके शोक प्रकाश करना पड़ताही है, इसमे कुछ सन्देह नही है। जो पुरुष शास्त्र सम्मत पथ अतिक्रम करके शत्रु संहारका अभिलाष करता है, उसकी यही दशा होती है, वृद्धलोग सदा यह उपदेश देते हैं जो गौ, ब्राह्मण, नृप, स्त्री, सखा, माता, गुरु, और मृतप्राय, जड़, अन्ध, निद्रित, भीत, मदमत्त, उन्मत्त और अनवहित जन पर कदाच शस्त्र प्रहार न करना। हम वही सनातन पथ परि-त्याग करके इस घोर विपत्मे गिरे। विज्ञजनके मतमे किसी महत्कार्य्यका अनुष्ठान पूर्वक अशक्ति निबन्धन भीत होके उससे विरत होनेहीको घोर विपद् कहा है। दैवसे पुरुषकार कदाच श्रेष्ठ नही है, यदि कोई किसी कार्य्यानुष्ठानमे प्रवृत्त होके दुर्दैव वश होय सिद्ध न कर सके तो उसको धर्मपथसे परिभ्रष्ट और विपद्ग्रस्त होना पड़ता है। यदि कोई पुरुष पहिले प्रतिज्ञा करके किसी कार्य्यानुष्ठानमे प्रवृत्त होय पश्चात् भयप्रयुक्त उससे विरत होय तो वह मनुष्यका पहिले प्रतिज्ञा करना अति मूर्खताका कार्य्य कहा जाता है, अब हम असत्का-र्य्यके साधनमे उद्यत हुए इसीसे यह भय उपस्थित हुआ, यह जो महापुरुष हमारा प्रतिबन्धकताचरण करते हैं, हम बारम्बार चिन्ता करकेभी जाननेको समर्थ नही होते हैं, निश्चय होता है कि यह हमारे अधर्ममे प्रवृत्त कलुषित बुद्धिके भयङ्कर फल स्वरूप हैं। हम कदाच समरसे पराङ्मुख न हुए, इस समय केवल दैवहीने हमको समर विमुख कर दिया इसमे कुछ सन्देह नही है, अब दैवबलप्राप्त न होनेसे हम कदाच कार्य्य साधनेको समर्थ न होंगे, इससे अब देवादि-

देव महादेवको शरणापन्न होते हैं, वही हमारे दुःखकी शान्ति कर देंगे।

इति ६ अध्याय।

अश्वत्थामा इसी प्रकार कृतनिश्चय होके रथसे अवतरण पूर्वक भगवान् महादेवको प्रणाम और बहुविध स्तुति करके बोले कि हम एकाग्रचित्तसे आपके शरणागत हुए, यदि हमारा आसन्नवर्त्ती विपदसे उद्धार होय तो अपने शरीररूप पञ्चभूत उपहार प्रदान पूर्वक आपकी पूजा करेंगे।

महाराज! अश्वत्थामाके स्तवकरतेही उनके सम्मुख एक काञ्चनमय वेदी प्रादुर्भूत हुई और भगवान हुताशन अपने तेजसे दिग्मण्डल उद्भासित करके उसी वेदी पर विराजमान हुए। और विकृताङ्ग औ विचित्ररूपधारी भूतगण वहां उपस्थित होय विविधवाद्य वादन औ मुहुर्मुहु गर्जन पूर्वक स्वस्व प्रभाजाल विस्तार करके महादेवका स्तव करते करते अश्वत्थामाके प्रति धावमान हुए। भीमदर्शन भूतगणको निरीक्षण करनेसे त्रिलोकस्थ प्राणी भीत होते हैं, परन्तु अश्वत्थामा कुछभी भीत न होके सौम्य मन्त्रसे भगवान् शङ्करको अपना देह उपहार प्रदान पूर्वक कृताञ्जलिपुट होय स्तव करते करते प्रदीप्त पावकयुक्त वेदी पर आरोहण पूर्वक हुताशनमे प्रवेश किया। यह देख भगवान् रुद्र प्रसन्न होकर बोले, हे वीर! कृष्णसे अधिक हमारा कोइ प्रियतम नही है उनहीके मान रक्षा और तुम्हारे बलवीर्य्यकी परिक्षाके निमित्त हमने पञ्चालगणको रक्षित करके मायाबल विस्तार किया था, परन्तु पाञ्चालगणका कालग्रस्त हुए है, अब उनको रक्षा नही होसक्ती यह कहके अश्वत्थामाको एक निर्मल खड्ग प्रदान पूर्वक उसके शरीरमे प्रवेश किया।

अनन्तर अश्वत्थामा शङ्करके तेजःप्रभावसे उद्भासित होके महावेगसे शिविरमें धावमान हुए और भूत राक्षसगणभी अदृश्यभावसे उनके अनुगामी हुए।

इति ७ अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले, सञ्जय! अश्वत्थामाके शिविरमें प्रवेश करने पर कृपाचार्य्य और कृतवर्माने क्या किया सो कहिये।

सञ्जय बोले, महाराज! अश्वत्थामाने प्रवेश करनेके समय कृपाचार्य्य और कृतवर्माको द्वारदेशमें अवस्थिति करते देखके आनन्दित होय, मृदुस्वरसे कहा, हे वीरद्वय! आपलोग यत्न करें तो समस्त क्षत्रियकुल नाश कर सक्ते हैं, इन लोगकी तो बातही क्या है? हम तो शिविरमें प्रवेश करके कृतान्तके समान परिभ्रमण करेंगे, परन्तु आपलोगसे यही प्रार्थना है कि द्वारदेशमें आपलोगके निकट कोईभी परित्राण न आने पावे सो कीजिये। यह कहके शिविरमें प्रवेश करके सबके पहिले निःशब्द पदसञ्चारसे धृष्टद्युम्नके शयनागारमें उपस्थित हुए। उस समय समरपरिश्रान्त जयप्राप्त पाञ्चाल-गण विश्रब्धचित्तसे गाढ़निद्रामें अभिभूत होगए थे, अश्व-त्थामा आह्लादित होय निद्रित धृष्टद्युम्नको पदाघातसे प्रबो-धित करके दोनो हस्तसे उसका केशधारण पूर्वक उसको धरातलमें निष्पेषित करने लगे। सुप्तोत्थित धृष्टद्युम्नने द्रोण-पुत्रको देखके निद्रा औ भयप्रयुक्त प्रतिविधानका कुछ उपाय न कर सके, अनन्तर अश्वत्थामाने चरणद्वारा उसका वक्ष-स्थल और कण्ठदेश आक्रमण करके पशुके समान उसको निहत किया। अनन्तर निद्रित उत्तमौजाकोभी उसी प्रकारसे पादद्वारा कण्ठ और वक्षःस्थल विदीर्ण करके संहार किया, यह देख युधामन्यु अश्वत्थामाको राक्षस जानके शीघ्र गदा

ग्रहण पूर्वक उनके हृदयमें गदाघात किया उसी समय शीघ्र अश्वत्थामाने युधामन्युको भूतलमें निक्षेप करके पशुकी तुल्य संहार कर डाला। अनन्तर अश्वत्थामाने दूतस्तत शयान महारथगणको खड्गाघातसे एक एकका प्राणनाश किया और क्षणकालमें शिविर मध्यस्थ समस्त योधगणको निपातित करके रुधिराक्तकलेवर यमके समान दृष्टिगोचर होने लगे। समराश्रसर योधगण अश्वत्थामाका अलौकिक रूप दर्शन करके अत्यन्त व्यथित होय परस्पर मुखावलोकन पूर्वक उनको राक्षस विवेचना करके नेत्रनिमीलित करने लगे। अनन्तर अश्वत्थामा यमके समान शिविरमें परिभ्रमण करते करते द्रौपदीके पांचपुत्र और अवशिष्ट सोमकगणको अवलोकन किया। महारथ द्रौपदीतनयगण समरकोलाहलसे जागरित होय धृष्टद्युम्नकी निधनवार्ता श्रवण करके अश्वत्थामाको शरनिकरसे समाच्छन्न करने लगे, प्रभद्रकगण और महावीर शिखण्डी समरशब्दसे प्रबोधित होके शरजालसे द्रोणपुत्रको निपीड़न करने लगे। तब अश्वत्थामा पितृबध वृत्तान्त स्मरण करके रोषपरवश होय सुवर्णमण्डित दिव्य खड्ग ग्रहण पूर्वक रथसे अवतीर्ण होय द्रौपदीतनयगणके प्रति धावमान हुए और क्रमात् प्रतिविन्ध्य, सुतसोम, शतानीक, श्रुतकर्मा और श्रुतकीर्तिको एक एक करके मस्तक छेदन पूर्वक संहार किया।

अनन्तर शिखण्डीने अश्वत्थामाके ललाटमें एकवाण निक्षेप किया तब द्रोणकुमार कोपान्वित होके खड्गद्वारा शिखण्डीको द्वय खण्ड कर डाला। महावीर अश्वत्थामा क्रोधभरे धावमान होकर यावतीय प्रभद्रक, विराटराजको हतावशिष्ट सैन्य समस्त, द्रुपदके पुत्र, पौत्र, सुहृदगण और अन्यान्य वीरगणकोभी छेदन करने लगे, हे महाराज! कुरुप्रवृद्ध

संग्राम उपस्थित होनेके दिनसे पाण्डवपक्षीय योधागण प्रति-
रात्रिको स्वप्नमे देखते थे कि करालवदना कालरात्रि उन-
लोगोंको लिये जाती है और महारथ द्रोणतनय उन्होंकी
संहार करनेको प्रवृत्त हुआ है। उस समय वीरगण पूर्व-
कालीन स्वप्न दर्शन स्मरण करके उसको दैवपीड़न ज्ञान करने
लगे, उस समय अश्वत्थामा सुप्तोत्थित शस्त्रहीन कवचशून्य
पाण्डव सैन्यगणको यमालय प्रेरण करने लगे, उस समय
अनेकही अश्वत्थामाकी शस्त्रपातसे भीत होकर द्रुतवेगसे पला-
यन करते निद्रावेशसे विसंज्ञ औ निपतित होते थे, कोई
कर्कशस्वरसे चीत्कार, कोइ असम्बद्ध प्रलाप करते थे, कोइ तो
अस्त्रशस्त्र औ वसनभी प्राप्त नही होते थे, कोईभी किसीको
जान नही सक्ता था, कोइ निद्रासे उठतेही निपतित हुआ,
कोइ धावमान हाथो घोड़ोसे दबकर मरते गये और अनेकही
प्राणभयसे भीत होके पलायन करने लगे, पलायमान पुरुष-
गणको कृतवर्मा और कृपाचार्य्य द्वारदेशमे निहत करने लगे।
अनेकही अस्त्रशस्त्र परित्याग पूर्वक कृताञ्जलीपुट होय व्यग्र
होकर खड़े हुए, तथापि कृपाचार्य्य औ कृतवर्माने उनको
परित्याग नही किया और शिविरकी तीन स्थानमे अग्निप्रदान
किया, उस समय हतावशिष्ट और लुकायित जन जो सम्मुख
आए अथवा पलायन करते थे, उन लोगको विनाश करने लगे
उस समय रजनी घोरतर अन्धकारसे आच्छन्न और अति
भयानक होगई थी, इसी प्रकारसे अश्वत्थामाने अर्द्धरात्रिमे
पाण्डवगणकी समस्त सैन्यको यमालय प्रेरण किया, उस समय
राक्षस औ पिशाचगण पुत्र और कलत्रकी सहित अति आह्ला-
दित होय, रुधिर मांस भक्षण करने लगे।

अनन्तर प्रत्यूष समयमे रुधिराक्त कलेवर अश्वत्थामाने
शिविरसे प्रतिगमन करनेकी वासना किया उस समय उनकी

खड्गमुष्टि करतलसे संलग्न हो गई थी, उस समय उनके पित्त विनाश दुःख अन्तर्हित होगया था। अश्वत्थामाने प्रवेश कालमें सबके निद्रित होनेसे शिविरको जैसा निःशब्द देखाथा इस समयभी सबके विनाश होनेसे वैसही निःशब्द देखकर वहांसे निर्गत हुए और कृपाचार्य्य और कृतवर्मासे मिलित होकर समस्त आद्योपान्त कीर्तन किया, उन लोगोनेभी असंख्य सैन्यगणके बध करनेका वृत्तान्त कीर्तन करके उनकी प्रीतिजनाने लगे और वह तीनोजन करताली प्रदान पूर्वक हर्षोत्पादन करने लगे।

हे महाराज! इसी प्रकारसे पाण्डवगण सैन्य उस रात्रिको ध्वंस हो गई कालकी गति अतिक्रम करना कठिन है, देखिये जिन्होने असंख्य बल निहत किया था, इस समय वह आपही निहत हुए।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! महावीर अश्वत्थामाने पहिलेही ऐसा अपना बल क्यों प्रकाश नही किया?

सञ्जय बोले, महाराज! महारथ अश्वत्थामा पहिले वासुदेव, सात्यकि और पाण्डवगणके भयसे उस कार्य्यका अनुष्ठान करनेको समर्थ नही हुए। इस समय उन लोगके न रहते और रातके समय निःशङ्कचित्तसे सबको निद्रित जानकेही यह अनुष्ठान साधन किया।

इति ८ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर तीनो वीर रणनिपतित राजा दुर्य्योधनके निकट जाय देखा कि कुरुराज विचेतन होके रुधिर वमन कर रहे हैं, और अति अल्पमात्र जीवन अवशिष्ट रह गया है, वृक प्रभृति श्वापदगण उनको भक्षण करनेके अभिलाष करके वेष्टन किये हुवे हैं वह अति कष्टसे उन

लोगोंका निवारण कर रहे हैं, यह देख तीनो वीरगण अत्यन्त शोकाकुल होके दीर्घनिश्वास परित्याग पूर्वक उनको परि-वेष्टन करके नानाप्रकारसे विलाप और परिताप करने लगे, हाय! दैवकी क्या गति है, जो दुर्य्योधन एकादश अक्षौहि-णीके अधिपति थे आज वह निराश्रय होके धरातल पर शयन करते हैं।

असंख्य भूपति भीत मनसे जिसके चरणमें प्रणत होते थे आज वह समरशायी होके शृगाल कुक्कुरगणसे परिवृत हो रहे हैं। पूर्वमें ब्राह्मणगण अर्थके निमित्त जिनके निकट सर्वदा प्रार्थना करते थे, आज मांसाशी जन्तुगण मांस लाभार्थ वही महावीरकी उपासना करते हैं।

अनन्तर अश्वत्थामाने कुरुराजको आह्वान पूर्वक करुण-स्वरसे विलाप और परिताप पूर्वक कहने लगे, हे महाराज! कालको अतिक्रम करनी अति कठिन है, दुरात्मा भीमसेन धर्म युद्धके लिये आपको आह्वान करके अधर्मानुसार गदाघातसे उरुद्वय आपका भग्न और निपातित करके आपके मस्तक पर पदाघात किया और कृष्ण और युधिष्ठिरने उपेक्षा प्रदर्शन किया तो उन लोगको धिक्क है, जब तक वह लोग विद्यमान रहेंगे, तबतक उनका अपयश रहेगा और क्षत्रियगणकि जो उत्तम गति है, वही आपने लाभ किया हुआ हम आपके निमित्त तो कुछभी अनुताप नहीं करते हैं, केवल तुम्हारे वृद्ध जनक जननी निमित्त और हम लोग अपने निमित्तही क्लेश होते हैं, कि हम लोग प्रजारक्षक सर्वकामप्रद भूपतिको अग्रसर करके स्वर्गारोहण न कर सके, हम लोग अब किसको शरणापन्न होंगे? अब हम लोगको स्वर्गविहीन अर्थविहीन होके चिरकाल आपका सुकृत स्मरण करना पड़ेगा, अब आप हम लोगोंको परित्याग करेंगे तो अतिकष्टसे भूमण्ड-

लमे पर्य्यटन करना पड़ेगा, हे महाराज! आप स्वर्गारोहण पूर्वक महारथगणकी पूजा करके सबकी पहिले हमारे पितासे कहना, कि अश्वत्थामाने दुरात्मा धृष्टद्युम्नको निपातित किया, हे महाराज! आप यदि जीवित हों तो यह अतिसुखकर वाक्य श्रवण कीजिये, इस समय पाण्डवकी पक्षमे पञ्चपाण्डव, कृष्ण और सात्यकी यही सातजन और हम लोगकी पक्षमे हम लोग तीनजन जीवित रहे और समस्त पाण्डवपक्षीय वीरगण हमारे हस्तसे निहत हुए हैं।

सञ्जय बोले, महाराज! दुर्य्योधन यह सुनतेही संज्ञा लाभ करके बोला, हे वीर! भीष्म, द्रोण और कर्ण जो कार्य्य-साधनेको असमर्थ थे सो तुमने किया, आज हम आपको इन्द्र-तुल्य ज्ञान करते हैं, अब आपका मङ्गल होय अब हमसे स्वर्गहीमे मिलन होगा, कुरुराज यह कहके प्राण परित्याग पूर्वक स्वर्गको प्राप्त हुए। हे महाराज! कुरुपति दुर्य्योधनने इसी प्रकारसे कलेवर परित्याग किया औ वह वीरत्रय रथा-रोहण पूर्वक नगराभिमुख धावमान हुए। हे महाराज! आपका कुमन्त्रणाही कुरुपाण्डव सैन्यक्षयका मूल कारण है। आज आपके पुत्रके स्वर्गारोहण करने ऋषि प्रदत्त दिव्य-दृष्टित्व हमारा विनष्ट हुआ है।

वै०। बोले, महाराज! धृतराष्ट्र यह श्रवण करके दीर्घ-निश्वास परित्याग पूर्वक अत्यन्त चिन्ताकुल हुए।

इति ९ अध्याय।

ऐषिक पर्वाध्याय।

वै०। महाराज! इधर धृष्टद्युम्नका सारथी रजनी प्रभात होतेही युधिष्ठिरके निकट जाय रातका समस्त वृत्तान्त वर्णन किया समस्त प्राणी निहत हुए, एका हमही कृतवर्माके हस्तसे अतिकष्टसे मुक्तिलाभ किया है।

हे जन्मेजय! युधिष्ठिर दूत मुखसे श्रवण करतेही पुत्र-शोकसे कातर होय भूतलमे निपतित होके कियत्क्षण पर संज्ञा लाभ करके नानाप्रकार विलाप और परिताप करने लगे, हाय! जो शत्रुगणको पराजय किया था, उन्ही लोगसे हमको पराजय हुए। दैव प्रभावसे अर्थ अनर्थ और अनर्थ अर्थके समान जाना जाता है। जिस जयसे विपद्ग्रस्त होके अनुतापित होना पड़े वह जय पराजयके तुल्य है, जो जो वीरगण द्रोण कर्णसे परित्राण प्राप्त हुए थे, वही राजपुत्र-गण प्रमादवश होय कालग्रसित हुए। इससे प्रमादही मनु-ष्यके निधनका प्रधान कारण है, असावधान पुरुष शीघ्रही अर्थभ्रष्ट औ अनर्थग्रस्त हो जाते हैं और कदाच विद्या, तपस्या, श्री और कीर्त्ति लाभ करनेको समर्थ न होंगे। जैसे वणिक्गण समुद्र उत्तीर्ण होके सामान्य नदीमे निमग्न होते हैं, तद्रूप यह घटना हो गई, हाय! प्रियतमा द्रौपदी वृद्ध पिता, भ्राता और पुत्रगणका निधनवार्त्ता श्रवण करके शोकानलसे दग्ध होगी, हाय! आज उसकी क्या दुर्दशा उप-स्थित होगी। अनन्तर राजा युधिष्ठिर नकुलको पाञ्चाल-राजमहिषीगणके सहित द्रौपदीके आनयनकी आज्ञा देके सुहृद्गणके सहित शिविरमे प्रवेश किया, वहां पुत्रगण और बन्धु बान्धवगणको रुधिराक्त कलेवर भूतलमे शयान देह छिन्न भिन्न, मस्तक शरीरसे पृथक देखके अत्यन्त दुःखित होय

उच्चस्वरसे रोदन करते करते अचेतन और अनुचरगणके सहित भूतलमें निपतित हुए।

इति १० अध्याय।

हे महाराज ! विचेतन धर्मराज युधिष्ठिरकी अवस्था देखकर सुहृद्गण विविध प्रकारसे सान्त्वना करने लगे, उसी उसी समय महात्मा नकुल रोदयमाना द्रौपदीके सहित वहां उपस्थित हुए। कमलनयना पाञ्चाली शिविर निकट पुत्र निधनवार्त्ता श्रवणमात्र वायुताड़ित कदलीके समान विकम्पित कलेवर औ शोकाकुलित होय, धर्मराजके निकट आगमन पूर्वक धरातलमें निपतित हुई। क्रोधपरायण वृकोदर प्रियतमा धूलि धूसरित देखके बाहु प्रसारण पूर्वक धारण करके सान्त्वना करने लगे।

अनन्तर द्रौपदी युधिष्ठिरसे बोली, महाराज ! आप पुत्रगणको काल मुखमें निक्षेप करके क्या सुखसे राज्यसंभोग करोगे? आप पुत्रगणकी निधनदशा देखके किस प्रकारसे सुखी रहैं? पापपरायण नृशंस अश्वत्थामा सुप्तप्रसुप्त वीरगणको निहत किया यह सुनके हमारा हृदय शोकानलसे दग्ध होता है, यदि आज आप उस पामरका जीवन संहार न करेंगे तो हम निश्चय इसी स्थानमें प्रायोपवेशन करेंगे, इस शीघ्रही दुरात्मा द्रोणतनयको उपयुक्त प्रतिफल प्रदान कीजिये, यह कहके द्रौपदीने धर्मराजके निकट प्रायोपवेशन किया।

परमधार्मिक राजा युधिष्ठिर बोले, हे याज्ञसेनी ! तुम धर्म मर्म जानती हो, तुम्हारे पुत्र और भ्रातृगण धर्मयुद्धमें निहत हुए हैं, इस कारण तुम अनुताप मत करो, और अश्वत्थामा दूरवर्त्ती दुर्गम अरण्यमें पलायित हुआ है, तुम किस

प्रकारसे उसका समर मृत्यु जान सकोगी? अनन्तर द्रौपदी भीमके निकट नाना प्रकार मोहोत्पादक विलाप करके कहने लगी, कि द्रोणपुत्रके मस्तकमे एक सहज मणि है, उसको आप आहरण करें तो हम किञ्चित् जीवनधारण कर सक्ते हैं।

भीमसेन द्रौपदीका असह्य वाक्य श्रवण करके नकुलको सारथी बनाय अस्त्रशस्त्र ग्रहण पूर्वक रथारोहण करके द्रोण-पुत्रके रथचिह्नका अनुसरण करके गमन करने लगे।

इति ११ अध्याय।

अनन्तर वासुदेव युधिष्ठिरसे बोले, महाराज! पुत्रशोक सन्तप्त भीमसेन अश्वत्थामाके विनाश वासनासे एकाकी गमन करते हैं, अन्यान्य भ्रातृगणसे भीम आपके अधिक प्रिय हैं, उसको विपत्‌सागरमे निमग्न देख कर किस प्रकारसे निश्चिन्त बैठे हैं? द्रोणाचार्य्यने अपने पुत्रको ब्रह्मशिर नाम जो अस्त्र प्रदान किया है, वह समस्त पृथिवी दग्ध करनेको समर्थ है, हे महाराज! सर्वधर्मविशारद द्रोणाचार्य्य पुत्रको दुःशील और चञ्चल जानते थे, इस कारण असन्तुष्टचित्तसे उसके प्रार्थनानुसार यह अस्त्र दे कर कहा, हे वत्स! घोरतर विपद कालमेभी मनुष्य पर कदापि यह अस्त्र परित्याग न करना, हे पुत्र! तुम कभीभी साधुजनाश्रित पथमे अवस्थान न कर सकोगे। यह सुनके अश्वत्थामा शोकार्त होय पृथिवी पर्य्यटन करने लगे। हे धर्मराज! आप जिस समय वनवासी थे, उसी समय अश्वत्थामा द्वारिकामे उपस्थित होय, ब्रह्मशिर अस्त्र हमको प्रदान करके चक्र हमसे प्रार्थना किया, हम ब्रह्मशिर अस्त्र ग्रहण करके चक्र देनेको उपस्थित हुए, किन्तु अनेक यत्न और परिश्रम करकेभी चक्रको स्थानान्तरित न कर सके तब हमने अश्वत्थामासे पूछा, हे वीर! आपने यह

चक्र ग्रहण करके किससे संग्राम करनेकी वासना किया था ?

अश्वत्थामा बोले, हे वासुदेव! हम आपहीसे संग्राम करके सर्वभूतके अपराजेय होंगे, इसी अभिप्रायसे इस चक्रका प्रार्थना किया था, अब आप अनुमति कीजिये, अब चक्र लाभ न करकेभी शिवसे युद्ध करनेको गमन करेंगे, अनन्तर विविध रत्न धन ग्रहण करके यथासमय अश्वत्थामाने प्रस्थान किया, हे महाराज! यह वीर अतिशय रोषपरायण और विशेषतः ब्रह्मशिर अस्त्र जानते हैं, इस कारण भीमसेनका रक्षा करना कर्तव्य है।

इति १२ अध्याय।
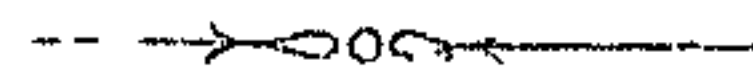
हे जन्मेजय! अनन्तर राजा युधिष्ठिर वासुदेव और अर्जुनके सहित दिव्य रथारोहण पूर्वक अति वेगसे धावमान हुए, और अति अल्पकालमें भीमसेनके सन्निहित होके क्रोधान्ध भीमसेनको निवारण करने लगे, परन्तु कुछ फल न हुआ, महाबल भीम उन लोगके वाक्यका अनादर करके भागीरथीके तीर पर उपस्थित होय अन्यान्य ऋषिगणके सहित महर्षि द्वैपायनको अवलोकन किया, और क्रूरकर्मी अश्वत्थामा घृताक्तकुशचीरधारी और धूलिपटलसे परिवृत होके उनके समीप उपविष्ट है, भीम उसको देखतेही शरासन ग्रहण पूर्वक रहो रहो कह करके उनके प्रति धावमान हुए, अश्वत्थामा धावमान क्रुद्ध भीमसेनको कृष्ण और अर्जुनके सहित आवते देख व्यथित होके पुनर्वार युद्ध होना निश्चय करके दिव्यास्त्र प्रयोग करनेके अभिप्रायसे इषिका ग्रहण किया और क्रोधभरे उसी इषीकामें ब्रह्मशिर अस्त्र संयोजन पूर्वक (पाण्डववंश विनष्ट होय) कह करके

परित्याग किया वह दिव्यास्त्र परित्याग होनेमात्रही त्रिलोक दग्ध करनेके लिये मानो हुताशन प्रादुर्भूत हुए।

इति १३ अध्याय।

हे महाराज! महाबाहु मधुसूदन अश्वत्थामाका आकार देख उसका अभिप्राय जानके धनञ्जयसे बोले, हे सखे! तुम्हारे निकट जो द्रोण उपदिष्ट दिव्यास्त्र विद्यमान है, इस समय उसी अस्त्रके त्याग करनेका समय उपस्थित हुआ है, तुम भातृगण और अपने परित्राणार्थ उस अस्त्रको परित्याग करके अश्वत्थामाका अस्त्र निवारण करो, यह सुन अर्ज्जुनने वैसही किया, उस समय अर्ज्जुन और अश्वत्थामाका तेजोमण्डलमण्डित अस्त्रद्वय युगान्तकालीन अनलके समान प्रज्वलित होगया, उस समय गिरिकाननपरिपूर्ण ससागरा धरा कम्पित होने लगी, उस समय महर्षि नारद औ व्यासदेव उन दिव्यास्त्रके मध्यस्थ होके अपूर्व शोभित होने लगे।

इति १४ अध्याय।

अनन्तर अर्ज्जुनने महातेजा महर्षिगणको मध्यस्थ देखके ब्रह्मास्त्र प्रति संहारका अभिप्राय करके बोले, महात्मागण! इस समय हम दिव्यास्त्र प्रतिसंहार करेंगे, तो अभी अश्वत्थामा हम लोगोंको भस्मावशेष कर देगा यह कहके दिव्यास्त्र प्रतिसंहार कर लिया, परन्तु अश्वत्थामा प्रतिसंहार न कर सका, क्योंकि इस अस्त्रका प्रतिसंहार करना देवगणकाभी असाध्य है।

अश्वत्थामा बोला, हे महर्षे! हमने भीमके भयसे यह अस्त्र प्रयोग किया, परन्तु अब संहार नहीं कर सके हैं, यह अवश्यही पाण्डवगणको विनष्ट करेगा।

तब महर्षि व्यास बोले, हे अश्वत्थामा! अर्ज्जुनने अपने रक्षाके निमित्त अस्त्र प्रयोग किया था, सो प्रतिसंहारभी कर लिया, जिस राज्यमे दिव्यास्त्रद्वारा ब्रह्मास्त्र निवारित होय उस राज्यमे द्वादशवर्ष अनावृष्टि होती है, इस कारण महावीर अर्ज्जुन प्रजागणके हितार्थ तुम्हारा अस्त्र विनष्ट नही किया, हे द्रोणतनय! अब अपनेको, पाण्डवगण और राज्य रक्षा करणा अवश्य कर्तव्य है, सो तुम क्रोधशून्य हो, अब तुम पाण्डवगणको अपने मस्तककी मणि प्रदान करो। वह लोग वही मणिग्रहण करके तुम्हारा प्राणदान करेंगे, अश्वत्थामा बोला यह अमूल्य मणि किसी प्रकारसेभी त्याग करनेके उपयुक्त नही है, परन्तु आप जो कहते हैं सोभी हमको सर्व-प्रकारसे कर्तव्य है, आपका जो इच्छा होय सो कीजिये, परन्तु यह अमोघ ईषिकास्त्र पाण्डवतनयगणकी महिलागणका गर्भस्थ सन्तानगण पर निपतित होगा, हम किसी प्रकारसेभी अस्त्र प्रतिसंहार कर नही सक्ते हैं। तब वेदव्यास बोले, हे द्रोणपुत्र! अब यही कर्तव्य है। अनन्तर द्रोणपुत्रने पाण्डव महिलागणके गर्भस्थ सन्तान पर उस दिव्यास्त्रको परित्याग किया।

इति १५ अध्याय।

अनन्तर वासुदेव बोले, हे द्रोणतनय! पूर्वमे एक व्रतपरायण ब्राह्मणने विराटदुहिता उत्तराको कहा था कि, हे राजकुमारी! कौरववंश उत्पन्न होनेसे तुम्हारे गर्भमे एक पुत्र जन्मग्रहण करेगा, कौरववंशके परिक्षीणावस्थामे उस पुत्रका जन्म होगा इस कारण उस्का नाम परिक्षित होगा, हे महान्! वह साधु ब्राह्मण जो कह गए है, कदाच मिथ्या

न होगा, यह सुन क्रोधाविष्टचित्तसे अश्वत्थामा बोला, हे केशव! तुमने पाण्डवगणका पक्षपात करके जो कहा, सो कदाच सफल न होगा।

कृष्ण बोले, हे द्रोणात्मज! तुम्हारा अस्त्रभी व्यर्थ नहीं होगा, और वह गर्भस्थ बालक तुम्हारे अस्त्रसे हत होकेभी पुनर्वार जीवित होय, दीर्घकाल वसुन्धरा अधिकार करेगा, हे द्रोणात्मज! ऋषिगण तुमको पापपरायण और कापुरुष करके जानते हैं, तुम बालकघाती हो, इस कारण इस पाप कर्मका फल तुमको भोगनाही पड़ेगा, तुम असहाय होके मौन भावसे तीन सहस्र वर्ष निर्जन प्रदेशमे पर्य्यटन करोगे, कदाच लोकालयमे अवस्थान न कर सकोगे, तुमको सर्वप्रकारसे व्याधिग्रस्त और पूयशोणित-गन्धसम्पन्न होके निरन्तर दुर्गम अरण्यमे परिभ्रमण करना पड़ेगा, और पाण्डवकुलतिलक परिक्षित कृपाचार्य्यसे अस्त्रशस्त्र शिक्षा करके क्षत्रियधर्मानुसार षष्टि वर्ष पृथिवी पालन करेगा, हे निर्बोध! तुम्हारे सम्मुखही परिक्षित राजपदवी प्राप्त होङ्गे। इस समय तुम अस्त्रानलसे दग्ध करोगे, तथापि हम पुनर्वार उसका जीवन प्रदान करेंगे, आज तुम हमारे तपस्या और सत्यका पराक्रम अवलोकन करो।

व्यासदेव बोले, हे द्रोणात्मज! तुमने जब हम लोगोंका अनादर किया तो वासुदेवने जो कहा सो तुमको अवश्यही भोगना पड़ेगा।

अश्वत्थामा बोले, हे तपोधन! हम इस जीव-लोकमे, आपही लोगोंके सङ्ग वास करेंगे इसीसे आपका और वासुदेव वाक्य सत्य होगा, अश्वत्थामा यह कहके पाण्डवगणको मणिप्रदानपूर्वक विषण्णमनसे वनको प्रस्थान किया। पाण्डवगण मणिग्रहणपूर्वक व्यास नारद औ वासुदेवका सम्मान करके

कृष्णके सहित प्रायोपविष्टा द्रौपदीके निकट धावमान हुए। अनन्तर वह लोग द्रौपदीके निकट उपस्थित हुए, धर्मराजके आज्ञानुसार भीमसेन अश्वत्थामाका शिरोमणि द्रौपदीको प्रदान करके बोले, हे प्रिये! तुमने जो प्रार्थना किया था, सो तुम्हारे पुत्रहन्ताको पराजय करके आनयन किया है, ग्रहण करके क्षत्रियधर्मानुसारसे शोक परित्याग करो। हे प्रिये! सन्धिस्थापनके वासनासे वासुदेवको दुर्य्योधनके निकट जिस समय धर्मराज प्रेरण करते थे, तब तुमने कहा था, हे मधुसूदन! धर्मराज शान्तिस्थापनकी इच्छा करते हैं, इससे निश्चय होता है कि, हमारे पति, पुत्र, भ्रातृगण कोई नहीं है और तुमभी विनष्ट हो गए हो। हे द्रौपदी! तुमने उस समय क्षत्रियधर्मानुसार जो सब कठोरवाक्य प्रयोग किया था सो सब इस समय स्मरण करो।

द्रौपदी बोली हे नाथ! हमारा मनोरथ सफल हुआ, अनन्तर द्रौपदीके वाक्यानुसार राजा युधिष्ठिरने गुरु-उच्छिष्ट ज्ञान करके उस मणिको मस्तक पर धारण करके सुशोभित हुए, यह देख पुत्रशोकातुरा द्रौपदीने शीघ्रही गात्रोत्थान किया।

इति १६ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर राजा युधिष्ठिर कृष्णसे बोले, हे वासुदेव! अश्वत्थामाने कौन उपाय अवलम्बन किया? जो एकाकी ऐसे ऐसे वीरगणका प्राणसंहार किया।

वासुदेव बोले, महाराज! द्रोणपुत्र निश्चयही महादेवका शरणापन्न हुआ था, भगवान् रुद्रका प्रभाव हम विशेष जानते हैं, जो इच्छा सोइ वह कर सक्ते हैं, समस्त भूतके आदि मध्य और अन्तस्वरूप वही हैं, उनहीके प्रभावसे जग-

नका समस्त कार्य्य सम्पन्न हुआ करता है। पूर्वमे पितामह ब्रह्माने रुद्रसे कहा था कि, आप शीघ्रही भूतगणकी सृष्टि कीजिये, भगवान् महादेव तथास्तु कहके पहिले प्रजागणकी सृष्टि करना अकर्तव्य विवेचना करके सलिलमे प्रवेश करके दीर्घकाल तपस्या करने लगे। विधाताने बहुकाल उनकी प्रतिक्षा करके अन्तको भूत सृष्टिके निमित्त और एक जन अमरको उत्पन्न किया, और अमरने ब्रह्मा वाक्यानुसार समस्त भूत और दक्षादि सप्त प्रजापतिगणकी सृष्टि किया, अनन्तर प्रजागण अत्यन्त क्षुधातुर होके सृष्टि कर्ताको भक्षण करनेके लिये धावमान हुए, तब भीत होके, ब्रह्मासे बोले, भगवन्! प्रजागणका आहार निर्द्देश करके हमारा परित्राण कीजिये, ब्रह्मा उनका वाक्य श्रवण करके प्रजागणके आहारार्थ औषधी प्रभृति स्थावर पदार्थ सब निर्दिष्ट कर दिया, उसी नियमके अनुसार दुर्बल प्राणिगण बलवानोंके आहारार्थ निर्द्दिष्ट हुए हैं, उसीसे प्राणीगण सुखसे परिवर्द्धित होने लगे।

अनन्तर महादेव जलसे समुत्थित होय, असंख्य प्रजा-दर्शन करके रोषाविष्ट होके स्वीयलिङ्ग भूतलमे प्रविष्ट किया, तब ब्रह्मा विविध वाक्यसे सान्त्वना करके बोले, महा-देव! आप इतना दीर्घकाल सलिलमे रहके क्या कार्य्य किया? और किस्कारणसे अपना लिङ्ग भूतलमे प्रवेश किया? महादेव कोपाविष्ट होय बोले, विधात! हमारे अगोचर दूसरे जनने प्रजाकी सृष्टि किया, इससे हमको अब इस लिङ्गसे प्रयोजन क्या है? हम जलमे तपस्या करके प्रजागणके निमित्त अन्नसृष्टि किया है, प्रजागणके समान औषधीभी परिवर्द्धित होगी भगवान् रुद्र यह कहके तपस्या करनेको मुञ्जवान पर्वत पर प्रस्थान किया।

इति १७ अध्याय।

अनन्तर देव युग व्यतीत होनेसे देवगणने वेदविधानानुसारसे यज्ञ करनेके अभिप्रायसे हविः प्रभृति उपकरण सामग्री आहरण किया, वह लोग यज्ञ भाग कल्पना करनेके समय भगवान् महादेवको विशेष करके नही जानते थे, इस कारण उनका भाग निर्देश नही किया, केवल अपना अपनाही भाग कल्पित किया था, इस कारण भगवान् चिश्रूलपाणि क्रुद्ध होय, यज्ञनाशक एक शरासन उत्पन्न करनेकी चेष्टा करने लगे। हे महाराज! लोकयज्ञ, क्रियायज्ञ, गृहयज्ञ औ पञ्चभूतयज्ञ इसी चारयज्ञके द्वारा समस्त जगत्की सृष्टि हुई है, महेश्वरने लोकयज्ञ और नृयज्ञ द्वारा पञ्चवितस्ति परिमाण एक शरासन निर्माण किया।
और वषट्कार उस शरासनका ज्या हुआ। तब भगवान महादेव वही शरासन ग्रहण करके ब्रह्मचारी वेशसे देवगणके यज्ञस्थलमे आगमन किया, उनको देखके वसुन्धरा अत्यन्त विह्वल हुई और देवगण अत्यन्त भयाभिभूत होके विषयज्ञानशून्य हो गए, अनन्तर महादेवने भीषण शरके द्वारा उस यज्ञको विद्ध किया। यज्ञ बाणविद्ध होके मृगरूपधारण पूर्वक अग्निके सहित वहांसे निष्क्रान्त होके स्वर्गको गमन करने लगे, महेश्वरभी उनके पश्चात् धावमान हुए।

यज्ञके प्रस्थान करनेसे देवता लोगको कुछभी ज्ञान नही रहा, तब भगवान् विरूपाक्षने सूर्य्यका दन्तपंक्ति और युगलभुज चन्द्रका नयनद्वय विनष्ट कर दिया, यह देवगण वहांसे पलायन करने लगे उसी समय महादेवका शरासनकी ज्या अकस्मात् छिन्न हो गई, तब देवगण यज्ञके सहित महादेवके शरणापन्न हुए, अनन्तर महादेव प्रसन्न होके अपना क्रोध जलाशयमे स्थापन किया, वही क्रोध अग्निरूपधारण करके जल शोषण करने लगा, औ सूर्य्यको भुज औ दन्तपंक्ति

प्रदान करके यज्ञ करनेकी आज्ञा दिया, तब समस्त जगत् सुस्थ हुआ, और देवगणने समस्त हवनीय द्रव्यमे उनका भाग कल्पना किया ।

हे धर्म्मनन्दन ! इसी प्रकारसे देवादिदेव महादेवके प्रसन्न होनेसे जगत् स्वस्थ हुआ, उन्हीके प्रसन्न होनेसे अश्वत्थामाने वह कार्य्य साधन किया, अश्वत्थामाके प्रभावसे ऐसा नही हुआ है, केवल महादेवहीके प्रसादसे यह घटना घटी है । इस कारण अब कार्य्यारम्भ साधनेकी चेष्टा करो ।

इति १८ अध्याय ।

सौप्तिकपर्व्व समाप्त हुआ ।

महाभारत।

भाषा स्त्रीपर्व।

नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत्॥

जलप्रादानिक पर्वाध्याय।

जनमेजय बोले, हे ब्रह्मन्! अश्वत्थामाका कार्य्य सब श्रवण किया, अनन्तर क्या हुआ? सो कहिये।

वैशम्पायन बोले, महाराज! राजा धृतराष्ट्र शतपुत्रके विनाश होनेसे अति कातर होय मूकके समान हो गये। तब सञ्जय उनको तदवस्थ देख कर बोले, महाराज! शोक परित्याग कीजिये। अष्टादश अक्षौहिणी सेना निहत होके पृथिवी शून्य हो गई है, जो भूपालगण दुर्य्योधनके सहायताको देशान्तरसे आये थे, उनके सहित उन्होंने प्राणत्याग किया तो अब शोक करनेका प्रयोजन क्या है? अब पुत्र, पौत्र, सुहृद्, ज्ञाति, गुरु और पितृगणका यथाविहित प्रेतकार्य्य निर्वाह कीजिये।

वै०। पुत्रशोकाकुल राजा धृतराष्ट्र सञ्जयका करुण वाक्य श्रवण करके वाताहत द्रुमके समान भूतलमें निपतित होय बोले, हे सञ्जय! हमारे पुत्र, अमात्य और सुहृद्गण निहत हुए। अब चिरकालही दीनहीन होके रहना पड़ेगा तो जराजीर्ण पक्षहीन पक्षीके समान जीवनधारण करनेका

प्रयोजन क्या है? पूर्वमें परशुराम, नारद, कृष्णद्वैपायन, वासुदेव और भीष्मका हितवाक्य श्रवण न किया तो अब उसीका यह अनुताप करते हैं, हाय! दुर्य्योधन प्रभृतिका निहत इत्तान्त श्रवण करके हमारा हृदय विदीर्ण होता है। हमने अवश्यही पूर्वमें ऐसा कुकर्म किया है जिससे विधाताने ऐसा दुःखभागी कर दिया। पृथिवीमें ऐसा हतभाग्य दूसरा नहीं है इसी कारण ही पाण्डवगण हमको ब्रह्मलोक गमन करते देखें।

वै०। धृतराष्ट्रको अत्यन्त शोकार्हित देख कर सञ्जय बोले, महाराज! आपने तो समस्त वेद और शास्त्र सुना है। सृञ्जयको पुत्रशोक हुआ था। उस समय मुनिगणने जो उपदेश किया था सोभी आप जानते हैं इससे आप शोक परित्याग कीजिये। दुर्य्योधनने यौवनमदसे मत्त हुआ तो आपभी अर्थलोभसे सुहृद्गणकी बात न सुना तो अब उसीका फल भोगना पड़ता है। दुर्य्योधन दुष्टगणकी मन्त्रणासे केवल युद्धहीकी वासना करता इसीसे वीरगणके सहित निहत हुआ। आप बुद्धिमान और सत्यवादी आपको शोक और मोहके वश होना अनुचित है। देखिये आप पूर्वमें उभयपक्षके मध्यस्थ हुए थे, परंतु पुत्रगणको हितोपदेश वा उभयपक्षको समभावसे दृष्टि न किया तो इसीसे अब आप अनुताप करना पड़ा। जो होय अब आप शोक परित्याग कीजिये। अर्थलाभ, फललाभ, प्रियलाभ और मोक्षलाभका प्रतिबन्धक यह शोकही है। जो पुरुष स्वयं अग्नि उत्पादन और वस्त्रमें संयोग पूर्वक दग्ध होके दुःखार्त होय तो उसको पण्डित नहीं कहते हैं। पूर्वमें आप लोग लोभरूप घृत और वाक्यरूप वायु द्वारा पाण्डवरूप भीषण हुताशनको प्रज्वलित किया था, उसी पावकमें आपके पुत्रगण दग्ध हुए तो अब शोक करनेका क्या

प्रयोजन है? आप अश्रुजलसे मुखमण्डल प्लावित करते हैं, यह अति शास्त्रविरुद्ध है। शास्त्र कहता है कि आत्मीयगणका शोकाश्रु अनलस्वरूप हो कर मृतपुरुषको दग्ध करता है, इस कारण आप शोक परित्याग करके धैर्य्यावलम्बन कीजिये। इसी प्रकारसे सञ्जय धृतराष्ट्रको आश्वासित करने लगे।

। इति १ अध्याय।

हे जनमेजय! सञ्जयके वाक्यावसान होनेसे महात्मा विदुर अमृततुल्य वाक्यसे कहने लगे, हे महाराज! आप क्यों शयन किये हैं? धैर्य्य हो कर गात्रोत्थान कीजिये। कुछभी चिरस्थाई नही है। क्षय तपका अन्त, पतन उन्नतिका अन्त, वियोग संयोगका अन्त और मृत्युही जीवनका अन्त है तो क्षत्रियगण क्यों नहीं स्वधर्मानुसार युद्ध करेंगे? देखो विना युद्धकेभी लोग मरा करते हैं और युद्ध करकेभी जीवित रहजाते हैं तो कालको कोईभी अतिक्रम नही कर सकता। हे महाराज! जन्मके पहिले प्राणिगणका अभाव रहता है, मध्यमें स्थिति और मृत्यु होतेही फेर अभाव हो जाता है तो पूर्वरूप प्राप्तहोनेवालेके निमित्त दुःख करनेका तात्पर्य्य क्या? और जब कि मनुष्य मृतपुरुषके लिये समस्त उपाय करकेभी उनका दर्शन वा अनुगमन नहीं कर सकता तो आप क्यों शोक करते हैं? हे महाराज! मृत्युसे कोईभी नही बच सकता तब आपका शोक करना सुतरांही अनर्थक है। और शास्त्रकी युक्तिसेभी देखिये कि संग्रामनिहत वीरगण सबही उत्तमगति प्राप्त हुए हैं तो उनके लिये शोक करनेका क्या प्रयोजन है? हे महाराज! यह प्रवृत्ति कभी

निष्फल न होती। जयसे यशलाभ पराजयसे स्वर्गलाभ तो सफल कार्य्यके लिये शोक करना मूढ़का काम है। युद्ध विना स्वर्गलाभका सुलभ पथ क्षत्रियगणके लिये दक्षिणादान, यज्ञानुष्ठान, तपःसाधन, विद्यानुशीलन प्रभृति कोई दूसरा नहीं है। आपके पुत्रगणने वीरगणके सहित उत्कृष्टगति लाभ किया है तो आपको शोक करना उचित नहीं है। इस जगतमें पिता पुत्र कलत्र वर्तमान हैं परंतु कोईभी किसीका नहीं है, उनका मोह मूर्खहीको अभिभूत करता है पण्डितके संमुख कदाच न रह सकता है। देखिये जीवन, यौवन, रूप, धन, आरोग्य और प्रियसहवास प्रभृति कुछभी चिरस्थाई नहीं है। यही विचार करके विवेचक लोग उसमें लिप्त नहीं होते हैं, हे महाराज! अब आप क्यों साधारणभोग्य दुःख भोग करते हैं। मनुष्य दुःख चिन्ता करते करते आपही नष्ट होता, परंतु अनुशोचनसे कदाचभी दुःख दूर नहीं होता। वरं दुःखचिन्ता न करनाही दुःखनाश होनेका प्रकृत औषध है। मूर्ख लोग दुःखसे असन्तुष्ट होते पर पण्डित लोग परमेश्वरकी इच्छा मान कर उसीसे सन्तुष्ट होते हैं। विज्ञलोग प्रज्ञाबलसे मानसिक दुःख और औषधसे दैहिक दुःखको दूर कर डालते हैं। विना ज्ञानके दुःख दूर नहीं हो सक्ता। पूर्वकृत कर्म मनुष्यके पश्चात् पश्चात् धावमान होता है। मनुष्य जिस जिस अवस्थामें जिस प्रकारसे शुभाशुभ कर्मका अनुष्ठान करता है उसी उसी अवस्थामें उसका फलभोग कर लेता है। और जिस शरीरसे जैसा कर्म करता है उसको उसी शरीरसे उसका फल भोगना पड़ता है। मनुष्य आपही अपना मित्र और आपही अपना शत्रु और आपही अपने कृत अकृत कार्य्यका साक्षीस्वरूप है। शुभकर्मसे सुख और पापसे दुःख हुआ करता है। सबही अपने कर्मका फल

भोग करते हैं। हे महाराज! भवादृश बुद्धिमान् कभी ज्ञान-विरुद्ध पापजनक कार्य्यमें प्रवृत्त नहीं होते हैं।

इति २ अध्याय।

—०—

धृतराष्ट्र बोले, महात्मन्! तुम्हारे वाक्यसे हमारा शोक निवारण हुआ अब और भी तुम्हारे मधुर वाक्य श्रवण करने की इच्छा है सो पण्डित लोग अनिष्टापात और इष्टवियोग-जनित मानसिक दुःखसे कैसे मुक्त होते हैं? सो कहो। विदुर बोले, महाराज! जिस जिस उपायसे मनका दुःख और सुख दूर हो पण्डित लोग वही वही उपाय उद्भावन कर के शान्ति लाभ करते हैं। हम लोग जो कुछ चिन्ता करते हैं सबही अनित्य है। मनुष्यगण कदलीवृक्षकी समान अति असार पदार्थ है। जब कि विद्वान्, मूर्ख, धनवान् और दरिद्र एकल अस्थिमय मांसशून्य गात्रसे श्मशानमें शयन करते हैं। उस समय उन लोगका कुल रूप और जातिका प्रभेद क्या रहता है? अपने बुद्धिदोष ही से परस्पर लिप्त रहते हैं। पण्डित लोग देह को गृहस्वरूप कहा करते हैं। कालक्रम से वही देह ध्वंस हो जाता है। परन्तु जीवात्मा का किसी कालमें भी विनाश नहीं है, हे महा-राज! जब संसार की ऐसही गति है तब आप क्यों अनुताप करते हैं? प्राणिगण जैसे सलिलमें क्रीड़ा करते करते एक वार निमग्न और एकवार उन्मग्न होते हैं तद्रूप अल्पबुद्धि लोग अपने अपने कर्मानुसार इस संसार में क्लेश और विनाश को प्राप्त होते हैं और विज्ञलोग इह लोक में प्राणिगणका हितचेष्टा करते हैं उन्होंके परमगति लाभ होती है।

इति ३ अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले, हे वाक्यविशारद! अति दुर्ज्ञेय संसारकी गति कैसे जानी जाय? सो आप वर्णन करो।

विदुर बोले, महाराज! प्राणिगण की जन्मसे लेकर समस्त अवस्था कहते हैं, सो सुनो। जीव पहिले गर्भके बीच रक्तमें लीन रहता है, फिर पंचम मास होने पर सर्वाङ्ग सम्पन्न होय मांसशोणितलिप्त अति अपवित्र स्थान में वास करता है। अन्त को वायुप्रभाव से ऊर्द्ध्वपाद और अधःशिरा होके मूत्रद्वार पर आकर विविध क्लेश भोग करके वहां से मुक्त होता है। और भूमिष्ठ होने पर क्रम क्रम से इन्द्रिय पाश से बद्ध होने लगता है, तब विविध उपद्रव उसको आक्रमण करने लगता है। ग्रह समस्त उसके निकट आने लगते हैं और कर्मदोषसे व्याधि सब उसके शरीरमें प्रवेश कर जाते हैं। विविध व्यसन उसको निपीड़ित करने लगते हैं। मनुष्य बाल्यकालमें इसी प्रकारसे क्लेशसे क्लिष्ट होय किसी प्रकारसे भी तृप्तिलाभ नहीं कर सकता इसीसे यह नहीं जान सकता कि कौन् सत् कर्म और कौन् असत् कर्म है। उस समय उसके मंगलाकांक्षी लोग ही उसकी रक्षा करते हैं, इसी प्रकार से भ्रान्तबुद्धि मनुष्यगणका क्रम क्रमसे यमलोक गमनका समय आ पहुंचता है। पर वह जान नहीं सकता परन्तु यमदूत उसको आकर्षण करके यथाकालमें मृत्युके मुखमें निपातित करही देता है। हे महाराज!, देखिये संसारकी क्याही चमत्कार गति है! लोग अपना आपही विनाशका कारण होकर भी बारंबार उपेक्षा करता है। क्रोध, लोभ और भय के वशीभूत होके आत्मज्ञानसे रहित हो जाता है। बहुतेरे दूसरों पर दोषारोप और दूसरोंको मूर्ख ज्ञान करते हैं परन्तु अपने को नहीं देखते। जब सब

एकत्र होय श्मशान पर सोते हैं तब किसीकाभी कुल, रूप और गुण नहीं जाना जाता तब बुद्धिहीन मनुष्य क्यों परस्पर द्वेष और वञ्चना किया करते है? हे महाराज! जो कोई इस वाक्यको श्रवण और स्मरण करते हैं उसको कोई पथ दुर्गम नहीं होता है।

इति ४ अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले, हे विदुर! जिस बुद्धिके प्रभावसे धर्मगहनमें प्रवेश होय सो विषय कीर्तन करो।

विदुर बोले, महाराज! महर्षिगण इस संसारको वनस्वरूप कहते हैं। पूर्वमें एक ब्राह्मण भ्रमण करते करते एक दुर्गम अरण्यमें प्रविष्ट हुए। वह भयानक अरण्य दर्शन करते ही उनका मन उद्विग्न और सर्वशरीर रोमाञ्चित हो गया। तब तो प्राणभयसे इधर उधर धावमान होने लगे। एक स्थानमें देखते हैं कि एक भीषणकानन, बन्धनजालसे समावृत, पर्वतके समान उन्नत, पञ्चशीर्ष नागगणसे आकीर्ण है और एक बृहत्काय कामिनी बाहुद्वय द्वारा उस अरण्यको आक्रमण कर रही है। उसी वनमें दृढ़ तृणलतादिमण्डित एक बृहत् कूप था। ब्राह्मण भ्रमण करते करते लतावितानजड़ित उसी गभीर कूपमें निपतित और लताजालसे लग्न होय ऊर्द्धपाद और अधोमस्तक होके झूलने लगा। और एक यह उपद्रव देखा कि एक महासर्प उसी कूपके अधोभागमें अवस्थित है। और एक षड्वक्त्र, द्वादशचरण, कृष्णवर्ण, मदमत्त मातङ्ग क्रम क्रमसे उस कूप सुसंस्थित वृक्षके समीप चला आता है। उस वृक्षके प्रशाखा पर नानारूपधारी मधुकरगण मधु आहत करके प्राणिगणको मधु पान करानेकी चेष्टा करते हैं और कै एक कृष्णसर्प और श्वेत-

वहां मूषिक दशन द्वारा उसी पादपको छेदन कर रहे हैं। हे महाराज! उसी वृक्षकी शाखासे अनवरत मधुधारा निःसृत होती थी। ब्राह्मण उस सङ्कटमेंभी उस मधुधाराको पान करने लगे, परंतु उससे उनको तृप्ति लाभ न हुई वरं आग आगाडि लाभकी प्रत्याशा औरभी अधिक बढ़ने लगी, अन्तको उस अवस्थाका जीवनभी ब्राह्मणको कुछ क्लेशकर ज्ञात न हुआ। हे महाराज! ऐसी कठिन अवस्थामेंभी वह ब्राह्मण स्वेच्छापूर्वक अवस्थान करने लगा, किसी प्रकारसेभी जीविताशा परित्याग न कर सका।

इति ५ अध्याय।

विदुर बोले, महाराज! मोक्षधर्मवित् पण्डित लोगने पूर्वोक्त उपाख्यानको संसारका आदर्शस्वरूप कहा है। मनुष्यगण उसको जानके सावधान होय परलोकमे सुगति लाभ कर सकते हैं। पहिले जो महारण्य कहा है सोइ संसार है उसमें हिंस्रकजन्तु हैं, सोइ व्याधि हैं। और वही वृहत्काय कामिनी जो है सो रूपलावण्यविनाशिनी जरा है। और कूप, मनुष्यगणका देह स्वरूप, और अधःस्थित महासर्प अन्तक काल, उस कूपमें जो लता है, जिसमें वह ब्राह्मण लटके हैं सो जीविताशा, षड़ानन कुञ्जर सम्वत्सर, उसके छः मुख छवो ऋतु, द्वादश चरण द्वादश मास, सर्प और मूषिकगण प्राणिगणका आयुःक्षयकर दिवारात्रि, मधुकरगण काम, और मधुधारा कामरस है। उसी रसमें मानवगण सर्वदा निमग्न रहते हैं, हे महाराज! ज्ञानिलोग ऐसाही संसारको जानके उसमें बद्ध नहीं होते हैं।

इति ६ अध्याय।

विदुर बोले, महाराज! लोग जैसे पथ अतिक्रम करके स्थान स्थानमें अवस्थान करते हैं, वैसेही निर्बोध जन इस संसारमें पर्य्यटन करते करते बारंबार गर्भवास आश्रय करते हैं, परंतु ज्ञानी लोग उससे मुक्त होते हैं। इसी कारणसे पण्डित लोग इस संसारको पथभी कहा करते हैं। स्थावर-जङ्गमात्मक समस्त पदार्थही इस पथमें निरन्तर भ्रमण करते हैं। इसी पथमें व्याधि सब आक्रमण करते हैं, उनसे बचे तो जरा आक्रमण करके रूप विनाश कर देती है। परंतु मनुष्य ऐसे निर्बोध हैं जो ऐसी दुरवस्थामेंभी जीवि-ताशा त्याग नहीं करते। सर्वदाही शब्द, रूप, रस, गन्ध और स्पर्शादि विविध इन्द्रियभोग्य विषयमें लिप्त रहता है। सम्बत्सर, ऋतु, मास, पक्ष और दिवारात्रि क्रमात् मनुष्य-गणका परमायु क्षय किया करता, परंतु मूर्ख लोग उनको कालका प्रतिनिधि नहीं समझते हैं, सबही अपने अपने कर्मानुसार फलभोग किया करते हैं, विज्ञ लोग प्राणिगणके शरीरको यमका रथ, जीवनको सारथी, इन्द्रियगणको अश्व और कर्मबुद्धिको रश्मि ठहराते हैं। जो मनुष्य उन धाव-मान अश्वगणको बुद्धिरूप प्रग्रह द्वारा नहीं रोकते हैं, उनको इस संसार चक्रमें परिभ्रमण करना पड़ता है। और जो लोग उन अश्वगणके सहित भ्रमण करकेभी मुग्ध नहीं होते वे इस संसारमें बारंबार भ्रमण नहीं करते।

हे महाराज! मनुष्यगणको इस संसारचक्रमें भ्रमण करके विविध दुःख भोगना पड़ता है, इस कारण बुद्धिमान्को दुःख निवारणकी चेष्टा करना कर्तव्य है। उस विषयमें उपेक्षा करना उचित नहीं। इस लोकमें जो क्रोधलोभ विवर्जित, जितेन्द्रिय, सन्तुष्टचित्त और सत्यवादी हैं, वही शान्तिलाभ कर सक्ते हैं। और जो लोग अति निर्बोध और

मुग्ध हैं, वही आपके समान राज्य, सुहृद् और पुत्र विनाशसे अति कातर होय अनुताप और दुःखभोग करते हैं। संयतचित्त साधु लोग ज्ञानरूप महौषधि प्रयोग पूर्वक दुःखरूप महा व्याधिका निराकरण कर डालते हैं। चित्तस्थैर्य दुःख विमोचनका जैसा उत्कृष्ट उपाय है विक्रम, अर्थ अथवा बन्धुबान्धव वैसे नहीं। इस लिये आप स्थिरचित्त होके दुःख दूर करो। हे महाराज! जो कोई प्राणिगणको अभयदान देते हैं, वह अति उत्कृष्ट लोक लाभ करते हैं। प्राणिगणमें आत्मासे प्रियतर वस्तु दूसरे नहीं है इससे सर्वभूत पर दया करना कर्तव्य है।

इति ७ अध्याय।

वै०। पुत्रशोकार्त राजा धृतराष्ट्र विदुरवाक्य श्रवणानन्तर मूर्छित होय भूतलमें निपतित हुए, तब कृष्णद्वैपायन विदुर और सञ्जय प्रभृतिने शीतल जल सेचन और तालवृन्त वीजन द्वारा उनकी मूर्छा अपनोदन किया। अनन्तर धृतराष्ट्रने महर्षि व्यासदेवसे कहा, हे द्विजसत्तम्! मनुष्यदेह धारण करनेहीसे पुत्र और अर्थ कि निमित्त परिताप करना पड़ता है सो अब प्राणपरित्याग किये विना निष्कृति नहीं, देखते इससे आजही कलेवर परित्याग करेंगे, हे महाराज! यह कहके धृतराष्ट्र आकुल होय चुप हो रहे।

महर्षि वेदव्यास बोले, हे वत्स! हम कहते हैं सो श्रवण करो। तुम सर्वशास्त्रविशारद और परमधार्मिक हो, तुमको कुछ विषय अजानित नहीं है। मनुष्यगणकी अनित्यता विशेष करके ज्ञात हो, तब तुम क्यों शोक करते हो? दैवने रे पुत्रको निमित्त करके यह विरोध उत्पादन किया है,

हे वत्स! देवतागणने तुम्हारे कुलक्षयके विषयमें जो कहा था सो कहते हैं श्रवण करो, उसके सुननेहीसे तुम्हारा मन स्थिर होगा। एक समय हमने इन्द्रलोकमें देखाकि वहां समस्त देवगण उपस्थित हैं। वहां वसुमती जा कर बोली, हे सुरगण! पूर्वमें ब्रह्माके भवनमें जो आप लोगोंने कहा था सो शीघ्रही उसका अनुष्ठान कीजिये। यह श्रवण करके विष्णु हास्य करके बोले, वसुन्धरे! धृतराष्ट्रपुत्र दुर्य्योधन तुम्हारा कार्य्य साधन करेगा उसी दुरात्माके कार्य्यसाधनार्थ अन्यान्य भूपालगण कुरुक्षेत्रमें एकत्र होश अस्त्राघातसे परस्पर बधसाधन करके तुम्हारा भार लाघव करेंगे, अब अपने स्थानमें गमन करो।

हे महाराज! दुर्य्योधनने लोकसंहारके लिये कलिके अंशसे जन्म लिया था, वह अमर्षपरायण, चपलस्वभाव, क्रुद्ध और दुर्विनीत था, उनके भ्रातृगण और मित्रगणभी वैसही हो गये थे, हे महाराज! राजा जैसे होते प्रजाभी वैसही हो जाती है, धार्मिक राजा हों तो अधर्मभी क्रम क्रमसे धर्म होजाता है, स्वामीके गुण दोष प्रभावसे भृत्यका गुण दोष उत्पन्न होता है, दुष्ट दुर्य्योधनके दोषहीसे तुम्हारे समस्त पुत्र निहत हुए इस कारण उनके निमित्त अनर्थक शोक करनेका कुछभी प्रयोजन नही है। आपके पुत्रहीके दोषसे समस्त पृथिवी उच्छिन्न हो गई, पाण्डवगणका कुछभी दोष नहीं है। महर्षि नारद और हमने राजसूय यज्ञके समय युधिष्ठिरसे कहा था कि कौरव पाण्डवगण परस्पर युद्ध करके आपका कुलक्षय करेंगे। उस समय युधिष्ठिरने अति शोक प्रकाश किया था और जिसमें यह विरोध न होय उसका अति यत्न किया, परंतु कुछ फल न हुआ। हे वत्स! तुमसे हमने यह सब गुप्त विषय प्रकाश किया अब

तुम दैवकृत विड़म्बना जानके शोक परित्याग, प्राणधारण और पाण्डवगणके प्रति स्नेह प्रदर्शन करो। धर्मराज बड़े धीर हैं, पशुपक्षी परभी दया करते हैं तुम पर उनकी दया न होनेकी कारण क्या है? अब तुम हमारा आग्रह वाक्य श्रवण और पाण्डवोंके प्रति करुणा प्रकाश करके जीवन-धारण करो यह होनेसे कीर्त्तिलाभ और दीर्घकाल तपोनुष्ठान साधन हो सकेगा।

वै०। धृतराष्ट्र बोले, महर्षे! हम शोकसे अति कातर हो गये थे, अब जाना कि हमारे पुत्रगण दैवप्रभावहीसे विनष्ट हुए। अब हम प्राणत्यागनेकी वासना नहीं करेंगे। अनन्तर वेदव्यास यह वाक्य श्रवण करके वहांही अन्तरहित हुए।

इति ८ अध्याय।

वै०। अनन्तर सञ्जय धृतराष्ट्रके निकट जाय बोले, महाराज! नानादेशीय भूपालगण कुरुक्षेत्रमें आपके पुत्रके सहित निहत हुए हैं तो अब आप यथाविधि उन लोगका प्रेत कार्य्य सम्पादन कीजिये। यह सुन राजा धृतराष्ट्र विचेतन होय धरातल पर निपतित हो गये। तब सर्व्वधर्मज्ञ महात्मा विदुर उनको नाना प्रकार मधुर वाक्यसे आश्वासित करने लगे।

इति ९ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर राजा धृतराष्ट्र विदुरवाक्य श्रवण करके यान सुसज्जित करनेकी आज्ञा देकर विदुरसे बोले, महात्मन्! तुम गान्धारी, कुन्ती और अन्यान्य महिला-

गणको शीघ्र आनयन करो। विदुरसे यह कह कर शोक-सन्तप्तचित्तसे यान पर आरोहण किया। अनन्तर पुत्रशोकार्त्ता गान्धारी पतिकी आज्ञा पाय कुन्ती और अन्यान्य अन्तःपुर-चारिणीगणको साथ लेके धृतराष्ट्रके निकट उपस्थित हुईं। रोरुद्यमाना रमणीगण उच्चस्वरसे क्रन्दन करने लगीं। महात्मा विदुर कामिनीगणको आश्वास प्रदान पूर्वक रथ पर संस्थापित करके नगरसे वहिर्गत हुए। उस समय कौरव-गणके प्रतिगृहमें आर्त्तनाद होने लगे आबाल वृद्ध वनिता सबही शोकसे अभिभूत हुए। पूर्वमें देवगणभी जिनका मुखावलोकन न कर सकते अब वे अनाथा होके सामान्य जनके समान नेत्रपथमें निपतित होने लगीं। आलोलित केशा एकवस्त्रा कामिनीगण अलङ्कार उन्मोचन पूर्वक गृहसे वाहिर होय पिता पुत्र और भ्रातृगणके निमित्त उच्चस्वरसे रोदन करने लगो। राजा धृतराष्ट्र इसी प्रकारसे रोरुद्य-माना रमणीगणसे परिवृत होय दुःखित मनसे समराङ्गणको यात्रा किया। शिल्पी, वणिक और वैश्यागण उनके पश्चात् गमन करने लगीं। उस समय महिलागणके आर्त्तनादसे त्रिभुवन व्यथित हो उठा। और अनुरक्त पुरवासिगण व्यथित होय उच्चस्वरसे रोदन करने लगे।

इति १० अध्याय।

अनन्तर महाराज धृतराष्ट्र एक क्रोश जा चुके थे, उसी जगह महारथ कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा और कृतवर्मा उनके निकट उपस्थित हुए। वे तीनो वीर दीर्घनिश्वास परित्याग पूर्वक गद्गद स्वरसे बोले, महाराज! आपके पुत्रने अति दुष्कर कार्य्य करके अनुचरगणके सहित स्वर्ग लाभ किया।

हम लोगकी सब सैन्य विनष्ट हुए अब केवल हमही तीनजन रह गये हैं।

अनन्तर महावीर कृपाचार्य्य पुत्रशोकार्त्ता गान्धारीको आश्वास प्रदान पूर्वक कहने लगे कि पाण्डवगणभी सहजसे निष्कृति लाभ न कर सके। अश्वत्थामा कृतवर्मा और हम तीनो जनने सुना की भीमसेनने अधर्मयुद्धसे दुर्य्योधनको निहत किया तो उसी रात्रिमे शिविरके बीच प्रवेश करके निद्राभिभूत पाण्डवपक्षीय वीरगणको विनाश कर डाला हैं, अब निश्चयही पाण्डवगण वैरनिर्यातनके लिये महाक्रुद्ध होके आवते होंगे यह विवेचना करके प्राणभयसे हम लोग पलायित हुए हैं। पाण्डवगण पुत्रगणकी निधनवार्त्ता श्रवण करके उन्मत्त होय हम लोगोंके संहार करनेकी चेष्टा अवश्यही करते होंगे, अब हम लोगका यहां अवस्थान करनेका साहस नहीं है सो अब आप शोक परित्याग करके हमलोग को प्रस्थान करनेकी आज्ञा दीजिये। अनन्तर वे राजाज्ञा पाय रथारोहण पूर्वक भागीरथीके अभिमुख गमन करने लगे। कियद्दूर जाके परस्पर आमन्त्रण पूर्वक उद्विग्न मनसे तीनो जन तीन दिशाको धावमान हुए। कृपाचार्य्य हस्तिना-पुर, कृतवर्मा अपनी राजधानी और अश्वत्थामा व्यासाश्रमके अभिमुख गमन करने लगे। हे महाराज! इसी प्रकारसे वे तीनो वीर सूर्य्योदयके पूर्वमे धृतराष्ट्रको आमन्त्रण करके पृथक् पृथक् हुएही थे कि इतनेमे महारथ पाण्डवगणने पथहीमे अश्वत्थामाको आक्रमण करके विक्रम प्रकाश पूर्वक पराजित किया।

इति ११ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर राजा धृतराष्ट्र हस्तिना से

निष्क्रान्त हुए हैं, यह सुनके धर्मराजने महात्मा वासुदेव, सात्यकि, युयुत्सु और भ्रातृगणके सहित उनके दर्शनको प्रस्थान किया। द्रौपदीभी दुःखशोकाकुलित पाञ्चालकुल-नारियों सहित धर्मराजका अनुगमन करने लगी। कितनी दूर जाके युधिष्ठिरने देखा कि वृद्ध राजा धृतराष्ट्र कामिनी-गणसे परिवृत होय भागीरथीके अभिमुख गमन करते हैं, और कामिनीगण कुररीके समान शोकाकुल होय यह कहके विलाप कर रही हैं। हा धर्मराज! अब तुम्हारा वह धर्मानु-रागिता और अनृशंसता कहां गई! तुमने कैसे भ्राता, गुरुपुत्र और मित्रगणको विनाश किया? भीष्म, द्रोण और जयद्रथको संहार करके क्या तुमको व्यथा नहीं होती है? अब महावीर अभिमन्यु, द्रौपदीके पञ्चपुत्र, गुरु और भ्रातृगणके विरहसे तुम्हारा राज्यलाभ अति अकिञ्चित्कर है। युधिष्ठिर इसी प्रकारसे उन लोगका विलाप सुनते सुनते राजा धृतराष्ट्रके निकट जाय प्रणाम किया। अनन्तर अन्यान्य पाण्डवगणभी अपना अपना नाम निर्देश करके प्रणाम करने लगे। तब राजा धृतराष्ट्र प्रसन्न मनसे धर्म-राजको आलिङ्गन और सान्त्वना करके अपना दुष्ट अभिसन्धि सम्पन्न करनेके अभिप्रायसे भीमका अनुसन्धान करने लगे। उस समय ऐसा निश्चय हुआ मानो उनका शोकानल क्रोध समीरणसे संधुक्षित होकर भीमसेनरूप वनराशिको दग्ध करनेका अभिलाष करता है। हे महाराज! असाधारण-बोधशक्तिसम्पन्न महात्मा वासुदेवने पहिलेहीसे भीम पर धृत-राष्ट्रकी दुरभिसन्धि जान उसके प्रतिविधानके लिये लौहमय भीम ला रखा था। इस समय अन्धराजका भाव देख कर भीमको हस्त द्वारा अवरोध करके धृतराष्ट्रको वही लौहमय भीम प्रदान किया।

अयुतनागतुल्य बलशाली महाराज धृतराष्ट्रने वह लौहमय भीमको पातेही भुजद्वारा ग्रहण और यथार्थ भीम निश्चय करके बलप्रकाश पूर्वक चूर्ण कर डाला। लौहमय भीम चूर्ण होतेही धृतराष्ट्रका वक्षस्थल विमथित हो गया और मुखसे रुधिरधारा निर्गत होने लगी। तब राजा धृतराष्ट्र शोणितसिक्तकलेवर पुष्पित पारिजातके समान शीघ्रही भूतलमें निपतित हुए, तब सञ्जय उनको अवलम्बन करके सान्त्वना करने लगे। कितने क्षणोंके पर राजा धृतराष्ट्र क्रोध परित्यागपूर्वक शोकाकुल-चित्तसे हा भीम! हा भीम! कहके रोदन करने लगे। तब पुरुषप्रधान वासुदेव अन्धराजको क्रोधहीन और भीमवधसे अति कातर देख कर बोले, महाराज! आप भीमके निमित्त शोक मत कीजिये। आपने लौहमय भीमको चूर्ण किया है। आपको अत्यन्त क्रोधाविष्ट देखके हमने पहिलेही भीमको अपसारित कर दिया था। आपके तुल्य बलशाली दूसरा कोई नहीं है आपके बाहुयुगलमध्यगत हो कर कोई वीरभी जीवित नहीं रह सकता। इसी कारणसे हमने दुर्योधनकी बनवाई हुई, लौहमय भीम प्रतिमूर्ति आपको प्रदानकी थी, हे महाराज! आपका मन पुत्रशोकसे अत्यन्त सन्तप्त और धर्मभावशून्य हो गया है इसही कारणसे आपने भीमको विनाश करनेका अभिलाष किया था। परंतु वास्तविक भीमको संहार करना आपका श्रेय नहीं है। देखिये आपके पुत्रगण कदाच जीवित न रहते। नहीं तो हम लोग सन्धिस्थापनकी चेष्टा करकेभी क्यों निरास हुए? यही सब सोच विचारके शोक परित्याग कीजिये।

इति १२ अध्याय।

वासुदेव बोले, हे महाराज! आप समस्त कार्य्याकार्य्य विवेचनामें समर्थ, और बहुदर्शी। वेद, पुराण, और राजधर्मप्रभृति विविध शास्त्रके ज्ञाता होके आपने अपराध पर क्यों ऐसा कोप प्रकाश करते हैं? उस समय सबहीने आपसे कहा था कि आपसे पाण्डव अधिक बलशाली हैं इस कारण सन्धिस्थापनही कर्तव्य है, तब तो आपने हम लोगकी बात न माना। देखिये जो स्थिरबुद्धि राजा आप अपना दोष देखे और देश काल विवेचना करके कार्य्य करे। उसीको मङ्गल लाभ होगा और जो कोई हिताहित उपदेश पाकेभी ग्रहण न करे तो उसको निश्चयही आपके समान विपद्ग्रस्त होकर शोक करना पड़ेगा।

हे महाराज! आप अति चञ्चलस्वभाव और दुर्य्योधनके वशीभूत थे, इसीसे आपको यह दशा हुई तो अब आप क्यों भीमके संहार करनेकी वासना करते हैं? भीमसेनका अपराध क्या है? जो दुरात्माने द्रौपदीको सभामें आनयन किया था, वृकोदरने उसको विनाश करके वैरनिर्य्यातन किया। इस समय आपने बिना अपराधके पाण्डवगणको त्याग करके अति अन्याय कार्य्य किया। और दुर्य्योधननेभी इन लोग पर कितना अत्याचार किया सो विवेचना करके शोध स्मरण कीजिये।

वासुदेववाक्य श्रवण करके धृतराष्ट्र बोले, हे माधव! जो आपने कहा सो सब सत्य है, परंतु बलवान् अपत्यस्नेहने हमको धैर्य्यच्युत कर डाला है, इसीसे भीमके अशुभानुष्ठानकी वासना हुई थी, भाग्यहीसे तुमने उसकी रक्षा कर लिथी, जो होय अब हम एकाग्रचित्त हुए, शोक परिताप सब दूर हो गया है, अब आजसे भीमसेनका सादर सम्भाषण करेंगे। हमारे पुत्रगण तो निहत हुए अब पाण्डवगणही हमारे

प्रीतिको प्राप्त हुए। राजा धृतराष्ट्र यह कहके रोदन करते करते भीम, धनञ्जय, नकुल और सहदेवको आलिङ्गन पूर्वक आशिर्वाद प्रदान करने लगे।

इति १२ अध्याय।

हे महाराज! वासुदेव और पाण्डवगण धृतराष्ट्रकी आज्ञा लेके गांधारीके निकट गये। पुत्रशोकार्ता गांधारराज-दुहिताने धर्मराजको शाप प्रदान करनेका अभिलाष किया था। उसी समय दिव्यदृष्टि वेदव्यास गांधारीका अभिप्राय जानके उनके निकट उपस्थित हुए। और शान्त करनेको बोले, हे वत्से! तुम हमारे वाक्यानुसार पाण्डवगणके प्रति कोप परित्याग पूर्वक शान्तिगुण अवलम्बन करो। हे कल्याणि! तुमने दुर्य्योधनको कहा था "कि जहां धर्म वहांही जय" सो तुम्हारा वाक्य कदाच मिथ्या होनहार नहीं, इसीसे पाण्डवगणने असंख्य शत्रुगणका संहारपूर्वक जयलाभ करके तुम्हारे वाक्यको यथार्थता सम्पादन की। पहिले तो तुमको असाधारण क्षमागुण था, आज तुम क्यों उस गुणको त्याग करती हो अब तुमको अधर्मको पराजय करनाही कर्तव्य है। जहां धर्म वहांही जय होता है सो तुम अपना वाक्य स्मरण करके क्रोध सम्बरण करो। गांधारी बोली, भगवन्! पाण्डवगणपर हमारी द्वेषी नहीं है और यह लोग विनष्ट होंय ऐसी हमारी इच्छा नहीं है, परंतु पुत्रशोकसे हमारा अन्तःकरण विह्वल हो गया है, कुन्तीके जैसे पाण्डव हैं तैसेही हमाओभी जानना कर्तव्य है, दुर्य्योधनहीके दोषसे कुलक्षय हुआ। पाण्डवोंका कुछभी अपराध नहीं, कौरव-गण निहत हुए इस कारण हमको कुछभी आक्षेप नहीं है, परंतु भीमसेनने जो धर्मयुद्धमें दुर्य्योधनको अधर्मसे वध-

भञ्ज किया उसी अधर्मसे हमारा कोपानल प्रज्वलित हुआ है।

इति १४ अध्याय।

हे महाराज! अनन्तर महावीर भीमसेन गांधारीवाक्य श्रवणगोचर करके भीत होय विनय पूर्वक कहने लगा, मात! हम आत्मरक्षाके लिये भयसे जो काम किया, धर्म हो वा अधर्म उसको अब आप क्षमा कीजिये। यथार्थ तो हमने अधर्महीसे आपके पुत्रका विनाश किया। पूर्वमें दुर्य्योधनमेभी अधर्मसे धर्मराजको द्यूतक्रीड़ामें पराजय और सभामें एकवस्त्रा द्रौपदीके प्रति विविध कटुवाक्य प्रयोग किया था। हे आर्य्ये! दुर्य्योधनने जब सभामें द्रौपदीको वाम उरु प्रदर्शन किया था, हम तो उसी समय उसको बध करते केवल धर्मराजकी आज्ञासे इतना काल अपेक्षा किया था। हे आर्य्ये! दुर्य्योधनने वैरानल प्रज्वलित और हम लोगको अरन्यमें प्रेरण करके विस्तर क्लेश दिया था, उसीसे ऐसे अधर्म कार्य्यका हमने अनुष्ठान किया।

गांधारी बोली, हे भीम! अधर्मसे दुर्य्योधनको बध और दुःशासनका शोणित पान करके तुमने प्रशंसाका कार्य्य नही किया। भीम बोले आर्य्ये! दुःशासनका रुधिर हमने पान नहीं किया। उसका शोणित हमारा अधरोष्ठ अतिक्रम करके उदरस्थ नही हुआ था, यह बात महावीर कर्ण विशेष जानते थे। सभामें दुःशासनने द्रौपदीका केशाकर्षण किया, उस समय हम क्रोधाविष्ट होय यह प्रतिज्ञा कर लियो थी। यदि हम वह प्रतिज्ञा प्रतिपालन न करते तो आजन्म क्षत्रिय धर्मसे भ्रष्ट हो जाते, पहिले आप अपने पुत्रगण पर शासन किया तो अब हम लोगको क्यों दोषी करती हैं? गांधारी

बोली वत्स ! हमारे एकशत पुत्रोंमें सबही तो अपराधी नहीं थे, एककोभी तुमने अवशिष्ट नहीं छोड़ा जो हम दोनो अंधका-यष्टिस्वरूप होता। जो होय यदि तुम धर्मपथ अवलम्बन करते तो हमको ऐसा दुःख न होता। गांधारी यह कहके क्रोधान्वितचित्तसे बोली युधिष्ठिर कहां है? कम्पितकलेवर राजा युधिष्ठिर कृताञ्जलीपुटसे बोले, देवि ! हम आपके राज्य नाशके हेतु हैं, आप अभी हमको अभिशाप प्रदान कीजिये, हे आर्ये ! हम मित्रद्रोही और मूढ़, सुहृद्गणको विनष्ट किया तब हमको राज्य, जीवन और धनसे कुछभी प्रयोजन नहीं है, यह कहके गांधारीके चरण पर निपतित होनेका उपक्रम किया। दूरदर्शिनी गांधारी कुछ प्रत्युत्तर न देकर दीर्घ-निश्वास परित्याग पूर्वक आवरणसे युधिष्ठिरके अङ्गुलिका अग्रभाग दर्शन किया; उनकी दृष्टिपात होतेही युधिष्ठिर कुनखी हो गये। अनन्तर गांधारी क्रोध सम्वरण पूर्वक जन-नीके समान पाण्डवगणको सांत्वना करने लगी।

अनन्तर पाण्डवगणने जननी कुन्तीके निकट गमन किया। पुत्रवत्सला कुन्ती बहुदिनसे पुत्रगणका मुखचन्द्र निरीक्षण न करनेसे अति कातर हुई थी, इस समय उन लोगोंको अव-लोकन करके वसनसे मुख आच्छादन पूर्वक रोदन करने लगी और हतपुत्रा द्रौपदीको भूतलमें निपतित और अश्रु-जलसे अभिषिक्त देखके अत्यन्त अनुताप करने लगी। उसी समय गांधारी पुत्रवधुगणके सहित वहां उपस्थित होय नाना प्रकार प्रबोध वाक्यसे द्रौपदीको आश्वास प्रदान करने लगे।

इति १५ अध्याय।

स्त्रीविलाप पर्वाध्याय ।

४०। पतिपरायणा गांधारी महर्षि कृष्णद्वैपायनप्रदत्त वरप्रभावसे दिव्यचक्षु द्वारा उसी स्थानसे रणभूमि देखने लगी, और करुणस्वरसे विलाप करने लगी।

अनन्तर वेदव्यासके आज्ञानुसार पाण्डवगण वासुदेव, बंधुहीन राजा धृतराष्ट्र और कौरवमहिलागणके सहित संग्रामभूमिमें गमन किया।

अनाथा कौरववनितागण कुरुक्षेत्रमें उपस्थित होय देखने लगी कि भ्राता, पुत्र, पिता, भर्ता और बंधुबांधवगण प्राण परित्याग पूर्वक भूतल पर शयान हैं। गोमायु, वायसप्रभृति उनका मांस भक्षण कर रहे हैं। कामिनीगण श्मशानसदृश समरभूमि देख कर हाहाकार करने लगी, कोई कोई स्खलित-देह हो कर धराशय्या पर लेट गईं। और कोई तो थकित होय पड़ गईं। उस समय पांचाल और कौरवकामिनीगणके दुःखका अन्त न था।

अनन्तर धर्मशीला गांधारी दुःखार्त नारीगणके रोदन शब्दसे समरभूमि परिपूर्ण देखके वासुदेवसे बोली, हे वत्स! वह देखो, हमारी वधुगण अनाथा होय रोदन करती करती अपने अपने पुत्रपतिगणके मृतदेहके निकट धावमान होती हैं। वह देखो पुत्रहीना वीरजननी और पतिहीना वीर-पत्नीगणसे समराङ्गण परिपूर्ण हो रहा है। वह देखो पुरुष-व्याघ्र भीष्म, कर्ण, अभिमन्यु, द्रोण, द्रुपद और शल्य प्राण परित्याग करकेभी प्रज्वलित पावकके समान दीप्यमान हो रहे हैं। वह देखो महावीरगणके कांचनमय कवच, दिव्य मणि, अङ्गद, केयूर, माल्य, शक्ति, परिघ, खड्ग, शर और

शरासनोंसे समरभूमि अलंकृत हो गई है। क्रव्यादगण अवस्थान और क्रीड़ा कर रहे हैं। हे मधुसूदन! समर-भूमिकी यह अवस्था देख हमारा हृदय शोकानलसे दग्ध हो गया है। वह देखो! सुपर्ण और गृध्रगण शोणितसिक्त सहस्र सहस्र वीरगणको ग्रहण करके भक्षण करते हैं, हाय! आज दुर्य्योधनप्रभृति वीरगण निहत होय गृध्र, कुक्कुर और शृगालगणके भक्ष्य हुए हैं! जो लोग कोमल शैय्यापर शयन करते वे आज विस्तृत वसुधातल पर शयान हैं। जो लोग वन्दिगणका स्तुतिवाद श्रवण करते, आज वे शिवागणकी अशुभ ध्वनि और रमणीगणका करुण स्वरसे विलाप श्रवण करते हैं। वह देखो महिलागण वीरगणका मस्तकशून्य देह और देहशून्य मस्तक निरीक्षण करके विमोहित होती हैं, कोई कोई कामिनी एक वीरका देह अन्य वीरका मस्तक योजना करके विलाप करती हुई, कह रही हैं, कि हाय! किसका मस्तक किसके देहमें योजित किया! देखो जो कामिनीगण पहिले दुःखका लेशभी नहीं जानती अब वे आत्मीय गणका हत देह रणस्थलमें आक्रान्त देखके दुःखसागरमें निमग्न हुई हैं, हे केशव! हमारी पुत्रवधुगणने इस समय जैसा मलिन भाव धारण किया है। इससे और अधिक दुःख क्या है, इसी प्रकारसे अन्धराजमहिषी विलाप करती करती दुर्य्योधनको हत देहके निकट जा पड़ी।

इति १६ अध्याय।

हे महाराज! गान्धारी दुर्य्योधनको देखतेही मूर्छित होय छिन्नमूल कदलीके समान भूमिपर गिरी। और रुधिराक्त कलेवर कुरुराजको आलिङ्गन पूर्वक हा पुत्र! कहके महाविलाप करने लगी और निकटवर्ती कृष्णसे बोली, हे